कमीशनबड़ौदा

———o———

अर्थात्

महाराजा मल्हरराव गायकवार रईस बड़ोदा की ओर से करनैल फियर साहब रेज़ीडण्ट बड़ोदा के बिषदेने के मुक़द्दमेकी तहक़ीक़ात

जिसमें

सररिचर्डकौच साहब चीफजस्टिस बङ्गाल प्रेजीडेण्ट कमेटी और श्रीमान्महाराजा जियाजी रावसेंधिया जी० सी०एस० आई० और श्रीयुत महाराजा सवाईरामसिंह जी०सी०एस०आई० और करनैल सररिचर्ड मीडसाहब चीफकमिश्नर मैसोर और मिस्टर मेलवल साहब सी० एस० आई० जज चीफ कोर्ट पञ्जाब और राजा सर दिनकरराव सी०एस०आई० कमेटीकीसभा केजज थे

जिसको

पोलीटिकल और क़ानून अदालत के मुआमलों के अनुरागियों और सब छोटे बड़ों हिन्दुस्तान के सरदारों की गुणग्राहकता के लिये सम्पूर्ण मुक़द्दमा आदि से अन्त तक संग्रह करके अवधसमाचार पत्रके सम्पादक मुंशी नवलकिशोर की अनुमति से बाबूदामोदर दास साहब आगरेकालिज के सनदयाफ्तेने टाइम्स आफ़ इण्डिया की छपीहुई प्रति से अवध अख़-बारका तर्जुमा मिल कर और अधिक कर उर्दू में तरतीब दिया-

और

पण्डित प्यारेलाल साहब कश्मीरी यंत्रालयीय पण्डितों के प्रबंधक ने नागरी खड़ी बोली में उलथा रचना किया

———o———

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के यन्त्रालय में पण्डित प्यारेलाल के प्रबन्ध से छपा

मई सन १८७९ ई०

कमीशन बड़ौदा का सूची पत्र ॥

लण्डन दफ्तर हिन्द
३ जून सन् १८७५ ई०

इति

भूमिका

ब्रिटिश गवर्नमेण्ट की अमलदारी जबसे हिन्दुस्तान में हुई तबसे ऐसा महकमा कमीशन गत वर्षमें जो बड़ौदे के राजाके मुक़द्दमे के तहक़ीक़ात करने के लिये नियत हुवा था कभी नियत नहींहुवा—यह वह मुक़द्दमा है जो सम्पूर्ण हिन्दुस्तान और यूरुप में समाचार पत्रों के द्वारा विख्यात होचुका है—इस मुक़द्दमे की बिना और असल यह थी कि करनैल फियर साहब बड़ौदा के ब्रिटिश रेज़ीडण्ट को शरबत में विष दियागया या नहीं औरइस अपराधका शुभा मल्हरराव गायकवार बड़ौदा पर हुवा—कि उनकी साजिश या तरग़ीबसे विष दियागया तथाच गवर्न्नमेण्टहिन्दने इसमुक़द्दमेकीतहक़ीक़ात के लियेएक कमीशन नियत की जिसमें तीनसाहब यूरोपियन अर्थात् सररिचर्डकौच साहब चीफजस्टिस बंगाल प्रेसीडण्ट, और सररिचर्डमीड साहब चीफ़कमिश्नर मुल्कमैसोर, और मिस्टर मैलवल साहब कमिश्नर अमृतसर, और तीन साहब हिन्दुस्तानी अर्थात् दो बड़े महाराजा हिन्दुस्तान अर्थात् श्रीयुत महाराजा साहबबहादुर जयपुर और श्रीमान्महाराणा साहबबहादुर सेंधिया अधिपति ग्वालियारऔरराजासरदिनकरराव रियासत ग्वालियार के पहिले वज़ीर मेम्बर नियतहुये—तहक़ीक़ातके उपरान्त हिन्दुस्तानी जजसाहबों ने बड़ौदेके अधिपति मल्हररावको साजिश या तरग़ीब विष देने के अपराध से बरी किया—परन्तु जजसाहबानयूरोपियनने बड़ौदाके महाराजापर साजिश या तरग़ीब विषखिलाने

का अपराध सूचित किया—परन्तु इनका यह साबित करना तीन गवाहों के बयान पर था जिनमें से दो मनुष्य ऐसे थे जो बड़ौदे की रेजीडन्टी के छोटे नौकर थे—यद्यपि गवर्नमेण्ट हिन्द ने यूरोपियन साहबों के रायों के साथ सम्मत किया—लेकिन मारक्वीस आफ़ सालसबरी साहब सेक्रेटरी आफ़ इस्टेट आफ़ इण्डिया ने प्रतिकूल मतों के होने से यह समझा कि मल्हरराव गायकवार पर साजिश और बहकाके जहर देने का अपराध साबित नहीं हुआ—परन्तु उन्होंने मल्हरराव बड़ौदे के अधिपति को श्रीमहाराणी विक्टोरिया की आज्ञानुसार इस सबब से बड़ौदे की गद्दी से उतारा कि उनका चाल चलन अच्छा न था और उनके देश का प्रबन्ध बहुत खराब और बड़ौदे की प्रजा उनसे बहुतही अप्रसन्न थी ॥

गत वर्ष में अनेक अखबारों में इस मुक़द्दमे पर वादानुवाद हुआ कोई अखबार लिखने वालों ने गवर्नमेण्ट की इस कारखाई पर बड़े २ एतराज किये और कलंक लगाये—और कितनों ने गवर्नमेण्ट इङ्गलिशिया की इस कारखाई की सहायता की—जोकि अब यह मुक़द्दमा पूर्णहोगया इसलिये अब इस विषयमें लिखना कि वह कारखाई कैसीथी व्यर्थहै लेकिन जोकि अखबारों में इस मुक़द्दमे की अलग २ कारखाइयां छपी हैं और बहुधा अखबार के अवलोकन करने वालों और देश के रईसों की यह इच्छा पाईगई कि तर्जुमा सब कारखाई कमीशन का आदि से अन्त पर्य्यन्त अखीरी हुक्म तक क्रम पूर्व्वक छापा जावे—जो कि इस भूमिका का लिखने वालाभी बड़ौदे की कमीशन के अवलोकन करने के लिये कमीशन की सभामें उपस्थित रहा इसलिये इच्छा हुई कि इस मुक़द्दमे के अनुरागियों को इस कारखाई से जो यादगार तारीख है सूचित करे—यद्यपि अखबारों में तर्जुमे हुये परन्तु जांचने के समय उन तर्जुमों में कुछ अन्तर पाया गया—इसलिये एक अति अंगरेजी विद्या

निपुण की दो तीन बेरकी मुद्दता पूर्वक यह तर्ज्जुमा उर्दू और नागरी में प्रकाश किया जाता है—और यह विचार कर कि हमारे हिन्दुस्तान के रियाओं और देशों में हिन्दी देवनागरीके पढ़नेवाले बहुतसे हैं और बहुतसे मुक़ामों और शहरोंसे ऐसी इच्छा मालूमहुई इसवास्ते आशा है कि नागरी के तर्ज्जुमे को अधिक तर पसन्द करेंगे—इस पुस्तक के देखने वालों को उचित है कि अन्त की वार्त्ता अर्थात् खण्डन मण्डन मिस्टर बेलनटायन साहब, सरजफ इटला बड़े वकील महाराजासाहब बड़ौदा और मिस्टर इस्कोविल साहब ऐडवकेट जनरल की तक़रीर को अवलोनकरें उससे सम्पूर्ण मुक़द्दमे का सारांशउनको मालूम होजावेगा और हिंदुस्तानी और यूरोपियन साहबों के विचार और गवर्न्मेण्ट इण्डियाका रेज़ोल्यूशन भी देखने के योग्य है और जो तजवीज़ अन्तमें साहब सेक्रेटरी आफ़स्टेट हिन्द ने अपनी चिट्ठी में की है वह भी पढ़ने और ध्यान देने के योग्य है॥

प्रयोजन यहहै कियह मुल्की मुक़द्दमा अति कठिन और नाज़ुक मुक़द्दमा था जिसमें एक बड़े और स्वाधीन रईस के मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात उसी की सल्तनत में एक कमीशन के द्वारा हुई इस बड़े मुक़द्दमे के देखनेसे यह भी विदितहोगा कि क्योंकर यूरोपियन साहबान और हिंदुस्तानी, मुक़द्दमे के मुख्य हत्तान्त के खुलनेके लिये ध्यान दे रहेथे सच तो यह है कि यह एक छोटासा मुक़द्दमा न था किन्तु बहुत ही पेचदार और नाज़ुकमुक़द्दमा था, अन्त में मैं यह पश्चात्ताप करता हूं कि अंगरेज़ी और नागरी के मुताबिक़ करने के कारण से विलम्ब होगया पर आशा है कि मुक़द्दमेके अनुरागी मेरे इस परिश्रम को समझकर ग्रहण करेंगे॥

इति॥

कमीशन बड़ौदा

श्रीमान् मल्हरराव गायकवार के अपराध के विषयमें कि उन्होंने करनैल फियर साहब को जहर दिया या नहीं २३ फरवरी सन् १८७५ ई० ॥

स्थान बड़ौदा ।

पहले दिन की कारवाई ॥

आज के दिन कारवाई कमीशन इस बात के निश्चय करने को शुरू हुई कि मल्हराव गायकवार ने करनैल फियर साहब को विष दिया या नहीं सररिचर्ड कौच साहब प्रेजीडेण्ट और श्रीमान् महाराजा सेंधिया और श्रीयुत महाराजा जयपुर और जनरल सररिचर्ड मीडसाहब और सर दिनकरराव और मिस्टर मैलवल साहब इस कमीशन के मेम्बर इस मुक़द्दमें की तहक़ीक़ात के लिये नियत हुये ॥

२२——नम्बर हिन्दुस्तानी फौज के सौ सिपाही दरवाजे के ऊपर खड़े हुये थे और कमीशन के प्रारम्भ होने के थोड़े काल के पहिले यह सिपाही आगये थे और चार गाड़ियों में कमीशन के मेम्बर आये पहिली गाड़ी में महाराजा सेंधिया आये थे उनके साथ इनका बाडी गार्ड था दस मिनट के उपरान्त सरल्यूइसपीली और मल्हरराव भी आये और उनके साथ भी इनका बाड़ीगार्ड था सरल्यूइसपीलीसाहब ने गायकवार को

उनके नियमित स्थान पर अपने साथ लेजाकर बैठाया यह जगह पहिले कमीशनके लोगों की बाईं ओर नियतथी उसदिन मल्हरराव अति उत्तम वस्त्र पहिने हुये थे सुर्ख मरहटी पगड़ी शिरपर बंधी हुईथी और सम्पूर्ण वस्त्रोंके ऊपर एक मखमल का चुग़ह पहिने हुये थे गले में मोती और लाल और जमुर्रद का हार पहिने हुये थे उनकी उंगुलियों में कोई अंगूठी नथी परन्तु कानों में बाले जिसमें मोती पड़े हुये थे पहिनेथे मिस्टर इस्कोबल साहब वकील खास सरकार और मिस्टर अनवरा-रटी साहब मिस्टर हैरन साहब को हिदायत से और मिस्टर स्नीवलेण्ड और मिस्टर लेवारनर साहब श्रीमान् गवर्न्नरजनरल वैसराय की ओर से मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात के लिये इज-लास में आये और सरजण्ट बेलनटाइन साहब और मिस्टर बैन्सन और मिस्टर परसल और मिस्टर शान्ता रामनारायण बहिदायत मिस्टर जेफरसिन और पीनसाहबके वास्ते जवाब देही गायकवाड़ की ओर से इजलास में आये और मिस्टर वासदेव जग्गनाथ वकील हाई कोर्ट मल्हरराव को ओर से सम्पूर्ण काररवाई मुक़द्दमे की देखरहे थे ॥

ग्यारह बजे पर बीस मिनट आने के उपरान्त साहबान कमीशन की इजाजत से एक अहल्कार ने उस प्रोक्लेमेशन के तर्जुमे को जोकि जबान मरहटी हिन्दुस्तानी में मिस्टर फिलन साहब मुतरज्जिम ने तर्जुमा कियाथा पढ़ा ॥

सरकार के मुख्य वकील ने साहबान कमीशन के रूबरू अरज किया कि खुलासा लिखने वाले इस काररवाई के पहिले से मुक़र्रर होगये हैं और जो कुछ साहबान कमी-शन को इस विषय में ज़रूरत होगी तुरन्तही उसकी ता-मील कीजावेगी सरजन्टबेलनटाइन साहब ने कहा कि एक बात अरज करनी मुझको भीहै हमको ज़रूरत गवाहों की होगी उनका बुलाना आपको जरूर होगा और श्रीमान् मल्हराव के वास्ते उनकी गवाही निहायत जरूर है यद्यपि

उनके बुलाने का उपाय हमने अपनी तौर पर किया है परन्तु अगर वह न आवें तो आप हमको सहायता देंगे ॥

प्रेजीडेन्ट साहब ने इसबात को सुनकर उत्तर दिया कि हम सब बातों के मदद देने पर राजी हैं सरजन्टबेलनटाइन साहबने इस विषय में शुकर अदाकिया और कहा कि खुलासा लिखने वाले दोनों ओर से मुकर्रर हुये हैं फिर भी अशुद्ध होने का संदेह हो तो वह लिखने वाले परस्पर अपने २ इजहारात मिलालेंगे ॥

गायकवार के विष देने के मुकद्दमे में सरकार
के वकील की स्पीच।

मिस्टर आर, इन्कोबल साहब अपने स्थान से खड़े हुये और एक स्पीच मल्हरराव गायकवार पर जुर्म ठहरा देनेमें सरकार की ओर से पढ़ी ॥

मेरे लार्ड प्रेजीडेण्ट और आप महाराजान और साहिबान कमीशन मेरी तक़रीर पर ग़ौर फरमावें अब मैं सरकार की ओर से संक्षेप रीति से उन अपराधों का बयान करता हूं जो कि मल्हरराव के ऊपर ठहराये गये हैं और जिन अपराधों की तहक़ीक़ात के वास्ते यह कमीशन नियत हुई है हमने बहुतसे लोगोंसे गवाहियांलीं उनसे मालूम हुवा कि मल्हरराव के ऊपर एक बड़ा जुर्म नियत होता है और उनके ऊपर चार अपराध ठहरायेगये परन्तु उन चारों को हम नीचे इस भांति पर संक्षेप कर लिखतेहैं पहिले तो यहहै कि श्रीमान् मल्हरराव ने अपने नौकरों के द्वारा करनैलफियर साहब और रेजीडेन्सीके नौकरों को बहकाया और दूसरे यह कि उन्होंने स्वत: अपने नौकरों के द्वारा करनैल फियरसाहब केनौकरों से और रजीडेन्सी के नौकरों से उनके स्वामी को विष दिलवाया मैं सम्पूर्ण गवाहियां कि जिनसे कि मुक़द्दमा साबित होता है इस जगह फ़जूल समझता हूं क्योंकि धीरे धीरे आपके रूबरू सब गवाहियां तसदीक़ हो जायेंगी ॥

परन्तु मैं इस मुक़द्दमे का वृत्तान्त संक्षेप मे आपके जेहन नशीन करता हूं क्योंकि यह कमीशन जोडीशल नहीं है किन्तु केवल मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात करके श्रीमान् नव्वाब गवर्न्नर जनरल बोर्ड के इजलास में अपनी रिपोर्ट पेश करेगी और खास अपने तौर पर एक राय नहीं दे सक्ती है पसमैं सम्पूर्ण वृत्तान्त इस मुक़द्दमे का संक्षेप में आपके रूबरू पेशकरताहूं अभी आपके सामने इश्तिहार पढ़ा गया मैं उसके मुताबिक अपनी तकरीर इस मुक़द्दमेके विषय में करूंगा मैं रेजीडन्सी के नौकरों के बहकाने की तारीख उस वक्तसे खयाल करता हूं जबकि पहिली कमीशन बड़ौदे में नियत हुईथी तो मालूम हुवा कि पहिली कमीशन तारीख २८ अक्तूबर सन् १८७३ई० को शुरूअ हुईथी और बराबर दो महीने तक अर्थात् नवम्बर डिसम्बर मुकद्दमेंकी तहक़ीक़ात होती रही इन महीनों में जासूस सालिम और यशवन्तराव के द्वारा श्रीमान् मल्हरराव ने रेजीडेन्टके नौकरोंसे विष दिये जाने की साज़िश की यहां तक कि सिरफ रेजीडेन्ट के नौकरही नहींथे किन्तु खास निजके नौकर रजीडेन्ट साहब के भी अपने स्वामी के विष दिये जाने के लिये तय्यार किये गये थे उस समय साहब रजीडेन्ट यहां के करनैल फ़ियर साहब थे और जिस समय का मैं ज़िकर करता हूं उनकी मेम साहब भी बिलायत नहीं गईं थीं किन्तु मुकाम बड़ौदे में थीं पहिले श्रीमान् मल्हरराव ने करनैलफियर साहब को विष देने की आया से वार्त्ता शुरूअकी यह आया फियर साहब की मेम साहिब के जाने के उपरान्त फियर साहब की लड़की अर्थात् ब्यूबीसाहब की मेमसाहिबाके पास नौकर थी इस आया का नाम अमीना है और यह बहुत मुद्दत से करनैलफियर साहबके पास नौकर थी और फियरसाहिब की मेम साहिब के मिजाज में इसको इतना दखलथा कि सब बातें मेम साहिबा इससे कह दिया करती थीं यह

श्रीमान् मल्हरराव के पास तीन वेर गई थी—पहिली वेर वह उस समय गई थी जब कि पहिले कमीशन शुरू हुई थी अर्थात् सन् १८७३ ई० के अन्तमें दूसरी बार—पहिली कमीशन के पूर्ण होने पर गई थी जब कि श्रीमान् मल्हरराव नौसारी से आये थे अर्थात् मई सन् १८७४ ई० में और तीसरी बेर—फियर साहब के विष दिये जाने के कुछ दिन पहिले गई थी इन तीनों मरतबे खास महाराज और आया से बातें होती रहीं यह एक जासूस के साथ कि उन दो जासूसों का जिनका मैं वर्णन पहिले कर चुका हूं गई थी इससे जो वार्त्ता हुई वह आपको इसके इजहार लेने के समय मालूम होगी पहिली वेर इसके साथ फैजू भी गया था और यह गाड़ी में सवार होकर श्रीमान् मल्हरराव के महलमें गई और सालिम इसको महाराज के रूबरू लेगया महाराजने इससे यह वार्त्ताकी कि तुम अपनी मेम साहिबा से हमारी सिफारिश करो ताकि वह साहिब से कह देवें कि वह हमारे हाल पर मेहरबानी करें—दूसरी बार उसके साथ करीम गया था और महाराजसे बड़ी देर तक वार्त्ता होती रही—तीसरे दफे वह रमजान के महीने में गई थी और सालिम अपने साथ उसको लिवा ले गया था और दाऊद की गाड़ी में बैठकर गयेथे साहिबान कमीशन को मालूम होगा कि इन तीनों दफे में सिवाय आया और महाराज के और उन दो जासूसों के कोई और न था पहिली वेर में आया को कुछ श्री मल्हरराव ने नहीं दिया परन्तु सालिम ने दोसौ रुपये करीम और अमीना को दिये दूसरी मरतबा पचास रुपये महाराज ने आया को दिये और उसकी तहक़ीक़ातके वास्ते अगर आपकी मरजी होगी तो दफा १६७ कानून शहादत के अनुसार आया के पति को बुलाऊंगा उस मनुष्य का नाम अब्दुल्ला है और उस शख़्सके इक़रार से पचास रुपये का दिया जाना साबित हो

जावेगा किन्तु कुछ इसके पति अब्दुल्लाकी गवाही की जरूरत नहीं है क्योंकि आया के घरमें कई कागज ऐसे पाये गये कि जिनसे पचास रुपये का दिया जाना साबित है यह कागज चार खत हैं दोतो आया ने अपने पतिको लिखे हैं और दो उसके पतिने आया को लिखे हैं इन खतों में सम्पूर्ण कार रवाई जो महाराज और आया में हुई लिखी है साहिबान कमीशन को उन खतों के देखने से फिर तहकीकात करने की आवश्यकता न होगी॥

इस बातको सुनकर सरजन्ट वेलनटाइन साहब ने बहुत धीरे से कहा कि जो कुछ कि साहबान कमीशन स्वीकार करें वह सब ठीक और सच है परन्तु उन खतों को अभीसे गवाही में लाना खिलाफ मालूम होता है आया के हाजिर करने के समय जो यह खत पेश किये जावें और साहबान कमीशन उनका पेश किया जाना उचित समझें तो उस दशा में कुछ हानि नहीं है॥

मिस्टर इसकोवल साहब ने उत्तर दिया कि वह खत गवाही के लायक़ है परन्तु जब तक कि कमीशन के मेम्बर उन चिट्ठियों को न मांगेंगे हम उनको पेश न करेंगे॥

जब कि आया से इज़हार लिये गये तो आया बहुत बीमार थी और इस बातसेसाहबान कमीशन को साबित हुवा होगा कि उसके मनमें अपने अपराध का बड़ा खयालथा अब मैं दो और नौकरोंका बयान करता हूं यह खासनिज के नौकर साहब रेजीडेन्टके हैं और उन्होंनेभी बसवबसाजिश के बहुतसा रुपया श्रीमान्मल्हरराव से पाया था उनमें से एक पेडरू है यह शख्स करनैल फियर साहब का खानसामां था उसको पचास रुपये महाराज ने दिये थे और यह आया के साथ गया था परन्तु अब यह वहांके जाने से इन्कार करता है॥

अब मैं वह हाल आपके रूबरू बयान करता हूं कि जिस तरह करनैल फियर साहब को विष दिया गया परन्तु

यह ईश्वरही का अनुग्रह था कि उनके प्राण बचगये नहीं तो कोई बात हिलाकत की बाक़ी न रही थी—९ नवम्बर सन् १८७४ ई० को विष देने का हाल मालूम हुवा और उस दिन से दो रोज पहिले भी विष दिया गया था परन्तु उद्योग सिद्ध नहीं हुआ· रावजी जो रेजीडेन्सी का हवालादार था उसने जहर दिया था रावजी सालिम के साथ श्रीयुत मल्हरराव के महल में गया और उसके द्वारा सम्पूर्ण कारवाई पहिले कमीशन की गायकवार को मालूमहोती रहती थी इसको पांच सौ रुपये महाराज ने दिये थे जब कि महाराज नौसारी से बिवाह करके आये तो इसी हवालदार को आठ सौ रुपये और दिये थे जब कि सालम के घर की तलाशी हुई तो उसके घरमें से एक गड्डी कागजों की निकली उन चिट्ठियों से विष का दिया जाना और भी साबित है और मैं जरूरत पर उनको पेश करूंगा एक बात और भी सबूत की है कि रावजी हवालदार की तनख़ाह तो कम है और जो कि इसने इस समय में खर्च किया था वह बहुत जियादह था तो इससे बखूबी हम को जाहिर हुवा कि जरूर इसको रुपया गायकवार से मिला है॥

मैं रावजी के सबूत में कई खत ऐसे पेश करूंगा जो कि रावजी ने अपनी स्त्री को लिखे थे और जिस में इस रिशवत का हाल लिखा है॥

मैं अब उस कैफियत को बयान करना चाहता हूं कि जिस तरह पर जहर के देने का हाल मालूम हुवा यह तो हम पहिले बयान कर चुके कि हवालदार रावजी ने जहर दिया था परन्तु अब उसकी कैफियत सुनिये कि करनैल फियर साहब हर सुबह के वक्त हवाखाने के वास्ते जाया करते थे और वहां से लौट करके एक खास कमरे में जहां नहाने और मुंह हाथ धोने का सामान रक्खा रहता था वहां आते थे अब्दुल्ला खिदमतगार उनके आने

से पहिले चकोतरे का शर्बत तय्यार कर रक्खा करता था और फियर साहब उसको हर रोज पीलिया करतेथे ९नवम्बर के रोज अब्दुल्ला ने बदस्तूर शर्बत बना कर रक्खा हवालदार रावजी वहां गया और करनैल फियर साहब के शर्बत में एक जहर की पुड़िया मिला दी इस जहर में संखिया और हीरे का चूरा मिला हुआ था करनैल फियर साहब जब हवा खोरीसे आयेतो उन्होंने दो तीन घूंट शर्बत के पिये मगर चूंकि इस शर्बत में विष मिला हुआ था इस सबब से बेस्वाद मालूम हुवा फियर साहब ने यह बात खयाल करके कि चकोतरह जिसका यह शर्बत बनाया गया है खराब होगा शर्बत को फेंक दिया परन्तु उनके सिर में दर्द होता रहा और जी मतलाया किया उन्होंने उस बरतन में जो देखा तो उनको मालूम हुवा कि सियाह रंग की गाद उस बरतन में जमीहै इस बात को देखकर एकचिट्ठी डाक्टरसीवर्ड साहब को लिखी और अपनी नादुरुस्ती तबीयत का हाल सब उसमें लिखा डाक्टर सीवर्ड साहिब फौरन् चिट्ठी के देखतेही करनैल फियर साहब के पास आये और देखा कि संखिया और कोई चमकती हुई वस्तु बरतन के नीचे जमी हैं परन्तु अपने तजुर्बे पर उनको निश्चय न हुवा और उन्होंने कुल कैफियत लिख कर डाक्टर ग्रीसाहब को बम्बई में भेजी और एक पुड़िया उस वस्तु की भी जो उस बरतन में जमगई थी भेजी पस डाक्टर ग्रीसाहब और डाक्टर सीवर्ड साहब की राय मुत्तफिक्क हुई जब कि दो डाक्टर लोगों का एक मत है तो इसमें सन्देह नहीं कि करनैल फियर साहब को जरूर संखिया दी गई होगी सिवाय इस बात के एक और भी सबूत है कि सालम और यशवन्त राव सुबह के वक्त रेजीडन्सी में गये इससे साफ मालूम होता है कि विष दिये जाने के हाल मालूम करने के वास्ते गये थे और उससे साफ मालूम होता है कि इनके

रजीडन्सी से कोई मुख्य कार्य्य न था और यह जरूर विष का हाल मालूम करने के वास्ते गये होंगे जब उन दोनों से इजहार लिया गया और पूछा गया कि तुम किस वास्ते रजीडन्सी में गयेथे तो उन्हों ने उत्तर दिया कि हम महाराज की ओरसे डाली लेकर गयेथे यद्यपि इसमें संदेह नहीं है कि फियर साहब के पास उस दिन डाली पहुंची परन्तु यह दोनों छ:बजे से पहिले गये थे और डाली आठ बजेके उपरान्त पहुंची एक बात और भी लिखने के योग्य है कि जब डाक्टर सीवर्ड साहब के नाम चिट्ठी फियर साहब ने लिखी थी तो उस बात की इत्तिला करने के वास्ते सालिम रावजी हवालदार के घर पर गया था॥

मैंने पहिले यह वर्णन कियाहै कि विषमें संखिया अवश्य थी क्योंकि संखिया को जहर सब जानते हैं और हीरे के चूर्णके लिये मैं इतना कह सक्ता हूं कि हिन्दुस्तान में यह बात प्रसिद्ध है कि हीरे का चूर्ण जहर होता है और आप को डाक्टर शेवर्स साहब की किताब का हवाला देता हूं कि वह लिखते हैं कि हिन्दुस्तानी मनुष्य हीरे के चूर्ण को जहर जानते हैं गवाही दामोदर पन्थ की लायक़ ख़ुयाल करने के है यह महाराज गायकवार का प्राइवेट सेक्रेटरी था उसके पास तहवील में खानगी हिसाब गायकवार के थे पहले दामोदरपंथने मल्हररावकी आज्ञासे दो तोले संखिया फौजदारी के दफ़्तर से मंगाया और वहां यह लिखा कि घोड़े की बीमारी के वास्ते इतनी संखिया की जरूरत है परन्तु वहां से संखिया न मिली और एक बोरा के यहां से संखिया हाथ लगी दामोदर पंथ अपने इजहार में इकरार करता है कि मैंने हीरेका चूरह हेमचन्द फतहचन्द की दूकान से पाया था उसको महाराज ने यशवंन्तराव को दे दिया मालूम होता है कि विष की पुड़िया में संखिया और हीरे का चूरा जरूर मिला था पहिले महाराज ने वह पुड़िया सालिम

को दीथी और सालिम ने रावजी को दी रावजीने छठी और सातवीं नवम्बर को यह पुड़िया करनैलफियर साहब के शरबत में मिलाई थी परन्तु करनैल फियर साहब को कुछ असर न हुआ महाराज ने इस बात को मालूम करके ९ तारीख़ को एक और पुड़िया दी और उसी पुड़िया की फंकी का चूरह बरतन की पेंदीमें जमरहा था रावजी का परतला जो देखा गया तो और कई पुड़ियां संखिया की मिलीं जो कुछ मैं कह रहा हूं उसको सचाई दामोदरपंथ और रावजी के इजहार पर मौक़ूफ है गवाहों के इजहार अलग २ लिये गये हैं जिस पर भी यह सब का एक बयान है इससे मालूम हुवा कि यह सब बातें सच्ची हैं दामोदरपंथ और रावजी ने अपने अपराध क्षमापन के इक़रार लेने के उपरान्त अपना इजहार दिया नरसू का इजहार बगैर कसूर मुआफ करने के लियागया है उसके बयान से बिलकुल सचाई मालूम होती है यह रजीडन्सी में बहुत दिनों से नौकर था जोकि इससे ऐसा खराब काम हुवा तो इसने कोशिश की थी कि कुएं में गिरके मरजाय परन्तु कमीशन के साहिबान् इस विषयमें भी ग़ौर फरमायेंगे तो खूब मालूम होगा कि इस मनुष्यने जरूर विष देने को कोशिश की थी दामोदरपन्थ की गवाही गायकवार के कागजों से सबूत होती है क्योंकि उन कागजों में बहुत से खर्च ऐसे लिखे हुये हैं कि जो गायकवार ने रजीडन्सी के नौकरों को रुपया दिया था महाराज के खानगी हिसाब में उसने लिखा है कि तीन हजार रुपयेके हीरे मोल लिये गयेथे और एक जगह लिखा है कि अठारह सै रुपये का तेल गायकवार ने मंगवाया पस यह सब फरजी हिसाब मालूम होते हैं हेमचन्द जौहरी के इजहार भी आप के सामने लिये जावेंगे उनसे आपको मालूम होगा कि किस क़दर चोरी दामोदरपन्थके हिसाबमें है और कितने रुपये के हीरे दामो-

दरपन्थ ने हेमचन्द से गायकवार के वास्ते मोलिये थे॥

अब मैं वह हाल कहता हूं कि जिससे गायकवार के ऊपर खास मुक़द्दमा साबित होता है महाराज गायकवार हर सोमवार और ब्रहस्पतिवार को करनैल फ़ियर साहब की मुलाक़ात को रज़ीडन्सी में जाया करते थे नवीं नम्बर को सोमवार था कि महाराज दस्तूर के माफ़िक करनैल फ़ियर साहब की मुलाक़ात को गये यदि उसदिन करनैल फ़िअर साहब की तबीयत ज़हर मिले हुये शर्व्वत पीने के कारण कुछ अलील थी परन्तु मुलाक़ात महाराज से की और कहा कि आज मेरी तबीयत अच्छी नहीं है महाराज ने कहा कि तबीयत मेरी भी अच्छी नहीं है और आज सम्पूर्ण शहर में यही बीमारी है यह सुनकर करनैल फ़ियर साहब चुपहोरहे यदि दामोदर पन्थका बयान सच है तो यह बात गायकवार को मालूम होगई थी कि करनैल फ़ियर साहब को विष दियागया क्यों कि उन्होंने लौटते वक्त रास्ते में यह कहाथा कि करनैलफ़ियर साहबको आज विष दियागया है साहिबान कमीशन को भी यह बात मालूम होगी कि ऐसी बातें छिप नहीं रहसक्ती हैं सम्पूर्ण शहर में उसीदिन इसबात की खबर उड़गई कि किसीशख़्सने करनैलफ़ियर साहब को ज़हरदिया है जब गायकवार ब्रहस्पतिवार को आये तो उनके साथ मिस्टर दादाभाई नूरूजी भी थे उन्होंने कहा कि हमने ऐसी खबर शहर में सुनी है कि आपको किसी मनुष्य ने विष दिया है थोड़ी देर के पश्चात् महाराज ने एक याददाश्त करनैलफ़ियर साहब को इस मजमून की लिखभेजी कि हमने सुना है कि आपको किसी बदमाशने विषदिया है यदि आप कहें तो हम उसकी तहक़ीक़ात करें अब यह बड़े आश्चर्य्य की बात है कि अगर गायकवार को कुछ बनावट नथी तो इतने दिन पीछे यह याददाश्त क्यों भेजी उनको चाहिये था कि जिसरोज़ ज़हरदिया गया था या

जिसदिन उन्होंने सुना था उसीदिन याददाश्त भेजते॥ अब मैंने सम्पूर्ण वृत्तान्त इस मुक़द्दमे का कमीशनके लोगोंकेसामने इस वास्ते बयान किया कि आप सबलोग इसपर गौरकरें॥

जब आप सब साहिब गवाहों के इज़हारात सुन लेंगे और सरजे व्हबेलन टाइन साहब भी अपने सवालात करलेंगे तबमैं अपनी राय इस मुक़द्दमे में दूंगा और इस समय जिन कामों में ज़रूरत होगी बहस करली जावेगी मुझको और कुछ कहना बाक़ी नहीं रहा अब आप आनन्द से गवाहों को बुलवाइये इसके पहले कि वकील सरकार अपनी तकरीर कहकर बैठें उन्होंने यहभी कहाकि यहां थोड़े गवाह ऐसे हैं कि जो अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी को बिल्कुल नहीं जानते हैं इस कारण उनके इज़हारात लेने के वास्ते एक बन्दोबस्त करना ज़रूर है सरजन्ह बेलनटाइन साहब ने उत्तर दिया कि जिस ज़बान में जो मनुष्य इज़हार देगा उसका वैसा ही बन्दोबस्त किया जायगा इस बात को साहब प्रेज़ीडण्ट ने स्वीकार किया॥

अमीना आया का इज़हार॥

अमीन आया का इज़हार मिस्टर अनवरारटी साहब ने लिया और फिलन साहब उसका तर्जुमा करते जाते थे॥

आया ने कहा कि मेरा नाम अमीना है मुझ को वह समय याद है जब कि मुक़ाम बड़ौदे में पहिली कमीशन मुक़र्रर हुई थी मैं उस समय कारनैल फ़ियर साहबकी मेम साहिबह के पास नौकर थी और जब तक वह इंगलिस्तान को नहीं गई थीं मैं उन्हींके पास रहती थी उनके इङ्गलिस्तान में जाने के उपरान्त मैं उनकी बेटी जो कि बोवी साहब की मेम साहबह हैं उनके पास नौकर रही मैं गायकवार को ख़ूब जानती हूं और उनके महल में तीन मरतबे गई थी पहले मरतबे जब मैं फ़ियर साहब की मेम साहिबह के पास नौकर थी और दो मरतबे जब मैं बोवी साहब की मेम

साहिबह के पास नौकर थी तब गई थी मैं उनके पास पुराने महल में गई थी मुझको यह बात याद नहीं है कि मैं किस समय उनके पास गई थी परन्तु यह जानती हूं कि रात थी पहिली मरतबा मेरे साथ फैजू गया था रजीडन्सी के हाते में जो कुआं है वहां तक मैं और वह पैदल गये और वहां से एक गाड़ी में सवार होकर बहुत दूर चल कर एक बड़े मकान के दरवाजे के पास हमारी गाड़ी ठहरी और सालिम हमारे पास आया सालिम और हम और फैजू तीनों महल के भीतर सीढ़ी पर चढ़के एक मकान खास में जहां महाराज बैठे थे गये॥

मिस्टर मैलवल साहब ने पूछा कि वह किस तरह का बना हुआ मकान था और उसमें कै दरवाजे थे?॥

उ०–मुझको याद नहीं है। प्र०–मिस्टर अनवरारटी साहब ने पूछा क्या वह मकान सीढ़ी से मिला हुआ था या तुमको जीने पर चढ़के कुछ दूर जाना पड़ा था परन्तु मिस्टर सरजन्ट बेलन टाइन साहब ने आया को उसके उत्तर देने से निषेध किया क्योंकि यह सवाल बेकार था। प्र०– मिस्टर अनवरारटी साहब ने फिर पूछा कि तुम जीने के ऊपर चढ़ के कहां गईं? उ०– मैं एक कमरे में गई और सालिम महाराज को मेरे आने की इत्तिला करने गया थोड़ी देर के उपरान्त सालिम और महाराज दोनों वहां आये महाराज आकर एक चौकी पर बैठ गये मैं और फैजू फर्श पर बैठे और सालिम खड़ा रहा महाराज ने मुझ से पूछा कि कुछ मेम साहिबह हमारे विषय में तो कोई बात नहीं कहती थीं मैंने कहा मुझसे आपके विषय में कोई बात नहीं कही थी महाराज ने कहा कि अगर मेम साहिबा कुछ हमारी निस्बत में कहें तो तुम हमको सालिम और यशवन्त राव के द्वारा खबर देना मुझसे और महाराज से केवल इतनीही बातें पहिली बेर हुईं फैजू ने अपने लड़के के वास्ते

जो कि पहिले से महाराज का नौकर था तरक्की की सिफा-रिश की परन्तु मुझको याद नहीं कि उसका उत्तर महा-राज ने क्या दिया फिर मैं घरको चली आई दूसरे दफे तब मैं महाराज के पास गई थी जब महाराज नौसारी से आये थे॥

इस्कोबल साहब ने कहा कि हमारी और सरजन्ट बेलन्टाइन साहब की राय है कि हम दूसरी अप्रैल से लेकर १९ मई सन् १८७४ ई० तक के हालात का जब महाराज नौसारी में थे इजहार लें और सिवाय इसके और इजहारात लेने में हमारा वक्त खराब होगा॥

अमीना बयान करती है कि जून के महीने में महाराज नौसारी से पलट आये तब मैं फिर महाराज के महल में गई क्योंकि सालिम और करीम ने मुझको वहां जाने के लिये बार २ कहा था और करीम भी मेरे साथ गया उस समय पानी बरस रहा था मार्ग में मुझको सालिम मिला और हम तीनों उसी मकान में जहां पहिले गये थे गये॥

सालिम ने बदस्तूर मेरे आने की महाराज को इत्तिला की महाराज आकर उसी चौकी पर बैठ गये जिस पर पहिले बैठे थे मैं और करीम महाराज के सामने फर्श पर बैठे महाराज ने मुझसे पूछा कि बोवी साहब की मेम साहि-बह तो मेरे विषयमें कुछ नहीं कहतीं थीं मैंने और करीम ने उत्तर दिया कि हमसे कुछ नहीं कहतीं थीं मिस्टर बोवी साहब को कुछ अधिकार नहीं है और न उनकी मेम सा-हिब तुम्हारे लिये कुछ कह सक्ती हैं यह कह कर मैंने महाराज को सलाम किया और वहां से विदा हुई थोड़ी देर के उपरान्त सालिम ने मुझसे आकर कहा कि यशवन्त राव के घर जाकर दो सौ रुपये ले आना मैं वह रुपये ले आई और उसमेंसे सौ रुपये मैंने लिये और सौरुपये करीम को दिये॥

टिफन खाने के वास्ते जल्सह बरखास्त हुआ ॥

टिफन खाने के उपरान्त फिर इजलास शुरू हुवा मल्हरराव गायकवार टिफन के उपरान्त इजलास में उपस्थित न थे ॥

अमीना बदस्तूर अपना इजहार बयान करतीथी तीसरी मरतबे मैं रमजान के महीने में महाराज की हवेली में गई इस मरतबे मेरे साथ कुट्टू नामक एक लड़का था मैं बदस्तूर गाड़ीमें बैठ कर महाराज की हवेलीमें पहुंची सालिम को मैंने महाराज की हवेली के दरवाजे पर पाया सालिम ने बदस्तूर जाकर महाराज को मेरे आने की इत्तिला की महाराज उसी मकान में जहां दो मर्त्तबे पहिले मुझसे मिले थे मिले जो कि मैंने सरकार अंगरेजी का नमक खाया है इस कारण सच सच बयान करती हूं मैं कुछभी न छिपाऊं गी उस मरतबे महाराजने मुझसे पहिले यह पूछा कि बीबी साहब की मेमसाहिबह तो मेरे विषय में कुछ नहींकहतीं थीं मैंने उत्तर दिया जब हमारी बड़ी मेमसाहिबा यहां आवें-गी तब हम आपकी सिफारिश करेंगी और बीवी साहबकी मेमसाहिबह आपके वास्ते कुछ नहीं कर सक्ती है फिर सालम ने कहा कि साहब के ऊपर जादू असर कर सक्ता है या नहीं मैंने महाराज और सालिम दोनों से कहा जादू का नाम नलो साहब लोगों पर जादू असर न करेगा अगर तुम कुछ उन पर करोगे तो अच्छा नहोगा मुझको जादूका नाम सुन कर बड़ा भय हुवा और मैं महाराज से बिदा हो कर चलने लगी परन्तु सालम ने मुझको बैठा लिया और कहने लगा कि ऐसी जल्दी न करो हमारी बात सुनो तुम्हारी जन्म भर की रोटियां महाराज के यहां होजावेंगी और महाराज तुमको निहाल करदेंगे महाराजके दिलकी बातको पूरा करो और महाराज तुम्हारे पति कोभी नौकरी देंगे यह सुन कर मैंने उत्तर दिया कि अब तक मैं भूखी नहीं मरती थी मैंने अंगरेजी नौकरी की है मुझको कुछ महाराज की

नौकरी की चाह नहीं इतना कह मैं वहां से चली और चलने के वक्त कहा कि तुम किसी के कहे में आकर साहब पर कुछ मत करना अगर साहब पर कुछ नुकसान पहुंचेगा तो तुम्हारे हक्क में बुरा होगा यह सुन कर महाराज अप्रसन्न हुये और सालिम से कहा आया को यहां से लेजावो फिर सालिम ने थोड़ी देर के उपरान्त पचास रुपये मुझको दिये और जो कुछकि हाल गुजरा था मैने सब अपने पति को कि वह मुझ से बहुत दूर था खतके द्वारा इत्तिलादी और उसको अपने पास बुलवा लिया और जो पत्र कि मैंने अपने पतिको लिखे थे वह सब अब्दुल रहमान से लिखवाये थे। प्र०-मिस्टरअनबरारटी साहब ने आया से पूछा कि तुमने सूटर साहब के साम्हने यह इजहार दिये थे या नहीं ? उ०-हां मैंने सब इजहार दिये परन्तु मैं बीमार थी डाक्टर सावर्ड साहब इसबात को खूब जानते हैं और उन्होंने मेरा इलाज किया था॥

सरजन् बेलनटायन साहब के प्रश्न॥

प्र०-तुमने पचास रुपये क्या कियेथे ? उ०-मैंने रमजान के महीने में फकीरों को खाना खिलाया। प्र०-क्या उस वक्त तुम और तुम्हारे पति एकही मकान में रहते थे ? उ०-हां साहब एकही मकान में रहते थे। प्र०-क्या उस को तुम्हारे इस पचास रुपये का हाल मालूम होगया था ? उ०-हां साहब मैंने कहदिया था। प्र०-तुमने कुलकैफियत इन रुपयों की बयान करदी थी ? उ०-बहुत रोकर उत्तर दियाऔर एक मुट्ठा कागजों का निकाला कि यह मेरे सारटीफिकट हैं साहब मैं झूठ नहीं बोलती हूं मैं पांच मरतबे इंगलिस्तान होआई हूं इस बात को सुन कर सम्पूर्ण इजलास हंसने लगा। प्र०-वह जो सौ रुपये पहिले तुमको महाराज से प्राप्त हुये थे उसका भी हाल तुमने अपने पति से बयान किया था ? उ०-हां मैंने कहा था करीम को और मुझको दो सौ रुपयों में से आधा २ मिला है और यह भी कहा

था कि यह रुपया महाराज नें अपने विवाह के इनाम में मुझको दिया है। प्र०—हमें मालूम ज़वा कि तुमने अपने पति से यह नहीं कहा कि महाराज ने यह रुपया वास्ते जहर देने करनैलफियर साहब के बतौर साजिश के दिया है? उ०—विष देने का तो महाराज ने कुछ मुझसे चरचा नहीं किया था। प्र० तुमसे महाराज ने इशारे में कहाथा कि करनैलफियर साहब को जहर दो? उ०—मुझसे तो कोई बात ऐसी नहीं कही। प्र०—जब तुम तीसरी बार गई थी तों तुमसे कुछ इसके बारे में कहा तो था? उ०—यह बात तो मुझसे नहीं कही थी कि जहर दो परन्तु उनके कहने से कुछ सन्देह ज़वा था। प्र०—तुसने अपने पति से साफ २ क्यों न कहा कि महाराज हमसे ऐसा कहते थे? उ०—मुझको एक बाजारी खबर मालुम ज़ई इस सबब से मैंने यह बात जाहिर न को। प्र०—अच्छा तुम यह बताओ कि महाराज के कहने से तुम क्या समझी थी? उ०—मैं कुछ जहर की निस्बत नहीं समझी थी। प्र०—अच्छा महाराज और सालिम की बात्तों से तुम को बिष देने का खुयाल ज़वा था? उ०—हां मुझको कुछ संदेह ज़वा था और मैं इसी वास्ते महा भयभीत ज़ई थी। प्र०—अच्छा जब तुम अतिभयभीत ज़ई थी तो फिर किस वास्ते अपने पतिसे उसकी इत्तिला नहीं की? उ०—मैंने केवल इतनाही अपने पति से कहा था कि साहब के दिल फेरनेके वास्ते महाराज कुछ देना चाहते हैं कुछ जहर देने के विषयमें मैने बयान नहीं किया। प्र०—तुमको निश्चय था कि केवलमहाराज करनैलफियर साहब के दिल को फेरना चाहते थे या उनका मतलब जहर देने से भी था? उ०—मैं उनका मतलब जहर देने से समझी थी क्योंकि मैंने पेडरू और रावजी हवालदार को बातें करते सुना था प्र०—क्या तुमको पेडरू और रावजी के कहने से मालुम ज़वा था कि महाराज बिष दिया चाहतेहैं या तुमको सालिम और महाराज

के कहने से साबित हुवा था? उ०—नहीं मुझको केवल पेडरू और रावजी की बातों से मालूम हुवा था। प्र०—अगर यह दोनों तुमसे कुछ बात न कहते तो तुमको क्या सन्देह न होता? उ०—अगर यह दोनों न कहते तो मुझको विषकी निस्बत कुछ खयाल न होता। प्र०—तुमको पेडरू और रावजी ने जहर के विषय में कब कहा था? उ०—वह महाराज के बड़े हितू हैं। प्र०—मैं यह पूछता हूं कि उन दोनों ने तुमसे कब कहा था? उ०—पेडरू और रावजी ने मुझसे कुछ नहीं कहा था वह दो शख्स और हैं जिन्हों ने मुझसे कहा था। प्र०—तुमने अभी हमसे कहा था कि पेडरू और रावजी ने हमसे कहा था? उ०—मैने सोच समझ के नहीं कहा। प्र०—क्या तुम इस समय बदहवास हो। उ०—मैं अच्छी हूं परन्तु मेरे हाथ पांव इस समय गिरे जाते हैं? प्र०—अच्छा अगर पेडरू और रावजी ने तुम से नहीं कहा फिर उन दोनों मनुष्यों का नाम बताओ। उ०—उन दोनों शख्सों का नाम करीम और काज़ी है। प्र०—उन्हों ने तुमसे कब कहा था? उ०—जब मैं महाराज के यहां तीसरी मरतबे गई थी उससे एक महीना पहिले उन्हों ने मुझसे फकत यह बयान किया था कि महाराज किसी साहब को विष देना चाहते हैं। प्र०—तुम केवल इस बातसे कि किसी साहबको जहर देना चाहते हैं फियर साहब का नाम क्योंकर समझ गईं? उ०—मैंने एक क़रीने से समझा कि महाराज को सिवाय करनैल साहब के और किसी से प्रयोजन नहीं है। प्र०—फिर तुमने साहब से क्यों न कहा कि महाराज आप को विष देना चाहते हैं? उ०—यह बात सिर्फ मैं विचार से समझी थी किस निश्चय पर साहबसे बयान करती प्र०—मुझको उत्तर दो कि तुमने साहब से कहा या नहीं? उ०—नहीं कहा। प्र०—क्या तुमको यह खयाल न हुवा कि अपने स्वामी के प्राण को इतनी इत्तिला करदेने से चाहो वह

खयाली हो बचालें? उ०-मुझको यह खयाल नहीं था कि कोई नौकरों में से विष देगा नहीं तो मैं अवश्यही इत्तिला कर देती। प्र०-क्या तुमको कुछ भी इसका खयाल नहीं था कि फियर साहब के नौकर साहब को जहर देंगे? उ०-हां मैं सागन्द खाके कहती हूं कि मुझको इसका खयाल न था। प्र०-तुमने पेडरू और रावजी का जो नाम लिया था वह किस वास्ते लिया था? उ०-मैंने इस सबब से नाम लिया था कि वह महाराज के हितू और उनका भेद जानने वाले हैं परन्तु मुझको यह विश्वास नहीं था कि पेडरू और रावजी साहब को विष देंगे। प्र०-तुमको क्यों निश्चय न था? उ०-मैंने आज तक नहीं सुना था कि किसी नौकर ने अपने मालिक को सरकार की अमलदारी में जहर दिया हो। प्र०-फिर तुम को किस बात का भय हुवा? उ०-मुझको इस बात के सुन ने से भय हुआ। प्र०-जब तुम इस बात को झूठ समझती थी तो फिर तुमको क्यों भय हुआ मैं इस वास्ते डरी थी कि कहीं महाराज मुझ को मरवा न डालें। प्र०-अगर तुमको अपने मारे जाने का खौफ था तो तुमने किस वास्ते फियर साहब से इत्तिला नहीं की? उ०-मैंने इसलिये इत्तिला नहीं की कि मुझको यकीन था कि कोई बंगले परसाहब को नहीं मार सकेगा। प्र०-तुमने अपने पति से विष देने के विषय में कुछ कहा था? उ०-हां मैंने कहा था कि महाराज कर-नैल फियर साहब को विष देना चाहते हैं। प्र०-तुमने यह कब कहाया? उ०-मुझको नहीं मालूम। प्र०-अच्छा खयाल करकेयाद करो कि कब कहाथा? उ०-मैंने अपने पतिसे विष देने के विषय में कभी नहीं कहा था। प्र०-अच्छा खयाल करो कि कभी तुमने कहा था या नहीं? उ०-मुझको बिल्कुल याद नहीं पड़ता कि मैंने विष के विषय में कुछ कहा था या नहीं। प्र०-अच्छा तुमको क्या याद पड़ता है? उ०-इतना मैंने अपने पति से बयान किया था कि मुझसे महा-

राज ने फकत इतना कहा है कि साहब को कोई ऐसी वस्तु देना चाहिये जिससे उनका दिल फिर जाय। प्र०-यह तुम ने कब कहा था? उ०-जिस रोज मैं तीसरी बेर महाराज के यहां गई थी उसके एक दिन पीछे मैंने कहा था॥

अब साढ़े चार बजे का समय होगया था सरजन्ट बेलम टायन साहब ने साहबान कमीशन से कहा कि इजलास का बरखास्त होना अवश्य है क्योंकि जो आयासे मैं और अधिक प्रश्न करूंगा तो संध्या होजावेगी पस प्रेसीडेन्ट साहब ने इजलास को बरखास्त किया॥

कचहरी के साहबान की बांजों का बयान॥

टाइम्स आफ इण्डिया के खास कारस्पाण्डेण्ट के लेख से प्रतीत हुआ कि इस मकान में जहां कमीशन का इजलास शुरू हुआ पहले साहब कप्टन मिएट मजिस्ट्रेट की कचहरी थी परन्तु कमीशन के लिये कुछ थोड़े कमरे नये बनाये गये हैं सम्पूर्ण कचहरी का लम्बाव चौड़ाव सत्तर फुट लम्बा और पचीस फुट चौड़ा और पूर्व की ओर एक ऊंचा चबूतरह बना है जहां कि कमीशन के बैठने की जगह नियत है साढ़े दश बजे सलामी की तोपें दगीं उससे मालूम हुआ कि अब मेम्बरान कमीशन वास्ते इजलास के आनेवाले हैं पहले श्रीमान् महाराजा सेंधिया वहां आये और थोड़ी देर के उपरान्त सरल्यूइस पीली साहब और मल्हरराव एकहीगाडी परसवार होके आये और जो खास जगह गायकवारके वास्ते पहिले से नियत हुई थी वहां जाकर बैठे सररिचर्ड कौच साहब की कुर्सी बीच में थी और उनके दाहिनी ओर श्रीयुत महाराजा सेंधिया और बायें तरफ श्रीमान्महाराजा जयपुर बैठे हुये थे महाराजा सेंधिया अतिउत्तम वस्त्र पहिने हुये थे उनके आभूषण स्त्रियों के आभूषणोंसे भी सर्वोपरि थे श्रीयुत महाराजा जयपुर जो अपने देशके उत्तम प्रबन्ध करने केलिये विख्यातहैं उन्होंने वास्तवमेंउत्तमहीप्रबन्धकररक्खा है

उनकी सूरत से मालूम होताथा किवह निहायत होशियार और जहीन और बुद्धिमान हैं आंखोंपर सोनेकी ऐनक लगायेहुये उनकेमिजाज और सुन्दर बुद्धिसे मालूम होताथा किउनका तशरीफ लाना इसमुकद्दमेकेलिये बहुत अच्छा होगा गवाह आज के दिन अमीना थी इसकी सूरत के देखने के पहले जब मैंने इसका प्यारा नाम सुना था तो मैंने समझा कि कोई परिस्तान की परी या स्वर्ग की अप्सरा होगी परंतु अफसोस अमीना यद्यपि तेरी आंखें काली हैं परंतु उसकी सियाही ऐसी खराब है कि अंधियारी रात की सियाही को भी उसको नहीं पहुंचती है अमीना बुड्ढी है और मालूम होता है कि वह हुक्का पीती है क्योंकि इजार के समयइसने यह बयान किया किमेरी समझ अच्छी नहीं है यह पांच मरतबा इंगलिस्तान को भी गई है और इसके पास बहुत से सारटीफिकट भी हैं ॥

दूसरे दिन का इजलास ॥

बड़ौदा २४ फरवरी सन् १८७५ ई० ॥

आजके दिन नियमित समय पर मेम्बरान कमीशन मौजूद हुये पहले दिनसे आजबहुतमनुष्य थे और सूर्य्य की गरमीसे दिनभर बहुत गरमीरही ग्यारह बजेके समय सरल्युइस पीली साहबके साथ मल्हरराव गायकवार आये महाराजा सेंधिया सफेद कपड़े पहिने हुयेथे और पीली पगड़ी मरहठी सिरपर बांधे हुये थे बाकी और मेम्बरान कमीशन कपड़े पहिले दिन के सदृश पहिने हुये थे सरजेम्स बेलनटाइन साहब बदस्तूर आया से प्रश्न करते रहे खास इजहारात जो अमीना से लिये गये वह यह थे कि खान बहादुर अकबर अली या उनके लड़के अब्दुल अलीने अमीना को धमका कर उससे इजहारात लिये हैं आज आयाके इजहारातमें हास्य होता रहा जब सरजम्स बेलनटायन साहब ने आया से पूछा कि तुमको गायकवार के पास जाने से क्यों इन्कार था तो अमीना

ने इजलास के रूबरू अपने जुग़राफ़िये की विद्या को प्रगट किया उसने कहा कि मैं बड़ौदे को नहीं जानती हूं यह कह कर फूट२रोने लगी और कहने लगी कि मैंने कानपुर, नीमच जबलपुर, और शमला और इङ्गलिस्तान को देखा है और इन स्थानों में बहुत दिन रही हूं यहां तक कि अरबतक भी पहुंच गई थी कि सरजन्ट बेलनटाइन साहब उसको ठहरा कर फिर बड़ौदे में लेआये अमीनाने कहा कि मैं सफ़रके मुआमले में सरजन्ट बेलन टायन साहब से कुछ कम नहीं हूं जब अकबर अली के विषय में उससे पूछा गया तो वह बोली कि मैं अकबरअली को जानती हूं फिर फ़ैज़ू गवाही की जगह पर आया उसकी डाढ़ी बहुत सुन्दर और काली थी और सब गवाहों में यही गवाह बहुत सुन्दर था उसने कहा कि एक मरतबा मैं आया के साथ गायकवार के यहां गया था परंतु मेरे साम्हने महाराजने कोई जादू का ज़िक्र नहीं किया फिर एक ईमान्दार गाड़ीवाला गवाही के वास्ते आया उसनेसाफ़२जिस तरह उसको गाड़ी किराये की गईथी और जिस तरह अमीना महाराज के यहां गई थी सब बयान किया अन्त को अपने छूटने के वास्ते सरकार से दरख़ास्त की सरजन्ट बेलन टाइन साहब ने गाड़ीवान से पूछा कि तुमको सरकार ने किस वास्ते क़ैद किया था उसने उत्तर दिया मुझे इसलिये क़ैद किया था कि मैं इस कैफ़ियत को किसी से बयान न करूं जो किअब मेरे इजहारात सरकार के सामने लेलिये गये अब मुझको घरजाने का हुक्म हो एक बड़ी हंसी की बात इसके इजहार में हुई अर्थात् जब सरजेन्ट बेलनटायन साहब ने पूछा कि तुम्हारे घरमें कौन है और तुम्हारा विवाहहुवा था नहीं पहिले तो उसने उत्तर दिया कि मेरी शादी नहीं हुई है फिर थोड़ी देरके उपरांत याद करके कहा कि मेरा विवाह हो गया है—शेख करीम का इजहार इस तरह पर हुवा कि मैं आयाके साथ एक

मरतबे महाराज के यहां गया था परंतु मुझको खबर नहीं कि महाराज ने आया से क्या कहा॥

इन दो दिनों में चार गवाहों के इजहार पूरे लिये गये एक की गवाही तो निहायत इस मुकद्दमे में फायदेमन्द रही और बाकी तीन गवाहों के इजहारात आपस में प्रतिकूल हैं और एक दूसरे को खण्डन करते हैं यह बात साहिबान कमीशन को खूब मालूम होगई कि आया ज़रूर महाराज के पास गई परन्तु यह हम नहीं कह सक्ते हैं कि अमीना आया को महाराज ने फियर साहब के विष देने की सलाह और मशवरह केवास्ते बुलवाया था या मेम साहिबा के अनुकूल करने के वास्ते आज के दिन गायकवार अति चिन्तित मालूम होते थे आया से बेलन टायन साहब ने फिर प्रश्न करने शुरू किये। प्र०—तुम को खबर है कि किसदिन फियर साहबको जहर दियागया था?उ०—मुझको याद नहीं। प्र०—तुमको उस दिनकी कैफियत मालूम है? उ०—मुझको नहीं मालूम। प्र०—जिस दिन उनको जहर दिया गया था तुमने उसी दिन खबर पाई थी या नहीं? उ०—नहीं मुझको कुछ दिन के पीछे मालूम हुवा था। प्र०—तुम उस समय कहां थीं जिससमय तुमको खबर मिली थी? उ०—मैं रेजीडन्सी में थी। प्र०—तो तुमको अवश्य खबर होना चाहिये? उ०—नहीं साहब मैं इस हाल को नहीं जानती हूं और मुझको उस दिन खबर नहीं मिली थी। प्र०—जब तुमको खबर मिली थी तो तुमने किसी औरसे भी कहा था? उ०— मैने किसी से बयान नहीं किया। प्र०—तुमको मालूम है कि तुम्हारे पति के इजहारात करनैल फियर साहब ने लिये थे? उ०—हां मुझको मालूम है। प्र०—तुमको यह याद है कि तुमने अपने पति से बयान किया था कि साहब को विष दिया गया है उ०— मुझको याद नहीं। प्र०—अच्छा कल जिस समय से

तुम्हारे इज़हारात लिये गये हैं तुमने अपने पति से मुला-क़ात की या नहीं ? उ०—मुझको इसकी बड़ी मनाही है। प्र०—किसने तुमको मना किया ? उ०—खान बहादुर ने प्र०—कल से कोई पुलिस वाला भी तुम्हारे पास आया है ? उ०—नहीं कोई नहीं मैं सच कहती हूं कि मुझ से और किसी से बातें नहीं हुईं। प्र०—तुमने कल यह बात जो कही थी कि मैने काजी और करीम से सुना था कि महाराज चाहते हैं कि फियर साहब को जहर दिया जाय यह बात सच है ? उ०—हां यह बात सच है और जो कुछ मैने कहा है उसे न बदलूंगी। प्र०—यह बात सच है कि जब महाराज से तुम से तीसरी मुलाकात हुई थी तो तुम से महाराज ने कहा था कि करनैल फियर साहब को तुम्हारे हाथ से विष दिया जाय ? उ०—नहीं साहब मुझसे नहीं कहा और जो कुछ कि ठीक हाल था मैंने पहिलेही आप से बयान किया। प्र०—तुमने जो महाराज के प्रश्न करने पर क्रोधित होकर इन्कार किया था तो वह गुस्सा और इन्कार किस सबब से था ? उ०—मैने केवल यह कहा था कि तुम साहब के साथ किसीतरह की बदसलूकी न करना नहीतो तुम पछताओगे। प्र०—तुमने जो बदसलूकी का शब्द कहा तो उससे क्या मतलब था ? उ०—मेरा मतलब उस से था जो महाराज ने मुझ से कहा था। प्र०—किसी को तुमने अपनें इजहारात पहिले भी दिये थे ? उ०—हां मैने सूटर साहब और खान बहादुर के साम्हने अपने इजहारात दिये थे। प्र०—तुमने कब अपने इजहारात उनके रूबरू दिये थे ? उ०—जब सूटर साहब बम्बई से आये थे। प्र०—तुम को याद है कि तुम्हारे इज़हारात सूटर साहब के रूबरू लिख लिये गये थे ? उ०—पहिली बेर मेरे इजहारात नहीं लिखे गये थे। प्र०—पहिली मर्त्तबा जब तुम्हारे इजहार लिये गये और लिखे नहीं गये उस समय कौन २ लोग थे

उ०—खान बहादुर १ गाड़ी वाला २ और एक लड़का ३। प्र०—खान बहादुर में से कौन था क्या अकबर अली था? उ०—मैं तो केवल खान बहादुर को जानती हूं मैं उनका नाम नहीं जानती। प्र०—क्या वह बाप था या बेटा था? उ०—मैं इस बातको नहीं जानती मैं तो खान बहादुर को फोरजट साहब के समय से जानती हूं मैंने उनको बम्बई में देखा है अकबर अली पहचानने के वास्ते इजलास में बुलाये गये उन्होंने तुरन्तही उसको पहिचान लिया सरजण्ट-बेलन टायन साहब ने अकबर अली से कहा कि आप इस गर्म कचहरी में ज़ियादः देर तक न रहिये (इस बात को सुनकर सम्पूर्ण इजलास हंसपड़ा) प्र०—तुम कै दिन तक सूटर साहब को अपने इज़हारात दिया की? उ०—दो दिनतक। सरजण्ट बेलन टायन साहब ने इजलास के तरफ मुखातिब होकर कहा कि मुझको आया के इज़हार से मालूम होता है कि यह क़ैद की गई थी मुतरज्जिम साहब आप इससे पूछिये कि यह क़ैद रही थी या नहीं मुतरज्जिम साहब ने उससेपूछा। प्र०—क्या तू क़ैदथी? उ०—हां मैंक़ैद रही थी। प्र०—अकबर अली के रूबरू अपने इज़हारात देने से पहले तुम क़ैद रही थी? उ०—हां मैं अपने इज़हारात देने से पहले क़ैद हुई थी। प्र०—मिस्टर मैलवल साहिब ने कहा कि तुम अपने इज़हार देने से पहिले कैद हुई थी या पीछे इसको व्यौरे वार बयान करो? उ०—मैंने अकबर अली से कहा कि मैं बहुत बीमार हूं और जब मुझको आराम हो जावेगा तब मैं अपने इज़हारात दूंगी। प्र०—यह हमारा जवाब नहीं है हमारे प्रश्न का उत्तर दो? उ०—मैं उसी दिन क़ैद की गई थी। प्र०—मुतरज्जिम साहब ने आया से पूछा कि जब तुमने अकबर अली को अपने इज़हार दिये तो तुम उस से पहिले कैद हो गई थी या नहीं? उ०—मैंने अकबर अली से कहा कि मैं बहुत बीमार

हूं जब मुझको आराम हो जावेगा मैं तुमको जवाब दूंगी सरजान्ह बेलन टायन साहब ने कहा कि यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है जब तुमने अकबर अली के रूबरू अपने इज़हार दिये थे तो तुम बीमार थी परन्तु यह बताओ कि तुमको उसके पहिले कैद किया था पीछे। उ०—मैं कैद न थी मैं अपने घर में आराम से सो रही थी (मिस्टर मैलवल साहब ने कहा कि यह प्रश्न के जवाब को नहीं समझी इस से फिर पूछो उस दशा में कि जब यह बीमार थी कैद भी थी) प्र०—सरजान्ह बेलन टायन साहब ने कहा कि मैं केवल यह पूछना चाहता हूं कि जब अकबरअली ने तुमसे इज़हार लिये थे उस वक्त तुम क़ैद थी या नहीं? उ०—मैं अपने पलंग पर बीमारी के कारण बेहोश पड़ी थी मुझको खबर नहीं। प्र०—इसका जवाब दो कि जिस समय अकबरअली ने तुमसे इज़हारात लिये उस वक्त तुम कैद थी या नहीं? उ०—जब अकबर अली मेरे पास आया तो उसने मेरे इज़हारात लेना चाहा परन्तु मैं बहुत बीमार थी इसलिये उसको अपने इज़हारात न दे सकी मुझसे वह कह गया कि तुम यहां से न जाना। सररिचर्ड मीड साहब ने कहा कि इसके उत्तर से प्रगट है कि वह क़ैद न थी। प्र०—सरजान्ह बेलन टायन साहब ने फिर पूछा कि तुमने जब अपने इज़हारात दिये उसके पीछे तुम अपने घरमें रहीं या सरकार की हवालात में सुपुर्द की गईं? उ०—मैं अपने मकान में थी और मेरे मकान के बाहर पहिरा था मेरे पास मेरा पति नहीं आ सक्ता था इसके दो दिन के उपरान्त मैं अस्पताल को गई। प्र०—तुमने अकबर अली से कहा कि मैं बहुत बीमार हूं? उ०—हां मैंने कहा था। प्र०—तुमने अपने इज़हारात अकबर अली को पहिले दिये थे या सूटर साहब को? उ०—मैंने अकबर अली से कुछ भी नहीं कहा था। प्र०—अच्छा अभी तो तुमने कहा था कि मैंने अकबर अली को

इज़हारात दिये और उस वक्त एक लड़का और एक गाड़ी वाला मौजूद था? उ०—हां यह बात सच है। प्र०—बहुत अच्छा क्या तुमने अपने तीनों मरतबे के जानेका हाल अकबर अलीसे न कहा होगा? उ०—नहीं मैंने कुलहाल नहीं कहा। प्र०—तुमने क्यों नहीं कहा? उ०—मैं उस समय बहुत बीमार थी आप डाक्टर सीवर्ड साहब से पूछ लीजिये। प्र०—तुमने सूटर साहब को कितने दिन के उपरान्त अकबर अली के देखा? उ०—दो दिन के पीछे। प्र०—तुम उस समय कहां थी? उ०—मैं अस्पताल में थी। प्र०—वहां कोई सिपाही था? उ०—वहां तो नहींथा परन्तु जबमैंबीबी साहिब कीमेम साहिबाके बंगलेमें आगईथी एक सिपाही तैनातथा। प्र०—जिसवक्त सूटर साहब आये और कौनउसवक्तथा? उ०—वहां कईसिपाहीथे और अकबरअली और अब्दुलअलीथे। प्र०—कितने सिपाही थे? उ०—मुझको याद नहीं। प्र०—सूटर साहब ने तुम्हारे इज़हारात लिख लिये थे? उ०—लिख लिये थे। प्र०—क्या तुमने अपने सम्पूर्ण इज़हारात दिये? उ०—हां साहब दिये। प्र०क्या सूटर साहब ने विष दिये जाने के विषय में तुमसे पूछा था? उ०—हां साहब पूछा था। प्र० तुमने उसका क्या उत्तर दिया? उ०—मैंने कहा कि मैं कुछ नहीं जानती। प्र०—तुम से सूटर साहब ने यह भी पूछा था कि महाराज ने विष देने के विषय में तुमसे कुछ कहा था? उ०—हां पूछा था परन्तु मैंने कुछ उत्तर नहीं दिया। प्र०—अब यह बताओ कि अकबर अली या अब्दुल अली ने तुमसे कहा था कि महाराज ने विष देने के विषय में कुछ तुमसे कहा है जल्द बताओ? उ०—मुझको उन्होंने धमकाया था कि तुमसे अगर कहा है तो जल्द बताओ और मुझसे इक़रार कराना चाहा परन्तु मुझकोजो कुछ मालूमथावहबयान किया। प्र०—सूटरसाहबके रूबरू उन्होंने तुमको धमकाया था? उ०—मुझको उन्होंने नहीं धमकाया। प्र०—तुमने अभी क्यों

कहा था कि मुझको धमकाया था ? उ०—मैंने नहीं कहा सरजन्द बेलनटायन साहब ने उसके पहिले इजहारात को मुतरज्जिम साहबके इजहारात से मिलाया और साहब प्रेसीडन्टके इजहारात भी मिलाये गये तो उसमें पायागया कि उसने बयान किया था कि मुझे धमकाया। प्र०—सरजन्दबेलन टायन साहब ने फिर आया से पूछा कि तुमने क्यों कहा था कि अकबर अली और अब्दुलअलीने मुझको धमकाया था यह बात सच है या झूठ है ? उ०—यह बात झूठ है मुझे तो किसीने भी नहीं धमकाया मैंने शायद कहा होगा परन्तु मुझे तो खयाल पड़ता है कि मुझसे अकबरअली और अब्दुलअली ने सिर्फ तीनही प्रश्न पूछे थे धमकाया नहीं था। प्र०—अब तुम्हारा निगहबान कौन है ? उ०—अबमैं क़ैद हूं। प्र०—क्या तुम अकबरअली और अब्दुलअली की निगहबानी में हो ? उ०— हां मैं उनकी निहाबानी और थोड़े सिपाहियों के पहिरे में हूं। प्र०—जब तुम्हारे इजहारात सूटर साहबने लिख लियेथे तो तुम्हारे चलते समय तुमको सुनाये थे या नहीं ? उ०— उन्होंने मुझे इजहारात नहीं सुनाये। प्र०—फिर तुम्हारे इजहारात और किसीके रूबरू भी सूटर साहब के पीछे लियेगये ? उ०— हां एक वकील या बैरैस्टर के रूबरू मैंने इजहारात दियेथे मैं वकील और बैरैस्टर में अन्तर नहीं जानती हूं। प्र०—तुमने सूटर साहब के रूबरू औरें भी कभी इजहारात दिये थे ? उ०—हां साहब दिये थे जब कि मैं अस्पताल में थी मैं आपके रूबरू कभी झूठ न बोलूंगी मैं इस सभा को ईश्वर के बराबर जानती हूं प्र०—क्यामिस्टर सूटर साहब तुम्हारेपास अस्पतालमें आयेथे? उ०—मैंने आपही सूटर साहब को अस्पताल में बुलवा भेजा था और मैंने उनसे कहा कि जब मुझ को आराम होजावेगा तो मैं अपने सम्पूर्ण इजहारात दूंगी। प्र०—तुमने किसको सूटरसाहबके बुलवाने को भेजाथा ? उ०—मैंने डाक्टरसीवर्ड

साहब से कहा था मुझे नहीं खबर कि उन्होंने किसको भेजा था। प्र०—क्यावह अकबरअली था या अब्दुलअली था जिस को तुमने भेजा था ? उ०— साहब मैं सिपाहियों के पहिरे में थी मुझको खबर नहीं कि सूटरसाहब के बुलाने को कौन गया था। प्र०—अब मुझको थोड़े से प्रश्न तुम से करने को और बाक़ी है तुम महाराज के पास पहिली बेर क्यों कर-गई ? उ०—मैं बड़ौदे में पहिले कभी नहीं आई और मुझ को बड़ौदे के हालात नहीं मालूम और रोकर कहनेलगी कि मैं इङ्गलिस्तान पांचबार हो आई हूं और कानपुर जब्बलपुर और शमला और नीमच और और जगहपर बहुत दिन तक रही हूं और अरब भी हो आई हूं। प्र०—सरजन्टबेलनटायनसाहब ने यह सुनकर कहा इस में संदेह नहीं है कि तुम्हारे नहाने से इनमुकामों की रौनक में फ़र्क आगया है अगर तुम सचसच हमारे सवालों का जवाब दोगी तो तुम इन देशों में फिर चली जासक्ती हो परन्तु अब यह बताओ कि तुम पहिलीबेर महाराज की हवेलीमें क्योंकरगई ? उ०—सालिम और फ़ैज़ बहुत दिनों से तकाज़ाकर रहेथे कि महाराजके पास चलो परन्तु मैंने इन्कार किया। प्र०—तुम किसवास्ते महाराजके पास जाने से इन्कार करती थी ? उ०—मैं नहीं जानती थीकि महाराजके यहां क्योंकर जाते हैं इसवास्ते मैंने इन्कार किया था मैंने सालिमसे कहा कि तुम मेरे साथचलो। प्र०—तुम दामोदरपन्थ को जानती हो ? उ०—मैं नहीं जानती। प्र०—यह बात सच है कि तुम फ़ैज़ और सालिम के कहने से जबरदस्ती गई थी ? उ०—हां साहब॥

सरकार के वकील ने फिर आया अमीना के इज़हार लिये॥

तुमने अभी कहा था कि मैंने किसी वकील या बैरिस्टर के रूबरू अपने इज़हारात दिये थे यह बात सच है मिस्टर क्लोवलैंड साहब की तरफ मुखातिब होकर आया से पूछा

क्या यही वकील थे। ? उ०—हां साहब यही वकील थे। प्र०—जब तुम अस्पताल में थी तो तुम्हारे पास अकबर अली या अब्दुल अली आये थे। उ०—हां साहब आये थे। प्र०—सूटरसाहब के इनकार देने के पीछे फिर भी कभी अकबरअली तुम्हारे पास आये थे ? उ०—कभी नहीं आये। प्र०—कोई और पुलिस का अफ्सर तुम्हारे पास आया था ? उ०—कोई नहीं आया था मैं पुलिसके सिपाहियों के पहिरे में थी। प्र०—तुम किस अस्पताल में थी ? उ०—मैं रजमट के अस्पताल में थी। प्र०—तुम्हारा कौन डाक्टर इलाज करता था ? उ०—मुझ को नाम उसका नहीं मालूम परन्तु वह रजमट का डाक्टर था और डाक्टर सीवर्डसाहब भी आया करते थे। प्र०—तुमने पहिले कहा था कि कि खानबहादुर हमारे पास अस्पताल में एक लड़के को साथ लेकर आया था यह बात सच है ? उ०—हां साहब यह बात सच है। प्र०—क्या तुमने पहली मर्त्तबा खानबहादुर को देखा था ? उ०—हां साहब पहली मर्त्तबा देखा था। प्र०—तुमने उसको कहां देखाथा ? उ०—मैं उस समय अपनी चारपाई पर अपने घरमें पड़ीथी। प्र०—तुम उसगाड़ीवालेको जानतीहो जो अकबरअलीके साथ आयाथा ? उ०—हां साहब जानतीहूं। प्र०—उसका क्या नाम है ? उ०—उसका नाम सिब्बीया कोबी है। प्र०—अकबरअली के साथ कौन लड़का था ? उ०—मेरा नौकरथा जिसका नामकुट्टू है। प्र०—अच्छा वहबातें बताओ जो अकबरअली से और तुम से उस वक्त हुई ? उ०—मैंने अकबरअली से कहा कि मैं बहुत बीमार हूं जब मुझ को आराम होजावेगा तोमैं सब हाल तुमको बताऊंगी। प्र०—क्या अकबरअली के बातें करनेके पीछे तुमको पहिरे में कर दिया था ? उ०—हां साहब पहिरे में करदिया था। प्र०—उसकेपीछे तुमने अपने पतिसे मुलाक़ात कीया नहीं ? उ०—मेरे पासमेरे पतिकेआनेकी मनाही होगई थी। प्र०—जबकि

तुम तीसरे दफे महाराज की मुलाकात को गई तो तुम महाराज से क्यों डरी? उ०—मुझसे काजी और करीम ने जो बात कही थी उसका खयाल हुवा। प्र०—जो बात महाराज ने तुमसे की उस बात से और काजी और करीमकी बातसे एकही मतलब पाया जाता था? उ०—पहिले तो मैं नहीं समझी परन्तु उसके पीछे मुझको वही मतलब मालूम हुवा। प्र०—क्या तुम अंगरेजी बोलती हो? उ०—मैं अंगरेजी नहीं बोलती परन्तु कुछ समझ लेती हूं हमारी मेम साहिबा कभी अंगरेजी में बोलती हैं और कभी हिन्दुस्तानी में। प्र०—तुम तीन मर्त्तबा जो महाराज के पास गई थी तो तीनों मर्त्तबा अपनी मेम साहिबा से छुट्टी लेके गई थी या ग़ैर हाजिर होकर गई थी? उ०—मैंने दो मर्त्तबा तो रुखसत ली और एक मर्त्तबा गैरहाजिर होकर गई। प्र०—तुमनेबयान किया है कि हमने काजी और करीम के जबानी जहर दिये जाने का हाल सुना था अच्छा यह बात तुमने सूटर साहब के रूबरू भी कही थी? उ०—हां साहब कही थी॥

साहब प्रेसीडण्ट ने पूछा कि गाड़ी वाले का नाम तुम जानती हो? उ०—मैं गाड़ीवान को नहीं जानती और न मैं उसका नाम जानती हूं थोड़ीदेर के पीछे याद करके कहा कि शायद उसका नाम सन्दल है। प्र०—तुमने कभी संदलको देखा है? उ०—मैने संदलको कभी नहीं देखा परन्तु एक दिन जब वह गाड़ीका किराया करीमसे लेने को आया था तब देखा था। प्र०—तुमने अभी हमसे कहा है कि मैंने विष दिये जाने के विषयमें सुना था अच्छा यहतुम बताओ कि तुमने अपने तीसरे मर्त्तबे महाराज के यहां जाने से कितने दिन पहिले सुना था? उ०—मुझको नहीं याद परंतु मैं जानती हूं कि बीस पचीस दिन पहिले मैंने सुना था प्र०—यह बात तुमने रमजान के महीने में सुनी था अन्त में? उ०—मुझको इस वक्त याद नहीं परंतु करनैल फियर

साहब के जहर दिये जाने से बीस पचीस दिन पहिले मैंने सुनी थी प्र०—फिर रिचर्ड मीड साहबने पूछा कि तुम रमजान के महीने में महाराज के पास कितने दिन पहिले फियर साहब के जहर दिये जाने से गई थी ? उ०—मैं नहीं बता सक्ती कि मैं कितने दिन पहिले गई थी क्योंकि मुझको यह बात याद नहीं है परन्तु मैंने जहर दिये जाने के पहिले यह बात सुनी थी ॥

फैजू रमजान का इजहार ।

फैज रमजानने बयान किया कि मैं चौकीदार रेजीडन्सी का हूं और बीस बरससे नौकर हूं मुझ को वह समय मालूम है कि जब यहां पहिले कमीशन हुई थी मैं आया के साथ एकबेर गाड़ीमें सवार होकर महाराजके यहां गया था और हम दोनों चम्पानियर दरवाजेमें महाराज की हवेली में जीने पर चढ़ कर एक ऊपर के कमरे में गये और हम फर्श पर जाके बैठ गये उस कमरे में एक बड़ा आईना रक्खा हुवा था और एक चौकी भी रक्खी हुई थी सालिमने जाकर महाराजसे हमारे आनेकी इत्तिलाकी महाराज आकर उसचौकीपर बैठ गये महाराजने आयासे कहाकि तुम हमारे पास क्यों नहीं आती हो आयाने उत्तर दियाकि मुझको आने का अवकाश नहीं है फिर महराजने आयासे कहा कि तुम मेम साहिबा से हमारी सिफारिश करदो आया ने उत्तर दिया कि मैं मेमसाहिबासे तुम्हारे विषयमें कुछ नहीं कह सक्ती इसके पीछे मैंने सलाम किया और कहा कि मुझसे बहुत से आदमी बैर रखते हैं आप मेरे ऊपर मेहरबानी किया करें फिर मैंने अपने लड़के के वास्ते सिफारिश की और फिर हम और आया महाराज से बिदा होकर घरको आये ॥

सरजान् बेलनटायन साहब के प्रश्न ॥

फैजूने कहा मेरा लड़का सवारों में खंडेराव के वक्त से नौकर है सोलह या सत्रह वर्ष की उमर है उसको बड़ौदे के

सिक्के के दस रुपये माहवारी मिलते हैं कारनैलफियर साहब ने मेरा इजहार लिया था परंतु मैं जहर दिये जाने के विषय में कुछ नहीं जानता था मैने उसके विषय में कुछ नहीं बयान किया फिर मेरे इजहार कारनैल फियर साहब ने लिख लिये प्र०—मैलवल साहब ने पूछा तुम्हारे इजहार लिख जाने के उपरांत क्या हुवा ? उ०—मैं हवालात में बन्द किया गया और जबसे हवालात में अकबर अली और अबदुल अली की निगहबानी में हूं मैं रावजी को जानता हूं रावजीने मेरे ऊपर करनैल फियर साहब के सामने जहर देने का अपराध लगाया था और मुझसे रणोडजी के सब नौकर ईर्षा करते हैं सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा कि जो वार्ता तुम्हारे और महाराज के मध्य में हुई उसे बयान करो ? उ०—सामिल और आया ने मुझसे कहा कि महाराज के पास चलो उस दिन वह साहब के वास्ते डाली लाया था और इससे पहिले भी कईबेर उसने महाराज के यहां चलने के वास्ते मुझसे कहा था आयाभी मेरे साथ चलनेको तय्यार हुई मैंने कुछ उससे नहीं कहाया और आया कोई बच्चा नहीं थी जिसको मैं बहकाता। प्र०—मिस्टर मैलवल साहब ने पूछा कि तुम आया के साथ गये थे इसका इकरार करते हो ? उ०-उसने कहा मैं इक़रार करता हूं। प्र०—तुम यहबात क्यों कहतेहो कि मैंने आया कोनहीं बहकाया तुम आयाके साथगये थे। उ०—मैंतो बीसवर्ष से सरकार गवर्नमेण्टमें नौकर हूं मैं श्रीमान् सेंधिया को जानता हूं यदि वह न जानते होंगे तो मैंने सूटर साहब के रूबरू केवल यह इजहार दिये थे कि मैं आया के साथ गया था॥

सरकार के वकील ने फिर फैजू का इज़हार लिया॥

फैजू वर्णन करता है कि मैं और आया और गाड़ीवान तीनों अस्पताल में गये परन्तु मुझसे और आया से उस वक्त

फिर मुलाक़ात न हुई और मैंने अस्पताल में भी कोई बात उस से नहीं की और मेरे रूबरू उससे इज़हारात भी नहीं लिये गये मुझे स्मर्ण नहीं है कि मैंने आया को इजहार देने से कितने दिनों के उपरान्त अपने इजहार सूटर साहब को दिये। प्र०—प्रेजीडन्ट साहब ने फैजू से पूछा तुम महाराज के कौन से महल में गये थे? उ०—हवेली में। प्र०—क्या तुम्हारी दरख़ास्त से तुम्हारा लड़का नौकर हुआ था? उ०—नहीं साहब वह तो खण्डेराव के समय से नौकर था। प्र०—क्या तुम्हारे कहने से खण्डेराव ने नौकर रक्खा था? उ०—जब कि करनैल वायस साहब इंगलिस्तान को जाने लगे तब मैंने उन से दरख़ास्त की थी कि अगर मेरा नाम महाराज के हां करा दो तो मेरे वास्ते अच्छा होगा क्योंकि मेरा इस थोड़े मासिक में यहां गुजारा अच्छी तरह से नहीं होसक्ता है मेरी दरख़ास्त को श्रीयुत वायस साहब ने मंजूर किया और मुझको महाराज के यहां नौकर रखादिया था दो वर्ष तक मैं बराबर महाराज के यहां नौकर रहा परन्तु जब करनैल फारसाहब आये तब मुझको रजीडन्सी में नौकर रक्खा और महाराज से कह कर मेरी जगह पर मेरे लड़के का नाम करा दिया॥

कार भाई पुत्रा भाई के इज़हारात।

इस शख़्स ने इजहार दिये कि मैं रामचन्द्र हलवाई की शिकरम को हांकता हूं मैं बड़ौदे के सदर बाजार में रहता हूं मैं फैजू और आया को जानता हूं वह मेरी गाडी में सवार होकर गई थी इस बातको एक या सवा वर्ष बीता होगा आया मेरी गाडी में शायद आठ बजे रात को सवार होकर गई थी गाडी से उतरकर हवेली के दरवाजे परगई मैं हवेली के सम्हनेजो मैदान है अपनी गाडी कोलिये खड़ा रहा अमीना आया को पहिचाननें के वास्ते बुलाया उसको उसने पहिचान लिया॥

सरजेन्ट बेलनटायनसाहब के प्रश्न ॥

यह मनुष्य बेलनटायनसाहब के प्रश्नोंका उत्तर देताहै कि मैं बाटनसाहबके बंगलेसे जहां मैं अब तक पहिरे में हूं आया हूं मुझको सूटरसाहब ने उस बङ्गले में महाराजके नजरबन्द करने के उपरान्त पकड़ के क़ैद किया था मुझको इस वास्ते पहरे मेंरक्खा ताकिमैं अपने भेदको किसीसेनकहूंमैंने सिवाय इसके कि इन दोनोंको महाराज की हवेली में पहुंचादिया था और कोई कामबुरा नहीं किया मैंने अपने मालिक से इस बात की इत्तिला करदी थी मैं आया और फैज़ को पहले से भी जानता था जब कि आया अस्पताल में थी और मेरे इज़हारात लिये गये तब भी मैंने इज़हार दिये थे सूटर साहब ने मुझ से पूछा कि आया को बता दो मैंने उसको पहचान लिया अस्पताल में मैंने केवल आयाही को पाया जबसे मैं क़ैदहूं अपने स्वामी को नहीं देखा ॥ प्र०—क्या तुम से यह कह दिया था कि जब तुम अपनी गवाही देदोगे तब तुम छोड़ दिये जाओगे ? उ०—हां मुझसे कह दिया था कि जब तुम अपनी गवाही देदोगे तो सरकार तुमको छोड़ देगी। प्र०—क्या यह बात तुमसे अकबर अली ने कही थी ? उ०—नहीं मुझसे अकबर अली ने नहीं कही थी मेरे इज़हारात साहब ने लिये थे और साहब ही ने मुझसे यह बात कही थी अब फिर वह यह भी बयान करता है कि मैं क़ैदखाने में न था सरकार ने मुझको खाना दिया और कहीं आने जाने न पाता था—यह तो बहुत अच्छी बात थी कि सरकार ने तुमको बे मेहनत खाना दिया परन्तु अब तुम को सरकार न छोड़ेगी यह बात सरजन्ट बेलनटायन साहब की सुनकर सम्पूर्ण अधिष्ठाता हंसने लगे सरजेण्ट बेलनटायन साहब ने उससे पूछा तुम्हारा विवाह हुआ है यानहीं पहले उसने उत्तर दिया कि नहीं फिर थोड़ी देर के उपरान्त याद करके कहने लगा कि हुवा है ॥

शेख करीम के इज़हारात ॥

इस मनुष्य ने कहा कि मिस्टर बोवी साहब के पास मैं चपरासियों में नौकर था मैं उस समय भी मौजूद था कि जब वह नौसारी को गये थे और नौसारी सेवर्ष के प्रारम्भ में आये थे जब मैं वहां से आया तो उसके आठ दिन के उपरान्त अमीना के साथ महाराज के यहां गया था पहिले आया ने एक संदल नामे गाड़ीवान को वहां जाने के वास्ते ठहराया था हम और आया सन्दल की गाड़ी में बैठ कर महाराज के यहां गये महाराज का जासूस सालिम हमको रास्ते में मिला और हवेली में ले गया हम जीनेपर चढ़कर एक कमरे में गये सालिम ने महाराज को बुलाया महाराज आकर एक चौकी पर बैठे आया महाराज के रूबरू फर्श पर बैठ गई और मैं एक तर्फ खड़ा रहा महाराज और आया से वार्त्ता होती रही महाराज और आया के मध्य में नौसरी की शादी का जिक्र होता रहा महाराज आया से पूछते थे कि साहब हमारी शादी के सबब से हम से अप्रसन्न तो नहीं हैं आया ने उत्तर दिया कि मैं अब कुछ नहीं कह सक्ती हूं जब हमारी मेम साहिबा आवेंगी तो हम इसका उत्तर देंगी हम उनके द्वारा आपकी सिफारिश साहिब से करावेंगी साहब के मिजाज में हमको दखल नहीं है जोउनके दिल में आता है सो करते हैं उसी दिन दो सौ रुपये सालिम ने हमको दिये और कहा कि तुम और आया आधे २ लेलो यह महाराज के विवाह का पारितोषक है सौ रुपये मैंने आया को दिये और सौ रुपये मैंने आपरखलिये ॥

सरजन बेलनटायन साहब ने करीम से प्रश्न किये ॥

यह मनुष्य उनके प्रश्न का उत्तर देता है कि मैंने आया को उसके पतिके सन्मुख रुपया दिया था मेरे इज़हारात बोवी साहब ने फियर साहब के जहर दिये जाने के उपरान्त लिये मुझसे सिर्फ सालिम के बारे में बोवी साहब ने

प्रश्न किये थे और मुझसे सालिम ने केवल यही कहा था कि तुम कमीशन की कार रवाई को बताया करो और महाराज तुमको इसके बदले इनाम देंगे मैंने सालिम से कहा कि अगर ऐसी बात फिर तुम मुझ से कहोगे तो मैं अपने स्वामी से कहूंगा तब से सालिम मेरे साथ बैर रखता है मैंने बोवी साहब से महाराज के विषय में कुछ नहीं कहा परन्तु मैंने मिस्टर सूटर साहब के साम्हने पूरा इज़हार दिया प्र०-तुमने कोई बात सूटर साहब से कही थी जो कि तुमने महाराज और आया की बात्तों में सुनी थी? उ०-हां साहब जो कुछ कि मैंने सुनाथा कहा था। प्र०-तुम से कै बेर सूटर साहब ने इज़हार लिये? उ०- केवल एक बेर। प्र० जोकुछ तुमने कहाथा सब लिखलिया गयाथा? उ० हां साहब लिख लिया गया था और मुझको सुनाभी दिया गया था। प्र०-सालिम अगर तुम्हारा मित्र न था तो तुम उसके साथ महाराज के यहां क्योंगये? उ०-आया मुझको ले गई थी कि हम महाराज के विवाह का इनआम ले आवें। प्र०-सरकार के वकील ने पूछा कि आया से और तुम से मुलाक़ात कलसे हुई या नहीं? उ०-कलसे मुझसे किसी से मुलाकात न हुई॥

आज साढ़े चार बजे जलसा बरखास्त हुआ॥

तीसरे दिनका इजलास॥

जब कि इजलास जमा हुवा तो सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा कि मुझको एक बहुत अच्छी बात इजलासके रूबरू कहनी है और वह यह है कि मुतरज्जिम साहब। तर्जुमा लफ़जी इज़हारों का नहीं करते हैं किन्तु उसका संक्षेप करके हमको जवाब देते हैं हम चाहते हैं कि आगे से लफ़जी तर्जुमा इज़हारात का हुवा करे साहब प्रेसीडन्ट ने इस बात को स्वीकार किया॥

बख़्तियार खां के पुत्र सन्दल खां का इज़हार॥

बख़्तियारखां के पुत्र सन्दलखां ने इज़हार दिया कि मैं शिकरम वाला हूं और मैं शेख मुहम्मद बरअर की शिकरम के हांकता हूं मैं बीबी साहब की आया के जानता हूं परन्तु उसका नाम नहीं जानता हूं और मैं करीमके भी जानता हूं मैं करीम और आया के अपनी गाड़ी में बिठाकर गायकवार की हवेली में ले गया था मैं सालिम के भी जानता हूं यह शख़्स महाराज के पास रज़ोडन्सी में आया करता था सालिम भी हमारे साथ गाड़ी में बैठकर गया था मैं इन लोगों के सवार करके नौबजे रात के ले गया था और वहां से दश बजे रात के लौटकर आये जब कि मैं गया था ते थोड़ा पानी वर्ष रहा था इस बात के नौ महीने हुय होंगे करीम ने दूसरे दिन गाड़ी का किराया दिया था करीम और आया दोनों इजलास में बुलाये गये और इस मनुष्य ने दोनों के पहिचाना॥

सरजन् बेलनटायनसाहब के प्रश्न॥

प्र०—तुमने यह इज़हारात कबदिये? उ०—सूटर साहब के रूबरू दिये थे प्र०—मेरे प्रश्न का उत्तर दो कबदिये? उ०—जब कि पुलिस बम्बई के अफ़सर बड़ौदे में आये और तहक़ीक़ात शुरू करने लगे। प्र०—यह कबकी बातहै? उ०—साहब मैंतो लिखा पढ़ा नहीं हूं मैं क्योंकर बतासक्ता हूं कि कबकी बात है। प्र०—तुम के आठमहीने की बात ते यादहै और इस थोड़े दिनों की बात के भूलगये? उ०—हां साहब मुझके नहीं यादहै। प्र०—क्या यह कल की बात है? उ०—नहीं। प्र०—क्या यह परसें की बात है? उ०—नहीं साहब जब बम्बई के पुलिस के अफ़सर आये थे। प्र०—अच्छा यह बताओ कि उसको कितने दिन हुये? उ०—साहब दो तीन महीने हुये होंगे। प्र०—तुमने अपने इज़हारात सूटर साहब के दिये थे? उ०—हां साहब

सूटरसाहब को दिये थे और यह मैंने कह दिया था कि तुम इसके बारे में किसी से न कहना नहीं तो मुझको मुशकिल होगी मैं एक परदेसी आदमी हूं। प्र०-क्या सूटरसाहब ने तुम्हारे इज़हारात लिख लिये थे उ०-नहीं? प्र०-क्या तुम हवालात में रक्खे गये थे? उ०-नहीं। प्र०-क्या तुम कभी हवालात में रक्खे गये थे? उ०-कभी नहीं। प्र०-क्या अब तुम हवालात में हो? उ०-नहीं। प्र०-क्या तुमने इससे पहिले किसी मनुष्य को अपने इज़हारात दिये थे? उ०-किसी को नहीं। प्र०- तुमने इसके पीछे किसी को अपने इज़हारात दिये थे? उ०-हां एक साहब को दिये थे और वह साहब वकील हैं प्र०-क्या तुमने अपने सम्पूर्ण इज़हारात उसको दिये थे? उ०-हां। प्र०-सिवाय उन साहब के और भी कोई था? उ०-कोई नहीं। प्र०-तुम अङ्गरेज़ी ज़बान में बात चीत कर सक्ते हो? उ०-नहीं। प्र०-तुमने इज़हारात अपने किस ज़बान में दिये थे? प्र०-हिन्दुस्तानी ज़बानमें। प्र०-तुम अब्दुलअली को जानते हो? उ०-नहीं परन्तु जब अब्दुलअली इजलास में बुलाया गया तो उसने कहा हां साहब यही थे जिन्होंने मेरे इज़हारात सूटरसाहब के रूबरू लिखे थे। प्र०-अब्दुलअली ने तुम से क्या प्रश्न किया था? उ०-मुझसे पूछा था कि साहब तुमसे पूछते हैं कि तुम किस को अपनी गाड़ी में बैठाकर लेगये थे। प्र०-तुमसे यह भी पूछा था कि तुम किस समय बैठाकर ले गये थे? उ०-मुझसे नहीं पूछा। प्र०-जिस समय उन्होंने तुमसे पूछा था कि तुम किसको अपनी गाड़ी में बैठाकर लेगये थे तो तुमने यह भी उनसे पूछा था कि आप किसकी निस्बत में कहते हैं? उ०-मैंने पूछा था उन्होंने उत्तर दिया कि हम करीम बख्स और आयाकी निस्बतमें पूछते हैं। प्र०-तुमको आया पहिलेसे जानती थी? उ०-नहीं। प्र०-तुमको करीम जानता था? उ०-हां जानता था। प्र०-तुमने कभी पहिले

भी कभी करीमको सवार किया। था उ०—नहीं। प्र०—तुमने उसे कल रातको देखा था? उ०—नहीं। प्र०—अब्दुलअलीने करीमके विषय में तुमसे कहाथा? उ०—नहीं। प्र०-कलरात को तुम कहां सोये थे? उ०—मैं अपने घरमें सोया था। प्र०—वहां कोई पुलिसका आदमी था? उ०—कोई नहीं। प्र०—कभी हवालातमें रहेथे? उ०—कभी नहीं परन्तु एक दिन जब पहिले इजहारात दिये थे। प्र०—क्या तुमने करीमके विषयमें इजहारात पहिलेही से दे दिये थे? उ०—नहीं साहब बहुत देर पीछे दिये थे और यह भी मैंने कह दिया था कि मेरे इजहारात किसीको मालुम न हों। प्र०—तुमने यह क्यों कहा था? उ०—मैं परदेसी था और मुझको प्राणका अन्देशा था। प्र०—मुझको मालुम हुवा कि तुमनेअपने इजहारात इसके दो महीने पीछे दिये थे? उ०—हां साहब दो अढ़ाई महीने के पीछे दिये थे। प्र०—वहां और भी कोई उपस्थित था? उ०—कोई नहीं। प्र०—तुमने आया और करीम के जानेके विषयमें भी सूटर साहबसे कुछ कहा था? उ०—हां साहब मैंने कहा था परन्तु उस समय कि जब उनसे मैंने अपनी जान के बचनेका इकरार लेलिया था। प्र०—तुम नीची गरदन करके न देखो और मेरी ओर देखो तुमने आया और करीम के विषय में कहा था? उ०—नहीं साहब केवल आया की निस्बत में कहा था। प्र०—तुमने आया निस्बत क्या कहा था? उ०—मैंने कहा था कि मेरी गाड़ी में बैठकर आया शहर के ओर गई थी। प्र०—तुमतो आया को जानतेही न थे? उ०—साहब परन्तु अबतो मैं जानता हूं। प्र०—तुमने क्योंकर जाना? उ०—साहब मैंने उसको बोबीसाहबके बंगले में रहते हुये देखा। प्र०—तुम इससे पहिले आया को नहीं जानते थे? उ०—हां साहब नहीं जानता था। प्र०-सूटर साहब ने तुमसे करीम के विषयमें कुछ पूछाथा? उ०—कुछ नहीं पूछा था। प्र०—फिर तुमने क्योंकर सब हाल सूटर साहब से कहाथा।

उ०—साहब मुझको अपने प्राण का भय था। प्र०—तुमको किसका भय था? उ०—मुझको महाराज का भय था। प्र०—तुम उसदिन क़ैद होगये थे? उ०—मैं तो कभी भी क़ैद नहीं हुवा। प्र०—तुमने अभी कहा है कि जब तक मैंने करीम का नाम नहीं लिया तब तक मैं कैद रहा? उ०—मैंने तो यह नहीं कहा उसको उसके इज़हारात सुनाये गये उसने कहा सब दुरुस्त है मैंने अपने प्राण बचाने का जब इक़रार करलिया उस समय मैंने सम्पूर्ण वृत्तान्त उनसे कह दिया। प्र०—तुमने सूटर साहब को कब देखा था? उ०—जब वह मुझसे हाल पूछने को आये। प्र०—क्या तुम सूटर साहब के पास गये थे या सूटर साहब तुम्हारे पास आये थे? उ०—मैं सूटर साहब के पास गया था। प्र०—तुम अकेले गये थे या कोई तुम्हारे साथ था? उ०—सैयद ऊंट वाला मेरे साथ था। प्र०—क्या वह ऊंट हांकता है? उ०—नहीं साहब अब नहीं परन्तु पहिले उसके पास ऊंट थे। प्र०—क्या यह वही मनुष्य है जिसने गायकवार के ऊपर नालिश की थी? उ०—मुझको खबर नहीं॥

बख़्तियारखां के पुत्र सन्दलखांके फिर इज़हारात लिये गये॥

वह गवाह बयान करता है कि जब मैं पहले सूटर साहब के रूबरू गया तो मेरे साथ सन्दल ऊंट वाला था मेरे उन्होंने इज़हारात लिये करीम बख़्श मेरे पास छःबजे संध्याको गाड़ी लेने आया था और नौ बजे मैं उनको सवार कराकर महाराज के महलमें ले गया। प्र०—तुमने सूटर साहब को अपने इज़हारात कब दिये थे? उ०—दो महीने या अढ़ाई महीने हुये होंगे। प्र०—क्या तुमने पहलेहीदफे अपनी जान बचाने का इक़रार लेलिया था? उ०—हां साहब पहलेही मर्त्तबे लेलियाथा प्र०—तुम ऊंटवालेका नाम जानतेहो? उ० उसका नाम अमानतअली है। प्र०—क्या वह अहमदाबाद से आयाहै? उ०—मुझको खबर नहीं। प्र०—उसको इस मुक़-

हमेंसे क्या प्रयोजन था? उ०—वह अपने घरमें बैठाथा और वहां बात चीत बड़ौदे के मुआमिले में होरही थी। प्र०—फिर वह तुम्हारे साथ क्यों गया था? उ०—सटर साहब से उसने कहा था कि मैं बता सक्ता हूं। प्र०—क्या तुमने सआदतअलीसे पूछाथा कि वह करीम और आया को जानता है? उ०—हां साहब उसने कहा था कि मैं जानता हूं और मैं इस मुकद्दमे को साबित कर दूंगा। प्र०—जब तुम डरते थे तो तुमने सआदतअली से क्योंकर पूछा था? उ०—साहब जिक्र आयाथा। प्र०—तुमने सआदतअली को हाल में भी देखा है? उ०—हां साहब हालमें भी देखा है प्र०—तुमने कब देखा है? उ०—बहुत दिन हुये। प्र०—वह कहां रहता है? उ०—कम्प में रहता है। प्र०—प्रेजीडन्ट साहब ने पूछा कि किस सबबसे तुमको अपने प्राण का भय था? उ०—साहब मैं परदेसी था और मुझको महाराज से भय था कि वह मुझको मरवा डालेंगे। प्र०—सर दिनकरराव ने पूछा तुमतो परदेशी आदमी हो तुमने आया और करीम को क्योंकर जाना? उ०—साहब मैं तीन वर्ष से यहां नौकर हूं मुझको छिपाने से यह मतलब था कि भाव सेंधिया को महाराज ने हाथी के पांव के नीचे दबवा कर मरवा डाला था और जब भावसेंधिया से हाथी के पांव के नीचे दबवा कर मरवा डाले गये तो फिर मेरी क्या गिन्ती है॥

छुट्टू के इजहारात।

उसने वर्णन किया कि मैं चार महीने से अमीना के पास नौकर हूं और मुझ को याद है कि मैं उसके साथ एक मरतबे संध्या के समय शहर को गया था पहिले हम अरब खाने में गये और वहां से सालिम हमारे साथ हो लिया मैं पहले सालिम को नहीं जानता था मैं गाड़ी में सोतारहा मुझको नहीं मालूम कि आबा और सालिम कहां

गये थे साहब ऐडवकेट जनरल ने पूछा कि इस आने के पहिले तुम कितने पहले आया के पास नौकर थे ? उ०—मुझको यह नहीं मालूम परन्तु मैं चार महीने से आया के पास नौकर हूं ॥

सरजन् बेलनटायन साहब के प्रश्न ॥

प्र०—क्या तुमको हवालात में रक्खा था ? उ०—नहीं साहब मुझको हवालात में नहीं रक्खा था। प्र०—कुछ भी हवालात में नहीं रक्खा था ? उ०—नहीं रक्खा था। प्र०—तुम रात को कहां सोये थे ? उ०—मैं खान साहबकेयहां सोया था। प्र०—खानसाहब कानाम बताओ ? उ०—नाम मुझको नहीं मालूम। अकबर अलीको इजलास में बुलाया और उसने उसको पहिचाना। प्र०—कभी पहिले भी कोई सिपाही तुम्हारे साथ रहा है ? उ०—नहीं साहब। प्र०—तुम्हारे साथ खेमे में और कौन रहता है ? उ०—सम्पूर्ण गवाह रहते हैं। प्र०—क्या वह सब एक जगह रहते हैं ? उ०—साहब वह कल से एक जगह हुये हैं और पहले तो वह अलग २ रहते थे। प्र०—तुम जानते हो कि सब गवाह अलग २ क्यों रहते थे ? उ०—सरकार को गवाही देते थे। प्र०—तुम रावजी को जानते हो ? उ०—हां साहब मैं जानता हूं। प्र०—क्या वह तुम्हारे खेमे में रहता है ? उ०—नहीं साहब अलग खेमे में रहता है। प्र०—उसके पास कौन रहता है ? उ०—खान साहब। प्र०—खां साहब उसके साथ जब से वह क़ैद हुये रहते हैं ? उ०—हां साहब। प्र०—कबसे वह क़ैद हुवा है उ०—दो महीने से क़ैद हुवा है ॥

दूसरी बार कुट्टू के इज़हारात लिये गये ॥

प्र०—तुम्हारे खेमे में कै आदमी हैं ? उ०—मुझको उनकी संख्या मालूम नहीं परन्तु गाड़ी वाले हैं और और भी हैं प्र०—गाड़ी वाले कै हैं ? उ०—तीन। प्र०—तुम उनके नाम जानते हो ? उ०—नहीं जानता हूं मैं केवल उन गाड़ी

वाले का नाम जानता हूं जिसकी गाड़ी में बैठ कर गया था। प्र०—तुमने जो अभी यह कहा कि कल से गवाह अलग २ कर दिये गये हैं वह कौन २ हैं? उ०—मैं उनके नाम नहीं जानता आया, करीम, और और गवाह हैं जो गवाही अपनी दे चुके हैं॥

शेख दाऊद के इज़हारात।

इसने बयान किया कि मेरे पिता का नाम शेख रहीम है और मैं शिकरम को हांकता हूं मैं बीबी साहब की आया को नहीं जानता हूं मैं आया के पति और छुट्टू लड़के को जानता हूं मैं आया और उस लड़के को शिकरम में बैठा कर महाराज के महल में ले गया था यह पांच चार रोज़ दीवालीसे पहिले का ज़िक्र है सालिमभी उस गाड़ीमें था और थोड़ीदेरके उपरान्त फिरइनको सवार कराकर लौटा ले आया अब्दुल्ला खानसामां ने मेरी गाड़ीकोकिरायेलिया था॥

सरजन्‌बेलनटायन्‌साहब के प्रश्न।

अब तुम कहां हो? उ०—कम्पूमें हूं। प्र०—तुम कहां रहते हो? उ०—अपने मा बाप के पास घरमें रहता हूं। प्र०—कोई सिपाही तुम्हारे पास था? उ०—कोई नहीं। प्र०—तुमने यह खबर किसीसे कही थी? उ०—किसी से नहीं। प्र०—तुमने इसका हाल पहिले किस से कहा? उ०—एक मनुष्य से कहा था। प्र०—मनुष्य के नाम होते हैं तुम उसका नाम जानते हो? उ०—साहब मैं नहीं जानता हूं। प्र०—क्या उसका नाम सन्दल है? उ०—हां साहब सन्दल है प्र०— तुमने उससे क्योंकर बातें कीं? उ०—मैं बाजारमें रोटी लेने जाता था वह एक दूकान पर बैठाहुवा था मैंने उससे बातें कीं वह मुझसे पूछने लगा मैंने सब बातें उससे कहदीं और उसको सब हाल मालूम होगया। ०ने तुमसे उसने क्याकहा था साफ बयान करो? उ०—उसने पूछा कि तुम रात को सवार करके किसको लेगये थे मैंने

उसने कहदिया था। प्र०—तुम उसके पूछने से यह क्योंकर समझे कि उसका मतलब आयासे है क्या तुम और किसीको रातके समय सवार कर के नहीं लेजाते हो? उ०—साहब मैं और वह एक सड़कपर गाड़ी हांकते हुवे चले जाते थे और उसने देखलिया था जो साहबवह मुझको न देखता तो न पूछता। प्र०—क्या उसी समय तुमसे बातें हुईं? उ०—हां कोई पच्चीस तीस मिनटके उपरान्त उससे बातें हुईं। प्र०—तुम ने कैबार आया के जाने का ज़िक्र उससे किया? उ०—हमको याद नहीं॥

एडवोकेट जनरल ने फिर इजहार लिये॥

प्र०—तुम्हारे स्वामी का क्या नाम है? उ०—छुट्टू नाम है। प्र०—सन्दल के स्वामी का क्या नाम है? उ०—सलामत नाम है। प्र०—क्या वह दोनों गाड़ियां किराये पर देते हैं? उ०—हां साहब। प्र०—कहां पर गाड़ियों को रखते हैं क्या एकही स्थान पर दोनों की गाड़ियां हैं? उ०—नहीं साहब अलग २ उनकी गाड़ियां हैं। प्र०—वह दोनों कहां रहते हैं? उ०—एक तो क़स्साबखाने में रहता है दूसरा शराब खाने के निकट रहता है। प्र०—पहले तुमने उससे बातें की थीं या उसने तुम से बातें की थीं? उ०—पहले उसने मुझसे बातें की थीं। प्र०—क्या उसने यह पूछा था कि तुम किसको सवार करके ले गये थे? उ०—हां साहब यह पूछा था। प्र०—बम्बई की पुलिस बड़ौदे में कब आई तुमको मालूम है? उ०—हमको नहीं मालूम॥

सन्दलखां फिर बुलाया गया॥

प्र०—तुम शेख दाऊद को जानते हो? उ०—हां साहब जानता हूं हम और वह एकही काम करते हैं मैं छुट्टू के यहां नौकर हूं और मेरे और उसके एक बेर बातें हुई थीं मैं उस समय अपने बैलोंको पानी पिलाने जाता था और वह शहर के तरफ गाड़ी लिये जाता था मैंने उससे पूछा

कि तुम किसको लिये जाते हो वह उस समय न बोला परन्तु दूसरे दिन मैंने उससे पूछा कि तुम किसको ले गये थे उसने मुझसे बयान किया॥

सरजन्ट बेलन टायन साहब के प्रश्न॥

प्र०—तुमने करीम का नाम लिया था उ०—हां साहब लिया था प्र०—तुमने सूटर साहब से अपने इजहारात में सब बयान करदिया था? उ०—हां साहब बयान कर दिया था॥

फिर दुबारह इजहारात लिये गये॥

प्र०—तुमने शेख दाऊद से करीम के विषय में क्या पूछा था? उ०—मैंने पूछा कि रात को तुम कहां गये थे उसने मुझसे कह दिया। प्र०—परन्तु तुमने करीमके विषय में क्या कहा था? उ०—मैंने कुछ भी नहीं कहा। प्र०—सरजन्ट-बेलनटायन साहब ने कहा कि मेरे ओर देखो तुमने तो अभी बयान किया है कि मैंने करीम की निस्बत कहा था कि वह बोवी साहब का नौकर है? उ०—साहब मैंने नहीं कहा और जो आपने पूछा होगा तो मैं अंगरेजी जबान नहीं समझता प्रेजीडन्ट साहबने पूछाकि तुमने करीमके विषय में कुछ भी नहीं कहा? उ०—कुछ भी नहीं कहा। प्र० कभी भी कुछ नहीं कहा? उ०—कभी कुछ नहीं कहा। प्र० तुमको अच्छी तरह से याद है कि तुमने कभी भी कुछ नहीं कहा? उ०—साहब जैसा आप कहतेहैं शायद कहा होगा इस बात को सुनकर सम्पूर्ण इजलास हंस पड़ा? प्र०—जब सूटर साहबके रूबरू इजहार दियेथे उस समय बोवी साहब मौजूद थे? उ०—हां साहब मौजूद थे और उस समय दाऊद भी था॥

शेख अब्दुल्ला के इजहार॥

उसने बयान कियाकि अमीनाका मैंपति हूंमैं मेजर बूकनी साहबका सात महीने से नौकर हूं दो महीने तो बड़ौदे में

रहा और बाक़ी दिनों महाबलेश्वर में रहा अट्ठाईसवीं या उन्तीसवीं मार्च को मैं बड़ौदे में आया हम और आया एकही मकान में रहते थे साहब प्रेसीडण्ट ने पूछा कि तुमने चिट्ठियां आया को भेजी थीं ? उ०—हां साहब मुझसे और आया से खतकिताबत होती थी साहब सेक्रेटरी ने वह खत दिखाये और उसने उनको पहिचान लिया उसपर (सी) और (डी) का निशान दिया गया उसने बयान किया कि मैंने वह दोनों चिट्ठियां आया को भेजी थीं और घरकी तलाशी पर चार चिट्ठियां निकलीं और वह सरकार में मौजूद हैं। प्र० पहली चिट्ठी कौनसी है ? उ०-पहलीचिट्ठी वहहैकिजिसपर (ए) अक्षरका चिन्हहै यहचिट्ठीआयाने मुझकोभेजीथी सरजान बेलनटायन साहबने खड़े होकर कहाकि इनचिट्ठियोंको हम शहादत में नहीं लेसक्ते हैं और हवाला कानून शहादत का दिया साहब प्रेजीडन्ट ने कहाकि हम इन चिट्ठियों को पढ़ें और देखेंकि यह शहादत के योग्य हैं या नहीं हमको साबित होता है कि यह चिट्ठी आया ने लिखी है बेलन टायन साहब ने कहा कि आपको यह क्योंकर साबित हुआ इसको साबित करना चाहिये साहब ऐडवकेट जनरल ने कहा कि अच्छा फिर इस पर हम बहस करेंगे अब इसको रहने दो तथाच यह अलग रक्खी गई और अब कि टिफन खाने का समय था इस सबब से इजलास बरखास्त हुवा॥

टिफन खाने के उपरान्त फिर जब इजलास शुरू हुआ तो अब्दुल्ला से पूछा कि तुम यशवन्तराव और सालिम को जानते हो ? उ०--हां मैं कुछ जानता हूं और मुझसे यशवन्त राव और सालिम से बात चीत हुई है सालिम को मैं उस समय से जानता हूं कि जब से वह महाराज के साथ रसोईखाने में आकर फैजू के पास पानी पीने के वास्ते जाता था जनके महीने में मेरी बी महाराज के पास गई थी और महाराज ने उससे पहिले कमीशन के विषय में पूछा परन्तु

पहली बेर सिवाय इसके और कुछ बातें नहीं हुईं कि
मेम साहिबा को समझा दो कि वह साहब से कहैं तो कि
साहब महाराज पर मेहरबानी करैं दूसरी मर्तबा जबकि वह
गई थी तो मैं महाबलेश्वर में था उसने मुझसे बयान किया
था कि मैं करीम बख्श के साथ गई थी और महाराज ने उससे
पूछा था कि मेम साहिबा हमारे विवाह के विषय में तो कुछ
नहीं कहती थीं उसने उत्तर दिया कि कुछ नहीं कहती थीं
फिर महाराज ने कहा कि तुम मेमसाहिबा को समझा दो कि
वह साहिब से हमारी सिफारिश करें इसबेर सौरुपया महा-
राज ने मेरी स्त्री को दिया फिर मेरी स्त्री मेमसाहिबा के
साथ पूना को चली गई। प्र०—जब कि तुम्हारी स्त्री पूनाको
गईथी तो यशवन्त राव कहां था? उ०—वह बम्बई को गया
था। ऐडवकेटजनरल ने प्रेजीडण्ट से कहा कि जब आया पूनाको
गई थी तो यशवन्तराव चिट्ठी लिखा करता था मुझको मालूम
हुवा कि आयाको इस मुकद्दमे में साजिशथी—सरजन्टबेलनटा
यनसाहब ने कहा कि मुझको उसका साज मालूम नहीं होता
मैं नहीं कहसक्ता कि यह चिट्ठियां गवाही में क्योंकर ली
जावेंगी क्योंकि यह चिट्ठियां घरेलू हैं जो पति ने स्त्री को
लिखीं और स्त्री ने पति को इनका क्योंकर सबूत हो सक्ता
है ऐडवकेटजनरल ने कहा कि उनका सबूत यों हो सक्ता है
कि आया ने जो कुछ इजहार दिये हैं उसकी सचाई इस
से मालूम होतीहै बेलनटायनसाहब ने कहाकि अच्छा इन
चिट्ठियों को शहादत में दाखिल न करो परन्तु इतना मालूम
हुवा कि आया और खानसामां को इस मुकद्दमे में साजिश
थी ऐडवकेटजनरल ने यह बात स्वीकार की और कहा कि
अच्छा फिर इन चिट्ठियों को शहादत में दाखिल क्यों नहीं
करते बेलनटायन ने कहा कि साजिशका शब्द बहुत बुराहै
और साजिश के नाम से इन चिट्ठियों को गवाही में दाखिल
करना उचित नहीं है प्रेजीडण्टसाहब ने कहाकि यह तुम्हारा

बात मानने के योग्य नहीं है अच्छा साहिब का काम जाने दो परन्तु इन चिट्ठियों को शहादत में दाखिल करना उचित है तथापि वह चिट्ठियां गवाही में लीगईं ऐडवकेट-जनरल ने कहा कि हम पहली चिट्ठी जो १६ अगस्त सन् १८७४ई० की लिखी हुई है दाखिल करते हैं जिसमें शेख अब्दुल्लाने अमीना को लिखा है कि मैं परमेश्वर की कृपा और तुम्हारे आशीर्वाद से अच्छा हूं जब से कि तुम बड़ौदे से गईं तुम्हारी कुछ खबर नहीं आई इस सबब से मुझको अत्यन्त चिन्ता है तुमको ऐसी भूल न चाहिये थी यह ईश्वरकी मरज़ी है तुम्हारा इस में कुछ अपराध नहीं है महाराज के पास अब जाने की मनाही होगई है मुझको अब महाराज के दरबार की खबर नहीं मिलती बंगले के नौकर सब तुमको सलाम देते हैं यशवन्त राव बम्बई को गया है शहाबुद्दीन भी बम्बई को जावेगा परन्तु अब तक मुझको ठीक खबर मालूम नहीं है इस चिट्ठी के देखतेही तुम उत्तर लिखना॥

(दस्तखत——शेख अब्दुल्ला खानसामां)

यह चिट्ठी खास अब्दुल्लाके हाथकी लिखी है ऐडवकेटजन-रलने अब्दुल्ला से पूछा इस चिट्ठीमें जो बंगले का शब्द लिखा है उससे क्या अर्थ है? उ०-यहशब्द रेज़ीडन्सीके बंगलेका बोधक है फिर यह चिट्ठी महाराजगानके जानने के वास्ते हिन्दुस्तानी भाषा में पढ़ीगई सरजान बेलनटायन साहबने कहा कि इस चिट्ठी की आप के पास कोई नक़ल भी है उन्होंने उत्तर दिया कि अभी तक उसकी नक़ल इस वास्ते नहीं की गई थी कि वह गवाही में दाखिल नहीं थी अब यह चिट्ठी शहादत में दाखिल हुई है इसलिये अबउसकी नक़ल तुमको मिलसक्ती है। प्र०-यशवन्त राव यह कौन मनुष्य है जिसका चिट्ठी में जिक्र है कि वह बम्बई को गया है? उ०-यहशख्स महाराज का जासूस है बाहर ऐडवकेट जनरल ने कहा कि दूसरी चिट्ठी को हम पेशकरते हैं इस चिट्ठी पर मोहर डाकखाने की १९

चलता सन् १८७४ की है और उसमें तारीख़ नहीं पड़ी है परन्तु मालूम होता है कि डाकखाने की मोहर से दो एक दिन पहिले यह चिट्ठी लिखी गई होगी यह चिट्ठी शेख़ अब्दुल्ला ने अमीना को लिखी है कि मैं ईश्वर की दया और तुम्हारे आशीर्वाद से अच्छी तरह से हूं तुम कुछ चिन्ता न करना करनैल फियर साहब पूना में १८ तारीख़ को गये हैं और मुकाम गरमी में रहेंगे तुमको मालूम हो कि दीवान मौकूफ़ होगये और दूसरा मनुष्य उनकी जगहपर अभी नौकर नहीं हुवा है तुम वहांकी ख़बरें लिखते रहनाकी हजरत बम्बई मेंगये थे उनके विषयमें मालूम करना और जब तुम वहां से आना तो अपने साथ उनको जरूर लेते आना तुम उनको इस जरूर बातकी इत्तिला देना और समय २ पर अपने समाचार से हमको इत्तिला करते रहना जबसे तुम यहांसे गई हमको बिल्कुल भूलगई इसमें तुम्हारा कुछ दोष नहीं है हमारी प्रारब्ध का कसूर है यशवन्त राव बम्बई को अब्दुल्ला-ख़ां साहब के साथ गया है और पेडरू का सलाम पहुंचे हमारे और पेडरूके तरफसे अपने खानसामा से सलाम कह देना जितनी जल्दी होसके इसका उत्तर भेजना—इति ॥

(दस्तख़त शेख़ अब्दुल्ला)

साहब प्रेजीडन्टने कहा कि इन चिट्ठियोंकी नकल की जावे॥

गवाह वर्णन करता है कि जबकि मेरी स्त्री पूनासे आई तो फिर एक बेर महाराजके पास रमजान के महीने में गई थी मैं उसके वास्ते गाड़ी किराया करके लाया था एक लड़का हुसैनी उसके साथ गया था और महाराज और मेरी स्त्रीसे कुछ वार्ता हुई थी सुबहको मुझसे इसने बयानकी इससे महाराज ने कहा कि साहब को कोई ऐसी वस्तु दो कि जिससे साहब का दिल फिर जावे मेरी स्त्री ने कहा कि ऐसी वस्तु कदाचित् न देना अगर साहब को कुछ होगया तो तुम तबाह होजा-ओगे इस मरतबे खालिमने पचास रुपये उसको दिये कहा-

राज में उससे कहा था कि अगर तुम ऐसा काम करोगी तो तुमको और तुम्हारे पतिको नौकरी मिलजावेगी। चोंकि साढ़े चार बजे का समय था इजलास बरखास्त हुवा।

चौथे दिनका इजलास।

आज ग्यारह बजे के समय फिर इजलास शुरू हुवा कमीशन के सम्पूर्ण मेम्बर मौजूद थे श्रीयुत महाराज मल्हरराव नहीं आये शेख अब्दुल्ला से सरजन्ट बेलन टायन साहबने प्रश्न पूछे। प्र०—तुम्हारी शादीको कितनी मुद्दत हुई? उ०—दस या ग्यारह बरस हुये प्र०—जब तुम परदेस जाया करते थे तो अपनी स्त्री को खत लिखा करतेथे? उ०—हां साहब। प्र०—वहभी तुम को लिखा करती थी? उ०—हां लिखा करतीथी? प्र०—तुम सिवाय अपने घरके हालात के और हालातभी लिखा करते थे? उ०—हां साहब जो कुछ हम को जरूरी मालूम होता था वह लिखा करते थे। प्र०—अच्छा तुम को मालूम है कि कभी तुम्हारी स्त्री ने किसी मुफीदअमर की निस्बत तुमको लिखा था? उ०—शायद लिखा होगा। प्र०—सिवाय उन चिट्ठियों के जो तुमने जाहिर की हैं कोई और भी चिट्ठी तुमारी स्त्रीने लिखी है? उ०—शायद मेरे कागजोंमें होगी प्र०—जून और जूलाई सन् १८७३ ई० के महीनों में तुमने कोई चिट्ठी पाई थी? उ०—कोई नहीं। प्र०—क्या सबब है? उ०-उस जमाने में हम और वह एकही जगह परथे। प्र०-क्या तुम नवम्बर और दिसम्बर सन्१८७३ ई०में भी एकही जगह परथे? उ०—नहीं साहब मैं बम्बई में था और वह बड़ौदे में थी। प्र०—जून सन् १८७४ई० में तुम कहां थे? उ०—थोड़े दिनों के वास्ते मैं महाबलेश्वर को गया था और मेरी स्त्री बम्बईमें थी। प्र०—तुम्हारी स्त्री करनैल फियर साहब की मेमसाहिबा के पास कितने दिन नौकर रही? उ०—सात आठ महीने। प्र०—तुमनेविष दियेजाने के विषय में पहले

क्या सुना था? उ०-बंगलेपर बहुत से मनुष्य बात चीत किया करते थे कि मालुम नहीं किस मनुष्य ने साहब को विष दिया है। प्र०-तुम कुछ जहर की निसबत जानते थे? उ०-मैं कुछ नहीं जानता था। प्र०-तुम जानते हो कि शर्बत कौन बनाया करता था? उ०-मैं नहीं जानता था अब मैं १३ नवम्बर के हालात में कुछ प्रश्न तुम से पूछना चाहता हूं। प्र०-तुम को याद है कि तुमने करनैल फियर साहब के रूबरू इजहार दिये थे? उ०-मैंने उनके रूबरू इजहार नहीं दिये थे किन्तु मैंने बोवीसाहब के रूबरू इजहार दिये थे। प्र०-जो कुछ तुम्हारी स्त्री ने तुम से कहा था उस का बयान साहब से किया था? उ०-मैंने नहीं कहा। प्र०-तुमने किस्के साम्हने पहले कहा था? उ०-सूटर साहब के साम्हने। प्र०-तुमने बोवी साहब के साम्हने क्यों नहीं इजहार दिये? उ०-मुझको भय मालुम हुआ। प्र०-तुम क्यों भय भीत हुए? उ०-साहब मुझ से पूछा नहीं गया मैं क्योंकर कहता। प्र०-मेरे प्रश्न का उत्तर दो यह इजहार तुमने क्यों न दिया कि मेरी स्त्री महाराजके वहां गई थी और महाराजने उससे कहा कि कोई ऐसा जादू करो कि फियर साहब का दिल फिर जाय? उ०-मुझको भय मालुम हुआ। प्र०-तुमको क्या भय था? उ०-साहब मेरी स्त्री को वहां जाने को मनाही थी और मेरी इजाजत के विना वहां गई थी शायद वह उसपर अप्रसन्न होते। प्र०-क्या तुम्हारी स्त्री ने तुमसे कह दिया था कि इस बारे में किसीसे जिक्र न करना? उ०-मुझसे नहीं कहा था। प्र० अच्छा तुमको सूटर साहब के रूबरू क्यों भय मालुम हुआ? उ०-मेरा एक छुट्टू लड़का नौकर था और उसने सब हाल कह दिया फिर मैं क्योंकर छिपा सक्ता। प्र०-वहां उस समय कौन २ थे? उ०-दोनों खानसाहब गजानन्द वकिल और छुट्टू और एक गाड़ी वाला था। प्र०-वह सब आदमी

तुमसे पहले पहुंच गये थे ? उ०—नहीं केवल अकबर अली और अब्दुल अली मुझ से पहिले पहुंच गये थे। प्र०—उन पुलिस के आदमियों ने तुमसे क्या पूछा ? उ०—मुझसे पूछा कि इस मुकद्दमे की निस्बत क्या जानते हो मैंने कहा कि किस मुकद्दमे की निस्बत, कहा महाराज के मुकद्दमे की निस्बत, मैंने कहा मैं कुछ नहीं जानता, कहा तुम सच कहते हो मैंने कहा मैं सच कहता हूं। प्र०—तुमने मुझसे जो कहा कि छुट्टू और गाड़ीवाला भी पहले से मौजूद थे और मैंने उनके रूबरू इज़हार दिये यह बात सच है ? उ०—हां साहब मौजूद थे। प्र०—जब तुमने कहा कि मैं इस मुकद्दमे के विषय में कुछ नहीं जानता हूं तो सूटरसाहब ने क्या कहा उ०—सूटरसाहब ने उस लड़के और गाड़ी वाले को बुलाया और मेरा साम्हना कराया मुझसे कहा कि तुमने गाड़ी मंगवाई थी मैंने उत्तर दिया कि मंगवाई थी उन्होंने कहा कि यही गाड़ी वाला है मैंने कहा यही गाड़ी वाला है जिस की गाड़ी मैंने किराये को लीथी। प्र०—इज़हार देकर तुम कहां गये ? उ०—मैं तीन चार सिपाहियों के पहिरे में रक्खा गया। प्र०—फिर क्या हुवा ? उ०—अपने घर चलागया। प्र०—क्या तुम आया के साथ रहते हो और जब उसके इज़हारात हुये थे तुम मौजूदथे ? उ०—हां साहब फिर जब तक हमारे और उसके इज़हार नहीं लिये गये थे हम अलग२ रक्खे गये थे। प्र०—तुमने अपनी चिट्ठी में ग़ुलामुद्दीन का ज़िक्र किया है वह कौन मनुष्य है ? उ०—साहब वह क़ाज़ी है और शहर में रहते हैं और महाराज के यहां काम करते हैं प्र०—अब तुम जानते हो कि वह सरल्युसपोली साहबके पास नौकर हैं उ०—यह बात नहीं मालूम॥

शेख अब्दुल्ला के फिर इज़हारात लिये गये॥

इसने बयान किया कि मैंने सूटरसाहब के रूबरू अपने इज़हारात दिये थे सूटरसाहब उस समय पुलिस की तरफ

के कमरे में बैठे हुये थे जिस समय मेरे इजहार लिये गये उस समय मेरी स्त्री बोवीसाहब की मेमसाहिबा के पास नौकर थी। प्र०—तुमने बयान किया कि जब तुम अपने इजहार दे चुके तो तुम पहरे में रक्खे गये थे ? उ०—पहिले दिन मैंने कई प्रश्नों का उत्तर दिया था और मेरे दो तीन दिनतक इजहारात होते रहे। प्र०—जिस दिनसे तुमने अपने इजहारात देने शुरू किये थे और जिस दिन तक कि पूर्ण किये थे इस दरमियान में कभी अपनी स्त्री से कुछ बातें तुमने की थीं ? उ०—नहीं कीं। प्र०—जब कि वह अस्पताल में थी तब तुम देखने को गयेथे ? उ०—हां गया था। प्र०—वह कितने दिन अस्पताल में रही ? उ०—पांच दिन तक अस्पताल में रही ? ऐडवकेट जनरल ने कहा कि आया के इजहारात १८ तारीख को लिये गये थे और उसके पति के इजहारात १९ तारीख को॥

अब्दुल रहमान के इजहारात।

सय्यद अब्दुल रहमान ने बयान किया कि मैं कई वर्षसे आया को जानता हूं मैं डाकखाने का चपरासी हूं जबकि आया बम्बई में गई थी तो मुझसे कहा था कि मैं मेम साहिबा के साथ बम्बई में आई हूं वह विलायत जाने वाली है और बम्बई में मैंने उसके पति को कई चिट्ठियां लिखवा दी थीं वह चिट्ठियां अब्दुलरहमान को दिखाई गईं और उनको उसने पहिचान लिया और कहा कि यह चिट्ठियां मैंने लिखवाई हैं इसकोबल्ल साहब ने उन चिट्ठियों को शहादत में दाखिल करलिया ताकि यह सुबूत हो कि दरमियान यशवन्तराव और सालम और महाराज के खतकिताबत होती थी मिस्टर अनवरारटी साहबने उन चिट्ठियोंको गवाही में दाखल किया मिस्टर बैंसन साहब ने कहा कि चूंकि इस समय सरजनरलबेलनटायन साहब मौजूद नहीं है तो हम इस वक्त इन चिट्ठियों के शहादत में दाखिल करने से इन्कार करते

प्रासीक्यूटर साहब ने कहा कि तुमको इन्कार करना न चाहिये क्योंकि एक चिट्ठी तो दाखिल शहादत होचुकी है इसमें तुमको क्या इन्कार है ब्रैंसन साहबने कहा कि इस से क्या साबित होता है अभी आया की गवाही नहीं ली गई—है जब कि तुम्हारे साथी ने कल की चिट्ठी को दाखिल शहादत करलिया तो फिर तुमको इस चिट्ठी के दाखिलश-हादत करने में क्या इन्कार है यद्यपि यह चिट्ठी भेजी गईथी परन्तु यह चिट्ठी उसके पास नहीं पहुंची प्रासीक्यूटसाहब ने कहा कि यह चिट्ठी भेजी गई थी परन्तु उसने लौटादी इस चिट्ठी पर निशान [डी] का लगाया गया और चिट्ठी दाखिलशहादत की गई गवाह वर्णन करता है कि मुझको नहीं मालूम कि मैंने किस समय में यह दोनों चिट्ठियां लिखी थीं परंतु मुझको तीसरी चिट्ठी का लिखाजाना याद है वह शेखअब्दुल्ला खानसामां के नाम लिखी गईथी यद्यपि उसका मजमून भूलगया हूं परन्तु मतलब यादहै . उसमें एकचिट्ठी महाराज के नाम भी थी ॥

ब्रैंसन साहब के प्रश्न ॥

प्र०—तुम अंगरेजी जानते हो ? उ०—कुछ थोड़ी सी मैं अंगरेजी समझ सक्ता हूं परन्तु बोल नहीं सक्ता । प्र०—तुम बम्बई में कहां रहते हो ? उ०—खेतवाले के महल्ले में । प्र० तुम कितने वर्षसे वहां रहतेहो ? उ०—चार वर्षसे वहां रहता हूं प्र०—आया बम्बई में कहां रहती थी ? उ०—मेरेही घर में रहती थी । प्र०—तुम अकबरअली और अब्दुलअली को जानते हो ? उ०—हां साहब जानता हूं प्र०—तुमने कभी इनको बम्बई में देखा था ? उ०—बम्बईके पुलिस में तो वह नौकरही हैं बम्बई तो इनका निवासस्थान है । प्र०—तुमसे इन लोगों ने किस जगह पर इजहार लिये थे ? उ०—कालवा देवी के डाकखाने में मेरे इजहार लिये थे । प्र०—तुम्हें कौन बुलाने गया था ? उ०—एक जमादार अकबर-

अली गया था प्र०—क्या वह अकबरअली का सम्बन्धी है ? उ०—हां साहब उनका सम्बन्धी है। प्र०—अहमदअली तुम्हारे पास आया तो तुमने क्या कहा ? उ०—अहमदअलीने तो मुझसे कुछ नहीं कहा परन्तु खानबहादुर ने मेरे इजहारात लिये। प्र०—मेरे प्रश्न का उत्तर दो अहमदअली ने तुमसे क्या कहा और उस समय कौन २ मौजूद थे ? उ० उस वक्त केवल मैं और अहमदअली था और कोई न था। प्र०—तुम्हारे किस जगह पर इजहार लिये थे ? उ०—अहमदअली ने अपने घरपर लेजाकर इजहारात लिये थे। प्र०—तुमसे खानबहादुर ने क्या पूछा ? उ०—खानबहादुर ने मुझने पूछा कि कोई चिट्ठी तो तुमने महाराज को नहीं लिखी है मैंने कहा मैंने कोई चिट्ठी नहीं लिखी है परन्तु आया के वास्ते एक चिट्ठी लिखी है फिर मुझसे पूछा कि तुमने कब शेख अब्दुल्ला के नाम चिट्ठी लिखी थी मैंने उस को बता दिया। प्र०—क्या वह होलीके पीछे चिट्ठी लिखी थी ? उ०—मैं होली को नहीं समझता मुसल्मान हूं। प्र०—क्या बकराईद के पीछे लिखीथी ? उ०— मुझको याद नहीं। प्र०—तुम शबरात को जानते हो ? उ०—हां साहब जानता हूं। प्र०—अच्छा यह बताओ कि शबरात के कै दिन पहले या पीछे यह चिट्ठी लिखी थी ? उ०—साहब मैं नहीं बता सका क्योंकि मुझको याद नहीं है। प्र०—उस वक्त और भी कोई था जिस वक्त तुमने चिट्ठी लिखी थी ? उ०—और कोई न था। प्र०—महाराज को तुमने क्या लिखा था ? उ० उसने यह लिखवाया था कि मुझको खर्च भेजो बम्बई के गवर्नर ने खाना साहब लोगों को दिया था उसमें कुछ तुम्हारा जिक्र नहीं आया कोई चिन्ता करने की बात नहीं है ऐजवकेट जनरल ने पूछा। प्र०—महाराज को और क्या तुमने चिट्ठी में लिखा था ? उ०—और कुछ नहीं लिखा था। प्र० यह चिट्ठी तुमने क्या आया को और चिट्ठियों के साथ में

लिखी थी? उ०—हां साहब और चिट्ठियों के साथ में लिखी थी। प्र०—तुम डाकखाने में कितने दिनों से नौकर हो और क्या मासिक है उ०—तीन वर्ष से नौकर हूं और अट्ठाईस रुपये महीना मिलता है॥

अमीना को फिर बुलाया॥

उसने बयान किया कि मैं अब्दुल्ला को जानती हूं मैं और वह एकही मकान में बम्बई में रहते थे जब मैं बम्बई में थी तो उससे चिट्ठियां लिखवाया करती थी वह चिट्ठी जिसपर (डी) अक्षर का निशान दिया गया था पढ़ी गई वह इबारत शेख़ अब्दुल्ला के नाम पर चिट्ठी थी—सलाम के पीछे अमीना आया बम्बई से आप को लिखती है कि मैंने एक चिट्ठी टिकट लगाकर आपके पास भेजी थी मुझको बड़ी चिन्ता है कि वह चिट्ठी तुम्हारे पास पहुंची या नहीं यदि तुम कहो तो मैं इंगलिस्तान को जाऊं एक मेम साहिबा मुझको लिये जाती हैं मैंने खर्च के वास्ते तुमको लिखा था परन्तु कुछ खर्च तुमने नहीं भेजा यशवन्त राव को सलाम कह देना छुट्टू की मां से एक रुपया लेलेना लिखना कि तुमने मुहम्मद वज़ीर से पांच रुपये क़र्ज़ लिये हैं वह रोज आकर मुझसे तक़ाज़ा करता है जो लिये हैं। तो मैं उसको दे दूं तुमने वह चिट्ठी जो चिट्ठी के साथ थी उस शख़्स को दी या नहीं मुझे इस विषय में अति चिन्ता है अधिक क्या लिक्खा जावे शीघ्र ही उत्तर भेजना इति॥

गवाह बयान करता है कि यह चिट्ठी मेरे कहने के अनुसार लिखी गई है और मैंने उसमें लिखा था कि क़ाज़ी और यशवन्तराव और सालिम को सलाम कहदेना क़ाज़ी एक बहुत बड़ा प्रतिष्ठित मनुष्य है और वह मेरे कमरे में पानी पीने को आया करता था सालिम और यशवन्तराव को मैं इस सबब से जानती हूं कि वह दोनों महाराज के साथ रसोईखाने में आया करते थे। प्र०—वह चिट्ठी कि जो तुमने

खत के साथ भेजी थी वह किसके नाम है? उ०—वह महाराज के देने के वास्ते सालिम के नाम थी वह चिट्ठी कि जिस पर निशान (ए) का था इजलास में पढ़ी गई उसमें वह लिखा था कि हमने तुम्हारा मतलब समझा तुम बारंबार इसी तरह पर चिट्ठियां लिखते रहे। सालिम मेरे पास आया था अब मैं किसी कदर अच्छी हूं मैंने सालिम को चिट्ठी लिखदी है कि मैं २० तारीख तक वहां आऊंगी पांच रुपये मुहम्मद वजीर को दिये गये तुम्हारे खसुर के घरमें जगह रहने को है नहीं मैं कहां रहूं मुझको बड़ी तकलीफ है जमादार से २५) रु० पहुंचे २०) रु० उस मांड़वाड़ी को जल्द देदेना मेरा इन दिनों में बड़ा नुक्सान हुवा बीमारी के सबब से मुझको छुट्टी लेनी पड़ी मैं यशवन्तराव के घर पर गया थी वह बयान करता था कि महाराज ने दो तीन बेर तुम्हारे विषय में पूछा था सालिम तो तुम्हारे मकान पर कभी नहीं आया था मुझको लक्ष्मूबाबा मतकार और और आदमी तुमको सलाम देते हैं॥ लिखा हुवा १० अप्रैल सन् १८७४ ई०॥ गवाह वर्णन करती है कि यह चिट्ठी मैंने आप लिखवाई थी इस फिकरह से कि सालिम मुझको मिला यह मतलब है कि सालिम बम्बई को गया था और वहां मेरी और उसकी भेंट हुई थी मैंने उसको यशवन्तराव के मकान पर बम्बई में देखा था। वहां महाराज की बातें मुझसे उससे हुई थीं मैंने उससे कहा कि महाराज से हमको पारितोषिक कब दिलवाओगे उसने कहा कि महाराज के यह काम सावकाश से होते हैं यशवन्तराव ने मुझसे कहा कि अब जो मैं यहां से जाऊंगा तो तुम्हारे इनआम दिलाने में कोशिश करूंगा महाराज ने जब मैं बड़ौदे में था तो तुम्हारी निस्बत चार मर्तबा पूछा था साहबऐडवकेटजनरल ने पूछा कि क्या तुमने अपने पति से यह दोनों चिट्ठियां पाई थीं? उ०—हां साहब पाई थीं॥

मेंबनसाहब के प्रश्न ॥

प्र०—जबसेकि तुम्हारा पहला इजहार लिया गया तुम कहां थी? उ०—साहब मैं खानबहादुर के पास थी प्र०—जब से तुम्हारे इजहार होचुके हैं तुमने खानबहादुरके देखा है? उ०—देखा है। प्र०—क्या छोटे खानबहादुर को भी देखा है? उ०—हांसाहब देखा है। प्र०—उमरावसाहब गजानन्द वठिल को जानती हो? उ०—पहले कहा कि नहीं जानती हूं फिर याद करके कहा कि हां जानती हूं ॥

शेखअब्दुल्ला के फिर इजहार हुये।

शेख अब्दुल्ला के दुबारह इजहार प्रेजीडण्टने लिये वह वर्णन करता है कि एक मेरी चिट्ठीमें लिफाफे के अन्दर एक चिट्ठी महाराज के नाम परभी आयाने भेजीथी जबमैं महाबलेश्वर जाने लगा तो मैंने सम्पूर्ण चिट्ठियां अपनी स्त्री को देदींथीं और फिर मुझको नहीं मालूम कि उस चिट्ठी का क्या हुआ ॥

पेडरूसे ज़ाके इज़हारात ॥

मिस्टर अनवरारटोसाहब ने पेडरूडसौजा के इजहारात लिये उसने कहा कि जब करनैलफियरसाहब बड़ौदेमें आयेतो मैं उनकी मुलाजिमत में हाजिर था करनैलफियर साहब महीने मार्च सन् १८७३ ई० में बड़ौदे में आये थे और मैं बराबर बड़ौदेमें रहा परन्तु थोड़े दिनोंके लिये नौसारीमें गया था और एक महीने की छुट्टी लेकर गोवा को गया था मैं सालिम को जानता हूं वह बहुधा मुझसे कहा करता था कि जो तुम महाराजके पास आओ तो तुम्हारे वास्ते अच्छा होगा और हम तुम्हारी सवारीके वास्ते गाड़ी भेज दिया करेंगे मैंने कहा मैं नहीं आना चाहता हूं जब कि मैं गोवा को जाने लगा तो मैंने सालिम से कहा कि मेरे राह के वास्ते कुछ खर्च लादो और उसने मुझको साठरुपये बड़ौदे के प्रचारके लादिये जिसके चेहरेदार पचास रुपये

होते हैं यह रुपया मुझको रसीडन्सीमें सालिम दे गया था और देते समय कहा कि यह साठ रुपये सरकारने तुमको राह के खर्चके वास्ते दिये हैं अनवरारटो साहबने पूछा कि सरकार से क्या मतलब है। उ०—महाराज से मतलब है। प्र०—तुम कितनी मुद्दत से कार्नेलफियर साहब का काम करते थे। उ० छब्बीस वर्ष से॥

सरजानटबेलनटायन साहब के प्रश्न॥

प्र०—क्या तुम्हारी गवाही बम्बई में हुई थी? उ०—हां साहब हुई थी प्र०—किसके सामने हुई थी? उ०—ऐडगैल्टर साहब के रूबरू हुई थी प्र०—क्या तुमने सब हाल उनसे कह दिया था? उ०—हां साहब कह दिया था। प्र०—क्या तुमने सालिम से अपने गोवा के जाने का हाल कहा था? उ० नहीं साहब और कई शख्सों से कहा था। प्र०—क्या केवल सालिमने तुमसे कहा था कि गायकवारके पास चलो? उ० हां साहब केवल सालिम ने कहा था। प्र०—तुम सालिमको कबसे जानते हो? उ०—जबसे मैं बड़ौदे में आया हूं और वह महाराज के साथ एक सप्ताह में दो रर आया करता था प्र०—सालिमने तुमसे यह भी कहा था कि महाराजतुमको क्यों बुलाते हैं? उ०—केवल यह कहा था कि जो तुम महाराज के पास चलोगे तो तुम्हारे वास्ते अच्छा होगा। प्र० तुमने इनकार किया था? उ०—हां साहब मैने इनकार किया क्योंकि उन दिनों मुझको जानेका अवकाश न था प्र०—यह बात सही है कि तुम कभी नहीं गये? उ०—मैं कभी नहीं गया। प्र०—तुम कहां ठहरे हुये थे जब कितुमने ऐडगैल्टन साहब को गवाही दी थी? उ०—मैं साहब अपने साहब के यहां गया था। प्र०—तुम कबसे पुलिस के पहरे में हो? उ०—चालीस दिन से। प्र०—तुम रावजी को जानते हो? उ०—हां साहब मैं जानता हूं। प्र०—तुम कब से जानते हो? उ०—जब से साहब मैं यहां आया हूं। प्र०—तुम्हारा और

रावजी की प्रीतिथी? उ०—साहब हम बात चीत किया करते थे कुछ छिपता नहीं थी। प्र०—कभी रावजीने तुम से महाराज के यहां चलने के वास्ते कहा था? उ०—कभी नहीं कहा। प्र०—अच्छा उसने तुम से कभी नहीं कहा परन्तु तुमने कभी उस से इकरार किया था? उ०—नहीं साहब कभी नहीं। प्र०—कभी तुमने रावजी से कहा था कि चलो महाराज के यहां चलें? उ०—मैने रावजी से सिवाय उन साठ रुपयों के जो मैने महाराज से पाये थे कभी और महाराज के यहां का जिक्र तक नहीं किया। प्र०—कभी तुम और रावजी ने महाराज के यहां जाने का बन्दोबस्त किया था? उ०—कभी नहीं। प्र०—कभी तुम और रावजी सालिम के साथ महाराज के यहां गये थे? उ०—कभी नहीं। प्र०—कभी राव जी के साम्हने तुम से और गायकवार से बातें हुई थीं? उ०—कभी नहीं हुई और मैं कभी नहीं गया। प्र०—तो अब इस बात से मैंने यह समझा कि तुम महाराज की हवेली में कभी नहीं गये? उ०—कभी नहीं गया। प्र०—कभी तुमसे और महाराज से बातें नहीं हुई? उ०—कभी नहीं हुई। प्र०—यदि रावजी तुम्हारे मुंहपर कहदे कि तुम महाराज के यहां गये थे तो यह बात गलत है? उ०—बिल्कुल गलत है। प्र०—अगर रावजी तुम्हारे मुंहपर कहदे तो तुमको आश्चर्य होगा? उ०—हां साहब जरूर आश्चर्य होगा बात यह बिलकुल गलत है। प्र०—तुम कभी गोवा को गये थे? उ०—हां साहब एक महीने की रुखसत लेके गया था। प्र०—क्या तुम वहां से लौट आये थे तो तुम रावजी के साथ महाराज के यहां गये थे? उ०—मैं कभी नहीं गया। प्र०—अच्छा एक बात तुम मुझको और बताओ कि तुमने कोई पुड़िया महाराज के पास से पाई थी? उ०—मैं क्योंकर पुड़िया पाता जब कि मैं महाराज के यहां गयाही नहीं। प्र०—अच्छा फर्ज करो कि तुम महाराज के पास नहीं गये

परन्तु कोई पुड़िया तुमने महाराज से पाई थी? उ०—कोई पुड़िया नहीं पाई। प्र०—तुमने ऐडगैब्टन साहब के साम्हने क्या इज़हार दिये थे। उ०—साहब जो कुछ मैंने इज़हार दिये थे वह कागज़ में लिख लिये गये हैं। प्र०—क्या उन्होंने तुमसे पूछा था कि तुमने महाराज से कुछ पाया? उ०—हां साहब मुझ से पूछा था लेकिन मैंने उसका उत्तर दिया प्र०—तुम अकबर अली को जानते हो? उ०—हां साहब जानता हूं। प्र०—जब तुमसे ऐडगैब्टन साहब इज़हार ले चुके थे तो तुमसे कोई सवाल अकबर अली ने किया था? उ०—हां साहब उन्होंने भी इज़हार लिया था मैंने वही इज़हार जो ऐडगैब्टन को दिया था उनके रूबरू भी कह दिया। प्र०—तुमसे यह कहा था कि अगर तुम सच कहोगे तो तुम्हारे वास्ते अच्छा होगा? उ०—हां साहब मुझ से कहा था और मैंने भी जो कुछ सच था कह दिया था। प्र०—खानबहादुर ने तुमसे पूछा था कि तुम महाराज के यहां गये थे? उ०—हां साहब पूछा था। प्र०—तुमको खबर है कि रावजी ने तुम्हारे निस्बत क्या कहा? उ०—मुझको खबर नहीं साहब ऐडवकेट जनरल ने कहा कि मेरे दोस्त पांचवीं तारीख को इज़हार की तारीख मुकर्रर करते हैं अगर साहब प्रेजीडण्ट का भी यही सम्मत हो तो यही तारीख नियत की जावे प्रेजीडण्ट साहब ने कहा अच्छा यही तारीख करारदी जावे इसके पीछे जो इज़हार उसने दिये वह साहब प्रेजीडेण्ट को सुनाये गये॥ तदनन्तर टिफन खाने के वास्ते इजलास बरखास्त हुआ—टिफन खाने के उपरान्त इजलास फिर शुरू हुआ और फियर साहब गवाही के वास्ते बुलाये गये फियर साहब ने सौगन्ध खाकर बयान किया कि मैं बम्बई की फौज का करनैल था मेरा नाम राबिट फियर साहब है मुझको श्री महाराणी के कम्पानियन बाथ और ऐडेकांग के तमगे मिले हैं मैं १८ मार्च सन् १८७५ ई० को

बड़ौदे में आया था मैं यहां पोलीटीकल रजीडण्ट बड़ौदे का मुकर्रर होके आया और २४ दिसम्बर तक इस ओहदे पर मुकर्रर रहा मार्च सन् १८७४ ई० में मेरी मेम साहिबा विलायत को गई थी अमीना आया बम्बई तक उनको पहुंचाने गई उसको एक महीने की छुट्टी बम्बई से मिली जबकि मैं बम्बई में गया था तो जनरल गेल साहबके मकान में ठहरा था और मैं नौसारी को महाराज के साथ २ अप्रैल सन् १८७४ ई० को गया था मिस्टर बोवीसाहब मेरे साथ नौसारी को नहीं गये मैं नौसारी में १६ मई सन् १८७४ ई० तक ठहरा रहा और मेरे दोतीन रोज आने के पीछे महाराज भी बड़ौदे में आये पोलीसाहब के काम देनेतक मैं बराबर बड़ौदे में रहा और महाराज गायकवार भी बराबर बड़ौदेमें रहे महाराज प्रतिसोमवार और दृहस्पति को मुझसे मुलाकात करने को आया करते थे वह बहुधा गोबिन्दराव और बापूभाई के साथ आया करते थे उन के साथ कई सवार अरदली में होते थे मैं उन सवारों को बखूबी जानता हूं बहुधा यशवन्तराव और सालिम उनके साथ आया करते थे और जब कभी यह न होते थे तो महादेवराव काली और यशवन्तराव का लड़का आया करता था जब कि मैं नौसारी में था तबभी यह लोग आया करते थे मेरी रजीडन्सी कचहरी के पश्चिमकीओर एक जगह थी वहां एक कमरे में मेरा गुसलखाना था मेरे गुसलखाने के बाहर एक बरामदा था वहां एक तिपाई रक्खी थी वहां दो मनुष्य अर्थात् रावजी और नरसू बैठे रहते थे करीम बोवीसाहब के कमरे के बाहर बैठा रहता था गोबिन्दबापू मेरी कचहरी में आता था मैं सुबह उठकर हवाखाने के वास्ते जाया करता था और वहांसे आकर एक गिलास चकोतरह की शर्बत का जोकि हमेशह अब्दुल्ला चोबदार बनाता था पिया करता था ९ दिसम्बरको मैंने शरबत पिया और मेरा शिर घूमने लगा मैं सितम्बर महीने से

बीमार था गणपति के तहवार पर मैं बहुत अलील था और मेरे शिरमें फोड़ा निकला था यह फोड़ा बराबर तीन सप्ताहतक रहा और डाक्टर सीवर्ड साहब हररोज पलास्टर उसमें लगाया करते थे और यह पलास्टर मेरी मेज पर रक्खा रहता था इस फोड़ेके सबब से मेरे शिरमें पीड़ा होती थी और मेरी आंखें बैठी जाती थीं और जब कि मैं रात्रि को सोता था तो मुझ को बुखार मालूम होताथा ६ नवम्बर को मैं गोविन्दराव के मकान पर गया और मैंने दो तीनघूंट शरबत के पिये थे और मैं सारेदिन अलील रहा दूसरे दिन फिर मैंने थोड़ासा शर्व्वत पिया ९ तारीख को भी मैंने शर्बत पिया और उस दिन मैं हवा खोरी से जल्द पलट आया मैंने देखा कि रावजी हवालदार ने मुझको बरामदे में आकर सलाम किया यह बात नई थी और कभी इतनी जल्दी रावजी नहीं आया था दो तीन घूंट पीने के उपरान्त बीस मिनट तक मैं चिट्ठी लिखा किया फिर मैंने देखा कि मेरे सिर में अतिपीड़ा हो रही है मैंने जो उस गिलास को देखा तो मालूम हुआ कि इस गिलास में काले रंग की तिलछट जमी हुई है मैंने उसको देख कर तुरन्तही चिट्ठी डाक्टर सीवर्ड साहब के वास्ते बुलाने के लिखी डाक्टर साहब आकर उस तिलछट को लेगये जो कि वह सोमवार था महाराज भी थोड़ी देर के उपरान्त आये मैंने उनकी कुशल प्रश्न की उन्होंने कहा कि मैं अलील हूं और दीवाली की मिठाई खाने से मैं अलील होगया थोड़ी देर के उपरान्त वह चले गये यशवन्तराव दीवाली की डाली मेरे देने के वास्ते लाया और मुझको एक मिठाई उस में बताई कि यह मिठाई बहुत खराब है इस मिठाई को न खाना फिर जब महाराज मेरे पास से चले गये तो मैंने हाजिरी खाई और डाक्टर सीवर्ड साहब के वास्ते लिखा—साहब रेजीडण्ट ने पूछा कि तुमने डाक्टर सीवर्ड साहब

को महाराज के जाने के उपरान्त चिट्ठी लिखी थी वा उनके आने के पहिले? उ०—महाराज के जाने के उपरान्त मैंने भोजन किया फिर डाक्टर साहब को चिट्ठी लिखी ॥ अब साढ़े चार बजे का समय होगया था इसवास्ते इजलास बरखास्त हुआ ॥

पांचवें दिन का इजलास।

आज के दिन ग्यारह बजे कमीशन शुरू हुई महाराज सेंधिया बीमारी के कारण नहीं आये इजलास शुरू होने के समय साहब प्रेसीडण्ट ने कहा कि आज महाराज सेंधिया नहीं आये हैं और उनके पास आज की सम्पूर्ण काररवाई पहुंचाना चाहिये सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा कि उनके पास आजकी सम्पूर्ण कारवाई अवश्य पहुंचानी चाहिये फिर गवाह के इज़हार शुरू हुये साहब ऐडवकेट जनरल ने कहाकि कल आपने डाक्टर सीवर्डसाहबको चिट्ठी लिखने तक इज़हार दिये हैं अब यह बताओ कि तुमने डाक्टर सीवर्डसाहब के आने और महाराज के जाने के उपरान्त किसी से अपनी बीमारी का हाल बयान किया था या नहीं उ०—मैंने बे वी साहब से कहा था फिर वह चिट्ठी कि जो डाक्टर सीवर्डसाहब को फियरसाहब ने लिखी थी इजलास में पढ़ीगई ॥ बड़ौदा ९ नवम्बर सन् १८७४ ई० ॥ माईडियरसर, जो कुछ कि अपनी अलालत का हाल सुबह को मैंने आप से बयान किया था और जो वस्तु कि तुम यहां से लेगये उस को तुमने देखा होगा दया करके बताओ कि वह वस्तु विष है या और कोई वस्तु है यद्यपि मैं दो तीन घूंट शरबतके पीने पाया परन्तु आधे घण्टे तक मेरे पेट और शिरमें पीड़ा होती रही और जी मतलाता रहा और मेरी दृष्टि कम होती गई यहांतक कि मेरी जिह्वा में कांटे पड़गये और मेरी ज़बान पर कषैलापन था मैंने इन सब बातों से जाना था कि ज़हर के कारण होगया है या शायद चकोतरह विष का

शर्बत बनाया गया है खराब होगा परन्तु अब मालूम हुआ कि यह विष का सबब है और अगर मुझको यह मालूम होता कि इसमें विष है तो मैं उसको सारा न फेंकता और जब कि मैंने उस गिलास के नीचे तलछट देखी तो मुझको मालूम हुवा कि यह विष है ॥

(दस्तखत करनैल आरफियर)

यह चिट्ठी गवाही में लीगई और उसपर (ए) लिखा गया फिर थोड़ी देर के उपरान्त डाक्टर सीवर्ड साहब मेरे पास आये और उन्होंने बयान किया कि मैंने इस तलछट में से संखिया मालूम किया है मैंने शीघ्र यह बात सुनकर एक तारबर्क़ी गवर्न्नमेण्ट को दी कि मुझको विष दियागया यद्यपि मुझको तबतक यह मालुम न हुआथा कि मुझको किसने विष दिया है तारबर्क़ी में यह लिखा हुवाथा कि मुझको किसीने विष दिया पर ईश्वर की अनुग्रह से मैं बचगया यह तारबर्क़ी मैंने डाक्टर सीवर्ड साहब की वार्त्ताकरने के उपरान्तभेजी थी अर्थात् एक और दो बजे के मध्य में भेजीथी फिर मैंने इस जहर दियेजानेकी तहक़ीक़ात करनी शुरूकी और कई नौकरों को उस दिन मैंने क़ैदमें भेजा अर्थात् रावजी, हवालदार, और यशापा, और लक्ष्मण गोबिन्दराम बापू आदि संध्या के समय पहिरे में भेजे गये थे और रावजीउन्हींमें सब लोगोंको मालूम होगया था कि करनैलफियरसाहब को किसी ने विष दिया है फिर मैंने उस तलछट को ग्रेसाहब के पास भेज दिया और बोवीसाहब और मैंने मिलकर इस मुकद्दमेकी तहकीक़ात की महाराज फिर २० तारीखको मेरे घरमें आये उसदिन उनके साथ उनके वज़ीर दादाभाई नूरूजी थे उन्होंने कहा कि मैंने सुना है कि आप को किसी मनुष्य ने विष दिया है जो कुछ कोशिश हमसे होसकेगी हम उसके करने में हाज़िर हैं दादाभाई नूरूजी ने कहा कि हमने १० तारीख को यह खबर सुनी थी परन्तु हमको निश्चय न आया १२ तारीख

को हमने सच जान कर आप से पूछा फिर महाराज घर को चलेगये और एक याददाश्त घर से लिखकर भेजी साहब ऐडवकेटजनरल ने पूछा कि तुमने कितना हिस्सा शर्बत का फेंकदिया था और जो कुछ कि फेंक दिया था क्या वहां की मट्टी को ग्रे साहबके लिखने से खोदकर भेज दियाथा ? उ०—हां साहबभेज दिया था। प्र०—क्या डाक्टरग्रे साहबने मट्टीजमीन की खोदकर भेजने को खासकर तुमको लिखा था या डाक्टरसीवर्डसाहबको लिखाथा ? उ०—डाक्टरसीवर्डसाहबकेद्वारा मुझको लिखाथा और मैंने आपही पृथ्वी खोदकर एकपाकिज बनाकर भेजदियां था और उसपर मैंने मोहर करदी थी॥

सर लूईस पेलीटाइनस हिब के प्रश्न॥

प्र०—कर्नैलफियरसाहब बताइये कि क्या तुम १८मार्चको मुकर्रर होकर बड़ौदे में आयेथे? उ०—हां साहब। प्र०—पहिले तुमयहां से कहां मुकर्ररथे ? उ०—पालनपुरमें। प्र०—पालनपुर से पहिले तुम कहां मुकर्ररथे उ०—मैं गुजरातमें था। प्र० तुम्हारा क्या ओहदा था ? उ०—पोलीटीकल सुपुरिण्टेण्डण्ट था। प्र०—इससे पहिले तुम कहांथे ? उ०—मैं सिंध में था। प्र०—तुमने वह जगह कबछोडी ? उ०—सन् १८७२ ई० में छोड़ी थीजब मैं बिलायत को गयाथा ? प्र०—क्या इससे यह मतलब है कि तुम आप वह जगह छोड कर गये ? उ०—तुम्हारा इससे क्या मतलब है। प्र०—मेरा यह मतलब है कि तुम छुट्टी लेके गये थे या और किसी तरहबिलायत को गयेथे ? उ०—मैं छुट्टी लेकर गया था। प्र०—छुट्टी के पूर्ण होने के उपरान्त तुम आये तो फिर अपनी जगह पर क्यों क़ायम न हुये ? उ०— कोई इसका सबब नहीं है। प्र०—क्या वह जगह तुम्हारी तखफीफ में आगई थी ? उ०—तखफीफ में नहीं आई थी (फिर थोड़ी देर सोचकर कहा कि हां तखफीफ में आगई थी)। प्र०—मेहरबानी करके वही बात कहो जो अपनी उस जगह की निस्बत कहने को थे ?

उ०—मुझे कुछ तुमसे उस बात के छिपा रखने की इच्छा नहीं है। प्र०—परन्तु तखफ़ीफ का कहना तो बिल्कुल ग़लत है तुम उस जगह से बरतरफ होगये थे? उ०—मुझ को नहीं मालुम कि मैं बरतर्फ होगया था। प्र०—क्या तुम्हारे पास कोई सनद गवर्नमेण्ट की ऐसी नहीं पहुंची थी जिससे तुमको मालुम हुवा हो कि मैं बरतरफ होगया? उ०—जो सनद मेरे पास पहुंची थी उसका उत्तर मैंने गवर्नमेण्ट को लिख भेजा था। प्र०—तुमको मालूम है कि वह दस्तावेज महाराज या महाराज के वज़ीर के पास है? उ०—मैं ख्याल करता हूं कि उनके पास नहीं होगी क्योंकि वह गवर्नमेण्ट का रिजोल्यूशन है उसको वह ईमान्दारी से हासिल नहीं कर सक्ते। प्र०—हमारा मतलब ईमान्दारी और बेईमानी से नहीं है संसार में सब प्रकार के मनुष्य होते हैं अब यह बताइये कि उनके पास वह सनद है या नहीं——प्रेज़ीडण्ट साहब ने कहा कि करनैल फियर साहब आप अप्रसन्न न हूजिये और प्रश्न उत्तर दीजिये? उ०—यदि वह दस्तावेज महाराज ईमान्दारी से हासिल करते तो साहब रेज़ीडण्ट के द्वारा लेते। प्र०—साहब यह उत्तर हमारे प्रश्न का नहीं है आपको ईमान्दारी और बेईमानी से क्या काम है इस बात का इजलास को अधिकार है आप साफ २ हमारे प्रश्न का उत्तर दीजिये कि कभी आपने सुना है कि उनके पास कोई ऐसी सनद है? उ०—नहीं। प्र०—क्या तुमको यह बात मालुम नहीं है कि उन्होंने सरल्यूइस मोली साहब को ऐसी सनद दिखाई थी? उ०—नहीं प्र०—अच्छा मेहरबानी करके इस काग़ज़ को अवलोकन कीजिये-इस बात को देख कर ऐडवकेट जनरल ने कहा कि सर-जण्टेबलनटायन साहब को अधिकार नहीं है कि सनद की कारवाई यहां की कमीशन में पेश करें सरजण्टबेलनटायन साहब ने कहा कि मैंने खूब सोच समझ कर इस काग़ज़ को पेश

किया है और मैं इसके अन्तमें एक बड़ा मतलब गायकवार का निकालूंगा साहब ऐडवकेटजनरल ने कहा माई लार्डमैं आपका उस इश्तिहार पर ध्यान दिलाता हूं कि जिसमें श्रीगवर्न्नरजनरलने लिखा है कि मल्हरराव के पहले अपराध नहीं देखे जावेंगे करनैलफियर साहब को भी पिछिली काररवाई ग़ौर करनेकेयोग्य नहींहै प्रेज़ीडएटसाहब ने कहा कि यह तुम्हारी रायग़ौर तलब नहीं है सरजनवेलनटायन साहब उस काररवाई को पेश करसक्ते हैं सरजनवेलनटायन साहब ने कहा कि उसकी काररवाई जाहिर करने से मेरा मतलब यह नहो है कि करनैल फियर साहब अप्रशस्य हों किन्तु मैं इतना चाहता हूं कि यह बात करनैल साहब मालूम करलें कि सनद की कारवाई को महाराज खूब जानते हैं साहब प्रेज़ीडएटने सरजन बेलनटायन साहब से पूछा कि आप यह कह सक्ते हैं कि यह रैज़ोल्यूशन महाराज के हाथ रास्त तौर से है उ०—मैं नहीं कह सक्ता। प्र०—जब तुम बम्बईमें थे तो तुमने किसी फरेब के मुकद्दमे की तहक़ीक़ात कीथी? उ०—हां कीथी। प्र०—अच्छाकिस मुकद्दमेकी तहक़ीक़ात की? उ०—मुझको याद नहीं। अच्छा इन बातों का जवाब वो सवालफिर हमतुम करलेंगे यहबताओ किवह रैज़ोल्यूशन तुमको ठीक वक्त पर दफ्तर से मिला था उ०—नहीं ठीक समय पर नहीं मिलाथा मैं उस समय इंगलिस्तानमें था ऐडवकेटजनरल ने कहाकि हमअभी तार-बरक़ी बम्बई को देतेहैं और वहांसे सम्पूर्ण पैत्र मंगाये लेते हैं और फिर उस रैज़ोल्यूशन परबहस करेंगे। सरजनवेलन टायन साहब ने कहा कि अच्छा यह बहुत खूब बात है। प्र० नवम्बर सन् १८७३ ई०में कोई कमीशन नियत हुई थी? उ०—हां हुई थी। प्र०—उसका प्रेज़ीडएट कौनथा? उ० जनरलमीड साहब थे। प्र०—वह कब पूर्ण हुई? उ०—२१ दिसम्बर को पूर्ण हुई। प्र०—क्या ७ मई को गायकवार का

विवाह हुआ था? उ०—हां ७ मईको विवाह हुआ था। प्र०—तो फिर यही तारीख आपके नाराजी की मालूम करनी चाहिये? उ०—इन्ही तारीखों में खरीता लिखा गया था। प्र०—तुमको खबर है कि श्रीमान् वैसरायके पास १७ मईका कोई खरीता गायकवार ने भेजा था? उ०—हां भेजा था। प्र०—उस खरीते का उत्तर श्रीमान् गवर्नरजनरलबोरिश के पास से कब आया था? उ०—साहब २५ नवम्बर सन् १८७४को आया था और वह मेरे द्वारा आया था साहब प्रेजीडण्ट ने सरल्बेलनटायन साहब से कहा कि आपने वह सब खरीते और उसके उत्तर का आशय पढ़ा या नहीं? उ०—साहब मैंने नहीं पढ़ा वह सब पुलिस के हाथ में है। सरल्यूइसपीली साहब ने कहा यदि आवश्यक हो तो आप पुलिस से मंगवा लीजिये? उ०—नहीं उसकी कुछ जरूरत नहीं है। प्र०—अच्छा यह बताइये कि महाराज के यहां कौन तारीख को पुत्र उत्पन्न हुआ था? उ०१६—अकटूबर को उत्पन्न हुआ और ६—मई को विवाह हुआ। प्र०—अच्छा हमको इस बात से कुछ प्रयोजन नहीं है यह क़ानूनी बहस है क्या आपके फोड़ा उन्हीं दिनों में हुआ था? उ०—हां साहब उन्हीं दिनों में हुआ था और डाक्टरसीवर्ड साहब मेरा इलाज करते थे। प्र०—क्या तुम्हारे पलास्टर लगाया था। उ०—हां साहब? प्र०—यह जो तुमने बताया कि मैं अलील रहा करता था और मेरे शिर में पीड़ा रहा करती थी और मेरा जी मतलाता था क्या यह उन्हीं दिनों की बातें हैं? उ०—हां साहब यह उन्हीं दिनों की बातें हैं। प्र०—क्या यह तुमको ख्याल हुआ था कि शर्बत का सबब है? उ०—नहीं कुछ यह ख्याल नहीं था। प्र०—क्या तुम सब शर्बत को हर दिन पीजाया करते थे? उ०—कभी सब पीलिया करता था और कभी सब फेंक दिया करता था। प्र०—तुम को कुछ सन्देह हुआ करता था जो तुम फेंकदिया करते थे

उ०—मुझको चकोतरह खराब मालूम होता था और मैंने कई बेर अब्दुल्ला को ताकीद की थी और चकोतरे मंगाकर देखे थे तथापि कई बेर खराब चकोतरों को देखा। प्र०—तुमतो कहते हो कि ६ नवम्बर से मुझको संदेह ऊवा और मेरे मुंहका स्वाद बदल गयाथा ? उ०—नहीं यह मैने नहीं कहा था। प्र०—तुमने कहा तो है कि मैने दो तीन घूंट पीकर बाक़ी फेंकदिया ? उ०—हां मैंने दोतीन घूंट पीकर बाक़ी फेंक दिया था। प्र०—पस मालूम ऊवा कि तुम्हारी तबीयत ६ नवम्बर को ऐसी रही कि जैसे सितम्बर और अकटूबरमें रहा करती थी। प्र०—सातवीं तारीखको भी तुमने शर्बत कुछ पीकर फेंकदिया था उ०— हां साहब फेंक दिया था। प्र०—तुमने आठवीं तारीख का जिक्र नहीं किया क्या तुमने आठवीं तारीखको शर्बत नहीं पियाथा ? उ०—आठवीं तारीख में मैंने बिल्कुल शर्बत नहीं पिया। प्र०—तुमने जो बयान कियाकि उस वस्तुमें गहरा रंगथा यह सही है ? उ०—यह बात सही नहींहै। प्र०—अच्छा तुम यह बताओ कि फिर क्या रंगथा ? उ०—उसमें हलका भूरा रंग था। प्र०—१२ नवम्बर को चिट्ठी इजलासमें है वह किसकी लिखी ऊई है ? उ०—उस का आशय क्याहै। प्र०—उसका आशय यहहै कि तुमने किसी से सुना है कि तुमको विष दिया गया है और उसमें संखिया और हीरेकाचूर्ण और ताम्बा है ? उ०—यह चिट्ठी मैंने अपने खबर देनेवालेसे पाईथी जो मुझको खबरें दिया करताथा। प्र० अच्छा नाम बताओ कि वह कौन मनुष्य था ? उ०—एक मनुष्य नहीं है बऊतसे मनुष्य खबरें दिया करतेथे। प्र०—वह खबरें किस विषय में तुमको दिया करते थे उ०—जो बातें मेरी तजवीज के लिये होती थीं उनबातों की यह लोग खबरें दिया करते थे और बऊधा उन लोगों से जियादह मालूम होता था जिनको मायबमार पर नालिशी ऊवा करते थे प्र०—वह मनुष्य किस स्थान पर तुमसे भेंट करते थे ? उ०—कोई खास

जगह नहीं थी। प्र०—वह लोग इन खबरों के सबब से तुमको रुपया भी पाते थे? उ०—कभी नहीं। प्र०—ज़रा याद कीजिये शायद कभी ऐसा हुवा हो? उ०—कभी ऐसा नहीं हुवा। प्र०—तुम्हारा इसमें क्या निश्चय है? उ०—मुझको अच्छी तरह से विश्वास है कि कभी ऐसा नहीं हुवा। प्र०—तुमने उस चिट्ठी में लिखा है कि मुझको प्रतिष्ठित मनुष्य के द्वारा खबर पहुंची है वह कौन विश्वसित मनुष्य था? उ०—साहब बहुत से मनुष्य हैं। प्र० जिस मनुष्य ने तुम से कहा था कि तुम को तीन वस्तुओं से विष दिया गया है तुमने उसका नाम क्यों नहीं लिख लिया था? उ०—उस का नाम इस सबब से नहीं लिखा कि वह विश्वसित मनुष्य था और छिपी हुई खबर थी और सिवाय इसके कुछ लिखने की जरूरत नहीं थी। प्र०—तुम भाव पूना कर को जानते हो? उ०—हां मैं जानता हूं। प्र०—क्या वह मनुष्य था जिसने तुम को खबर दी थी उ०—शायद वही होगा मैं मालूम करूंगा। प्र०—तुमको यह थोरी सी बात याद नहीं? उ०—बहुत से मनुष्य खबर देने वाले थे मुझको नाम याद नहीं है। प्र०—और कौन २ मनुष्य हैं जो तुम को खबर दे जाते थे? उ०—एक यशवन्तराव था मेरे पास सम्पूर्ण मनुष्यों के नाम की सूची है जो मुझको खबरें दिया करते थे। प्र०—मुझको आपकी फेहरिस्त दरकार नहीं है परन्तु यह बताओ कि भाव पूनाकर और यशवन्त राव में से कौनसा मनुष्य था? उ०—मुझको स्मर्ण नहीं परन्तु इन्हीं दोनों में से एक ने कहा था। प्र०—अब यह बताओ कि पहली कमीशन में भाव पूनाकर ने कुछ कार-रवाई गायकवार के प्रतिकूल की थी? उ०—इस से आप का क्या मतलब है। प्र०—मेरा प्रश्न तो बिल्कुल साफ है परन्तु मुझ को नहीं मालूम कि आप मेरा प्रश्न क्यों नहीं समझते उ० भाव पूनाकर ने निस्संदेह उस कमीशन में गायक-वार के प्रतिकूल खबरें दी थीं वह बड़ा प्रतिष्ठित मनुष्य है। प्र०—

मैं जानता हूं कि वह प्रतिष्ठित मनुष्य है परन्तु यह बताइये कि उसने गायकवारके प्रतिकूल खबरें दी थीं या गायकवार के फा-यदे की? उ०—उसने गायकवार के प्रतिकूल एकभी खबर नहीं दी थी। प्र०—आप के रुतबे का आदमी हमारे प्रश्न का जवाब बखूबी दे सक्ता है आप यह बताइये कि वह खबरें गायकवार के प्रतिकूल थीं या गायकवार के वास्ते अच्छी थीं? उ०—गायकवार अन्याई मनुष्य था और भाव पूनाकर नगर के रहने वालों का बड़ा हितैषी था सो लोगों की भलाई के लिये खबरें दिया करता था। प्र०—यह हमारे प्रश्न का उत्तर नहीं है बड़े खेद की बात है कि आप हमारे प्रश्न का उत्तर नहीं देते हैं? उ०—यह मनुष्य जो खबरें दिया करता था तो हमेशा गायकवार के प्रतिकूल नहीं हुवा करती थीं। प्र०—कारनैल फियर साहब आप अपने रुतबे पर ख्याल करें ऐसा बुद्धिमान हमारे प्रश्नोंका ऐसा उत्तर दे बड़े अफसोस की बात है? उ०—मैंने उत्तर तो दिया कुछ यह बात न थी कि सदा वह बरखिलाफ खबरें दिया करता था। प्र०—क्या सआ-दत अली की शिकायत गायकवार के अन्यायकी इसी शख्स ने बयान की थी? उ०—सआदत अली ने खुदबयान की प्र०—अच्छा कारनैल फियर साहब सावधानी से जवाब दो क्या सआदत अली के मुकद्दमे की उसने पैरवी नहीं की? उ०—एक हुक्म गवर्न्मेण्ट से आया था रिपोर्ट करने के वास्ते। प्र०—कारनैल फियर साहब मेरे प्रश्नों पर किञ्चित् ध्यान दीजिये कि आया भावपूनाकर ने सआदत अली के मुकद्दमे की पैरवी की थी या नहीं? उ०—जहां तक कि मैं जानता हूं कह सक्ता हूं कि उसने पैरवी नहीं की क्यों-कि पैरवी का शब्द बहुत पुरमानी है उसका मुकद्दमा बहुत दिन से पेशी में था वह इस मुकद्दमे में कै समय में बहुधा खबरें दिया करता था। प्र०—तुमको इस बात के कहने में कोई सन्देह तो नहीं है? उ०—हम को

कोई सन्देह नहीं है बेशक सआदतअली के मुआहमें में भावपुनाकर ने बहुत मदद दी थी। प्र०—तांबे के निसबत तुमसे भावपुनाकर ने क्या कहा था ? उ०— मुझको याद है कि उसने कहा था कि तुम्हारे ज़हर में संखिया और हीरे का चूरा और तांबा मिला था। प्र०—क्या केवल यही खबर तुमको मिली थी ? उ०—हां यही खबर मिली थी। प्र०—तुमने भाव पुनाकर से पूछा था कि तुमको यह खबर क्योंकर मिली ? उ०—मैंने नहीं पूछा किन्तु मैंने इस खबर को एक बाजारी गप समझा। प्र०—अभी तो तुमने कहा था कि वह बहुत मोतबिर खबर है फिर बाजारी गप क्योंकर थी ? उ०—मैंने इसलिये कहा था कि मैं उसको प्रकट न करूं। प्र०—क्या तुम्हारे शर्बत में तांबा भी था ? उ०-तांबा नहीं था परन्तु मेरे मुंह में तांबे का स्वाद आगया था। प्र०—क्या शर्बत पीने के पीछे तुम्हारे मुंहमें स्वाद आगया था? उ०—हां शर्बत पीनेके पीछे जब मैंने चुरट पिया है उसके पीछे तांबे का स्वाद आगया था। प्र०—क्या चुरट मेंभी तांबेका स्वाद होता है ? उ०-नहीं चुरट मेंतो नहीं होता है परन्तु शायद संखिया खानेके पीछे चुरट पीने से स्वाद ऐसा हो गया हो। प्र०—यहस्वाद तुम्हारे मुंहमें कबतक रहा ? उ०—बीस मिनट तक। प्र०—तुमने शर्बत पीने के कितनी देरके पीछे बाक़ी शर्बत फेंका था ? उ०—कोई आध घण्टे के पीछे। प्र०—मालूम होता है कि तुमने बेस्वाद होने के कारण बाक़ी शर्बत फेंक-दिया होगा ? उ०—हां। प्र०-क्या ६ और ७ को तुम्हारे मुंहका स्वाद८तारीखके सदृश होगया था? उ०—नहीं। प्र०—फिर तुमने आठवीं तारीख को शर्बत क्यों नहीं पिया ? उ०-ईश्वर का ही अनुग्रह था कि मैंने नहीं पिया नहींतो मरजाता। प्र०—परन्तु अदालतों में तो सबब पूछा जाता है तुम भी कोई सबब बताओ ? उ०-कोई सबब नहीं। प्र०—तो क्या तुमने बे सबब नहीं पिया ? उ०—यही सबब है कि ई

और ७ तारीख़ को मेरा चित्त अच्छा नहीं था इसी सबब से ८ को नहीं दिया। प्र०—कोई और सबब नहीं है? उ०—मेरे विचार में कोई सबब नहीं है। प्र०—तुमने रावजी के इज़हार लिये थे? उ०—हां लिये थे। प्र०—क्या उसने फ़ैज़ का नाम लिया था? उ०—हां लिया था—फिर टिफन का समय आगया और जलसा बरखास्त हुवा टिफन खाने के पीछे फिर प्रश्न पूछने शुरू होगये। प्र०—भावपूनाकर तुम्हारे पास क्यों आया करता था? उ०—साहब मुलाक़ात करने को आया करता था। प्र०—क्या वह तुम्हारे पास दफ़्र केवक्त आया करता था? उ०—आया करता था। प्र०—क्या तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी में भी आया करता था? उ०—नहीं आया करता था। प्र०—कभी तुमने उसको अपने पीछे भी आकर पाया था? उ०—नहीं पाया। प्र०—साहब कुछ सोच कर जवाब दीजिये? उ०—हां कभी ऐसा होता था कि अगर मैं इस्कूल को गया तो वह आकर मेरी मुलाक़ात के वास्ते ठहरजाता था। प्र०—इससे क्या यह बात साबित है कि अगर तुम कभी बाहर गये और वह तुम्हारी मुलाक़ात को आया तो तुम उसको आकरघरपर पाते थे? उ०—कभी सुबह को जब मैं हवा खाके आया तो उसको मैंने आया-हुवा नहीं पाया। प्र०—मेरा मतलब आपके सुबह के हवाखाने से नहीं है मेरा मतलब यह है कि कभी आपने बाहर से आकर उसको बैठाहुवा पाया या नहीं? उ०—कभी नहीं। प्र०—अच्छा यह बताओ कि वह तुम्हारे पीछे कभी आता था तो तुम्हारे बरामदे में आकर बैठा-करता था या नहीं? उ०—हां बैठा रहता था। प्र०—तो मालूम हुवा कि कभी वह तुम्हारे पीछे तुम्हारे खास कमरे में भी चला आता होगा? उ०—नहीं मेरे कमरे में नहीं आ सक्ता था। प्र०—२ नवम्बर के खरीते के विषय में कुछ भावपूनाकर ने कहा था? उ०—मुझसे कुछ

नहीं कहा था। प्र०—तुमने उसके विषय में कब सुना था? उ०—मैंने सुनाथा मगर यह याद नहीं कि कब सुनाथा। प्र०—अच्छा आप याद कीजिये? उ०—एक दो रोज पहिले सुना था परन्तु मैं ठीक२ नहीं कह सक्ता हूं। प्र०—भाव पूनाकर को कुछ उसके विषय में खबर थी? उ०—मुझको खबर नहीं। प्र०—एक खरीता जो श्रीमान् नव्वाब गवर्न्नर जनरल के यहां से आया था उसके जवाबके बारे में कुछ इसने कहा था या नहीं? उ०—हां कहा था। प्र०—उसे कहां से खबर मिली? उ०—यह बात मैंने उससे नहीं पूछी प्र०—उसने तुम से क्या कहा था? उ०—उसने कहा था कि एक खरीता जो गवर्न्नर जनरल के यहां से आया है उसका उत्तर महाराज के यहां से लिखा जाता है। प्र०—क्या उस जवाब में तुम्हारी शिकायत की थी? उ०—मुझको खबर नहीं। प्र०—क्या भावपूनाकर ने उसकी इत्तिला तुमको नहीं दी? उ०—इसकी इत्तिला नहीं दी। प्र०—करनैल फियर साहब क्या आप सौगन्द खा सक्ते हैं कि इस की इत्तिला उसने आपको नहीं दी? उ०—हां मैं सौगन्द खा सक्ता हूं कि इसकी इत्तिला उसने नहीं दी। प्र०—फिर आपको क्योंकर मालूम हुवा कि उस में आपकी शिकायत थी? उ०—मेरा ऐसा विचार है। प्र०—भावपूना कर क्या जासूस था जो तुम को खबरें दिया करता था? उ०—नहीं वह बड़े रईस का एजन्ट है और बहुत प्रतिष्ठित मनुष्य है। प्र०—वह किस रईस का एजन्ट है? उ०—मीर इब्राहीम अली का एजन्ट है। प्र०—वह तुमको क्यों खबरें देने आया करता था? उ०—वह बहुधा रजीडन्सी में मीर जुलफिक़ार अली के काम के वास्ते आया करता था और उस जिक्र में इसका भी जिक्र कर दिया करता था। प्र०—जिस दिन तुमको जहर दिया गया तुमको मालूम है कि वह आया था? उ०—हां वह आया था। प्र०—क्या तुमने उससे

कुछ हाल कह दिया था ? उ०— नहीं कहा था। प्र०—तुम से तांबे के निस्बत उसने किस तारीख़ के कहा था ? उ०—बारवीं या तेरवीं तारीख़ कहा था। प्र०—तुम के मनाकर के देखे हुये कितने दिन हुये ? उ०—कल ही सुभाते उससे मुलाक़ात हुई है। प्र०—तुमने उससे कुछ कहा तो नहीं ? उ०—मैंने उससे यह पूछा कि तुमने मुझको खबर दी थी कि तुमको संखिया और हीरेका चूर्ण और तांबे से ज़हर दिया गया है उसने कहा कि हां मैंने कहा था॥

सरजन्टबेलनटायन साहब के प्रश्न पूर्ण हुये॥

ऐडवकेटजनरल ने कहा कि मैंने बम्बई के फैलके मंगाने के लिये तारबर्क़ी भेजीहै अब मैं करनैल फियर साहबसे दुबारह तब प्रश्न करूंगा कि जब सरजन्टबेलन टायन साहब के प्रश्न सब खत्म होजावेंगे—प्रेजीडण्ट साहब ने कहा कि नहीं तुम अपने प्रश्न करलो और सरजन्टबेलन टायन साहब फियर साहब से फिर प्रश्न करलेंगे॥

फियर साहब से इज़हारात फिर लिये गये॥

प्र०-खरीता कौन सी तारीख़ को लिखा गया था ? उ०— तारीख़ को। प्र०—क्या तुम नौसारी को गवर्न्मेण्ट की आज्ञा से नहीं गये ? उ०-गवर्न्मेण्ट की आज्ञा से मैं वहां नहीं गया। प्र०—तुम्हारे इस न जाने को गवर्न्मेण्ट ने पसन्द किया ? उ०—हां पसन्द किया। प्र०—महाराज ने जो दादा भाई नूरूजी को अपना दीवान किया था तो उसमें तुम्हारी सलाह ली थी या नहीं ? उ०—हां साहब पहले उन्होंने मुक़र्रर कर लिया था फिर खरीते के द्वारा मुझको इत्तिला दी थी। प्र०—जबसे दादा भाई नूरूजी मुकर्रर हुये थे और उन्होंने प्रबन्ध के लिये किसी तरह की सहायता मांगी तो तुमने उनको सहायता दीथी ? उ०— हां साहब दी थी। प्र०—कभी दादा भाई नूरूजी ने उसकी शिकायत की थी कि फियर साहब हमको मदद नहीं देते

के कारण से नहीं आये श्रीमान्मल्हरराव ट्रिकन के उपरान्त कमीशन में आये ॥

पहिली रीतिके अनुसार ऐडवकेट जनरल अर्थात् सरकार के मुख्य वकील और मिस्टरअनबरारटी साहब मिस्टर बरू साहब की हिदायत से और मिस्टर ल्लोवलैण्ड साहब और मिस्टर लेवारनर साहबश्रीऊजर वैसरायके ओर से उपस्थितथे और सरजनबेलनटायन साहब और मिस्टर मैक्मन साहब और मिस्टर परसल साहब और मिस्टर शान्तारामनारायण, मिस्टर जाफरसन साहब की हिदायत से और बेलनटायन साहब गायकवार की तरफ से थे मिस्टर वासुदेवाजगन्नाथ वकील हाईकोर्ट श्रीमान् गायकवार की ओर से मुक़द्दमे को देख रहे थे ॥

मिस्टर जार्ज्जटेलर साहब और मिस्टर जी, ऐम, बेगली साहब दोनों रानियों और महाराजासाहब को बेटोंके ओर से हाजिर थे ॥

कलके दिन श्रीमान्महाराजासेंधिया भी हाजिर थे और जो उनका चित्त कुछ उद्विग्न था वह जाता रहा श्रीमान् महाराजा सेंधिया सफेद पोशाक पहिने हुयेथे और उसके किनारों पर सुनहरी कारचोबी काम था महाराजा साहब के गले में दो हार थे एक हार बड़े २ जमुर्रद के टुकड़ों काथा और दूसरा हार मोतियोंका था जिसमें तीन लड़ियां थीं उसहार में एक धुगधुगी बड़े २ हीरों की जड़ी हुई थी दूसहार में एक बड़ा जमुर्रद भी था बायेंकानमें एक गुच्छा बहुमूल्य मोतियोंका था और दहिने कान में केवल दोतीन मोतीथे हाथों में हीरे के जड़ाऊ कड़े थे और दहिने हाथ में एक हीरेकी अंगूठी थी जिसमें एकहीरा माजफलके बराबर था बायें हाथ में एक अंगूठी थी उसमें जमुर्रद बहुत बड़ा जड़ाहुवा था निदान वह बिल्कुल जवाहरात और रत्नों में जगमगारहे थे यह पोशाक महाराजा साहब की बड़ी थी

जो लोग बराबर चर्चा करते हैं और किसी बातका उनको ख़याल न था वह करनैल फियर साहब के इज़हार का तर्जुमा जो हिंदुस्तानी ज़बान में हुआ था देख रहे थे आज के दिन केवल डाक्टर सीवर्ड साहब और डाक्टर ग्रे साहब के इज़हार लिये गये इन दोनों डाक्टर साहबों के इज़हार से साबित हुआ जो तलछट गिलास में रहगया था और गिलास का शर्बत करनैल फियर साहब ने फेंक दिया था वह सफेद संखिया और पिसा हुआ हीरा था डाक्टर सीवर्ड साहब ने वह हाल भी बयान किया जो आया ने अस्पताल में कहा था॥

जिस समय अदालत एकच हुई तो डाक्टर सीवर्ड साहब बुलाये गये मिस्टर अनवरारटी साहब ने नीचे लिखे हुये प्रश्न किये॥

प्र०—डाक्टर सीवर्ड साहब आपको याद होगा कि शनिवार को आपने कहांतक इज़हार दिये थे कि आप गिलास लेकर जिसमें तलछट था अपने मकान पर आये. फिर उसको क्या किया आपने उस तलछट के क्या जुज़ अलग २ कियेथे? उ०—मैंने उस गिलास को किताब की अलमारी में रखकर बन्द करदिया था॥

सरजान्ह वेलनटायन साहबने कहा कि कुछ ज़ोर से वर्णन कीजिये क्योंकि आप की गवाही अति आवश्यक है मुझको अफ़सोस है कि मैं आप की गवाही में दख़ल देता हूं। प्र०—मिस्टर अनवरारटी साहब—क्या आपने गिलास को उस समय तक बन्द रक्खा जबतक आपने तलछट के जुज़ अलग करने के वास्ते उसको मंगाया था? उ०—हां बन्द रक्खा। प्र०—क्या आपने अलग किया—अभी प्रश्न पूरा नहीं हुआथा कि सर-जान्ह वेलनटायन साहबने खड़े होकर कहा कि आप पूछिये कि उन्होंने उस तलछट को क्या किया? उ०—मैंने कुछ ताज़े कोयले मंगवाये लेकिन कोयलों के मंगवाने से पहिले इस तलछट मेंसे थोड़ी तलछट को एक शीशे के टुकड़े पर

रक्खा और खुर्दबीन से देखा। प्र०—इस तलछट की क्या सूरत थी? उ०—मुझको सफेद २ पारे कानेदार देख पड़े जैसे सफेद पत्थर पिसा हुआ होता है। प्र०—आपको कोई वस्तु और भी मालूम हुई? उ०—हां कुछ चमकती हुई वस्तु थी। प्र०—प्रेसीडेण्ट का—यह वस्तु सफ़ेद थी? उ०—हां सफ़ेद और उज्वल और एक दो जर्द रङ्ग की मिलेहुये किसी वस्तु के थे सिवाय इसके खुर्दबीन से और कोई वस्तु मालूम न हुई फिर मैंने इस तलछट को बिल्लौर के हावनदस्ते में जिस को मैंने खूब साफ करलिया था डाला और थोड़े कोयले भी उसमें डालकर दोनों को पीसा और फिर एक नली में जो इस प्रकार की वस्तु के इम्तहान के वास्ते मुक़र्रर है डाला यह नली बिल्कुल नई थी और पहिले उसमें किसी चीज का बर्त्ताव न हुवा था मैंने इस नली को इसपरटिस आफवाइन (अर्थात् वह शराब जो सफा करती है) में गर्म किया उसमें किसी क़दर नमी आगई थी मैंने नमीको ब्लाटिङ्ग कागज से सुखाया फिर नली को मैंने गर्म किया जब खूब गर्म होगई तो एक छल्ला धातके सदृश उसमें मालूम हुवा यह छल्ला मेरे पास मौजूद है और उसको मैं पेश करता हूं। प्र०—प्रेसीडेण्ट क्या आपने धातका छल्ला कहा था? उ०—हां धात का छल्ला कहिये कि यह कि गर्म होनेसे सम्पूर्णवस्तु इकट्ठी होगई देखिये इस नै में यह छल्ला सा है जो एकतिहाई इंचका चौड़ा है इस नैपर (एम) अक्षर का निशान है इस नै के गर्म करने के पीछे फिर मैंने देखाकि कोई साफचीज छल्लेके दोनोंओर इकट्ठी होगई है जब मैंने खुर्दबीन से उसको देखा तो वह वस्तु बहुत चमकती हुई देखपड़ी इससे मालूमहुवा कि वह संखिया है मैंने यह कोयला अस्पताल से मंगवाया था इससे अधिक उपरोक्त मैंने कुछ इम्तहान नहीं किया मेरे पास इस प्रकारकी चीजोंके इम्तहान के वास्ते कुछ दवाइयां नहीं हैं जो चिट्ठी कि अदालत में मौजूद है वह कारनैल फियर

साहबने मुझको भेजीथी उसवक्त मैं रणोडजी को जाता था मैंने अपने इम्तहान और इस तलछटके जुजोंके अलग करने का नतीजा करनैलफियरसाहब से बयान किया और मैंने जो चिट्ठी करनैल फियर साहब को लिखी थी वह उन्हीं के पास बैठकर मिस्टर बोबीसाहब के सामने लिखी ॥

मिस्टर अमवरारटीसाहबने अदालत में बयान किया कि यह चिट्ठी रणोडजी के सरजन्ट के तरफ से साहब रसीडेन्ट केनाम है उसपर (ऐन) अक्षर का निशान है और उसका आशययह है ॥

साहब—आपकी चिट्ठी के उत्तर में जो मैंने इसवक्त एक बजे पाई रपोर्ट करता हूं कि जहांतक मैंने इस गिलास के तलछट का इम्तहान किया जो आपने आज मुझको इम्तहान के वास्ते दिया था तो मालूम हुवा कि वह तल-छट संखिया है ॥

यह संखिया इतनी थी कि मैंने उसका इम्तहान कायदे से किया और संखिया का होना मुझको मालूम हुवा ॥

वह छल्ला जोनैमें पड़ा हुवा है और छल्ले के दोनों ओर जो उज्वल वस्तु है यह खास संखिया होने का असर है ॥

मेरी इच्छा है कि गिलासके इस बाक़ी तलछट को डाक के द्वारा गवर्नमेरट के डाक्टर के पास भेजदूं जो ऐसी चीजों का इम्तहान किया करता है ॥

अगर आप गिलास का सब शर्बत पीजाते तो आप के मरने के वास्ते काफी था ॥

(दस्तखत जी—एडवर्डसीवर्ड रणोडजी सरजन)

६ नवम्बर सन् १८७४ ई०

बड़ोदा ।

फिर डाक्टरसाहब ने वर्णन किया कि बाक़ी तलछट को मैंने प्लाटिनम कागज के ऊपर रखकर छाना और कुछ तलछटको गिलास में रहगया था उसको भी पानी में डालकर छाने

लिया इस उपाय से पानी छनगया और तलछट कागज के ऊपर रहगया मैंने इस कागज को एक जलनीजई कमकी चिमनी के पास रखकर सुखाया जब वह कागज सूखगयातो मैंने उसको तह करके एक लिफाफे में रक्खा और वह लिफाफा जो अदालत में है वहीहै और यही मेरी मुहरहै जो इस पर मैंने लगाई थी प्र०—क्या यही ब्लाटिङ्ग कागज है जिसपर आपने तलछट को छाना था ? उ०—हां यही है और इस लिफ़ाफे की पीठ पर जो लिखा है वह मेरे हाथकालिखा हुवा है और भोजन के समय यह लिखा था और रजिस्टरी के द्वारा डाकमें भेजाथा और यह लिफाफा भेजनेके पहिले एक दूसरे बड़े लिफ़ाफे में बन्द करके उसपर अपनी मुहर लगाई और डाक्टर ग्रे साहब के पास उसको भेजदिया॥

मैंने डाक्टर ग्रे साहबको आप चिट्ठी नहीं लिखी थी किन्तु करनैल फियर साहब को चिट्ठी उसमें रखके भेजदी थी लिफ़ाफे भेजने के समय लाल स्याहीसे करनैलफियर साहब की चिट्ठी पर कैफियत लिखदी थी कि गवर्न्मेण्ट के डाक्टर के पास जो हर वस्तु के जुज निश्चय करते हैं यह लिफाफा भेजा जाता है॥

(दस्तखत—जो० आई० सीवर्डसाहब)

६ नवम्बर सन् १८७४ ई०।

इसलिफ़ाफ़े को भी मैंने उसी मुहर से बन्दकिया जिससे छोटे लिफ़ाफे को बन्दकिया था॥

मिस्टर अनवरारटी साहब ने अदालत के सामने वर्णन किया कि इनदोनें लिफ़ाफोंपर अलग २ अक्षरोंके चिह्नकिये जावें अर्थात्(ओ)अक्षर और (पी) कि आगे को निशान रहे तथाच अदालत से इजाजत हुई और (ओ) और (पी) का निशान उनलिफ़ाफोंपर कियागया॥

डाक्टर साहब ने वर्णन किया कि इस चिट्ठीका नीचे लिखाहुआ उत्तर मेरे पास आया॥

डाइरेक्टर सीवर्ड मैंने आपकी चिट्ठी एक और लिफ़ाफ़े समेत पाई अर्थात् डीमी आफीशियेटिं कारनैल फ़िवरसाहब की चिट्ठी और एक छोटी पुड़िया जिसमें भूरे रङ्गकी कुछ वस्तु थी और उसमें कोई वस्तु पीली चमकती हुई भी थी ॥

तत्पश्चात मैंने उसका इम्तहान किया तो मालूम हुवा कि इसमें सफ़ेदसंखिया और कोई चमकती हुई वस्तुयें थीं ईक्षण से मालूम हुवा कि यह पिसा हुवा शीशा या संगखारा है वह बहुधा संगखाराके सदृश है कोई २ ज़र्रोंका रंग गुलाबी और ज़र्द था यदि आपकी इच्छा हो तो सरकारी रीति से उसका उत्तर दूं ॥

मैं कारनैलफ़िवर साहब की चिट्ठी लौटाता हूं और पुड़िया को अपनी चिट्ठी के उत्तर आने तक रखलिया है ॥

(दस्तखत डब्ल्यू ग्रेसाहब)

क़ायममुक़ाम कमीकल आने लाइजर गवर्नमेण्ट ग्रान्टकालेज
मुक़ाम बम्बई लिखा हुआ ११ नवम्बर सन् १८७४ ई० ॥

डाक्टर सीवर्ड साहबने यह भी वर्णन किया कि मैंने कई दिन के पीछे तलछट की और भी परीक्षा की मैंने उस वस्तु को जो नली में इकट्ठी होगई थी निकालकर थोड़े पानी में डाला उसमें जो वस्तु भारी थी वह पानी के नीचे बैठ गई और जो हलकीथी वह पानीके ऊपर तैरने लगी जो वस्तु पानी के ऊपर तैरती थी उसको मैंने दो तीन बार करके उतारा और अब उसको शीशे के टुकड़े में पेशकरता हूं साहब-प्रेसीडेण्टने प्रश्न किया कि यह क्या तुमने कहा कि तीन दफ़ा करके उतारा? उ०—नहीं माई लार्ड कई मर्तबा करके ॥

साहब प्रेसीडेण्ट ने उस समय कहा कि मिस्टर जनरल-रारटी साहब दयाकरके तुम एक ओर होजाओ तो डाक्टर साहब का वर्णन हम अच्छी तरह सुनें ॥

पंखे रोक दिये गये ताकि वह वस्तुयें जो डाक्टर साहब पेश करते हैं उड़ न जावें ॥

डाक्टर सीवर्डसाहब ने बयान किया था कि वह शीशी के टुकड़े को अब मैं पेश करताहूं वह है जिसपर कि मैंने गिलास का तलछट रखकर खुर्दबीन से देखा था (वह तीन टुकड़े शीशे के सन्दूकमें बन्द थे जिसपर (आर) अक्षरका निशान है) प्रथम टुकड़ा शीशेका वह है जिसपर कि मैंने गिलास का तलछट रक्खा था दूसरा टुकड़ा शीशे का वह है जिसको पहले टुकड़े पर रखकर तलछट को रगड़ा था देखिये वह शीशा छिलगया और उसका यह निशान है रगड़ने से पहिले यह निशान शीशे पर न थे इससे यहबात मालूम हुई कि जो जर्रे चमकते हैं वह किसी और वस्तुके हैं शीशे के जर्रे नहीं हैं और निश्चय करके यह हीरेका चूर्ण है जिसका हाल मैंने पहिले भी सुना था सिवा इसके वह जर्रे बहुत चमकते थे। प्र०—डाक्टरसाहब मैंने सुना है कि आपके पास कुछ खबर आई थी उस खबर की इत्तिलाअ १० नवम्बर को करनैल फियर साहब को आपने की थी॥

साहब प्रेजीडेण्टने पूछा कि यह खबर तुमने पाई थी या डाक्टरग्रेसाहब ने- मिस्टर मैलव साहब ने कहा कि मिस्टर ग्रे साहब कहिये मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा कि नहीं डाक्टर सीवर्डसाहब इसपर साहब-प्रेजीडण्ट बोले कि डाक्टर ग्रे साहब का नाम आपने भूल से लिया था।

मिस्टर अनवरारटी साहब-हां मैंने भूल की थी क्षमा चाहताहूं मेरा प्रयोजन डाक्टरसीवर्डसाहब के कहनेसेथा॥ डाक्टर सीवर्ड साहब ने बयान किया कि यह चिट्ठी जो अदालत में पेश है इसकी इत्तिला करनैल फियर साहब को सरकारी रीति पर भेज दीगई थी॥

मिस्टर अनवरारटी साहब ने कहा कि माईलार्ड—मैं इच्छा रखता हूं कि इन सब चिट्ठियों पर पहिचानके वास्ते चिह्न कर दिये जावें॥

सरजान्मेलनटायन साहब—नहीं मेरे विचारसे जो पेश

होगा तो ग़लती होगी जब तक हर एक चिट्ठी आदि की सचाई न होजावे उस पर निशान न किया जाय क्योंकि चिट्ठियां बहुत हैं कहां तक निशान किये जायगे॥

साहबप्रेसीडन्ट ने कहा बहुत अच्छा जब तक सिद्धान्त न हो निशान न किया जाय। प्र०—मिस्टर अनवरारटी साहबने कहा डाक्टर सोवर्ड साहब—आपने शनिवार को कहा था कि आपने जब करनैल फियर साहबका गिलास देखकर हिलाया तो उसमें से धुवां सा उठा था तो क्या उस धुयें के उठने से भी कोई बात मालूम हुई थी? उ०—जब से यह गिलास मेरे पास आया था उस वक्त से किसी ने इस गिलास को हाथ नहीं लगाया था मैंने आपही औजारों के द्वारा उसकी परीक्षा ली थी। प्र०—मिस्टर अनवरारटी साहब अब मैं दूसरी बात आपसे पूछता हूं आपको याद है कि अमीना आया का इलाज आपने किया था अगर आपके विचार से उचित हो तो अपनी किताब देखकर बयान कीजिये? उ०—अमीनाका इलाज शायद १७ और १८ तारीख़को मैंने किया उसके दाहिनी ओर बहुत पीड़ा थी और उसको बुख़ार भी था और मालूम होता था कि उसके कलेजे में कोई रोग था और उसका फेफड़ा भी ख़राब होरहा था और अस्पताल के जाने से पहिले मैंने उसको देखा था मिस्टर बोवी साहब के हाते में वह रहा करती थी मेरी रायसे वह अपने मकान से अस्पताल को गई मुझसे और उससे अस्पताल में कुछ बातें हुईं सरजन्ट मेकनटायन साहब ने कहा माई लार्ड मैं नहीं जानता क्या आपके यह सवालात किस तरह इज़हार में दाखिल हो सक्ते हैं इस बारे में कुछ सवाल न करना चाहिये। प्र०—मिस्टर अनवरारटीसाहब ने कहा कोई सन्देशा आया का आप किसी के पास ले गये थे? उ०—मैं कोई सन्देशा किसी के पास नहीं लेगया केवल सूटर साहब को बुलाया था। प्र०—सूटर साहब के

पास आप किस वास्ते गये ? उ०—मुझको मालूम हुआ कि आया बहुत बीमार है, मैंने समझा कि शायद उससे आया कुछ कहेगी और अपना दिल हलका करेगी और आया से मैंने यह भी कहा था कि अगर अपने दिलका हाल कहेगी तो जल्द आराम होजावेगा तथाच उस समय आया ने मुझसे कुछ कहा था इसी कारण मैं मिस्टर सूटर साहब के पास गया मुझको मालूम नहीं कि मेरे जाने के पीछे मिस्टर सूटर साहब अस्पताल में आये या नहीं मुझको याद नहीं कि किस तारीख को मिस्टर सूटर साहब के पास मैं गया था क्योंकि मैंने अपनी याद्दाश्त की किताब में नहीं लिखा निश्चय करके १८ नवम्बर से दो तीन दिन पीछे होगा॥

सरजन्टबेलन टायन साहबने कहा कि माईलार्ड हमारे पास तारीख है-अर्थात् २१ तारीख है॥

मिस्टर अनबरारटी साहब ने कहा यह वह तारीख है जब कि मिस्टर सूटर साहब अस्पताल को गये थे परंतु वह तारीख नहीं है जिस तारीख को डाक्टर सीवर्ड साहब मिस्टर सूटर साहब के पास गये थे॥

सरजन्ट बेलनटायन साहब के प्रश्न॥

प्र०—आप जानते थे कि आया के इजहार मिस्टर सूटर साहब ने लिये—अभी सवाल पूरा न हुवाथा कि गवाहने कहा हां सरजन्ट साहबने कहा कि धैर्य्यकरो मेरा सवाल पूरा होनेदो अगर आपमेरा पूरा प्रश्न सुन कर उत्तर देंगे तो आपको और मुझको आसानी होगी। प्र०—क्या मिस्टर सूटर साहब ने आया के इजहार अस्पताल के जाने के पहिले लिये थे ? उ०-हां। प्र०—मिस्टर सूटर साहब से आपको मालूम हुवा कि आया ने मिस्टर सूटर साहब से क्या कहा था ? उ०—कुछ भी नहीं मालूम हुवा। प्र०—आपके विचार से मालूम होगा कि आयाने क्या बयान किया होगा और इस पूछने का संक्षेप क्याथा ? उ०—हां। प्र०—आप कहते

है कि जब आया अस्पतालको आई तो वह बीमार थी? उ०—हां वह बीमार थी। प्र०—क्या उसके बलिस्टर (फफोला) था? उ०—मुझको याद नहीं कि बलस्तर था। प्र०—क्या तुमने पलस्तर रक्खा था क्योंकि आया कहती है कि आपने पलस्तर रक्खा था? उ० नहीं (हिन्दुस्तानी लोग प्लास्टर को पलस्तर कहते हैं) मैंने पलस्तर के लेडूनाद्वा का लगाया था लेकिन उस समय नहीं लगाया था। प्र० उसके कलेजे में पीड़ा थी? उ०—हां उसके कलेजे में पीड़ा थी और उसका इलाज सरजन मेजर ल्यूइस साहब करते थे। प्र० तुम कहते हो कि आया अधिक चिन्ता के कारण बीमार हुई थी कलेजे की बीमारी से उसका यह हाल नहीं हुवा था? उ०—हां मुझको उस समय ऐसा ही मालूम हुवा था और शायद यही बात हो। प्र०—आपको ऐसा ही मालूम हुवा अर्थात् उसको शरीर के रोग से चित्त में अधिक चिन्ता थी? उ०—हां क्योंकि जो कुछ उसका इलाज हो चुका था उससे बहुत कुछ उसको फायदा था। प्र०—आपको मालूम होगा कि देह का रोग कम है परन्तु चिन्ता से उसके मुंह का रङ्ग बदल गया होगा? उ०—हां प्र० क्या उसका दिल अधिक चिन्ता से बेकरार था? उ०—मुझको ऐसा ही मालूम होता था प्र०—बयान कीजिये कि यह पलटन का अस्पताल है? उ०—हां पलटन और इस्टाफ का अस्पताल है। प्र०—क्या आप वहां काम करते हैं? उ०—नहीं सरजन मेजर लो इस साहब काम करते हैं प्र०—फिर आप वहां क्यों गये थे और क्या आपका वहां जाना सही है परन्तु आप कहते हैं कि डाक्टर लो इस साहब को वहां का चार्ज है? उ०—सरजन मेजर लो इस साहब मेरे मित्र हैं और जो कि मैं आया को जानता था और मुझको उससे तअल्लुक था इसलिये मैं उसके देखने को गया था। प्र०—क्या आपने जाने से पहिले सरजन लू इस साहब को इत्तिला की थी उ०—नहीं इसकी कोई जरूरत न थी क्योंकि वह मेरे मित्र हैं। प्र०—पस मालूम हुवा कि आपने डाक्टर लूइस साहब के देखने के बिना आया को रोग परीक्षा की थी? उ०—मैं यह नहीं कहता हूं कि मैंने उसके वास्ते परीक्षा की थी।

प्र०—परन्तु आपने प्लास्टर तो लगाया? उ०—हां बाहर लगाया था। प्र०—क्या आप उसको परीक्षा नहीं कहते? उ०—यह प्लास्टर मैंने अस्पताल के आने से पहले लगाया था। प्र०—मैं नहीं समझा पहिले मैंने समझा था कि बाहर लगाने से खाल पर लगाने का आपका मतलब है (यह सुनकर सम्पूर्ण साहबान कमीशन हंसने लगे) जब आया अस्पताल में गई तो जो कुछ आपसे हो सका आपने किया? उ०—हां अगर आप अस्पताल के असिस्टन्ट को बुलाकर पूछेंगे तो वह आप से सब बातें कह देगा। प्र०—नहीं २ असिस्टन्ट के बुलाने की कुछ आवश्यकता नहीं है आपकी सब बातों पर मैं निश्चय करता हूं जब वह शफाखाने में गई तो आपने उसके लिये कुछ किया था। उ०—शायद नहीं किया—अगर आप अस्पताल के असिस्टन्ट को बुलायेंगे तो वह आपसे सब हाल कह देगा। प्र०—नहीं मैं उसको न बुलाऊंगा आपने सब बातों का विस्तारपूर्वक इज़हार दिया है अगर आपने उसका इलाज बखूबी नहीं किया तो आप उसके पास क्यों गये थे? उ०—चूंकि मैं उसके पास जाता था। प्र०—पस आपके विचार से आया को फायदा था और जब आपने देखा कि उसको हौलदिल है तो आपने सहायता की और दिल का हाल उसके आग़ाहिर कराया? उ०—हां ऐसा ही हुवा। प्र० आप और आया एक दूसरे की बातों को खूब समझते थे? उ०—हां। प्र०—आपके और उसके दरमियान कोई सुतरज्जिम न था? उ०—नहीं प्र०—आपको यह बात खूब याद है? उ० हां कोई सुतरज्जिम न था केवल एक पुलिस का आदमी वहां था। प्र०—पस आप जानते थे कि यह पुलिस का आदमी आया की तबीयत को दुरुस्त कर देगा और यह पुलिस का आदमी कौन था? उ०—ईश्वर जाने कौन था। प्र०—ईश्वर का नाम न लो क्योंकि आप खूब जानते हैं कि मैं ईश्वर को यहां नहीं बुला सक्ता? उ०—आप मुझसे ऐसी बात पूछते हैं कि मैं उसको नहीं जानता हूं। प्र०—मुझे अधिकार है जो चाहूं आपसे पूछूं अब

मैं पूछताहूं कि तुमकिसी पुलिसके आदमीको जानते हो? उ०—मैं किसी पुलिसके आदमीको नहींजानता। प्र०—आप अकबरअली को जानतेहैं। उ०—हां जानता हूं। प्र०—क्या वह अकबरअली था? उ०—नहीं। प्र०—या अब्दुल्लअली? उ०—यह नहीं जानता एकछोटा पुलिस का आदमी था। प्र०—वह बीमार औरतके कमरेमें क्या करता था? उ०—मैं जानताहूं कि यह औरतपुलिसके पहरेमेंथी। प्र०—जबआपने उससे कहाथा कि अपनेदिलका हालकहो तो कोईआदमी पुलिसका उसकमरेमेंथा? उ०—मैं नहीं जानता कि पुलिस का आदमीकमरेमें था या दरवाजेपर। प्र०—मैं बहुत नम्रता से आपसे पूछता हूं कि क्या डाक्टरों में यह बातहै कि एक डाक्टरके बीमार का इलाज दूसरा डाक्टर करै? उ०—मैं नहीं कहसक्ता कि क्यारीतिहै परन्तु सरमेजर लूइससाहबसे मेरी मित्रताहै उनकेबग़ैर कहनेके उसबीमारके पासगया था। प्र० डाक्टर सीवर्डसाहब आपसे पूछताहूं और यक़ीनहै कि आप ऐसा ओहदेदार और जानकार मुझको बख़ूबी जबाब देगा कि आपकी रीतिहै कि आप दूसरे डाक्टरके बीमार के पास उसकेइत्तिलाके बिना जासक्ते है? उ०—हांहै औरनहीं भीहैयह बात डाक्टरोंके तअल्लुक़ है जैसी प्रीतिहो वैसा वर्त्ताव करें। प्र०—पसइससे मालूम हुवा कि आपका यह मतलबहै कि अगर आपकी और एक डाक्टरकी प्रीतिहैतो आप उसके बीमार के पासउसको इत्तिलाके विनाजा सक्ते हैं? उ०—जोकुछमैं जानता था आपसे कहदिया मुझको आपसे छिपाने कोइच्छा नहीं है॥

साहब प्रेजीडण्टने कहा कि आप हां या नहींका जबावदीजिये——गवाहने वर्णन किया कि अगर यहबीमार डाक्टरकेनिजका हैतो उसकेपास जानाउचित है। प्र०—सरजण्टबेलनटाइनसाहबने कहाजोबिमार अस्पतालमें होतोउसकेपासजाय नजांय? उ०—नहीं। प्र०—मालूमहुवा कि सरजनमेजरलूइससाहब अपनेकाममें बड़ेप्रबीणहैं? उ०—बड़ेनिपुणहैं। प्र०—

आपमुझसे वर्णनकीजिये किआप भावपूनाकर कोजानते हैं ? उ०—हांमैंने उसको देखाहै लेकिन नहीं कह सक्ता किमैं उसकोजानताहूं। प्र०—आपनेउसको कबदेखाथा ? उ०—बड़ौदेसे मिस्टरबोवी साहब केजानेके उपरान्त। प्र०—आपनेउसकोपहिले कभी नहीं देखा ? उ०—मुझकोयाद नहीं। प्र० आपने उसको उस पीछे देखा था ? उ०—किसके पीछे। प्र० आपकहतेहैं किमैंने उसकोएक मरतबादेखाथा और अबयह भीकहतेहैं किमिस्टरबोवी साहबके जानेसेपहिले उसकोनहीं देखाक्या आपनेएक मर्तबाके सिवाय और भी देखा था ? उ० जहांतक मुझको यादहैमैं कहताहूं किमैंने उसकोनहीं देखा नउससेबातीकी। प्र०—मिस्टरबोवीसाहब कबगयेथे ? उ०—मुझकोयाद नहीं। प्र०—मैंआपसे फिरनपूछूंगा केवल इसमर्त्तबे यहपूछता हूं किआपखूब जानते हैं कि उसवक्त से आपनेभाव पूनाकर कोनहीं देखा ? उ०—नहीं जहांतक मुझकोनिश्चय और स्मरणहै। प्र०—अबआपकीइजाजतसे ९ नवम्बरकी बाबत सवालकरना चाहताहूं परन्तुआयाके विषयमें मुझको पूछना है वहयहहै किमैं समझाकि आपकीऔर आयाकी बार्त्ताहुई थी ? उ०—जितनाकि मुझको स्मरणहै मैं वर्णन करताहूं कि मेरी और आयाकी कुछमामूली बातेंहुईं थीं। प्र०—क्याआप कहतेहैं पुलिसके आदमीने तर्जुमानहीं कियाथा ? उ०—जहां तकमुझको स्मरणहै कहताहूंकि कोई मुतरज्जिम नथा। प्र० जोआपने जवाबदिया यहमेरा प्रश्ननहींहै मेराप्रश्न यहहै कि पुलिसके आदमीने आपकी बार्त्ताका तर्जुमा नहींकिया ? उ० अगरआप अबसेप्रलय तकपूछे जावेंगेतोमैं वहीजवाब दूंगाजो कुछकि देचुकाहूं अन्तरनपड़ेगा। प्र०—मुझको यहांप्रलयतक ठहरना मंजूर नहींहै हां अगर कोई ऐसी बात पेश होजावे जिसकाहाल कुछ मालूम नहींहै शायद ठहरूं ? उ०—आप ऐसीहीबातें करतेहैं मानोप्रलय तकआप ठहरेंगे। प्र०—आप नहीं जानते पुलिस के आदमी ने तर्जुमा किया था नहीं ?

उ०—मैं आपसे पहिलेकह चुकाहूं। प्र०—फिर मुझसे कहिये कि आपनेक्या कहाथा? उ०—मुझकोयाद नहींहैकि मैनेक्या कहाथा। प्र०—शायद पुलिसके आदमीने तर्जुमा किया है? उ०—शायद।—क्यातुमजानते होकि उसने तर्जुमा किया हो उ०—मुझकोयादनहीं। प्र०-डाक्टरसीवर्डसाहबमैंतुमसेपूछता हूंकि हरएक आयाके बयानका शब्दतुमनेअपने कानोंसुना? उ०—मुझको खूबयाद नहीं आपउस बातको पूछते हैं जोमेरे खयालमें नहींहै आपमुझको दरमियानी करार दिया चाहते हैंऔरइसी प्रयोजनसे आप ऐसेप्रश्न करतेहैं। प्र०—क्या मेरीयह इच्छाहै—डाक्टर सीवर्ड साहब जैसे आप बातोंमें सावधान हैं उसीतरह डाक्टरीमेंभी निपुणहैंतो आपसे बढ़करदूसरा कोई डाक्टरन होगा इसलियेआपदयाकरके बयानकीजियेकिआपने मुतरज्जिम केद्वारा आयासे वार्ता कीथी? उ०—(बड़े जोरसे कहा) मैं उत्तरनहींदेसक्ता। प्र०—मेहरबानी करके इसकदर गुस्सा न कीजियेअबमेरे सवालका जवाबदीजिये? उ०—मैंकुछ जवाबनहींदेसक्ता।प्र०—आपकोकुछभीतअल्लुकहै?उ०—(मेम्ब-रान्कमीशनकी तरफ देखकर) अगरयह साहबइसीतरहप्रलय तकप्रश्न कियेजायंगे तोसिवा उसउत्तरके जोमैंदे चुका और कुछजवाब न दूंगा और प्रलयतक इनके सवाल नचुकेंगे॥

साहबप्रेजीडण्ट-सरजंटबेलनटायन साहब आपसे हरएक बातपूछनेके अधिकारीहैं डाक्टरसीवर्डसाहबने उत्तर दियाकि जोकुछमैं बयानकरूं उसकोसुनना चाहियेसाहब प्रेजीडेण्टने कहाकिजो सरजन्टसाहब पूछैं उसकाउत्तर आपकोदेना चा-हिये डाक्टरसाहबने कहाकि मुझको मालूमनहीं। प्र०—सर-जन्टबेलनटायनसाहब काक्याआप कहसक्तेहैंकिआपबखूबीहि-न्दुस्तानी बोलसकेंगे? उ०—मैंहिन्दुस्तानीबोल सक्ताहूं लेकि नबखूबी हिन्दुस्तानी नहींबोल सक्ता। प्र०—अबमैं आपसे(दर बारहट नम्बरके प्रश्नकरताहूं किआपनेबयानकिया थाकिमु-झसेकारनैल फिरसाहबने कहाकि मुझको खबरपहुंचीहै मुझ

को जहरदिया जायगा ? उ०—क्यामैंने यहकहाथा। प्र०—मैं आपकेइजहार पेशकरताहूं मुझकोमंजूर नहींकि कोईग़लती हो ? उ०—अगरमैंने ऐसावर्णन कियातो ग़लतहै। प्र०—आप कहतेहैं किकरनैलफियरसाहबने मुझसेकहाथा कि मैंनेसुना हैकिलोग मेरीजानलेनी चाहतेहैं पर अबतक मुझकोनिश्चय नथापरन्तु अबनिश्चय हुवाआपको मालूमनहीं किकरनैलफियरसाहबने किस शख़्स से सुनाया ? उ०—जहांतक मुझको यादहै कहताहूं किलोगोंने उनकीजान लेनेवास्ते उनकोधमकायाथा और उसवक़्त तकउनको जहरदेने कासन्देह नथा। प्र०—जबआप प्रेजीडन्सीको गयेथेतो आपनेगिलासको तलछटकेसमेत देखाथा उ० हां। प्र०—जबआपने उसकोदेखाथा तो तलछटमिलाहुवाथाऔर गिलासकी पेन्दीमेंबैठा हुवा न था ?उ०—जबकरनैलफियरसाहबने गिलासको तिरछाकिया तो तलछटको मैंने पेंदीमेंबैठाहुवा देखा। प्र०—क्या यहतलछटपानीमें मिलाहुवा नथा अलगथा? उ०—यहतलछटपानी केनीचेबैठा हुवाथा। प्र०—क्यायह वस्तुइसक़दर गिलासमेंथी कि उसमें पानी पच गया था और केवल तरी उसमें बाक़ी रहगईथी ? उ०—पानी बहुतथा आपऐसेसवाल करते हैंकि जवाबदेना कठिनहै। प्र०—आप कहते हैं कि करनैलफियर साहबने आपसेकहाथा कितलछट कीरंगतसियाही माइल भूरीथी क्यापिसे हुये हीरे और संखियाका रंगऐसा होता हैमेरे विचारसे इसकायह रङ्गनहींहोता ? उ०—हांसियाही माइलभूरा रङ्गनहीं होता। प्र०—तोआप इसबातका जवाबदे सक्ते हैं कि संखिया और हीरे के चूर्ण का रङ्गस्याही माइल नहींहोताहै ? उ०—हांनहीं होता। प्र०—पस मालूम होता हैकि सिवा इनदोनों चीजोंके और कोईचीजभी थी—जिससे तलछटका रङ्गस्याही माइल होगया ? उ०—इस विषयमें मैं कुछराय नहींदेसक्ता। प्र०—है, है, डाक्टरसीवर्डसाहब इस का जवाब दीजिये ॥

साहब प्रेसीडंटने कहाकि सरजल बेलन टाइन साहब क्या बातहै—सरजल बेलनटायन साहबने कहा आप बयान करें मैंने यहप्रश्न कियाहै कि करनैल फियर साहबने कहाथा कि गिलासमें कोईवस्तु भूरेरङ्गकी स्याहीमाइलथी अबमैंडाक्टर सीवर्डसाहबसे पूछताहूंकि ऐसीरङ्गत संखिया और पिसीहुई हीरेकीभी होसक्ती हैतो डाक्टरसाहब कहतेथे कि नहींफिर मैंनेपूछा हैकि सिवाइन दोवस्तुओंके औरकिसी वस्तुके होने का सम्भवहै जिसमें तलछटका यहरंग होगया डाक्टरसाहब कहतेहैं किमैं इसपर रायनहीं देसक्ता? उ०—डाक्टरसीवर्ड साहब मैंने केवल दोही वस्तुओंको देखाऔर कोईवस्तु नहीं देखी। प्र०—आपके इसवर्णनसे मालूमहुवाकि जुजोंके देखने केसमयआपने और कोईवस्तु नहीं देखी? उ०—हांपरीक्षाके समयकोई वस्तु स्याहीमाइल मैंने नहीं देखी। प्र०—तो आप इस तलछटका रङ्गक्या बतलाते हैं? उ०—हलका भूरा रंग बताता हूं। आपने थोड़ा पानी भी मिलाया था? उ०—हां। प्र०—डाक्टर सीवर्डसाहब मुझको निश्चयहै किपानी डालनेके पहिलेभी अलगाअलग करलिये होंगे? उ०—मैंने पानीका बखूबी इमतिहान नहींकिया। प्र०—मैंजानताहूं जबकोईमनुष्य किसी वस्तुके जुज अलाहिदा करता तोवह उन वस्तुओं का बखूबीइमतिहान करलेता हैजिनकेद्वारा जुजोंको अलगकरता है? उ०—हां बहुधा यहीरीतिहै। प्र०—बहुधा दृष्टिऐसी हैं किजबकभी लोगोंनेविषका इमतिहान कियाहैतो जिनवस्तुओं केद्वारा इमतिहान किया गया उनही चीजों में जहर पाया गया? उ०—हांऐसी दृष्टिहैं। प्र०—आप कहतेहैं किमैं पानी और तलछट समेत मझोला चमचेका एक तिहाई हिस्सा तलछट होगा? उ०—हां एक मझोला चमचा भरहोगा। प्र० आपनेअपने इजहारमें बयान किया किएक मझोले चमचे के बराबर पानीथा औरपांचचावल बराबर दूसरी वस्तुथी? उ० हां। प्र०—आपने इस तलछट कोक्या कियाआपने जो उसके

कुछपानी मिलाथा तोपानी मिलाकर आपनेक्या किया? उ० क्याआपका मतलब इस प्रश्नसे यहहैकि आखीरमें मैंने उसको क्या किया । प्र०—हांजबआप ९ नवम्बरको कारनैलफिवरसाहब केमकानपरगये थे? उ०—मैंनेपानी मिलानेके पीछेकुछ नहींकिया । प्र०—आपनेपानी औरतलछटको अलगनहीं किया मैंभूलगया आपनेअपने मकानपर उसकोअलग कियाथा आपतलछटको किस तरहलेगये? उ०—गिलासमेंलेगया । प्र०—हांक्षमाकीजिये मुझको यादआयाकि आपने कहाथाकि आपअपनेकोटकेपाकिटमेंरखकरलेगये थेऔरआपअपनेमकानपरआकरपिसेहुये कोयलेसे इमतिहान किया ? उ०—हां । प्र०—क्या इस तरह इमतिहान खूबहोताहै ?उ०—हां । प्र०—पससालूमहुवाकिजो इमतिहान आपनेकियातो आपफिर इमतिहानकरकेजाहर करसक्तेहैं कि संखियाहै ? उ०—निस्संदेह । प्र०—क्याआपउसका जौहरभी निकालसक्ते हैं ? उ०—हां । प्र०—नैमें जो छल्लासा पडगयाहै अगरउसका इमतिहान कियाजाय और उसमेंसंखियानिकलेतोक्याहोगा । उ०-जहांतकमैंनेअजमाइसकीहै संखियाहै । प्र०—किसी औरधातु से क्याऐसी कैफियत नहीं होजाती है ? उ० हां होजातीहै । प्र० मेरा मतलब यहहै कि जिसतरह संखियेसे छल्ला बनगयाहै ? उ०—परन्तु खुर्दबीनके देखनेसे असलियत मालूमहोजावेगी । प्र०—आपने कोयलाकहांसे मंगायाथा ? उ०—अस्पतालसे कोयला मंगायाथा और अस्पतालअसिस्टन्टकोयला और औजारलायाथा । प्र०—क्याआपने इसकोयलेकी आजमाइश नहीकी ? उ०—नहीं । प्र०—तो आपने कोयले को आजमाइश फिर की ? उ०—हां । प्र०—क्याआपने कोयले की आजमायश आपही की थी ? उ०— नहीं गवर्नमेण्ट के कमीकल अनेलायजरने की थी । प्र०—नहीं वही कहिये जो पहिले आपने कहा था मैं समझा कि आपनेपहिले कोयले की पहिचानकी फिरखाकटरग्रे साहब के पास भेजा ? उ०—हां ऐसाही किया था ।

प्र०—क्या आपने पानी और तलछट की आजमायश की थी? उ०
हां मैंने जानकर यह तलछट डाक्टर ग्रे साहब के पास भेजा
था। प्र०—मेरा मतलब यह है कि जब आप इमतिहान करते
थे तो आपने पानी का इमतिहान नहीं किया? उ०—नहीं जब
मैंने तलछट को छान लिया तो पानी को फेंक दिया मैंने केवल
तलछट का इमतिहान किया था। प्र०—मुझको विश्वास है
कि कई विष इस प्रकार के हैं जिनकी उत्पत्ति तांबे से है? उ०
हां। प्र०—उनका क्या नाम है? उ०—एक तांबे का विष होता
है उसको तूतिया कहते हैं और अक्सर कलमों में तूतिया का
जहर भी हो जाता है। प्र०—तो आपने तूतिया होने का
इमतिहान नहीं किया? उ०—नहीं। प्र०—कोई वस्तु ऐसी
न थी जिससे तांबे का होना मालूम हो? उ०—नहीं। प्र०
आप कहते हैं कि जब संखिया पानी में डाल दी जाती है तो कुछ
तैरती है और कुछ नीचे बैठ जाती है अगर संखिया पानी से भारी
होता है तो क्यों तैरता है और किस वास्ते पानी के नीचे नहीं
बैठ जाता? उ०—संखिया की खासियत ऐसी ही होती है और
कुछ बैठ जाता है। प्र०—पस मैं कहता हूं कि यदि संखिया पानी
में कितना ही मिलाया जाय तो कुछ बैठ जायगा और कुछ तैर-
ने लगेगा? उ०—इस विषय में मैं कुछ नहीं कह सक्ता। प्र०
क्या सम्पूर्ण आयु में संखिया को आपने यह पहिले ही मरतबा
आजमाया? उ०—नहीं लण्डन में प्रोफेसर हफमीम साहब के
साथ जहर की कसरत से आजमायश की। प्र०—उसके उप-
रान्त भी कभी आपने संखिया की आजमायश की थी? उ०
हां एक मरतबा मंगा कर आजमायश की थी। प्र०—आपने इस
तलछट को तोला था? उ०—नहीं। प्र०—आपने इस मरतबा
इस तलछट में से कुछ आजमायश के वास्ते लिया था? उ०—
मेरे विचार में बहुत कुछ तो घटा दिया होगा। प्र०—एक बोतल
भर के लिया हुआ था? उ०—हां। प्र०—बाकी आपने डाक्टर
ग्रे साहब के पास भेज दिया—करीब ढाई आउन्स के बराबर। उ०

हां वह ढाई चावलके बराबर होगा। प्र०—मैं नहीं समझा कि आपने क्योंकर दुबारह आजमायश की? उ०—यदि आपकी इच्छा होतो मैं दुबारह आप को आजमायश करके दिखाऊं। प्र०—क्या आपने उन्हीं वस्तुओं से फिर इमतिहान किया जिनसे कि पहिले इमतिहान किया था? उ०—हां। प्र०—क्या आपने उसी तलछट को फिर आजमायश की जो बाक़ी रह गया था? उ०—हां। प्र०—जो छल्ला नली में पड़ा था उसमें क्या आठवां हिस्सा संखिया था? उ०—मैं नहीं कह सक्ता। प्र०—आपने और कितना इस तलछट में से लेकर इमतिहान किया था? उ० एक चुटकी भर मैंने लिया था। प्र०—आपने उस कोयले को तोला था जिससे आजमायश की थी? उ०—कोयले के तोलने की कुछ ज़रूरत न थी। साहब प्रेजीडण्ट बोले कि श्रीमान् महाराजा साहिब कहते हैं कि मुतरज्जिम को तर्जुमा करने की नौबत नहीं आती कि आप डाक्टर साहब से प्रश्न कर बैठते हैं इस बात का आगे को ख़याल रखिये॥

सरजान्बेलनाटायन साहबने कहा कि मेरा क़सूर है जो मैं जल्द २ प्रश्न करता हूं अब आगे से ख़याल करूंगा और गवाह से फिर प्रश्न पूछने शुरू किये। प्र०—क्या तुमने अन्त में आजमायश उस कदर तलछट पर की जो नली में बच रही थी? उ०—हां सब के ऊपर की जो कुछ बच रही थी। प्र०—क्या वह एक चुटकी भर थी? उ०—हां वह चुटकी भर थी। प्र०—क्या तुम्हारे आजमायश करने से उसमें कोई रंग पैदा होगया? उ०—कोई रंग पैदा नहीं हुआ। प्र०—परन्तु मेरी आंखें ख़ुर्दबीन नहीं हैं मैं उस को रंग ही कहूंगा? उ०—नहीं वह तो एक चमकती हुई वस्तु थी। प्र०—एक चिट्ठी जो अभी तुम्हारी इजलास में पढ़ी गई और जो कि ग्रे साहब के नाम थी नहीं यह मेरी ग़लती है जो कि तुम्हारे नाम ग्रे साहबने लिखी थी उसमें लिखा है कि मैंने तुम्हारी चिट्ठी और जो उसके भीतर वस्तु थी पाई क्या कोई तुमने चिट्ठी लिखी थी? उ०—नहीं उस चिट्ठी से मतलब फ़ियर साहब की

चिट्ठीका है । प्र०—वह लिखते हैं कि हमने तुम्हारी चिट्ठी पाई वह
क्यों लिखते हैं ? उ०—साहब मैंने कोई चिट्ठी उनको नहीं लिखी
परन्तु कारनैल फियर साहब के लिफाफे पर लिखदिया था और
शायद उस समय थोड़ा करता था और दूसरा रास्ते में अलग चिट्ठी न
लिखसका । प्र०—क्या वही चिट्ठी तुम्हारे पास करनैल फियर सा-
हब से पहिले आई थी ? उ०—हां वही पहिली चिट्ठी थी । प्र०
क्या संखिया को शीशे के बनाने में बर्त्तते हैं ? उ०—हां कोई २ शीशों में
बर्त्तते हैं प्र०—शीशा जो छिलगया है अगर फिर रगड़ा जाय तो वह
फिर भी छिलजायगा उ०—हां बेशक छिलजायगा । प्र०—तुम
उसको दिखासक्ते हो ? उ०—यदि साहिबान कमीशन आज्ञा
दें तो दिखासक्ता हूं प्रेजीडण्ट साहब ने कहा इसवक्त तुम दिखा
सक्ते हो ? उ०—यदि आज्ञा होतो दिखासक्ता हूं । प्र०—अच्छा रह-
नेदीजिये यह बात हम डाक्टर ग्रेसाहब से पूछ लेंगे । प्र०—अब
दूसरे मुआमले में आप से वार्त्ता करूंगा आपने बयान किया कि
रावजी ने आपकी तरफ किस दृष्टि से देखा ? उ०—वह रावजी
नयानरसू था । प्र०—हां रावजी ने आपको छाता दिया था ?
उ०—हां । प्र०—उसने पहिले कभी ऐसा न किया ? उ०—नहीं ।
प्र०—जब तक रावजी ने यह बयान नहीं किया था कि उसने
अपने हाकिम को जहर नहीं दिया तो आपने यह जिक्र किसी
और से किया था ? उ०—हां किया था । उ०—किस शख्स से
जिक्र किया था ? उ०—मिस्टर बोडोसाहब से । प्र०—अर्थात् यह
बौकर आपको और किस तरह देखते थे इस बात का आपने उनसे
जिक्र किया था ? उ०—हां । प्र०—आपने यह जिक्र उनसे कब किया
था ? उ०—मैं यह नहीं कह सक्ता मगर बड़ौदे से रवाना होने के
पहिले मैंने उनसे कहा था । प्र०—मैंने सुना है कि मिस्टर बोडोसा-
हब पचीस दिसम्बर को बड़ौदे से रवाना हुये ? उ०—मैं नहीं जानता
प्र०—क्या आप कह सक्ते हैं कि एक आध रोज पहिले आपने उन
से यह जिक्र किया था ? उ०—मुझको याद नहीं मगर जहर दिये
जाने के उपरान्त और रवानगी से पहिले उनसे कहा था । प्र०—आप

यह कहसक्ते हैं कि २४ दिसम्बर के पहिले यह वार्त्ता हुई थी ?
उ०—हां निश्चयकर कहताहूं । प्र०—सिवा इसके और कुछ
आप नहीं कहसक्ते ? उ०—नहीं और कुछ नहीं कहसक्ता । (फिर
नकक्ट से सीसे के छिलने को आजमायश की तथा इसकी खु-
शी आजमायश हुई और शीशा छिलगया) साहब ऐडवकेटजनर-
ल स्केलन टायनसाहब से कहा कि आपने खुर्दबीनिशान देखे
सरजण्टसाहबने कहा कि हां मैंने खूबसाफतौर से निशानों को
देखा ॥

डाकृरसीवर्ड साहब के दुबारह इज़हार
ऐडवकेटजनरलन ने लिये ।

प्र०—मेरी समझमें यह आया कि जब अस्तालमें आया नहीं
गई थी तो आप उसका इलाज करते थे ? हां। प्र०—आपको याद है
कि अस्ताल जाने के पहिले कितने दिन आपने उसका इलाज
किया ? उ०—सिर्फ एक रोज । प्र०—आपका यह काम भी बतौर
डाक्टर रजीडन्सी के है कि रजीडन्सी के नौकरों का आप इलाज
करें ? उ०—हां यदि कोई शख्स बहुत बीमार हो । प्र०—क्या
सबब था कि आपने उसको अस्तालमें भेजदिया ? उ०—मुझ-
को वह बहुत बीमार मालूम हुई और उसका इलाज उसके
मकानपर बखूबी नहीं होसक्ता था । प्र०—अर्थात् मिस्टर बोवी
साहबके अहाते में ? उ०—हां । प्र०—उसके वास्ते आप अस्स-
तालमें दवा तजवीज करने के वास्ते गये थे ? उ०—मेरी दवा तज-
वीज करने की इच्छा न थी मैं केवल उसके देखने को गया था मैंने उस
के फेफड़े को देखा और जो कि आया बोवीसाहब की नौकर थी इस
लिये मुझे उसको देखना मंजूर था । प्र०—यह आया अस्ताल
में अलग कमरे में थी या और बीमारों के साथ थी ? उ०—अलग
कमरे में थी । प्र०—आप किस मुकाम पर पुलिस के आदमी का
होना बताते हैं वह कमरे में था या बाहर दरवाजे के बैठा था ?
उ०—शायद दरवाजे के बाहर खड़ा था मैंने खूब गौर नहीं किया
प्र०—जब आप आया के कमरे में गये थे तो आपके साथ और

कोई आदमी बैठा था ? उ०—मुझे याद है कि शायद असिसटेन्ट का अर्दली बैठा था। प्र०—आपको याद है कि कौनसे असिसटेन्ट का वह अर्दली था? उ०—मुझको याद नहीं। प्र०—आप कहते हैं कि पुलिसका आदमी दरवाजेपर खड़ा हुआ था आप कह सक्ते हैं कि वह किस प्रकार के पुलिस का आदमी था क्या वह बम्बई के पुलिस का था ? उ०—हां बम्बई के पुलिसका था बड़ौदे में पुलिस नहीं है। प्र०—उसकी वरदी कैसी थी (सरजन्ट बेलन टायनसाहबने कहा) कि ज. डाक्टरसाहब बयान करें कि उसकी वरदी कैसी थी तो मैं मंजूर करूंगा ? उ०—मुझको एक छोटा पुलिसका सिपाही मालूम हुआ था सादी वर्दी पहिने हुये था। प्र०—डाक्टर सीवर्ड साहब आप कहते हैं कि मैं हिन्दुस्तानी बोलसक्ता हूं परन्तु जल्दी और बखूबी नहीं बोलसक्ते ?उ०—हां जल्दी नहीं बोलसक्ता। प्र०—क्या आप इतना बोलसक्ते हैं कि रोज मर्रा की गुफ़्गूमें मुतरज्जिम की जरूरत नहीं है ? उ० हां थोड़ी२ बातों में मुतरज्जिम की जरूरत नहीं है। प्र०—क्या आपको कभी मुतरज्जिम की जरूरत होती है ? उ०—हां जब जरूरत हुई और जो शख्स मुझको उस वक्त मिल जाता है बुला लेता हूं। प्र०—अब मैं ९ नवम्बर के विषय में आपसे प्रश्न करूंगा आप बयान करते हैं कि गिलास के तलछट का हलका भूरा रंग था उ०—हां। प्र०—जब आपको पहिले यह तलछट मिला था तो आपने उसके रंगपर गौर किया था ? उ०—हां मैंने गौर किया था गुलाबी माइल उसका रंग था जैसा कि अकोतर के अरक का रंग होता है। प्र०—आपने कितना पानी उसमें मिलाया था ? उ०—शायद एक चमचा होगा। प्र०—आपको याद है कि आपने किस बरतनसे पानी लेकर उसमें मिलाया था ? उ० उस बरतन से जो मुंह धोने की मेजपर रक्खा था और मुझको ऐसा याद आता है कि वह सुराही थी। प्र०—अर्थात् जो बरतन उस वक्त आपके साम्हने था उससे आपने पानी लिया ? उ०—हां। प्र०—आप कहते हैं कि जब आप भरगये तो आपने

कोयले और औजार मंगाये थे और वह कोयले और औजार आपके अस्पतालका असिस्टन्ट लाया था आपको याद है कि वह कौनसा असिस्टन्ट अस्पताल का था ? उ०—उस शख्सका नाम इब्राहीमजी है परन्तु वह बड़ौदे से चलागया। प्र०—वह यहूदी था वा मुसल्मान ? उ०—यहूदी। प्र०—इब्राहीमजी उस वक्त कहां था वह अपने मकानपर था या आपके मकान पर ? उ० मुझको याद नहीं कि मैंने उसको चिट्ठी लिखकर बुलाया था वा किसतरह परन्तु उसको उसके घरसे बुलाया था। प्र०—यह बात आपने किसीसे नहीं कही कि औजार और कोयले आप किस प्रयोजनसे मंगाते हैं ? उ०—किसीसे नहीं कही। प्र०—अस्पताल के असिस्टन्टसे भी नहीं कहा था ? उ०—हां उससे भी नहीं कहा प्र०—सरजन्टबेलनटायन साहब ने आपसे पूछा था कि अगर संखिया गिलासमें डालने के पहिले बोतलमें मिलाई जातीतो क्या संखिया पानीके ऊपर तैरने लगे ? उ०—यह मैं नहीं कहसक्ता प्र०—मुझको अब सिर्फ इतनी बातका जवाब दीजिये कि ऐसी खासियत संखिये की है ? उ०—हां ऐसी ही खासियत है। प्र०—हीरेका चूर्ण अगर पानीमें डालाजाय तो वह पेंदी में बैठ जावेगा ? उ०—हां। प्र०—आप कहते हैं जबमैंने मालूम करलिया कि वास्तवमें संखिया है तो फिर आपने कुछ उसकी आजमाइश नहीं की ? उ०—हां मैंने फिर आजमाइश नहीं की। प्र०—क्या वजह जो आपने फिर आजमाइश नहीं की ? उ०—फिर इमतिहान करना वृथा मालूम हुआ। प्र०—आपने सबतलछट की आजमाइश आपही क्यों नहीं की। उ०—न मेरे पास दवाइयां थीं न औजार थे। प्र०—सिवा हीरे के और भी ऐसी चीजें हैं जिससे शीशा छिल जाता है ? उ०—हां हैं। प्र० आप ऐसी चीजों को जानते हैं ? उ०—मैं नहीं जानता हूं। प्र० यह बात डाक्टर ग्रे साहबसे पूछी जावेगी मगर आपने गिलास की तलछट में गुबार उठता हुआ कब देखा था ? उ०—मैं ने तलछट को फियर साहब के पास पानी मिलाने के पहिले

देखा था। प्र०—सरदिन कर रातका—आपकी रायमें बहर सङ्खियाथा या पिसाहुआ हीरा? उ०—सङ्खिया प्र०—अगर हीरेका चूर्ण किसीको दिया जायतो उसकोवह पचा सक्ता है और उसको दुःखनहीं पहुंचसक्ता? उ०—मैंइसबारे में कुछ जवाब नहीं देसक्ता फिर मेम्बरान् कमीशन टिफन खाने के वास्तेउठ गये॥

डाक्टर ग्रे साहब का इज़हार।

जबमेम्बरान् कमीशनटिफन खाकरआये तोडाक्टरग्रे साहबकाइज़हार शुरूहुवा उनके इज़हार ऐडवकेट जनरलनेलिये डाक्टर साहबने बयान किया कि मेरानाम वीइलंगटनग्रे है मैं बम्बईकेफौजका एकसरजनहूं और कायममुक्काम कमीकलए नेलायर्ज गवर्न्नमेण्टका हूं॥

११—नवंबरको एकरजिस्टरी की हुईचिट्ठी डाक्टर सीवर्ड साहबरेजीडन्सी सरजनबड़ौदाके पाससे आईयह एकरजिस्टरीकियाहुवा पाकिटथा जिसपरअब निशानहर्फ(पी)का है यह लिफाफाजो मेजपररक्खा हुवा है ऊपरकादूसरा लिफाफा है जिसवक्तयह मेरेपास पाकिटआया तो उसकीमुहर साबित थी इस लिफाफेमें एकपाकिट और एकचिट्ठी है उसपर हर्फ (एफ का निशानबना है अन्दरकेपाकिट परभीमुहरसही और सालिमथी,डाक्टरसीवर्ड साहबकालेख इसपाकिट परथा जिस लिफाफेपर निशानहर्फ(ओ)का बनाहुवा था उसमेंएक ब्लाटिङ्ग कागजलिपटा हुवा मैंनेपाया इसकागजमें मुझकोथोड़ा चूरहमिला जो तौलमें ढाईचावल था उसकी रंगत भूरीथी उसमेंकुछ चमकते हुये जर्रेभीथे तथाच इस बुरादेके मैंनेचजुदाअलग कियेजिस तरहसंखिया की आजमाइश होती है पहिलेमैंने थोड़ाचूरह नलकीमे रखकर गर्मकिया उससेमालूमहुवा कि एक सफैद चीजएक तर्फको आगई उसको मैंने खुर्दबीनसे देखातो उसवक्तमुझको मालूमहुवा कि किसीकदतीहुईचीज के बटकोण रवेहै मैंनेउन जर्रोंकी औरतरहसे

भी आजमाइशकी मैं समझा कि यह सफ़ेद संखियाके टुकड़े हैं मैंने उनको थोड़े पानीमें डालकर जोश किया और जोश होनेके उपरान्त मैंने थोड़ा पानी लिया और उसमें अमोनियम नइट्रेट आफ सिलवरको मिलाया इसके मिलानेसे हलका पीला रंग हो गया फिर मैंने अमोनियम सलफेट आफ कापरको मिलाया जिससे हलकी सब्ज़ रंगत होगई फिर मैंने सबक्यूरर रेंड रैंडीशनगा-से आजमाइश की पस तीन तरीकों से इम्तिहान हुआ तीनों दफ़ा मैंने अमोनिया मिलाई थी लेकिन अमोनिया सबमें नहीं मिलाई थोड़ा पानी दूसरी रीतिके आजमाइशके वास्ते रहने दिया अर्थात् बाक़ीमें मारीटक तेज़ाब मिलाया उसको मैंने जोश किया लेकिन वह पानीमें न घुला हर प्रकारके इम्तिहानसे मुझको निश्चय हुआ कि यह संखिया है इस आजमाइशमें छठा हिस्सा बुरादेका खर्च हुआ सिवाय इसके और तरहसे भी मैंने उसका इम्तिहान किया अर्थात् मैंने थोड़ा चूर्ण पानीमें मि-लाया और उसमें तेज़ाब मारीटक डालकर दो तांबेके पत्तरों में रक्खा और उन दोनों पत्तरोंको आगपर रक्खा जब वह खूब गरम होगये तो भूरे रंगकी चीज़ पत्तरोंके भीतर मालूम हुई फिर मैंने एक पत्तरको उठाया और खुर्दबीनसे उसको देखा तो अष्टकोण टुकड़े नज़र आये पस इस इम्तिहान से भी मालूम हुआ कि यह संखिया है मैंने कोयलेसे भी इम्तिहान किया मेरे पास वह नैचे हैं जिसमें मैंने इम्तिहान किया गवाहने उस नैचेको निकालकर दिखाया—देखिये इस नैमें जो धात काला जमा पड़गया है वह संखिया है अगर फिर आगपर रखकर खूब गर्म किया जायतो संखिया फिर असली हालत पर आजाय (यह नै डाक्टर साहब से लेलीगई और हर्फ़ (टी) का निशान किया गया) मैंने इस बुरादेसे ११ नवम्बर को और कुछ आजमाइश नहीं की नवस दिन मैंने चमकते हुये धातोंकी कुछ आजमाइश की हरचन्द संखियाके होनेकी सबतरहसे आजमाइश कीगई इनसब आजमाइशोंमें इन चमकते हुये धातों को कुछ [illegible]

नहीं पहुंचा मैंने उन्नीस नवम्बर को खुर्दबीन से इन ज़र्रों को देखा मुझको खयाल हुवा कि यह पिसाहुवा शीशा है या संग खारा है तथाच इसबारे में डाक्टर सीवर्ड साहबको मैंने लिखा जो चिट्ठी मैंने डाक्टर सीवर्ड साहब को भेजीथी उसपर (क्यू) का निशान है जब मैं ने इस तरह के ज़र्रे पुड़िया में चमकते हुये देखे तो मुझको अतिआश्चर्य्य हुवा जब खुर्दबीनसे देखा तो हीरेके ज़र्रे मालूम हुये मैंने डाक्टर सीवर्ड साहब को जो चिट्ठी भेजीथी और अब उसपर निशान हर्फ़ (यू) का है उसमें मैंने यह मज़मून लिखा था ॥

माई डियर सीवर्ड —— वर्त्तमान मासकी १२ तरीख़ की लिखी हुई चिट्ठी के क्रमसे मैं आपको लिखता हूं कि अब मैंने बखूबी तौर से उन चमकते हुए ज़र्रों का इमतिहान किया तो मालूम हुवा कि वह पिसा हुवा हीरा है कई ज़र्रे ऐसे चमकते हुये हैं कि ऐसी चमक सिवाय हीरेके और किसी वस्तु में नहीं होसक्ती सिवाय इसके वह बहुत सख़्त है मैंने तेज़ाब में उसको गलाना चाहा लेकिन न गली यह बात सिर्फ़ मेरी देखीहुई है अगर किसीको संदेह होतो दूसरी रीतिसे भी उसकी आज़माइश करसक्ता हूं ताकि साबित हो कि यह हीरेका चूर्ण है या नहीं कर्नैल फ़ियरसाहबके मुंहमें जो तांबेका स्वाद आगया उसका क्यासबब है क्या उसमें तांबा था क्योंकि संखिया में कोई स्वाद नहीं होता मैंने कितनाही उस पुड़िया के चूरेकी अज़माश की लेकिन मुझको उसमें तांबा न मिला मगर जोकि अक्सर जौहर पानी में घुलजाते हैं शायद यह जौहर भी अर्कचकोतरे के साथ घुलगया और शर्बत के साथ फिकगया शायद जल्दीसे जोमतलाने की यह वजह हो गई कि संखिया जो शर्बतपर तैरता रहा उसको फ़ियर साहब कुछ पीगये होंगे और उसवक्त उनका पेट खाली होगा क्योंकि यह रीति है कि जब संखिया पानी में खूब नहीं मिलाई जाती है उस वक्त तक वह पानीके ऊपर तैरती रहती है हिन्दुस्तानी लोग निश्चय जानते हैं कि संखिया और हीरे का चूर्ण बड़े मार-

डालनेवाले जहर हैं मगर सही बात यह है कि इन दोनों में से मुश्किल एक वस्तु भी नहीं है जो कुछ आप और भेजेंगे उसकी भी आजमाइश करके मैं आपको इत्तिला दूंगा यदि यह सम्भव है कि इस चकोतरे का शर्व्वत जिसमें यह जहर मिला हुआ था या उस जगह की मिट्टी जहां कि शर्व्वत फेंका गया था आप मेरे पास भेजेंगे शायद उससे मालूम हो कि उसमें तांबा था या नहीं॥

दस्तखत—डब्ल्यू ग्रे कमीकल ऐनेलायजर गवर्नमेन्ट
कालिज लैबुरैरी बम्बई लिखा हुआ
१३ नवम्बर सन् १८७४ ई०॥

सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा कि इस चिट्ठी का दरबार अल्मास साईदा के पढ़ना दुबारह याद दिलाना है और कोई फायदा नहीं——साहब प्रेसीडण्ट ने कहा क्या आप इनकार करते हैं कि यह चिट्ठी गवाही में शामिल न की जाय सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा कि मुझको कुछ इनकार नहीं है डाक्टर ग्रे साहब ने कहा कि जब मैंने यह चिट्ठी लिखी थी तो मेरे पास कोई और लेख बड़ौदे का नहीं आया जिसमें लिखा हो कि तलछट में हीरे का चूरह भी है उसको मैंने अपनी तौर से मालूम किया इस चिट्ठी के लिखने के उपरान्त दूसरा पाकट रिजिस्टरी किया हुवा १७ नवम्बर को मेरे पास बड़ौदे में पहुंचा उस मुहर में चिड़िया की चोटी खुदी हुई थी जिस लिफाफे में यह पाकिट बन्द था उसमें एक पुड़िया थी और एक चिट्ठी थी और मुहर सही सालिम थी पाकट में मिट्टी के सदृश कोई वस्तु थी १७ चावल भर यह वस्तु थी मैंने उसका इमतिहान किया मालूम हुवा कि इसमें भी संखिया और चमकते हुये जरें थे जैसे कि पहिले पाकिट में थे जिस तरह पहिली पुड़िया की मैंने आजमाइश की थी उसी तरह उसका इमतिहान किया पहिली पुड़िया में एक चावल संखिया पाई थी और उसमें सिवा चावल थे पस इस सूरत में सवा दो चावल संखिया एक आदमी के मारने के वास्ते काफी थी अगर मौक़ा मुनासिब से होजाती॥ सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा

आपवक्त मुनासिब किसव को कहते हैं ?उ०—जबकिआदमी का पेट खाली हो। प्र०—हां मैं पहिले नहीं समझता था मैं वक्त मुनासिबऔर बातकोसमझतायथा प्रेसीडण्ट साहबनेकहा डाक्टरसाहबकी गर्ज यह है किसंखिया ऐसेवक्त पर दीजाय तो खूब कारगर हो डाक्टरसाहबने बयान किया कि संखिये का असर आध घण्टेसे एक घंटे मेंहोजाताहै उसकी तासीर यहहैकि सिरघूमता है जीमतलाता है कै होतेहैंछाती सूझ जाती है दस्तआतेहैं अगरसंखियाथोड़ी २ दीजावेतोआंखों सेपानीबहताहै आंखोंकोजरर पहुंचताहै मैंनहींकहसक्ता कि हीरेकाचूर्ण मिलानेसे उसका मुहलिक होना जियादाहोजा-ताहैऐडवकेट जनरलसाहबने कहा अगरएकबोतल मेंसंखिया डालीजावे जिसमेंपानी भराहो और वह हिलायाजाय और फिर किसीपतली चीजमें वह पानीडालाजाय तोसंखिया सब में मिलसक्तीहै ? उ०—हांडाक्टर साहबने बयानकियाकि ३० दिसम्बरसन् १८७४ ई०को एक पाकिट मिस्टर सूटरसाहबका भेजा हुआ मेरेपास पहुंचाउसमें एकलिफाफाथा और उस लिफाफेमें एकपुड़ियाथी जबमैंने पुड़ियाकीवस्तु देखी तोउसमें सातचावल संखियाकेसी होथी जिसकोमैं पहिलेसे आजमाइश कर चुकाथा औरडाक्टर सीवर्डसाहबकी दरख्वास्त अनुसारमैंने कुछ इमतिहान कोयलेका ३१जनवरीको कियावहसाफ कोयला था उसमेंकुछ भी संखिया नथीबाज२डाक्टरोंने लिखाहैकि हीरे का चूर्ण कोई जहरजिसमानी नहीं पहुंचाता। प्र०—ऐडवकेट जनरल। डाक्टरग्रेवर्ज साहबअपनीऔषधि केगुणोंकी किताबों में क्या लिखतेहैंकि हीरेकाचूर्ण जहर मोहलिकहै अभी यह सवालपूर्ण नहींहुआथा किसरजबबेलनटायनसाहब बोलउठे कि डाक्टरग्रेवर्जसाहब की रायनहीं मानी जा सक्ती ऐडवकेट जनरलनेकहा कि मैंडाक्टर ग्रे साहब से केवल इतना पूछता था कि उनकीराय डाक्टर ग्रेवर्ज साहब कीराय के अनुकूल है या नहीं, डाक्टरग्रेसाहबने कहा कि मेरीरायउनकेअनुकूल है

प्रेजीडण्ट साहब ने डाक्टरग्रे साहबसे सवालकिया कि डाक्टरों ने आजमाइशकी है कि हीरेकाचूर्ण मारडालता है यानहीं? उ०-हांआजमाइश की है। प्र०—इस आजमाइश काक्या नतीजाहुआ? उ०—यहनतीजा हुआकि वह मोहलक नहीं है पसजबसवाल और जवाब डाक्टरग्रेसाहबके पूर्णहुये—सरजन साहब ने प्रेजीडण्टसे कहा हुजूरजानतेहैं कि और कोईकार रवाई शुरूकीजाय—परंतु थोड़े समयके रहजाने से सरजन साहबने कहाकि इसवक्तमेरागला दुखताहै प्रेजीडण्टसाहब नेकहा बेहतर है फिर अदालत बरखास्त हुई॥

पांचवें दिनका इजलास।

आजके दिनसब मेम्बरान् कमीशन् मौजूद थे परन्तु सरल्यूइसपीलीसाहब ग़ैरहाजिर और बरवक्त शुरूमुकद्दमेके गायकवारभी मौजूद न थे जिसवक्तरावजी का इजहारशुरू हुआ गायकवार अदालत में आये॥

डाक्टर ग्रेसाहब के इजहार के उपरान्त सरजण्ट बेलनटायन साहबने उनके इजहारमें सवालातकरने शुरूकिये।प्र० आपकेइजहारसे यहबातमालूम नहींहैकि आपनेसङ्खियाउस चूरहसे अलगकीया नहीं जो आपको भेजागयाथा? उ०—हां अलग किया।प्र०—हमनेवह छल्लाधातका जोनलकीमेंपड़गया है देखाक्या उस आजमाइशसे और कोई रीतिइमतिहान की नहींजिससे बखूबीसाबित होकिसंखियाहै यानहीं? उ०—और कोई रीतिनहीं है मैंने इस इमतिहान के उपरान्त खुर्दबीन से भीदेखाथा। प्र०—इससे बढ़करकोई इमतिहान नहीं होसक्ता है? उ०—हांइससे बढ़करऔरकोई इमतिहाननहींहै। प्र०——क्या इसी आजमाइशसे संखिया अलग होजाती है? उ०—हां। प्र०—कईजौहरतांबे के होतेहैंक्यावहभी विषहोते हैं? उ०—हां। प्र०—क्यातांबेका जौहर भी जहर होताहै? उ०—हांजहर होता है। प्र०—अगर जौहर तांबे का किसी पतलीवस्तु से मिलाकर किसी को पिलायाजाय तो उसकेमुंह

में बखूबी तांबेका मज़ा आजायगा? उ०—हां। प्र०—मैंनेसुना है कि इसतांबेके ज़ोहर का मज़ा ऐसा तेज़होता है कि अगर कोई शख्सउसको गलती से खाजाय तो शीघ्र मालूम होजाय? उ०—ज़बान को लगतेही उसका मज़ा मालूम हो जावेगा। प्र०-यहमज़ा कुछदेरतकरहेगा? उ०—हांकुछ देरतकरहेगा। प्र०—क्याइसकी पहिचान यह भीहै जबउसकोकोई शख्सखा जाय तो उसके कण्ठ में कांटेसे पड़जाते हैं या उसकीखासि-यत क्याहै? उ०— उसकी खासियत ज़हरकीसी है और उस केहल्कमें खुश्की आजाती है। प्र०—औरक्याउसके पेट मेंपीड़ा भीहोती है? उ०—हांदर्द भी होजाता है। प्र०—क्या मुंहमें कफभी आनेलगता है? उ०—इसबातकोमैं नहीं जानता। प्र० क्या कुछ थोड़ा कफ आता है? उ०—हां जब वह अपनी तासीर करता है आताहोगा। प्र०—आधघण्टेमें याएकघण्टे में? उ०—इससे भी कमदेर में तांबेकीतासीर होतीहै। प्र० शायदइसका क़ायदा है किअगरखाली पेटमेंजाय तो जल्द असर करे? उ०— हां यह सही है। प्र०—जब वह अपनी तासीरकरता है तो बराबर थूक आताहै? उ०—हांजब जी मतलायेगा तो जरूर थूक आयेगा। प्र०—अगरथोड़ीसंखिया खाईजाय तो शायदथूक न आये और बराबररोज़ खाईजाय तोथूकआना शुरूहोजाय? उ०—हां यहीबात है। प्र०—तो यहबातकुछअवश्य नहींहै जिसको संखिया दीजाय उसकोथूक आवै? उ०—नहीं। प्र०—आपके बिचारसे ढाईचावल संखिया एकआदमी के मारडालने के लिये काफीहै? उ०—हां। प्र० करनैलफियर साहबका बयानहै कि उनका जीमतलानेलगा औरऐसीदशा होगईजिसतरहकि किसीको संखियादी जाती है मगर इस्ट्रोमकपम्प की उनकेवास्ते कुछ ज़रूरत नहीं हुई मालूमहोता है कि उन्होंनेबहुत कम संखिया खाई होगी? उ०—हां बहुतकम संखियाखाई होगी। प्र०—डाक्टर से सा-हब क्या आपके बिचारसे ऐसीथोड़ी संखियाके खानेसेजीमत-

लाने और कफआनेलगा होगा? उ०—हां इतनी जोमतलाने और कफके आनेवास्ते काफीहै। प्र०—आपकहतेहैं कि अगर कोईशख़्स तांबेका जौहरखावे तो उसकाभी यही हालहोता है? उ०—हां तुरन्तही जीमतलानेलगताहै। प्र०—डाक्टर ग्रे साहब आपको बखूबीअजज़ाके अलग करनेमें अभ्यास है यह बातउचित थी या अनुचित कि डाक्टरसीवर्ड साहबने गिलास की तलछटमें बगैर अज़मायशके पानीमिलाया? उ०—हां उचित थी लेकिन (अभीप्रश्नपूर्णनहींहुआ था कि फिरसवालकिया गया) प्र०—मेरे इसबातके कहनेसे यह मतलब नहींहै कि डाक्टरसीवर्ड साहबने जानबूझकर खराबकामकिया परन्तु सम्भव हैकि पानीमेंभी कोईजुज़वज़हरीलाहो? ०—उ० हां मुमकिन है प्र०—क्यामेरा खयालसहीहै कि दसबारह दिनके उपरान्त दूसरी पुड़िया आपके पास भेजीगई जिसके निस्बत बयान है कि ज़मीनसखुरचकर मट्टीभेजीगई? उ०—हां छःदिनके उपरान्त॥

सरकार के वकील ने डाक्टरग्रे साहब के फिर

इजहार लिये।

प्र०—तुमनेसंखियेकोउसचूरेसे जोतुम्हारेपासभेजागयाथा बखूबी अलगकिया? उ०—हांबखूबी अलगकिया साहबप्रेज़ीडण्टने कहाकि मिस्टरमैलवलसाहबकहतेहैं कि मुतरज्जिमने तर्जुमागलतकिया उसनेतर्जुमाकियाकि मुमकिनहै संखिया का अलगहोनाचूरेसे मुतरज्जिमने अपनीगलती मानली प्र०-आपनेपहलीया दूसरी पुड़िया में तांबेका जौहर पायाथा? उ० नहीं। प्र०-आपकोकरनैल फियरसाहबकी चिट्ठीसेमालूम हुआ होगाकिइसमें तांबेकाहोनाभी सम्भवितथा आपने तांबेकेहोने कीभी आज़माइशकीथी? उ०-हांमैनेतांबेके होनेकी आज़मायश कीथी। प्र०-क्यासंखिया ऐसा विषहैकि वहनहींपचता? उ० नहीं। प्र०—पसपाखाने के रास्तेसे कुछनिकल जाताहै और कुछ रहजाताहै उ०—हां। प्र०—आपसेपूछागयाथाकि मुखमेंथता

केखाद होनेका क्याकारण था क्याऐसामजा संखियाकेखाने सेभीहोजाता है ? उ०—इसविषयमें मुखतलिफ रायहै। प्र०—इसबारेमें आपकाक्यामत है ? उ०—तोआपयह पूछतेहैं कि संखियामेंमजा है यानहीं साहब प्रेजीडण्टबोले कि आपको अपनीनिश्चयसे क्यामालूमहुआ ? उ०—मैनेउसको चक्खाओर दूसरीतरहसे मैने उसकीपरीक्षाली परमुझको उसकाकोई मजा न मालूम हुवा ऐडवकेट जनरल ने कहा शायद आप ने संखिया थोड़ी चक्खीहोगी सरजन्हबेलन टायन साहब ने कहा कि इतनीही करनैलफियर साहिबने चक्खी होगी उ० नहींमैनेकाफी संखियाचक्खीथी ओरमैनेदेखाहै किजिनलोगों नेसंखियाखाई उनकावर्णनहै किमुहमेंधातकासा स्वादआजा ताहै साहबप्रेजीडेण्ट ने कहा कि डाक्टर साहबकेवल उतनाहीकहसक्ते हैं जो पहिले केवडे २ डाक्टरोंकी रायहोचुकीहैं ? उ०—दशबीसमनुष्यों से मेरासाबिकाहुआ जिन्होंनें संखियाखाई उन्होंने वर्णन किया कि मुखमें धातकासा स्वाद आजाताहै। प्र०—तीसरेपाकिटमें जोआपकेनिकट संखिया भेजीगईवह वैसीहीसंखिया थी जैसेकि प्रथमओरदूसरेपाकिटमेंथी ? उ०—हांऐसीहीथी। प्र०—क्यासंखियासब एकही प्रकारकी होती है ? उ०—नहीं तरह २ कीहोती है। प्र० क्याआपने बुरादेसेइतना संखियाअलग-करलियाथा किआप कहसकोंकितीसरे पाकटमेंसंखिया वैसीही थी जैसेकिबुरादे में थी ? उ०—हांमैनेभले प्रकार खुर्दबीनसेदेखा ओरमालूम हुवा किवही संखियाहै। प्र०—पसआपकोमालूम हुवाकियह वहीसंखिया थी ? उ०—हांवहीसंखिया। प्र०—आपनेअच्छी तरहदेखाकिवही संखियाथी ? उ०—हांमैनेखुर्दबीन से देखा कि वहीसंखियाथी। प्र०—जिसको आपधातका मजा बयान करतेहैंक्या उससे तुम्हारा प्रयोजन तांबेके स्वादसे है ? उ० हां। सरदिनकररावने कहासंखियेके सिवा ओरभी इसप्रकार की वस्तुहैंजिनकी खासियतसंखियाकी हो ओरमाखहर हों ?

उ०-हां कईवस्तु हैं। प्रश्न। श्रीमान् महाराजा जैपुरका यह बात पूछते हैं कि संखिया पानी मे घुलसक्ती है? उ०-हां घुल सक्ती है तिसपीछे ऐडवकेट जनरल ने प्रेजीडण्ट साहब से कहा जो गवाहोंका कटहरा कुछपीछे को हटा दियाजाय तो उचित है क्योंकि यूरोपियन गवाहों के वास्ते कटहरा आगेको बढ़ा दियागया था अब हिन्दुस्तानी गवाह आवेंगे-सो कटहरा पीछेको हटा दिया गया और एकगवाह हिन्दुस्तानी तलबहो कर उसमें खड़ा किया गया था-साहब प्रेजीडेण्टने पूछाकि यह गवाह कौन शख्सहै ऐडूवकेट जनरलने उत्तर दिया कि इसका नाम अब्दुल्ला है॥

मुहम्मद अब्दुल्ला गवाह का इज़हार॥

मुहम्मद अब्दुल्ला के इजहार मिस्टर अनवरारटी साहब ने लिये उसने वर्णन किया कि जब करनैल फियर साहब बड़ौदे में रेजीडेण्टीपदपर नियतहोकर आये तो उस समयसे मैं करनैलसाहब का नौकर हूं——करनैलफियर साहब पालन पुरसे यहां आये-मैं उनके पीछे बड़ौदे में आया पूर्व्वमें जब कि मेरी उमरकमथी और लड़का था तो करनैलफियर साहब अपनी मेम साहिबा समेत इङ्गलिस्तान को जायाकरते थे उस समय मेंभी उनका मैंनौकरथा-पन्द्रहवर्षसे मैंउनकी नौकरीकरता हूं-कभी मौकूफहोजाताथा और कभी फिर रखलिया जाता था गतनवम्बरमें मैं उनका नौकर था चोबदारीभी करचुका हूं और रमजान महीने में दूसरे दरजेका मैं नौकर था और दूसरेदरजे की मुलाजिमी का कार्य्य शर्ब्बत तय्यार करने का था जब मैंबीमार अथवा गैरहाजिर हो जाता तो खानसामा शर्ब्बत बनायाकरता करनैलफियर साहबप्रति दिनयहशर्ब्बत पिया करते ९ नवम्बर को उस कमरे में जहां कि शर्बत बना करताथा मैंने शरबततैय्यार किया और उसको खानेके कमरे में लेगया वहांसे मैंने एक तश्तरी और एक बरतन और एक छुरीलेकर बरतन में फलीकेलेकी और दोतीन नारंगियां रख

करउनवस्तुओं को साहबके कमरेमें लेगया और रीतिके अनु-
सार मुंहधोने की मेजपर उसके रक्खा उस समय साढ़े छ:बजे
पर दोतीन मिनटबीतेथे इसके उपरान्त उसकमरेमें दोमनुष्य
आये एक का नाम गोविन्द और दूसरे का नाम यलापा था
एक मनुष्य कमरेमें झाडू देताथा और दूसरा प्रत्येक वस्तु को
झाड़ता पोंछता था फिर मैंने साहब के वास्ते कपड़े निकाले
करलनैफियरसाहबके आनेसे पहिलेमैं फिरकमरेमें नहींगया
परन्तु जिस समय फियरसाहब आये उससमय मैं वहां गया
उसदिनमैंने चकोतरेकाशर्बतइसप्रकारसे बनायाथा—पहिले
मैंने चकोतरेको छुरी से छीलकरकाटा फिर उसकोमैंने सूप
प्लेटमें रक्खाऔर चांदीके चमचेसे उसको दबा २ कर अरक
निकालातिसपीछे एकबारीककपड़ेमेंमैंनेउसको छानलिया॥

सरजन् वेलन टायन साहबके प्रश्न॥

प्र०—उस कमरेके सम्मुख बरामदाभीथा वा नहीं ? उ०
हां बरामदाहै और उसबरामदेमें भीतरऔर बाहरसे रस्ता
है। प्र०—यहबरामदा रोजसाफ कियाजाताहै ? उ०—बाहर
मरतबा—औरजो बरामदा भीतर को ओरहै वह रोज साफ
कियाजाताहै—औरमैं अच्छीतरह नहींकहसक्ता कि बाहर
कावरामदा प्रति दिन झाड़ा जाताहै यानहीं। प्र०—मैंभले
प्रकारनहीं समझता कितुम भीतरकाबरादा किसको कहते
हो ? उ०—साहबकी कचहरीके कमरेमें जानेके दोमार्ग हैं
एकबाहरके बरामदेसे औरदूसरे अन्दरके बरामदेमेंसे होकर
है। प्र०—एक बरामदाहै यादो बरामदे हैं ? उ०—बरामदा
एकहै परथोड़ा बरादा खुलाहुआहै। प्र०—यहबरामदारोज
साफहोताहै ? उ०—हांभीतरसे प्रतिदिन साफहोताहै। प्र०
उस रोजयह बरामदा साफ किया गयाथा या नहीं ? उ०
मैंयहबात भलेप्रकार नहींकह सक्ता क्योंकि यहमेरा काम
नहीहै मजदूरका कामहै। प्र०—साहब ऐडवकेट जनरल ने
प्रश्नकियाकितुमने ९नवम्बरको देखाथा किकोई मनुष्यबरामदे

कोसाफ करताथा ? उ०—दोमनुष्य उसमें सोतेथे ग्रैारवही साफ कियाकरते थे। प्र०—मेरे प्रश्नका यहउत्तरनही हैतुमने ९नवम्बरको साफकरते हुयेबरामदेको देखाथा ?उ०—नहीं॥

इज़हार गोविन्द बालू॥

गोविन्दबालु बुलायागया ग्रैार मिस्टर ग्रनबरारटी साहब ने उसके इज़हार लिये उसने कहा कि मैं हम्माल हूं ग्रैार रेज़ीडन्सी कानौकर हूं जबग्रैायुत करनैल बाकर साहब दो वर्ष की छुट्टी लेकर इंगलिस्तान को गये थे मैंउस समय में नौकर था इसको पांच छः वर्षव्यतीत हुये मेराकाम है कि साहबरेज़ीडन्ट केनिजकी कचहरीका कमरा साफ किया करूं मुझको ९ नवम्बर सोमवार ग्रच्छीतरह यादहै कि उसदिन भोरको मैंने कमरा साफकिया था७ बजेसे पहिले जब साहब हवा खानेको गयेथे तो मैंने कमरा साफ किया था ग्रैार मैं उसदिन कमरे में ग्राध घंटे या पैान घंटे तक रहा ग्रभी मैं कमरेके भीतर ही थाकि ग्रब्दुल्ला भी कमरेमें ग्राया—लछमण सिपाही दवातलियेहुये बाहरखड़ाथा सबसे प्रथम यलपा उस कमरे में गया ग्रैार वह कमरे को साफ करके चला ग्राया यलापा दूसरा मज़दूर है—ग्रब्दुल्ला भीतर था ग्रैार साहबके कपड़े निकालता था कपड़ों के निकाल ने के पीछे बूट साफ किये ग्रैार बाहर निकल ग्राया रावजी हवालदार भी उस कमरेमें गया परन्तु ग्रब्दुल्लाके निकल ग्रानेकेपीछे वहगया था रद्दीकी टोकड़ी साहबकी मेज़के पासरहा करतीथी रावजीने कहा कि इस रद्दीकी टोकड़ी को दूसरी टोकड़ी में करदेना चाहियेयह रद्दीकागज़को इकट्ठी की जातीथी इसलिये उस को फेंका नहीं करते थे—दो टोकडी रद्दीकी रहती थीं एक टोकड़ी भीतर रहतीथी ग्रैार दूसरी बाहर रावजीने भीतरकी टोकड़ीके कागज़ बाहरकी टोकड़ीमें डालदियेसाहब प्रेसीडेन्ट ने कहा कि इस बात के कहने से तुम्हारा क्या मतलब है गवाहने कहाकिजो टोकड़ी भीतरके कमरेमें रहतीथी उसके

कागज बाहरके कमरेकी टोकड़ी में डाल दिये गये अर्थात् रावजी भीतरकी टोकड़ीसे वह कागजलाया और बाहर की टोकड़ी में वह कागज रखदिये भीतर जो मेज है उसको मैं साफ किया करता हूं सुखरोने की मेजको भी मैं भले प्रकार जानताहूं प्रतिदिन नवीन जललाकर उसपर रक्खा करता हूं ९ नवम्बर को उसपर मैंने नवीन जल बाहर के घड़े से लाकर रक्खा और उस घड़े में पानी भीश्तीभरा करता है-यह जल केवल साहब लोगों के बर्तावकेलिये है मैंने अब्दुल्लाको शर्बतलाते हुये और मेजपर रखतेहुये नहीं देखा मैं सातबजे इसकमरेमें गया था-जब साहब हवाखाकर लौट आये मैंने उनको नहीं देखा सरजन्टबेलनटायनसाहबनेगवाहसे कोईप्रश्न नहींकिया॥

ऐडवकेटजनरल ने कहाकि मैं यलापा नाम दूसरे मजदूर को बुलाता हूं-साहब प्रेजीडण्ट ने कहा कि आपने घड़े के विषयमें कोईप्रश्न नहीं किया तथाच गवाह फिर बुलायागया और ऐडवकेटजनरल ने उससे प्रश्नकिया॥

गवाहने वर्णन किया कि खानेके कमरेके बाहर एक दीवार है जहांकिघड़े रक्खेजाते हैं-उसके सामने दरबारका कमरा है वहां मनुष्यों का आवागमन रहता है उस स्थानपर घड़े रहते हैं-साहब ऐडवकेट जनरलने कहा कि पहिलेसे अबकुछ रेजी-डन्सीका प्रबन्ध पलटगया है साहब प्रेजीडण्टने सरजन्ट बेलन-टायनसाहबसे कहाकि आप इसगवाहसे कुछसवाल करना नहींचाहते उत्तरदिया नहीं॥

इज़हार यलापा गवाह॥

यलापाकेइजहारऐडवकेट जनरलने लिये उसने वर्णनकिया कि मेरा नामयलापा नरसु है मैंमजदूर रेजीडन्सीका नौकर हूं ९नवम्बरको साहबका कमरा साफ किया था॥

सरजन्ट बेलनटायनसाहब ने इसगवाह से कुछ सवालात नहीं किये॥

इज़हार लक्षमण ।

लक्ष्मण दरयावसिंहके इज़हार मिस्टर अनबरारटीसाहबने लिये उसने बयान किया कि ८ नवम्बरको करनैलफियरसाहबके निजके कमरेकी मेज मैंने साफकीथी मेजको साफकरके डेवढ़ी पर गया जहांकि सिपाही बैठा करते हैं वहांजा बैठा मैं नहीं जानता कि मेरे जानेके पीछे वहां क्या हुवा साहबने मुझको चिट्ठी दी मैं डाकखानेको चलागया इसचिट्ठीको सवा सात या साढ़े सातबजे लेगया था बरामदे से जाती समय कोई मनुष्य मुझको नहीं मिला परन्तु जबमैं डाकघरसे लौटआताथा तो मैंने एक मनुष्य को देखा अर्थात् सालिमको और यह वही सालिम था जो महाराजके साथ आया करता था वह मुझको नाले के निकट मिला था और रजीडन्सी को आताथा जिससमय मैं रजीडन्सीमें पहुंचा तो वह वर्त्तमानथा और जहां विलायती दृक्ष लगे हुये थे वहां खड़ाथा उन दृक्षोंसे आठनौपर्ग की दूरीपर रेजीडन्सी है डाकखानेके आवागमनमें पौनघंटा लगाहोगा सालिम उनही दृक्षोंके पास खड़ा रहा सरजन्द बेलन टायन साहब नेकहा कि मुझको इस गवाहसे कोई प्रश्नके करनेकी इच्छा नहीं ॥

इज़हार जम्मू मियां गवाह ॥

जम्मूमियांके इज़हार ऐडवकेटजनरल ने लिये उसनेवर्णन किया कि मैं कम्पूका कोतवाल हूं मुझको ८ नवम्बर भलीभांति याद है कि उसदिन मुझको नाटाजुम्माकी जबानी कोई खबर मालूमहुईथी सो डाक्टरसीवर्ड साहबसे मैने उसकी इत्तिला की और उसी दिन दोबजे मुझको मालूम हुवा कि करनैल-फियर साहबके विषदेनेका उद्योगहुवाथा और यहबात डाक्टर सीवर्ड साहब ने मुझसेकही थी मैने इसबातका जिक्र दूसरे किसीशख्स से नहीं कियापरन्तु इसके पीछेनाटाजुम्मासे तीन और चार बजेकेबीच में निस्संदेह वर्णन किया था ॥

ऐडवकेटजनरल नेकहा तुमने नाटाजुम्मासे कहाथा कि

करनैलफियरसाहबके बिषदियेजानेका उद्योग हुवाहै यहतुम ने उसकेइत्तिलाके पहिलेकहाथा या उसकेवर्णनके पश्चात् ? उ०—जिससमय मैनेडाक्टरसीवर्ड साहबसे इत्तिलापाई उसी समयमैनेनाटा जुम्मासेकहाथा साहब प्रेजीडण्टने कहा कि मेरीसमझमेंनहीं आताकियह गवाहक्याकहताहै उससेफिर पूछाजायसो पूछागयाते। उसनेकहाकि प्रथममुझसे डाक्टर सीवर्डसाहबने कहाथा इसके उपरान्त मैने नाटाजुम्मा से कहा श्रैारउससे मैंनेइसप्रयोजनसे कहायाकिकुछ ब्योरेवार वृत्तान्तउससे मालूम हो। प्र०—जबतुमनेनाटा जुम्मासेकहा या तोयहभोतुमने उससेकहाथा कि यह बातडाक्टर साहब ने मुझसे कही ? उ०—हां॥

सवालात जो जम्मू मियाँ से सरजन्
बेलन टाइन साहब ने किये॥

प्र०—जब तुमने नाटाजुम्मासे वहकहा जो तुमसे डाक्टर सीवर्ड साहबने कहा था तो तुमसे नाटाजुम्माने कुछ कहा था ? उ०—हां। प्र०—इसकेपीछे तुमनेडाक्टर सीवर्ड साहब को देखा ? उ०—हांदूसरेरोज प्रातःकालको। प्र०—उनसे तुमनेवहीकहा जोनाटाजुम्माने तुमसेकहा था ? उ०—हां। प्र०—डाक्टरसीवर्ड साहबने तुमसे तहक्क़ीक़ात करनेको कहा था ? उ०—हां। प्र०—तुमसेडाक्टर सीवर्डसाहबने क्या कहा था ठीक२वर्णन करो ? उ०—मुझसे उन्होंने कहाथा किएक मनुष्यनेकरनैल फियरसाहब को बिषदिया परन्तुमालूमनहीं कि किसनेदिया सोतुम उसको निश्चयकरो। प्र०—क्या तुमसे केवल इतनाही डाक्टर साहबने कहाथा ? उ०—हां इतनाही कहा था। प्र०—तुमको भलीभांति मालूम है कि इतनाही कहा था ? उ०—हां। प्र०—उन्होंने किसी मनुष्यका नाम नहीं लिया ? उ०—उन्होंने किसीका नाम नहीं लिया। प्र०—यह तहक्क़ीक़ातहमको क्यों सुपुर्द कीगई ? उ०—यह तहक्क़ीक़ात मुझको इसवास्ते सौंपीगई किमैं यहांका कोतवाल हूं॥

इज़हार नाटाजुग्गा गवाह॥

नाटाजुग्गाके इज़हार मिस्टर अनवरारटी साहबने लिखे उसनेकहा कि मैं बाजारका मुक़द्दम हूं और सफाई आदिकी देखभालका कार्य्य मेरे संबंधित है ९ नवम्बर मुझको भलीभांति स्मर्ण है मैं सालिम को जो गायकवार का सवार है जानता हूं मैंने ९ नवम्बर को भोरको आठ बजे उसको देखाथा—मैं एक मुकाम कमातीपुरा है उसको साफ करातायथा सालिम बाजारकी तरफ़ घोड़ेपर सवार हुवा घोड़ेको खूब तेज लिये जाताथा वहनगरकी ओरसे आताथा और सदरबाजारको जाताथा वहमुझको पुलपर मिलाथा मैं जुग्गा और रावजी कोजो रजीडन्सीमें मुलाजिम हैं जानताहूं यहदोनों सदरबाजारमें रहते हैं पांचमिनटके उपरान्त सालिम घोड़ेपर सवार उसतरफ से वापिस आया और शहरकी ओर गयाउस समय उसकाघोड़ा बहुततेज नहींजाताथ। मैंनेजम्मूमियां कोतवाल सेसालिमका जिक्रकिया जबसदर बाजारसे वहलौट आयातो मुझसेकुछ बातकीथी॥

सरजनबेलनटायन साहब के प्रश्न नाटाजुग्गासे॥

प्र०—जबतुमसे और सालिमसे बातेंहुईंथीतो सालिमका घोड़ाधीरे २ जाताथा वा तेजजाता था? उ०—जाते समय अतितीव्र जाताथा और आनेके समय धीरे २। प्र०—सालिम कानाम विषके दियेजानेमें तुमसे किसीने कहाथा? उ०—नहीं तिसपीछे रावजी बुलायेगये उससमय सरजन्ट बेलन टायन साहबने कहा कि मैं चाहताहूं कि महाराजा साहिब भी बुलायेजांय सो प्रेजीडन्ट साहब की आज्ञानुकूल महाराजा साहब बुलाये गये॥

प्रेजीडण्टसाहबने पूछा कि महाराज को क्यों बुलाते हो सरजन्टसाहबने कहाकि महाराजा साहबने कहाथा कि जब रावजीके इज़हारहोंतो मैं बुलालिया जाऊं—ऐडवकेटजनरलने

कहा कि एक गवाह और है जो इजाजत होतो बुला लिया जाय—सो मुहम्मद अलीबख्श गवाह बुलाया गया॥

मुहम्मद अलीबख्शगवाह का इज़हार॥

मुहम्मद अलीबख्शका इज़हार मिस्टर अनबरारटीसाहब ने लिया उसने कहा कि मैं रेजीडन्सीका चपरासी हूं ९ नव-म्बर सोमवार मुझको अच्छीतरह याद है सालिम जो गायक-वारका सवार है उसको मैं जानताहूं—साढ़ेछः बजे या सात बजे मैंने सालिमको रेजीडन्सीमें देखाथा उससमयतक साहब रेजीडण्टहवाखोरी से लौटकर नहीं आये थे—मैं डेवढ़ी में एक सन्दूकपर बैठाहुआथा और सालिम घोड़ीकीबाग पकड़े हुये खड़ाथा यहसन्दूक डेवढ़ीके बाईंतरफ रक्खा हुआहै जिस समय डाक्टरसीवर्डसाहब के निकट मैं चिट्ठीलेगया उससमय सालिमकोमैंनेवहां नहींदेखा मुझसे और सालिमसे कुछबातें हुईं थी उसने कहाथा कि तुम बाजारको जातेहो एकरुपया लेतेजाओ मुझको थोड़े बिस्कुटलादो जबमैं रेजीडन्सीको लौट आयातो मैंने सालिमको वहां नहीं देखा उसने मुझसे नवह रुपयामांगा न बिस्कुटमांगे मुझे याद है कि उसदिनमैंने मिस्ट-रबोवीसाहब को देखा था—दो तीनदिन के पीछे साहब रजी-डण्टने मुझे आज्ञादी कि मैं सालिम वा और किसी मनुष्यसे न बोलुं उससमय मैं रेजीडन्सीको लौटआया मुझको डाक्टर सीवर्डसाहब मिले थे—मैंने सलामकियां तो डाक्टर साहब ने मुझसे पूछाकि तुम क्या लायेहो मिस्टर अनबरारटीसाहबने कहा कि मैं तुमसे यहबात नहीं पूछताकि उन्होंने तुमसे क्या पूछाथा और तुमसे डाक्टरसाहबबोले थे या नहीं? उ०-हां बोले थे और मैं उनसे बोला था।—मिस्टर ब्रेन्सनसाहब ने इस गवाहसे प्रश्न किये॥

प्र०-करनैलफियरसाहब ने तुम्हारे इजहारलियेथे? उ० नहीं मिस्टर बोवीसाहब ने मेरे इज़हार लिये थे। प्र०—वह इज़हार करनैलफियर साहब के रूबरू उन्होंने लिये थे? उ०

नहीं कारनैलफियर साहब अलग बैठे थे । प्र०—तुमने कारनैल फियरसाहबके रूबरू अपने किसीबयानपर दस्तखतकिये थे?उ० नहीं क्योंकि कारनैलफियरसाहबवहां मौजूद न थे । प्र०—तुम ने मिस्टरबोबी साहब से कहा था कि जब तुम बाजारसे प्रकट आये तो तुमने सालिम से कह दिया था कि बिस्कुट तय्यार नहीं हैं? उ०—हां मैंने दूरसे कहदिया था । प्र०—दोमिनट हुये तुमनेवर्णन किया था कि बाजारसे लौटते हुये मैंनेसालिम को नहीं देखा अब बयान करो कि तुमने सालिमको कबदेखा था ?उ०—जब मैं डाक्टर साहब के बंगले से वापिस आता था तोस्कूलकेनिकट उसको देखाथा । प्र०—जबतुमने स्कूलकेनिकट देखाथा तो कौनवजाथा ? उ०—साढ़ेसात या आठ बजे होंगे । प्र०—इसके उपरान्त तुमने सालिमको नहींदेखा ? उ०—हां जब मैं बंगले को आया था उस समय सालिम को देखा था ॥

ऐडवकेटजनरलने मुहम्मद अलीबख़्श का दूसरी बेर इज़हार लिया ।

प्र०—जब तुमने सालिम को स्कूलके निकट और डाक्टर साहबके बंगलेके पास देखा था तो वह क्या करता था ? उ० वहनगरकीओर जाताथा । प्र०—घोड़ेपर यापैदल ? उ०—घोड़े पर । प्र०—कितनी देरके पीछे तुमने उस को घोड़े पर देखा था ? नौबजे ॥

साहबप्रेजीडण्ट ने पूछा कि बंगले पर मुतरज्जिम ने कहा हां माईलार्ड—मिस्टरअनबरारटो साहबने कहाकि रेजीडन्सी पर—मुतरज्जिमने कहा हां हां रेजीडन्सी पर ॥

ऐडवकेटजनरलने गवाहकी तरफ देखकर प्रश्न किया कि तुम से और सालिमसे कुछबातेंहुईं थीं ? उ०—उससमय कुछ बातें नहीं हुईं । प्रश्नसरदिन कर रावका—क्या सालिम का यह नियमथा कि प्रतिदिन रेजीडन्सीको आया करताथा या उसके आने का कोई मुख्य दिन नियत था ? उ०—सोमवार और बृहस्पतिवार को आया करता था । प्र०—९ नवम्बर को क्या दिन था?उ०—सोमवार और देवालीका दूसरादिन था

उससमय मल्हारराव उसी अदालतमें आये और रावजीगवाह बुलाया गया॥

इज़हार रावजी गवाह॥

रावजी रहीमन के इज़हारऐडवकेट जनरलनेलिये उसने कहा किमैं रेजीडन्सी के चपड़ासियों का हवालदार था और डेढ़वर्षयासवा वर्ष से इसओहदेपर नियत हूं॥

करनैल फियरसाहबने मुझको नियत कियाथा मैं सदरबाजारमें रहाकरताथा कोई रेजीडन्सीका नौकरमेरे साथ वा मेरेपासनहींरहताथा मैं सालिमको जानताहूं जो महाराजा साहिबका एकसवारहै जबवहबंगलेको आया करता था उस समयसे उसकीमेरी मुलाक़ातहै बंगलेसेमेरा अर्थरेजीडन्सीहै कमीशन के बैठने के दो महीने पहिले.जो काश्तकारों की नालिश के सुनने के मध्ये हुई थी और जिसको सवावर्षबीता सालिमनेमुझसे कहाकिमहाराजा साहिबनेतुमको बुलायाहै वह तुमसेकुछ वार्त्ताकरने चाहते हैं तुममहाराजा साहब के निकटचलो मैनेउससेकहा कि अभीमेरा आनां नहोगा वह मुझसेतकरार करतारहा अन्तको मैं जानेपर राजी हुवा सो पहिलीबेर रविवारको मैं महाराजासाहबके निकटगया-संध्या समयसातबजे रेजीडन्सीसे मैंरवानाहुवा प्रथममैं यशवन्तराव के निकटगयायह मनुष्यमहाराजा साहबकाजासूस है वहरजी डन्सीको आया करता था॥

उसकाघर नईबाजारमें है उसके निकट सालिमभी बैठा हुवाथामुझको यशवन्तराव औरसालिम महाराजा साहबके सन्मुख ले गये॥

श्रीमहाराजा साहिबका मन्दिरनगरके भीतरहै उसमकान में नवारवासहोकर उसमार्गसेगया जोमकानकेपीछेसे है जब मुझकोयहदोनों मनुष्यसीडीपर लेगयेतोएककमरे परमुझको बैठायासालिम मेरे निकट बैठारहा और यशवन्तराव महाराजा साहिबसे इत्तिलाकरने के वास्तेगयासो महाराजासाहब

यशवन्तरावकेसाथ आये और मैंनेउनको पहिचाना और उठ कर सलाम किया महाराजा साहिबनेमुझसे कहा कितुम बंगले से खबरलासक्ते हो जोबंगलेसेखबर लाओगे तो मैंतुमकोखुश इनआम इकराम दूंगा और जबखबर लाओगे तोमैं तुमको खुशकिया करूंगा तुमसुभको सदाखबरेंदियाकरो मैं तुमको हमेशाखुश किया करूंगा महाराजा साहब ने यह भी मुझ से पूछाकितुम रेजीडन्सीके जमादारको भलीभांति जानतेहो मैंनेकहाहां महाराजासाहब ने मुझसेयहभी पूछाकि उससे और तुमसे कुछलेहहै मैंनेकहा हां महाराजा साहबने कहा कि आगे जमादार को भी अपने साथलाना मैंने कहा बहुत अच्छा इसके पीछे महाराजा साहब मुझ से इधर उधर की बातें करने लगे॥

ऐडवकेट जनरलनेकहा किइधरउधर के शब्दकाअर्थ इस से उत्तमऔर नहीं होसक्ता उसने कहा किनहीं इससे यह मतलबहै कि मुतफर्रिक्र बातेंहुवा कीं॥

तिसपीछे गवाहने वर्णनकिया कि जबमैं महाराजा साहब के निकटजाया करताथा तो यशवन्तराव और सालिमसवार मेरे हमराह जायाकरते थे मैं सदैव महाराजा साहिब को रेजीडन्सी में लोगोंके आनेकी इत्तिलादिया करताथा॥

फिर मेम्बरान कमीशन टिफन खानेके वास्ते उठे॥

जब टिफनके पीछे कमीशन के मेम्बरान् एकत्र हुये तो उस गवाहने वर्णन किया कि जब पूर्व्वमें कमीशन इकट्ठी हुईथी तो उस समय में मैं तीनबेर महाराजा साहब के निकट गया था सदाउसी मकानमें महाराजा साहबसे मेरीभेंट हुई और जिस प्रकार कि पहिली बेर हुई उसी तरह दूसरी मरतबा भी हुई मैं हमेशा महाराजा साहब को इत्तिला दिया करता था कि रेजीडन्सी में क्या काररवाई होती है क्योंकि मैं कमीशन की काररवाई को भलीभांति जानताहूं मैंसुना करताथा कि लोग कमीशन के रूबरू क्या शिकायत करते हैं वही महाराजासाहब

से आकर कहदेताथा उनदिनों महाराजा साहबसे मैंने अपने विवाह का हाल वर्णन किया महाराजा साहबने बतौर खर्च शादीके पांचसौ रुपये दिये जिस जमाने में कि कमीशन तहकीक़ात करती थी उस समय मुझको यह पांचसौ रुपये दिये थे-महाराजा साहब ने यशवन्तराव को पांचसौ रुपये के देने की आज्ञादी थी सो उसने रुपये लाकर मुझको दिये थे॥

साहब ऐडवकेटजनरल ने कहाकि माईलार्ड जो दरवाजे बन्दकरदिये जावेंतो उचितहै क्योंकि रौशनीकी चमकजियादाहै-मिस्टर मैलबलसाहबने कहा खिड़कियोंके बन्दकरने की कुछ आवश्यकता नहीं॥

ऐडवकेटजनरल ने कहाकि चिलमनका डालाजाना अवश्यहै-साहबप्रेजीडेंटने आज्ञादी कि मिष्टर जारडीनसाहब यह कारवाई करें——गवाहने बयानकिया कि यशवन्तराव मेरेनिकट रुपया नहीं लाया था किन्तु उसने.मुझसे आकर कहाथा कि महलमें आकर रुपया लेजाओ—सो एक मनुष्य पंखेवाला रेजीडन्सी का जिसका नाम जुग्गाथा उस को मैं अपनेहमराह लेगया जबमैं महल में पहुंचा तो मुझ को एक सिपाहीमिला फिर यशवन्तराव मिले—यशवन्तराव के कारकुनने मुझको पांच सौ रुपये दिये—उस समय कारकुन और जुग्गावर्त्तमानथे और कोई मनुष्यनथा—कारकुनकानाम दत्तपतथा मैंने चारसौ रुपये विवाहमें खर्चकिये और सौ रुपया अमानतमें रक्खे और जिसके पास अमानत रखवाईथी उससे यह बातकहीकि जिससमय चाहूंगा लेलूंगा--इस चारसौरुपये का कुछजेवरबनाया औरकुछका वस्त्र मोललिया जिस समय में कि कमीशन का इजलास होता था मेरा विवाह हुवा था कमीशन के पूर्णहोने से दोतीन दिनके उपरान्त मैंने सालिम को देखाथा उसने मुझसे कहाकि मैंने जमादारको भी राजी करलियाहै और मुझसे कहाकि जमादारने महाराजासाहब के पासआने का वादा किया है जब जमादार आवें तो तुम

भी उन्हींके साथ आना उसी दिन संध्याको मैंने जमादार से जिक्रकिया जमादारने कहाकि अच्छामैं इतवारकोरोजचलूंगा मुझको महीना याद नहीं परन्तु इतनास्मर्ण है कि कमीशनको पूर्णहुये आठदस दिनहुये थे—इन्तिज़ाम यह किया गया था कि प्रथम यशवन्तराव केघरमें जाऊं जमादार यशवन्तराव के मकानपर मुझको मिलगये थे—मुझको याद है कि जुम्मा या कारभाई मेरे साथ गयेथे—यहदोनों मनुष्य पंखेवाले हैं और अब बेकार हैं एक मनुष्य का मेरे हमराह होना मुझको खूब यादहै—जब हमलोग वहां पहुंचे तो नरसूजमादार और सालिम और यशवन्तराव हमको मिले हमलोग नज़र बाग की तरफहोकर गायकवारके मन्दिर मेंगये औरयशवन्तरावनगर में होकरगये—सालिमसवार मेरे साथगया था हमलोग जब सीढ़ीपर पहुंचे तो उस समय जमादार हमारे साथ था और पंखेवाला नीचे खड़ारहा कमरेमें हमसब बैठाये गये सालिम एक और ज़ीनेपरगया थोड़ी देरपीछे मुझको और नरसूजमादारको साथ लेगया जब हमवहां पहुंचे तो महाराजा साहब एक बेंचपर बैठेहुये थे उसकेनिकट एक गुसलखानाथा वहां यशवन्तराव और सालिम और महाराजासाहबथे महाराजा साहब और जमादार और मुझसे बातें हुई इनबातों से यह प्रयोजन था कि रेजीडन्सी में जो जो बातें हुआ करें उसकी इत्तिला महाराजा साहब को दीजायाकरे महाराजा साहब ने कहाकि जोकि तुमलोगबड़ौदे में रहतेहो हररोजकीखबर मुझको दियाकरो और महाराजा साहबने जमादारसे कहा कि पुराने जमादारहो तुमसब सरदारोंको जानतेहोइसलिये मुझको इत्तिला दियाकरो कि कौन २ सरदार आताहै और क्या २ बातें हुवाकरतीहैं जमादारने वाइदाकियाकि सालिम के द्वारा बराबर आपको खबरें पहुंचाया करूंगा यदि आपके विचारमेंउचित होतोआप उन खबरों को लिख लियाकीजिये महाराजासाहब ने कहा कि जो ज़रूरी खबर हुवा करें वह

लिखकर भेज दियाथा—जमादार ने महाराजासाहब से कहा कि मेरे भाईकी पिनशन मैाकूफ होगई है आप उसकेवास्ते कुछ बन्दोबस्त कीजिये महाराजा साहब ने कहा मैं उस का कुछ बन्दोबस्त नहीं करसक्ता तुम साहब रेजीडण्ट को अरजीदो जमादार का भाई महाराजासाहबके पास नैाकर था इस के अनन्तर कुछ वार्त्ता न ज़ई और महाराजासाहब नैासारीको चले गये ॥

नैासारीको जानेके पहिले मैं तीनचारबेर महाराजासाहब के पास गया——मैंऔर जमादार करनैलफियरसाहबकी अरदलीमें थे जबकि वह नैासारीको गयेथे महाराजासे और मुझ सेकईमरतबे नैासारीमें मुलाक़ातज़ई यशवन्तरावका बेटाएक रावटी में वहां रहता था और एक मरतबा मुझ को सालिम महाराजासाहबके पासलेगया और मुलाक़ातकराई उसरोज महाराजा साहबने मुझसे भावपूनाकर के मद्दे वार्त्ताकी और कहा जो तुम बराबर खबरें दोगे तो तुमको बज़तखुश करूंगा और कहाकि तुम दामोदरपंथ या दामोदर परपदको जानतेहो मैंने कहा कि हां जानता ज़ं——तीनबेर पेडरू के साथ महाराजा सहब के निकट गया था जबकि महाराजा साहब नैासारी से लैाट आये तो मैं बोस इक्कीस मरतबा महाराजा साहबके पासगया पेडरूसे महाराजासाहबने पूछाकि साहब किस समय भोजन करते हैं और खातेवक्त क्या २ बातें होती हैं पेडरू ने उत्तर दियाकि संध्यासमय भोजन करते हैंछोटी मेमसाहिबा आप की बड़ी प्रशंसा किया करती हैं जो आप साहबसेदोस्ती रखियेतो आपकेलिये अति उत्तमहोगा महाराजासाहबने कहाकिमैंतो साहबसेस्नेह रखताज़ंपरन्तुसाहब मुझसे अप्रसन्न रहते हैं ॥

गवाहनेयहभी वर्णनकिया अगरआपसाहब से अच्छीतरह रहेंगे तो साहब भी आपपर मेहरबानी रक्खेंगे ॥

छोटी मेमसाहिबा की गर्ज बोवोसाहब की मेमसाहिबा से है

महाराजासाहबने पूछा कि तुम अपने गोवादेश से कब लौट आये पेडूने कहाकि तीन चारदिनहुये उससमय महाराजा साहबने पेडूको एक पुड़ियादी और कहाकि साहबके खाने में डालदेना——जब पेडू अपने घरको जाता था तो उसने कुछरुपया सालिमसवार से लिया था॥

ऐडवकेटजनरलने मेम्बरान् कमीशनसे कहाइससमय चार बज गये क्या और भी किसी गवाह के इज़हार लिये जांयगे मेम्बरोंने कहा आज अदालतबरख़ास्तहो. कलमुकद्दमा फिर पेशहोगा सो अदालत बरख़ास्तहुई॥

आठवें दिनका इजलास

रावजी का इज़हार फिर शुरू हुआ॥

जब कि अदालतएकच हुई तो सरल्यूइसपीलो साहब आये और श्री महाराजामल्हरराव टिफन खाने के वक्ततक समाज में वर्त्तमान थे ऐडवकेटजनरल ने रावजी से नीचे लिखेहुये प्रश्न किये॥

प्र०—तुमने मुझसे कलके दिन कहाथा कि मैं महाराजा साहबके पास पेडू के साथगया था कहोकि सिवाय पेडू के और भी कोई मनुष्यथा? उ०—मेरेसाथ नरसुजमादारथा और क़ाबलइसके भीबादवापिसी नौसारीके कईमरतबा जमा-दार और पंखेवालेके साथ महाराजासाहबके पासगया था॥

सरजब्बेलनटायनसाहबनेबकहा कि इसगवाहसे कहाजाय कि ऊंचेशब्दसे बोले क्योंकि महाराजासाहब उसकी आवाज़ नहीं सुनसक्ते गवाहने कहाकि नौसारीसे आनेके पन्द्रहदिन उपरान्त तीन सौरुपये मुझको मिलेथे यहरुपये मुझको नरसु जमादारने दियेथे और कहाथाकि महाराजा साहब ने तुम कोदियेहैं फिरमैंऔर नरसु जमादारमहाराजासाहबकेपास गये महाराजासाहबने कहाकि साहब मुझपर बड़ा अन्याय करते हैं जो कोई बातमैं तुमसे कहूं तो तुम उसको मानोगे

हमलोगोंनेकहामानेंगे महाराजासाहबने पूछाकिसाहबकि
स समयभोजन करतेहैं और क्याखातेहैं हमने उत्तरदिया कि
वह हमारेसाम्हने खानानहींखाते इसलिये हमकोमालूमनहीं
किवहक्या भोजनकरतेहैं वह हमारेसाम्हने शर्बतज़रूर पीतेहैं
उससमयमहाराजासाहबने पुड़ियादीऔर कहाकिदहसाहब
केशरबतमें डालदेना मैंने महाराजासाहब से पूछाइसमें क्याहै
उन्होंनेकहाकि जहरहै मैंनेकहाकि अगरसाहबकोजहरपहुंचे
तो हम लोगोंकी बड़ीखुराबी होगी महाराजा साहबने कहा
एकहीबेर कुछनहोगा किन्तु बहुतदिनोंके पीछे असर होगा
महाराजा साहबने कहाकि अगर इस पुड़ियाने असर किया
तो मैं तुमको लाखरुपया और अपनेयहां नौकरी दूंगा और
तुम्हारे बालबच्चोंकी खुबरगीरी करूंगा ॥
प्र०—यहपुड़िया तुमको किसतारीखुको दीगईथी ? उ०—सु-
झको याद नहीं। प्र०—हरएक पुड़ियामें कितना २ विष था ?
उ—०गवाहने उंगलीके इशारेसे बताया कि इतनाथा ॥
प्रश्न मैलवलसाहब का—क्या चुटकी भर था—सरजन्टबेलन-
टायनसाहबने कहाकि इसकोथोड़ीसी मट्टी देदीजावे ताकि
वहबयान करे—सोथोड़ीसी मट्टीउसेदीगई और उसनेबतलाया
कि इतनीथी——सरजन्ट बेलनटायन साहब बोले मैंचाहता
हूंकि यहमट्टीअदालतमें रखलीजावे साहबप्रेसीडण्टने आज्ञा
दीकिमिष्टर जारडीन साहब सेक्रेटर इसमट्टीको अपनेपासरख
लेसोवहमट्टी उनकोदीगई और आज्ञाहुई कि इसेरक्षापूर्व्वक
रक्खो—और गवाहनेयहभी वर्णन कियाकि विषदियेजाने के
आठ दिन पहिले जबमैं महाराजा साहब के निकटगया तो
तुमको और नरसुको गालियांदीं और कहाकि अबतक तुम
लोगों ने कुछभी नहींकिया ॥
सुतरज्जिम ने कहा जो अच्छाहो तो गालियोंका तर्जुमा
कियाजाय—सरजन्ट बेलनटायन साहब ने कहा इसकी कुछ
आवश्यकता नहीं है सुतरज्जिमने कहा किवास्तव में यह

गालियां शिकायत मोहम्मद हैं—तज्रुमा न होना चाहिये तिस पीछे महाराज ने कहा मैं तुमको एक और वस्तु दूंगा सो उन्होंनेएक विषकीपुड़िया दी उसकीरंगत खाकीमाइल थी

प्र०—ऐसी सियाह जैसा मुलज़िम का कोट है ? उ० नहीं जैसेकि टोपीहै—टोपीकी रंगतभूरी थी—मैंने सोमवार कोसाढ़े छःबजे साहबके शर्बत में पुड़िया डाली यह पुड़िया वहयी जो महाराजा साहबने दुबारहदी थी जब मैं साहब के कमरे से बाहरआया तो सालिम सवार नेमुझसे पूछाकि तुमने वहकाम किया मैंने कहा कि हां—कर्नैलफियर साहब का चिट्ठी लिख कर डाक्टर साहब को बुलाना मुझे ख्याल है मैंने जमादारसे कहाकि डाक्टरसाहब बुलायेगये हैं अबहम लोगोंकी फजीहती होगी जिस समय डाक्टर साहब आयेहैं मैंऔर जमादार बरामदेमें खड़ेथे उसीदिन मेरीपेटी खोगई थीऔर मुझको आज्ञाहुई किमैं अपनेघरको जाऊंतबसे मुझको पेटीनहीं मिली कर्नैलफियरसाहब ने मेरेइज़हार लियेउस समय मिस्टरबोबेसाहब वर्त्तमानथे दूसरेदिन मैं हवालातमें सुपुर्दहुवा परन्तुसन्ध्या को ५ बजेवहांसे छूटगया जोरुपया मुझको मिला था उससे यह आभूषण बनवाया था सोवह जेवर पेशकियागया पांचसौ या साढ़ेपांचसौरुपयेकी लागत का होगा मैं सर्वदा महाराजा साहब को खबरें लिखकर भेजाकरता था—जुम्मा लिखा करताथा जुम्माकेहाथ कालिखा हुवाखत पहिचानता हूं मैं थोड़ा गुजराती पढ़सक्ता हूं सो एक काग़ज़ गवाहको दियागया उसने कहा कि जुम्मा का लिखाहुवा है मैं इसकोभी नहीं पढ़सक्ता ॥

मैं हमेशा जुम्मासे खबरें लिखाताथा और किसी से नहीं लिखाता था और जमादार महाराजा साहब के पास पहुं-चाया करते थे ॥

इसगवाहने वर्णन किया कि मैंने मिस्टर सूटर साहब के भी रूबरू अपनेइज़हार दियेथे मुझकोख्याल हैकि सोमवार

थी, और शायद २२—तारीख़ थी परन्तु महीना याद नहीं

साहब ऐडवकेट जनरलने कहा कि शायद २२—दिसम्बर होगी—गवाहने कहा कि मेरे इजहार मिस्टर सूटर साहबने लियेथे प्रथमबेर उन्होंनेआपनहीं लिखेदूसरीबेर आपही लिखे मैनेयह इजहार उससमय दियेजब कि मिस्टर सूटरसाहबने मुझको बुलायाथा—९ बजेतक वहमेरे इजहार लेतेरहे मैने उससमय तककिसी बातका इकबाल नहीं कियाथा फिरवह मुझेरजीडन्सीकी कोठीमेंलाये और रेजीडन्सीके बागमें बैठा या—पांचछः बजेतकमैं वहांबैठारहा फैजू और करीमभीवहां विद्यमान थे—हम लोगोंमें परस्पर तकरार होने लगी—फैजू और करीमने अपना और आयाका मुझसे जिक्रकिया और कहा हम लोगोंने तो इक़बाल किया तुमक्यों नहीं इक़बाल करतेहो यहबात सुनकरमैंने सूटरसाहब के हवलदार को बुलायामैं आपही जाकरबुलालाया उसकानाम नहींजानताहूं जोउसको देखूंतो पहिचानलूं—उसकानाम मीरअमानअली थावह अदालतमें बुलायागया और गवाहने उसको देखकर पहिचान लियाफिर गवाहनेकहा कि मैनेहवलदारसे कहा था कि मुझको बड़ेखान साहबअर्थात् अकबरअलीखान बहादुरकेपास लेचलो जबमैं उनकेपास गयातो मैने उनसे कहा कि मैं आपको बहुतसही २ विषके दियेजानेका हालबतादूंगा बशर्त्ते कि मेरीजानबख़्शीहो और उसका वाइदाआप साहब सेलें॥

साहबऐडवकेट जनरलनेकहा कि हमनहीं चाहते कि तुम अतिविस्तारसे वृत्तान्त कहो केवल इतनाही वर्णन करो कि तुम्हारी जानबख़्शी हुईथी—गवाहने बयानकिया कि हां इसी वाइदेपर मैनेसम्पूर्ण वृत्तान्त सूटरसाहबसे कहदियाथा जबसे मैने सूटरसाहबके रूबरू इजहार दिये उससमयसे मैनेनरसू जमादार को नहीं देखा—वरवक्त इजहार के उसदिन नरसू जमादार वर्त्तमानथा जमादारने कहा कि तुमनेहर एकबात

का इकबाल करदिया मैंनेकहा हां मैंने हरएकबातका इकरार करलिया और जोगले २ पानी होगा तो यही कहूंगा इसके उपरान्त पुलिसके कमरेमें लोगलेगये यहपेटी जोअदालतमें रक्खी ऊई है इसीको पहिना करताथा इसपेटीमें जोजेबहैउसी में विषकी पुड़िया रक्खाकरताथा ॥

ऐडवकेटजनरलने कहा—माईलार्ड इस गवाहके बयान से विदित होताहै कि दोपुड़ियां जिनका उसने इस्तैमालकियाहै विषहैवह आगेकीजेबमेंरखताथा और जिसपुड़ियाका उसने इस्तैमाल नहींकिया वहदूसरे जेबमें रक्खा करताथा गवाह ने बयान कियाकि मैं उससमय वर्त्तमान था जबकि रावसाहब और खान साहबने इसपेटाकी तलाशीलीथी मेरे साम्हने एक पुड़ियाभी इसपेटी में निकली थी—गवाह ने कहाकि मुझसे खानसाहबने पूछाथा कि तुमविषकी पुड़ियोंको कहां रक्खा करतेथे मैंने उत्तर दिया किपेटीकी जेबमें रक्खा करता था मुझसे पूछाकि तुम्हारीपेटी कहांहै मैंने कहा कि भोदरपट्टा वालेके पासहै खानसाहबने एक मनुष्य भेजकर भोदरपट्टेवाले को बुलाया मेरेरूबरू उसकेगलेसे यहपट्टाउतारा और उसी में इधरउधरदेखने लगे फिर बड़े खानसाहब को टटोलते २ एक जगह पर कोई कठोरसी वस्तु मालूम ऊई उन्होंने कहा कि यहां कोई वस्तुहै यह कहकर उन्होंने पट्टे को रखदिया और सूटरसाहबको जो दूसरे कमरेमेंथे बुलाया जबवह आये तो उनके सम्मुखपेटीकी सिलाईको खोला उसमें से एक सफैद पुड़िया निकली मुझको दिखायाकि तुम इसपुड़ियाको पहिचानतेहो मैंने कहा कि हां पहिचानता हूं इस पुड़िया में जहरहै ग़लती से मेरीपेटी में रहगई थी फिर सूटरसाहबने कुछ और बातें मुझसेपूछीं और मैं वहांसे चलाआया जिस रोज यहपुड़िया मुझको मिलीथी वहदिन मुझको भलेप्रकार यादहै यहपुड़िया मेरे इजहार सेदोरोज पीछे मिली थी ॥

सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहा किअबमेरी तरफसुत-

बअ्ह हो थोड़े से प्रश्न मैं भी तुमसे कहूंगा उससमय प्रेसी-डेण्ट साहबने कहाकि अबदोबजगयेहैं आपक्या सवालकरते हैं सरजन्टवेलन टायनसाहिबने कहाआपकी आज्ञाहोतो उत्तमहै किपांचछःमिनट के वास्तेसवालात मुलतवीकिये जांवे उससमय कमीशन के मेम्बर टिफन खानेके वास्तेउठे टिफन खानेके पीछेमिष्टर कारसिटजी से जो नवीन मुतरज्जिम नियत हुये थे सौगन्ध लीगई॥

सरजंट वेलनटाइन साहब के प्रश्न॥

प्र०—तुमकितने दिनों तक कारनैलफियर साहबके नौकर रहे? उ०—शायदडेढ़ वर्ष। प्र०—कारनैल फियर साहब तुम परबड़ी मेहरबानी करतेथे? उ०—हांवह मुझपर बड़ेमेहरबानथे। प्र०—तुमकोउनसे कोईशिकायत की बातनहीं हुई? उ०—नहीं। प्र०—फिरभी तुम उनके मारडालने पर राजीहोगये? उ०—मुझको महाराजासाहबने रुपयेदेकर राजी कियाथा। प्र०—तुमको राजीकरने में जियादह कहने सुनने की जरूरत नहुई? उ०—मुझकोलाख रुपयेदेनेको कहाथा जोकिमैं गरीब आदमी हूं राजी होगया। प्र०—चूंकि तुम गरीबआदमीथे औरतुमको एकलाख रुपयेके मिलनेकावाइदा हुवा तोतुमअपने हाकिमके मारडालने पर राजीहोगये जो सदातुमपर कृपारखता था। इसबातको सुनकर गवाहनेमुंह ही मुंह कुछ कहा॥

सरजन्टवेलन टायन साहब ने कहा कि वास्तवमें ऐसाही था लज्जामतकरो स्पष्टरीतिसे वर्णनकरो? उ०—हांमैं मारडालने पर राजी हुआ। प्र०—क्यावास्तवमें तुम मारडालना चाहतेथे? उ०—वास्तवमें मारडालनेकी मेरीइच्छानथीकिन्तु महाराजा साहब की थी। प्र०—क्या तुम्हारी इच्छा थी कि तुम अपने हाथसे साहबको मारो? उ०—मुझको महाराजा साहबने बहकायाथा। प्र०—चूंकि तुमको बहकायाथा तोतुम ने मारडालने काउद्योगकरलिया? उ०—हांमैंगरीबआदमी

था और मुझको तरगीब दीगई। प्र०—तुम से और करनैल फियरसाहब से नाराजगी तो नहीं हुई? उ०—नहीं। प्र० तुमकेवल द्रव्यकेलोभसे मारनाचाहते थे? उ०—हांमैं गरीब आदमी हूं और मुझको तरगीब दीगईथी। प्र०—चूंकि तुम गरीबआदमी थे केवलद्रव्य केहीलोभसे खूनीबनना चाहतेथे? उ०—हांमुझको तरगीबदी गईमैंराजी होगया। प्र०—अबतुम को लाखरुपये मिलगये? उ०—नहींमुझको कुछभी प्राप्त न हुआ। प्र०—तुमने महाराजासाहब से कुछरुपया मांगाथा? उ०—नहीं। प्र०—तुमको याद है कि तुम्हारे इजहार इरादा होनेके पीछे करनैलफियरसाहब के रूबरू लेगये थे? उ०—हां याद है। प्र०—इसके पीछे तुम अनुमान एक महीने के छूटे रहे? उ०—हां। प्र०—इस अवसर में तुमने महाराजा साहब से रुपये मिलने की दरखास्त की थी? उ०—नहीं। प्र०—इस अवसर में तुमने कभी महाराजा साहबको देखा वाकोई सन्देशा उनका तुम्हारे पासआयाथा? उ०—नमेरेपास कोईसन्देशा आया न कभी उनको मैंनेदेखा। प्र० तुमगरीब आदमीहो और गरीबहोने और बहकायेजानेसेतुम मारडालनेके वास्ते राजीहोगये तुमनेकिसवास्ते रुपयेकेमिलने की महाराजासाहब से दरखास्तनहींकी? उ०—मैंनहींगया और क्योंकर मैंजाता। प्र०—क्योंतुमतो बहुधा वहांगए होगे? उ०—मैंपहिले वहांगया था मौकूफ होनेके पीछे नहींगया। प्र०—जबकितुमने वहकर्म्मकिया जो महाराजासाहबने तुमसे कहाथा तोफिर क्योंनहींगए तुम को महाराजासाहबसे रुपये की दरखास्तकरनी चाहियेथी क्याकारणथा कितुमने करनैल-फियरसाबको नहींमारडाला या कोई और बातथी? उ०—मेरा उद्योग निष्फलहुवा। प्र०—मैंभी यहीसमझाथा परन्तुमुझको खयालहुवा कितुम अपनीआबरूकी वजहसे नहींगए मालूम हुवाकि तुमयहसमझेकि तुम करनैलफियरसाहबको न मारसके इसलिये महाराजा साहबके पास जानाचाहिये। उ०—न मैं

गया और न रुपया मंगवाया। प्र०—परतुम क्यों नहीं गये तुम गरीब आदमी थे और मुफलसी से खूनी बनना चाहते थे? उ० मैं खूनी बनने को नथा। प्र०—हां महाराजा साहब चाहते थे कि तुम खूनी बनो इस बात को हम सब लोग जानते हैं परन्तु तुम गरीब थे फिर तुम किस वास्ते रुपया मांगने नहीं गये? उ०—मैं क्यों कर जाता मैं नहीं गया। प्र०—तुम मे और नरसू से उस वक्त कुछ बार्त्ता हुई थी जब कि विष देने का उद्योग तुम्हारा पूर्ण नहुवा? उ० नरसू मे कुछ वार्त्ता नहुई थी मैं अपने घर से बाहर नहीं निकला और मैं कभी नहीं गया। प्र०—तुम भावपूनाकर को जानते हो? उ०—हां वह बंगले को आया करता था और मैं उनको जानता हूं। प्र०—वह बंगले को किस वास्ते आया करता था? उ०—वह साहब के पास आया करता था मैं नहीं जानता था कि क्यों आता था। प्र०—क्या खबरों के देने वास्ते साहब के पास आया करता था कि नगर में क्या होरहा है? उ०—मैं यह नहीं जानता। प्र० तुमने कभी कोई वस्तु उसको देते हुए सुना है (जवाब का तर्जुमा मुतरज्जिम ने इस तरह किया) उ०—नहीं सुना कभी २ सुना उसको मैंने इत्तिला की प्र०—करनैल फ़ियर साहब के नौकरों में कुछ बार्त्ता हुवा करती थी कि महाराजा साहब ने श्रीमान् वाईसराय के निकट खरीता भेजा है? उ०—खरीते का हाल मैं नहीं जानता। प्र०—तुमने कुछ भी इस विषय में सुना था? उ० मैं ने कुछ भी नहीं सुना और मुझको कुछ स्मर्ण नहीं है। प्र० भावपूनाकर से भी नहीं सुना उस तरफ़ मत देखो हमारी ओर देखो उ०—नहीं भावपूनाकर से भी मैंने नहीं सुना। प्र०—अब तुमसे छोटी बातों में कुछ प्रश्न करता हूं तुम सच कहना? प्र० तुम्हारे जो फोड़ा निकला था और जिसको तुमने दिखाया—यह फोड़ा शीशी की वजह से होगया था? उ०—हां शीशी की दवा से मेरे फोड़ा होगया था। प्र०—शीशी के रखने से खाल के पास फोड़ा होगया था? उ०—शीशी के मुखपर रुई लगी थी और रुई में से दवा निकलकर मेरे शरीर पर लगगई थी। प्र०—मालूम हुवा

की इसीशीशीमें की दवासेतुम्हारे फोड़ाहोगया था क्योंठीक है? उ०—हां। प्र०—पसतुमने इससंदेहसे कि करनैलफियर साहबको कष्टहोगा औषधि को फेंकदिया? उ०—हांइसी हेतुमैंमैने दवाफेंकदी। प्र०—परभाई तुमजानतेथे कियहदवा करनैलकी हानिकेलिये दीगईहै? उ०—हां। प्र०—फिर तुम ने क्यों उसकाइस्तैमाल नहींकिया तुमजानतेथे कियहशीशी की औषधिजहर पहुंचाने केवास्तेदीगई है तुमनेउसको क्यों-फेंकदिया? उ०—मैनेउसका इस्तैमाल नहीं किया और फेंक दिया। प्र०—किसवास्ते इस्तैमालनहीं किया? उ०—इसवास्ते इस्तैमालनहीं कियाकि उससे मुझको कष्टहुवा औरमुझको यहसंदेहहुवा किमैंशीघ्र होपकड़ा जाऊंगा। प्र०—परन्तु तुम जानतेथेकि मेराविषदेने का उद्योगहै पस ऐसीवस्तुका क्यों इस्तमालनहींकिया? उ०—मैने नहींकिया। प्र०—परमैंपूछता हूं कि तुमने किसवास्ते उसका इस्तैमाल नहीं किया? उ० मुझकोभयहुवा कि साहबको उससेजहर पहुंचेगा इसलिये इस्तैमालनहीं किया। प्र०—तुमने नरसूसे कहाथा कि मैने इस्तैमाल किया है? उ०—हां मैंने नरसूसे कहा था। प्र० तुम्हारा वह कहनाझूठथा? उ०—हांमैने असत्यकहा था। प्र०—मालुमहोता है कि कभी२तुम झूठकामजा भी उठाया करतेहो? उ०—मैंझूठ क्यों बोलूंमैने आपसेसच २ कहदिया प्र०—तुमने नरसू से क्योंझूठबोला इसझूठबोलनेकी क्याजरू-रतथी? उ०—एकसवार प्रतिदिन महाराजा साहबके पास से आयाकरता था कि कामहुवा यानहीं दवाडालीगई या नहीं। प्र०—तुमनेनरसूने क्योंझूठ बोलाथा? उ०—वह मेरे पीछेपड़ाहुवा था इसलिये सिवायझूठ के और कोई उपाय नदेखा। प्र०—वह तुम्हारे पीछेपड़ाहुवा था इसलिये तुमने उससे झूठबोला क्याजोकोई तुम्हारेपीछे पड़ताहै उससे झूठ बोलतेहो? उ०—हांअबमुझको झूठबोलने से क्यालाभहै। प्र० केवल तुमने इसी वास्ते झूठ बोला कि वह तुम्हारे पीछे पड़ा

छुवाया ? उ०—हांमैंने इसीवास्ते भूठबोला। प्र०—तुमजानते हो किमिस्टर सूटरसाहबभी तुम्हारेपीछेपड़े रहे शायदउनसे तुमने एकभूठ नहीं किन्तु सैकड़ोंभूठबोलेहोंगे ? उ०—वह मेरे पीछे कभी इतना नहीं पड़े। प्र०— पसजो कुछ तुम ने उनसे कहा सब सच था ? उ०—हां सब सचथा। प्र०—इस बातपर तुम्हारा भलेप्रकार निश्चय है ? उ०—हां इतमीनान है। प्र०—तुमको इसबात का बड़ा खयालथा कि मिस्टरसूटर साहबको धोखा नदो ? उ०—उनसे मैंने जो कुछ कहा सब सचकहा। प्र०—क्या तुमने करनैलफियरसाहबसे भी सचकहा था ? उ०—अगर मैं करनैलफियरसाहब से सच कहता तो वह कब मेरा या किसी का विश्वास करते। प्र०—तो यही कारणहै कि तुमने उससे सच नहीं कहा ? उ०—हां। प्र०—पस तुमनेइसवास्ते उनसे सचनहीं कहाकि वहतुम्हारा विश्वास नहीं करते ? उ०—हांइसी विचारसे मैंने सच नहीं कहा। प्र०—तुमने मिस्टरसूटरसाहब सेहरएकबात सचकही उ०—हां। प्र०—अबमैं तुमसेकुछ वहबातेंकिया चाहताहूं जो तुमने मिस्टरसूटर साहब से कही थी और यहबातें उन दो पुड़ियोंके मद्देहैं जोतुमको उससमयदी गई थी जबतुमसेलाख रुपयेके दिये जानेका वाइदाहुवा थातुमको यहपुड़िया किसनेदीथी ? उ०—नरसूजमादार लायाथा—उसने मुझको दी थी। प्र०—क्या उसने तुमसेकहाथाकिउनदोनों पुड़ियोंकेतीन हिस्से बराबरकरके तीनरोज तक देनो? उ०-उसनेकहाथा कि इनदो पुड़ियों के तीन हिस्से करना औरदो या तीन दिनतक इसका इस्तैमालकरना। प्र०—उसनेकहाथा कि बराबरकेहिस्सेकरना ? उ०—हां तीनहिस्से बराबर करनेको कहाथा तथाच मैंनेतीनपुड़िया बनाईं और अपने पासरखली। प्र०—यानी उन दोपुड़ियोंको मिलाकर तुमने बराबरके हिस्सेकिये थे ? उ०—हरएक पिसीहुई वस्तुमेंसे मैंने थोड़ा २ लिया क्योंकि मैं जानताथा कि सफैदचीज अधिकहानिकारकहै। प्र०—अब

मैं तुमसे वह कहताहूं जो तुमने करनैलफियरसाहबसे कहा था किन्तु मैं तुमको पढ़कर सुनाताहूं तुमने कहाथा कि दो तीनदिनके पीछे जमादारने मुझको दोपुड़ियां दीं और कहा कि बराबरके तीनहिस्सेबनायेजावें और दोयातीनदिनदीजावें ताकि तीनरोज़में वहखतम होजावेऔर तुमने यहभी कहाथा किसालिम और यशवन्तरावने महाराजासाहबके रूबरू बड़ी एहतियातसे समझायाथा और फिर तुमकहते हो कि इन पुड़ियोंका देना दो तीन रोज़तक मैंने मुलतवी रक्खा क्योंकि मुझको अवसर न मिला ? उ०-गवाहने कहाकि हां यहसब मेराबयानहै। प्र०-औरतुमकहतेहो किविषकीपुड़ियाजोमुझ को पहिलेजमादारने दीथी मैंनेउसके तीन भागकिये ? उ० हांमैंने तीनभागकिये थे। प्र०—उनपुड़ियों को तुमने अपनी पेटीकी जेबमेंरक्खा और कहतेहोकि एकपुड़िया जोपीछेनि-कालीथी वहभी उन्हींपुड़ियोंमेंसेथी जोमुझको जमादारनेदीं थी क्यामिस्टरसूटर साहबके रूबरूभीतुमनेयहीवर्णनकियाथा उ०—हां। प्र०—क्यायहबात ठीकहै? उ०—हां। प्र०—अबमैं तुमसे पिछली पुड़िया के मद्देपूछताहूं क्यातुमकोवहपुड़िया जमादारने दीथी?उ——हांजमादारनेदीथी। प्र०—क्याइस पुड़ियाके दवाकारंग पहिलीपुड़ियोंके खिलाफथा क्योंकितुम कहतेहोकि जो पुड़िया तुमको प्रथममें मिलीथी उनमेंसेएकमें सफेदरंगकीदवाथी और दूसरेमेंजोवस्तुथीवहगुलाबीमाइल थीं इसतीसरी पुड़िया का रंग जो अन्तको तुम्हें मिली कैसा रंगथा ? उ०—उसका रंग इसटोपीकासा था—एक बैरहर की टोपी वहांरक्खी थी उसका रंग स्याहीमाइल भूरा था। प्र०—उस सूरतमें उसको रंगत सफैद पुड़िया कीसीन थी ? उ०—नहीं स्याहीमाइल रंगथा। प्र०—क्या उसटोपीसे उस का रंगगहराथा ? उ०—बखूबी यादनहीं। प्र०—तुमनेपुड़िया की सबदवाको गिलास में छोड़ दियाथा ? उ०—हां। प्र० पानीमें मिलाकर छोड़ा था ? उ०—हां प्रथम मैंने बोतलसे

ने सबका सब बोतलका जल गिलास में डालदिया ? उ०-हां सबपानी डालदिया। प्र०-अन्तकी पुड़ियामें कितनीदवाथी? उ०-उसगंधाह ने चुटकी भरकर रेत उठाई (जोखाहीके खुखानेके वास्तेवहां रक्खीथी और कहा कि इतनीथी या शायद कुछइससे अधिकहो। प्र०-इसरेतसे उसपुड़िया की दवा का रंगस्याही माइल था ? उ०-इसकारंग जियादा स्याही माइलहै उसकारंग हलकाथा। ऐडवकेट जनरलने कहाकि मुतरज्जिम तुमतर्जुमा अच्छानहीं करतेहो उसनेकहा था कि थोड़ाकाला। प्र०-तो मालूमहुवा कि वह दवाटोपी से जियादहस्याही माइलथी परन्तु उसका रंगइसरेतसे हलका था ? उ०-हां। प्र०-जिस दिन तुमने अपने स्वामीके मारडालाने का उद्योग किया उसदिन डाक्टरसीवर्डसाहब के देखाथा ? उ०-हां बंगलेपरथा वहीं उनके मैंने देखाथा। प्र०-अबसालिम कहांहै ? उ०-मैंनहींजानता किवह कहां है सुनाहै किवहक़ैदहै और मैंभीकईदिनसेक़ैदथा। प्र०-तुमके विश्वासहै किसालिम क़ैदहै ? उ०-हां मैंजानता हूं किवह क़ैदहै। प्र०-बयानकरो किपेडरू तुम्हारेसाथ कितनीबेर महाराजासाहबकी मुलाक़ातके गयाथा? उ०-तीनबेरनौसारी से आकर और एकबार जबकिवह गोवाअपने घरसेलौटआया। प्र०-कुलचार मरतबा ? उ०-हां चार मरतबा। प्र०-इसविषदेनेका हालवहकुलजानताहै ? उ०-हांवह सब जानता है महाराजासाहबनेखुद मुझमेकहाथा। प्र०-तुमनेमहाराजा साहबसे कहते हुये खुदसुनाथा ? उ०-हांमैंने खुदसुनाथा। प्र०-तुमने कागजदेते हुये देखाथा? उ०-कौनसा कागज। प्र० वहकागजजिसमेंविषथा और जिसमेजहरहोना तुमजानतेथे ? उ०-एकपुड़िया देते हुये मैंनेदेखाथा। प्र०-तुमने महाराजासाहब के कहतेहुये सुनाथा कि इसपुड़िया में विषहै ? उ०-हांमैंने कहतेहुये सुनाथा। प्र०-कबयह बातहुई थी ? उ०-जबकिपेडरूगोवासेवापिसआया। प्र०-पेडरूका बयान

जानायहीथा? उ०—हां। प्र०—तुम उसकीतारीखकहसक्तेहो? उ०—मुझको तारीख याद नहीं। प्र०—मेरे विचारसे मुरूमब खरहोगा जबकितुमको यहपुड़िया दीगई? उ०—हांयह पुड़िया मुझको दीगई उसके दोदिन पीछे मैं बुलाया गयाथा प्र०—तुमको यादहै किमहाराजा साहबनेपुड़िया तुमको कबदी थी हांमैंभूला जमादारनेतुमको पुड़ियादीथी? उ०—हांपहिलीबेर जमादारने दोपुड़ियांदीथीं और दूसरीमरतबा एक पुड़ियादीथी। प्र०—उनदोपुड़ियों याइसएक पाकिटसे पहिले पेडरूकोपुड़िया दीगईथी? उ०—हांपहिले मेरी इस पुड़िया सेदीगई थी। प्र०—यानिक़ब्ल अखीर पुड़ियाके? उ०—हां प्र०—तुमने पेडरू की पुड़ियाके मिलनेसे एकदोदिन पीछेपुड़ियापाईथी? उ०—दोदिनबाद। प्र०-फिरतुमको मालूमहुआ थाकि पेडरूकोक्यादियागया? उ०-मुझकोमालूम नहींनयह जानताहूंकि उसकेपास पुड़ियाहैया नहीं। प्र०—क्यातुम सब एकही काममेंप्रवृतथे अर्थात्कारनैल फ़ियरसाहबके मारडालनेमें? उ०—हां हमसब शरीकथे। प्र०—तुमने पेडरूसेकिसवास्ते नहींपूछा किउसने उसपुड़ियाको क्याकिया? उ०—मैं क्योंपूछता वहअपने कामपर होशियारथा मैं अपने कामपर होशियारथा (इससेसम्पूर्ण समाजके अधिष्ठाताहूंसे) मैंनेनहीं पूछा। प्र०—इससे मालूम होता है कितुमने पेडरूको छोड़दियाथा किजबवह चाहेवह विषदे और जबतुमचाहो तुम जहरदो? उ०—महाराजा साहब को बड़ीजल्दी थी उन्होंने मुझसे और पेडरूसे कहदिया था कि यहकाम शीघ्र करना प्र०—तुमकोयहबात क्योंकर मालूमहुई?उ०-सालिमऔरयशवन्तरावदोनोताकीदकिया करतेथे। प्र०—पसइससेतुमकोविदितहुवाकिमहाराजासाहबको जल्दीहै? उ०-हां। प्र०—परन्तु तुमसेकह दियागया था कि चारमहीने के उपरान्त यहपुड़िया असरकरेगी? उ०—हांमुझसे कहाथाकि दोतीन महीनेकेबाद असरकरेगी। प्र०—तुमनेकभी पेडरूसे नहीं पूछा कि

उनकोपुड़िया क्याऊई ? उ०—अभीनहीं पूछा । प्र०—तुमने पेडरूका अपराधी होना कब बयान किया किवहभी करनैल फ़ियरसाहब के मारडालने में तुम्हारा शरीक है ? उ०—मैंने मिष्टरसूटरसाहब केरूबरू उसको मुजरिम कहाथा। प्र०—तुमने उसका नाम करनैल फ़ियर साहब के रूबरू नहीं लिया उ०—नहीं। प्र०—क्यों नहीं ? उ०—मुझको भयथा। प्र०—तुमको क्याभयथा ? उ०—जो कोईमनुष्य कोईबात करताहै तो क्याकहनेके वास्ते कियाकरता है। प्र०—यह पुड़िया तुम्हारी पेटीमें भूलसे रहगई ? उ०—हांगलतीसे रह गईथी प्र०—क्या तुमने दोनों खुराक पुड़ियाकी दीऔर एक गलती से रहगई उ०—चार खुराकें थीं तीन दी गईं और एक गलती से रह गई प्र०—क्या कारण था कि तुमने इस खुराक को रहने दिया ? उ०—भूल से रहगई। प्र०—इससे तुम्हारा मतलब क्या है कि भूलसे रहगई ? उ०—इससे यह मतलबहै कि मैंने पुड़िया को जेब में रक्खा और रख कर भूल गया कि कहां रक्खी है। प्र०—तुमने वहकाम क्योंन किया जिस वास्ते तुम आमदिये जानेका वाइदा हुवा था ? उ०—मुझको भयथाकि साहबको एकाएकी कुछ न होजाय। प्र०—क्या तुमनेइसआ-र्सेनिक पुड़ियाको दवा ९ नवम्बर को बिल्कुल डालदीथी ? उ०—थोड़ीडालीथी और बाक़ीको रखलिया था। प्र०—थोड़ी सीजितनी कि तुमनेहमको दिखाईक्या तुम जानते थे किऔ-रन्उसकी तासीरहोगी ? उ०—मैं जानता था कि एकहीबेर उसकी तासीरन होगी-परन्तु मुझको महाराजा साहबबरा-बर कहला २ भेजते थे कि जल्दीकरो जल्दीकरो। प्र०—और किसीको मालूमन था कि तुम्हारेपास यह ज़हर बाक़ी है ? उ०—किसीको मालूम न था तुमने किसी से कहाभी नहीं। उ०—मैंने किसीसे नहींकहा। प्र०—पसतुम्हारे साथी जान-तेहोंगेकि तुमने इसतमाम पुड़ियाका इस्तमाल किया ? उ० हांवह यहीजानतेथे। प्र०—क्यावह कोई पुलिस का आदमी

थाजिसने तुम्हारीपिटीमें कठोरवस्तु देखीथी ? उ०—हांप्रथम मुझसे पूछागयाकि तुम्हारीपिटी कहांहै। प्र०—तुमने बताया था कि मेरीपिटीकहांहै जिसमें तुमविष रखतेथे ? उ०—मैने नहीं बताया। प्र०—क्या तुमको ख्यालथा किपिटीमें जहरथाकी है ? उ०—मुझको ख्यालथा जोयादहोता तो मैंउसको निकालकर फेंकदेता। प्र०—जब तुमने पुड़ियाको देखाकि तो तुमकोआश्चर्य हुवा ? उ०—हां मुझको अचम्भा हुवा औरमैं घबरागयाथा। प्र०—अगर मेरीयादसही है तो तुमने कहा था कि जबतुमसे अकबरअलीने पूछा था कि तुम बहुधा वस्तु अपनीकहां रक्खाकरते हो तो तुमने कहा था किपिटीमें ? उ०—हां मैने यहीकहा था। प्र०—उस समय अकबरअलीने कहाथा किपिटी मंगवादीजावे ? उ०—मुझसे कहाथा किपिटी कहांहै मैनेकहाथा कि बहादुरके पासहै। प्र०—तुमने बहादुरकोपिटी क्योंदी थी ? उ०—मैने नहीदी नवीन रेजीडेण्ट साहबने दीथी। प्र०—उस मनुष्यको तुम्हारी पेटी कबदी गई थी ? उ०—मेरे रूबरूदीगई थी परन्तु मुझको दिनयाद नहीं है। प्र०—कितने दिनोंके उपरान्त पुलिस को पुडिया मिली थी ? उ०—बहुत दिनोंके पीछेपरन्तु मुझेख्याल नहींकि कितनेदिनोंकेबाद। प्र०—तुमको कुछभी ख्यालनरहा कियहतुम्हारीपिटी जो दूसरामनुष्य पहिनेहै उसमें एक पुड़िया विषकी है ? उ०—इस पुड़िया को मैं बिल्कुल भूल गया था। प्र० जब करनैल फियर साहब ने तुम्हारे इजहार लिये थे और तुमसे पूछा था कि दुबारह जहर देने का तुम्हारा संदेह किसपरहै और तुमनेकहाथा कि फैजपरहै क्योंकि फैजकरनैल फार्टसाहब और करनैलसाहबके जमानेमें चन्दबातोंके निस्बत मालूम हुवाथा ? उ०—हां मैंने अपने प्राणके बचानेके वास्ते उसकानाम लियाथा। प्र०—पहिले तुमने खूनकरना चाहा और फिरएक निर्दोष मनुष्यको मालूम करतेथे ? उ०—आप लोगभी दरबार (अर्थात् महाराजासाहब) सेजाया करते थे

यदिउन्होंने विषकोदिया होतातो मुझको किसतरह मालूम होता। प्र०—बहर सूरत तुमने अपने ही प्राण बचाने के वास्ते उसको मालूम किया? उ०—जबरजोसफट साहबनेमुझसे पूछा तोमैंने उत्तर दिया कि बहुतसे मनुष्य नगर में रहतेहैं और यहांआते जाते हैं। प्र०—पसतुमने एकनिर्दोष मनुष्यको मालूमकरना चाहाहालांकि खूनकरनेका तुमनेउद्योगकियाथा? उ०—चूंकि यहसब लोगनगरमें रहतेथे इसलिये उनकोमैंने मालूम करना चाहाया। प्र०—साहबने तुमसे यह पूछाथा कि विषदेनेमें तुम्हारा किसपर सन्देहहै तुमनेउत्तर दिया कि फैजूपर? उ०—मैंने कहाथा कि फैजू नगरमें रहताहै मेरा सन्देह उसपरहै। प्र०—क्यातुमने कहाथा कि फैजूपर मेरा सन्देहहै? उ०—हां। प्र०—यहतो तुमभूलगये कि मैंनेविषकी पुडिया पेटीमें रक्खीहै परन्तु इसबातको नहींभूले कि हमने विषदियाहै और अपराध इसका फैजूपर लगाया? उ०—हां पुड़ियारखकर भूलगयाथा। प्र०—और फैजूको मालूमकिया? उ०—बहुत आदमी उसका नाम लेतेथे उस समयमैं चुपहो रहा। प्र०—नहींनहीं तुमचुप नहींहुयेथे तुमनेकहाथा कि फैजूपर मेरासन्देहहै? उ०—हांमुझसे पूछागयातो मैंनेकहा कि फैजूघरमें रहताहै मेरासन्देह उसपरहै। प्र०—अर्थात् मारनेके उद्योगका सन्देहहै? उ०—हां मैं केवल पुड़ियोंको जानताथा। प्र०—इससे तुम्हारा क्यामतलबहै? उ०—मुझेयह सन्देहथा कि जैसी पुडिया मुझको और पेडरूको दीगईहै वैसीपुड़ियां औरोंकोभी दीगई होंगी। प्र०—इसलिये तुमने उनकोमालूम किया? उ०—हां। प्र०—जबतुम कारनैलफियर साहबके रोबरूइजहार लियेजानेके पश्चात् छुटादियेगये तो तुमकहांरहे? उ०—मैंघरमेंथा और मैंने साहबसे दरख्वास्त कीथी कि मुझकोपट्टा मिलजाय अर्थात्मैं फिर नौकर रक्खा जाऊं। प्र०—क्यातुम फिरनौकर रक्खेगये? उ०—नहींसाहबने कहाथा कि साहबलोग तहकीकातके वास्ते आते हैं तहकी-

ज्ञात करनेके उपरान्त नैाकर रक्खेजाओगे। प्र०—भावपूना करने तुम्हारे विषय में कहा था? उ०—मैं नहीं जानता कि उसने कुछकहाहो। प्र०—क्या तुमने उससेकहा था कि वह तुम्हारे निस्बत कुछकहे? उ०—मैंअपनेघरमें रहताथा कहींबाहर नहींजाता था। प्र०—क्या तुम्हारी गरज यहहै कि तुम अच्छीतरह जानते थे कि भावपूनाकर तुम्हारे मद्दे कुछ नहीं कहा? उ०—नहीं प्र०—सावधान होजाओ क्या तुम्हारा यहमतलबहै कि तुमनेभावपूनाकर से कुछबातें नहीं कीं? उ०—नहीं। प्र०—क्यातुम यहकहतेहो कि तुमनेउसको नहींदेखा? उ०—जबवह बंगलेपर आताथा मैंउसको देखता था? प्र०—जहरदेने के पहिलेतुमने उसकोदेखा था? उ० जब साहिब रवाना होनेवाले थे उस समय उसको मैंने देखाथा। प्र०—यानिजहर देने के पीछे? उ०—हां। प्र०—पसमैंखयाल करताहूं किउससे और तुमसे विषदेनेके विषयमें कुछबातेंहुई? उ०—नहीं २ कुछ बातेंनहींहुई। प्र०—क्यातुम्हारायहमतलबहै कितुमसे और उससेकभी इसविषयमें बातें नहींहुई? उ०—मुझको स्मर्णनहीं शायदकभी कीहों। प्र०—मैं तुमकोयाद दिलाताहूं तुमकोयाद होगाकि दरमियानतुम्हारे औरउसके महाराजा साहबके विषयमें बातेंहुईथीं? उ०—कभीनहीं हुई। प्र०—क्यातुमने महाराजा साहबके मद्दे उस से कुछबातेंकीं थी अर्थात्जहर देनेकेपश्चात्? उ०—नहींमैंने कभीमहाराजा साहबकेविषय में कोई बातनहीं की। प्र०—क्यातुमसे उसनेनहीं पूछाथा कि महाराजा साहब इसबात को जानतेहैं यानहीं? उ०—उसनेमुझसे नहींपूछा। प्र०—क्यातुम्हारी यहगर्जहै कि तुमनेकभी उसकेरोबरू महाराजा साहबका नामनहीं लिया? उ०—नहींलिया। प्र०—तुम्हारे इजहारके पहिले जोकरनैल फियरसाहबने लियेथे तुमनेभाव पूनाकरको नहींदेखा? उ०—नहीं। प्र०—जब तुम्हारे इज-हार लियेगये तो भावपूनाकर मौजूदथा? उ०—क्यामिस्टर

सूटरसाहबके सन्मुख। प्र०-हां? उ०-मैने उसको वहांनहींदेखा औरवहवहांनथा। प्र०—उससमयतुमने भावपनाकारको नहीं देखा? उ०—मैने उसको नहींदेखा। प्र०—पस मैं खयालकरता हूं कि एकलाखरुपये के लोभसेतुमने अपनेस्वामी के मारडालने कावाइदाकिया? उ०—हांमैं गरीबआदमी था एकलाख रुपये के लोभमें आगया। प्र०—पस गरीबहोने और एक लाखरुपये के लोभसे तुमने मारडालना चाहाथा? उ०—हां मैं गरीब आदमी था लाखरुपये के लोभ से मैने ऐसाकरना चाहाथा। प्र०-मैंतुमसे फिर प्रश्नकरना चाहताहूं इसवास्ते कि तुमगरीब आदमी थे तुमने द्रव्य के लोभसे मारडालना चाहा जिन दिनोंमें कितुमछूटे हुयेथे महाराजा साहब के पासतुम किस वास्ते नगये? उ०—मैं डरता था इसलिये नहीं गयामुझको इस विषय में वार्त्ताकरने काभय था। प्र०—तुमने साहब की शर्बतमें शुक्रऔर शनिवर को विषनहीं डालाथा? उ०-नहीं मैने सोमवारके दिन डालाथा उसीरोज उसकोखबर होगई। प्र०—तुमने केवल उसी दिनजहर डाला था? उ०-हां मैने केवलउसी दिनविष डाला था। प्र०—शुक्र और शनिश्वार को जिस किसी ने साहब के गिलासमें विषडाला होतो तुमकोउस की खबर नहीं है? उ०—जमादारने शनिश्चरवार को मुझको विषकी पुड़िया दीथी और मुझको कुछ मालूम नहीं। प्र० जबसे किमिस्टर सूटरसाहबने तुम्हारे इजहारलिये तुमनेपुलिसकेआदमियोंको देखाहै?उ०—उससमयसे मैं पहिरेमेंहूं॥

ऐडवकेट जनरलने दुबारह प्रश्न किये॥

प्र०—जबतुम पहिलीबेर महाराजा साहब के निकट गये तो तुमसे महाराजा ने कुछ विषका जिक्र किया था? उ० नहींमुझसे कुछजिक्र नहीं किया। प्र०—उन्होंने तुमसे क्या कहाथा? उ०—उन्होंने केवल इतना कहा कि बंगलेपर जो बातहो उसकीइत्तिला मुझकोकिया करो। प्र०—महाराजा साहबसे विषदेने का जिक्र पहिले कबआया था? उ०—नौ-

सारी से वापिस आनेसे पांच महीने के उपरान्त। प्र०—जिस सोमवारको तुमनेकरनैल फियरसाहब को विषदियाथा और उसजहरका दियाजाना मालूमहोगया और उसकेउपरान्त जोतुमकहतेहो किमैंअपने घरमेंरहा? उ०—हां जिसदिनसे किमुझपर विषदेनेका संदेह पायागया मैं अपनेघरमें रहा? प्र०—यशवन्तराव या सालिम कभीतुम्हारे घर परआयेथे उ० नहीं। प्र०—तुम्हारीमुअत्तली केपीछेभी नहींआये? उ०—नहींमेरे घर कभी नहीं आये। प्र०—बग़ैर यशवन्तराव और सालिम के तुमकभी महाराजा साहब के पासगये थे? उ० नहीं। प्र०—अपनी मुअत्तलीकेबादतुम अपनेघर रहेक्या तुमको अपनेघरपर पहिरा रहिनेका सन्देह था यातुम यह खयाल करतेहो किकुछकाम तुम्हारी कारवाई पर निगरानी करतेहैं उ०—मुझको खबरनहीं मैंअपने घरसे कहीं बाहरनहीं निकला। प्र०—सरजान्ट बेलनटायन साहबने तुमसे उस निशानकी बाबत दरयाफ्त कियाथाजो तुम्हारे पेटपरहै वह चिह्नअबभी है? उ०—हां है। प्र०—तुमने कभीयह निशानकिसी डाक्टरको दिखाया—सरजन्टबेलन टायनसाहबबोले कि निशानभी बहुसे अच्छीजगहपरहै जहांपर कि शीशीके रखनेका हालयहशख्स बयानकरताहै—ऐडवकेट जनरलने कहाकि ग्रेसाहबमेहरबानी करके आप उस चिह्नको देखें सो डाक्टर ग्रेसाहब गवाहको बाहरलेगये और चिह्नको देखाफिर ऐडवकेट जनरलनेडाक्टर ग्रेसाहबके इजहारलिये उनसेपूछा कि अपनेइस गवाहको देखाउन्होंनेकहा कि हांदेखा एकइञ्चया आधाइञ्चके नाभि के निकट तीनचिह्न है अर्थात् जहां कि पाजामाबान्धा जाताहै वह निशान मिसलतेजाब और गरमलोहे या फोड़ेकेमालुम होतेहैं या जिसतरह फफोलेका चिह्न पड़जाताहै या किसी वस्तुका निशान जिसे शरीरका चर्मदग्ध होजाताहै फिरसर-जन्टबेलन टायनसाहबने प्रश्नकिया कि आपसुनचुकेहैं कि इस गवाह ने क्या इजहार दिये अर्थात् उसने बयान कियाहै कि

शोशीके मुखपर रहगईथी और रईमेंसे वहवस्तु निकलकर उसके पेटमें लगगई—क्या आप खयाल करसक्ते हैं कि उसके वर्णनके अनुकूलऐसे चिह्नपड़गयेहै? उ०—हांसफेद संखियेसे ऐसे निशान पड़जातेहैं। प्र०—क्या आप खयाल करतेहैं कि बग़ैरगडने संखियेके खालपर निशान पड़सक्ताहै? उ०—हाँ जोसंखिया खालसे लगजावे। प्र०—कितनीदेरमें सोनिशमालूमहोगी? उ०—एक घण्टेमें। प्र०—ऐसा चिह्न एकघण्टेमें पड़जावेगा? उ०—हां। प्र०—क्यावास्तवमें ऐसाही विचाराश है कि यहचिह्न जोगवाहके शरीरपरहै वहइसी तरहसेहोगये हैं? उ०—हांमुझको यही निश्चयहै अर्थात् जोयह संखिया देहमें लगतातो ऐसाचिह्न पड़जाता। प्र०—चूंकिआप डाक्टर हैं और डाक्टरहोनेके कारणआप कमीशनमेंरहे और इसके इज़हार आपनेसुने-सोडाक्टरी विद्याकेबलसे वर्णनकरसक्ते हैं कि इसमनुष्यकी देहपर इसीतरहसे जैसा कि वहकहताहै चिह्न पड़गयेहैं? उ०—हां। प्र०—मुझको विश्वासहै कि इस गवाहके इज़हारोंपर भलेप्रकार ध्यानकरके आपऐसा बयान करतेहैं? उ०—हां। प्र०—यदिआप इसमनुष्यके इज़हार न सुनते और आपकी रायतलब होती तो आप क्या कहते? उ०—मैं कहता कि यह चिह्न तेज़ाब या गरम लोहेके हैं। प्र०—मैंइन मुआमिलोंको नहींजानता परन्तु क्याआप कहसक्तेहैं कि ऐसेनिशान हिन्दुस्तानियोंकी देहपर बहुधाहोते हैं? उ०—हांमैंखयाल करसक्ताहूं—इसके उपरान्त ऐडवकेट जनरलने डाक्टरसाहब से प्रश्न किये॥

प्र०—क्या संखिया तेज़ाबकीखासियत रखताहै? उ०—हां। प्र०—मैं समझाकि आपकी राय है किजो संखिया घोलकर बोतलमें डालीजाय और वह शरीर से लगेतो ऐसे चिह्नपड़ सक्ते हैं? उ०—हां पड़सक्ते हैं। प्र०—सररिचर्डमीड साहबने कहा जो तेज़ाब एक फोड़ेपर लगाया जायातो ऐसानिशान पड़सक्ता है? उ०—हांपड़सक्ताहै परन्तुफोड़ेकी हालतदेखो

आय—तिसपीछे रावजी बुलागया—साहब प्रेसीडण्टनेउससे प्रश्न किया कि जबतुम सोमवारको संखियेका इस्तैमालकारचुके तो बोतलको क्या किया था ? उ०—मैंने उसबोतलको एकसंदूक के पीछेछिपादिया था । प्र०—किसजगह छिपाकर रक्खाथा ? उ०—जहांकि बरांमदे के छबकूगाड़ियां आकर खड़ीहोती हैं। प्र०—क्या वहां पर शीशी तुमको नहीं मिली ? उ०—पुलिसके लोगों ने आकर ढूंढ़ा था परन्तु उनको शीशी नहीं मिली । प्र०—शीशीकितनी बड़ीथी ? उ०—इतनीबड़ी (गवाहने बताया कि उंगलीके बराबर थी) एडवकेटजनरलने कहाकि अबचार बचगये हैं किसी गवाह के शायद इज़हार न लिये जावेंगे साहबप्रेसीडण्टने कहाकि हां अबफजूल है—इसवास्ते कमीशन बरखास्त हुई ॥

नवें दिनका इजलास ॥

आज बरवक्त इजलासके सम्पूर्ण मेम्बरान् वर्त्तमान थे सर-ल्यूइसपीली साहब दो पहर तक रहे पर श्रीमान् महाराजा मल्हरराव दिनभर मौजूदरहे और श्रीयुत महाराजासेंधिया भी मध्यान्ह के उपरान्त देरतक कमीशन से ग़ैरहाज़िररहे इजलासके आरंभहोतेही साहबऐडवकेटजनरलने प्रेसीडण्ट साहबसे पूछा कि माईलार्ड—सुनाहै कि शनिश्चरवार को कमी-शनका इजलास न होगा—क्यायहबात सत्यहै साहबप्रेसीडण्ट नेकहाकि मैंभी इसका तज़करह करनेको था शनिश्चरवारको हिन्दुओंकी तातीलहै इसलिये उसदिन इजलास न होगा ॥

साहबऐडवकेटजनरलने कहाकिकेवलशनिवारको—साहब प्रेसीडण्टने कहा—हां—तिसपीछे नरसूराजाना गवाहबुलाया गया ॥

नरसूराजाना गवाह का इज़हार ॥

इस मनुष्यने वर्णनकिया किमैं रजीडन्सी बड़ौदेके चपड़ा-सियों का जमादार हूं मुझको रजीडन्सी में नौकरीकरते हुये

बत्तीस वा चौंतीस वर्षहुये और सत्रह वा अठारह वर्षसे जो-
हदे जमादारी परथा मेरामासिक १४) रु० थायही तनखाह
जमादार की है—दस रुपये मासिक रावजी हवालदार को
मिलतेथे मैंनगरमें रहताथा प्रतिदिन भोरको सातया आठ
बजे रेजीडन्सीमें अपने कामपर हाजिरहुवा करता संध्याको
सातबजे चलाजाया करता था रेजीडन्सी की कचहरी कभी
साढ़ेछःबजे बरखास्तहोजातीथी तो उससमय मैं घरको चला
आता था—मुझेवह जमाना याद है जबकि बड़ौदेमें कमीशन
का इजलासहुवा था उससमय रावजीनेमुझसे बात्तीकी थी
और मुझसे कहाथा कि सालिम और यशवन्त कहते हैंकि
तुमकोमहाराजासाहबके निकटजानाचाहिये मैनेउत्तरदिया
किमेरेघरमें बीमारीहै मैं अभीनहींजासक्ता और सिवायइस-
केइनदिनों मुझको अपने कार्य्यसे छुट्टी नहीं है जब बड़ौदेसे
कमीशन बरखास्त हुई तो रावजीऔर सालिमने फिरमुझसे
वहांजानेका तकाजाकिया मैंसालिमको उससमयसे जानता
हूंजबकि वहरजीडन्सीमें आयाकरताथा—महाराजखण्डेराव
के कालके पीछे मैं यमुनाबाईकी सेवामें रहा उनकेपास से
रेजीडन्सीको लौटआया—करनैलबारसाहबकेजमानेमेंसालिम
रेजीडन्सीको आयाकरताथा जबकि यमुनाबाई रजीडन्सी में
रहाकरतीथी उसजमानेमें उनकेपास मेरीतैनाती हुईथी मु
झको आज्ञाथी किसबतक वहयहांरहेंतुमभी उनकेपासरहो
जबवह पूनाकोगई उससमयभी दोमहीनेतकमैं उनकेपासरहा
उनदिनों करनैलबार साहब बड़ौदेके रजीडण्ट थे और जब
मिस्टरटक्कर साहबआये उन्होंनेभी मुझेयमुनाबाईके पासरक्खा
यशवन्तराव जासूसने दोतीनबेर मुझसेकहा कितुम महारा-
जासाहबसे मुलाक़ात करो सालिम और रावजीने भीकहा
थाकि सोम और वृहस्पतिवार को जबकि महाराजा साहब
रजीडन्सीको आयेथेतो सालिम और रावजीमुझसे सदायही
कहाकरतेथेअन्तको मैंमहाराजासाहबकी मुलाक़ातके वास्ते

राजीहुवा और बरखास्त कमीशनसे बीसपचीसरोज के पीछे
महाराजासाहबके निकटमैंगया उसदिन रावजीऔर सालिम
और एकमनुष्य जोरावजीके साथथा और मैंमहाराजासाहबके
पासगये प्रथमहम यशवन्तरावके घरपरआये वहांसे महाराजा
साहबके महलको गये सररिचर्डमीड साहबने मुतरज्जिम से
पूछाकि बाडहके क्याअर्थ हैं मुतरज्जिमने कहाकि दरबार—बा
हबेलीको कहतेहैं—गवाहने वर्णनकिया किरावजी और एक
औरमनुष्य मेरेसाथ गयेथे यशवन्तराव और एकदूसरा मनुष्य
दूसरेमार्गसे गयेथे महलके पीछेजो एक बागहै उसमेंहोकर
हमलोगमहलमें पहुंचे यहबाग नवीन तैय्यार हुवाहै मैं इस
बागकानाम नहींजानता जब हममहलमें पहुंचे तो मैंसीढ़ीपर
बैठगया—जब यशवन्तराव महाराजा साहबको अपनेसाथ ल-
याउससमय सालिमने हमको ऊपर बुलायाजो मनुष्यरावजी
केसाथ गयाथा वहनीचेखड़ारहा जबहम ऊपर गये तोमहा-
राजासाहबसे मुलाक़ात हुई—सलामकरके मैं जमीनपर बैठ
गया यशवन्तराव और रावजी और महाराजासाहबसे कुछ
वार्त्ताहोती रही महाराजा साहबने अप्रसन्न होकर कहा
कि इसमनुष्यको तुमक्यों लाये—यहलुच्चा आदमी है रावजी
ने कहाकि अब लुचपन न करेगा—महाराजा साहबने कहा
कि रेजीडन्सीमें जो खबरेंहुवा करैंवह मुझको भेजाकरो मैंने
कहाबहुत अच्छाइस मुलाक़ातमें केवलयही वार्त्ताहुई और
कुछनहीं एकमासके पश्चात् अथवा एकमहीने से कुछकममें
फिर महाराजा साहब की मुलाक़ात को गया रावजी और
सालिममेरे साथगये थे जो मनुष्य सालिम के साथगया था
उसकानाम कारभाई था इसमर्त्तबा भी महाराजा साहबसे
मुलाक़ातहुई कारभाई को सबने नीचेछोड़ दिया और हम
लोगऊपर गये यहमनुष्य रेजीडन्सीका पंखावाला है हमारी
मुलाक़ात महाराजा साहबसे नौ या साढ़े नौबजे रात्रिको
हुई—मैं आठया साढ़ेआठबजे रेजीडन्सीसे रवानाहुवा क-

रताथा महाराजा साहबके साथ सालिम और यशवन्तराव हुवा करतेथे जब महाराज नौसारी को गयेतो साहबरेजी-डेण्टके साथभी वहांगया था महाराजा साहबके साथ केवल सालिमथा यशवन्तराव नहींगया—जबनौसारीगयेथे सालिम साहब रेजीडण्ट के हातेमें रहा करता था इसहाते में कई और सवारभी रहा करते थे रावजी ने मुझको नौसारीमें एक बेर पारितोषक दिलवाया था इसका जिक्र महाराजासाहब और सालिमसे पहिलेहोचुका था जबमुझको इनआमदिया तोरावजीने मुझसेकहा थाकि तुमको डेढ़सौरुपया इनआम कामिलाहै मैंने कहाकि मैंइसरुपयेको क्याकरूं यह कहकर सालिम के पासवह रुपया रावजी छोड़आये जबसालिम नौ-सारीसे गयाथा तो रावजीने उसके हाथ यहरुपया मेरेघर भिजवादिया सोसालिमने वहरुपया मेरे भाईको देदियाजब मैं बड़ौदेको आयातो मालूमहुवा किवह रुपया मेरे भाईके पासपहुंचगया—जब महाराजा साहब नौसारीमें थेतो कभी महाराज के सम्मुखमें अकेला नहीं गयाजब साहब रजीडण्ट उनकेपास जातेथे तोमैं भी हमराहजाताथा जब महाराजा साहबबड़ौदेको वापिसआयेतो मैंमहीनेडेढ़महीनेकेपीछेउनके सलाम के वास्ते फिरगया और पूर्व्ववत् यशवन्तरावकेमकान पर हमऔर रावजीगये और वहांसे महाराजासाहबकेपास गये इसबेर महाराजा साहबने कहाकि जोकुछ रजीडन्सीमें हुवाकरे लिखकरहमारेपास भेजदियाकरो रावजीनेकहाबहुत अच्छा जोमनुष्य आयेगा उसकानाम लिखकरआपकेपासभेज दूंगासालिमने महाराजा साहबसे मरहटीभाषामें कहा कि महाराज बिवाहका पारितोषक इसमनुष्यकोनहींमिलामहा-राजासाहबने कहाकि इसका तुम कुछबन्दोबस्त करदो केवल इतनीही बार्त्ता हुई थी हमको कुछ रुपया उस समय नहीं मिला था परन्तु दस पन्द्रहदिन के अनन्तर आठ सो रुपया सालिम लाया और हमने इस रुपये को परस्पर बांट लिया

अर्थात् मैंने और सालिम और रावजीने यह रुपया लिया और कुछ जुम्मा पंखेवालेको भी दिया रावजी हरमनुष्य का नाम जोरजीडन्सीमें आया करते थे लिखकर महाराजा साहबके भेजनेको मुझे दियाकरता मैं यशवन्तरावके मकानपर जाकर सालिमको देदेता इसीभांति बीसया पचीस परचे महाराजा साहबको गये-सोम और वृहस्पतिवारको यह परचे नहीं भेजे जाते थे क्योंकि दोनों दिनोंमें महाराजा साहब स्वतः आया करतेथे इसरुपयेके मिलनेके एक महीने या सवा महीनेपीछे फिरहम महाराजासाहब के पास सलाम करने के वास्ते गये उसरोज महाराजासाहबसे मुलाक़ात एकछोटे कमरेमें हुई जहांकि बड़े २ शीशेरक्खे हुयेथे वहांकुछ पीतलके बत्तीदान और एक घण्टाभी रक्खा हुवाथा सालिम और यशवन्तराव महाराजासाहबके पासथे महाराजासाहबने सालिम से कुछ वार्त्ता करके हमलोगोंसे कहाकि साहब मुझसे अतिअप्रसन्न रहतेहैं इसकाकुछ उपायकरना चाहिये महाराजा साहबने कहाकि मैं कोई वस्तुदूंगा ऐसाकोई यत्नकरनाकि वहउनके कण्ठ और उदरतक पहुंचजाय मैंने उत्तरदियाकि खानेपीने में तो कुछमेरा इखतियार नहींहै नवह मेरेसम्मुख भोजन करतेहैं रावजी ने कहाकि चोतरेका शर्बततो पीतेहैं उस में डालदो महाराजासाहबने कहा यदितुमऐसा कामकरोगे तो तुम को धनवान बनादूंगा—नौकरी की तुमको आवश्यकतानरहेगी यहवार्त्ता दसपन्द्रहमिनट तकरही मुझको महीना स्मर्ण नहीं परन्तु इतना कह सक्ता हूंकि अन्तिम विषके उद्योगसे तीनचार महीने पहिले की यहबात है इसवार्त्ता के उपरान्त सालिमने मुझकोएकपुड़ियादी वहपुड़िया अनुमान एक उंगली के थी यह पुड़िया अहमदाबाद के कागज़ की बनी हुईथी जब मैं रेजीडन्सी को लौट आया तो मैंने वह पुड़िया रावजी को दे दी उसके चौथे पांचवें दिन सालिम और यशवन्तराव को बंगले पर देखा मुझसे सालिमने पूछा

कि तुमने रावजीको वहपुड़िया देदी मैनेकहा हांदेदी आठ
दसदिनके पीछे मैंदसहरेके सलामको महाराजासाहबकेपा-
सगया पहिलोरीतिके अनुसार नौबजे यशवन्तरावके मकान
परगया और वहांसे रावजी जुग्गाकेसाथ महाराजा साहब
केमहलको गया जिसकमरेमें हमेशा मुलाक़ात होतीथी उ-
समें महाराजा साहब से मुलाक़ात हुई सालिम और यश-
वन्तराव महाराजासाहब के पासबैठेहुये थे जब महाराजा
साहबने मुझकोदेखा तो बुरी २ गालियांदीं और कहा कि
तुमलोग लुच्चेहो गालियांदेनेके पीछे महाराजासाहबने हम
से कहाकि अबतक तुमलोगोंने कुछनहींकिया मैनेकहा कि
रावजीको मालूमहोगा मैंकुछ नहींजानता रावजीनेकहाजो
कुछ मेराकामथा मैंकरचुका और वहवस्तु जोमहाराजासा-
हबने दीथी अच्छीनहो तोमैंक्याकरूं महाराजासाहबने कहा
अच्छा मैंदूसरी पुड़िया भेजूंगा और कहाकि उसको अच्छी
तरह डालना—कलकेदिन तुम्हारेपास सालिमके हाथपुड़िया
पहुंचेगी—सोउसके दूसरेदिन जबअपने मकानसे मैंनिकलता
था तो सालिमने मुझको पुड़ियादी और मैनेउसको लाकर
रावजीके हवाले करदिया—यहपुड़िया ९ नवम्बरके पांचसात
रोज पहिले दीथी ९ नवम्बर के प्रातःकाल के आठबजे मैंअ-
पनेमकानसे आया मैनेरावजीको डेवढ़ीपर बैठाहुआदेखा जो
साहबकी कचहरीके निकट है उसदिन भोरको मुझसे और
रावजीसे कुछवार्त्ता नहुई थोड़ीदेर के पीछे जब गिलास में
विष मालूमहुवा तो गड़बड़ होगई मुझसे रावजीने कहाकि
डाक्टरसाहब आयेथे और गिलासजेबमें रखकर लेगये सिवा
इसके और कुछबातें रावजीसे नहींहुईं उसकेदूसरे दिन क-
रनलफियर साहबने मेरेइज़हारलिये मैंअपने ओहदेपरका
क़ायमरहा और फिरसूटरसाहबकी आज्ञानुसारमैं पकड़ागया
९ नवम्बर और जिसदिनतक मैंपकड़ागया रावजीसे कुछबातें
नहींहुईं मेरे इज़हार के पहिले मुझसे किसीने नहीं कहा

कि रावजीने क्याइजहारलिया और इजहारसे पहिले मुझसे मुआफीका वाइदा नहींहुवा जबमेरेइजहार लियेगये तो सरल्युइसपीली साहब भी वहांबैठेथे—साहबमेजीडण्टनेप्रश्न कियाकि मिस्टरसूटरसाहब और सरल्युइसपीली साहबने इजहार लियेजानेके पहिले तुमसे कुछ कहाथा ? उ०—कुछ नहींकहा वहमेरे इजहार सुनतेरहे । प्र०—ऐडवकेटजनरल ने कहातुमसे अपराधके क्षमाहोनेका कुछवर्णन हुवाथा ? उ० नहीं इसके उपरान्त गवाहने कहाकि जबतें मैं कैदहुवाहूं कईदिनतक हिन्दुस्तानी सिपाहियोंके पहरेमेंरहा और इस केपीछे गोरोंकेपहिरे हूं मुझेस्मर्णहै किएकदिन मैं रेजीडण्टी के बागमें गयाथा मैने वहांनौकरों को देखा मुझे लज्जा आई किइतने समयके पीछे मेरे भाग्यमें लिखाथा किमैं ऐसाकर्म्म करूं और अबक्योंकर अपनामुखदिखाऊं इससेमैं कुयेंमेंगिर- पड़ा—रावजीके पेटमें जोनिशानहै उसने ९ नवम्बरके दोदिन पहिले मुझको दिखायाथा वहजगह सूजीहुई फोड़ेके सदृश थी उसने कहाकि मैंने यहीशीशी रक्खी थी उससे मेरी यह गति होगई ॥

सारजन्ट बेलनटायनसाहब के प्रश्न ॥

कितने वर्षोंसे तुम रेजीडण्टी में नौकर हो ? उ०—बत्तीस अथवा इससे अधिकवर्षका नौकरहूं । प्र०—तुमसे और कर- नैलफियरसाहब से कभी नाराजी नहीं हुई या कोई वजह शिकायतकी तो नहींहुई ? उ०—नहीं मैं करनैलफियरसा- हबको अपना माबाप समझताथा वह मुझको खाने को देते थे—मेरी अभाग्यताथी कि मैंने लोगोंका कहनामानलिया । प्र०—तुम्हारी अभाग्यता हो वा न हो परन्तु द्रव्यकेलोभसे तुम अपने बाप और स्वामीके जहरदेनेपर राजीहुये ? उ०—मुझ को रावजीने बहकाया था मेरे भाग्यमें यही लिखाथा । प्र० तुमने यहकर्म्म धनके लोभसे कियाक्यों तुमने कियायानहीं ? उ०—मुझको रुपये कभी नहीं मिले केवल महाराजासाहब

के बिग्राहमें मिलाया। प्र०—इसकाम के वास्ते तुम को क्या मिलने वालाया? उ०—मुझसे प्रतिज्ञा हुईथी कि मेरेवास्ते कुछ बेहतरहोगा। प्र०—तुमको निश्चययाकि तुम्हारी नौकरीमें तरक्कीहोगी और तुमको रुपयामिलेगा? उ०—हांयही समझा था। प्र०—पस यहबात समझकर तुम भी सुआमिले में शरीकहुये? उ०—हां। प्र०—परन्तु आज वर्णनकरते हो इस बयानके वास्ते तुमको कुछ न मिलेगा? उ०—कुछ नहीं मिलेगा। प्र०—पस मालूमहोता है कि तुमरुपया लेकर खून करोगे और दरोग हल्फ़ोन करोगे? उ०—मैं क्या करूं मेरे भाग्यमें यहीया मेरी कंबख्ती थी। प्र०—तुमकहतेहो कि जो कुछरजोडन्सीमें होता या रावजी लिख'लियाकरते थे और लिखकर महाराजासाहबको भेजनेको हमें दिया करते थे? उ०—हां चिट्ठी लिखकर मैं सालिम को देदिया करता था। प्र०—यहपरचा कागजका होताथा या कोईकिताब होतीथी या और कुछ होताथा? उ०—एकपरचाकागजका होताथाजो मोहरसे बन्दकिया जाता था वहीपरचा प्रतिदिन भेजाजाता था। प्र०—ऐसाकोईपरचा तुम्हारेपास अबनहीं है? उ०—नहीं है। प्र०—तुमको मालूमहै कि उनपरचोंमें से कोई परचाअब कहीं होगा? उ०—यहपरचे सालिमके पासहोंगे या सरकार के पास। प्र०—अबबयानकरोकि तुमसे और महाराज(साहब) से पहिले किसकमरेमें मुलाक़ात हुईथी? उ०—एक छोटा कमराथा और उसमें एक बेंचबिछीहुई थी। प्र०—उसकमरे का हालबयानकरो? उ०—इसकमरेमें दो बड़े २ आईने थे और एकघडीथी और जोकिराचिका समयथा कमरेके और असबाबका मैंनेख्याल नहींकिया। प्र०-क्याएकही कमरेमेंतुम सेऔर महाराजासाहबसेभेंट हुईथी या मुख्तलिफ कमरोंमें? उ०—हमेशाएकही कमरेमें मुलाक़ात होती थी। प्र०—उस कमरेमें गुसलखानाभी था? उ०-शायदहो क्योंकि चारोंओर दरवाजे और कमरेथे। प्र०—पसतुम कहतेहो कि उसकमरे

के पासकोई गुसलखाना नथा? उ०—शायद हो मैंनहीं कह सक्ता। प्र०—तुमकहते हो कि दरवाजे और बहुतसे कमरेथे तुमनेकोई गुसलखाना नहीं देखा? उ०—मैनेगुसलखाना नहीं देखा। प्र०—दरवाजोंके खयालमे तुमकहतेहो कि शायद कोई गुसलखानाहोगा? उ०—हां। प्र०—परन्तु तुमनहीं जानते? उ०—नहीं। प्र०—महाराजा साहबके निकट हालमें भीगये थे? उ०—नहीं। प्र०—करनैलफियर साहबने तुम्हारे इजहार आपलिये वा किसी और मनुष्यसे अपने सन्मुखलिवाये थे? उ०—आपही लियेथे। प्र०—तुमने करनैलफियर साहबसे प्रतिज्ञाकीथी कि सचकहोगे और सिवासचके औरकुछ न कहोगे? उ०—हां परन्तु मैंने उनसे सत्यनहीं कहा था मेरे इजहार उन्होंने लिखलिये थे। प्र०—तुम्हारादिल उससमय गवाही न देताथा कि तुमको झूठ बोलना न चाहिये? उ०—नहींमैने उनसे मुख्यवृत्तान्त वर्णन नहीं कियाथा। प्र०—पस इसकोभी तुमकिस्मतपर हवालाकरो कि तुम्हारे भाग्यमेंथा कि करनैल फियरसाहबके साम्हने बहुतसा झूठबोले? उ०—हांमेरे भाग्यमें यहीथा मैं क्याकरूं। प्र०—तुम्हारा क्या मजहब है? उ०—हिंदू। प्र०—मैंइनबातोंको अच्छीतरह नहींजानता क्याऔर झूठबातोंमेंसे क्यातुम्हारे भाग्यमें यहभीथा कि तुमफैजू पर दोषलगाओ? उ०—हांमैने यहीबयान कियाथा। प्र०—तुम जानतेथे कि फैजूनिर्दोष है? उ०—फैजू और एकमुसल्मान आया करतेथे सालिमभी आयाकरता था। प्र०—मैं फिरसुनूं तुमने क्याकहा? उ०—फैज औरसालिम आयाकरते थे और एक पादरी सहाबभी बंगलेपर आया करते थे सालिम का नियम था कि फैजूके मकानपर जाकर बैठाकरता था इसी कारण मैने उसका नामलिया। प्र०—पादरीसाहब को शर्बत में जहरके डालनेसे क्यागर्जथी? उ०—फैजूका मकान रेजीडंसीके अहातेमें था मनुष्यबहुधा उसकेमकान में जाकरबैठा करतेथे। प्र०—क्यातुमने इसीकारण उसपर दोष लगाया?

उ०—रैयोडक्षी के सम्पूर्ण नौकरों ने उसका नामलिया था इस-लिये मैंनेभी उसका नामलिखाया। प्र०—केवल इसी कारण तुमने विचार किया कि तुम्हारे इज़हारभी और गवाहों के अनुकूल हों? उ०—हां। प्र०—तुम जानते थे कि वह बयान तुम्हारा बिल्कुल गलतथा? उ०—हां मैंनेझूठ वर्णन कियाथा। प्र०—मालूम होता है कि तुमने और रावजी ने इसबात का सम्मत कियाथाकि फैजूको भी अपराधी बनावें? उ०—हमने सम्मत नहीं किया। प्र०—तुम जानतेथे कि रावजीने ऐसाही बयानकिया है? उ०—सम्पूर्ण नौकरोंने ऐसाही बयान किया था। प्र०—क्या रावजीसे और तुमसे इज़हार के पहिले कुछ वार्त्ता हुई थी? उ०—नहीं वह मेरे इज़हारके पहिले क़ैद होगयाथा। प्र०—मगर वह इसतारीख़ से पहिले क़ैद नहीं हुआ था तुम को क्योंकर मालूम हुआ कि और नौकरों ने फैजकानामलिया था? उ०—अब्दुल्ला और पेडरू और एक मुसल्मान मज़दूरने फैजका नामलियाथा। प्र०—मैं विचारता हूं कि तुम नहीं जानते थे कि रावजी और और नौकरोंने महाराजासाहबको इसी अपराधमें संयुक्तकिया है? उ०—मैं न जानताथा। प्र०—परन्तु हमजानतेहैं कि तुमजानते थे कि रावजीने महाराजासाहबको अपराधमें संयुक्त किया? उ० नहीं। प्र०—मैं समझताहूं कि जोकुछ तुमने आज वर्णनकिया वह सबसचहै और सिवायसचके और तुमने कुछ बयाननहीं किया? उ०—हां आज सिवाय सचके मैंने और कुछ बयान नहीं किया--इसके अनन्तर कमीशनके अधिष्ठाता टिफनखाने खानेके वास्ते उठे टिफनके उपरान्त मेम्बरान् कमीशन फिर समाज में सुशोभित हुये तो सरजम्स बेलन टायन साहब नरसू गवाह से फिर प्रश्न करने लगे। प्र०—तुम से और महाराजा साहबसे सब कै दफे मुलाक़ात हुई? उ०—पांच क्षः दफा। प्र०—यह तुमको भलेप्रकार स्मर्णहै परन्तु ठीककर बताओ? उ०—शायद पांचबेर हुई होगी। प्र०—मेहरबानी

करके मेरे प्रश्नका स्पष्ट उत्तर दो मैं शायद नहीं जानता ? उ०—मैं जानता हूं कि पांच दफा। प्र०—हांमैं भी ऐसा ही जानता हूं परन्तु जबप्रथम तीनबेर महाराजा साहब से भेंट हुई थी तो विषका जिक्र आयाथा या नहीं ? उ०—नहीं। प्र०—जब तुम्हारी चौथीबेर महाराजा साहबसे मुलाक़ातहुई थी तो उसदिन कौन२ मनुष्यथा ? उ०—यशवन्तराव और सालिम और महाराजा साहब रावजी और मैंथा। प्र०—इस मुलाक़ात में यह बात ठहरागई थी कि यह पुड़िया तुमको भेजीजावेगी ? उ०—हां। प्र०—अगर यादहोतो महीनाऔर तारीख़ बयानकरो ? उ०—मुझको न तारीख़ स्मर्ण है न महीना प्र०—जोमहीना नहीं कहसको तो यहबात बताओ कि विषदिये जानेके कितने पहिले यह बात्ता हुई थी ? उ०-एक पुडिया २५ दिन पहिले और दूसरी पुडिया सात आठ दिन पहिले। सरजन्टबेलनटायन साहबने मुतरज्जिमसे कहा किशायद तुम सही२ तर्जुमा नहीं कहते यद्यपि मैं तुम्हारी भाषाको नहीं जानता परन्तुमुझको ऐसाहीमालूम होताहै मुतरज्जिम करसट जीने उत्तरदिया किमेरा अफ़्सरमुतरज्जिम मेरी ओरसे उत्तर देताहै उससे पूछिये मैनेतर्जुमा गलत कियाथा सही सरजण्ट बेलनटायन साहबने कहा कि गवाहसे पूछो कि जबपहिली बेरविषका वर्णनहुआ तोभलेप्रकार समझाया कि साहबको जहरदेनेका यहजिक्र है ? उ०—हां। प्र०—क्यापहिली बेर तुम्हारे सन्मुख ऐसावर्णन हुआथा ? उ०-हां। प्र०—तुम्हारे रूबरू पहिलीबेर वहवर्णन हुआ था ? उ०—हां मेरे रूबरू प्रथमबेर यह वर्णन हुआथा शायद रावजी के रूबरू इससे पेश्तरभी हुवा होगा। प्र०-तुम महाराजा साहबकी मुला-क़ातके वास्तेफिर भी गयेथे ? उ०-दसहरेकी छुट्टियोंमें जब कि दूसरीपुड़िया मुझकोमिली थी गयाथा। प्र०—इससेमा-लूमहोता हैकि चौथी मुलाक़ातपर तुमकोएक पुड़ियादीगई और एक पुड़िया पांचवीं मुलाक़ात पर ? उ०—हां साहब।

प्र०—जब चौथी मुलाक़ात पर तुमको पुड़ियां दीगई थी और उससे कुछ फलनहुआ तो तुमको पांचवींमुलाक़ात परपुड़िया दीगई ? उ०—हां महाराजासाहब मुझपर क्रोधितहुये और दूसरीपुड़िया मुझको दी। प्र०—अब तुम मुझसे कहोकि जब अन्तकी बेर करनैलफियर साहब को विष दिया गया उससे कैदिन पहिले महाराजा साहबसे तुम्हारी मुलाक़ात हुई ? उ०—पांच या सात दिन पहिले परन्तु मुझेभले प्रकार याद नहीं। प्र०—तुमनेरावजीसे पूछाथा कितुमको जो चौथोमुलाक़ातमें पुड़ियामिली उसकोतुमने क्याकिया ? उ०—हां मैंने पूछाथा क्योंकि सालिम मुझसे रोजपूछा करता था रावजीने मुझसेकहा कि मैंने पुड़ियाको डाल दिया मगरकुछ कारगरनहीं हुई इसको मैं क्याकरूं। प्र०—जब तुम्हारे हाकिम को विषदिया जाताथा तो तुमनेकुछ इन्कार किया था ? उ० किसकेरूबरू। प्र०-रावजीसे ? उ०-नहीं। प्र०-तुमकहतेहोकि रावजीने तुमको फोड़ा दिखाया था क्याउसने यह फोड़ामहाराजासाहबकी अन्तमभेंटके पहिलेदिखायाथा वामुलाक़ातके पीछे ? उ०—पहिले या पीछे मुझको याद नहीं। प्र०—जो शीशी रावजीको दीगई थी वह तुमने देखी थी ? उ०—एक शीशी सन्दूकके नीचेअंगले में रक्खीहुई देखी थी। प्र०—जब वहदीगई थी तुमनेशीशीको देतेहुये देखा था ? उ०— कुछ दियाथा मैंने भलीभांति नहींदेखा थाकि पुड़ियाथी या शीशीथी मैं आगेया और रावजी पीछे खड़ा था। प्र०—पुड़िया थी या नहीं ? उ०—मैंनहीं कहसक्ताकि पुड़ियाथी या नहीं यह तुम्हारा बयान अन्तकीबेर का है ? उ०—हां। प्र०—तुमने पूछा थाकि रावजीने उसकोक्या दिया ? उ०—मुझको याद नहींकि मैंनेउससे पूछाहो परन्तु मुझको यादहै कि रावजी नेवहफोड़ा जो उसके उदरपर होगयाथा मुझकोदिखायाथा। प्र०—इसशीशीके सिवायतुमने कोईशीशी औरभी देखीथी ? उ० नहीं। प्र०—तुमसे रावजीने कहाथा किशीशीका इस्तेमालमैंने

किया? उ०—यह मुझको याद नहीं कि उसने इक़्तेमाल करने का ज़िक्र मुझसे किया या नहीं॥

ऐडवकेट जनरल ने नरसू के दूसरी बेर
इज़हार लिये॥

प्र०—तुमने अभी सरजान्ह मेलनटायन साहबसे कहा कि शीशी बंगलेमें संदूकके नीचे रहा करती थी? उ०—हां। प्र०—तुम्हारी गर्ज़ बंगलेके कहनेसे रजोडन्सीका मकान है? उ०—हां प्र०—यह शीशी तुमने देखीथी? उ०—मैने खुद देखी थी। प्र० तुमको स्मर्ण है कि तुमने वह शीशी पहिली बेर कब देखीथी? उ० एकबेर देखी थी भले प्रकार स्मर्ण नहीं कि कब देखी थी। प्र० तुमको स्मर्ण है कि किस समय तुमने यह शीशी देखीथी? उ० रावजीने मुझको शीशी दिखाई थी और कहाथा कि इसमें दवा डालकर और पानीमें मिलाकर शर्बतमें डाली जावेगी। प्र० ९ नवम्बरसे कितने दिन पहिले तुमको शीशी दिखाई थी? उ० मुझको भलीभांति स्मर्ण नहीं। प्र०—तुम कहते हो कि मुझको स्मर्ण नहीं है कि रावजी और रजीडन्सीके नौकरोंने महाराजा साहबपर जुर्म साबित करना चाहाथा या नहीं? उ०—हां मैं कहता हूं कि मैं नहीं जानता। प्र०—तुमको मालूम है कि कमीशन के रूबरू किस किस मनुष्य के इज़हार लिये गये? उ०—मैं पहिरेमें था और आजपहिरेसे निकलाहूं मुझको किसभांति मालूम होता। प्र०—तुमसे किसी मनुष्यने कहा कि किसगवाहके इज़हार होचुके हैं? उ०—नहीं मेरे निकट कोई मनुष्य नहीं आनेपाता था दूरसे मुझको रोटी फेंकी जाया करती थी (प्रश्न सरदिनकराव का) तुम ३४ वर्षके नौकर हो कमीशनके बैठनेसे पहिले भी तुम कभी महाराजा साहबके सम्मुख गये थे उ०—मैं कभी नहीं गया जब इससे पहिले कमीशन बैठी थी उस समयसे मैने महाराजा साहब के निकट जाना आरम्भ किया (प्रश्न सरदिनकरराव का) तुम खाण्डेरावके निकट भी दसहरे के पारितोषक लेनेके लिये जाया करते थे? उ०—नहीं प्र०—क्या

तुमठीक २ वर्णन करतेहो ? उ०—हांठीक २ वर्णन करताहूं
उससमयमें पारितोषक देनेका क़ायदा दरबारमें नथा थोड़े
से सरदार पारितोषक दियाकरते थे। प्र०—जब महाराजा
साहबने तुमको बिषदेने के लियेबहकाया था और तुमजानते
थे कि यहबात बहुतबुरीहै तो तुमने अपनेपरिवारके लियेकुछ
प्रबन्धकरलियाथा ? उ०—मैंमहाराजासाहबकी जबानीप्रतिज्ञा
परस्थिररहा। प्र०—तुमजानतेहोकि किसीमनुष्यको विषदेना
बड़ा अपराधहैसोमहाराजासाहब दसबारहमनुष्योंके रूबरू क्यों
कर ऐसीबार्त्ता करते ? उ०—दसबारह मनुष्यनथे केवलदोही
मनुष्य थे अर्थात् मैं और रावजी। प्र०—जितनी संखिया दी
गईथी वहकमथी वा अधिकथी और क्यातीनबेर दीगई ? उ०
मैने अपनेआयु भरमें कभीकिसी को संखिया नहीदी मैनेराव-
जीको संखिया देदीथी। प्र०—जब महाराजासाहब से पहिले
तुम्हारीभेटहुई थी तो महाराजासाहब ने तुमको लुच्चा कहा
था पसलुच्चाकहने परभीतुमको ऐसामुआमला सुपुर्द करते
उ०—रावजीने समझादियाथाकि अबलुचपन नकरेगा इसी
हेतु यह कार्य्यमुझको सौंपागया। प्र०—तुम हिन्दूहो ? उ०
हां प्र०-कौनहिन्दूहो तुम्हारीक्याजातिहै। उ०-तिलंगीकमाती
हिंदूहूं। प्र०—तुमको पुलिसका भयहै ? उ०—किस वास्ते।
प्र०—सचकहनेके वास्ते ? उ०—सचके कहनेमें क्याभय करना
चाहिये। प्र०—तुमको विश्वासहै कितुमअपराधी हो ? उ०
मेरीदुर्भाग्यता हैकि मेराभीइस बातसे सम्बन्धहै मैंक्या करूं
मेरी अभाग्यता। प्र०—यदि सरकार तुम्हारा अपराध क्षमा
करेगीतो ईश्वरको वर्त्तमान और साक्षीदेकर सच कहोगे ?
उ०—सरकार चाहे क्षमा करे वान करेसरकार मेरी माता
पिताहै जोचाहेसोकरे। प्रश्न मिस्टरमैलवल साहबका॥ यदिस-
रकार तुम्हारा अपराध क्षमा करदेते और भी तुमसच कहो ?
उ०—मैं इससमय भी सचकहरहा हूं इससेअधिक और क्या
सचकहूंगा। प्रश्न सरदिनकररावका। भलाजो सरकार तुम्हारा

अपराधक्षमा करदे तो जो कुछबाक़ी रहगया हो वहभी वर्णन करोगे? उ०—इससे बढ़कर और क्या सचकहूंगा उससमयसे मैं सचकह रहाहूं सरकारमेरी मातापिताहैं चाहेफांसी देदें ॥

प्रश्न सरदिनकरराव का—जिसमनुष्यके पासतुमने ३५ वर्ष नौकरीकी तुमनेउसीको विषदेना चाहाजो कुछतुमको और सचकहनाहो ईश्वरको वर्त्तमान समझकर वर्णनकरो? उ० मुझको भयनहीं है मैं सचकहता हूं और परमेश्वर को वर्त्तमान समझता हूं ॥

प्रेसीडेण्ट साहबने मुतरज्जिम से कहाकि तुमने गवाहसे यहकहाहै कि तुमईश्वरको वर्त्तमानसमझकर सचकहो मुतरज्जिमसाहबने उत्तरदिया हां और गवाहने भीकहाकि ईश्वर कोवर्त्तमान समझकर सचकहता हूं ॥

इज़हार जुग्गा भगवान गवाह ॥

जुग्गागवाह बुलायागया और मिस्टर अनवरारटी साहबने उसके इज़हारलिये उसनेवर्णन कियाकि रजीडन्सीकापंखेवाला हूं मैंरावजी हवालदार और नरसू जमादार को जानताहूं मैं सालिम और यशवन्तराव को भी जानताहूं यशवन्तराव का मकानभी जानताहूं शहरमेंउसकाघरहै रावजीकेसाथ मैंदो तीनबेर गयाथा जबमैं यशवन्तरावके घरगया तो उसकेकारकुन ने मुझको पांचसौरुपये दियेथे सौरुपये मेरेपास रखवाये गये औरचारसौरुपयेरावजीहवालदारलेगयेथेयशवन्तरावकेकारकुनने यहरुपये रावजीको दियेथे पहिलीबेर जबरावजी महाराजासाहबके पासगयेथे इसको चौदह या पन्द्रहमहीने हुये होंगे दूसरीबेर जब मैं रावजीके साथगया तो पहिलीबेर से सातआठ महीनेकेपीछे गयाथा उससमय रातके सात वाआठ बजे होंगे मैंनेयशवन्तराव और रावजी और सालिम औरनरसू जमादारको वहांदेखाथा जबहमलोग वहांपहुंचे तोमुझकोनीचे छोड़गये और सबलोग ऊपरचलेगयेयहलोग नजरबाग के मार्गसेगयेथे दोघण्टेके पश्चात्यहलोग ऊपरसे उतरेमुझको

केवलएकही बेररुपया मिला (गवाहको एककाग़ज दिखाया गया उसनेस्वीकार कियायह मेरालिखाहुवा है गवाहसे कहा गयाकि इसको तुमपढ़ो) गवाहने कहा कि मैंने यह काग़ज नरसूजमादार और रावजी हवालदारके कहनेसे लिखाथा जोकुछ वहबतलातेथे मैं लिखाकरताथा- लिखकर कभीतो मैं नरसूको देता और कभी रावजीको॥

ऐडवकेटजनरलने प्रेजीडण्टसाहबसे कहा कि माईलार्ड यह चिट्ठी गवाहीकी तौरपर मंजूरकी जाय इस शर्त्तपर कि सरजन्टबेलनटायनसाहब स्वीकार करें यह चिट्ठी सालिमके घरसे मिलीथी सरजन्टबेलनटायनसाहबने स्वीकारकिया और साहब प्रेजीडण्टकी आज्ञानुकूल यहचिट्ठी गवाहीमें दाखिल की गई इसचिट्ठीपर हर्फ (एक्स) का चिन्ह दियागया॥

मिस्टर अनवरारटीसाहबने नीचेलिखीहुई चिट्ठीका तर्ज्जु-मा पढ़ा॥

आज भावपूनाकर आया और उसनेसाहबसे वर्णनकिया कि महाराजने एक नई जोरूकीहै उसका नाम गङ्गाबाई है उसका पिताघोबीथा महाराजने आज्ञादी है कि सातहजार रुपया नजरानामहूनमोहालसे उसकोदियेजावें और वह मनु-ष्यनालिशकरने को आये हैं परन्तु किसीने उनकीनालिश न सुनी—दूसरे-बापूसाहब गायकवार आयेथे साहबने पूछाकि तुम कैसे हो उन्होंने कहाकि साहबके आशीर्वाद से अच्छा हूं—तिसपीछे साहबने पूछाकि तुमअपने कार्य्यकेलिये दादा भाई और शिवदीन(शायदशहाबुद्दीन) के पासजातेहो—बापू साहबने सुनकर उत्तरदिया मेरे जाने की उनके पास क्या आवश्यकताथी—जबतक आपवर्त्तमान हैं मैं किसी को कुछ नहीं समझता वहलोग नीति औप्रबन्धसे अज्ञानहैं वहलोग परस्पर बैठ २ कर मशवरह कर लिया करते हैं॥

तीसरे भावपूनाकरने साहबसेकहा कि तोपोंका शब्दसुन करलोगअति प्रसन्नहुये और परस्परएकत्रहोकर कहने लगे

किकोई बड़ासाहबआया है और खुशहुये कि अबहमारीदाद फ़रयाद सुनी जावेगी—साहबने कहाकियह जनरलसाहब हैं जो अहमदाबाद से पलटनके अवलोकन के लिये आये हैं॥

चौथे—रखमाबाईके भाई ने अरज़ीदी है कि मेरी बहिन मुझको मिले—साहब उससे अतिप्रसन्न हुये॥

पांचवें—मैं कल आऊंगा और अपने साथ कशासणी को लाऊंगा सालिमको भेजदीजिये॥

दो चिट्ठी और भी उस गवाहको दिखाईगईं उसने कहा कि मैं इनको नहीं जानता न मेरीलिखीहुई हैं सरजन्टबेलन-टायनसाहबने कहाकि मुझको इसगवाहसे कुछसवालकरना नहीं हैं॥

साहब ऐडवकेट जनरलने कहाकि मैंने कुछ काग़ज़ दर-बारह करनैलसाहब के मंगवा ने का वाइदा कियाथा और गवर्न्मेण्टको तारबर्क़ी भेजीथी परन्तु उनकाग़ज़ों के आनेमें किसी प्रकार की दिक़्क़तहै—शायदगवर्नमेण्टके दफ़्तरसे वह काग़ज़ न मिले—सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा कि मैंने आपपर ज़ाहिरकर दिया है कि मैं कोई ऐसी बातपेश नहीं करनाचाहता जिससे बदमज़गीहो मैं उसकाग़ज़की नक़ल दूंगा अगर करनैलफ़ियरसाहब उसको पढ़कर कहें कि यह नकलसही हैतो काफ़ीहोगा—दुबारहकरनैलफ़ियर साहबके इज़हार की ज़रूरत न होगी—साहबप्रेज़ीडण्ट ने कहा कि यह बात बहुत मुनासिबहै—जबकि करनैल फ़ियरसाहब उस को देखकर मानलें तो वही नकल कमीशन के अधिष्ठाताओं को देदी जावे॥

कारभाई अमानसिंह गवाहके इज़हार॥

कारभाई अमानसिंह बुलायागया और ऐडवकेट जनर-लने उसके इज़हार लिये उसनेवर्णनकिया कि मैं पंखेवाला हूं पिछले वर्ष पंखेवालोंमें नौकरनथा परइसीवर्ष में नौकर हुआहूं घोड़ासियोंके हवालदारको मैंजानताहूं मैं रात्रिके

समय कईबेर नगरको उसकेसाथगया था मुझे ऐसा स्मर्ण है किपांचछः बेरमैं नगरमें गयाहूं परन्तु यह स्मर्ण नहीं कि कितने दिनबीते-जबवह महाराजाके पासजाता तोप्रथमयश-वन्तरावके मकानपर जाया करता मैं नहीं कहसक्ता कि कै मरतबे महाराजासाहबके पासउनके साथगया जबवह लोग महाराजा साहबके पासऊपरके मकान को जातेतो मुझको नीचेछोड़जाते थे ॥

साहबप्रेजीडण्टनेपूछा कि कौन२ मनुष्यतुम्हारे साथजाया करतेथे—गवाहनेकहा कि रावजी—सालिम—नरसूजमादार और यशवन्तराव—जायाकरतेथे ॥

सरजनृवेलन टायनसाहबके प्रश्न ॥

रजीडन्सीमें कितने दिनतक तुमपंखेवालोंमें नौकररहे ? उ०—अन्तकीबेर पन्द्रहबीस दिननौकररहा परन्तु मैंपहिलेभी नौकर रहचुकाहूं। प्र०—मेरा मतलब यहहै कि तुम कितने दिनोंतक पंखेवालेरहे ? उ०—मैंदोबेर रहाएकबेर एकमहीने और दूसरीबेर पन्द्रह या बीसरोजतक। प्र०—पहिलीबेर तुम किसमौकहतेहो ? उ०—जबपंखे चलनेशुरूहुयेथे। प्र०—कोई तारीखबताओ कबचलना शुरूहुयेथे ? उ०—होलीकी छुट्टियों केपीछे। प्र०—आखीर होलीकी छुट्टियोंकेपीछे ? उ०—हां। प्र०—तुमकहतेहो कि मैंएक महीने तक नौकररहा ? उ० हां। प्र०—दूसरीबेर कबनौकर हुये ? उ०—जबपंखेका मौसम पूर्णहोने वालाथा। प्र०—नौकर होनेसे पहिले रावजी और नरसूको जानतेथे ? उ०—हांमैं जानताथा। प्र०—तुमसौगन्द खासक्तेहो ? उ०—हां। प्र०—नौकरीसे पहिलेभी उनकोजान-तेथे ? उ०—हां—परन्तु जबनौकर हुवा उनको जियादहजानने लगा। प्र०—तुमनेमिस्टर सूटरसाहबके रूबरूबयान कियाथा कि तुमकभी सीढ़ाके नीचे ठहरतेथे और कभीजीनेके ऊपर जातेथे क्यायहबात ठीकहै ? उ०—हांठीकहै। प्र०—तुमकबसे हवालातमें हो ? उ०—ढाई महीने हुये। प्र०—किसहेतु से

तुम हवालात में हो ? उ०—गवाही देने के लिये। प्र०—तुमने सब कहा इसलिये तुम क़ैद किये गये ? उ०—हां। प्र०—तुम खानसाहब की हिरासत में कै रोज़ रहे ? उ०—तीन दिन—इसके उपरान्त सूटर साहब के पास रहा। प्र०—जो कुछ तुमने वर्णन किया उसको कबूल कराते हुये तीन दिन खानसाहब को लगे ? उ० उन्होंने मुझसे एक रोज़ कुछ भी नहीं कहा। प्र०—तुम्हारे साथ जुग्गा भी रहता था ? उ०—मैंने उसको नहीं देखा मैं अकेला रहा करता था। प्र०—तुमने जुग्गा का बयान सुनकर अपना इज़हार दिया था ? उ०—नहीं। प्र०—क्या जुग्गा भी क़ैद था ? उ०—हां॥

सवालात जो साहब ऐडवकेट जनरल ने किये॥

प्र०—पहिले दिन तुमसे किसी ने कुछ नहीं पूछा और तुमको तुम्हारे घर जाने दिया ? उ०—मुझसे संध्या के समय पूछा गया था परन्तु घर जाने की आज्ञा हो गई थी। प्र०—दूसरे दिन भी तुमसे कुछ पूछा गया था ? उ०—मुझसे कुछ नहीं पूछा गया। प्र० तीसरे दिन तुमने मिस्टर सूटर साहब के सन्मुख कुछ इज़हार दिया था ? उ०—हां। प्र०—उसी समय से तुम पहिरे में हो उ०—नहीं दूसरे दिन से। प्र०—उस वक्त से तुम बराबर पहिरे में हो ? उ०—हां जबसे कि महाराजा साहब पकड़े गये हैं उसके दूसरे दिन से॥

इसके अनन्तर साहब ऐडवकेट जनरल ने कहा कि अब चार बज गये हैं साहब प्रेज़ीडेण्ट ने कहा कि अब अदालत कल जमा होगी॥

दसवें दिन का इजलास॥

आज के दिन नियमानुकूल कमीशन के अधिष्ठाता ११ बजे के समय आये—परन्तु श्रीयुत महाराजा सेंधिया और मल्हरराव न आये सरल्यू इसपीली साहब मध्यान्ह से पहिले आये थे परन्तु मध्यान्ह के पश्चात् नहीं आये इज़हार दाजीबा नरोत्तम गवाह

केआरम्भहुये उसकेइजहार मिस्टर अनवरारटोसाहबने लिये उसनेवर्णन किया कि मैंकुम्हारहूं रेजीडन्सीके रावजी हवालदारको जानताहूं—दिवालीसे पहिले उसनेमुझसे कुछ जेवर केबनवानेके वास्तेकहाथा सोमैंने उसकेसाथ जाकरशिवलाल सुनारका मकान बता दिया—नीचे विस्तृत आभूषण बनवाये गये थे॥

एकजोड़ी पाओंके कड़ोंकी—एक कण्ठी—एकजोड़ी कंगन, टोस्वर्णके छल्ले जिनका वजनएकतोला—एककरधनी लड़केकी, एकजोड़ी कड़ेकी लड़कीके पांउकी—कातिकके महीने सेइस आभूषणके बननेका प्रारम्भहुआथाजो २ वस्तुतय्यार होतीगई रावजीको मिलती गई—अदालतमें जोपेशहै सुनार का असबाबहै॥

साहब प्रेजीडण्टने सरजन्टबेलन टायन साहबसे पूछा कि आपको इसहिसाबके दाखिल होनेमें कुछइन्कारहै उन्होंने उत्तरदिया कि नहीं परन्तु सुनारइस हिसाबको तसदीक के वास्ते बुलायाजाय॥

सरजन्टबेलन टायनसाहबके प्रश्न॥

प्र०—क्याकारणहै कि रावजीने यहआभूषण तुम्हारेद्वारा बनवाया? उ०—मैं नगरके भीतर रहता था और रावजीने मुझसे पूछाकितुम किसी सुनार को जानतेहो मैंने कहाहां जानताहूं। प्र०—यहसुनारकहांरहता है? उ०—सड़कपर पीपलके वृक्षके नीचेरहताहै। प्र०—क्याउस जगह रावजीभी रहताहै? उ०—नहींवह शहरमें नहींरहता है॥

इजहार शिवलाल बनिल॥

शिवलाल बनिलबुलायागया औरएडवकेट जनरलनेउसके इजहार लियेउसने कहाकि मैं सुनारहूं मेरामकान गणपत राव महादेवके मकान के निकट है अर्थात् उस सड़कपरजो नगरके बाहरहैमैं कम्पूमें नहीं रहता हूं मैंउजोबा नरोत्तम को जानताहूं उससेमेरी जान पहिचानहै उसने कुछ जेवर

किसी शख़्स के वास्ते बनवाया था जिसके वास्ते यह आभूषण बनाया एकपट्टे वालाहै रावजी उसकानामहै वहसाहब के पासरेज़ीडन्सी मेंनौकर था मेराहिसाब वहीसे मालूम होगा किमैंने क्या२ उसका जेवर बनायाहैयह मेरीही हिसाबवही है जो रक्खीहै लिखना पढ़नामैं नहीं जानता दूसरे मनुष्य से लिखवालिया करता था॥

प्रश्नऐडवकेट जनरलका-तुमजोलिखनापढ़ना नहीं जानते तोतुम अपनेसब हिसाब ज़बानीयाद रखतेहोगे गवाहनेबयान कियाकि मैंयहहिसाब नहींपढ़सक्ता आपहीपढ़िये याकिसी औरसे पढ़वाइये औरकहाकि दिवालीसे पहिले रावजीनेएक जोड़ीपांवके कड़ेको एककंठी एकजोड़ा कंगन और कई वस्तु बनवाईथी जोजो वस्तुबनीथीरावजीके पासभेजदेताथा मुझको स्मर्णनहींकि दिवालीके दसपन्द्रहदिनपहिले यहजेवरबनगया था बादिवालीके उपरान्त तकबना जो जेवर कि इससमय यहां वर्त्तमानहै उसमेंएक जंजीरसोनेकी नहींहै जोमैंने बनाई थी तीनसौया चारसौ पचहत्तर रुपयेका जेवर बनायाथा मुझको ज़बानी यादनहीं हिसाबमेंलिखाहै मुझको सबरुपया मजदूरी समेत मिलगया—सरजन्ट बैलनटायन साहबनेकहाकि मुझको इस गवाहसे कुछ नहीं पूछना है॥

इज़हार दुवल मज़दार॥

इसमनुष्यके इज़हार मिस्टरअनवराटो साहबनेलिये उसने वर्णनकिया किमैं सुनारहूं औररावजी कोजानताहूं मैं और रावजी एकहीबाजारमेंरहतेथे मैंनेरावजीकेवास्तेचार चीजें बनाईथीं उनकानाम कुरतीहै वहकानमें पहिनेजातेहैं और इसजेवर को जंजीरेंभी बनाईथीं इसकेविशेषकुछ जंजीरें और भीकानोंके वास्तेबनाई थीं जितनारुपया मैने रावजीसे पाया उसका हिसाब मेरेनिकटहै यहवहीजो रक्खीहै मेरे हिसाब कीहै। प्र०—देखोग्यारहवीं अषाढ़ सुदीमें क्यालिखाहै ?उ० जब ग्यारहवीं आषाढ सुदी तिथिलिखी है कहीं सम्वत् नहीं

लिखा—शायद १९३० सम्बत होगा-इसमें कुछ रकमें लिखीहैं जिसका जोड़ ११॥) है इसके सिवायऔरभीकई रकमें नीचे लिखीहैं—आषाढ़बदी सप्तमीमें २०) फिर २०) लिखेहैं आषाढ़ बदी नवमीको २०) फिर ६०) सोनेकी जञ्जीरोंके वास्ते दिये गयेथे दसवींतारीखको ८) रु० और दियेगये मैंनेसब १९॥) रु० पायेथे सोमैंने रावजी के वास्ते दोकल्ले-दोबाले दो कानोंकी जंजीरेंबनाई थीं—सरजन्हवेलनटायन साहबने कहा कि इस गवाह से मुझको कुछसवाल नहीं करनाहै॥

दलपतगोविन्दराम का इज़हार॥

दलपतगोविन्दराम बुलायागया और ऐडवकेटजनरलने उस के इज़हारलिये उसने कहा कि मैं यशवन्तराव को जानता हूं वहगायकवारका नौकरहै मैं उसकेपास सवातीन वर्षसे नौकरथा सन्दूक आदिकी कुञ्जियां मेरे निकटरहाकरतीथीं जोकुछ वह कहताथा मैं कियाकरताथा मैं उसकाकारकुन था मैं जुग्गा और रावजी को पहिचानता हूं यदि वह मेरे सम्मुखआवें तोमैं शीघ्रही पहिचानलूंगा सो अदालतनेउनको बुलाया—गवाहने कहाकि यशवन्तरावको मैंने एकमर्त्तबा या बारह या चौदहमहीने हुयेथे देखा था उससमय देखायाकि रात्रि के समय आठबजे मेरे मकानपर दोनों आये थे और पांचसौ रुपया सिक्काबड़ौदे के यशवन्तरावकी आज्ञाके अनुसार रावजी और जुग्गाको दियेथे उससमय यशवन्तराव मकान के ऊपरथे—सरजन्हवेलनटायनसाहबने कहाकि मुझको इस गवाहसे कोई सवालनहीं करनाहै॥

छगनलालदामोदर दासगवाह का इज़हार॥

इस मनुष्य के इज़हार मिस्टर अनवरारटी साहबने लिये उसनेवर्णन कियाकि मैं इज़ाराफौजदारी बड़ौदेका नौकरहूं मैं सालिमको जानताहूं वह गायकवारका नौकरहै जिसदिन गायकवारके पुलिसका गार्ड उसके मकानपर नियतहुआथा शायद तारीख २३ दिसम्बर थी दिनमुझको यादनहीं गार्ड

के नियतहोने से एकदिन पहिले उसके मकानपर हुरमुसजी अरदासियर बद्याके साथमैंगया यह हुजूर फौजदारथे और मकानको तलाशीलेने कें वास्ते गयेथे बम्बईके पुलिसका एक हवालदारभी साथथा इसबातके कहनेपर मोरइमाम अली-हवालदार अदालतमें बुलायेगये गवाहने कहा यही मनुष्य उसदिन हमारेसाथगयाथा—हजूर फौजदार गायकवार की सरकार में नौकर थे जब सालिम के घरकी तलाशी लोगई तो एकरूमालमें कुछ कागज बन्धेहुये मिले उनकागजों को हजूरफौजदार अपनेमकान पर लेगये और उनको बन्दकरके मोहरलगादी और उसपर एकटिकटलगाकर लिखदियाकि यहकागज सालिमके मकानसे निकलेगवाह को एकरूमाल दिखाकर पूछागयाकिवह रूमालयहीथा गवाहनेकहाकिमैं अच्छीतरह नहींकहसक्ता कि यहीथा तिसपीछे फिर उससे कहागया कितुमभले प्रकारध्यान सेदेखो कियही रूमाल है जबगवाहने ग़ौरसे देखातो कहाकि हां वह रूमाल यही है सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहा कि मुझको इस गवाह से कोई सवाल नहीं करना है ॥

इज़हार मीर इमाम अली गवाह ॥

मीरइमाम अलीके इजहार मिस्टर अनवरारटी साहबने लियेउसने बयान किया किमैं बम्बईके पुलिसका हवालदार हूं जब हरमुसजी अरदासियर बद्यासालिमके मकानमें तला-शीके वास्तेगये थेमैं उनके साथ था मेरे रूबरू एकपुलिन्दा कागजोंका मिलाथा इसपुलिन्दे पर उससमय मोहरकरदी गई थी और साहबके दिखाने वास्ते एकपहिरेके साथलाया थायह पुलिन्दा सालिम और मुन्नेभाई के रूबरू खोलागया था जबतक यहपुलिन्दा नहींखोलागया वहपुलिसके पहिरे मेंथा सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहाकि इस गवाहसे मैं कुछ न पूछूंगा ॥

इजहार मुन्नीभाई जसभाई॥

मुन्नीभाई जसभाईजो रेजीडन्सीकेएक हिन्दुस्तानी असि-
स्टण्टहैं बुलाये गये और मिस्टर अनवरारटी साहब ने उनके
इजहारलिये उन्होंनेवर्णन कियाकि २९ नवम्बर को जब कि
इमाम अलीकाग़ज़ोंका एक पुलिन्दालायाथा मैं मौजूद था
इसपुलिन्दे के स्थान २ पर बड़ौदे की फौजदारी के अदालत
की मुहरेंलगीहुईंथीं और एकटिकट चिपकाथा उसमेंलिखा
था कि यह काग़ज़ सालिम के मकान से निकले जिससमय
पुलिन्दा खोलागयां मैं और सालिमवहींथे मैंने इनकाग़ज़ों
को कोईसूचीनहीं बनाई उसमेंसे जितने काग़ज़ निकालकर
अलग रक्खेगये उनकी मैंने फेहरिस्त बनाईथी जो काग़ज़कि
इसवक्त कमीशनमें पेशहै और जिसपर(ऐक्स)अक्षरकाचिह्नहै
उसीपुलिन्देमेंका है उसकीपीठपर मेरेदस्तखतहैं औरजितने
पुलिन्देसे काग़ज़निकालेगयेसबपरमेरेदस्तखतहैं ऐडवकेटजन-
रलने कहा माईलार्ड-मैं चाहताहूं कि यहकाग़ज़ात पढ़ेजावें
सरजन्सबेलनटायन साहबनेकहा कि किसवास्ते पढ़ेजावेंऔर
क्या वजह उनके पढ़ेजानेकी है-ऐडवकेट जनरल ने कहा कि
यह काग़ज़ उसीतरह पढ़ेजावें और अदालतमें दाखिलकिये
जायें जिसतरह कि वहकाग़ज़दाखिलहैं जिसपर कि (ऐक्स)
अक्षरका चिन्हहै. इनसे विदित होताहैकि महाराजा साहब
और रजीडन्सीके नौकरोंमें खतकिताबतथी साहब प्रेसीडण्टने
ऐडवकेटजनरलसे कहाकिआपनेयहप्रतीत कियाकिजिस क़ा-
ग़ज़पर(ऐक्स)अक्षर का चिह्न है उसका लिखने वाला कौनहै
परन्तुयह आपनेसाबित नहींकियाकि इनचिट्ठियोंका लिखने
वालाकौनहै ऐडवकेटजनरलने कहामैं हुजूरके रूबरूयहबात
विनयकरताहूं कियह चिट्ठियां गवाहीकी तौरपर दाखिलहो
सक्तीहैं क्योंकि सालिमरावजी और नरसूबराबर चिट्ठियांलिखा
करतेथे और इसबातका इक़रार किया किमंगल और दफ़-
सतिवार के सिवाय बराबर हम चिट्ठियां भेजा करते थे यदि

सर जान बेलन टायन साहब इस बातका विचार करते हैं कि यह चिट्ठियां वास्तव में उन लोगों की लिखी हुई नहीं हैं किन्तु छल पत्र हैं तो इस बातके सुचित करनेके लिये फिर उपाय किया जावेगा सर जान बेलन टायन साहब ने कहा मेरा उज्र बहुत सा फर्क है प्रथम साबित करना चाहिये कि यह चिट्ठियां उनकी इजाजत से लिखी गईं और किस मनुष्यने लिखीं जबतक इस बात की तसदीक न होगी किस कानूनकी रूसे यह चिट्ठियां शहादत में दाखिल कर सक्ते हैं ऐडवकेट जनरल ने कहा मेरे विचार से यह चिट्ठियां शहादत में दाखिल हो सक्ती हैं साहब प्रेजीडेण्टने कहा आपने अच्छे प्रकार साबित नहीं किया कि यह चिट्ठियां शहादत में दाखिल करनेके काबिल हैं ऐडवकेट जनरल ने कहा पस मालूम हुवा कि हुजूर के विचार से यह चिट्ठियां शहादत में दाखिल करने के काबिल नहीं हैं साहब प्रेजीडेण्टने कहा हां मेरी राय यही है ऐडवकेट जनरल ने कहा आप अपनी याददाश्त में लिखलीजिये साहब प्रेजीडेण्ट ने कहा इसको अपनी याददाश्त में लिखलूंगा परंतु आप जानते हैं कि इस कमीशनकी अपील नहीं है आपको यह कहना न चाहिये था कि मैं अपनी याददाश्त में लिखूं ऐडवकेट जनरल ने कहा मैंने केवल आपसे इसी प्रयोजनसे अर्ज की थी कि मेरी वह गुफ्तगू लिखलेनी चाहिये साहब प्रेजीडेण्ट ने कहा आपको मुझसे ऐसी दरखास्त करना न चाहिये ऐडवकेट जनरल ने कहा जो आपकी राय हो ॥

इजहार भोदरनासी।

भोदरनसी बुलाया गया और मिस्टर अनवरारटी साहबने उसके इजहार लिये उसने बयान किया कि पहिले मैं पट्टेवाला था परन्तु अब मैं रेजीडन्सी का जमादार हूं पिछले बरसों में मेरी तरक्की हुई है १५ दिसम्बर को रावजी का पट्टा मुझको मिस्टर बोनफोर्ड साहब ने जो रेजीडन्सी के एक एसिस्टन्ट थे दिया २५ दिसम्बर तक मेरे पास वह पट्टा रहा यह पट्टा मैं प्रतिसमय अपने निकट रखता था परन्तु जब महलों को जाता तो उसे बांधी

में रक्खजाता था खानसाहबने देखनेके वास्ते मुझसे पट्टामांगा था तथापि मैंने उनके हवाले किया कमीशनमें जोपट्टा रक्खाहै वहीपट्टाहै इसमेंएकजेब है बल्कि उसे जेबनकहा चाहिये उस में तलवार लटकाई जातीहै मैंइसपट्टेकी जेबसे वाक़िफ नहीं हूं सरजबबेलन टायनसाहबने उससे कुछप्रश्न न किये॥

इजहार अकबर अली॥

खानबहादुर अकबरअलीके इजहार मिस्टरअनवरारटोसाहबनेलिये उन्होंने वर्णनकिया किमैं बम्बईकी डकैटिव(सुराग रसां) पुलिसका अफ़सरहूं मैंसूटर साहबके साथइस मुकद्दमे कीतहक़ीकातके वास्तेआयाथा मैंनेयह पेटो २५ दिसम्बरको देखीथी मुझको उसमें एकपुड़िया मिली और प्रथममें रावजी सेमैंने पूछाथाकिजो पुड़िया गायकवारके पाससेलायेथे उनको कहांरक्खा करतेथे उसनेमुझसे कहाकिमैं पेटोकीजेब में रक्खाकरताथा मैंने उससे पूछाकि तुम्हारापट्टा कहांहैउसने कहाकि भोदर के पास है उस समय हमचार मनुष्य मौजूद थे खानबहादुर अब्दुलअली रावबहादुर गजानन्द वतिल और रावजी और जिसस्थान पर मिस्टर सूटर साहब ठहरा करते हैं हम भी उसी जगह अर्थात् रेजीडन्सी के बंगले में ठहरा करते थे जब रावजी का पट्टा भोदर से मंगवाया भोदर उसकोलेकर आयाऔर उसनेअपने गलेसे उतारकर मुझको दिया सरजशट बेलनटायनसाहबने कहाकि मैनेनहीं देखाकि यहलोग क्योंकर पट्टापहिनतेहैं यदिगवाहपहिनकर दिखाये तोदेखूं सोगवाहने पट्टापहिन करदिखाया और बयानकिया किपट्टेवाले इस प्रकारसे पहिनतेहैंजबमैंने भोदरसे पट्टामांगा उसने मुझको उतार कर इस भांति दिया मैंने उसको इधर उधर देखाऔर एक मुकाम पर उसको रावजीने कहा कि मैं पुड़ियोंको उसी जेबमें रक्खाकरताथा जब हरएक जगह पर देखातो मेरी अंगुली एक जगह परचलीगई टटोलनेसे कोई कठोरसीवस्तु मालूम हुई उस समय मैनेंमिस्टर सूटरसाहबको

बुलाया उस पट्टे की एकजेबमें एक मैला कपड़ाथा भोट्रने उसको अपना कपड़ा बताया और एकजेबमें थोड़ासूत थाजब मिस्टरसूटरसाहब आये उनके सन्मुखपुड़िया निकालीगई इस पुड़िया में आटे की भांति कोई सफ़ैद वस्तु थी मिस्टरसूटर साहबने उसको खोल करदेखा औरवह अपने साथ लेगये ॥

सरजन् बेलन टायन साहबके प्रश्न ॥

प्र०—तुमअंगरेजी बोलसक्ते हो? उ०—मैंनहीं बोलसक्ता क्योंकिमैं अंगरेजी नहींजानता। प्र०—सौगन्द खाकर वर्णन करतेहोकि तुमकभी अंगरेजी नहींबोलते? उ०—जबकिअंग रेजीभाषा नहींजानतातो किसतरहबोलसक्ताहूं साहबप्रेजी उन्ह ने कहासीधासाधा जयाबदोकितुमअंगरेजी बिल्कुल् नहीं बोलसक्ते? उ०-नहीं मैं कुछभीअंगरेजी नहीं बोलसक्ता हूं। प्र०—सरजन्ट बेलनटायन साहब (पेटी उठा कर) बोले इसी प्राकिट में तुम कहते होकि पुड़िया मिली थी? उ०—हां। प्र०—जबतुम्हारे पासअव्वल पेटीआई थीतो कहतेहो कियह जेबफटी हुई नथी? उ०—नहीं। प्र०—दिखाओ कि यहजेब तुमनेकहांसे फाड़ीथी? उ०—गवाहने पेटीको उठाकर दिखायाकि उसजगहसे परन्तु यह नहीं कहसक्ता कि कितनी फाड़ीथी। प्र०—मैं यह बातपूछता हूं कि तुमनेजेब कोकिस लियेकाटा था? उ०—मैंने देखाथा किकोई कठोर वस्तुरक्खी है मैंदेखना चाहताथा कि इसमेंक्या वस्तुहै। प्र०—परन्तुतुम कहतेहो कि मैंने सूटरसाहबको बुलालिया था? उ०—हां बाददेखने जेबके। प्र०—परन्तुजब तुमने देखा कि जेबमें एक पुड़ियाहै तो मिस्टरसूटरसाहबके बुलाने की क्या आवश्यकता थी और पेटीके फाड़नेके पीछे सूटरसाहब को तुमने क्यों नहीं बुलाया? उ०—मुझको भलीभांति पुड़िया के होनेका निश्चय नथा। प्र०—परन्तु तुमजानते थेकि कोई वस्तुहै क्योंकि उस-मुक़ाम पर तुम्हारी उंगलियां थी? उ०—हां जानता था कि कोईकठोर वस्तु है परन्तु पुड़िया के होने का विश्वास न था

प्र०-अबतुमने जेबफाड़कर पुड़ियाकोनिकाला यातो उसवक्त भी तुम्हारी जानकारी वैसीही थी जैसी कि पहिलेथी? उ० नहीं उससमय मालूमहोगया था किपुड़ियाहै पहिलेके निस्बत मेरी जानकारी बढ़गईथी। प्र०—सूटर साहब के बुलाने कोक्या अवश्यकता थी जोबुलाना मंजूरथा तोपहिले भलीभांतिमालूम करलेनाचाहिये था? उ०—मैने सूटरसाहबको केवलइस प्रयोजनसे बुलायाथाताकि उसको देखेंकि कोईदवाहै वाक्यावस्तुहै। प्र०—क्यायहबात तुमनहीं जानतेथे कि मिस्टर सूटरसाहब बखूबीनिश्चय करलेंगे और तुम्हारे बयानपर उनकोकुछ शक नहोगा? उ०—रावजीने मुझसेपहिले कहदिया था। प्र०—हां मैंजानताहूं किरावजीने तुमसेकहदिया था परन्तुयह पूछताहूं किजबतुमने पेटीकोफाड़डाला औरतुम्हारी उंगलियां उसजगहथीं जहांसे किपुड़ियानिकलीतो फिरक्या वजहथी कितुमने पुड़िया न निकाली और मिस्टरसूटरसाहब के आनेका इन्तिजारकिया? उ०—रावजीने मुझसेकहाथा किउनपुड़ियों मेंसे जोमुझेमिलीथीं किसीकदर दवाबाक़ीहै। प्र०—मेरेप्रश्नका उत्तरदीजिये कितुमने मिस्टरसूटरसाहबको पुड़ियानिकालने के पहिले किसवास्ते बुलाया? उ०—हां मैनेपुड़िया नहींनिकाली बल्कि मिस्टरसूटरसाहबके आनेका इन्तिजारकिया। प्र०—शायद आपकीयहगर्ज़है किजबतुमने उसपुड़ियाको टटोला तोरावजीनेतुमसेकुछकहा? उ०—नहीं जबमैने पुड़ियाको टटोलातो मैं और रावजी एकहीजगहबैठे थे। प्र०-उससमय तुमने मिस्टरसूटरसाहबकोबुलाया? उ०-हां प्र०—अबतक तुमनेमेरे प्रश्नकाउत्तर नहींदिया अर्थात् तुमने सूटरसाहबको क्योंबुलायाथा? उ०—इस वास्तेबुलायाथा कि वह अपने हाथ से जेबको खोलें। प्र०—क्या यह मतलब था किजब पुड़ियानिकले मिस्टरसूटरसाहब मौजूदहों? उ-हां प्र०—तुम्हारीयह गर्ज़थीकि जिसवक्त पुड़िया निकले तो कोई मनुष्य गवाहकेतौपरमौजूदहो? उ०—हां चूंकि हमारा व-

ड़ा अफ़सर वहां मौजूद था इसलिये मैंने उनको बुला लिया अ-गर न होते तो कुछ आवश्यकता न थी। प्र०-पस तुम्हारी यह नीयत न थी और गवाह होने की किसी की जरूरत न थी? उ०-यदि मुझको गवाह की आवश्यकता होती तो तीन मनुष्य उस समय मौजूद थे। प्र०—वह कौन २ मनुष्य थे? उ०—रावजी। प्र०—परन्तु तुम जानते हो कि रावजी मुअज्ज़िज़ गवाह न था? उ०—खानबहादुर अब्दुल्अली रावबहादुर गजानन्द बिठल और मैं खुद था। प्र०—तुमको पुड़िया मिलने का कुछ ख़याल न था? उ०—नहीं मुझको केवल इतना ही ख़याल था कि इस पेटी से और कुछ पता लगे। प्र०—जब तुमको पुड़िया मिली होगी तो बड़ा आश्चर्य हुवा होगा? उ०—हां जब रावजीने उसका होना पेटीमें बयान किया था। प्र०—रावजीने उस वक़्त जब कि तुमको पुड़िया मिली कुछ बयान नहीं किया? उ०—मुझे उस समय तक पुड़िया में किसी चीज के होने का ख़याल न था। प्र०—तुमको कुछ भी ख़याल था कि इस पेटीमें कागज की पुड़िया मिलेगी? उ० मुझको कुछ सन्देह न था परन्तु पेटीमें कोई कठोर वस्तु विदित हुई थी। प्र०-जेबके फाड़ने बिना तुमको मालूम हो गया कि जेबमें कागज की पुड़िया है? उ०-उस समय तक मुझको मालूम नहीं होता था कि यह कागज की पुड़िया है। प्र०-बहुत से मनुष्य कहते हैं कि तुम बड़े चतुर हो क्या तुमको मालूम नहीं होता था कि कागज की पुड़िया है वा नहीं? उ०-जब मैंने जेबमें सख़्त चीज़ देखी तो मुझको नहीं मालूम होता था कि उसमें क्या वस्तु है। प्र० क्या तुम यह भी नहीं जानते थे कि यह कागज है? उ०-मुझको कागज सा मालूम हुआ था। प्र०—क्या तुमको यह मालूम नहीं हो सक्ता था कि किसी वस्तु पर कागज लिपटा है? उ०-नहीं यह नहीं मालूम होता था कि कागज में कोई वस्तु बन्द है। प्र०—क्या तुम इतना ही उस वक़्त जानते थे कि केवल कागज का टुकड़ा है? उ०—मुझको मालूम नहीं हुआ कि केवल कागज है या कागज किसी वस्तु पर लिपटा हुवा है। प्र०—या कोई पुड़िया समझी इस वास्ते तुम

ने मालूमकरने के लिये जेबको फाड़डाला ? उ०—हां। प्र० तुमनेजेबके फाड़नेके पश्चात् रावजी को बुलाया ? उ०—हांजब रावजी वर्णन करचुका था। प्र०—लेकिन देखोतुमने जेबको फाड़ा और पुड़ियानिकाली क्यातुम्हारी यहगरजहै किराव-जीने उसवक्त तुमसे कुछबयान कियाथा ? उ०—हां उसवक्त बयानकिया था। प्र०—रावजीने उसवक्त तुमसे क्याकहाथा ? उ-०रावजीने मुझसेकहा कि उनपुड़ियोंमेंसे जो मुझको मिली थीं कुछ दवा बाक़ी रहगई थी यह दवाभी उसी मेंसेहै। प्र० सूटरसाहबके आनेकेपहिले तुमनेपूछलियाथा कि इसपुड़िया मेंक्याहै ? उ०—हां जोनपूछता तो किसतरहजेबको फाड़ता। प्र०—यदि तुमरावजी से नसुनते तो जेबको नफाड़ते परन्तु मैं जानताहूं कितुमने मिस्टरसूटर साहबको इसवास्ते बुलायाथा ताकिवहदेखें और दरयाफ्तकरें कि इसजेबमें क्या वस्तु है या तुमखुदरावजीके बयानसे जानतेथे ? उ०—हां। प्र० तुमको राव-जीकी बातपरइतना निश्चयथा कि बगैर पुड़ियाके निकाले सूटर साहबको बुलाया कि वहखुद आकरदेखें कि जेबमें क्याहै ? उ० हां मैनेजेबको नहीं फाड़ा क्योंकिहमारे साहबनिकट थे। प्र० अब बताओ कि रावजीने तुमसेकहा था कि मैने एकपुड़िया अपनी पेटीमें छोड़दी है या तुमने अपनी केवल बुद्धिसेमालूम कियाथा ? उ०—रावजी ने केवल इतनाही कहा था कि मैं जेबमें पुड़िया रक्खा करताथा गवाहने रुककर फिरकहा कि मैने रावजीसे पूछाथा कि तुम्हारीपेटी में जेबहै वा नहीं। प्र० तुमनेरावजी से येह बातकभी नहीं कही कि मैने कुछ हिस्सा विषका रहनेदिया है और एक पुड़िया विषकी पेटी में है ? उ०—यह बात उसने मुझसे नहीं कही। प्र०—रावजी तुम्हारी हिरासतमें कबआया ? उ०—२२ तारीखको आया था। प्र० रावजी को तुम्हारे निकट किसनेभेजा था ? उ०—मैने आपही उसको बुलाया था मैंने खानबहादुर अब्दुल अली, और राव बहादुर, गजानन्दवतिल, को भेजाथा। प्र०—उसको कौनसा-

था ? उ०—एकसिपाही लायाथा ? प्र०—क्या उसने पहिलीमें ही विषदेनेका इकबालकिया ? उ०—पहिलीबेर उसने इकबाल नहीं किया। प्र०—मैं ऐसाही खयाल करता हूं ? उ० खान बहादुर अब्दुलअली और गजानन्द विठलसे उसनेकुछ कहाथा। प्र—० उसरोजके आनेके पहिले तुम्हारेपास कितनी देरवह हिरासत में रहा ? उ०—भोरके आठ बजेसे संध्याके सातबजे पर्य्यन्त। प्र०—वहतुम्हारीरक्षा मेंरहा ? उ०—नहीं। प्र०—तुमने उस क़ीमती चीजको कहां छिपाया था ? उ०—जहां चोर मौकूफ हुये हुये नौकर थे। प्र०—वहकहां थे ? उ०—रावीउन्मोके बागमें अहातेके भीतर रहते थे। प्र०—जब वह तुम्हारे निकटआया तो उसने विषदेने का इकबालकिया ? उ०—हां। प्र०—यही बात ठीक है और कुलबातों की कोइब्तिदा तुमसे है औरतुमको भीइसबातकी इत्तिलानथी ? उ०—रावीउन्मोके नौकर परस्परझगड़ा करतेथे उनकेझगड़ने में यहबात मालूमहुई। प्र०—मेरेप्रश्न का यहउत्तर नहीं मैं यहपूछताहूं कि तुमकोइसबातकी पहिलेसेखबरथीया नहीं ? उ०—उसने मेरे रूबरूअपने आप इक़रारकिया। प्र०—उसके इकरारकरनेके पहिले तुमनेकोईबात किसीसे ऐसी नहींसुनी थी जिससे वह अपराधी होता मिस्टर अकबरअली सावधान होकरबयान करो ? उ०—नहीं मैंने कोईबात ऐसी नहींसुनी थीं केवल इतनाही सुनाथा कि वह रुपया खूबउड़ा रहाहै। प्र०—तुम सौगन्द खासक्तेहो कि तुमने कुछ नहीं सुनाथा ? उ०—किसबात कीकसम खाऊं। प्र०—इस बातकी कि वहभी विषदेनेमें शरीक है ? उ०—मैंने किसीसेनहीं सुनाथा किवह विषदेनेमें संयुक्त है। प्र०—तुमने किसीसे यहभी नहीं सुना था कि उसको विषकी पुड़ियांमिली थीं ? उ०—नहीं। प्र० एकबात भी तुमनेनहीं सुनी ? उ०—नहीं। प्र०—तुमने यहभी नहीं सुनाथा कि उसको विषकी पुड़ियां मिली जबकि उसने तुमसे बयान किया अर्थात् उस जगह जहां वह हिरासत

थेब ? उ०—जब उसनेमुझसे बयानकिया तोमैं उसकेनिकट गयाथा इससेपहिले नहींगया। प्र०—इसके उपरान्तभी वह और नौकरोंके साथकैदरहा ? उ०—नहीं दूसरेकमरेमें कैद रहा। प्र०—तुम कहतेहो कि उसने २२ तारीखको बयान किया ? उ०—हां। प्र०—तुम सौगन्द खासक्ते हो जिसरोजसे कि उसने विषदेनेका इकरारकिया और वहनौकरोंसे अलग रक्खागया ? उ०—२२-तारीख से २८ तारीखतक वह मेरे चार्जमेंथा। प्र०—मैंने तुमसे यहप्रश्न नहींकिया क्यातुमसौगन्दखासक्ते हो२८-तारीखके पीछेयहशख्स औरऔर रजीडन्सी केनौकरोंसे अलगरक्खागया और सबसेअलगरहा ? उ०—हां वहफिर अपने घरको नहीं गया। प्र०—मिस्टर अकबरअली मैंने कभी पहिले हिन्दुस्तानी पुलिस के आदमियों से प्रश्न नहींकिये हैं इङ्गिस्तानमें बहुधा इत्तिफाक हुआहै मेरे प्रश्न का उत्तर दो क्या तुम कसमखासक्ते हो कि २२-तारीखके पीछे जब उसने तुम्हारे सम्मुख इजहार दिये थे उससमयसे रजीडन्सीके और नौकरों के पास नहीं गया यहप्रश्न स्पष्टहै इसका उत्तरदो ? उ०—यहमनुष्य रजीडन्सीके और नौकरों के निकट नहींगया किन्तु वहमेरे चार्ज में था। प्र०—तुम सौगन्ध खासक्ते होकि उसदिन उससेऔर दूसरे किसीरजीडन्सीके नौकरसे बातेंनहीं हुईं ? उ०—मैंनहींकह सक्ताकि उससे किसीकी बातेंहुईं यानहीं परन्तुमेरी आज्ञासे उसपर सिपाहियोंका पहिरानियत कियागयाथा। प्र०—शायद इस सूरतमें और नौकरोंसे बातेंकीहों ? उ०—मैंनहीं जानतामैं क्योंकरकहूं। प्र०—शायद उसनेकीहों ? उ०—मुझको ऐसे खयालकरने कीकोई वजहनहीं है। प्र०—हमकोऐसे खयाल करनेकी कोईवजह नहींहै कि उसनेबातें कीहों ? उ०—मेरी आज्ञाथी कियहशख्स किसीसे वार्त्ताकरने नपाये। प्र०—तुम सौगन्द खासक्तेहो कि तुमने ऐसीआज्ञादीथी कियह किसीसे बातचीत करनेपावे ? उ०—हांमैंने आज्ञादीथी कियहकैदी

किसीसेबातें नकरें परन्तु यहां गवाहका और कहा कि एक बातहुईथी। प्र०—वहक्या बातथी? उ०—इसमनुष्य से और जमादारसे मुकाबिला कराया गया। प्र०—किसने इस मनुष्य को लाकरसामना कराया? उ०—मैंने औरराववहादुर गजानन्दवतिल और खानवहादुर और अब्दुलअलीनेएकसिपाही कोआज्ञादीथी किरावजीको लेआओ। प्र०—जमादारसे उस समयक्याकहाथा? उ०—उससमय वहअब्दुलअली और गजानन्दवतिल मेरेपास उपस्थितथे। प्र०—जबसिपाही रावजीको लाया तोतुमने जमादारका मुकाबिलाकराया यह मुकाबिला किसतरह करायाथा मैं सुनाचाहता हूं? उ०—राववहादुर गजानन्दवतिल और खानवहादुर अब्दुलअली ने जमादारसे कहा कि रावजीनें सबबातोंका इकबालकिया इसवास्ते मैंने रावजीको बलायाहै। प्र०—तुमने जमादारसे प्रथम यहकहा कि तुमलोगोंसे रावजीने इकबाल करलिया है? उ०—हां। प्र०—परन्तु यहभी तुमनेउससे कहाथा कि क्याकबूल किया है? उ०—नहीं। प्र०—उससमय तुमने रावजीको बुलाया? उ०—राववहादुरगजानन्दवतिल औरखानवहादुर और अब्दुलअलीने कहाथा कि अगरतुमकहोतो रावजीको बुलायाजाय जमादारने कहा कि अगर चाहो बुलालो। प्र०—उससमय रावजीको तुमनेबुलवाया? उ०—हां। प्र०—रावजी अपनेमकानपरमिलाथा? उ०—अपनेमकान परनहीं किन्तुजहांहमारे आदमीथे। प्र०—उसको तुम्हारेनिकट लाये? उ०—हांलाये। प्र०—जबउनदोनों का सामनाहुआ तो क्यावार्त्ताहुई? उ० रावजीने कहाकि ऐबावामैंने गलेगलेपानीमें कबूल करलिया प्र०—उसके पीछे जमादारने भी कबूलकिया? उ०—हांउस समय उसनेकहा कि अवठीक २ हालतुमको बतादूंगा? प्र० क्याउसने उससंध्याको सबबातोंका इकबालकिया? उ०—मुझ से नहींकहा। प्र०—किसमनुष्य से इकबालकिया? उ०—मैंने उससेकहा कि मेरेसन्मुख तुमकुछ बयानमतकरो साहबकेपास

थे। प्र०—उसने कोई बात भी तुमसे कही थी ? उ०—नहीं। प्र०—मुझको बताओ कि तुम्हारी हिरासतमें इस जुर्म केमई कितने मनुष्य कैद हैं ? उ०—मेरे पास गवाह हैं क़ैदी नहीं हैं। प्र० अर्थात् तुम्हारे निकट ऐसे गवाह हैं कि उनको कभी आने जाने नहीं देते हो ? उ०—हां ऐसे ही गवाह हैं कि वह कहीं चले न जायें ताकि उनके मिलनेमें दिक़्क़त न हो। प्र०—वह कितने हैं अर्थात् कितने गवाह और कितने क़ैदी हैं ? उ०—मेरे निकट कोई क़ैदी नहीं है। प्र०—कितने गवाह हैं ? उ०-बीस या बाईस होंगे उनके नामकी मेरे पास फेहरिस्त है आप देखेंगे। प्र०—मैं देखना नहीं चाहता क्या तुम एक मनुष्यको जानते हो जिसका नाम नूरुद्दीन बोहरा है ? उ०-हां। प्र०—नसीरुद्दीन बोहराको जानते हो ? उ०—हां। प्र०—यह दोनों क़ैद हैं ? उ०—मेरे पास क़ैद नहीं हैं वह जेलखानेमें क़ैद है। प्र०—क्या दोनों जेलखाने में हैं ? उ० हां। प्र०—तुम्हारे चार्जमें हैं ? उ०-मेरे चार्जमें क्योंकर हो सक्ते हैं वह जेलखानेमें हैं। प्र०—कभी तुम्हारे चार्जमें वह थे ? उ०—वह खानबहादुर अब्दुलअली और राव बहादुर गजानन्द-वतिलके चार्जमें थे। प्र०—उनको हिरासतमें कौन लाया था ? उ०—जिन दो आदमियोंका नाम मैंने अभी लिया। प्र०—क्या यह लोग भी और गवाहोंके साथ रहते थे ? उ०—हां परन्तु दूसरी कोठड़ी में थे। प्र०—यह लोग जेलखानेमें कब गये थे ? उ०—खान बहादुर अब्दुलअली जानते हैं आपसे बयान करेंगे उनकी याददाश्तमें तारीख़ आदि लिखी हैं। प्र०—लेकिन मुझसे तुम कहो कि वह लोग कब जेलखानेमें गये थे ? उ०—१५ या बीस दिन हुये। प्र०—वह लोग कबतक गवाहोंके साथ जेलखाने में रहे ? उ०—वह लोग गवाहोंसे अलग रहते थे। प्र०—कितने दिनतक वह जेलखाने में रहे ? उ०-खानबहादुर अब्दुलअली दोनोंकी संख्या जानते हैं। प्र०—कभी साहब मजिस्ट्रेटके रूबरू वह गये थे ? उ०—मैं नहीं जानता। प्र०—तुम जानते हो कि मिस्टर सूटर साहब या और किसी हाकिमके सन्मुख गये थे ?

उ०—मेरेहूबरू कभीनहींगये। प्र०—तुमने कभी सुनाथा कि वहगयेथे? उ०—जो मैं सुनता तो आपसे वर्णन करता। प्र० उनकीगवाही लेनेको आजमाइश करतेथे और जबवह कुछ बयान नहीं करतेथे तो उनको फिरतुम जेलखानेमें भेजदिया करतेथे? उ०—उनकी शहादतका हाल रावबहादुर गजानन्दवतिल को मालूम होगा। प्र०—मिस्टर अक्बरअली क्या आप भलेप्रकार नहींजानते कि इनलोगों के हूबरू कोशिश कीगई और हालपूछागया औरपूछते २ थकगयेतोआपने उनको जेलखानेमें भेजदिया? उ०—मुझको याद करनेदीजिये (गवाह चुपहुवाऔर ग़ौरकरनेलगा) प्र०—आपको स्मर्ण होगा उ०—दामोदरपन्थने नूरुद्दीनके पिताका नाम लियाथा। प्र० मैं दामोदरपन्थका सब हाल जानताहूं परन्तु आपसे पूछता हूं कि क्याआपके चार्जमें गवाहथे और जबआपको उनगवाहों से कुछहालमालूमनहुवा तो आपने उनको जेलखानेभेजदिया उ०—हां मुझको यादआया जेलखाने में उनके भेजनेका यह कारणथा कि संखियेके मुक़द्दमेका उनसे कुछ तअल्लुकथा। प्र०—आपको यादआगया? उ०—दामोदरपन्थने कहाथाकि मैने एकबौहरोंकीदूकानसेविषमोल लियाथा। प्र०-दामोदर पन्थके बयानपर इनदोनों शख्सोंके इज़हार लियेगयेथे? उ० मैनेबौहरोंके इज़हार लियेथे। प्र०—मैंपूछताहूं कि पुलिसने उनकेइज़हार लियेथे? उ०—हांलियेथे। प्र०—क्या वहतुम्हारीहिरासतमेंथे? उ०—हांपरन्तु दूसरेखेमेमें उसपर सरजन्ट बेलनटायनसाहबनेकहा कि दूसरेक्यावस्तु-मुतरज्जिम नेउस शब्दसे कहा किखेमा—सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा कि क्रोध मतकरो—मुतरज्जिमनेकहा मैंतो स्पष्टरीतिसे कहताहूं परन्तु आपनहीं सुनतेहैं क्रोधनहीं करताहूं। प्र०—क्यातुमने कोशिशकी किदामोदरपन्थके इज़हारकी तसदीक़हो? उ० यहबड़ामुआमलाहैइसकीतहक़ीक़ात अबहोगी। प्र०—आप मेहरबानी करके इसबातको यादरक्खें कि बड़ामुआमला यह

दूरपेश्वरे और उसकीतहक़ीक़ातहोरहीहै मेरेप्रश्नका उत्तर दो? उ०—यहएकबातहैवह दूसरीबातथी। प्र०—मिस्टरबक-नरकी मेरेप्रश्नका उत्तर दो कि कभी कोशिश की गईथी कि वहदोनोंमिस्ल दामोदरपन्थके इज़हारकी सिदाक़त करें? उ० हांहुईथी और होरही है(इस परसमाजमें हंसी उड़ी) प्र० अर्थात् तुम्हारायहमतलबहै कि वहजेलखाने भेजदियेगये ? उ० हां इज़हार उनकेलियेजायगे ॥

ऐडवकेट जनरल के प्रश्न ॥

प्र०—तुमकहतेहोकि तुमनेपेटीकोफाड़डाला था ? उ०—हां प्र०—इसमेंपहिलेवह सिलीहुईथी? उ०—हांसिली हुई थी। प्र०तुमनेउसकी सिलाई खोल डाली? उ०—हां। प्र०—तुम कहतेहोकिजब तुमनेपुड़ियापाईतो मिस्टरसूटरसाहब करीब थे बतलाओ कि किस जगह थे ? उ०—वहां से दसकदम पर थे। प्र०—किसी कमरे में था और किसी स्थान पर ? उ० दूसरे कमरेमेंथे चिलमन बीच में पड़ी हुई थी। प्र०—रेजी डन्सीके मकानमें? उ०—मिस्टर सूटरसाहबने मुझसे कहाथा कि तुमठहरो वहहाथ धोने के वास्तेगये थे। प्र०—जब तुमने सूटरसाहबको बुलाया तो वहशीघ्रही आयेथे? उ०—हां जल्दी आ गये थे। प्र०-पेटी का तज़करह प्रथम तुमने रावजी से किया था वा रावजीने तुमसेकहा? उ०—मैनेपहिले रावजी सेकहाथा। प्र०—तुमने प्रथम रावजीसे कबतज़करह किया उ०—जबरावजी ने मुझसे कहा कि मेरा वह नियम था कि विषकी पुड़ियांपट्टे के जेबमेंरक्खा करता था उससमय कहा था। प्र०—क्या तुमनेउसी समय उस पट्टेको मंगाया ? उ० हां। प्र०—भौदरके आनेकेपहिले यहपट्टा कभी तुम्हारेक़ब्ज़े में रहाथा ? उ०—मैने उस पट्टेको देखा नहीं था और न भौदरसे कभी भेंटहुई थी। प्र०—जबतुमने पट्टेमें वह पुड़िया पाई तो तुमनेसूटर साहबको बुलाना उचित समझा ? उ० हां क्योंकिवह बड़ेअफ़सर हैं। प्र०-तुम कहते हो रावजी ने

मिटक २२ तारीखको आयाथा ? उ०—हां। प्र०—वहकिस समय तुम्हारेनिकट आया था ? उ०—सुबह के ८ बजे या ९ बजे मेरेपास आयाथा। प्र०—जबवह तुम्हारेनिकट आयाथा तुमनेउससे कुछ प्रश्नकियेथे ? उ०—हां। प्र०—क्याइसी वास्ते रावजीको तुमने बुलायाथा ? उ०—हां। प्र०—तुमने रावजी को किसलिये बुलायाथाबयानकरो ? उ०—मुझको और साहब को उसपर बड़ासंदेह था। प्र०—किस सबब से तुमको उसपर संदेहथा ? उ०—मुझकोचारों ओरसे खबरमिली किरावजी ने बहुतसा रुपया खर्चकिया और अन्तको बेर उस कमरे में जहां कि शर्बतरक्खाथा वही मनुष्यआया था। प्र०—तुमकहते हो कि सुबहकेवक्त तुमनेउससे कुछप्रश्नकिये थे परउसने कुछ उत्तरनहीं दिया ? उ०—उसवक्त नहींदिया। प्र०—तुमनेप्रातः कालसे संध्यापर्य्यन्त फिरभीकभी देखाथा ? उ०—हां। प्र० तुमने उससेवार्त्ताकी थी ? उ०—नहींवार्त्ता करनेका समयनथा प्र०—उसदिन नरसू पकड़ा नहींगया ? उ०—नहीं उस दिन वहकामपर था। प्र०—किसकार्य्यपर ? उ०—बंगलेकी जमादारीपर। प्र०—क्यानरसू रावजीके साथ और नौकरों समेत हिरासतमें था ? उ०—नरसू मेरी हिरासत में न था। प्र० क्यावह उननौकरों के साथथा जो हिरासतमें थे ? उ०—नहीं प्र०—२२तारीखको कौन२मनुष्य तुम्हारीहिरासतमें था ? उ० मेरीहिरासत में कोई मनुष्यनथा केवल तहकीकातके लियेमेरे पास लोगआये थे। प्र०—बहरसूरत वहलोग आपके पासथे ? उ०—फौजू और जुग्गाजहां क़ैदथे उसजगहसे मेरेपास आये थे। प्र०—और कौनमनुष्य आयाथा ? उ०—रामाबरीक जिसको करनैलफियर साहबने क़ैदकियाथा। प्र०—तुमकहते हो कि रावजी तुम्हारी हिरासतमें २२ दिसम्बर से २८ दिसम्बर तक रहा ? उ०—हां प्र०—सिवाय उस दिनके जब कि तुमने रावजी और नरसूकामुकाबिला करायाथा औरभी उनदोनों में कभीवार्त्ता हुई उ०—बातोंके करनेकी आज्ञा नथी के बल

२४तारीख़ को उनमेंबातें हुई थीं। प्र०—रावजीनेयिबातकहच बातकेकि बाबामैनेगलेगले पानीमें कबूलकरदिया है और भी कुछ जमादार से कहाथा उ०—नहीं। प्र०—या किसी और मनुष्यने भी जमादारसे कहदियाथा कि रावजीनेक्याकहा? उ०-नहीं। प्र०-२२दिसम्बरसे किसमुकामपरबड़ौदेमें कैदथा? उ०—जहांहमलोगरहतेहैं। प्र०--वहस्थानकहांहै? उ०—उस मैदानमेंहमरहतेथे जोरेजीडन्सी केनिकटहै। प्र०—रेजीडन्सी केअहातेमें? उ०—नहींअहाते केनिकट। प्र०—तुमनेउसकोकिस तरहरक्खा? उ०-थोड़े दिनतकअखोरगवाहकेसाथ और बन्दरोंतक अलगरक्खा एक२ पुलिसके सिपाही के पासकई २ गवाहथे। प्र०—फिरवहांसे तुमलोग कहांगये? उ०—करनैल बिढ़न्स हबके बंगलेकेपीछेगये। प्र०—तुमयहांसेकबगयेथे? उ० मुहर्रमकीदूसरीया तीसरीतारीखको। प्र०—उससमयसेराव जी तुम्हारे निकटहै? उ०—हां। प्र०—नरसूकहां रहा? उ० हिन्दुस्तानी पलटनके गार्डमें और थोड़े दिनगोरों के पहिरे मेंरहा। प्र०—उसकोकिस स्थानपररक्खाथा? उ०—जिसस्थान पररेजीडन्सीमें गोरोंका पहिरारहताहै। प्र०—नरसू तुम्हारे चार्जमें कभीरहा? उ०—नहींइजहार देनेके लिये वह मेरे निकट अयाकरताथा। प्र०—तुम्हारे चार्जमें कभीनहींरहा? उ०—नहीं। प्र०—पसतुमको इसमुआमलेसे तअल्लुक़ नहीं है जिसमें तीनऔहरहिरासतमेंहै? उ०—तअल्लुकहैगजान्दवतिलको। प्र०—जबरावजीने जमादारकेरूबरू इकबाल कियाकि ऐबाबा मैनेगलेगले पानीमें कबूलकिया उससमय जमादारने कुछकहाथा? उ०—उससमय कुछ नहीं कहा जब रावजी चलागया उससमय कहाथा। प्र०—उसने रावजी से कुछभी कहाथा? उ०—नहीं प्र०—हरदिनकर रावनेकहाइसमुक़द्दमेके तहक़ीक़ात करनेकाकौनमनुष्यअधिकारीथामिस्टर सूटरसाहबयातुम? उ०-मिस्टरसूटरसाहबने मुझको इख़तियारदियाथा। प्र०—जबतुमको तहकीकात करने का इख़तियार दिया

या तो तुमने साहबके आनेसे पहिलेपेटीको क्यों फाड़ा ? उ० क्योंकि मैं नहीं जानता था कि उसमें पुड़िया है या नहीं इसके उपरान्त कमीशनके अधिष्ठाता टिफनखाने के वास्ते उठ गये टिफनसे लौटने के पीछे इज़हार सन्तराम भिखारी राम के लिये गये ॥

इज़हार सन्तराम भिखारीराम ॥

इस मनुष्यके इज़हार ऐडवकेट जनरलने लिये उसने वर्णन किया कि मैं गायकवारका नौकर हूं बम्बई और बड़ौदा और सूरत में जो गायकवारकी दूकाने हैं उनका मैं अफ़सर हूं उनका हिसाब मेरे निकट रहता है मैं गायकवार के महल में रहता था और बहुधा महाराजा साहब को देखा करता था मैं यशवन्त रावको जानता हूं वह मलहरराव के निकट जासूसके तौर पर नौकर है मैं सालिमको भी जानता हूं वह भी महाराजा साहबका नौकर है कभी महाराजासाहब के साथ यह लोग रहते थे और कभी नहीं और मैं एक और मनुष्यको भी जानता हूं जिस का नाम दामोदर त्रिम्बक उर्फ दामोदर पन्थ है यह मनुष्य गायकवारका निजका नौकर है वह सिपाहियों और कारकुनोंको तनखाह बांटा करता था मुझे स्मर्ण है कि एकबेर श्री महाराज ने मुझको एक काग़ज़के पढ़नेके वास्ते बुलाया था वह छोटी चिट्ठी थी जिस स्थानपर श्रीमहाराजासाहब बैठे हुये थे बेंचपर यह चिट्ठी पड़ी हुई थी जो लोग महाराजासाहब के निकट खड़े हुये थे उनमें से एकने मुझसे कहा कि तुम इस चिट्ठीको पढ़ो सो मैंने उसको बड़े शब्दसे पढ़ा जिसप्रकार मैं इस समय बोल रहा हूं, चिट्ठीके पढ़ने के उपरान्त श्रीमहाराजा साहबने कहा कि यह चिट्ठी दामोदरपंथको दे देना सो दूसरे दिन मैंने चिट्ठी दे दी मुझको मालूम नहीं वह चिट्ठी कहां गई वह चिट्ठी गुजराती भाषमें लिखी हुई थी जितना कि मुझको उसका मतलब याद है वर्णन करता हूं उसचिट्ठीमें न तारीख़ थी न किसीके दस्तख़त थे उसमें लिखा था कि भावपूनाकर

और नव्वाब साहबका कारकुन बात्तीकरतेहैंमें गायकवारके मन्दिरमें नवारबागहोकर आयाकरताथा। प्र०—क्या इसमार्ग से निजकेलोग आयाकरते थे ? उ०—बालाखानेपर यहकचहरीहै। प्र०—मेरे प्रश्नका उत्तरदो ? उ०—हां सबलोग इस मार्गसे जाते थे ॥

मिस्टर ब्रेन्सनसाहब के प्रश्न ॥

प्र०—उसकचहरी का हालवर्णन करो ? उ०—इसमहल के नीचे जोकोठड़ियांहैं उनमें मालरहताहै और उसकेऊपर दूसरी मंजिलपर जजसाहब की कचहरी है। प्र०—क्या तुम हिरासतमें हो ? उ०—हां। प्र०—इसी अपराधपर कि तुमने महाराजासाहब की चिट्ठीको पढ़ा ? उ०—हां। प्र०—१३—१४ जनवरीसे हिरासतमें हो ? उ०—मुझेस्मर्ण नहीं फिर कहा कि पौषसुदीषष्ठीसे हिरासतमें हूं ॥

ऐडवकेटजनरलने इसगवाहके दुबारह इज़हार लिये ॥

प्र०—दूसरी मंजिलसे जो ऊपरकामकानहै उनमें कुछभी मालरहता है ? उ०—नहीं वह खालीरहता है। प्र०—उस महलमें तीसरीमंजिलभी है ? उ०—हांतीन याचार मंजिल हैं। प्र०—तुम जानतेहो कितीसरी मंजिलपर किस तरफ से जातेहैं ? उ०—एकछोटे कमरेमेंहोकर उसकीसीढ़ी है। प्र० उसमें चौथादरजाभी है ? उ०—हांहोगा मैंने नहींदेखा। प्र० इस चौथेदरजेपर कोईजीनाहै उ०—कोई सीढ़ीनहीं हैलोग उसपरआयाजायाकरतेहैं। प्र०—उनदरजों परकभी तुमगये हो ? उ०—हां। प्र०—तुमकहतेहो किमैं अब हिरासतमेंहूं तुम किसस्थान पर रहाकरते थे ? उ०—जोगली छापे दरवाजे के निकट है मैं सेनापति की कचहरी में पौषसुदी षष्ठी से हिरासतमेंहूं। प्र०—किसकी हिरासतमें हो ? उ०—उनसिपाहियों की हिरासतमेंहूंजो कचहरीमें नियतहैं। प्र०—गायकवार के पुलिस के सिपाही ? उ०—हां ॥

इजहार मिस्टर बोवी साहब ॥

मिस्टरबोवी साहबके इजहार मिस्टर अनवरारढी साहबने लियेउन्होंने वर्णनकिया कि मेरानाम अरथर विलियमकारो बोबोवीहै गत नवम्बरमें रेजीडन्सी बड़ौदेका कायम मुकाम ऐसिस्टन्टरेजीडण्टथा और मकानरेजीडन्सी में रहाकरता था ९ तारीख नवम्बरकी मुझको भलीभांति स्मर्णहै उसीदिन बहुतसबेरे हवाखोरीको गयाथा ५बजे जब रेजीडन्सी को लौटा तो सालिमसवार और यशवन्तराव और माधोराव हालीकोदेखा यहतीनों मनुष्य बरामदेमें खड़ेथे मेरा मतलब यहहै कि जहां आवागमनका द्वारहै मुझको स्मर्णहै किफैज सालिमसे वार्त्ता करताथा जब८बजे वस्त्रपहिनकर मैं निकला तो मैनेसुना कि करनैलफियर साहबकी शर्बतमेंकुछ डाल-दियागया जब महाराजा साहब चलेगये उससमय करनैल फियरसाहबनेमुझसे यहबातकहीथी इसकेउपरान्त मैने तह-क़ीक़ातके करनेमें करनैलफियर साहबको सहायतादी जिस समयरावजी का पट्टालियागया मैं मौजूदथा जबपट्टा मांगा तो उसनेआपही उतारकर एकखूंटीपर करनैल फियरसाहब के निजकी कचहरीमें लटकादिया अमीनाआया कि जिसके इजहार कमीशनमें होचुकेहैं मेरीमेम की आयाहै वह मेरे पासव्यतीत एप्रिल वामईसे नौकरहै दोएक मरतबा आया गैरहाजिरी हुईथीमुझेस्मर्ण नहीं कि वहकिस२दिनग़ैरहा-हाजिर हुई सरजन्डबेलनटायनसाहब ने कहाकि चूंकिवह बहुधा ग़ैरहाजिररही इससेमालूम होताहै कि वह अधिक ग़ैरहाजिररही ग़वाहनेफिर कहा कि मुझकोस्मर्णहै कि जब अब्दुल्लाका पुत्रमरगया था तोवह ग़ैरहाजिरहोगई थी और करनैलफियर साहब के विषदिये जानेसे कईदिन पहिलेभी वह ग़ैरहाजिररही थी मुझकोस्मर्णहै कि १६दिसम्बरको जब सूटरसाहब आयाके कमरेमें गयेथे मैंभी उनकेसाथ गयाथा मैं जानता हूं कि शायद गजानन्द शास्त्री और खानबहादुर

पहिला और खान बहादुर दूसरा भी सूटरसाहब के साथ थे जिस समय उसने सूटरसाहब से कुछ कहाथा मैं वहां वर्त्तमानथा उस समय वह जियादह बीमार मालुम होती थी प्र०—अनवरारटो साहबने कहा आपको स्मर्ण है कि उसने क्या कहाथा सरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहा किमैं इन्कार करताहूं ऐसेसवाल करने का-ऐडवकेट जनरलने कहाआया के इजहारोंमें प्रश्नहुयेथे जोअबभी प्रश्न कियेजांय तोउनकी सिदाक़त होजाय सरजन्टबेलन टायनसाहबने कहाकि मुझे वही सवालात मंजूर हैं॥

साहब प्रेज़ीडेण्टने कहा कोई और गवाह उनबातों की तसदीक़ केवास्ते आसक्ता है फिर सरजन्टबेलन टायनसाहबने अपना उज्र वापिस लिया। प्र०—मिस्टर अनंवरारटो साहबने कहाकि आयाने सूटरसाहबसे क्या कहाथा? उ० उसने कहाथा किमैं कईबेर श्रीमहाराणा साहब के मन्दिर में गई और मैने रुपया भी पाया उसने कुछ और भी बयान किया था परन्तु मुझे स्मर्णनहीं १६—दिसम्बरको बड़ौदेसे मैं रवाना हुआ॥

सरजन् बेलनटायन साहब के प्रश्न॥

प्र०—भाव पूनाकर को आपभले प्रकारजानते हैं? उ० हां खूबजानता हूं। प्र०—वहबहुधा रेज़ीडन्सीमें आयाकरता था? उ०—सदाआया करता था। प्र०—किस तरहका वह साहबरेज़ीडण्टका नौकरथा? उ०—कोर्ट आफवार्डससे उसका तअल्लुक था-और मिस्टरहोप साहब सूरतके कलक्टरनेउसको रेज़ीडन्सीमें भेजाथा। प्र०—आप मेरा प्रश्ननहीं समझे मैं पूछताहूं किवह रेज़ीडन्सीमें नौकरथा? उ०—वह रेज़ीडन्सीमें नौकर था किन्तु सूरत के कलक्टर साहब का नौकर था। प्र०—उसको कोई खास खिदमत साहब रेज़ीडण्टने सुपुर्द नहीं की थी? उ०—नहीं। प्र०—उसको कुछ रेज़ीडन्सीसे मासिक मिलताथा? उ०—नहीं। प्र०—आप जानते

है कि कुछखबरें लाया करताथा और साहब रेजीडण्ट को महाराज गायकवारकी कारवाइयोंसे सूचित किया करता था? उ०—मैं जानता हूं कि बहुतसी बातोंकी इत्तिलादिया करता था। प्र०—कोई और मनुष्यभी इत्तिला दिया करता था? उ०—हां और लोग भी इत्तिला दिया करते थे। प्र० क्या भावपूनाकर ने भी कभी कोई खबरदी थी? उ०—नहीं प्र०—रेजीडन्सीमें संखिया वा कोई तांबेका बिषरहता था? उ०—मैंने कभीनहीं देखा। प्र०—आपने कभी किसीकाम के वास्तेसंखिया नहींमंगाया? उ०—कभीनहीं। प्र०—आपकी आज्ञासे कभीसंखिया नहींआई? उ०—कभी नहींआई? प्र०—क्या इस हमलेके पीछेभी नहींआई? उ०—नहींआई।

ऐडवकेट जनरल के प्रश्न॥

प्र०—आप कहतेहैं कि भावपूनाकर कलक्टर सूरत का नौकर था क्यावह जुल्फिकार अलीअसमर्थके इलाक़े काजो बड़ौदेमें है इन्तिजाम करताथा? उ०—हां। प्र०—आपनेसर-जन्हवेलन टायनसाहबसे कहा कि संखिया आपकी आज्ञासे कभीनहीं आई? उ०—कभी नहीं। प्र०-९ नवम्बर वा उसके उपरान्त कभीनहीं आई? उ०—नहींआई ऐडवकेट जनरलने कहाकि और गवाहोंकीशहादत बहुत तूलसेहै औरचारबज गयेहैं अबबरखास्त होना चाहिये सोकमीशन बरखास्त हुई॥

ग्यारहवें दिनका इजलास॥

आजकेदिन ११बजेपर कमीशनकाइजलास शुरूहुआसम्पूर्ण मेम्बर और सरल्यूइस पीली साहब और श्रीमान्महाराजा मल्हरराव मौजूदथेपरन्तु मध्यान्हके उपरान्त श्रीयुतमल्हरराव और श्रीमहाराजा सेंधिया और सरल्यूइसपीली चलेगये इस-समाजमें आजके दिनबड़ीभीड़थी सैंकड़ों मनुष्यदामोदर पंथके इजहार सुननेके लिये आयेथे जो तमाशाई उसअदालत में आनेके योग्यनथे वहमैदानमें खड़ेरहे जिससमय दामोदरपंथ बुलायागया तोवह निहायतबेहूदातौरसे कमीशनमें हाज़िर

ऊआसब मखमल की मिरजई पहिने ऊयेथा इस मनुष्य का अति स्थूलशरीर है और अयोग्य मालूम होता है उसके मुखका नकशा मोटा और चेचकरू है और उसकी खाल गज के चर्म के सदृश खुरदरी है और गवाहोंसे उसकी आदत और प्रकारकी मालूम होती है ॥

जोगवाही रावजीनेदी वह अति चातुरता के साथ दीनरसूने कांप२ कर गवाहीदी और अपने अपराध को छुपाना चाहा परन्तु दामोदरपंथ बड़ा दुष्ट और डरपोक है जिससमय उसने गवाहीदेनी आरम्भकी तो धीरे२ नेत्रोंको नीचे किये ऊये उत्तर देताथा मालूमहोता था कि वह अपने मनमें अति लज्जित है परन्तु सरजन्ट बेलन टायन साहबने उससे कहा कि बड़े शब्द से वर्णनकरो जिससे कि श्रीमान् महाराजा साहबभी तुम्हारे इजहार सुनें और शिर उठाकर महाराजा साहबसे चार आंखें करो और इजहार दो यह सुनकर उसने शिर उठाया और उच्चशब्द से बोलने लगा सर ल्यूइसपोली साहब (रेजीडण्ट) ने जो कहा था कि दामोदरपंथके इजहार सुननेके योग्य हैं और कारआमद हैं वास्तवमें उन्होंने सत्य कहाथा ऐडवकेट जनरलने उसके इजहार लिये और नीचे लिखेके अनुकूल उसने इजहार दिया ॥

दामोदरपंथ के इजहार ॥

मेरानाम दामोदरत्रिम्बकवा दामोदर पंथहै सरजन्टबेलन टायनसाहबने सुतरज्जिमसे कहा कि गवाहसे कहो कि बड़े जोर से बोले कि श्रीमहाराजा मल्हरराव भी सुनें गवाहने वर्णन किया कि मैं ब्राह्मणहूं और श्रीयुत महाराजा गायकवाड़ का प्राईवेट सीक्रेटरी था मुझे इस अधिकारपर तीनवा साढ़ेतीन वर्ष बीते होंगे सम्पूर्ण सिपाहियों और कसबियों आदि की तनखाह बांटनेका काम मेरे सुपुर्द था चिड़िया खानेके नौकरोंकी तनखाहभी मैं बांटाकरताथा महाराजा गायकवाड़ की आज्ञाके अनुकूल यह सब रुपया बांटा जाताथा मैं लड़ीपोल केदरवाजे पर रहा करताथा और निजकी कचहरी अपनी क-

कामनेंकिया करताथा इस कचहरीमें २५-मुहर्रमको आधीन थे-माधोराव रामकृष्णसरदफ़्तरथा-एक मनुष्य जिसकानाम नानाजीवतिलहै जवाहिरखानेकाफ़र्कथा और एक औरमनुष्य जिसका नामबलवन्तरावजोहै खजानचीथा-बाबाजीरामचन्द्र मेरासरिश्तेदारथा-मैंप्रात:कालके सातबजे महलमेंजाताथा औररात्रिके दसबजेतकवहां रहताथा परन्तु तीसरेपहिर भोजनकेनिमित्तअपनेघरमें आयाकरताथा मैं महाराजा गायकवारकेमन्दिरकेसम्पूर्णकमरों को जानताहूं गायकवार महलके चौथेदर्जेपररहाकरतेथे जिस मनुष्यकोकोईखास कामहोता थावहपीछेके रास्तेसेआताथा और दरबारकेसबलोग फाटकसे आयाकरतेथे परन्तुबहुतसे मनुष्य जोनिजकी कचहरीमेंमहाराजा साहबकेनिकटआतेतो वहपीछेके जीनेसे आयाकरतेथे सरजन्टबेलन टायनसाहबने कहा कि मैंगवाहका बयान कुछ भी नहींसुनता विश्वासहैकि महाराजासाहबभीन सुनतेहोंगे गवाहसे कहा जायकि जोरसेबयान करे आज्ञाहुई कि गवाह जोरसे वर्णनकरे गवाहने वयानकियाकि लोगगद्दीके कमरेमें जायाकरते हैंउनका आवागमन मगसनास दरवाजे सेथा॥

एक और दरवाजा नजरबागकी ओरसेथा वह खासदरवाजा मशहूरहै मैंयशवन्तरावको जानताहूं वहजासूसके तौर परमहाराजा साहबकेपास नौकरथा मैंसालिम कोभी जानता हूं वह महाराजा साहबका सवारहै यह दोनों मनुष्यदिनको महाराजा साहबकी अर्दली में रहतेथे यदि रात्रिको कुछ आवश्यकता होतीथी तो बुलाये जातेथे मुझेस्मर्णहै कि महाराजासाहबने मुझेआज्ञादीथी कि सालिमको संखियेकी पुड़िया देदोवह दिनभाद्रपद केथे मुतरज्जिमसे पूछागया कि यहकौन दिनहोतेहैं उसनेकहा कि यहदिन २९-सितम्बरसे १०-अक्टूबरतक होतेहैं-गवाहने वर्णन किया कि महाराजा साहबने मुझको आज्ञादी कि दोतोले संखिया खरीदनेके लियेमंगाओ सो मैंने महाराजा साहबकी आज्ञा के अनुसार फौजदारी के

महकमेका लिखा—उस समय एकचिट्ठी गवाहको दिखाईगई उसनेकहा कि वहचिट्ठी यहीहै और उसपर मेरेही दस्तखत हैं ऐडवकेट जनरलने वहचिट्ठी पढ़वाई उसमेंयहलिखाथा॥

श्रीमहाराजकी फौजदारी के सम्पूर्ण अफसरों के नाम पर।

राम रामके उपरान्त मालूमहो कि घोड़े की खारिशके लिये दो तोले संखिये की आवश्यकता है इजाजत दो कि संखिया मंगाई जाय॥

(द०)दामोदरत्रिम्बक खासगीवाला लिखाहुआ
भाद्रपद नवमी सम्वत् १९३१
४ अक्टूबर सन् १८७४ ई० के अनुकूल

गवाहने वर्णनकिया कि हांयहीतारीखहै जबचिट्ठी लिखीगई और कहाकि फौजदारीसे संखिया नहींआई तो मैने नरोत्तमपुरुहसे संखियामंगाई परन्तुमंगानेके प्रथम महाराजासाहब और मुझसेकुछ वार्त्ताहुईथी मैनेकहाथाकि हुरमुजजी बद्याकहताहै कि महाराजासाहबसे कुछबातें करके संखिया दूंगा हुरमुजजी बद्याफौजदारथा यहसुनकर महाराजासाहबने कहाकि लश्करसे मंगाले। मैनेकहा जोआप लश्करसे संखियामंगावेंगे तोइजाजतीपरवानाभेजाजावेगा महाराजा साहबनेकहाकोशिशकरके कहींसेसंखियामंगाओ और कहा कि नूरूद्दीन बौहरे से मंगवाओ(नूरूद्दीन महाराजा साहबके सिलेखानेमें पहिलेनौकरथा) साहब प्रेजीडण्टनेकहा सिलाखानेकेक्याअर्थहैं क्यादवाईखानेको कहतेहैं मुतरज्जिमने कहाहां॥

गवाहने वर्णनकिया कि अबदवाईखाना सिलहखानेमें है यहसिलहखाना उसकमरेके निकटहै जहांश्रीमहाराजसोयाकरतेहैं थोड़े दिनोंके पीछे श्रीमहाराजा साहबने कहा कि एकतोला हीरामंगवाओ जबमैने नूरूद्दीनबौहरेको संखिया के वास्ते लिखा तो वहएकपुड़ियामें संखियालाया मैनेउसपुड़ियाको नहींखोला और महाराजासाहबसे पूछा इसकोक्या कियाजाय महाराजासाहबने कहाकि वहसालिमको देदोकि

वह घोड़ोंकी खारिशकी औषधी बनायेगा सोमैंने वहपुड़ि-या सालिमको देदी ॥

तिसपीछे श्रीमहाराजा साहबने मुझसे फिरकहाकि एक तोला हीरा मंगवाओ शायद यहसंखिया मंगानेसे आठदस दिनपीछे मुझसेकहाथा तबमैंने नानावतिस से हीरे मंग-वाकर महाराजासाहब को आज्ञासे यशवन्तराव को देदिये आठदसदिन पीछे मुझसे महाराजसाहबने कहाकि यहशीशी हकीमके पाससे आईहै यहसालिमको देदेना यहशीशी रा-त्रिकेसमय महाराजासाहबने गजबाकेहाथ मेरेपासभेजी पू-र्वोक्त गजाबानानाकंबलकरका नौकरहै नानाकंबलकर महा-राजासाहबके सालेहैं वहशीशी जोरात्रिके समयआईथी मा-लूमनहीं उसमेंक्या था मिस्टर मैलवल साहबने मुतरज्जिमसे पूछाकि शयनीदके क्याअर्थहैं मुतरज्जिमने उत्तरदिया किइस शब्दकेअर्थ वजीरकेहैं मिस्टर मैलवलसाहबने कहाकि गवाह ने कहाथा कि नानाकंबलकर महाराजासाहबके सालेहैं और मौरूसी वजीरभीहैं मुतरज्जिमने कहा हां । तिसपीछे गवाह ने वर्णनकिया किउंगलीके बराबरशीशी थी मैनेयहदवा दूसरी शीशीमें करदी जिसमेंपहिले गुलाबका इतरथा गवाहने शीशी को दो पुड़ियाके बराबर निशानकिया गजाबाने एकशीशी से दूसरीमेंदवा को कियाथा यह छोटीशीशी जिसमेंदवाथी मैंने अपने पासरखली दूसरेदिन महाराजा साहबकी आज्ञाकेअनु-कूलशीशी सालिमको देदीवहदिन दसहरेके थे थोड़े दिनों केपीछेमहाराजा साहबने मुझसेकहाकि एकतोलाहीरा और दोतोलेसंखियामंगाओ सोनूरुद्दीन बौहरेसे संखियालेनेकेलिये मैं आपही उसके मकानमें गया और संखियालेकर सालिम कोदेदी और एकतोले हीरेमें तीनमाशे पिसाहुआ हीराथा और नौमाशेहीरे के टुकड़े थे मैनेपुड़िया खोलकर नहींदेखी यह बातमानजी के कहनेसे मालूमहुई थी महाराजा साहबने मुझसे कहा कि हीरे की पुड़िया यशवन्तराव को देदो और

महाराजा साहबने कहाथा कि इन हीरोंको खामी बकल-
कोटके ताजकेवास्ते आवश्यकताहै साहब प्रेजीडेंटने पूछाकि
खामीके क्याअर्थ हैं सुतरज्जिमने कहा किखामी पहिलेदरजे
के पुजारीको कहतेहैं गवाहने कहाकि वहपुड़िया यशवन्त-
रावको मैनेदेदी मैने यशवन्तरावसे पूछा कि इनहीरोंका क्या
होगा यशवन्तरावने उत्तरदिया कि करनैल फियरसाहबको
बिषमेंमिलाकर दियाजावेगा मैने इतनाही कहाथा कि यह
बातबहुत बुरीहै और मैने कुछनहीं कहा मैने२६ अक्टूबरको
सुना था कि विषदिये जानेका उपाय किया गया जबसे कि
यशवन्तरावको हीरेदिये उसकेआठ दसदिनके उपरान्त मैने
सोमवार को यह खबर सुनीथी मैं महाराजा साहबके साथ
आठबजे रेजीडंसीको गयापरन्तु मार्गमें शिवाकी धर्म्मशाला
पर उतरपड़ा और महाराजा साहबके लौटनेतक वहां ठह-
रारहा जबमहाराजा साहबरेजीडंसी सेपलटआये तो मुझ-
को अपनी गाड़ी में बैठालिया और मुझको मेरे मकान पर
उतार दिया मार्गमें श्रीमहाराजा साहबने मुझसे कहा कि
रेजीडन्सी में एक घोर मचरहाहै मैने पूछा किसकारण वह
घोरहै महाराजा साहबने कहा किनरसू प्रतिदिन मेरेनिकट
आताथा परन्तुआजनहीं आया रावजीने जल्दी करके डाल
दिया मैनेपूछा क्या डालदिया था महाराजा साहबने कहा
किनरसूडेवढ़ी पर बैठा रहा करता था जब कोई आता था
तो वह घोषी बजादिया करताथा आजनरसूनथा इसीसे आज
रेजीडन्सीमें घोर मचरहा है महाराजा साहबने मुझसे यह
भीकहा कि सालिम रावजीके मकानको दौड़ागया हैताकि
वह पुड़ियोंकोलावे और जहां एकबुढ़ियारोटी पकारही है
उसमें डालदे ॥

महाराजासाहबने यहभी कहाकि मालूमनहींकि सालिम
ने रावजीसे पुड़ियोंको लेकर फेंकदियाहै या नहीं-और यही
बखोड़ेकी बातहुईहै देखाचाहिये क्या होताहै जबगाड़ी मेरे

मकानके निकटपहुंची महाराजा साहबने मुझको वहांउतार दियाउसदिन महाराजासाहबसे और कुछबातोंका होनाइस विषयमेंयादनहीं सोमवारको ११-बजे भोजनकरके महाराजा साहबके महलको मैंगया वहांजाकरदेखाकि महाराजासाहब लक्ष्मीबाईके पलंगपर बैठे हैं और नानासाहबकरसे विष की बातेंकररहे हैं परन्तु मैंने यहनहीं सुनाकि वह क्या बातेंथीं क्योंकि मैं पांचछ: कदमकी दूरीपरथा और नमैं उसवार्त्तामें संयुक्त हुआ-इसके उपरान्त महाराजासाहब और नाना और मैं गाड़ीमें सवार होकर घुड़दौड़को गये मार्गमें महाराजा साहब और नानासाहबकरने मुझसे कहाकि इसबातकी खूब खबर रखना और जो खबरें मालूम हुआ करें उनकी मुझको इत्तिला दिया करना मैंने अपने घरमें जाकर कई मनुष्योंसे विषके दियेजानेका हालपूछा जोकुछ मैंने सुनाथाकि दूसरे दिनभोरको महाराजासाहबको उसकी इत्तिलादी मैंने महा-राजासाहब से कहाकि रावजी का पतानहीं है शायदकहीं भागगया महाराजा साहबने कहाकि यद्यपि रावजी बड़ाबु-द्धिमान और चतुर है परन्तु झूठाभीहै उससमयमुझने और कुछनहींकहा मङ्गलवारको मैंने सालिमऔर यशवन्तरावको महाराजासाहब के पास महलमेंदेखा महाराजा साहब ने मुझसेकहा कि विषकेदेनेका हालदरयाफ़्तकरके मुझसेवर्ण-नकरो उसदिन मुझसे और महाराजासाहबसे विषकेविषयमें बातें हुईं जब कर्नैल फियरसाहब कोजगह सरल्यूइस पेली साहबनियत होकरआये मुझको खूबयादहै कि एकदिन महा राजासाहब मुझको सरल्यूइसपेलीसाहबके साम्हनेलेगये और साहबने मुझसे रूबरू इसबातकी गवाही दिलवाईकि महारा-जासाहबकी बातें मुसम्मानरायणकानजिसपान्डोसे हुईं मुझको महाराजासाहब ने सरल्यूइसपेलीसाहब के रूबरू पेशकिया परन्तु उसदिनमुझसे और साहबसे कुछवार्त्ता न हुई न कुछ विषका जिक्र आया उसदिन रावजीको मैंने नहींदेखा प्रथमेय

केवल नौकरीमें मेरी और उसकी भेंटहुई थी जबकि कर्नल फेयर साहब बड़ौदेमें आयेथे तो सम्पूर्णनगरमें उनके आनेकी खबर प्रसिद्ध होगईथी उनके आनेके पीछे मुझसे और महाराजा साहबसे विष दियेजानेकी कुछवार्त्ता हुईथी—पहिले रावजी पकड़ा गया परन्तु फिर छोड़ा गया इसको सुनकर महाराजा साहबने मुझसेकहा था कि जोशख्स वानी सुब नौथा वहछूट गया अबकुछ भयनहीं है परन्तु मुझको स्मर्णनहीं है कियह बातें मुझसे और महाराजा साहबसे किसदिन हुईथीं इतना यादहै कि सुटर साहबके आनेके उपरान्तवार्त्ता हुईथी जबरावजी दूसरीबेर पकड़ागया तबभी मुझको खबरहुईथी और मैंने यहभी सुनाथा कि उसने इक़बालकिया सो महाराजासाहब को मैंने खबरपहुंचाई महाराजासाहबने उसके उत्तरमें कहा किमैंनेभी ऐसाहीसुनाहै जबरावजीने इक़बालकियातो उसको उसकी बरीय्यतका सारटीफिकट दियागया मुझसेऔर महाराजासाहबसे इस विषयमें वार्त्ता हुई थी महाराजा साहबने मुझसे कहाथा अगर वहांकोई तहक़ीक़ात हो तोकदाचित् किसी बातको कबूल नकरना मुझको और कुछ महाराजा साहबकी वार्त्तास्मर्णनहीं है मुझकोसालिम और यशवन्तराव केपकड़ेजानेकी तारीख स्मर्णहै १५ मार्गशीर्ष थी मुतरज्जिमने कहा कि यहतारीख २३ दिसम्बरके अनुकूलहै रावजी और सालिमके पकड़ेजानेके उपरान्त साहबरजीडण्टने महाराजा साहबको लिखा था कि उनको हमारे पास भेजदो जबयह लेखमैं महाराजा साहबके निकट लेगया तो महाराजा साहबने कहा कि हमने सालिम और यशवन्तराव कोभी भेज दियाहै महाराजासाहब ने उससमय मुझसे नहीं कहा कि उनदोनोंको किस वास्ते भेजदिया है परन्तु इसके उपरान्त मुझसे कहा कि मैंने दोनोंको समझा बुझाकर भेजा है कि कदाचित् किसीबातकाइक़बाल न करना इसवार्त्ताके सिवाय और कुछ महाराजासाहब ने मुझसे नहीं कहा—उससमय

सालिम और यशवन्तराव रसोड्योको गये और फिर लौट आये उसी दिन सरल्युइस पीलीसाहब रेसीडण्ट की आज्ञा पहुंची कि सालिम और यशवन्तराव को भेजदो—रसोड्यो के जानेके पहिले उनको मैंने देखाथा वह ऊपर कोठरीपर नानाकांवलकर के पासथे जब नानाकांवलकर मुझको मिलेतो मुझसे कहा ॥

मिस्टरब्रेन्सनसाहबने कहा हमनहीं पूछतेकि उन्होंनेतुम से क्या कहा ॥

ऐडवकेट जनरल ने कहा कोई मनुष्य और भी उस समय मौजूद था ? उ०—सिवाय नानाकांवलकरके और कोई मनुष्य नथा ॥

गवाहफिरवर्णनकरनेलगाकिजबसालिम और यशवन्तराव रसोड्योको चलेगये तो संध्याको महाराजासाहबसे फिरमेरी भेंटहुई महाराजासाहबनेकहाकि मैंनेदोनों मनुष्योंको समझा दियाहैकि तुमकिसीबातकाइकरार नकरना सिवाय इसबात के और जो कुछ महाराजासाहबने कहा मुझको याद नहीं जिसदिन महाराजा साहब पकड़ेगये उसीदिन मैंभी संध्याके समय पकड़ागया ९ बजे एक पहिरा आया महलके कमरेबंद कर दियेगये और प्रतिस्थानपर पहिरा खड़ाहोगया जैकसन साहब और गजानन्दवितलने मुझसेकहा कितुम अपनेदफ्तर मेंचलो कितुम्हारे सन्मुख प्रत्येक वस्तु बन्दकरके मोहरलगा दीजावे जिससमय प्रत्येकवस्तु पर मोहर लगाई गईमैंभीमौजूदथा इसकेउपरान्त मैं अपने घर चला आया परन्तु शीघ्रही फिरमैं बुलायागया और सेनापतीकी कचहरीमें मुझको क़ैद कियामैं दोदिनतक हवालातमें रहावहां केवलचौकीदारोंका पहिरा था सिपाही न थे वहां से फौजदारके सिपाही मुझको रेसीडन्सी में लाये और गोरोंके पहिरे में १९ दिनतक बन्दि में रहा फिरपुलिसकेसुपुर्द कियागया जबतक मैंने किसीबात कोकबूल नहीं किया मुझपर गोरोंकापहिरा रहाजब मैंनेक़बूल

दाख किया तो पुलिसके सुपुर्द किया गया पहिली बेर रेजीडन्सी के बागके नीचेमें बुलाया गया वहां दोनों खान और बलवन्त राव सीक्रेटरी वर्त्तमान थे यह बलवन्तराव कारकुन था जो अहमदाबादसे बुलाया गया था एक मनुष्य भावपूनाकर और एक सिपाही पुलिसका वहां मौजूद था जब मैं वहां पहुंचा तो खान बहादुरने कहा कि मैंने तुमको इसलिये बुलाया है कि मैं तुम्हारे संदूकके काग़ज़ देखा चाहता हूं उस संदूकमें महाराजासाहब के निजके काग़ज़ थे उसपर मेरे साम्हने मोहरें लगाई गईथी उसपर बड़ी २ मोहरेंथीं और सब मुसल्लमथीं मैंने पुलिससे कुछ नहीं कहा परन्तु पुलिसके लोगोंने मुझसे कहाया कि अगर तुम इकबाल करोगे तुम्हारे लिये अति उत्तम होगा वह लोग आधे घंटेतक सन्दूकके काग़ज़ देखतेरहे उसके उपरान्त मैं गोरोंके पहिरे में सुपुर्द किया गया बलवन्तराव और भावपनाकर और दोनों खानबहादुरने देखाथा ऐडवकेट जनरलने कहा कि अब दोबजगये हैं टिफनका समय आगया यदि आज्ञा होतो थोड़ी देरकेलिये अदालत बरखास्त कीजावेसो कमीशनके मेम्बर टिफनखानेके वास्ते गये ॥

जबटिफन खाकर लौटेतो गवाहने वर्णन किया कि सन्दूक के काग़ज़ोंके देखनेके पीछे मेरा इज़हार हुआ उससमय मिस्टर रिचीसाहब सरल्यूइस पीलीसाहब कप्तान जेकसनसाहब कप्तान सीग्रीव साहब दोनों खान बहादुर गजानन्दवतिल और बलवन्तराव सीक्रेटरी मोजूदथे जबमैंने अपना इज़हार दिया तो सरल्यूइसपीली साहबने मुझसे मेरे अपराधके क्षमा करने का इक़रार किया था किसी मनुष्यने मुझसे रावजी वा नरसू जमादारके इज़हार का हालवर्णन नहीं किया मैंतो गोरोंके पहिरे बैठा मुझे कौन सूचित करता जिसदिन मुझको सार्टीफिकट मिलातो गजानन्द वतिल और दोनोंखान बहादुर वर्तमान थे—गजानन्द ने मुझसे कहा कि जो सच २ कहोगेतो सरकारतुम्हारा अपराध क्षमाकरेगी और मुझको एक परवाना

भी दिखाया सिवा इसके उससमय मुझसे कुछनहीं कहा जब मैं नौसारी गयाथा मैंने रावजीको देखाथा रावजी महाराजा साहबके गुसलखाने के पासबैठा था सिवाय रावजीके सालिम और महाराजा साहबभी बैठेथे रात्रि के दस बजे होंगे और महाराजा साहबके बुलाने के अनुसार मैं गयाथा जबमैं महाराजा साहबके पास पहुंचातो महाराजा साहबने मुझकोएक कागज़ देकर कहा कि इसको पढ़ोसो मैंने उसे पढ़ा तो वह अर्ज़ी स्वर्गवास यमुनाबाई खाण्डेरावजी कीस्त्रीकी ओरसे श्रीमान् गवर्न्नर जनरलके नाम थी उससमय महाराजा साहबने कहा कि इसअर्जी की नक़ल लिखलो जबमैंने नकल लिखली तोवह अर्जी रावजीको फेरदी मैं सब काग़ज़ों को महाराजा साहबके रूबरूपढ़कर सुनाया करता थामैं दक्खिनी भाषा जानता हूं बहुधा हिसाब छोटे २ परचों पर रहा करते थे कोई किताब न थी और जिस मनुष्य को महाराजा साहब रुपया दिलाते थे मैं याद बना कर महाराजा साहबके दस्तखत करा लिया करताथा बहुधा श्री महाराजा साहब मुझको ज़ुबानी आज्ञादिया करतेथे॥

एककाग़ज़ जबगवाहको दिखायागया तो उसनेकहा कि मेरेहाथका लिखाहुवा है उसमेंयह लिखाथा॥

श्री लक्ष्मी इत्यादि॥

हिसाबतीसरे माहअव्वाल अर्थात् महीना मार्गशीर्ष सम्वत् १९३० ई० (२४ नवम्बर सन् १८७४ ई० के अनुकूल)॥

याददाश्त॥

बम्बईसे कुछ माल यशवन्तके पुत्रमहीपति ओलीके द्वाराजो सरकारका कासिदहै आयाहै इसलिये सरकार की आज्ञाके अनुसार नीचेलिखा हुआरुपया दियागया कलके अनेकप्रकारके जो बाजारसे मोल लिये गये १००० पट्टा बहिसाब १८ ¾ फ़ीसदी-१८७॥) कुल ११८७॥) सिक्के वा बादशाही जो खजानेसे दियेगये १०००) कुल २१८७॥) रुपया पानेके समय जो रसीद

यशवन्तराव ने दाखिल कीथी इस कागज़के साथ रक्खीगई॥

सरजान्स वेलनटायनसाहबने कहाइन याददाश्तोंके पेश करने से ज्ञातहोता है ताकि साबितहो कि समय २ पररेज़ीडन्सी के नौकरोंको रुपयादिया गया और हिसाब में दूसरेनाम से रुपयालिखागया ऐडवकेटजनरलरनेकहा हांइसीबातकेसाबित करनेके वास्ते यहयादें पेशकी गईं प्रेज़ीडेण्ट साहबने कहा ऐडवकेट जनरल प्रगटकरना चाहतेहैं कि वास्तवमें समय २ पररुपया लोगों को दियागया और याददाश्तोंमें दूसरे नाम से लिखागया इसवार्त्ता के उपरान्त वह यादमिसल में संयुक्त कीगई और उसपर (ए) का निशान लगायागया और गवाह ने वर्णन किया कि प्रति दिन और प्रतिसप्ताह और मासिक औरवार्षिक हिसाबबन कर पेश हुआ करता था बलवन्तराव कारकुन प्रतिदिन का हिसाब रक्खा करतेथे और मैं हिसाबों परदस्तखत कियाकरता था मालूमनहीं कियशवन्तरावको क्या मासिक मिलताहै सिवातनख़ाहके जितना सालिमऔर यश-वन्तराव को रुपया दियागया वहमेरे महकमेसे दियागया॥

ऐडवकेट जनरलने कहा जोयाद तुमने पढ़ीउसमें तुमलिखते होकि उस असबाब के लिये जो बम्बई से आया तुम जानते होकि कौन असबाब बम्बई से आया था?उ०—कोई असबाब नहीं आया था। प्र०—फिर क्यों लिखागया कि बम्बईसे अस-बाबआया? उ०—इसवास्ते लिखागयाकि रेज़ीडन्सीके सब नौकरोंको रुपयादेनामंजूरथा। प्र०-तुमको क्योंकरमालूम हुआ कि रेज़ीडन्सी के नौकरोंको रुपयादिया जायगा? उ०—महा-राजासाहबनेआज्ञादी थीकिजबरुपया रेज़ीडन्सीकेनौकरोंको दियाजाय तो वहरुपया इसीभांति हिसाबमें लिखाजायवदि कोई वस्तु आती तो महाराजा साहब उस व्यौपारी कानाम लिख लेतेजिसकी दूकान से आया था ऐडवकेट जनरलने एक औरयाद गवाह कोदी और पूछाकि यहरुपया भीयशवन्तराव को दियागया था? उ०—हां देखिये १८॥।=) कीरहामीद के

इसमें नमालका ब्यौरा और मब्बौपारीका नामहै। प्र०—क्या इसपरभी तुम्हारे दस्तखत हैं? उ०—हां। प्र०—किसमनुष्यने इसयादका रुपयापाया? उ०—सालिम अरब ने। प्र०—क्या कोई वस्तु अहमदाबाद से खानेमें आई थी? उ०—नहीं॥

ऐडवकेट जनरलने कहा माईलार्ड मेरे विचारसे जोयह सब यादेंगवाहों को दिखाकर पहिचानवाई जावें औरउनसेकसम लेली जावेतो अतिउत्तम है॥

सरजन्ड बेलनटायन साहब ने कहा मेरी भी यही राय है मैने उन यादों की सूची बनाई है उनपर [ए]से [क्यू] पर्य्यन्त निशानहैं इनसब याददाश्तोंमें सातहजार रुपयादिया गयाहै प्रेसीडण्ट साहबने कहा कि मिस्टर जारडीनसाहब से कहा जाय कि इन याददाश्तों की क्रमपूर्व्वक सूचीतैयार करें—चारबजे अदालतबरखास्त हुई॥

बारवें दिनका इजलास।

ग्यारह बजे पर कमीशन के मेम्बर एकत्र हुये कमीशन के सम्पूर्ण मेम्बर और श्रीयुतमहाराजा मल्हरराव समाज में सुशोभितहुये तीसरेप्रहर को श्रीमान्महाराजा सेंधियातशरीफनहीं लाये और सरल्यूइस पीलीसाहब दिन भर नहीं आये ऐडवकेटजनरल अर्त्थात् सरकारकेवकीलकी लदामोदर पंतका इजहार लेनेलगे पूर्व्वोक्त साहबने गवाहसे पूछा कि तुमने हमसेकल कहा था कि दोबार नानाजीवतिल के पाससे मैने हीरे मंगवाये थे परन्तु बयानकरोकि उसके मोलके देने का किसनेबन्दोबस्त कियाथा? उ०—श्रीमहाराजासाहबकेआज्ञाकेअनुकूल बन्दोबस्त कियागया मैने महाराजा साहब से पूछाथा कि इन हीरों का मोलदेदिया जायसो आज्ञाहुई थी किदेदो तोमैने हीरोंका मोलदेदिया—यहरुपया इकट्ठीखर्च और बचत से दियागयाथा परन्तु इस रुपये को हीरोंके मोल में दिया जाना हिसाब में दर्ज नहीं हुआ किन्तु महाराज

साहिबकी आज्ञासे महाराजा साहबके हिसाबमें इसप्रकार लिखागया कि ब्राह्मणोंके खिलानेके लिये रुपियादिया गया ॥

जब गवाहसे एक और प्रश्नकिया तो मुतरज्जिम गवाह से कुछ बार्त्ता करनेलगा सरजगट् वेलनटायन साहबनेकहा क्या कहतेहो मुतरज्जिमने कहाकि जो कुछगवाहने वर्णनकिया मेरीसमझमें नहीं आयाथा इसलिये मैं पूछताहूं सरजगटसाहबने कहा कि जो कुछ वह कहताहै मुझे सुनाओ प्रेजीडण्ट साहबने कहाकि जबमुतरज्जिमही नहींसमझाहैतो तुम क्या समझोगे-गवाहने वर्णनकिया कि महाराजा साहबने मुझसे कहाथा कि इनहीरोंको दवाईकी मदमें दर्ज हिसाब करना क्योंकि इनकी भस्मबनाईजावेगी उनकोमैंने इसीप्रकार हिसाब में लिखाया परन्तु जब कर्नैल फियर साहबके विषदिये जाने का चहुंओर चरचाहुआ तो मैंने महाराजा साहबसेकहा कि हीरों की भस्म किस प्रकार हो सक्ती है महाराजा साहबने कहा तुमने खाकहोना हीरों का लिख दिया है मैंने कहाकि हां तब महाराजा साहब ने कहा कि उसवरक्क़ को हिसाबसे निकाल डालो इस विषय में मैंने नानावतिल से सम्मत पूछा उन्होंनेकहा किजब महाराजा साहबकी आज्ञाहै तो ऐसाही करो—महाराजासाहबने मुझकोयहभी आज्ञादी कि जबइस प्रकारका खर्च लिखाकरोतो ऐसालिखो किकिसीको असलहाल न मालूम हुआ करे नूरूद्दीन बोहरसे जो दोबेर संखिया ली गई उसका मोल नहीं दिया गया केवल इतनाही इकरार कियागयाकि दवाईखाना उसको फिरसौंपाजायगा जब कर्नैलफियर साहबको विष दिये जाने का वृत्तान्त सर्वत्र प्रसिद्ध हुआतो नूरूद्दीन बोहरेने मुझसे कहा कि जिस बोहरे की दूकानसे संखियालाया था वह दोसौ रुपया मांगताहै-ऐडवकेटजनरलने कहा उसने कुछ और भी कहाथा—सरजबेलनटायन साहबने कहाकि ऐसे प्रश्नसेमें इन्कार करताहूं कि वहबातेंजो महाराजाके पीछेहुईं वहगवाहीमें दाखिल नहीं

हैं—साहब प्रेजीडण्टनेकहा—जो कुछबातें और कारर्वाई उस समय पर हुईवह सबगवाहीमें दाखिलहै ॥

सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहाआपकी रायमें यहबातें शहादतमें दाखिलहैं ॥

साहबप्रेजीडण्टनेकहाहांसुननेकेयोग्यहैंऔरजबउनकीतसदीकहोजायगी तो उससमयगवाहीकेभीयोग्यहैंसरजण्ट बेलनटायनसाहबमैं आपकामतलब समझा आपचाहतेहैं किसबहाल मालूम होजाय उसकेपीछे देखाजायगा कि गवाहीकेयोग्य हैं वानहीं साहब ऐडवकेट जनरलने गवाहसे कहाकि तुमने और नूरुद्दीन बोहरेसे क्याबातें हुईथी गवाहने वर्णनकिया किनूरुद्दीनने मुझसे कहा कि पहिली पुड़िया संखियाकी किसीके नामलिखी नहींगईहै और दूसरीपुड़िया मेरेनाम लिखीगईहै जिस बोहरेके पाससे संखिया लायाथा उसने कहाहै कि मेरी किताबेंहिसाबकी जप्तहोगईं और रजीडन्सीको गईहैं यदि तुमचाहतेहोकि संखियेका बेचाजाना छिपारहे तो दो सौरुपये मुझकोदो और मैं उस बोहरेको देदूंकि वहमेरा नामनबतावे—सरजन्ट बेलनटायन साहबनेकहा क्या हुजूरऐसी बातसुननेके मजाजहैं—साहब प्रेजीडण्टने कहाकि हां मुझको अधिकारहै क्यों कि इनबातोंसे मालूमहोगा कि सच २ क्या हालहै ॥

सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहा हुजूर इस हवाल को सुनकर गवाहीको तौरपर समझतेहैं परन्तुमैं यहबातें केवल गुफ्तगू समझताहूं कुछ गवाही नहीं समझता जो वार्त्ताकि महाराजासाहबके रूबरू नहींहुई वह समझी जासक्तीहै कि बनाई हुई है ताकि एक मनुष्य दूसरे को फंसावे ॥

साहब प्रेजीडण्टने कहा इसी वास्ते आपयह वार्त्ता करते हैंकि यहबातें बनाईहुई हैं ॥

सरजन्टबेलन टायनसाहबने कहामैं आपके सन्मुख यहबात पेशकरताहूं किआश्चर्य नहींजो यहवार्त्ता बनाईहुई होऐसी

बातोंकी शिहाक़त जबकि दूसराकोई मनुष्य वहां न पाओगे कर होसक्ती है परन्तु जो हुजूर उसको गवाही समझाते हैं ातेमैं चुप हूं॥

प्रेसीडेण्टसाहबने कहा जबतक कि प्रतिमनुष्य का हाल न सुनाजाय तबतक ऐसे मुक़द्दमे की तहक़ीक़ात कठिन है और जबतक कि प्रति मनुष्यको बात न सुनूंगामेरी समझमें क्योंकर आवेगा॥

गवाहनेवर्णनकियाकि नूरुद्दीन बौहरेसे मैनेकहाकिदोसौ रुपयेतुम अपनेपाससे देदोतुमको दवाईखानेका काममिलेगा तो यहरुपया मुजराहोजावेगा नूरुद्दीनयह बात सुनकरचुप होरहा और फिरमैंने नूरुद्दीनको नहींदेखा-नूरुद्दीननेमुझसे नहींकहा किवह किस बौहरेकी दूकानसे संखियालायाथा मैनेनौसारी में केवल एक बेररावजीको देखाथामालूम नहीं कि वह गायकवारके पास आया करता था यानहीं॥

जबकरनैलफियरसाहबके फोड़ानिकलाथामुझेअच्छेप्रकार स्मर्ण है महीना सितम्बर सन् १८७४ ई० था इस फोड़े का हालइस कारण यादहै कि मेरेसम्मुख सालिमने महाराजा साहबसे कहा था और उसने अपनी उंगली से बताया कि माथेमें फोड़ा है करनैलफियर साहब रावजीसे मरहमलगवाया करतेथे रावजीने एकचुटकी संखियेकी मरहममें डालदी थीजबमरहमके लगानेसेकरनैलफियर साहबकेफोड़ेमें सोजिश हुईतोउन्होंनेमरहमके फाहेको उतारडालायहबात सुनकर महाराजासाहब मेरेरूबरू कुछनहीं बोलेजब करनैलफियर साहबकेयह फोड़ाथातोमहाराजासाहबनेकुछ दवाईकेबनाने कोमुझको आज्ञादीथी उसीसमयमें सालिमकोमैंने संखिया दीथीऔर महाराजासाहबने आज्ञादीथी कि हकीमसाहबके निकटबड़े २ चींटे,सर्प, और काले घोड़ेका मूत्रभेजदो वह कुछ दवाबनावेंगे मुझकोऔर कोईबात उसदिनकी जोमहाराजासाहबने कहीहो स्मर्णनहींमैनेयह सम्पूर्णवस्तुभेजाकर

हकीमसाहबके निकटभेजदीथी और हकीमसाहबने एकशीशीमें कुछदवाबनाकरदीथीसाहब प्रेजीडेण्टनेकहाइसशीशीकोदवा कीवस्तुतोमालूम होगई परन्तुयहपूछोकि इसशीशी परडाटथी वा नहीं-एडवकेटजनरलने गवाहसे कहाकि तुमइसशीशीका हालबयानकरसक्तेहोगवाहने उत्तरदियाकि उंगलीके बराबर वह शीशीथी उसको गजाबामेरे निकट लायाथामुझको स्मर्ण नहीं कि उसशीशीमें डाट था वा नहीं परन्तुमैंने उसशीशीकीदवा को दूसरीगुलाबकीशीशीमें रखदियाथाऔर उसशीशीपररूई औरमोम लगाकर सालिमकोदेदियाथा मैं जानताहूं कि जो व्यवस्था रेजीडन्सीमें हुवाकरतीथी उसकीइत्तिला महाराजा साहबकोहुवाकरतीथी रावजी सालिमकेद्वारा उनचिट्ठियोंको महाराजा साहबके पास भेजाकरता और मैं उन चिट्ठियोंको महाराजासाहब के सम्मुख पढ़कर फाड़डालताथा गवाहको कुछचिट्ठियोंके पुलिन्दे दिखायेगये गवाहने कहा कियहरोज- नामचेहैं ऐसे२चारपुलिन्दे अदालतमेंथे एकपुलिन्देमें ११९॥) का हिसाबहै यहहिसाब मिटाहुवाहै एककारकूनने मेरीआ ज्ञासे उसपर स्याही डालदीथी उसका नाम बलवन्तराव है और रावजीका पुत्रहै स्याहीडालनेका कारणयहथा कियह रुपया११९॥) सालिमके नामलिखा था जब विषदियेजानेका शोरपड़ा तोउससमय मैंनेस्याही डलवादीथी इसीप्रकारऔर स्थानोंपरभी जहांऐसा रुपयालिखाथा स्याही डालदीगई थी साहब ऐडवकेटजनरलने उनपुलिन्दोंके कागजोंकोदेखा और जहां२ स्याहीपड़ीथी उसको तसदीककी॥

मैलवलसाहबने सुतरज्जिमसे कहाकि तुमकहो २ गवाह कावर्णन होजातेहो—गवाहने वर्णनकिया किजहां २ सा- लिमका नामआताथा अथवा किसीखर्चका ब्यौरानहींकिया जाताथा उसपर मैंस्याही डलवा देताथा यह सम्पूर्ण रुपया कर्नेलसाहबके विषदेने या रेजीडन्सी के नौकरोंको बांटनेमें खर्च हुवा॥

बेलनटाइनसाहब के प्रश्न गोदामेदार पंथ गवाह से किये॥

प्र०—तुम कहतेहो कि जितने हिसाब तुमनेबनाये वहसब बनावटीहैं? उ०—बहुतसे बनावटीहैं सम्पूर्ण हिसाब बनावटके नहींहैं और जानबूझकर बनावटी बनायेगये। प्र०—यहहिसाब महाराजासाहबकी आज्ञानुसार बनावटी बनायेगये? उ० महाराजासाहबकी आज्ञासे बनायेगये। प्र०—ऐसेअशुद्धहिसाबोंके बनानेके लिये तुमको समय २ पर आज्ञा होतीथीया खास २ हिसाब केलिये। उ०—जैसा मौक़ा होता था मुझको आज्ञामिलतीथी मैंहाराजासाहबसे मैं पूछलेताथा कि अमुक विषय में क्या आज्ञा है। प्र०—तुम महाराजा साहबसे पूछ करके हिसाबों को गलत किया करते थे? उ०—हां जैसा मौक़ा होताथा क्योंकि महाराजासाहब वाक़िफ होतेथे जिस कामके वास्ते रुपयादिया जाताथा। प्र०—तुम वाकिफ होतेथे या महाराजासाहब? उ०—महाराजासाहब। प्र०—जब तुमने महाराजासाहबसे आज्ञा मांगी उन्होंने आज्ञादी थी? उ० हां। प्र०—यदि इन हिसाबों की तहक़ीक़ात होती तो तुम किसतरह साबित करसक्ते थे कि हिसाबों के ग़लत करने के लिये तुमने महाराजासाहबसे आज्ञालेली उ०—इससे अधिक और क्या साबित करसक्ता कि सम्पूर्णकार्य्य महाराजासाहब कि आज्ञानुकूल कियाकरता था। प्र०—यहबयान तुम्हाराहै परन्तु मैं पूछताहूं कि जैसे महाराजासाहब तुमपर यह अपराध धरते कि तुम उनको लूटतेहो और लूटनेके प्रयोजनसे तुम हिसाबको बदलते हो तो तुम क्योंकर साबित करते कि महाराजा साहब की आज्ञासे हिसाबको बदला? उ०—जो रुपया दिया जाताथा चार किताबोंमें लिखा जाताथा और इसके विशेष देने और लेनेवाला मौजूद था। प्र०—तुम इस हिसाबकेबदलनेमें महाराजा साहबकीआज्ञाका होना क्योंकर प्रकटकरसक्ते थे जो तुम कहतेहो वह तुम्हारा जुबानीबयान है? उ०—सिवा उसके जुबानी महाराजा साहबके और कुछ

मेरेपास सुबूत नथा। प्र०—जोप्रश्न मैं तुमसे करता हूं उसका यह उत्तर नहीं जो तुमनेदिया मैं पूछताहूं किसिवायतुम्हारे बयान और महाराजासाहबकी आज्ञाकेकोई लिखीहुई आज्ञा तुम्हारेपासहै ? उ०—ऐसी आज्ञाओं से महाराजासाहब के लाखोंरुपये खर्च हुये हैं। प्र०—और हिसाबअशुद्धकियागया ? उ०-जबकभी गलतकरनेका मैाकाहुआ। प्र०-और तुमनेहिसाब गलत किया ? उ०—महाराजा साहबकी आज्ञासे कारकूनसे हिसाब गलतकिया औरबदलायागया। प्र०—परन्तु मैंतुमसेयह बात पूछताहूं तुमउसका समभबूभकर उत्तरदोकि जोतुमपर महाराजासाहब अथवा कोई और मनुष्य यह अपराधलगाता कि तुम महाराज साहब को लूटेखाते होते। तुमकिस प्रकार साबितकरते कि तुमको महाराजासाहबने इसभांतिके हिसाब गलतकरनेका मजाजकिया था ? उ०-कागजात से आपही साबित होसक्ता था। प्र०-सिवा कागजातके और किसी भांति सेभी साबितहोसक्ता था ? उ०—कागज दिहानीटपर रसीद लिखीहुई है। प्र०—तुम्हारे पास कोई लेख महाराजा साहब का है जिसमेंउन्होंने तुमको ऐसा अधिकार दियाहो ? उ०—मुहाफिजदफ़्तर साहबके निकटहोगा मेरेपास कोई ऐसालेख नहींहै। प्र०—मैंचाहताहूं कितुम इसप्रकारका कोई लेखदिखाओ जिससे विदितहो कि महाराजा साहबने तुमकोअधिकार दियाथा कि ऐसीकिताबोंको गलतकरो। उ०—मेरेनिकटकोई ऐसालेख महाराजासाहबका नहीहै परन्तु लक्ष्मीबाई जोमहाराजासाहबकी तीसरीरानीहैं उनकालेखहै। प्र० तुम्हारे निकट महाराजासाहब का कोईऐसा दस्तखती लेख नहींहै ? उ०—नहीं-लक्ष्मीबाई महाराजकी आज्ञासे दस्तखत करतीथीं और ऐसीआज्ञाओंपर महाराजासाहबकी मोहरभी है ? प्र०—कोई दस्तखती कागज महाराजा साहबका तुम्हारेनिकट है ? उ०—चारवर्षसे प्राईवेट सीक्रेटरी का कहकमा मेरेआधीन हुवाहै उससमयसे महाराजासाहबनेकोई

कागज मेरे महकमेका दस्तखत नहीं किया। प्र०—परन्तु मैं तुमसे पूछताहूं कि यदितुमपर लेलेनेका अपराध क़ायमकिया जाताता तुमकिसप्रकार उससे छूटते? उ०—एक२ हिसाब पांचजगह लिखाजाताथा मैंउसोसेसाबितकरता कियहरुपया खर्चहुवाहै मैने तग़ल्लुब नहींकिया। प्र०—कुछरक़में महाराजासाहबके हाथकी लिखीहुईभी हिसाबमेंहैं? उ०—जबजमाखर्चका नक्शातय्यार होताथा ता महाराजासाहब उसपर दस्तखत कियाकरतेथे यहनक्शा महाराजासाहबके दस्तखतों के वास्ते हरवर्षमें तय्यार हुआकरताथा। प्र०—ऐसे दस्तखत का कोईकाग़ज तुम्हारेनिकटहै? उ०— हां। प्र०—तुमउसको पेशकरसक्तेहो? उ०—जो आप मंगवावें तो आसक्ताहै। प्र०—अच्छा इसबातको फिर देखाजायगा तुमकोकभी हिसाबकीजांचहोनेका सन्देहहुआ था? उ०-किसमनुष्यसे। प्र०-शायदकोई मनुष्य जांचकरता? उ०-कुरक़ी होनेके पहिलेमहाराजासाहबके सिवायकोई मनुष्यमेरेहिसाबकी जांचकरनेका अधिकारी नथा।प्र०—पुलिसनेतुमसे कहदियाथाकि तुम्हारे हिसाबकी जांचहोगी? उ०—कुरक़ीकेपश्चात् पुलिसने वहकागजमुझको दिखायाथा किजिसपर स्याहीपड़ीथी औरकहाथा किइन हिसाबोंकी जांचहोगी। प्र०—पुलिसवालोंने क्यातुमसे यहकहाथा किखासतुम्हारे हिसाबकी जांचहोगी? उ०—पुलिसने यहकहाथा किसबहिसाबोंकीजांचहोगी। प्र०—तुमकोक्या मासिकमिलताथा? उ०—मुझे दोसौरुपये मासिकमिलतेथे औरमेरेभाईको चारसौ रुपये मिलतेथे। प्र०—मैं पूछताहूंकि तुमनेयहसब बातेंक्योंकर क़बूलकीं और तुमतो उसीदिन पकड़ेगयेथे जिसदिन महाराजासाहब पकड़ेगयेथे? उ०—मैंउसी दिनसंध्याको पकड़ागयाथा। प्र०—तुमको मालूम होगा कि रावजी और नरसूआदिके इजहार मिस्टरसूटर साहबनेलिये हैं? उ०—हांमैं यहखबरें सुनाकरताथा। प्र०—मैंसमझताहूं कि यहखबरें तुमकोबहुत दिलचस्प मालूमहुवा करती होंगी

उ०—मुझको जोकुछ खबरमिलतीथी महाराजासाहबको सुना देताथा। प्र०—परन्तु तुमको भी तो यह बातें पसन्द आती होंगी? उ०—मुझसे उनबातोंका सम्बन्ध नथा। प्र०—इसविषय में हम फिरबार्त्ता करलेंगे—परन्तु खूनियोंके समूहमें तुमभीतो एकमनुष्यथे और तुमने मारडालनेके लियेसहायता भीकी? उ०—हांमैंने सहायता की था। प्र०—पस मैं समझताहूं कि तुमको ऐसेहालातके सुननेका अपनातअल्लुकभीथा? उ०—हां अपने और महाराजासाहबके बचानेकेवास्ते मुझको तअल्लुक था। प्र०—शायद तुमको अपना खयाल कमहोगा महाराजा साहबके बचानेका अधिकखयाल होगा? उ०—हांमैंयहसमझा था कि चूंकिअब कुलकुर्की होगईहै मैंबचजाऊंगा। प्र०—जो तुमकोअपना खयालकमथा और महाराजा साहबके बचानेका अधिक विचारथा तुमनेपूछाथा कि रावजी आदिने क्या इज़हारदिये? उ०—मैंनगरकीखबरेंसुनाकरताथा जबतकसाक्षिमें छूटारहा वहसम्पूर्ण वृत्तान्त मुझसेआकर वहाकरताथा। प्र०—तुमने उसशीशीका हालभीसुनाहोगा जिसकावर्णनराव-जीनेकिया? उ०—मैंकैदमेंथा किसतरह सुनता। प्र०—परन्तु मैंउससमयका जिक्रकरताहूं जबतुम कैदनथे अर्थात्रावजीके इज़हारउस समय लियेथे जबतुम कैदनहीं हुयेथे? उ०—मैंने कुछहाल शीशीका नहींसुना। प्र०—क्यातुम कहतेहो कि मैंने नहींसुनाकि रावजीको शीशीदीगई सावधान होकरउत्तर दो उ०—नहींमुझसे किसीनेऐसा नहींकहा। प्र०—किसी मनुष्य ने तुमसे शीशीका हालनहीं कहा? उ०—नहींकहा। प्र०—तुमने पुड़ियाका कुछहाल सुनाथा कि करनैलफियरसाहबके गिलास में डालीगई? उ०—हां। प्र०—तुमनेसुनाथा कि उसमें संखिया थी? उ०—हां। प्र०—औरपिसाहुआ हीराउसमेंहै? उ०—हां प्र०—और यहकिरावजीने इसबात काइक़रार कियाहै किमैंने विषकी पुड़ियाकरनैलफियरसाहबके गिलासमें डालदी और उनके मारडालनेकाउद्योगकिया? उ०—हां सुनाहै महाराजा

साहबनेकहाथा। प्र०—जबतुमको मालूमहुआ किरावजी आ-
दिकपहिरेमेंहैं औरउनहीलोगोंमेंसे तुमभीथे तुमनेवह कागज
जिसमें इसप्रकारका जिक्रथा किसवास्ते फाड़नहींडाले? उ०
क्याकौनकागजइसमुआमिलेकाथा। प्र०—मुझकोतुम्हारेउलटे
प्रश्नकरने सेआश्चर्य नहींआया तुमनेवर्णनकियाहैकि कईका-
गजइसमुआमिलेकेथे? उ०—क्याआपउनकागजोंके तरफइशा-
रहकरतेहैं जिनकीनिस्बत मैंइजहारदेचुकाहूं। प्र०—क्यातुमको
कुछसंदेह है कि उन कागजों की तरफमेरा इशारह नहीं है
उ०—पहिले मुझको समझलेना चाहिये,जो वह कागज एक
जगहहोतेतो मैं उनको फाड़डालता। प्र०—जो कुछवर्णनकरते
होगो वहठीकहै तो तुम्हारी काररवाई से अच्छीतरह मालूम
होताहै कि वास्तव में विषदिया गया? उ०—हां। प्र०—तुमने
उनको क्यों फाड़नहीं डाला? उ०—केवल दो कागजों में रिश्व-
तका जिक्रथा। प्र०—तुमयह जानतेथे कि रिश्वत के विषय
में तहक़ीक़ात होरही है? उ०—हां मैं जानता था। प्र०—क्या
तुमइस विषय में सौगन्द खासक्तेहो कि तुमको मालूमथा कि
मिस्टरसूटर साहब तहक़ीक़ात कर रहे हैं? उ०—हांमैं शपथ
खासक्ताहूं। प्र०—उससमय तुमनेक्यों ऐसे कागजनहींफारडाले
क्योंकि वह सब कागज तुम्हारे अधिकार मेंथे? उ०—सबका-
गज चाकनहीं होसक्ते थे क्योंकि अलग २ महकमों मेंथे सर्व
स्थानोंसे उनकोसंग्रह करकेफार डालना असम्भवितथा। प्र०
कौनसी बात उसमें बाधकथी कितुमने उनकागजों को नहीं
फाड़ा? उ०—जबरुपये कीदिहानीद होतीथीतो दश २ जगह
लिखाजाताथा इससूरतमें निहायत दिक्कतथी कि सबजगह से
कागज संग्रह होकर फाड़डाले जाते यह सुनकर सरजज
वेस्टनढाकन साहबने सिक्रेटरीसे सम्पूर्ण कागज मंगवाये और
अपने रूबरू रख कर कहा कि यह कागज अलग २ थे और
अलहदा किताबमें सिलेहुये हैं और उनके साथ तर्जुमा कया

हुआहै यदि अलग २ करकेदेखे जावेंतो उनकी संख्याकमहै कौन सी बात बाधक थी कि तुमने कागज़ नहीं फाड़े। प्र० जो रुपया एक जगह दिया जाता तो फट सक्ते थे परन्तु भिन्न भिन्न समय और भिन्न भिन्न जगहपर रुपया दिया गया फिर किसतरह फटसक्तेथे। प्र०—परन्तु मैं जानताहूं कि एक प्रश्नका तुम उत्तरदो बयान करो कौनसी बात बाधकथी कि तुमने कागजनहीं फाड़ेजिनकागजोंनेतुम्हारे और महाराजा साहबके अपराधोंकी सिदाकत की? उ०—मुजको इतना सावकाश नहींथा किउन कागजों कोफाड़ता। प्र०—अबकाशसे तुम्हारा क्या मतलबहै ?उ०—मुझे ऐसा अवसरन मिलाफिर मैंक्योंकरफाड़ डालता। प्र०—जोमनुष्य आपके नगरमें किसीको बिषदेता है औरउसपरअपराध साबितहोजाताहै तोउसकोक्यादण्डदिया जाताहै ? उ०—दण्डदिया जाताहै। प्र०—यहतो मैंभीजानताहूं किदण्डदिया जाताहै परन्तु यहबताओ कि फांसी दीजातीहै वाकौनसा दण्डदियाजाताहै? उ०—दण्डदिया जाताहै परन्तु मैंने क़ानून नहीं देखा। प्र०—तुमको कुछ भीखयाल है किक्या दण्ड दिया जाता है ? उ०—मैं कुछ नहीं जानता। प्र०—मुझ को खयालथा कि तुम जानतेहोगे परन्तु बतलाओ कि तुम्हारे बिचारसे क्या दण्डदिया जाताहै ? उ०—जो कुछकि जजलोग उचित समझते हैं दण्ड दिया जाताहै। प्र०—कभी किसी को फांसीभी दीजातीहै ? उ०—बड़ौदे में किसीको फांसी नहीं दी जाती है मैंने तो किसी को फांसी दिये जाते हुयेनहीं सुना। प्र०—परन्तु तुमजानतेहोकितुमको अपनीगरदन का भीखौफहै ? उ०—मेरीगरदन का। प्र०—हांभयथा परअबनहीं रहा ? उ० मैंआपसे बर्णनकर चुकाहूं कि जिस वजहसे मैं ने चाक नहीं किया। प्र०—मुझसे फिर बयान करो ? उ०—ऐसे कागज़ कई महकमोंमें थे मुझको फाड़नेका अवसरनमिला। प्र०—क्याकब कागज तुम्हारे अधिकारमें थे ?उ०—हां। प्र०—तुमकह [illegible]

मंगा सक्ते थे? उ०—जब २ महाराजा साहबको किसी बातके दरयाफ़ करनेकी अवश्यकता होतीथी तोमंगालिये जाते थे। प्र०—महाराजा साहबका नाममतलो परतुमको कौनसी बात बाधकथीकि तुमनेनहींमंगवाये ? उ०—वह मेरे क़बजे में थे। प्र०वहकागजकि तुम्हारे क़बजेमेंथे औरतुम जानतेथेकिउन्हीं कागजोंसेमारनेके उद्योगसेपकड़े जाओगे तोतुमने क्योंउनको नहींफाड़ा ? उ०—मुझको खयालथाकि कुर्की नहोगी और नमैं जानताथा किऐसासमय कभीआवेगा जोआजहै। प्र०—इसी कारण तुमने कागज न फ़ाड़े इसके सिवा कोई और कारण नथा ? उ०—हांकोई औरऐसाहेतुनथा। प्र०—मेहरबानीकरके मुझको उत्तरदो कि तुमनेक्यों खयालनहींकियाकितुमपरऐसा समयनआवेगाजोतुमने काग़जनहींफाड़ेजोकुछकागजमशकूक करदियेथे?उ०—मैंनेकई हिसाबोंपर स्याहीडाल दीथी। प्र० किसी बातकेछिपानेकेवास्ते?उ०—हां।प्र०—इसबातकातअल्लुक कुछसालिमसेभी था? उ०—हां। प्र०—औरइसबातकेछिपाने का तअल्लुक इस काररावईसे था ? उ०—हांछिपाने केलिये। प्र०—तुमने कुछकिस वास्ते मशकूककिये. और सब काग़जात क्यों नहींफाड़े ? उ०—मैंने कारकुन को आज्ञादेदी थी कि जैसाउचितहो करो। प्र०—परन्तु एक प्रश्न तुमसे करता हूं जोसब बातोंका सारांशहै मतलबयहहैकि तुमजानतेहो कि तुमने यहसबबातें महाराजासाहबके फंसानेकेवास्ते ईजाद कींथीं ? उ०—मैंने यहसबबातेंइसलियेकींथीं कियदिमहाराजासाहब पकड़ेजावें तो छूटजावें। प्र०—तुम सौगन्धखासक्तेहोकि यह सबउपाय तुमने महाराजासाहबके माखूज करने को ईजाद नहीं किये ? उ०—नहीं—महाराज के अपराधी ठहरने के लिये यह उपाय नहीं किये। प्र०—सरदिनकररावने कहा कागज़ोंकी पहिली हालतसे महाराजासाहब माखूज नहीं होसक्तेथे परन्तु जबतुमने रकमों पर स्याहीडालदी तो अपराधी बननें का कारणहोगया तुमने ऐसा क्यों किया ? उ०

महाराजा साहबने मुझसे कहाकि तुम इनरकमों को समझकरो तो मैंने खाईडालदी—सरजनस्बेलनटायन साहबने गवाहसे कहाकि मेरी ओर देखो मैंभी वही प्रश्नकरूंगा जो सरदिनकरराव ने किया। प्र०—जिसभांतिकी तुमरकमोंको निकालतेहो अर्थात्‌बड़े २ धब्बे स्याहीके हिसाबपर डालकर तो लोगोंका ध्यान शीघ्रही स्याहीके धब्बोंपरजायगा? उ० मुझको उससमय इसबातका खयालन था—श्रीमान् महाराजासेंधिया ने कहा—पांचजगह हिसाब रहाकरता था पांचों जगहके हिसाब में ऐसेबड़े २ धब्बे पड़ेहुये हैं—परन्तु यहप्रश्न गवाहसे नहीं कियागया। प्र०—सरजनस्बेलनटायनसाहब ने कहा मैं तुमसे दो एक और प्रश्नकरूंगा क्या तुमको इसबात का ध्याननथा कि स्याहीके बड़े २ धब्बे बुरे मालूमहोंगे? उ० अबमुझको भी वैसेही मालूमहोते हैं परन्तु उससमय कुछ इसबातका ध्याननथा। प्र०—यदि तुमजानतेथे कि कुछतहकीकातनहोगी तो स्याहीकेडालने का क्या कारणथा? उ० यहसबब था कि किसी ग़ैर आदमीको हाल न मालूमहो। प्र०—मुझसे वर्णनकरो कितुम अच्छीतरह जानते थे कि जब तुम इकरार न करोगे जेलखानेसे बाहर न निकलोगे? उ० हां मैं जानता था। प्र०—प्रथम तुम गोरोंके पहिरे में थे? उ०—दोदिनतक सेनापतीकी कचहरीमेंरहा। प्र०—तुमअकेले वहांक़ैद रहे या कोई और भी मनुष्यतुम्हारे साथथा? उ० मेरेसाथ केवलएक सिपाहीथा। प्र०—केवलदोदिन और दो रात क़ैदरहे? उ०—हां। प्र०—मैंजानताहूं कि रातको तुम पलंगपर सोतेहोगे? उ०—जिसजगह मैंदिनको बैठाथावहीं रात्रिको सोरहा। प्र०-सिपाहीतुम्हारे साथरहनेकेवास्तेमिला था? उ०—उस सिपाहीका मुझ पर पहिराथा ताकि मेरी हिफाजतकरे और मैंभागनजाऊं। प्र०—इसके उपरान्ततुम्हारे साथक्या सुआमिला हुआ? उ०—मैं वहां से रेजीडन्सी में आया। प्र०—वहांसे तुम्हारे साथ लोगोंने क्याकिया? उ०

मुझको एक कमरेमें रक्खा जहां सिपाहियोंका पहिरा था। प्र०-पुलिसके हवालेकबसे कियेगये? उ०-१६-दिनकेपश्चात् जब मैने सब बातोंका इक़रार किया। प्र०-आजकल जबतुम अदालतमें नहीं होते हो क्या२करतेहो? उ०-मैं एक डेरेमें रहा करताहूं जबवहां मनुष्य कहतेहैं बैठजाओ बैठजाता हूं जबवहे होनेको कहतेहैं खड़ाहोजाता हूं। प्र०-अबतुम पुलिसकी हिरासतमें नहींहो? उ०-जहांमैंहूं वहांपुलिस के लोगोंका पहिराहै। प्र०-उनका क्यानाम है? उ०-मैं नहींजानता चौथेदिन पहिराबदला जाताहै? प्र०-जबयह मुकद्दमापूर्ण होजायगा तोतुम्हारा क्याहोगा? उ०-जोसाहब जजतजवीज करेंगेवही होगा। प्र०-स्पष्टरीतिसे कहोकिइस के क्याअर्थहैं हैं? उ०-जो किजज साहिबों की रायहोगी वहीहोगा। प्र०-हम नहीं समझते कि तुम्हाराक्या मतलब है? उ०-मेरा यह अपराध हैकि मैंनेसब बातोंका इकरार करलिया यदि मैं निर्दोष हूं तो मैं छूटजाऊंगा नहीं तो जो कुछदण्ड होगामालूम होजायगा। प्र०-तुम्हारामतलब यहहैकिजिस प्रकार तहकीक़ातकी रूदादहोगी उसीप्रकार दण्डहोगायदिकमीशनके मेम्बरतुम्हारी एकबातका भीनिश्चय नकरेंतो क्या होगा? उ०-मुझकोदण्ड मिलेगा। प्र०-यदि तुम्हारे बयान पर निश्चय करेंतो क्याहोगा? उ०-मुझको छोड़देंगे और छूटनेका सार्टीफिकटदेंगे। प्र०-मुझसेवर्णन करोकि प्रथममें किसतारीखको करनैलफियर साहबकेविषदेनेका उद्योग हुआ था और इसविषय मेंकौन २ उपाय किये गयेथे? उ०-जोउपाय कियेगये उनकामैं इज़हारमें वर्णन कर चुकाहूं। प्र०-परजो तुमने मिस्टररिचीसाहब के सन्मुख वर्णन कियाथा वहमेरे रूबरूभी वर्णनकरोकि कितने उपाय विषके देनेमें हुये? उ०-पांचउपाय कियेगयेअर्थात् चार तोले संखिया दो बेर करके और दोतोले पिसा हुवा हीरा और एक शीशीदवा की तय्यारकी गई। प्र०-जिस शीशीमें

तुम हकीमको दवाकहते हो उसमें क्या था ? उ०—उसमें कालेसर्प श्रौरकाले चींटोंकासतथा । प्र०—इसशीशोकाकौन साहमलाथा पहिला, दूसरा, तीसरा, चौथा, वा पांचवां,? उ०—मुझेस्मर्ण नहींकि कौनसाथा । प्र०--यादकरोकि कौन सा हमलाथा ? उ०—मैं किसतरह याद करसक्ता हूं । प्र० मैं उसबयान को देखरहा हूं जो तुमने मिस्टररिचीसाहब के रूबरू बयानकियाथा कि तीनबेर कर्नैलफियरसाहबके मारने के वास्ते उद्योगकियागया--प्रथम उसदवासेजो हकीमने बनाई थी, द्वितीय फोडेके मरहममें विष डालागया, तृतीय, संखिये के जरियेसे जब शर्बतमें विषडालागया ? उ०—हां मैंनेयही वर्णनकिया था । प्र०—क्या यह बातठोक है ? उ०—गलतकिसतरहहोसक्ती है । प्र०—किस तारीख़ को हकीमकेपास से तुम्हारेपास शीशोआईथी ? उ०—मुझेस्मर्णनहीं । प्र०—कोई तारीख़ तोयादहोगी तुम्हारी यादबहुतअच्छी है वर्णनकरो उ०—शायद आश्विनका महीना था ॥

मुतर्ज्जिमसे पूछागया कि आश्विन कबहोता है—मुतर्ज्जिमने कहाकि अक्टूबर और नवम्बरमें होता है । प्र०—दिवालीके कितनेदिन पहिले ? उ०—इतना मुझको स्मर्णहोता तो मैं तारीख़ बयान करदेता ॥

सरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहा कि माइलार्ड—मुझको गवाहसे और भी प्रश्नकरनेहैं परन्तु अबदोबजगयेहैं इसलिये टिफनका समय आगया, सोकमीशनके मेम्बर टिफनखाने के लियेगये, जबटिफनखाकर आयेतो सरजन्टबेलनटायनसाहब फिर प्रश्न करने लगे ॥

प्र०—क्या संखियेके बेचने का निषेध था और महाराजा साहबकी आज्ञाकेबिना नहीं बेचा जाताथा ? उ०—संखिया फौजदारीके महकमे से मिला करती थी । प्र०—महाराजा साहब की आज्ञासे सदा मिलती थी ? उ०—जो मनुष्य कि फौजदारीका प्रधानहै वह इसबातको जानता होगा । प्र०

तुम इसबातको नहीजानते ? उ०—मैंने कभी फौजदारी का
काम नहींकिया इसलिये मैंनहीं जनता। प्र०—तुमयह नहीं
जानतेकि महाराजासाहब की आज्ञासे जितनी कि संखिया
की आवश्यकताहोती थी मिलसक्ती थी ? उ०—हांमहारा-
जासाहबकी आज्ञासे संखियामिलसक्ती थी। प्र०—फिरकिस
वास्ते महाराजासाहबकी आज्ञासे तुमनेसंखिया न मंगवाई
उ०—डरसुपजीवद्याने कहाकि महाराजासाहब से आज्ञा
लेकर मैं संखिया दूंगा। प्र०—परन्तु जब तुमको महाराजा
साहबने आज्ञादीथीतो फिरसंखियेका मंगानाकौन कठिनथा
उ०—महाराजासाहबने केवल जुबानी आज्ञादीथी कोईलेख
न था। प्र०—तुमने तहरीरी आज्ञाक्योंनहीं लेली ? उ०—म-
हाराजासाहबने मुझसेकहा था कि तुमलिखभेजो कि घोड़े
की दवाकेलिये संखियेकी आवश्यकताहै। प्र०—तुमनेनूरुद्दीन
बोहरेको हालमें नहीं देखाया ? उ०—इस हालके पूछने से
आपका क्या मतलब है। प्र०—तुम जानते हो कि इसहालके
पूछनेसे जोकुछ मेरामतलबहै ? उ०—जबमैं छूटाहुवाथा वा
जबसे कि मैं क़ैदहूं। प्र०—तुमने नूरुद्दीनको अन्तमें कबदेखा
थां ? उ०—मैंआपका मतलब नहींसमझा। प्र०—तुममेरेप्रश्न
को टालतेहो और उत्तरदेना नहींचाहते साहबप्रेसीडण्ट
ने कहाकि गवाहसे साफजवाब लियाजाय ? उ०—जबमैंक़ैद
था उससमय नूरुद्दीनको मेरे निकट लायेथे। प्र०—इसबात
को कितनासमय बीता ? उ०—मुझेस्मर्णनहीं। प्र०—इसबातसे
तुम्हारा क्यामतलबहै कि दोतीनदिनसे तुमनेउसकोनहींदेखा
उ०—नहीं। प्र०—अखीर हफ़्तेमेंउसको देखा ? उ०—नहीं।
प्र०—जबतुम्हारा उसकासाम्हनाहुवातो उसनेतुमसे कहाथा
कि तुम बराबर झूठबोलतेहो ? उ०—उसने कोईबात मुझसे
ऐसी नहींकही जोकुछ उसनेमुझसे कहाउसको मैंनहींसमझ-
सका। प्र०—तुमनेउसके रूबरू संखिये के मोललेनेका इ-
क़रारकियाथा ? उ०—हांमैने उसकेरूबरू कहाथा किसंखिया

बोलजोगई। प्र०—क्या उसनेतुमसे कहायाकि तुमझूठबोल-
तेहो? उ०—मेरेरूबरू उसनेकुछ नहींकहाथा। प्र०—उसने
तुम्हारेरूबरू इन्कार नहीं किया? उ०—वहमेरे रूबरूपेश
कियागया और फिरउसको लेगये। प्र०—तुम्हारेरूबरू कि-
सनेपेश कयाथा? उ०—एकअअफ्सरथापरन्तु मैंउसकोनहीं
जानता कि कौनथा। प्र०—हिन्दुस्तानी अफ्सरथा? उ०—हां
प्र०—अकबरअली था? उ०—स्मर्णनहीं। प्र०—अब्दुलअली?
उ०—यादनहीं। प्र०—ध्यानकरके यादकरो अकबरअलीथा
उ०—इससमयक्योंकर यादआसक्ता है। प्र०—गजानन्दवतिस
था? उ०—वहनथा। प्र०—शायद अकबरअली या अब्दुल-
अलीहोगा? उ०—मुझको स्मर्णनहीं शायदहो। प्र०—पसवह
अफ्सर नूरुद्दीनको तुम्हारे सम्मुख लाये और कहा कि इस
मनुष्य से तुमनेसंखिया मोललो थी? उ०—हां प्र०—उसको
फिर जेलखानेकोलेगये? उ०—मुझको मालूमनहीं कि कहां
लेगये। प्र०—उसकोकोई अफ्सरलेगया? उ०—हां। प्र०—तु-
म्हारेसम्मुख गजाबाभी लायागया? उ०—हां प्र०—अकबर-
अली उसकोलायाथा? उ०—अकबरअली नहींलाया। प्र०
फिरकौन लाया था? उ०—गजानन्दवतिल लाया था। प्र०
जो कुछउसकी निस्बत तुम्हारा बयानथा उसकेरूबरूभी तुमने
उससे कहा था? ०—हां मैंने कहा और वह बैठा हुआ
सुना किया। प्र०—उसको भी फिर तुम्हारे पाससे लेगये?
उ०—हांवहभी भेजदियागया। प्र०—तुमने वर्णनकिया है कि
तुमने सालिमको घोघोदीथी? उ०—हां। प्र०—तुमजानतेथे
कि उसमेंविषहै? उ०—हां। प्र०—तुमने वर्णनकिया है किजब
घोघोदी गई उससमय महाराजासाहब उपस्थित थे? उ०
गजाबा महाराजासाहब की आज्ञानुकूल घोघी लाया था
फेलोजसाहबनेपूछाक्या महाराजासाहबउससमयउपस्थित
थे गवाहने कहाकि अपने इजहारमें मैंने बयानकियाहै कि
गजाबामेरेघरपर घोघीलायाथा जिस्समें बबलसाहबने कहा

गयाइसे इसतरह पूछाजायकि तुमने वहशीशी कब दीथी ? उ०—मैं महाराजासाहबके साथथा जिससमय अपनेघर को सालिमगया वहशीशी देदीथी। प्र०—सरजन्स बेलनटाइनसा-हबनेकहाक्यातुमनहीं कहसक्ते किजिससमय शीशीदीगई उस समय महाराजासाहब वर्त्तमानथे ? उ०—उससमय महारा-जा साहब मौजूद थे मैंने अपने घरपर सालिमको शीशी दी थी। प्र०—शीशीके देनेकेसमय तुमने सालिमसे क्याकहाथा ? उ०—मैंने कहाथा कि इसशीशीको रावजीके पासलेजाओ। प्र०—क्या तुमने कहाथा कि रावजी इसशीशीको क्याकरे ? उ०—कुछकहनेकीआवश्यकतानथी वहजानताथा जिसवास्ते भेजीगई। प्र०—तुमनेउससे पहिलेकभी कहाथा ? उ०—नहीं। प्र०—तुमजानतेथे कि शीशी किस वास्ते दीगई ? उ०—हां। प्र०—बयानकरो किसवास्तेथी ? उ०—इसवास्ते किशीशीकी दवाजल में डालदी जायकि स्नान करतेही शरीर में फफोले पड़जावें। प्र०—इससे तुम्हारा यहमतलबहै कि कार्नेल फियर साहबको देहमें फफोलेपड़जावें ? उ०—हां। प्र०—किसतरह से फफोलेपड़जाते ? उ०—जबशीशीकी दवापानीमें पड़तीतो निस्संदेहफफोलेपड़जाते। प्र०—तुमने फिर सुना कि शीशीकी दवाजलमें डालीगई ? उ०—मैंने नहींसुना मालूमनहीं कि डालीगई वा नहीं। प्र०—यादकरो कि यहबात कबहुईथी ? उ०—दसहरेके कईदिनपहिले या थोड़ेदिनपीछे। प्र०—तुमने कभीनहींसुनाकि उसशीशीकीदवाक्याहुई ? उ०—मैंनेकभी नहींसुना। प्र०—न तुमने कभीपूछा ? उ०—नहीं। प्र०—यश-वन्तसदैव महलमेंआयाकरताथा ? उ०—जबकोई कामहोता उसदिन आता था और सोमवार और बृहस्पतिवारको सदा आयाकरता था। प्र०—और सालिम भी आयाकरता था ? उ०—हां जबकभी सवारीहुआ करतीथी आताथा अथवाजब कभी चिट्ठीजाता तो दरमियानमें भी आया करताथा। प्र० तुमने सालिमसे कभी नहीं पूछा किजो शीशी कर्नैलफियर

साहबके मारडालनेको गईथी उसका तुमने क्याकिया ? उ० कभीनहीं पूछा ? प्र०—क्यातुमको पूछनेकी कुछ आवश्यकता नथी ? उ०—नहीं ॥

ऐडवकेटजनरलनेदुबारह इज़हारदामोदरपंथके लिये ॥

तुमनेअभी मेरेसाथीसे कहाहैकि पांचजगह हिसाब लिखा जाताथा ? उ०—हांसाहबकहाहै। प्र०—वहपांच जगह किस-वास्तेहिसाबलिखेजातेथे ? उ०—साहबआपकोइससेक्यामतलब है। प्र०—मैंइस वास्तेपूछताहूं किमेरे साथीने तुमसेपूछाथा कितुमने उनपांचोंजगहके हिसाबोंकोबे क्योंनदिया और बब्वे क्योंडालदिये?उ०—महाराजासाहबजुबानीहुक्मकोआज्ञादिया करतेथे औरउनकी आज्ञापालन की याददाश्त लिखी जाती थीऔरयाददाश्त जहांरूपयामिलताथा वहांहिसाबमें दरज होतीथी औरफिरकच्चेखाते में दर्ज होती थी फिर पक्केखाते में दरजहोतीथी फिरथैलीबन्दहिसाबमें दर्ज होतीथी। प्र०—क्या यहसब हिसाब तुम्हारे अधिकार मेंथे ? उ०—हांसाहब। प्र० तुमनेतोवर्णन कियाहै किजबसे तुम नौकर हुयेहो एक लक्ष रुपया तुम्हारीतहवीलसे खर्चहुआहै क्यायहबात सचहै? उ० हांसाहबयहबातसचहै। प्र०—क्या सम्पूर्णखानगी हिसाब महा-राजकेतुम्हारेद्वारा होतेथे ? उ०—हांसाहब होतेथे। प्र०—इन चारबर्षतुम्हारी नौकरीकीअवधिमें जोमहाराजनेहर मनुष्योंको रुपयादिलवाया किसीके दिलवानेकी तहरीरीआज्ञाभी महा-राजनेतुमकोदीथी ? उ०-नहीं। प्र०—महाराज तुम्हारीहिसाब कीफर्दमें भीदस्तखत कियाकरतेथे ? उ०—हांसाहब थैलीबन्द हिसाबकी फर्दपर दस्तखत करतेथे। प्र०—थैलीबन्द हिसाब क्यावस्तुहै ? उ०—रोजमर्रीकेखर्चका खाताहै। प्र०—तुमनेअभी कहा कि एक हिसाब तुमने खोडाला ? उ०—हां साहब वह हीरों का हिसाब था। प्र०—तुम्हारे इजहार होनेके पहिले तुमनेनरसु और रावजीके इक़रार करनेका हालसुनाथा ? उ०—हांसाहब सुनाथा। प्र०—मालूम होताहै कितुमनेइसी

सबबसे वह कागजातखच करडाला ? उ०—नहीं साहब। प्र० उससमयसे जबसेकितुमने इकारार कियाहै और तुम कैदहो तुमने रावजी और नरसूके मद्दे कुछहालसुनाथा ? उ०—नहीं साहबकुछ नहीं सुना। प्र०—तुम्हारे इजहार जोलियेगये तो क्या मरहठीभाषामें लियेगयेथे? उ०—नहीं साहब उसका अंगरेजी भाषामें उलथा कियागयाथा। प्र०—तुमको वहरूब सुना दिया गया था ? उ०—हां साहबसुना दिया गयाथा। प्र०—तुमने उसपर दस्तखत कियेथे ? उ०—हां साहब किये थे॥

इजहार हेमचन्द फतह चन्द जौहरी॥

मिस्टर अनवरारटी साहबने इस गवाहके इजहार लिये उसनेवर्णन किया कि मैं बड़ौदेमें रहता हूं और पेशा जौहरी का करता हूं मैंने नानाजीवतिल को बहुधा देखाहै वहगायकवाड़ का नौकरहै नानाजीवतिल के पास मैं कभी जवाहिर नहीं लेगया। प्र०—जो तुम नहीं लेगये तो कौन लेगयाथा ? उ०—किस क़ीमतके। प्र०—तुम याकोई और मनुष्य तुम्हारी दूकान से कुछ जवाहिरात लेगये थे ? उ०—किसवक्त। प्र० आखिर दसहरेमें ? उ० मैंआखिर दसहरेमें कभीजवाहिरात नहीं लेगया। प्र०—नानाजीवतिल के पास तुम कभी हीरे नहीं लेगये ? उ०—नहीं। प्र०—महाराजा साहबके महल को कभी हीरे नहीं लेगये ? उ०—क्या आप हाल का ज़िक्र पूछतेहैं। प्र०—हांहालका ज़िक्रपूछताहूं ? उ०—नहींमैंहाल में कभीनहीं लेगया। प्र०—व्यतीत दसहरेमें लेगयेथे ? उ० हांलेगयाथा। प्र०—किसने मंगायेथे ? उ०—नानाजीवतिल नेकहा कि कुछहीरे लाओ। प्र०—तुमकुछहीरे लेगयेथे ? उ०—हांलेगयाथा परन्तु मुझेवापिसमिले। प्र०—तुम किसके पासलेगयेथे ? उ०—नानाजी वतिलके पास लेगयाथा। प्र० उसके उपरान्तभी फिरकभी लेगये ? उ०—नहीं। प्र०—तुम कभीमहाराजा साहबके महलमें हीरेलेगयेथे ? उ०—नहीं। प्र०—उसकेपीछे महाराजा साहबके महलको हीरेलेगयेथे ?

उ०—नहीं नानाजी वतिलने तुमसे अस्लके दसहरेमें कुछहीरे लियेथे ? उ०—नहीं। प्र०—तुमने कुछरुपया हीरोंके मोलका पायाथा ? उ०—मैनेकुछ रुपयानहीं पाया। प्र०—तुमनेदसहरेके दिनोंमेंभी नानाजी वतिलसेभी कुछरुपया नहींपाया ? उ०—हांमैने कुछरुपया पायाथा परन्तु वहरुपया कार्तिकके महीने काथा॥

गवाहने वर्णनकिया कि मैं विनायकराव व्यंकटेशको जानताहूं-आषाढ़वदी ७ वा ८ को उनकेपास कुछहीरे लेगयाथा वहगुलाबीहीरेथे और ऐसे २ छोटेथे कि एकरत्तीमें छः सात हीरे चढ़तेहैं मैनेउनसे कुछरुपया पहिलेकाभी पायाथा—और गवाहने कहा कि मैने सात हजार रुपयेकी हुण्डी शिवचन्द खुशहालचन्द के नामकीदी थी दो हजार रुपये एक मरतबा चारहजार एकमरतबा और दो हजारएक मरतबा और फिर दो हजारएक मरतबापाया इसप्रकार दसहजार रुपयापाया जबमैं महिलसे लौट आया तो जिन २ लोगोंके हीरेथे मैंने उनको लौटादिये उनदिनों मैंनेदामोदर पन्थको कभी नहीं देखा न मैंनेउनके हाथकभी हीरेबेचे औरन मैंने नानावतिल और विनायक राव के हाथ कभी बेचे मिस्टर सूटर साहबने जो मेरे इजहार लियेथे वहमुझे याद हैं मिस्टर अनवरारटी साहबने कहा कि माईलार्ड—यदिआज्ञा होतो उन इजहारातमें जो इस गवाहने मिस्टरसूटर साहब के रूबरू दिये हैं प्रश्नकिये जावें—साहबप्रेजीडण्टने कहाकि उन इजहारातको आपशहादतकी भांतिक़रार नहीं देसक्ते सरजन्ट बेलनटायन साहबनेकहा मैंऐसेसवालपर इन्कारकरताहूं साहबप्रेजीडण्ट नेकहा जो इजहार इस गवाहने मिस्टरसूटरसाहबके रूबरू दियेहैं वहपढ़कर गवाहको सुनादिये जावें सरजन्टबेलनटायन साहबने कहा जरूरउचित समझतेहैं किवह इजहार पढ़कर सुना दियेजावें प्रेजीडण्टसाहबने कहाकिहांपढ़करसुना दिये जावें अगरयह गवाहगवाहीके देनेमें तामुलकरताहै सरजन्ट

वेजनट. वन साहबने कहा मेरामतलब इसप्रकारसे यहहै कि चूंकियहगवाह शहादत देनेमेंताम्मुल करता है इसलिये सरकारी कौंसलियोंके तजवीजके अनुसार उसके रूबरूपहिले के इजहार न पढ़े जावें ॥

साहब प्रेसीडेण्टने कहा मैने कौंसिलके मेम्बरोंसे सलाह ली उनकीरायहै किजो ऐडवकेटजनरल गवाहको याददिलावें किउसने मिस्टर सूटरसाहबके रूबरू क्याइजहार दियेथे तोकुछमुजायका नहींहै—मिस्टर अनवरारटी साहबनेगवाहसे प्रश्नकिया कि तुमने मिस्टरसूटरसाहबके रूबरूजो इजहारदिये थे वह गुजरातीभाषामें थे वा अंगरेजी में थे वा दोनों भाषाओंमें? उ०—मेरेइजहार गुजरातीभाषामें लियेथे प्र०—वहइजहार तुमकोपढ़कर सुनादियेगयेथे? उ०—वह इजहार आपही सूटरसाहबने लिखेथे। प्र०—तुमकोपढ़कर सुनादिये गयेथे वा तुमने आपही उनकोपढ़ा? उ०—संध्या को इजहारलिखेगये और मुझसे दस्तखत करायेथे परन्तुसुनायेनहींगये मैंजानताहूंकि उसदिन मेराबयान ठीकरनहीं लिखागया मुझसेजबरदस्ती दस्तखतकरालियेथे। प्र०—तुमने सरल्यूइसपीली साहबके रूबरूदस्तखत नहींकिये? उ०—गणा मन्दवतिलने मुझसेकहाकि तुमकुछ नबोलो और मुखसेकुछ बात न निकालो और दस्तखतकरदो गवाहसे फिरयही प्रश्न कियागया उसनेकहा कि सरल्यूइसपीली साहबकेरूबरू मुझको पढ़कर नहींसुनायेगये। प्र०—क्या तुमने सरल्यूइस पीली साहब के रूबरू अपनेइजहार दस्तखत नहींकिये? उ०—नहीं गवाहको एककागज दियागया और पूछागया कियहइजहार तुम्हारा और दस्तखततुम्हारेहैं वानहीं गवाहने कहाकिनमेरे वह इजहार हैं नमेरेयहदस्तखत हैं गवाहसे फिरकहा गया अच्छीतरह ध्यानकर कहोसो गवाहनेबहुतदेरके पीछे कहा कि हां यह मेरे दस्तखत हैं ॥

साहब प्रेसीडेण्टने मुतरज्जिमसे कहा कि गवाहने अपने

दस्तखत होनेसे पहिले क्या इन्कार कियाथा मुतर्जिमनेकहा किहां दस्तखतसे और उनटोलकीरोंसे जो दस्तखत के ऊपर हैं इन्कार किया था, साहबप्रेजीडराटने कहा क्या इसगवाह ने कहाथा कि मेरेदस्तखत नहीं हैं, मुतर्जिम ने कहा हां, गवाहने यही कहा था मिस्टर अनवरारटो साहब गवाह से फिर पूछनेलगे। प्र०—यहदस्तखत और जोलकीर दस्तखत के ऊपर हैं तुम्हारी लिखीहुई है ? उ०—हां मुतर्जिमसे कहा गयाकि दस्तखतकेऊपर जोसतरलिखीहै उसको पढ़ो सोमुत-र्जिमने उसकोपढ़ा उसकामतलब यहथाकि मेरे रूबरू इज-हारपढ़ेगये और सुटरसाहबके रूबरू दस्तखतकरता हूं, इज-हारठीकहैं, लिखाहुआ ८ वीफरवरी सन् १८७५ ई० ॥

गवाहने वर्णनकिया किमैंने लिखाथा परन्तु मुझपर बड़ा अन्यायहुआ था लाचारहोकर मुझको दस्तखतकरने पड़े मैं गुजरातीभाषा में भलीभांति लिखपढ़ नहीं सक्ता मैं उसको यथायोग्य समझा भी नहीं कि इजहारों में क्या लिखागया मिस्टर अनवरारटो साहब मुतर्जिम से बोले कि गवाह से पूछोकितुमनेमिस्टर सुटरसाहबकेरूबरूयहकहाथाकिदो तीन दिनपीछेदसहरेके नानाजीवतिलने जिनके आधीन गायकवार काजवाहिरखानाथामुझसे औरऔरजैाहरियोंसे कहलाभेजा किहीरोंकी कुछकंठीहैं तुमलाओ सो मैं और जैाहरीउसीदिन हीरोंकी कनीलेगयेथे परन्तु दूसरेदिन वापिस देगये दोदिन के उपरान्त फिर नानाजीवतिलने मुझसे हीरे की कनीमंग-वाईसोमैं लेकरगया औरकीमतके ठहरनेके उपरान्तवहकनी मोललीगई इसके पांचचारदिन के अनन्तर नानाजीवतिलने फिर हीरेकी कनी मंगवाई परन्तु उसदिन जवाहिरखाने में सिरनवे विनायकराव नानाजीकेसाले वहांथे उन्होंने हीरों को तोला और मोल चुकाकर दामोदरपन्थके निकट लेगये दामोदरपन्थनेकहाकि मोलअधिकहै परन्तु उनकोमेरेनिकट रक्खाजो अगरजरूरत होगी तो मोललिये जांयगे दोपुड़ियां

में हीरेथे उनमेंसे एकपुड़िया रक्खीगई और दोतीन दिनके पीछे दूसरी पुड़िया वापिसोमिली ॥

गवाहने वर्णनकिया कि मैंने मिस्टरसूटर साहबके सन्मुख यह इजहार नहीं दियेजो उन्होंने चाहा मुझसे लिखालिया जोकुछ कि मुझको इससमय इजहार सुनाये गये सब अशुद्ध हैं मैंने सूटर साहबके सम्मुख कदापि ऐसावर्णन नहींकिया॥

मिस्टर अनवरारटी साहबने कहा तुमनेयह इजहार नहीं दियेहैं कि दो तीन दिनके उपरांत जब कि मालूम हुआ कि करनैलफियर साहबको विष दिये जानेका उद्योग किया गया नानाजीवतिल ने मुझसेकहाथा कि तुमनेजो हीरोंकीकनीको हिसाबकी किताबमें लिखाहै उसवरक़ोंको फाड़डालो क्योंकि किसीमनुष्यको यहसन्देहनहोकि करनैलफियरसाहबकोहीरे कीकनी दीगईयहबात सुनकरमुझे बड़ाभयहुवा उसवरक़ोंको जिनमेंहीरेकी कनीका हिसाबथा उसीसमय निकलवा डाले और वहांनये पत्रेलगा दिये—यहसुनकर गवाहने कहा कि मैंने कभीऐसा बयानमिस्टर सूटरसाहबके सम्मुखनहीं किया मेरी कितावेंडेढ़ महीनेसे मिस्टरसूटर साहबके पासहैं ॥

मिस्टरअनवरारटी साहबनेकहा तुमने मिस्टर सूटरसाहबसे नहींकहा कि जो कितावें इससमय मेरेसाम्हने रक्खी हैं और जिनपर (ए) (बी) (सी) अक्षरोंका चिह्नहैं यहवही कितावेंहैं जिनमेंनवीन पत्रेलगाये गये ॥

गवाहनेकहाकि मैनेनहीं कहा-मिस्टर अनवरारटीसाहबने कहा तुमनेमिस्टर सूटरसाहबसे यहनहींकहा कि अमुकरकम अमुकपृष्टमेंमिलेगीगवाहनेकहाकिसरकमकाआपवर्णनकरते हैंमिस्टरअनवरारटीसाहबनेकहाकोईरकमजोकिताबमेंलिखी हो ? उ०—मैंने कुछनहीं लिखा। प्र०—तुमने मिस्टरसूटरसाहबके सम्मुख यह भी बयान नहीं किया कि हीरेकी कनीका मोल २२७०) सिक्के बड़ौदाथे उनमेंसे ३०००) सुवकीनानाजी वतिल

नेदिये—यहरूपया दसऔर २४ एहमेंजमा है ? उ०—मैंने मिस्टर सूटर साहब से नहीं कहा और मैंने कोई ऐसा इजहार नहीं दिया जबसेमैने इजहारदिये मेरेमकानपर कोई पहिरा न था जहांमुझको जानेकी इच्छा होती थी वहां जाता था गवाहको एककिताब दीगई मिस्टरअनवरारटी साहबने कहा कि यह किताब सम्वत् १९२० के लिये जंगदबही है ? उ०—हांमुतर्ज्जिमने कहा जंगदबही उसको कहते हैं जिसमें जाकड़की चोजेंलिखीजातीहैं—मिस्टर अनवरारटी साहबने पहिलीरकम २७०००) रुपये की पढ़ी जोबाबत फरोखहीरों के गायकवाड़ केहाथथी ? उ०—मुझसे जबरदस्ती गजानन्दवतिल नेयहरकम लिखाईथी साहबप्रेजीडण्ट मिस्टरअनवरारटी साहबसेबोले इस बयान कोतुम सेक्रेटरी साहब को लिखादो—मिस्टरअनवरारटीसाहबने कहा निहायतमुनासिब है लिखादूंगा साहब प्रेजीडण्ट नेकहाअब साढ़ेचार बजगये हैं मिस्टरअनवरारटी साहबने कहा अभी कुछप्रश्नकरनेशेष हैं ॥

साहबप्रेजीडण्टने मिस्टरऐडवकेट जनरलसे कहामैंआप केइखतियार मेंहूं जबतक आपफरमावेंगे मैंसुना करूंगामिस्टर अनवरारटी साहबने कहादोतीन प्रश्न औरहैं प्रेजीडण्ट साहबनेकहा बेहतरहै आपपूछ लीजिये-गवाहके तरफ मुखातिबहुये। प्र०—तुमनेगजानन्दसे यहरकमें कबदर्जकराई ? उ०—जिसदिन पानी बरसनाथा औरहमलोग डेरेमेंथे। प्र० जोबयान मिस्टरसूटर साहबके सम्मुख तुमनेकिया उससेकितनेपहिले ? उ०—बहुतपहिले। प्र०—बयानकरो कितनेदिन पहिले ? उ०—उसदिनकी संध्याको जबकिमैंने यहइजहार दियाथा जोलिखागया साहब प्रेजीडण्टने कहागवाह क्या कहताहै समझ में नहीं आता गवाहसेफिर पूछागयाउसने कहाकिभोरके समयमैनेयहरकम किताबमें दर्जकीथीऔर संध्याको मैनेइजहार दियेथे ॥

मिस्टर सरजन्ट बेलनटायनसाहबने इजलासके बरखास्त

होते वक्तमें ओवरटसाहबसे पूछाकि हमनेसुनाहैकि इजलास
कावक्त तोआप दूसरा बदलना चाहतेहैं क्या यहबातदुरुस्त
है—हांमेरी इच्छाथी परन्तुसमयका बदलना अच्छा नहोगा
और चूंकि हमने अब काम शुरूकर दिया है इसी वक्त के।
रखनाचाहिये इसकेउपरान्त इजलास बरखास्त हुआ ॥

तेरहवेंदिन का इजलास ॥

आजकेदिन कमीशन के सम्पूर्ण मेम्बरान् उपस्थितथे श्री
मान्मल्हरराव दिनभर नहींआयेमहाराजा सेंधियामध्यान्ह
केउपरान्त चलेगये सरल्यूइस पीली साहब थोड़ी देर सुबह
केवक्त रहेहेम चन्द फतहचन्द का इजहार फिरशुरू हुआ
मिस्टरअनवरारटी साहब फिर इसमनुष्यके इजहार लेनेलगे
गवाहको एकहिसाबकी कि ताबदीगई और पूछागयाकियह
रकम किसके हाथकी लिखी हुईहै ? उ०—मेरेहाथकी है।
प्र०—तुमनेयहरक़म कबहिसाबमें दरजकी थी ? उ०—जबमैंने
और रक़में लिखीथीं। प्र०—तुमने यह रक़म क्यों लिखीथी ?
उ०—गजानन्दने कहा कि तुमइस रक़मको लिखो कि और
रक़मेंअशुद्धनहैं।-मिस्टरअनवरारटी साहबनेमुतरज्जिमसे कहा
कि इस किताबकी रकम तर्जुमाकरके पढ़ो सो मुतरज्जिमने
पढ़कर सुनाई ॥

चोखीपरमानन्दनरोननेएक अंगूठी चुन्नियोंकीजड़ीहुईमे-
लली जिसपर मीनाकियाहुआथा उसकीक़ीमत २१)रु० है ॥

सारजन्‌बेलनटायनसाहबके प्रश्न ॥

सरजन्‌बेलनटायनसाहबने कहा कि यदि आज्ञा हो तो
मुतरज्जिम से किताब की कुछ रकमो के पढ़वाऊं—आज्ञा
होने के उपरान्त मुतरज्जिमनेपढ़ा कि मल्हररावगायकवाड़
के नाम खर्चमेंलिखाहै १६७०)रु० हीरोंके लिये जो दामे-
दरपन्तको दियेगये—सरजन्‌बेलनटायनसाहबने गवाहसे प्रश्न
किया प्र०—तुमकाचो या इसरंगके हीरोंमें क्या अन्तरहोता

है ? उ०—कई प्रकारके हीरे होते हैं। प्र०—तराशने में कुछ इखतिलाफ होताहै वा हीरोंके प्रकारमें कुछ अन्तर होताहै ? उ०—जो हीरे वलन्दी होतेहैं उनमें अधिक चमक होतीहै और गुलाबीहीरोंमें कमचमक होतीहै। प्र०—परन्तु मैं पूछताहूं कि तुमने जो रक़मकिताबमें लिखीहै वह शुद्ध है वा अशुद्ध ? उ०—गजानन्द ने मुझसे जबरदस्ती यह रक़मलिखवाई थी। प्र०—तुमसे और महाराजासाहब से हीरोंका लेनदेन हुआ करताथा ? उ०—उससमयमें कुछ लेनदेन नथा। प्र०—तुमने गायकवारको किसीसमय हीरेकी कनी दीथी ? उ०—नहीं। प्र०—तुमजानतेहो हीरेका बुरादा किस को कहतेहैं ? उ० बहुतछोटे २ हीरोंको कहतेहैं। प्र०—तुमने पीसेहुये हीरोंको देखाहै ? उ०—मैंने कभी नहीं देखा। प्र०—तुम्हारे इजहार मिस्टरसूटरसाहबके रूबरूहुयेथे तुमउनको पहिचानते हो ? उ०—उनको मैं नहीं पहिचानता। प्र०—जो तुम देखो तो पहिचानलोगे देखो वहबैठेहुयेहैं डरोमत उनकीतरफदेखो (इससेसमाजमें हंसीहुई) ? उ०—मेरेइजहार दोतीन साहिब लोगोंकेसन्मुख लियेगयेथे। प्र०—तुमने केवल पुलिसके सन्मुख अपनेइजहारदिये या दोतीन साहबोंके रूबरू ? उ०—प्रथम में मेरे इजहार पुलिसके रूबरूहुयेथे। प्र०—फिर क्याहुआ ? उ०—पुलिसके आदमी दोतीन साहिबोंकेरूबरू मुझेलेगये। प्र०—वहांजाकर तुमने फिर इजहारदिये या केवलदस्तखत कियेथे ? उ०—मैंनेकेवल गजानन्दके कहनेसे दस्तखत कियेथे। प्र०—यह दस्तखत सरल्यूइसपीली साहब के रूबरू तुमने कियेथेया उनकेपास जानेके पहिले किये ? उ०—पहिले मेरे इजहारलियेगये और वहांजानेसे पहिले दस्तखतभी कराये थे। प्र०—जब तुम सरल्यूइसपीलीसाहब के पासगये तो कोई कामबाक़ी नथा केवलयहीकि अपने इजहारपढ़ो और कहो कि मेरे दस्तखत है ? उ०—गजानन्दने मुझको बुलाया और दस्तखतकराये और कहा अगर तुम और कुछकहोगे तोमैं

तुमको क़ैद करूंगा। प्र०—परन्तु मैं तुमसे पूछताहूं कि सरल्यूइसपीली साहब भी उससमय उपस्थित थे कोई गवतीनहीं होसक्तीथी तुमने सरल्यूइसपीलीसाहबकेरूबरू कुछकहाथा? उ०—मैंयहभी कहचुकाहूं किमुझको धमकी दीगई और दस्तखत करालियेगये। प्र०—तुमने सरल्यूइसपीलीसाहबके रूबरू दस्तखत किये थे? उ०—हां। प्र०—और सरल्यूइसपीलीसाहब के रूबरू अपने इज़हारपढ़कर दस्तखतकिये थे? उ०—मैं क्या करता गजानन्दने जबरदस्तीमुझसेदस्तखतकरायेथे। प्र०—तुम बयान करतेगये और गजानन्द लिखतागया? उ०—जो कुछ गजानन्दने चाहालिखलिया। प्र०—इज़हार लिखे जानेकेउपरान्त तुमको सुनायेगयेथे? उ०—नहीं। प्र०—गजानन्दने तुम से कहाथा कि अगरदस्तखत न करोगे तो जेलखाने भेजदिये जाओगे? उ०—हां। प्र०—जबसे तुमगवाहीदेने केलिये यहां आये गजानन्दको तुमनेदेखा? उ०—नहीं। प्र०—कलउसको देखाथा? उ०—हां कलदेखाथा। प्र०—उसने तुमसेकुछकहाथा? उ०—हां कहा था। प्र०—क्या कहा था? उ०—उसने कहाथा कि तीनलाखरुपये का जमाखर्च तुम्हारे नामलिखा गयाहै वहगलतहै। प्र०—और भी कुछकहाथा? उ०—नहीं। प्र०—कलजब तुम यहांसे गवाहीदेकरगयेथे कहांरहे? उ० अपने घरको चलगया। प्र०—अबयह बातवुमसे पूछताहूं कि तुमनेयहबात सूटरसाहबसे कहीया नहींकि जबकितुमने सुना किकरनैलफ़ियरसाहबको किसीने विषदिया तोनानाजीवतिल ने मुझसेकहाथाकि तुमनेअपनी किताबमें हीरोंकीखरीदके बारेमें लिखाहैउसकोदूर करदो? उ०—मुझसे नानाजीवतिलने नकहानउनसेमुझसेभेंटहुईऔर नमैनेकिसीके हाथहीरेबेचे प्र०—क्यातुमने मिस्टरसूटरसाहबसे यहभीकहाथाकिमैंनानाजीवतिलकी यहबातसुनकर अतिभयमानहुवाथा? उ०—नहीं साहब मैंनेकदाचित् नहींकहा। प्र०—क्यातुमने उसकेकहने से अपनी बही की पन्नी बदलडाली? उ०—नहीं साहब न-

आनन्दवतिलने जबरदस्ती बदलडाली । प्र०—अच्छा १० और २४ बहीका पन्नापढ़ो ? उ०—हांसाहब बहांदोहजार रुपये कीरसीदहै । प्र०—यहदोहजार रुपयेतुमने किससेपाये ? उ० नानाजीवतिलसे पायेथे । प्र०—यहरुपया तुमको नानाजीवतिलसे किसके मद्दे मिलाथा ? उ०—साहब मुझको हुण्डीका बाक़ीरुपया मिलाथा । प्र०—वहहुण्डी कितनेरुपये कीहै ? उ० सातहजार रुपयेकीहै। प्र०—गजानन्दवतिलकेपासक्यासबतुम्हारे कागजथे ? उ०—हांसाहब मेरेबारह बही खातेहैं सरजन्द बेलनटायनसाहबने कहाक्या यहकिताब तुम्हारीहै ? उ०—हां मेरीहै । प्र०—यहहुण्डियां तुम्हारी दूकानकी हैं ? उ०—हां मेरीदूकानकीहैं । प्र०—पहिली हुण्डीकी क्यातारीखहै ? उ० पहिलीहुण्डी की तारीख १० आषाढ़सुदीहै और वह३०००) रुपयेकीहै और दूसरीहुण्डी ४०००) रुपयेकीहै । प्र०—यह कौनसम्वत्‌की हुण्डियांहैं ? उ०—सम्वत् १९३० कीहैं । प्र० तीसरी हुण्डीकौनतारीखकीहै ? उ०—तीसरीहुण्डी४५०)रु० की है और वहकार्त्तिक सुदी ३० तिथि की लिखीहै ॥

ऐडवकेटजनरल के प्रश्न ॥

प्र०—तुमने सरजन्द बेलनटायन साहबसे कहाहै कि मैने दोबेर हीरोंके बेचनेकाहिसाब जो महाराजा साहबके हाथ बेचेहैं किताबमें लिखाहै और फिर तुमयहभी कहतेहो कि महाराजा साहब से मेरा कुछ लेन देन नथा ? उ०—महाराजा साहबसेकुछलेनदेन हीरोंका नथा । प्र०—देखोइसपृष्ट को औरवर्णन करोकि किसके हाथका लिखाहुआहै ? उ० मुझको गुमाश्तेका नाम स्मर्ण नहीं है जिसके हाथ का लिखा हुआहैमेरीदूकानकी यहरीतिहै कि जोमनुष्य दूकानमें आताथाउसीसे हिसाबलिखवा लेताथा । प्र०—यहरकमजोकिताब मेंलिखीहै सहीहै ? उ०—हां सहीहै ऐडवकेट जनरलने मुतरज्जिमसेकहा कि इसकोपढ़ो सोमुतरज्जिमने उसकोपढ़ा उसमें यहलिखाथा ॥

आषाढ़सुदी १३ के नाना साहबके हाथ २८०००) रुपयेके हीरेबेचे गये उसके उपरान्त तौल आदिका ब्यौरा लिखाहै। प्र०-२८०००) रुपयेकेहीरेजो तुमनेबेचे किसी आभूषणमें जड़े हुये या अलगथे? उ०-उनहीरोंका हारथा। प्र०-हीरोंका हारबनकरकिसकोदियाजाताथा? उ०-विनायकरावऔरनाना बतिलको ऐसीवस्तु दीजातीथी जोमनुष्य जवाहरखानेमेंमौ-जूदहोताथा वहउसको लेलियाकरता था। प्र०-वहहारकिस के लियेबनाथा? उ०-किसी को दियागया या फेंकदियागया मुझको मालूम नहीं। प्र०-विनायकराव गजानन्द ने किसके हिसाबमें यहहार लिखाहै? उ०-सरकारके हिसाबमें सररि-चर्डमीड साहबने सुतरज्जिमसे पूछा कि किसकेहिसाबमें वह हारलिखाहै सुतरज्जिमने बयानकिया किगायकवारके हिसाब मेंलिखाहै-दूसरीरकमके लियेसुतरज्जिमने कहा कि एकरकम और भी लिखीहै आठसौ रुपयेएक मोतीके नगकेहैं। प्र०-तुम कहतेहो कि मिस्टरसूटर साहबने तुम्हारी गवाहीनहींलीदेखो मिस्टरसूटर साहब वह बैठे हुयेहै? उ०-मुझको स्मर्णनहीं। प्र०-तुमको स्मर्णनहीं कि इनसाहबने कुछप्रश्न तुमसेहिन्दुस्तानी भाषामें कियेथे। प्र०-जबमेरे इजहार नहीं हुयेतो प्रश्न कैसे करते-साहब प्रेजीडेण्टने सुतरज्जिम से कहा कि इस गवाह से कहो सीधा २ उत्तर देतथाचप्रश्न किया गया उसने उत्तर दिया कि नहीं ऐडवकेट जनरलनेकहा तुम हिन्दुस्तानी भाषा समझते हो वा नहीं? उ०-मैं गुजराती समझता हूं और हिन्दुस्तानी नहींसमझता हिन्दुस्तानीको सुलतानी कहतेहैं। प्र०-तुम्हारा मतलब यह है कि मैं हिन्दुस्तानी नहीं समझता? उ०-मैं केवल गुजराती भाषा समझता हूं। प्र०-क्या तुम हिन्दुस्तानीभाषा कुछ भी नहींसमझते? उ०-नहीं। प्र०-कुछ भीनहीं समझते? उ०-मैं नहीं जानता कि आप किस बोली को हिन्दुस्तानी कहते हैं हिन्दुस्तानी कैसी जबान होती है

मुतरज्जिमने ऐडवकेट जनरल से कहा कि यदि अच्छा होतो गवाहसे हिन्दुस्तानीभाषामें कुछबात्ती करूं ऐडवकेटजनरल ने कहा नहींमें आपकोतकलीफ नहींदेता मुतरज्जिमने कहा कल मैंनेकईप्रश्न हिन्दुस्तानीमें कियेथे और गवाहने गुजराती भाषामें मुझको उत्तर दिया था—ऐडवकेटजनरल ने गवाहसे मुखातिबहोकरकहाकि कलतुमसे कुछप्रश्न हिन्दुस्तानीभाषामें क्यानहीं कियेथे ? उ०—नहीं मैं गुजरातीभाषा समझताहूं । प्र०—इनतीनपंक्तियोंकोदेखो जो तुम्हारे दस्तखतकेऊपर लिखी हैं यहतुमने किसमुकाम पर लिखी हैं ? उ०—सरल्यइसपीली साहब के बंगलेमें लिखीथीं । प्र०—क्या सरल्यइसपोलोसाहब के रूबरू ? उ०—हां । प्र०—तुमने सरल्यूइसपोलोसाहब से कहा था कि गजानन्दवितिल ने तुमसे कुछकहाथा ? उ०—नहीं । प्र० तुमने नहीं कहाकि गजानन्दवितिलने मुझपर अन्याय किया ? उ०—नहींकहा क्योंकि मुझकोधमकोदीथी । प्र०—तुमने कोई शिकायत सरल्यूइसपोलोसाहबसे नहींकी ? उ०—मुझसेगजानन्दवितिलने कहा था कि अगरचुपचाप दस्तखत नकरोगे तो तुम्हारेलिये अच्छा न होगा । प्र०—तुम कहतेहो कि मुझको सिपाहियोंने बड़ा दुःखदिया और हरदिन मुझकोहिरासतमें रखतेथे ? उ०—हां सुबहके आठबजेसे और रातके ८ बजेतक मुझको हिरासतमें रखतेथे । प्र०—किसजगह तुमकोहिरासत में रखतेथे ? उ०—कभी रजीडन्सीके बंगलेमें कभीदरख्तोंकेनीचे जो गजानन्दवितिलके मकानके निकटहैं किन्तु कलरातको जब मैं अपनेघर आया तो तीनसिपाही रात्रिके समय मेरेघरपर आये । प्र०—किसवास्ते वह आये थे ? उ०—मेरे बुलाने के वास्ते । प्र०—इसबातके कहनेके वास्तेकि आज तुम अदालतमें हाजिरहो ? उ०—उन्होंने फौजदारीकेपास जानेकेवास्ते जानेके लिये कहाथा । प्र०—वहां तुमगयेथे ? उ०—जब सिपाहीआये मैं घरपर मौजूद न था मेरे गुमाश्ते को पकड़लेगये थे । प्र० फौजदारकेरूबरू पकड़कर लेगयेथे ? उ०—रामचन्द्रफौजदार

के सम्मुख लेगये थे। प्र०—क्या फौजदार शहरमें रहता है? उ०—हां मुकाम मराडी में नगरके भीतर रहता है। प्र०—तुम कितनीबेर रजीडन्सीकोगये? उ०—एकबेर। प्र०—और कितनी दफा दृक्षोंकेनीचेगये जोगजानन्दके घरनिकेकटहैं? उ०—हर-दिनमुभको लेजातेथे और दृक्षोंके नीचे बैठाया करतेथे। प्र० कितने दिनतुम्हारे साथयह बद्सलूकीहुई? उ०—डेढ़महीने। प्र०—क्या प्रतिदिन तुमको इसीप्रकार लेजाया करतेथे? उ० हां। प्र०—इसकिताबकोदेखो क्यातुमने इसमेंनवीनवरकलगाये हैं? उ०—मैंने कोईनयापचानहीं लगाया। प्र०—नतुमनेइसमें पर्चे निकालेन नयेपर्चे लगाये क्यायह बातठीकहै? उ०—हां ठीकहै। प्र०—तुमनेकिसी मनुष्यके मारफत वरकनिकलवाये? उ०—नहींमेरी किताब दो महीनेसे कुर्क है। प्र०—तुमको मालूमहै किकिसीऔर मनुष्यने भीइस किताब मेंसेनये वरक नहींनिकाले? उ०—मालूमहोताहै किसातया आठवरक्कनये लगाये गये हैं। प्र०—इसकिताबके किसभागमेसे वरक्कनिकाले गयेहैं? उ०—देखिये यह वरक्कनये लगेहैं औरयह पुरानेहैं। प्र०—किसजगहसे वरक्क निकाले गयेहैं जहांअंगूठीकी फर्दलिखीहै? उ०—हांमालूम होताहै कियह रकम इसमें नहीं है। प्र०—तुमको मालूम नहीं कि किस मनुष्यने यहवरक्कनि-काले? उ०—मुझको मालूमनहीं। प्र०—तुमकोक्योंकर मालूम हुआकि वरक्कनिकाले गये? उ०—वरक्कोंकी रंगतमें अन्तरहै। प्र०—जो दो हुराडीलिखी गईं अर्थात् तीन हजार और चार हजारकी उनकोकिसने लिखाया और किसदूकानपर लिखा या? उ०—हेमचन्द फतहचन्दकीदूकान बम्बईमें लिखीगई। प्र०—यह दूकान भीतुम्हारी बम्बईमें है? उ०—हां। प्र०—यह रुपया किसको दियागया? उ०—शिवचन्द खुशालचन्द पूना के रहने वालों को यह रुपया दिलाया गया था। प्र०—येह कौनहैं? उ०—वहभी एक जौहरीहैं। प्र०—इसमनुष्यको हु-गिडयोंकारुपया किसवास्तेदिलायाथा? उ०—शिवचन्दने कुछ

मालनानावतिलको दियाथा। प्र०—क्यातुमने नानाजीवतिल केहाथयह मालअपने हिसाबमें बेचाथा वादूसरेमनुष्यके हिसाबमें? उ०—मैनेअपनेहिसाबमेंबेचाथा। प्र०—यहजोझगिड़यां तुमको नानाजीवतिलने दीहैंक्या उसमालके बदलेमेंदी हैं? उ०—हां साहब। प्र०—शिव चरणसे जो माल मोललिया था क्यायह झगिड़यां उसमालके पूरीक़ीमतथी? उ०—पूरीनहीं थी कोई सौवाडेढ़सौ रुपयाबाकीरहगयाथा। प्र०—क्या यह बाक़ीका रुपया शिवचरणको तुम्हारे बम्बईकी दूकानसेदिया गयाथा? उ०—हांसाहब। प्र०—क्यायहसबरुपयाजौलाई सन् १८७४ई०मेंदियागया? उ०—हांसाहब। प्र०—सिवाय इनदो झगिड़योंके जिनकीसंख्या ३०००) और ४०००) हैतुमको कोई औरझगड़ीशिवचरणकी देनाहै? उ०—कोई झगड़ीनहीं। प्र० अच्छाइन झगिड़योंकीतारीखबताओ? उ०—ज्येष्ठबदी १२ वीं और १३वींतिथि है। प्र०—अबयह बताओकितुमनेइनझगिड़यों कीनिस्बत कितनारुपयावसूल पायाहै? उ०—दसहजाररुपयापायाहै। प्र०—सातहजारकी तो झगड़ीतुमकोदसहजार क्योंकरमिले? प्र०—उसमें नारायण व्यङ्कटेशका भीरुपयाहै प्र०—तुमनेनारायणव्यङ्कटेशका रुपयाक्यों मिलादिया? उ० वहनानाजीका सालाहै और नानाजीवतिलका वह हिसाब था। प्र०—अपनीकिताबका दसवांपृष्टदेखो उसमें दोहजार रुपएकैसे लिखेहैं? उ०—हां यहभी शिवचन्द खुशालचन्द के रुपये हैं। प्र०—यह किसकेहाथलिखेहैं? उ०—मेरेहाथ के लिखेहैंइसकेअर्थयहहैंकिमैने नानाजीवतिलसेदोहजाररुपये पाए औरशिवचन्द औरखुशालचन्दके हिसाब में अदाकिये। प्र०—क्यायहदुरुस्त हिसाबहै? उ०—हां साहब यह हिसाब दुरुस्त है। प्र०—दमाला कौनमनुष्य है? उ०—यह नानाजीवतिलकानायबहै प्र०—इसकाक्या कारणहै किजबयहहिसाब नानाजीवतिलका थातोतुमने शिवचन्द खुशालचन्दके हिसाब मेंक्योंलिखा? उ०—इसवास्तेकिवहहिसाबस्पष्टनथा। औरकी

बिकरीजो तुम्हारी बहीमें लिखी है यह दुरुस्त है? उ०—साहब मुझे खबर नहीं है जो कुछ किताबमें लिखा है वह दुरुस्त है। प्र० तुम इन किताबोंमें बराबर अपना काम करते थे? उ०—पहिले इन्हीं में काम करता था अब तो पैनेदाम होनेसे कुर्क है। प्र०—अगर तुम ने बहीके वरक़ नहीं बदले तो गजानन्दको वरक़ बदलनेसे क्या मतलब था? उ०—साहब मुझको खबर नहीं है कि उसने यह छल किसवास्ते किया। प्र०—कल जो तुम घर जाने लगे तो किसी पुलिस वालेने तुमसे कुछ कहा था? उ०—हां साहब एक सिपाहीने मुझको रोका और कहा कि तुम ठहरो हम साहबसे या गजानन्द वकीलसे पूछलें तो जाने देंगे परन्तु फिर मुझको जाने दिया श्रीमान् महाराजा जयपुरने पूछा कि तुमसे और उस सिपाही से और क्या बात्तीहुई? उ०—और कुछ बात नहीं हुई॥ सम्पूर्ण समाज टिफ़न खानेके लिये बरखास्त हुई॥

इज़हार नानाजीवतिल गवाह॥

जब कमीशनके सम्पूर्ण मेम्बर टिफ़नसे सुचित होकर आये तो नानावतिल बुलाया गया ऐडवकेट जनरलने इसके इज़हार लेना शुरू किये उसने वर्णन किया कि मैं ब्राह्मण हूं और गायकवारके जवाहरखानेका दारोगा हूं मैं दामोदरपन्त को जानता हूं अन्तके दसहरेके में दमोदरपन्तने मुझे आज्ञा दीथी कि कुछ हीरे मंगा करनेके लिये दरकार हैं सो मैंने तीनचार जौहरियोंसे मंगवाये घेलशाह—प्रतापशाह—और हेमचन्द तीन जौहरी मेरे पास हीरे लाये फतहचन्द हेमचन्दके हीरे दामोदरपन्तके दिखाने के वास्ते एक दिनको रखलिये उसके दूसरे दिन जब और जौहरी हीरे लाये उनको भी रखलिया जिससमय दामोदरपन्तको वह हीरे दिखाये गये तो हेमचन्द फ़तहचन्दकी कोठीके हीरे उन्होंने पसन्द करके रखलिये और बाक़ी जौहरियोंके हीरे मैंने लौटा दिये हेमचन्दके हीरे तौलमें अड़सठ या साढ़े अड़सठ रत्ती थे मैंने उनको तौलकर दामोदरपन्तके हवाले कर दिये और एक याद-दाश्त दफ़्तरके रखनेके वास्ते कारकुनोंने बनाई छःसात दिनके पीछे

दामोदरपन्थने मुझसे फिर कहा कि फतहचन्द की कोठीसे गुलाबी हीरोंकी कनीमंगवाओ सोमैंने हेमचन्दको कहलाभेजा वहआपही हीरेकीकनी लेकरमेरे निकटआया वहतिहत्तर वा चौहत्तररत्ती तौलमेंथी दामोदरपन्थकी आज्ञानुसारवह भीमोल लीगईइस कनीका जो मूल्यठहराया वहमुझे स्मर्ण नहीं जौहरी की किताबमें जो ३०००) रुपया कीमत लिखी हैवहठीकहै उनहीरोंमें कोईहीरा एकरत्तीकाथा और बहुत सेऐसेथे कि एकरत्तीमें दोतीनचारपांच तकतौलमेंथे तीनहजाररुपया दो दफेकरके पूर्वोक्त जौहरी को मैंने दिये और एकबेर दोहजार रुपयेदिये एकबेर एक हजार रुपया दिया यहरुपया दमोदरपंथ से एक याददाश्त के अनुकूल जिसपर मैंनेभी दस्तखत किये थे मिलाथा और नानचन्दके द्वारा यह रुपया हेमचन्द फतहचन्द को दियागया नानाचन्द दामोला मुहालके सर्राफहैं उनतीनहजार मेंसे एकहजार रुपयाअपने मकानपर खुद मैंने दिया॥

ऐडवकेटजनरलने मिस्टरनौरोज़जीमुख्यमुतरज्जिम सेकहा कितुमअपने अभिप्रायोंका भलेप्रकारध्यानरक्खोक्योंकिबहुधा तर्जुमा अशुद्धहो जाता है उन्होंने उत्तरदिया किमुजको इस बातकाबड़ा ध्यानरहताहै इसरुपयेके लियेजोयाददाश्तें सुरत्तिबहुई वहआत्माराम कारकुनकेदफतरमेंहैं देवालीकेदिनों में दामोदर पन्थने उनयाददाश्तों को मंगाया था जब उनको लेकरमैं गया तो दामोदर पन्थने कहाकि इनको मेरे निकट छोड़जाओ मैंफाड़डालूंगा। प्र०—दामोदरपन्थने उनको चाक किया? उ०—मेरे सामने उनको नहीं फाड़ा॥

सरजन्टबेलन टायन साहब के प्रश्न॥

प्र०—तुमने जो इजहारदिया वह अच्छीतरह समझमें नहीं आयागायकवारके दरबारमें तुमको क्याओहदाथा? उ०—क्या आपमेरी तनखाहपूछतेहैं। प्र०—मैंतुम्हारा ओहदा पूछताहूं?

उ०—जवाहरखानेका मोहतमिमहूं। प्र०—तुम्हारे अधिकारमें कौन कामहै? उ०—मैं जवाहिरात और ज़ेवरकी रक्षा करताहूं जब महाराज। साहब पहिनते हैं उनको देदेता हूं। प्र०—कोई काम और भी तुम्हारे सुपुर्दहै? उ०—जवाहरखानेमें जो जवाहिरात की अवश्यकता होतीहै तो मेरेद्वारा मोल लिये जातेहैं। प्र०—तुम कहसक्ते हो कि यहहीरे किसलिये मोललिये गयेथे? उ०—मुझसे यह कहाथा कि यहहीरे भस्म करनेके वास्ते दरकार हैं। प्र०—तुमसे किसने कहा था? उ० दामोदरपन्थने। प्र०—इस भस्मकी क्या ज़रूरतथी? उ०—दवाके लिये। प्र०—तुमने कभी पहिलेभी सुनाथा कि हीरोंकी भस्म दवाके वास्ते बनाई जातीहै? उ०—मैने कभी नहीं सुना। प्र० तुमने अपनी सम्पूर्ण आयुमें हीरोंकी भस्म देखीहै? उ०—चार वर्ष से मैंनौकर हूं उससे पहिले कभी हीरेभीन देखे थे। प्र०—तुमनेअपनी सम्पूर्ण आयुमें सुनाहै किहीरों की राखहोतीहै? उ०—मैने कभी नहीं सुना। प्र०—न तुमने कभी सुना न तुमनेभस्म देखी? उ०—मैं नहीं जानता। प्र०—न तुमनेसुना? उ०—न मैने सुना नमैने देखा। प्र०—आजकल तुम कहां रहते हो? उ०—बड़ौदेमें रहता हूं। प्र०—तुमपर कोई गार्ड नियत है? उ०—मैंखानबहादुरकी हिरासतमेंथा। प्र०—इससे तुम्हारा यहमतलब हैकि तुमक़ैद थे? उ०—जिसदिन महाराजा साहब क़ैदहुयेहैं पुलिसवालोंने मुझकोबैठा रक्खाहै। प्र०—बैठाने से तुम्हाराक्या मतलबहै क्यातुम क़ैदमेंहो? उ०—पुलिस वालोंने मुजको बैठारक्खाहै मैंइसीको क़ैद समझता हूं। प्र०—क्योंबैठा रक्खा है? उ०—मैंनहीं जानता। प्र०—तुमने पूछा कि तुमको क्योंबैठायाहै? उ०—मैंकिससे पूछता। प्र०—जिसनेतुमको बैठा-याथा उससेपूछते? उ०—जिसने मुझको बैठायाथा उसनेहीरों का हिसाब मांगासो मैने बता दिया। प्र०—तुमपर और कोई जुर्म है या जहर खुरानी का जुर्म है? उ०—नहीं। प्र०—तुमपर

कोई जुर्म्म है ? उ०-मुझको जवाहरखानेका कामथा अबमहा-राजा साहबकैद हुये मुझकोभीकैदकरलिया। प्र०-तुमने जो हे-मचन्दसेहीरेमोललिये थेउसका हालपहिलेकिससेकहाथा ? उ०-मुझको लोग लश्करमें लायेथे जिस मनुष्यने पूछाउससे कहदियाउससेपहिले पन्द्रह यासोलह दिनतक मकानबारह मेंथा। प्र०-बिस्तार पूर्व्वकवर्णन करो किपन्द्रहसोलहदिनतक तुमवहांकैदरहे ? उ०-पन्द्रहबीसदिन तकनगरमें रहामुझसे किसीनेनहींपूछा। प्र०-मैं पूछताहूं कि तहकीक़ात के पहिले तुमपन्द्रह सोलहदिनतक कैदरहेथे ? उ०-हांमकान परपहि-रेमें क़ैदथा। प्र०-तुमकिसकी हिरासतमें थे ? उ०-सेनापती की कचहरी में था। प्र०-तुमपर किनलोगों कापहिरा था ? उ०-परदेसीसिपाहियों कापहिराथा। प्र०-जबतुम पन्द्रहबीस दिनतक क़ैदरहे तुम्हारे निकट कोई इजहार लेने आयाथा ? उ०-कोई मनुष्य नहीं आया मुझको बुलाया था। प्र०-कौन मनुष्य बुलाने आयाथा। उ०-कुछ सिपाही आयेथे। प्र०-तुम उनकेसाथगयेथे ? उ०-हांएकगाड़ी परसवार करकेगजानन्द बतिलके मकानपर मुझको लेगयेथे। प्र०-गजानन्दने तुमसेक्या कहा ? उ०-उन्होंने मुझसे हीरों का हाल पूछा। प्र०-क्या पूछाथा ?उ०-मुझसे पूछा था किआश्विन के महीनेमें कितने हीरेमोललिये गयेथे। प्र०-जो हीरे हेमचन्दकी कोठीसे मोल लियेगयेथे उनकाहालभी तुमसेपूछाथा ? उ०-हेमचंदकेहीरों की कुछखसूसियत नहींकी सब हीरोंकी खरीदका हालपूछा था। प्र०-तुमने उनसे क्याकहाथा ? उ०-मैंनेकहाथा किहीरे मोललियेगये। प्र०-तुमने रावजी और नरसूके इकरारातका हालसुनाहै ? उ०-मैंनेनहींसुना। प्र०-तुम वर्णन करतेहो कि जिसदिन महाराजा साहब पकड़ेगये उसीदिन मैं भीपकड़ा-गया ? उ०-हां, उसीदिन पकड़ा गयाथा। प्र०-तुम कहते हो कि मैंनेनरसू और रावजीकी गवाहीका हालकुछ नहींसुना ?

उ०—मैं कुछ नहीं जानता। प्र०—मैं मसे तु पूछता हूं कि तुमने उनके इजहारों का कुछ हाल सुना था? उ०—मैं उनको नहीं जानता न मैंने उनको कभी देखा। प्र०—मेरे प्रश्न का उत्तर दो तुमने नहीं सुना कि रावजी और नरसू की गवाही हुई? उ०—मैंने कभी नहीं सुना। प्र०—तुम सौगन्द खाओगे कि मैंने कभी नहीं सुना? उ० जब यहां तक की बात हो चुकी तब मैंने सुना था। प्र०—मेरा प्रश्न यह भी नहीं है मैं पूछता हूं कि तुमने सुना था कि नरसू और रावजी ने क्या इजहार दिये? उ०—मैंने नहीं सुना न मैं जानता हूं कि उन्होंने क्या इजहार दिये। प्र०—तुमने यह भी नहीं सुना कि नरसू और रावजी ने हीरों के क्या इजहार दिये थे? उ०—मैंने दिवाली के उपरान्त सुना था कि विष दिये जाने का उद्योग हुआ है। प्र०—यदि तुम मेरे प्रश्न का उत्तर न दोगे तो प्रलयपर्य्यन्त तुमसे प्रश्न किये जाऊंगा मैं पूछता हूं कि तुमने सुना था कि रावजी और नरसू के इजहार विष दिये जाने के विषय में लिये गये थे उ०—उसी समय मैंने नहीं सुना पीछे सुना था कि वह क़ैद हैं प्र०—अपने बयान के पहिले तुमने सुना था कि वह क़ैद है? उ०—मैंने नहीं सुना। प्र०—गजानन्द वितल ने भी तुमसे कहा कि उन लोगों ने क्या इजहार दिये? उ०—नहीं कहा। प्र०—गजानन्द वितल ने तुमसे कहा था कि सच बोलना और सिवाय सच के और कुछ न कहना? उ०—हां। प्र०—उसने तुमसे कहा था कि अगर सच न कहोगे तो क्या नतीजा होगा? उ०—हां, मुझको धमकाया था और कहा था कि अगर सच न बोलोगे तो झूठ का मज़ा चक्खोगे। प्र०—इस बात के कहने से तुम क्या समझते थे? उ० मैं समझता था कि मुझको क़ैद करेंगे या कहीं और भेज देंगे। प्र०—यदि हम तुम्हारे वर्णन पर निश्चय न करें तो तुम जानते हो कि तुम्हारे लिये क्या दण्ड होगा? उ०—सरकार की जो कुछ इच्छा होगी उसमें क्या इन्कार है। प्र०—परन्तु तुम क्या समझते हो कि ऐसी हालत में तुमको क्या दण्ड है।? उ०—जो सरकार की

इच्छा है। वह बीट्रगुडदे। प्र०—मैं जानता हूं कि जब पुलिसके पंजे से निकलोगे तो बहुत प्रसन्न होगे? उ०—सरकारकी जो मरजी है उसमें खुश हूं। प्र०—गजानन्द ने तुम्हारे इजहार लिखेथे या तुमने लिखकर अपने इजहार उनको दियेथे? उ०—मैने लिखकर नहीं दिये जुबानी बयान कियेथे। प्र०—जब तुम अपना बयान कर चुके तो तुमको लोग कहां लेगयेथे? उ०—साहबके निकट लेगयेथे। प्र०—साहबसे तुम्हारा मतलब सूटर साहबहै? उ०—उस समय सूटर साहब वहां नहीं थे। प्र०—तुम्हारे इजहार किसने लियेथे? उ०—और साहबलोग जो बंगले में थे उन्होंने मेरे इजहार लियेथे। प्र०—कुछ पता बतलाओ जिससे स्पष्टवृत्तान्त विदित हो कि यह साहबलोग कौन थे? उ०—मैं नहीं जानता परन्तु इतना जानता हूं कि सरल्यूइस पीली साहब भी उपस्थित थे। प्र०—सावधान होकर वर्णन करो कि सरल्यूइस पीली साहब उस समय उपस्थित थे जब कि तुमने बयान किया था? उ०—हां जिस समय मेरे इजहार लिखे गये थे पीली साहब उपस्थित थे प्र०—तुम्हारे इजहार किसने लिखेथे? उ०—दूसरे साहब जो वहां बैठेथे उन्होंने लिखेथे। प्र०—तुमने दोनों साहिबोंके सन्मुख यह इजहार दियेथे? उ०—हां। प्र०—तुमको दामोदर पन्थके इजहारों का हाल मालूम है? उ०—नहीं। प्र०—तुम कितने दिन कैद रहकर सरल्यूइस पीली साहब के निकट इजहारों के लिये गयेथे? उ० बीसदिन के उपरान्त गयाथा॥

ऐडवकेट जनरलने फिर नानाजी वतिल के इजहार लिये॥

प्र०—तुमने अभी कहाहै कि तुम पन्द्रह या बीस दिन सेनापती की कचहरी में परदेसी सिपाहियों के पहिरे में रहे तुम जानते हो कि वह सिपाही किसके नौकर थे? उ०—गायकवार केथे। प्र० क्या उनके पहिरे में सम्पूर्ण महल था? उ०—हां साहब सम्पूर्ण महल था और वह रक्षा करने के लिये आयेथे। प्र०—पहिले तुम्हारे इजहारात गजानन्द वतिलने लियेथे? उ०—हां, साहब

पहिले गजानन्द वतिलने लियेथे सरदिन कर रावने पूछा कि तुमजवाहर खानेके मुखतार हो? उ०—हां साहब मैं जवाहर खाने का दारोग़ाहूं। प्र०—तुम्हारे पासकोई हिसाब हीरे के मोललेनेकाहै? उ०—कोईनहीं। प्र०—जोजवाहरात मोललिये जातेहैं क्याउसका हिसाब तुमजवाहर खानेमें नहीं रखते? उ०—हमारे यहांहिसाब नहीं रहतावह खजाने में रहताहै। प्र०—तुमकोई याददाश्त रखतेहो? उ०—हांसाहब रखतेहैं। प्र० यदिवह याददाश्त अशुद्धहोतो उसकाक्या निश्चय? उ०—जोकुछ सरकार फरमावे वहीदुरुस्त है साहबप्रेजीडएटने कहाकि अब साढ़े चारबजेका समयहै जलसाबरखास्त कियाजायसो जलसाबरखास्त हुआ॥

चौदहवें दिनका इजलास॥

आजके दिनकमीशन शुरूहुई कमीशनके सम्पूर्ण मेम्बरान् उपस्थित थे मल्हरराव बिल्कुल नहीं आये महाराजा सेंधिया दोपहर से चलेगयेथे सरल्यूइस पीली साहब भी मध्यान्ह केपश्चात् चलेगये रघुनाथकेपुत्रआत्मारामके इजहार शुरूहुये मिस्टरअनवरारटोसाहबने गायकवारके जवाहरखानेके कारकुनको बुलाभेजा उसनेवर्णन कियाकि मैं रियासत गायकवारके जवाहरखाने का कारकुनहूं मेरा अफसर नानाजीवतिलहै मुझे स्मर्ण है कि दिवालीसे आठदिन पहिले कुछहीरे मोललियेगयेथेचारजौहरी हीरे लायेथे तीनजौहरियोंके हीरे लौटादिये गये और हेमचन्द्र के हीरे रखलिये गये थे—एक याददाश्त दफ्तरमें रखनेकेलिये बनाईगईथी परन्तु दो तीन दिनके उपरान्त नानाजीवतिलने उसको मुझसे लेलियाथा फिर मैंने सुना कि करनैलफियरसाहबके विष दियेजाने का उद्योग हुआ है॥

सरजानबेलनटायनसाहब के प्रश्न॥

प्र०—अबभी तुमको जवाहरखानेसे तअल्लुकहै? उ०—हां।

प्र०—जवाहरखाने का अब कौनदारोगा है ? उ०—गणपति राय महाजन। प्र०—बयान करो कि हीरेकी कनी क्या वस्तु होती है ? उ०—छोटे २ हीरोंको कनीबोलते हैं। प्र०—क्या कनीउसको कहतेहैं कि जबहीरातराशाजाताहै और उसके छोटे २ टुकड़े करतेहैं ? उ०—हां। प्र०—तुमनेदेखा या सुना है कि हीरेकी खाकहोसक्ती है ? उ०—नहीं ॥

साहबप्रेसीडण्टने कहा पसमालुमहोताहै कि तुमने कुटा हुआ हीरा नहीं देखा ? उ०—नहीं। प्र०—जवाहरखाने में कितनेवर्षसेहो ? उ०—बारहवर्षसे हूं। प्र०—महाराणासाहब बहुधाहीरेखरीदाकरतेथे ? उ०—हां। प्र०—छोटे और बड़े ? उ०—दोनों प्रकारके मोललिया करतेथे। प्र०—जेवरमें जड़े हुये मोल लेतेथे या अलग ? उ०—दोनों प्रकारके मोललेते थे। प्र०—महाराणासाहबके जवाहरखानेमें बहुतसेहीरे थे ? उ०—हां बहुतहीरे थे। प्र०—तुम्हारा बयानहै कि जो लोग हीरेलायेथे उनमेंसे हेमचन्द्रके हीरेमोललियेगये तुमक्योंकर जानतेहो कि केवल उसीमनुष्यके हीरे मोललियेगये ? उ० नानाजीवतिलने पसन्दकरके उनहीरों को मोल लियाथा। प्र०—सिवा नानाजीवतिलके औरभी किसीमनुष्यने तुमसेहीरों का हालकहाथा ? उ०—जबहीरे मोललिये जातेथेतो नाना-जीवतिल मुझको बुलालेतेथे। प्र०—जबहेमचन्द्रसे हीरेमोल लियेगये तुम उपस्थितथे ? उ०—हां मैंमैाजूदथा। प्र०—उस मरतबेक्योंकर काररवाईहुई थी ? उ०—विनयाकरावने एक याददाश्त अपने हाथ से लिखी और अपने पासरक्खी। प्र० और भी कुछहाल तुम जानते हो ? उ०—और मैं कुछनहीं जानता। प्र०—छोटे २ हीरे किसकामआतेहैं? उ०—जड़ाऊ काममें लगतेहैं। प्र०—मिस्टरसूटरसाहबने तुम्हारे इज़हार लियेथे ? उ०—हां लियेथे। प्र०—जोकुछ तुमने उनकेसन्मुख वर्णनकियाथा तुम्हारेविचारसे ठीकहै ? उ०—हां जो कुछमैं जानताथावयानकिया। प्र०—जबयहहीरे मोललियेगयेथेतो

जवाहरखाने में बहुत से हीरे मौजूद थे ? उ०—नानाजी-
वतिल को जोजवाहरखाने के दारोगा हैं यह हालमालूम
होगा। प्र०—तुम्हारा यहमतलबहैकि तुमकोकुछहालमालूम
नहींहै ? उ०—हांमैं कुछ नहीं जानता—सरजन्नबेलनटायन
साहबने कहा (माईलार्ड) इसगवाहसे यह सवालकियाजावै
कि उससमय मेंभी एकतलवार का क़बजा हीरों से जड़ाजा-
ताथा ? उ०—हां, तलवार का क़बजा और मियान हीरों से
जड़ाजाताथा और छोटे २ हीरे उसमें लगायेजाते थे। प्र०
छोटे २ हीरेलगतेथे याबड़े २ हीरे जड़ेजातेथे ? उ०—छोटे
हीरे। प्र०—एक मिरजई भी तय्यारहोतीथी ? उ०—हां, एक
मिरजईमें भी छोटे २ हीरे जड़े जाते थे। प्र०—तुम जानतेथे
कि यहहीरे कहांसे आयेथे ? उ०—जवाहरखानेमें थे। प्र०
जवाहरखानेमें यहहीरेकबसेरक्खेथे ? उ०—हमेशामोललिये
जातेथे और इसी प्रकार हीरोंका जमाखर्चरहाकरताथा॥

बलवन्तराव रावजीके इज़हारात॥

बलवन्तराव रावजीने अपने इज़हारत ऐडवकेटजनरल के
साम्हने दिये कि मैं खानगी खजाने सरकार में नौकर हूं मैं
दामोदरपन्थके आधीन कामकरताथा हिसाबों के ऊपर जो
स्याहीडालीगई मुझकोनहींमालूमकि किसनेडालीहै सरजन्न
बेलनटायनसाहबने उससे प्रश्न नहीं किये॥

रामेश्वरमोरा के इज़हारात॥

मैंस्वामी नारायणके मन्दिरका चेलाहूं मैंसबचेलोंका अ-
फ़्सर हूं मैंने कोई रुपया ३१ दिसम्बर सन् १८७३ ई० का
नहींपाया और मैंनेकिसी समयमें ३३२) रु० नहींपाया यदि
मैंनेकभी रुपयापायाहै तो उसकीरसीद महाराजा कोदीहै
उसकोरसीद दिखाई उसने इन्कारकिया कि यहमेरी रसीद
नहींहै यहरसीद भोलानाथ पौंचारामकी लिखीहै॥

सरजन्नबेलन टायनसाहबके प्रश्न॥

तुमने एक मरतबा कहाहै कि तुमने ११००) रु० पायाहै

और फिरतुमनेकहा कि ११२५) रु० पाये ? उ०—हांसाहब पायेथे। प्र०—उनकीरसीदें कहांहैं सम्पूर्ण मेम्बरोंको उनकी रसीदें दिखाईगईं और उसने तसदीक़ की॥

दूसरीबेर रामेश्वर मोराके इज़हार लियेगये॥

प्र०—११२५)रु०तुमकोकिस वास्तेदियेगयेथे? उ०—ब्रह्मभोज केनिमित्त दियेगयेथे। प्र०—इनरुपयोंके सिवातुमको और कभी भीब्रह्मभोजके वास्ते कुछ रुपया मिलाहै ? उ०—कभीनहींमिला प्र०—क्यातुमको कुछ रुपया पुण्य करनेके लिये मिलाथा ? उ० हांसाहब ३७५) रु० मिलाथा। प्र०—तुमनेउसकी रसीददी थी ? उ०—नहींसाहब नहींदी कारकुन ३७५) रु० कीअठन्नियांचवन्नियां लायाथा इसीकारण इसकी रसीदनहींदी॥

दत्तेरिया रामचन्द्रके इज़हारात॥

मिस्टरअनवरारटी साहबने दत्तेरिया रामचन्द्रके इज़हारात लियेउसने बर्णनकिया कि मैंफौजदारीका नौकरथा मैंसंखिया फौजदारकी आज्ञासे दियाकरताथा एकबेर मेरेनिकट संखियेके वास्तेदामोदरपन्थकी याददाश्तआईथीजगजीवनदास नेयाददाश्तपर दस्तखत करके संखिया भेजदी जगजीवनदास फौजदारीके हाकिमहैं तीनसप्ताह बीतेहोंगे कि संखियाहमारेयहांसे भेजीगईथी॥

मरजयड बेलनटायन साहबके प्रश्न॥

प्र०—तुम्हारे यहांसे संखिया किसरीतिसे दीजातीहै ? उ० जबकि कारकुनकी याददाश्तपरफौजदारी काहाकिम दस्तखत करदेता है जब मिलती है। प्र०—क्या संखिया के देने में बड़ाबन्दोबस्त होताहै ? उ०—हां साहब संखियाके देनेमें बड़ा बंदोबस्त होता है। प्र०—प्रथम गायकवारकी आज्ञासे संखिया क्योंनहीं मिला ? उ०—उसयाददाश्तपर गायकवार के दस्तखत नहींथे। प्र०—तुमनेतो अभी कहा कि कारकुनकी याददाश्त लिखने से मिलजाती है ? उ०—हां साहब पहिले यहीरीतिथी कि कारकुन की याददाश्त से संखिया मिलजाती थी परन्तु

अठारह महीनेसे गायकवार ने आज्ञादीथीकि हमारीआज्ञा बिना संखिया नदीजायाकरे ॥

दत्तेरिया रामचन्द्र का दुबारह इज़हार लियागया ॥

प्र०—अच्छा यह बताओ कि इस याददाश्त में गायकवार केदस्तखत कहांहैं ? उ०—साहब इसयाददाश्तमें दस्तखत नहीं है प्र०—अच्छाकौनसी याददाश्त पर गायकवाड़ के दस्तखत हैं ? उ०—१९तारीखकी यादाश्तपर दस्तखत हैं ॥

भावपूना करके इज़हार ॥

रामकृष्ण सदाशिवजो भावपूनाकरके उपनामसे विख्यात है बुलायागया और ऐडवकेटजनेरल ने उसके इज़हारलिये उसनेवर्णन किया कि तीसवर्ष से मैं बड़ौदेमें रहता हूं इस समय मुझको मीरजुलफ़िक़ारअलीकी रियासतसे तअल्लुक है ॥

मिस्टर होप साहब की ओर से मैं नौकर हूं मीरजुल-फ़िक़ारअली सूरत के रईस नव्वाब जाफ़रअलीके पुत्र हैं और सरकार उनकी मुतवल्ली अर्थात् पालक है उनकी कुछ रियासत बड़ौदे में भी है मीरजुल्फ़िक़ारअलीकी रियासतके देख भालके सिवायकुछ और काम भी मेरे आधीन है और कई सरदारोंकी ओरसे मैंमुख़्तारभी हूं करनैल फ़ियर साहबकोमैं जानताहूं दीवान साहब अर्थात् नानाकांबलकर ने करनैलफ़ियर साहबसे मेरी मुलाकात कराईथी जब पूर्वोक्त साहबबड़ौदेके रेज़ीडण्टथे मैंबहुधा उनके निकटजायाकरता था एक चिट्ठी मिस्टर होप साहबकी करनैल फ़ियर साहबके नाममैंलायाथा वहचिट्ठी मीरजुल्फ़िक़ारअलीके मुआमिलेसे सम्बन्धित थी मीरजुल्फ़िक़ारअलीका मुक़द्दमा उन दिनोंमें बम्बईमेंदायरथा इसदफ़ामें करनैलफ़ियर साहबके पासज़रू-रतसे गयाथा और बहुधा बिना प्रयोजनभी जाया करताथा और कभीकभीकरनैलफ़ियरसाहबको नगरकेहालकहसुनाता था जब करनैल साहब हवाखोरीसे वापिस आतेथे उससमय बहुधाऐसी बातोंकी इत्तिला दिया करताथा। इसव्यवहारमें

साहबके पासजाताथा मैनेकरनैलफियर साहबसे खबरोंकेवर्णन करनेमें कभीकुछभी रुपयानहीं पायामैनेसुना कि करनैलफियरसाहबके विष दिये जाने का इरादाहै अब करनैल फियर साहबने दोतीनदिनके पश्चात् मुझसे जिकर कियातोमैनेउनसे कहा कि बलवन्तरावसे सुनाहै कि जोविष आपको दियागया उसमेंतीन वस्तुयीं अर्थात्—हीरेकोरेत—तूतिया—औरसंखिया मिस्टरमैलवल साहबने पूछा कि रेतके क्याअर्थहैं गवाहमें कहा कि मैंपिसेहुये हीरेको रेत कहताहूं—मैनेजो कुछबलवन्तरावसे सुना था करनैल फियर साहबसे कहदिया किन्तु बलवन्तरावकोभी फियरसाहबके निकटलेगया था॥

साहबप्रेजीडेण्टने पूछाकि बलवन्तरावको करनैलसाहबके निकटतुम लेगयेथे—गवाहने कहाकि हांलेगया था औरकरनैल साहबसेमुलाकात कराईथी॥

बलवन्तरावने करनैलफियर साहबसे हीरेकेचूरेका वर्णन कियाथा बलवन्तराव बापू साहबका कारकुन है वह बहुधा रेजीडन्सीमें आयाकरताथा—बापूसाहब एकबाजारीस्त्रीके पुत्र हैंजोखाण्डेराव गायकवारकी नौकरथी बापूसाहब महाराजा साहबके वीर्य्यसेहैं बलवन्तरावने यहहाल मुझसे रेजीडन्सीमें कहाथा॥

सरजन्‌बेलन टायन साहब के प्रश्न॥

प्र०—तुमकोवह तहक़ीक़ात होनायादहै जो जनरल मीड साहबके सम्मुखहुईथी? उ०—हांस्मर्णहै। प्र०—तुमनेबहुत कुछ मैरवीकी और गायकवारपर मुकद्दमेदायर करायेपरन्तु मुतरज्जिमनेतर्जुमाअशुद्धकियाऔर कहामैंकिगायकवारकेसम्मुख मुकद्दमेदायरकराये—मिस्टरमैलवल साहबनेजबएतिराजकिया तो मुतरज्जिम ने कहा कि बरखिलाफको इस देश में साम्हने कहतेहैं—गवाहनेकहा कि यदि मैं ऐसा न करतातो लोगोंके हक़मेंइन्साफ न होता॥

साहबप्रेसीडेण्टने कहायह प्रश्नका उत्तरनहींहै गवाहने कहा कि बहुतसे लोगोंकाहक गायकवारने छीनलियाथाजो ऐसा न कियाजाता कि तो लोगोंको हक न पहुंचता॥

प्र०—क्या हरएकमुकद्दमेमेंतुमगायकवारके बरखिलाफथे? उ०—मुझको केवल चारमुकद्दमोंसे तअल्लुकथा और मुकद्दमों सेकुछप्रयोजनथा। प्र०—हां,मैं पूछताहूं किजो मुकद्दमा तुम नेकिया वह गायकवार के बरखिलाफ था? उ०—हां,लोगों का रुपया गायकवार परचाहियेथा और वहनहीं देतेथेजो ऐसा न करता तो रुपया भी न मिलता। प्र०—परन्तु मेरे प्रश्नका उत्तरदो—तुमको जब अवसर मिलातो गायकवार के बरखिलाफ कारखाई की? उ०—जो मेरे विचार में दुरुस्त बातथी उसीतरह मैंनेकारखाईकी। प्र०—मैं तुमसे यहनहीं पूछता मेरेप्रश्नकाउत्तरदो? उ०—मैने कोईबातऐसी नहींकी जिससे गायकवार की हानि हो। प्र०—मेरे प्रश्नका अबतक तुमने उत्तर नहीं दिया तुमने कुल कारखाई गायकवार के प्रतिकूल की॥

प्र०—मैं नहींसमझा कि आपक्यापूछते हैं, सरजन्हबेलन-टायनसाहबने अदालतसे मुखातिबहोकर कहाकि मेरा प्रश्न तो स्पष्टहै उसका उत्तर मिलना चाहिये॥

साहब प्रेसीडण्ट नेकहा तुम मुस्तहक उत्तर पाने केहो परन्तु मैं नहीं देखता कि तुमको किसतरह से जवाब साफ मिलेगा। प्र०—मैं पूछताहूं जोमुकद्दमे तुमने कमीशनमेंपेश किये वह बरखिलाफ गायकवार के थे? उ०—यह मुकद्दमे ऐसे नथे जिनसे गायकवारकी कुछहानिहोकिन्तु वहमुक-द्दमे उसमुकद्दमेकी बाबतथे जोगायकवारसे लोगोंकारुपया चाहिये था। प्र०—करनैलफियरसाहब जानतेथे कितुमउन मुकद्दमोंकी पैरवीकरतेहो? उ०—हांजानतेहोंगे। प्र०—कर-नैलफियरसाहबके पासतुम बहुधाजाते थे? उ०—हां,अकसर जाता था और अबभी जाताहूं। प्र०—तुम्हारी यहीप्रकृतिथी

कि तुमको कुछ न मिलता था तौभी उनको खबरें पहुंचाया करतेथे? उ०—जो हालठीक २ मुझकोमालूम हुआ करता थामैं कारनैलफियरसाहबसे कहदियाकरताथा। प्र०—तुम्हारी खबरें वहसुनाकरते थे? उ०—हां सुनने न सुननेका उनको अखतियारथा सिवामेरे औरमनुष्यभी खबरेंपहुंचायाकरतेथे। प्र०—परन्तु जोखबरेंतुमपहुंचातेथे उनको कारनैलफियरसाहब अच्छीतरह सुनतेथे? उ०—मेरीही खबरोंकोनहीं किन्तुकई मनुष्योंकी खबरोंको अच्छीतरह सुनतेथे। प्र०—तुमयह खबरें पहुंचायाकरते थे कि नगर और गायकवारके महलमें क्या होताहै? उ०—जबसाहब हवाखानेजातेथे तो जोखबरें सुना करतेथे उनको वापिसआकर मुझसे पूछतेथे—मुझको जोकुछ मालूम होताथा मैं कहदिया करताथा। प्र०—सिवा तुम्हारे औरमनुष्यभी फियरसाहबको खबरेंदियाकरतेथे औरजोलोग खबरें पहुंचातेथे वह तुम्हारे नौकर थे? उ०—मैं उनलोगों को किसवास्ते नौकर रखता साहब तीन २ चार २ कोसतक हवाखाने जायाकरते थे जोमनुष्य उनको मिलते उनसेपूछा करतेथे। प्र०—जोखरीता गायकवारने श्रीमान्‌वाईसरायको भेजाथातुमने उसका वर्णन किया था? उ०—मुझको अच्छे प्रकारस्मर्ण नहीं। प्र०—याद करके बताओ। प्र०—जोआप-खरीतेकेलिये पूछतेहैंतो महाराजासाहबने बहुतसेखरीतेभेजे थे। प्र०—मैंउसखरीतेके लियेपूछताहूंजो कारनैलफियरसाहब की बदलीके विषयमेंगया था? उ०—मुझेस्मर्ण नहीं कि इस खरीते का कारनैलफियरसाहबसे जिकरकिया हो। प्र०—तुम सौगन्धखासक्तेहो कि मैंनेजिक्रनहीं किया? उ०—हां सौगन्ध खासक्ताहूं किजिक्रनहीं किया। प्र०—तुमउस खरीतेके हाल सेवाकिफ नथे? उ०—मुझको किसतरहउसका हालमालूम होता। प्र०—मालूमहुवाकि तुमको उस खरीते काहाल कुछ भी मालूम नथा? उ०—नहीं मुझको कुछभीमालूमनथा। प्र० जोकुछ कारनैलफियर साहबने इसविषयमेंकहाहै उसकोसुनो

जब करनैलफिथर साहबसे प्रश्न कियागया कि तुमनेआबपूना वारसे इसखरीते का हालजो दूसरी नम्बरको भेजागया था सुनातो उन्होनेवर्णन कियाकि हां मैंने सुनाथा—पसकरनैल फिथरसाहबने तो इकरार किया कि तुमसे सुनाया तुमकि-सतरह कहतेहोकि मैंने नहींकहा? उ०—मुझे याद नहीं। प्र०—तुम सौगन्दखासक्ते हो कि मैंने नहींकहा? उ०—मुझे याद नहीं कि मैंने करनैल फियर साहबसे कहा या नहीं। प्र०—तुमको औरखरीतोंकीभी इत्तिला नहींहुई नतुमनेकरनैलफियरसाहबसे उसका जिक्रकिया? उ०—जब मैंनेसुनाकि खरीताजाने वाला है मैंने कर्नैलफियर साहबसे कहा परन्तु मजमूनकेमालूमन होनेसे कुछमुफस्सिल हालखरीतेका नहीं कहा। प्र०—तुम क्योंकर जानते थेकि खरीतेलिखे जातेहैं? उ०—लोग दरबार में बातें किया करते थे वहां मैं सुनाकरताथा। प्र०—तुम गायकवार के नौकरों को जानताहो। उ० मैं बड़ौदे के सम्पूर्ण निवासियों को जानता हूं। प्र०—तुमसालिमको जानतेहो? उ०—हां इतना जानताहूं कि वहरजीडन्सीमें आयाकरताथा प्र०—तुमकभी गायकवार केमहल में सालिम की भेंटके लिये नहीं गये? उ०—नहीं। प्र०—तुमभी महलको नहींगये? उ०—जबकोई कामहोताथा चलाजाता था परन्तु जबसेकमीशन बैठीहै नहींगया प्रेसीडण्टसाहब ने कहा कौनसी कमीशन का जिक्र है? उ०—करनैल मीड साहबकी कमीशनका, उससे पहिले इससे अधिकन होंगया। प्र०—तुम दामोदरपन्थको जानतेहो? उ०—हांदूरसेदेखा है बातचीतनहींकी प्र०—वर्णन करोकि बापसाहब कौन हैं? उ० खाण्डेरावमहाराजाकी अविवाहितास्त्रीसे यहलड़काहै। प्र० यहमनुष्यगद्दीका दावेदार है? उ०—नहीं वह उसतनख्वाह का दावेदारहै जोउसको मिलाकरती थी। प्र०—परन्तु तुम जानतेहोकि अबउसको गद्दीका दावानहींहै? उ०—उसको क्योंकर गद्दीकादावाहोसक्ताहै क्योंकिवहमलखुबा बीबीके

है। प्र०—तुम निश्चयकरके कहसक्ते हो कि उसको सिवासाक्षिक के और कुछदावा नहीं है ? उ०—सिवाय तनख्वाहके और कुछदावानहीं करताहै। प्र०—तुमसे गायकवारसेहाल और प्रहिलेसेभी कभी रंजिश होगई है ? उ०—थोड़ेदिन मुझको हिरासतमें रक्खाथा। प्र०—किसकारणसे ? उ०—मिस्टरसालमनसाहब एसिस्टेन्टरजीडण्ट को भावसेंधिया ने कुछरिशवतदीथी इसलिये भावसेंधियाको सरकारने मैाकूफकरदिया प्र०—मुझसे साफ २ कहोकि गायकवारहालने तुमपर कुछ जुर्म्मकायम किया था ? उ०—मुझपर कोई जुर्म्मक़ायम नहीं किया नमुझको कभी क़ैदकिया॥

मिस्टररिचीसाहब के इज़हार॥

मिस्टररिचीसाहबके इज़हार मिस्टरअनवरारटी साहबने लिये उन्होंने वर्णनकियाकि मेरानामजेम्सबैलटरिचीहै और मैं ऐसिस्टएटऐजन्ट गवर्न्नरजनरलहूं जो बड़ौदेमेंरहताहै मुझ को सिवलसरविसीमें तअल्लुकहै जबदामोदरपन्थ के इज़हार लिये गयेथे मुझे यादहै॥

साहबप्रेजीडण्टसे मिस्टरअनवरारटीसाहबने कहाकिदामोदरपंथनेमरहठी भाषामेंइज़हारदिया उसकोशहादतनहीं कहसक्ते मिस्टररिचीसाहने कहा कि मरहठी भाषाको कुछ मैं जानताहूं मैंने उसकेइज़हारों का उलथा अंगरेजीभाषामें कियाथा और रजीडन्सीकेहिन्दुस्तानीऐसिस्टेन्टने मुझकोसहायतादीथी हिन्दुस्तानीअसिस्टेन्टका उलथाठीकथा और मैंनेभी सही २ लिखा दामोदरपन्थने जोकुछ वर्णन किया मैं जल्दी २ लिखतागया और इसके उपरान्त मैंनेउसे दुरुस्तकिया अदालतमें जो इज़हार रक्खा है मेरेही हाथकाहै यह इज़हार २९—३० जनवरीका लिखाहुवाहै जबतर्जुमा होकर दामोदर पन्थको सुनायागया मैं मौजूद नथा—मिस्टरअनवरारटीसाहब ने साहबप्रेजीडण्टसे कहा कि मैं चाहताहूं कि २९ और ३० जनवरीके लिखेहुये इज़हारशहादतमें दाखिल किये जांय॥

सरजान्सवेलनटायन साहबने कहा कि यह इजहार किस क़ानून और कायदेके अनुसार गवाहीमें दाखिल होसक्ते हैं होसक्ते हैं अगरआमक़ायदेके अनुसारगवाहीमें दाखिलकिये जाते हैं तोयहक़ायदा आमनहीं है ॥

प्रेसीडण्ट साहबने कहायह इजहार गवाहीमें दाखिलहो सक्ते हैं क्योंकितहकीकात कीतरफ आपकोगौरकरनाचाहिये सिवा इसकेमिस्टर रिची साहब इजहार लेनेके अधिकारी थे और उनके लियेहुवेइजहार काफीसमझे जासक्ते हैं फिर वह इजहार पेश होकर गवाही में दाखिल किये गये और उनके इजहार भीदाखिलहुये जिनकी तसदीक होचुकी थी ॥

सरजण्ट वेलनटायन साहबके प्रश्न।

प्र०—दमोदरपंथ आपकेचार्जमेंहैं ? उ०—नहीं। प्र०—गजानंद वतिलके चार्जमेंहै ? उ०—मिस्टरसूटर साहबके चार्जमेंहै प्र०—आपजानतेहैं किवह खास किस की हिरासतमेंहै ? उ० मैंनहीं जनता ॥

इजहार अब्दुल अली ॥

खानबहादुर अब्दुल अलीकेइजहार मिस्टरअनवरारटीसाहबने लियेउन्होंने वर्णनकियाकि मैं बम्बईकी पुलिस काइन्सपेक्टरहूं दिसम्बरकेमहीनेमें मिस्टरसूटरसाहबके साथ बड़ौदेको आयाथाग्रायद ९ दिसम्बरथी उसीदिनसे मैंबड़ौदे मेंहूं और मिस्टरसूटरसाहब कीसहायताकरताहूं यहसुनकर सरजण्ट वेलन टायनसाहबने कहाकितुमठहरोहमकरनैल फियरसाहब कोबुलाते हैं ॥

करनैल फियर साहब बुलाये गये।

प्रेसीडण्ट साहबनेउनसेकहाकि आपकुरसीपर बैठें सरजण्ट वेलनटायन साहबने कहाहां कुरसीपर बैठें परन्तु ऐसेस्थान परजहां मैंभी उनको देख सकूं करनैल फियरसाहब नेकहा हां मैं ऐसीही जगहपर बैठूंगा सरजण्ट वेलनटायन साहबने

करनैल फियर साहब से कहाकि आपकी शहादत मुलतवी की गईथीकि आपने थोड़ेसे असलकागजों का मंगवाने का इकरार कियाथा आपने काग़ज मंगवाये यानहीं ? उ०—हां मंगवायेहैं सरजण्ट बेलनटायनसाहबने कहामेहरबानीकर-के मुझको दीजिये करनैल फियर साहबने वहकागज ढूंढ करजो ऐडवकेट जनरलके क़ब्जे मेंथे सरजण्टबेलनटायनसाहब कोदिये करनैल फियर साहबने कमीशन के मेम्बरों से कहा यदि आपकी आज्ञाहोतो सरकारी काग़ज कमीशनकेरूबरू पेशकरूं॥

प्रेसीडण्ट साहबने कहा मैं कुछ नहीं कहसक्ता आपको अखतियार है पेशकरने न करने का॥

करनैलफियर साहबने कहा पसऐसी अवस्थामें मुझकोपेश करनेकी आज्ञा नहीं है साहब प्रेसीडण्टने कहा मैं आपको पेश करनेकी इजाजत नहीं देसक्ता ऐडवकेट जनरल को जिम्मे दारकरता हूं करनैलफियर साहबनेकहा किजोबात पूछनी होउसका उत्तर मैंदूंगा परन्तु काग़ज नहींपेश करूंगा॥

सरजण्टबेलन टायनसाहबने कहा इससे मालूम हुआ कि आप कागज के पेश करने से इन्कार करते हैं करनैल फियर साहबनेकहामैं इन्कारकरताहूं परन्तु जो आपइन काग़जों कासम्बन्धी प्रश्न करेंगे उसका यथार्थ उत्तर दूंगा॥

सरजण्ट बेलनटायन साहबनेकहा बहुतअच्छा आप बतला इयेकि इसकाग़जमें यहलिखाहै वानहीं कोईछलनहीं पाया जातापस इसबातका लिखना श्रीयुतगवर्न्नर जनरलको उचित हुवाकि करनैलफियरसाहबनेबेमौकाइसमुकद्दमेमेंदखलदिया॥

करनैल फियरसाहबने कहाकि यहइबारत इसकाग़ज में लिखीहुई है परन्तु कुछ इबारत छूटगई है॥

इसीतरह कहीं२ सरजण्ट बेलनटायन साहबने इबारतपढ़ पढ़ कर सुनाई करनैलफियर साहबने उसको तसलीमकिया

परन्तु वह भी कहा कि जो खास २ और उत्तम २ बातें हैं वह छोड़ दी गई हैं इसके उपरान्त सरजण्ट बेलनटायन साहबने पूछा कि आप नूरुद्दीन बौहरे को जानते हैं ? उ०—मैं नाम नहीं जानता हूं परन्तु एक बौहरे का मुकद्दमा उस कमीशन के दायर था जो पिछले वर्ष में जमा हुई थी। प्र०—शायद वह यही मनुष्य होगा आप जानते हैं कि गायकवारने इस मनुष्य को बहुत भारी दण्ड दिया था ? उ०—हां यदि वही मुकद्दमा और उसी मनुष्य को उस मुकद्दमे से तअल्लुक है तो यह वही मनुष्य है। प्र०—उसके एक सम्बन्धी को गायकवारने बहुत से बेद लगवाये थे और अष्ट टहट कर भी पांच हजार रुपया जुर्माना किया? उ०—हां उसपर जुर्माना हुवा था परन्तु मुझे जर्माने की संख्या स्मर्ण नहीं सरजण्ट बेलनटायन साहबने अधिष्ठाताओं से कहा कि मैं नहीं चाहता कि यह कागज करनैल फियर साहब का आम में मशहूर किया जाय करनैल फियर साहब जिस प्रकार से चाहें इस कागज को रक्खें साहब प्रेजीडेण्टने कहा कि नूरुद्दीन बौहरे के मुकद्दमे का करनैल फियर साहबने कुछ उत्तर नहीं दिया सरजण्ट बेलनटायन साहब ने कहा कि करनैल फियर साहब उत्तर दे चुके हैं इसके उपरान्त सरजण्ट बेलनटायन साहबने करनैल फियर साहब से पूछा कि इस बौहरे ने गायकवार के ऊपर नालिश की थी वा नहीं ? उ०—हमें उन दिनों में नालिश की थी—प्रेजीडेण्ट साहबने पूछा कि जिन दिनों में कमीशन एकत्र हुई थी उसने नालिश की थी ? उ०—मैं नाम खूब नहीं जानता परन्तु एक बौहरे को जानता हूं॥

ऐडवकेट जनरलने दुबारह इजहार करनैल फियर साहब के लिये॥

प्र०—यह फिकरे जो तुम्हारे सम्मुख पढ़े गये यह गवर्नमेण्ट रैजोल्यूशन से बने हुये हैं उ०—हां सा हब गवर्नमेण्ट रैजोल्यूशन से बने गये हैं। प्र०—मालूम होता है कि तुम्हारे मुफस्सल मतलबों के फिकरे उनमें से नहीं लिये गये हैं ? उ०—हां साहब नहीं लिये गये। प्र० उस समय रैजोल्यूशन गवर्नमेण्ट से जारी हुवा था तो तुम कहां थे ?

उ०—मैं इङ्गलिस्तानमेंथा। प्र०—जबकि रैजीडन्सी ग्रनगवर्नमेण्टसे जारीहुआ तोतुमको उत्तरदेनेका मौकाथायानहीं ? उ०—मैं इङ्गलिस्तानमेंथामौकाकहांसेपाता। प्र०—तुमकोदूसरेजोल्यूशनकी खबरथी किकोईऐसा रेजोल्यूशन जारीहुआहै ? उ० साहब मुझेखबरनथी जबमैं इङ्गलिस्तानसे आयातब मुझकोखबरहुई। प्र०—जबतुम इङ्गलिस्तानसेआये तोउससमयक्या सरकारने तुम्हारेनिकट रैजोल्यूशन उत्तरदेनेकेलिये भेजाथा ? उ०—नहीं हमनेआप दरखास्तकरके मंगायाथा। प्र०—जबवह रैजोल्यूशन तुम्हारेमंगानेके अनुकूल आयातो तुमनेजो इलजामतुम्हारेऊपरलगायेथेसबका उत्तरदिया ? उ०—हांसाहब मैंनेसबका उत्तरदिया। प्र०—जबतुमइङ्गलिस्तानसे आयेतोक्या पहिले पालनपुरमें ठहरेथे ? उ०—हांसाहब पालनपुरमें ठहराथा और जिसदिनसे मैंहिन्दुस्तानमें आया उसदिनसेमैंने पूरामासिकपाया। प्र०—बड़ौदेमें जोतुमआयेतो अपनीतरक्कीपर आयेथे ? उ०—हांसाहब तरक्कीपर आयाथा ॥

इज़हार गजानन्दवतिल ॥

गजानन्दके इजहार ऐडवकेटजनरलने लिये उसने वर्णन किया मुझकोसरकारसे रावबहादुर का खिताब मिलाथा मैं अहमदाबादमें पहिलेदर्जेका पुलिसकाइंस्पेक्टरहूं मैं मिस्टर सूटरसाहबके साथ मुख्यकामपर नियतहुवाहूं मुझेस्मर्णहै कि १० दिसम्बरकोमैंबड़ौदेमें आयाथाउसीसमयसेमैंयहांहूंकेवल दोदिनकेलिये अहमदाबाद चलागयाथा। जिसदिन गायकवार पकड़ेगये कप्तान जेकसनसाहबके साथमैं गायकवारके महल मेंगयाथा हमलोग ९ बजे दिनके गयेथे मैने जाकर महल में तुरन्तही पहिरास्थान २ परनियत करदिया और जिस२ जगह परमाल और असबाबथामैंने मोहरलगादी जवाहरखाने और निजकेखजाने परभीमोहर लगाईगईथी कप्तानजैकसनसाहब और२आदमियों के सम्मुख यहमोहरें लगाईगईं दामोदरपंत भीउससमय उपस्थित थे उसदिनमैंने औरभी बहुतकामकिये

इसलिये सम्पूर्ण वृत्तान्त विस्तार से वर्णनहीं जो कागजात निजकी कचहरीकेथे वहकईदिनतक बन्दरहे फिरपोटली में मंगायेगये कुछकागज यशभीगायकवारके महल में बंद हैं जो कागजरेजीडण्टीमें मंगायेगयेवहपुलिसके पहिरेमेंरक्खेगये ॥

साहबप्रेसीडेण्टने पूछाकियह कागजरेजीडण्टी मेंकिसने मंगवायेथे? उ०-सरकारकी आज्ञानुसार गयेथे औरजबवह मोहरेंतोड़ी गईं तोसम्पूर्ण कारकुन निजके महकमेके और मिस्टरसूटर साहब उपस्थितथे जिसदिन दामोदरपंथ पकड़ा गया मुझकोयादहै किपकड़ेजानेके पीछे मैंने उसको देखाथा मैंनेउससेकहाथा किअगरतुमसच्ची २ हालबयान करोगेतो तुम्हाराअपराध क्षमाहोजावेगा किन्तुताजीरात हिंदकीजिस दफामें अपराधके क्षमापनका वर्णनलिखाहै वहभीमैंने उसको दिखाईथी इसके विशेष मैंने उससे यहभी कहाथा किनाना जीवतिल आदि ने तो अपने २ अपराधों का इकरार किया यहीबातेंदामोदरपंथसेमैंने कहीथीं और कहाथाकिभलेप्रकार समझकर इसका उत्तर दो-इसके उपरान्त कमीशन के मेम्बर टिफनखाने को गये भोजन से सुचित होकर फिर एकच कुये साहबऐडवकेटजनरलनेप्रश्नकियाकि तुमनेकहाकि दामोदर-पंथकोदेखा और उसकोसमझाया था।तुमने उसकेपीछे भीउसे देखा? उ०-मैंनेदोतीन घण्टेके उपरान्त फिरउस को देखाथा जबसरल्यूइस पीलीसाहबने उसकाअपराध क्षमाकरदिया तो उसकेइजहारहुयेथेयहमनुष्य डेरेमेंबुलायागयावहांमैंनेउसको देखाथा सरल्यूइसपीली साहब भी उसडेरेमें थे उसवक्त उसने इजहारदियेऔरमिस्टररिचीसाहबने उसकाइजहारलिखा था मैंहेमचन्द्रगवाहकोजानताहूं दामोदर पंथके इजहार केपहिले मैंनेउसकोदेखाथा।प्र०-कितनीमुद्दतकेपहिलेतुमनेउसकोदेखा था? उ०-पांचछः दिनपहिलेमैंनेउसकोदेखा उसकाबयान सब अशुद्धहै किमैंनेउससे जबरदस्तीइकरार कराया और यहभी गलतहै कि जोकुछजोचाहा मैंने लिखलिया और यह बयानभी

गलतहै कि मैंने उससे कहाकि अगर तू इजहार परदस्तखत न करेगा तो तुझको कैद करूंगा मैंने किसी तरह की उसको धमकी नहीं दीन मैंने जबरदस्ती उससे किताबों को छीना जब उसने किताबें दीं उनको मैंने रख लिया हेमचन्द फतहचन्द के इजहार मिस्टर सूटर साहब के रूबरू लिये गये थे उस समय मैं भी उपस्थित था मुझको याद है कि जब वह इजहार दे चुका था तो मिस्टर सूटर साहब सरल्य इस पीलो साहब के रूबरू उसको ले गये थे कोई रकम किताब में मेरी आज्ञा से दर्ज नहीं हुई मुझे याद नहीं कि पहिली बेर किताब को कब मैंने देखा था जब हेमचन्द फतहचन्द पहिली दफा मेरे पास किताबों को लाया तो यह रकमें उसमें लिखी थीं मैंने कोई वरक किताब का न निकलवाया न कोई नया वरक उसकी जगह लगवाया मालूम होता है कि मेरे पास किताबों के आने के पहिले नये वरक लगाये गये थे मेरे पास इस किताब में कोई तबदीली नहीं हुई ॥

जब नरसू जमादार पकड़ा गया मुझको याद है कि रजीडन्सी में मिस्टर सूटर साहब की आज्ञानुकूल पकड़ा गया था पर मुझे यह स्मर्ण नहीं कि किस मनुष्य ने उसको पकड़ा था परन्तु मेरे रूबरू वह गिरिफ्तार किया गया था इसके उपरान्त रावजी से उसका सामना कराया गया जो मैदान रेजीडन्सी के रूबरू है वहां मैं नरसू के निकट बैठा हुआ इस मुकद्दमे में प्रश्न करता था खानसाहब अकबरअली और अब्दुलअली वहां वर्त्तमान थे मैंने रावजी से कह दिया था कि तुम यह हो बात कह देना कि मैंने सब बातों का इकरार कर लिया जब रावजी नरसू के निकट आया तो उसने भी कह दिया मेरे विचार में किसी पुलिस के आदमी ने नरसू से नहीं कहा था कि रावजी ने क्या कहा रावजी से जितना कि कहा गया उतना ही उसने नरसू से कहा ॥

बरजनू बेलनटायन साहब के प्रश्न ॥

प्र०—तुमने जो कुछ रावजी से कहा वह इसलिये कहा कि वह ठीक २ बयान करदे ? उ०—किस विषय में । प्र०—इसी मुक-

हुये थे। उ०—उनलोगोंका साम्हनाइसलिये करायागया था कि ठीक२ हाल मालुम होजावे। प्र०—यदि नरसूहरएक बातकाइन्कार करता तो आपक्याकरते? उ०—अगरकोई सबूतनहोता तो छुड़ादिया जाता। प्र०—तुम्हारामतलब यह है कि तुमनरसू को रिहाकर देते? उ०—हां जब साहब आज्ञा देते। प्र०—तुम बतलाओ किजबतुम महल में गयेतो सबकागजकुर्क करलिये थे? उ०—हां। प्र०—मिस्टर सूटर साहब याकोई दूसरा अफसर मौजूदथा जबकि किताबों को मोहरें तोड़ीगई? उ०—उससमय मिस्टरसूटर साहब मौजूदथेऔर मैंभी था। प्र०—मैं तुमसे यह प्रश्ननहीं करतामेरा प्रश्नयहहै किजबकागज तुम्हारे अधिकार में थेतो मिस्टरसूटर साहबने उनको देखाथा? उ०—जिससमय मैंने उनकागजों कोदेखा तोमिस्टरसूटर साहबकोभी दिखादिया था। प्र०—कितनीमुद्दततक तुम्हारे कब्जेमें यहकागजात रहे? उ०—मेरेकब्जे में कभी यहकागज नहीं रहे पुलिस और जंगीगार्ड में थे। प्र०—ऐप्यारेसमझ करउत्तरदो जबतुमनेखोलकर कागजदेखे तोउससे कितनी देरपीछे मिस्टरसूटर साहब आये थे? उ० तुरन्तही मिस्टरसूटरसाहब आयेथे। प्र०—तुरन्तसेतुम्हाराक्या मतलबहै? उ०—दस पन्द्रहमिनटकेपीछे। प्र०—तुमने उनसब कागजोंको कुर्ककिया था? उ०—हां। प्र०—कुर्क से कितनी देरपीछे मिस्टरसूटर साहब आयेथे? उ०—किन कागजोंको आप कहते हैं। प्र०—वह कागज जो आपने कुर्क किये थे? उ०—जितने दफ्तरथे उनकेसब कागजों को बन्दकरके मोहर करदीगई थी। प्र०—उनदफ्तरोंमें कोई मनुष्य जाभी सक्ता था? उ०—मैं और कप्तान जेकसन साहब दफ्तरमें जासक्ते थे। प्र०—तुम हर एक कागज कोदेख सक्ते थे? उ०—हां। प्र०—तुम कहते होकि पाव घंटेतक मैं कागज देखता रहा उसके पीछे मिस्टरसूटर साहब आये? उ०—हां। प्र०—इस अवसरमें तुमनेसब कागजदेख लियेथे? उ०—जब मैंने देखाकि

कागजों पर स्याही पड़ी है तो मैंने सुटर साहबसे इत्तिला की जबसुटर साहब आये तो मैंने सम्पूर्ण कागजोंको देखा कईबातें और भी उसमें से मालूम हुईं। प्र०—आप उसकिताब की तहरीर का हाल बयान करसक्ते हैं? उ०—हां, कुछ वरक़ उसकिताबसे निकालकर नयेवरक़लगा दियेगयेथे। प्र०—किताबदिखाओ कि तुम्हारी क्यागरज़है? उ०—देखिये इसपंक्ति कालेख और पंक्तियोंकी निस्बत अलाहिदा है। प्र०—परन्तुयह वरक़ एकदूसरेसे जोड़ेहुये हैं जब तुमने किताबों को कुरक किया इसकिताबकी यहीहालत थी? उ०—हां यहीहालत थी परन्तु उससमय वरक़ऐसे मैलेनथे अब हाथोंके लगने से मैलेहोगयेहैं। प्र०—तुमको क्योंकर मालूमहुआ कि बनिस्बत और पंक्तियोंके यह सतरनई लिखीहुई है? उ०—यह सतर हालकीलिखी मालूमहोती है। प्र०—तुम कहतेहो कि यह किताबगलतहै और एक सतरके लिखेजानेके कारण किताब गलतहोगई। उ०—इस पंक्तिपर कुछमौकूफनहीं इसीप्रकार कईस्थानपर अशुद्धहै और वरक़बदलेगयेहैं। प्र०—तुमनेकेवल एकही जगह दिखाया कि नवीनपंक्ति लिखीहुई है और भी सतरेंदिखाओ? उ०—आपको खयालकरना चाहियेकिसम्पूर्ण पत्रेजुड़ेहुये हैं और कोई पत्राफटा नहींहै। प्र०—किताब के अन्तमें जोजुज्व हैं उसमेंथोड़ेसे वरक़कमहैं और जितनेवरक़ किताबके और जुजोंमेंहैं उतने वरक़अन्तके जुजमें नहीं हैं? उ०—यहकिताबका भागदिखाओ जिसमें कहतेहो कि वरक़ निकालेगयेहै—गवाहने सुनकर वहहिस्सा किताबका दिखाया जहांसे वरक़कमथे—साहब प्रेजीडण्टने कहा इसजगह कोई निशानरखदोसो सुतरज्जिमने अपनेदस्तखत करदिये सरजब्वेलनटायनसाहबने किताबको उठाकर कहाकिस तरह तुम साबितकरसक्ते हो कि यह रक़म बदलीगई है? उ०—यह स्याहीनईहैऔरवहस्याहीपुरानीमालूमहोतीहै। प्र०—जवाहर खानेका अब कौनमनुष्य मोहतमिमहै? उ०—अबसे कागरज

है—सरजन्ट बेलनटायन साहबने तीनबेर कहा, अब, अब, अब ? उ०—अबगणपति रावमहाजन मोहतमिमहै। प्र०—यहमनुष्य तुम्हारे करीब कारिश्तेदार है ? उ०—वह मेरा समधी है। प्र०—तुमको अपनी आबरू का बड़ा खयाल है और जनोंको यहसंदेह है किगवाही तुम्हारी बनावट की है ? उ०—ऐसा खयाल मेरे लिये कभी नहीं हुआ। प्र०—आयु भर में ऐसा इलजाम तुमपरकभी नहीं लगा ?उ०—नहीं। प्र०—जबरियासत कोटाकीगद्दी नशीनीका मुकद्दमा था तो तुमवहां उपस्थितथे ? उ०—हांमैं वहां उपस्थित था। प्र०—वहांबड़ेदरजेके अफसर पुलिसतुमथे ? उ०—हांमैंअफसरपुलिसथा औरमैंने कुलतहकीकातकी। प्र०—वहमुकद्दमा प्रथम मिस्टरकागलन साहबके सम्मुखपेशहुआथा ? उ०—जो मुकद्दमा मिस्टर कागलनसाहबके रूबरू पेशहुआ थामैंने उसकीतहकीकातनहीं की। प्र०—इससे तुम्हारायह मतलबहैकिजो मुकद्दमा मिस्टर कागलनसाहबके रूबरूपेश हुआ थाउसमें तुमखास असफर पुलिस थे ? उ०—उसमुकद्दमे कीतहकीकात मैंने नहींकी। प्र०—क्या तुमने उस मुकद्दमे कीभी तहकीकात नहीं कीजो मिस्टररिची साहबके रूबरू पेशहुआ था ? उ०—मैं एकदफा मिस्टर रिची साहबके रूबरू गयाथा मिस्टरमैलवल साहब ने मुतरज्जिमसे कहा कि गवाह ने मिस्टर कागलन साहब का नाम भी लिया था॥

सरजण्ट बेलनटायन साहबने कहा अफ्सोस है कि तुमसब कासब तर्जुमा नहीं करते तुमने मिस्टर कागलन साहब का नामनहीं लिया॥

गवाहने कहाकि यदिमैंआपका प्रश्नअच्छीतरहसमझूं तो उसकाउत्तर देसकूं। प्र०—मुझेआश्चर्यहै कितुम क्योंकरजवाब साफदोगे मैंपूछताहूं कितुमउसमुकद्दमेमें जोमिस्टर कागलन साहबके रूबरूपेशहुआथा पहिलेदरजेकेअफसर पुलिसथे ? उ०—नहींमैंने उसमुकद्दमे कीपूरीतहकीकात नहींकीथीकेवल

तहकीकात में संयुक्त हुआ था शायद इतनीही तहकीकातके लिये मैं बुलाया गया था। प्र०—मिस्टर गणानन्द आपमेरे साथ अप्रतिष्ठासे पेशआतेहैं परन्तु मैंसाफ उत्तरके पानेके बिना नहूं-टूंगा? उ०—मैं अपने प्रश्नको इससे अधिक विस्तारसे नहीं बयान करसक्ता। प्र०—अच्छा मतकरो साफ जवाबदो क्या तुम उसमुकद्दमे में मुख्यपुलिसअफ्सरथे? उ०—पहिले नम्बरका अफ्सर पुलिसथा और गवाहकी तौरपरउस में गया था। प्र०—पहिलेनम्बर सेतुम्हारा क्याआशयहै क्यायहमतलबहैकि तुमइस मुकद्दमेकी तहक़ीक़ातमें मुख्यअफ्सरपुलिसथे? उ० नम्बर से मेरा यह मतलबहै कि मुझसे जियादा तनखाह का कोईमनुष्य गवाहों में नथा। प्र०—उस समयमें तुम्हारा क्या दरजाथा और क्यामासिक मिलताथा? उ०—यदि आपमुझ कोसन्का पतादेंगे तोकहूंगा। प्र०—सन् १८७० ई० मेंथा? उ०—सन् १८७० ई० मेंपहिले दरजे का अफ्सर पुलिसथा प्र०—क्यामिस्टर कागलन साहबने कहा था किइस मुकद्दमेके गवाहीदेनेके विषयमें पुलिसनेभी कुछकारखाई कीहै? उ० मैनेउस मुकद्दमेकी तहकीकात नहीकी मैं केवलगवाह था। प्र०—क्या मिस्टर कागलन साहबने तुम्हारेलियेयहबात कही थी? उ०—अगरकहीथी तोवह गलतीपरथे क्योंकि मैनेउस मुकद्दमेकी तहकीकात नहींकी केवलगवाहथा। प्र०—प्रेजीडेण्टसाहबनेकहा क्या उन्होंनेअपने मुखसेयह बातकहीथी? उ० मुझेस्मर्णनहीं शायदअपनी कचहरी में कहाहोगा। प्र०—जो कुछउन्होंने कहाथा उससेतुम्हारीतरफ इशाराथा? उ०—मैं नहींजानता किकिसकी निस्बतयहबातथी जबमुझको एकबात सेसम्बन्धनथा मुझको उसकीतलाशकी जरूरतनथी। प्र०—यदि तुमसेसम्बन्धनथातो और किससेतअल्लुकथा? उ०—जिनपुलिसके लोगोंने तहक़ीक़ात कीथी उनहीसे तअल्लुकथा और मैं केवलगवाहके तौरपरथा। प्र०—जिसमुकद्दमे की तहकीकात मिस्टरजस्टिस बेसिट साहबनेकी वहतुमको यादहै? उ० हां

मुझेस्मर्ण है परन्तु मुक़द्दमे की समाअत के समय मैं मौजूद नथा। प्र०
लेकिन बरवक़्त तहक़ीक़ात मुक़द्दमे के तुम मौजूद थे ? उ०—मैं
मौजूद नथा जब मुक़द्दमा दौरा सुपुर्द हुआ उस समय मुझको
तअल्लुक हुआ था। प्र०—इस वर्णन से तुम्हारा क्या यह मतलब है
कि तुमको उस मुक़द्दमे से कुछ तअल्लुक़ न था जिसकी समाअत
मिस्टर जस्टिस वैसट के रूबरू हुई थी ? उ०—जब मुक़द्दमे की स-
माअत हुई थी मैं वहां न था परन्तु मुक़द्दमे को मैंने मरत्तिब किया।
प्र०—तुमको स्मर्ण होगा कि मिस्टर जसटिस वैसट साहब ने
कहा था कि सैकड़ों मुक़द्दमे मेरे सामने आये और मैंने उनका
निर्णय किया परन्तु ऐसा मुक़द्दमा कोई नहीं आया जैसा कि
यह मुक़द्दमा है साफ़ मालूम होता है कि यह मुक़द्दमा बनावट
का है ? उ०—मैं आपके इस प्रश्न को नहीं समझा। प्र०—मेरा
प्रश्न यह है कि तुम जानते हो कि मिस्टर जस्टिस वैसट साहब ने
इजलास में यह कहा था ? उ०—कहा होगा मैं उस समय वहां
न था। प्र०—तुमने सुना या और प्रकार से तुम्हें इत्तिला हुई होगी
कि साहब ने तुम्हारी निस्बत ऐसा कहा था। उ०—मुझको कुछ
ख़बर नहीं सिवा इसके मैं साबित कर सक्ता हूं कि इहाअलैह की
बातों पर मिस्टर जस्टिस वैसट साहब आगये यदि अदालत को
स्वीकार हो तो उन कागज़ात से जो मेरे पास वर्त्तमान हैं इस
बात की प्रतीत करादूं॥

गजानन्द वतिलके दुबारह इज़हार हुये॥

प्र०—दरमियान उस वक़्त के जबकि उन कागज़ों पर मोहर
लगाई थी और फिर वह मोहर तोड़ी गई तुम्हारे कबज़े में कभी वह
कागज़ आये? उ०—नहीं आये। प्र०—तुमने उन कागज़ों को क्या
किया? उ०—साहब मैंने उन कागज़ों को टोघस्टेत कर रखा। प्र०
जब तुमने उन कागज़ों की आज़माइश की थी उस समय कोई कार-
कुन भी था? उ०—हां कारकुन थे। प्र०—जब तुमने उन कागज़ों
पर स्याही के धब्बे देखे तो तुमने क्या किया? उ०—मैंने उन का-
गज़ों को सूटर साहब के पास भेज दिया। प्र०—तुम रिचौ साहब के

निकटक्योंगये थे? उ०-मैं कोटाके मुकद्दमेकेमद्धे गयाथा अबसाढ़े चारबजगये इसलिये कमीशन बरखास्तहुई ॥

पन्द्रहवें दिन का इजलास ॥

११ बजेकमीशनके सम्पूर्णमेम्बर एकचक्रयेसरल्यूइसपीली साहबऔरश्रीमान्महाराजा गायकवार उपस्थित थे ॥

हरजीवन दास पुरुषोत्तमदासके इजहार।

हरजीवन दासपुरुषोत्तमदासके इजहारात मिस्टर अनवरारटी साहबने लिये उसने वर्णन किया किमैं कारकुन जो किगुजराती भाषामें खजानेकाकाम देतेहैं उनका सरदारहूं मुझको हिन्दुस्तानीलिखने पढ़ने और हिसाब किताबमें बहुत अभ्यासहै पहिलेतखतोंके जुजबनाये जातेहैं और एकजुजआठवरकों काहोताहै औरसारी बहीजुजों कीहोतीहै यदिएक पचाभी फाड़ाजावे तोएकजुजनष्ट होजाताहै मिस्टरअनवरारटी साहबनेपूछा कितुमहेमचन्द औरफतहचन्द कीबही को देखकर पहिचान सक्तेहोकि इसमेंसेकोई वरक़ फाड़ा गया है? उ०-हांसाहब इसमेंसे वरक़ निकालेहैं औरआठवांऔर सातवां जुजनवीन काग़जका जोड़ागयाहै ॥

सरजान् बेलनटायन साहब केप्रश्न।

प्र०-क्यातुम सचकहतेहोकि इसमेंसेपचे निकालेगये हैं? उ०-हांसाहब छठेजुजमेंसे कईवरक़ निकाले गये है। प्र० छठेवरक़मेंसे कितने वरक़लियेगयेहैं उ०-साहबदोवरक़लिये गयेहैं। प्र०-कितनेपचे बदलाये गये हैं? उ०-तेरह पचेबदलायेगयेहैं औरवह अन्तमेंहैं। प्र०-वहकौनसा जुजहै? उ० सातवां जुजहै। प्र०-क्या अंगूठीका विषयउसमें लिखा है? उ०-हांसाहब उसीमें लिखाहै ॥

येडवकेट जनरलने फिरउसके इजहारलिये ॥

हमकोबताओ किकिसजगहसेपचे जातेरहे हैं? उ०-उसने एकपिन्सललेकर जहांसेकि वरक़ गयेथेप्रथमसे अन्ततक चिन्ह

करदिये। प्र०—यहवताओ कहांकहां दूसरीस्याहीसे लिखा है? उसनेओघ्रुही जहां२ दूसरी स्याहीसे लिखाथा बतादिया॥

सूटर साहब के इज़हार॥

साहब ऐडवकेट जनरल ने फ्रेंक हैनरी सूटर साहब को बुलाकर उनके इजहार लेना शुरू किये उन्होंने वर्णन किया कि मैं कमिश्नर पुलिस और कम्पेनियन आफदी स्टार आफ इण्डिया का हूं ९ दिसम्बर सन् १८७४ ई० को इस मुकद्दमेकी तहकीकातके लियेबड़ौदेको आयाथा जिसमें कि प्रसिद्धथाकि करनैलफियरसाहब को विषदिया गया मेरे साथ खानबहादुर अकबरअलीऔर उनका पुत्र खानबहादुर अब्दुलअलीऔर रावबहादुर गजानन्दवितलथेमैंभूलगया रावगजानन्दवितल मेरेपहुंचनेके कईदिन पीछेआयेथे मुझेस्मर्णहै किमैने इसमुकद्दमेमें अमीनाआयाका इजहार लियाथा१६ दिसम्बरको पूर्वजके समयउसके मकान पर जो बीबी साहबके अहातेमेंहैदेखाथा उसदिनउसने विस्तारसे वृत्तान्तवर्णननहीं कियान मैने उनदिन उसके इजहार लिये क्योंकिवह बहुत बीमारथी जोकुछ आयाने उसदिन मुजसे कहाथा मुझेस्मर्ण है अर्थात् उसनेवर्णन कियाथाकिमैंश्रीमान् मल्हररावके पास दोदफागईथीऔररुपयाभीपाया क्योंकिउसेउससमयबड़ेवेगसे ज्वरथामुजसेहाथजोड़करकहाकिमेरे इजहारफिरलीजियेगा मुजको बोलनेकी सामर्थ्य नहीहै मुझेस्मर्ण है किमेरे जानेके पहिलेकोई पुलिसका आदमी आयाकेपासनहींगया था १८ दिसम्बरको मैंनेआया का इजहार लियाथा अदालतमेंजो इजहार हैं मेरे लिये हुयेहैं औरमेरे हाथके लिखेहुये हैं मुज को मुतरज्जिम की जरूरत नहीं है मैं हिन्दुस्तानी भाषाभले प्रकार समझताहूं २१ दिसम्बरको मैनेअस्पतालमेंजाकरफिर आयाकेइजहार लियेइनदोनों इजहारों पर [डी] अक्षर का चिन्हलगायागया डाक्टर सीवर्डसाहब १९दिसम्बरको रैजीडन्सीमें आयेऔर मुजसेकहा किआयाको अबआराम है वह

आपको बुलातीहैसो २१ दिसम्बरको मैनेउसके निकटजाकर इजहारलिये मैने २४,२५,२६ दिसम्बरको रावजीके भी इज- हारलियेथे और२६ दिसम्बरकोनरसूके भीइजहार लियेथइसब इजहार जोअदालतमें दाखिलहुये मेरेही हाथकेहैं नरसू२२ दिसम्बरको गिरिफ़ारहुवाथा वहरेजीडन्सीमें कैदकियागया और जंगोपहिरे उसपर नियतहुये उसदिनसे आजतक वह जंगी पहिरेमेंहै इजहारों केलिये जानेकेपहिले कोई वाइदा अपराध केक्षमा करनेका उससे नहीं कियागया जबउसका इजहार होनेवालाथा मैनेसरल्यूइस पोलीसाहबको भी बुला लिया सरल्यूइस पोली साहबने भीउससे कहाकि कोईअप- राध तुम्हारा क्षमा न होगाकिन्तुजो अपराध तुम पर नियत होगा उसका दण्डदिया जावेगा॥

यहसुनकर नरसूजमादारनेअपनीपगड़ी उनके चरणों पर रखदीऔर कहाचाहे मुझको फांसी होजावेपरन्तु जोठीक२ हालहैवहआपसेवर्णनकरूंगाऔरजोकुछ मैनेकियाहै याक- तेरहुयेदेखाहै आपसेसाफ२बयानकरूंगाजबवहबयानकरचुका तोउसको पहिरेमें भेजदिया उसदिन उसका इजहार नहीं लिखा गयाथा २३ दिसम्बर कोमैने उसके इजहार लियेथे जिसकमरेमें नरसूके इजहार लिखेथे वह रेजीडन्सी में खाने काकमराथा मैंखानेके कमरेके बराबरजोकमराहै उसमेंरहता थाजिसदिन रावजी कोपेटी देखीगई मुझको वहतारीखयाद है २५ दिसम्बरथी मुझेऐसा यादहै किमेरे वहां पहुंचने के पहिले पेटीमंगाई गईउस समयमैं अपनेकमरेमें गयाथाकि अफसर डटैकटिव(सुरागरसां)नेमुझको इत्तिलाकी किपेटीमें कोईकागज मालूम होताहै उस जगह परकुछ डोरे निकले हुयेथे मैने अपने हाथसे पुड़िया निकाली जब उसको खोल करदेखातोकोई श्वेतवस्तु मालूमहुई मैनेअपनेहाथसे उसेएक लिफाफेमें रक्खा और उसका हाललिख लिया और जब मैं बम्बई को गया उसको अपने साथ लेगयाजब दमोदरपन्त के

पहिले इजहार लियेगये तो मैं बड़ौदे में मौजूद न था। मैंने बम्बई से फिरवापिस आकर ३-४-५ फरवरी सन् १८७४ ई० को इसके इजहार लिये इसके इजहारयह हैं सो सूटर साहबसे इजहार लेकर शामिल मिसल हुये और उसपर नम्बर२ (बी) अक्षर का चिन्ह कियागया फिर गवाह ने बयान किया कि मुझको थोड़े से हिसाब के कागज दिखलाना याद है उसमें कहीं कहीं स्याहीके धब्बे पड़े हुये थे २० फरवरी को यह कागज़ हिसाब के देखे थे या शायद जनवरी में देखे हों तारीख अच्छी तरह स्मर्ण नहीं॥

एकपुलिन्दा कागजकागजानन्द मेरे निकट लायाथा और मुझसे कहाकि डेरे में चलो हिसाबके कागज देखे जाते हैं मैं दूसरे एक डेरे में रहताथा और हिसाबके कागज़ दूसरे डेरे में रहतेथे जबमैं वहांगया तो क्या देखा कि कई हिन्दुस्तानी कारकुन अर्थात् क्लार्क उनहिसाबके कागजों को देखरहेहैं मैंने कुछ किताबें और भी वहां रक्खी देखीं जिसमें कई जगह परसियाही पड़ीहुईथी वहां देरतकमैं बैठारहा जो कारकुन उनकागजों को देखरहेथे वह उन्हीं के लिखेहुये कागजथे और महलसे आयेथे उनमें एकका नामबलवन्तराव था मैंने हेमचन्द और फतहचन्द काइजहार लियाथा मुझको स्मर्णहै अदालतमें जो इजहार रक्खेहैं मेरेही हाथके लिखे हुये हैं ६ फरवरी को करनैल वारटनसाहबके अहातेमें यह इजहार लियेथे सररिचर्ड मीडसाहबने पूछाकि किसतारीख कोतुमने यह इजहार लियेथे गवाहने कहाकि ६ फरवरीको लियेथे उसने हिन्दुस्तानीभाषामें इजहार दियेथे जिसदिन अंगरेजीमें मैंने उसके इजहार लियेथे उसीदिनमरहटीया गुजराती बोलीमें उसके इजहार लिखे गये थे मैंने पूछा कि तुम हिन्दुस्तानी बोली जानतेहो जबउसने कहाकि मैं जानताहूं तोमैंने हिन्दुस्तानी भाषा में उससे प्रश्नकिये॥

सरजान्ड वेलनटायन साहबने कहा क्या आपने उसके इज़हार हिन्दुस्तानी भाषामें लिखे ॥

गवाहने कहा मैने हिन्दुस्तानी बोलीमें पूछे परन्तु अंगरेजीभाषामें लिखे गये जब उसके इज़हार लिखे गये तो उसको हिन्दुस्तानी भाषामें सुनाये गये थे ॥

मुझेस्मर्ण है कि उसने अपने इज़हार पर दस्तखत भी किये थे उसको किसी प्रकारकी धमकी नहीं दी न कुछ तसल्लीकी सिवाइन इज़हारोंके औरभी कुछ बातें उसने मुझसे कीथीं उसके कानमें बाले पड़ेहुये थे वह अति उत्तमथे और उसमें हीरे जड़े थे यदि मैने ऐसे बाले कभी बने हुये नहीं देखे थे मैने उससे पूछा यह बाले कहांके बनेहुये हैं उसनेकहा बड़ौदेके बनेहुये हैं यह बातें उसके इज़हार होनेके पहिले हुई थीं इनपर मैने (ए) (बी) (सी) अक्षरोंके चिन्ह करदिये थे अदालत में जो किताबें रक्खी हैं वही हैं उनपर मेरे दस्तखत भी हैं ॥

जब हेमचन्द फतहचन्दके इज़हार कमीशनमें लियेगये इसी हेमचन्द के इज़हार मैनेलिये थे सो उसके अंगरेजी इज़हार अदालतमें दाखिल किये ॥

औरउनपर (एच) अक्षर नम्बर २ का निशानकियागया साहब प्रेण्डरगस्टने कहा यह इज़हार दिये हैं जिनकी निस्बत सरजान्ड वेलन टायन साहब उज्रकरते हैं ॥

साहब ऐडवकेट जनरलने कहा नहीं यह वह इज़हार नहीं हैं सरजान्ड वेलनटायन साहब मरहठी बोलीपर उज्र करते हैं परन्तु उन इज़हारोंको भी थोड़ी देरके पीछे दाखिल करूंगा इसकेउपरान्त सूटरसाहबनेवर्णन कियाकि बलवन्तरावजिसने हिसाबकी जांचकीथीकभी हिरासतमें नहींरहामैं उसकेनाम सेवाकिफ नहींहूं दोतीन दिनहुये कि उसके इज़हार कमीशन के सम्मुख हुये थे ॥

सरजान्ड वेलन टायन साहब के प्रश्न ॥

प्र०—मैने यहबात समझीहै किपहिले आपने नरसूसे बातें

कोंफिर उसको [illegible] रल्यूइस प्रीलीसाहबके हूबहू लायेघोर वहपूर्व्वोक्त [illegible]बके हूबहू राघोऊघा किजोकुछ मैं जानता हूं वर्णनकर[illegible]? उ०—हां। प्र०—तुमनेउसदिन उसके इज-हारनहीं लि[illegible]? उ०—उसदिन उसने केवल बयानकिया था लिखे नहींगये थे। प्र०—उस दिन जो वार्त्ता हुई कोई लेख आपके पासनहींहै? उ०—उसदिनका लिखाहुवा कुछ हाल मेरेपास नहीं है। प्र०—उस दिन उसके इजहारों का लिखा जाना कुछकठिन था? उ०—मैंइस मुकद्दमे में और २तहकी-क्कात करता था उससमय मुझको सावकाश नथा। प्र०—मा-लुम होताहै किआपको वह तहक़ीक़ात जरूरीथी? उ०—हां बहुत जरूरीथी। प्र०—उसतहकीकातसेबढ़कर औरकोईबात नथी? उ०—हां बढ़करन थी जोआपचाहें तोमैं अपनारोज नामचा दिखा सक्ताहूं किउसदिन मुझकोक्याकाम था। प्र० मिस्टर सूटर साहब मैं जानताहूं किउसदिन आप को बहुत कामहोगा रोजनामचेके दिखानेकी कुछ आवश्यकता नहींहै क्याआपने केवल इसीकारण इजहारनहींलिखे? उ०—हांइसी कारणनहीं लिखेऔर मैंजानता था कि नरसूजंगीगार्ड में है औरकोई उसके पासनहीं जासक्ता है नकुछसिखासक्ता है। प्र० क्याआपके पुलिसके आदमीनहीं जासक्तेथे? उ०—हांपुलिस केआदमी। प्र०—फिरआपके इसबातके कहनेसे क्या मतलब है किकोई मनुष्यनहीं जासक्ताथा? उ०—मेरा मतलब यहहैकि कोईदूसरा मनुष्यउसकेपास नहींजासक्ताथा। प्र०—जबतुमने तीनदिन केपीछे उसकेइजहार लियेतो उसकाबयानवही था जोउसने पहिलेदिन वर्णनकिया? उ०—हांवहीथा जोउसने २२ दिसम्बरको वर्णन कियाथा और २५ दिसम्बर कोउसको लिखलिया॥

गजानन्दवतिल फिरबुलाया गया॥

मिस्टर अलवरारटोसाहबने फिरउससे प्रश्नकिये उसनेवर्णन कियाकि मैं हेमचन्दफतहचन्दको जानताहूं कि उसने सूटर

साहबके सन्मुख इज़हार दिये और मैंनेगुजराती भाषामेंउसके इज़हार लिखे और हेमचन्दने उसपर दस्तखत करदिये॥

सरजण्ट बेलन टायन साहबके प्रश्न॥

प्र०—क्याइसके पहिले कितुमने सूटरसाहबको बुलायाथा इमकेइज़हारलेलियेथे? उ०—मिस्टरसूटरसाहबके आने केपीछे लियेथेकिन्तु सूटरसाहबने आपहीलियेथे औरमैं उनकेसन्मुख लिखताजाताथा। प्र०—मेराप्रश्न यहहै कितुमने सूटरसाहबके आनेकेपहिले उसके इज़हार लियेथेया सूटर साहबने उसके इज़हार लिये यायहकि केवल सूटर साहबने आकर आपही इज़हारलियेथे और उनके आनेके पहिले तुमने बिल्कुल नहीं लिये? उ०—नहीं मैंनेलिखे और सूटरसाहबने आपही इज़हार लिये। प्र०—कौनतारीख उसमें है? उ०—आठवींतारीख है। प्र०—परन्तु छठो तारीखभी तोलिखा है? उ०—हांछठी तारीख भीहै। प्र०—दोतारीखोंकेहोनेका क्या कारणहै? उ० छठीतारीखकोमिस्टर सूटर साहबने इज़हार लिये और आठवीं तारीख को सरल्यूइस पोलीसाहबके रूबरूदस्तखत उसनेकिये इसमे दोतारीखें हुई॥

ऐडवकेट जनरलने दुबारह इज़हार लिये॥

प्र०—क्यापहिलेगुजरातीभाषामेंइज़हारलियेथे और फिर सूटरसाहबनेअंगरेजीमेंलिखेथे? उ०—नहींसाहब पहिलेसूटर साहबने अंगरेजी में लिखे थे फिर मैंने गुजराती भाषा में उसकातर्जुमा किया और उससे दस्तखत कराये—प्रेसीडण्टने कहामैंयह समझा किपहिले अंगरेजीभाषामें उसकाइज़हार लिखागयाऔर फिर गुजराती भाषा में उसका उल्था किया गया? उ०—हांसाहब अंगरेजीसे गुजरातीभाषामें एकऔर मनुष्यउल्था करताथा औरमैंलिखता जाताथा—एडवकेट जन रलने पूछातुमनेजब गुजराती भाषा में लिखलिया हेमचन्दको सुनायाभीथा? उ०—हेमचन्दने आपही उसको पढ़लिया और जहां२वहअटकामैंनेउसकोबतादिया॥ प्र०—फिरउसनेक्यादस्त-

खतकिये ?उ०–हांसाहब उसने अपनेहाथसे उसपर दस्तखत कियेसाहबप्रेशीडएटनेकहाकिहेमचन्दनेक्याहिन्दुस्तानीभाषा मेंअपनेइजहार दियेथे ? उ०–हांसाहब कुछहिन्दुस्तानी भाषा मेंइजहारदिये और कुछ गुजराती बोलीमें। प्र०–तुमतोकहते थेकिकिसी और मनुष्यने अंगरेजीमेंलिखकर गुजरातीभाषा में उलथाकिया था–एडवकेटजनरलने कहा कि सरल्यूइसपोलीसाहबको बुलाओ औरहम उनसे कुछ प्रश्नपूछेंगे और सरल्यूइसपोली साहब अपनीकुरसी परबैठें औरअपने इजहारदें॥

सरल्यू इसपोलीसाहबके इजहार ॥

सरल्यू इसपोली साहबके इजहार ऐडवकेट जनरलने लिये उन्होनेवर्णन किया कि मैं एजएट गवर्नर जंनरल हिन्द और इस्पीशियल कमिश्नर बड़ौदेकाहूं चौथी दिसम्बर कीसंध्याको बड़ौमेंपहुंचाथा बड़ौदेके पहुंचनेके पीछेपहिलेकाममेरा यह थाकिमैंने मिस्टरस्हटर साहबको उसमुकद्दमे की तहकीक़ात केलिये बुलायाजो करनेल फियर साहबके विष दिये जानेका उद्योग हुवाथा औरयह काररवाई उसहिदायतके अनुसार मैनेकी जोमुजको गवर्नमेएटसे मिलीथी सो मिस्टरस्हटरसाहब मेरेपास नियतहुये और८दिसम्बर कोवह मेरे पासपहुंचेमैंने उनकेरहने केलियेएकं रेजीडन्सीमें कमरादेदियाथा जोकमरा इनदिनों खानेकाहै उन्होंनेअपनी तहकीकात शुरू की मुझे स्मर्णहैकिमैनेउससमय सुनाथा किरावजी हवालदारनेजोकुछ वर्णनकियाहै मैनेइमसुकद्दमे कीसबतहकीकात मिस्टरस्हटर साहबके सुपुर्द करदीथी २३ दिसम्बर के सुबहको मिस्टरस्हटर औररिची साहबमेरेपास आयेथेमेरी इच्छाथीकिबड़े दिनकी छुट्टियोंमें बम्बईकोजाऊं जब मुझेमालूम हुवाकि बहुतबड़ीएक बातप्रगट हुईहैतोमैंबम्बईन गया मिस्टरस्हटर साहब भी२१ दिसम्बरको बम्बईजानेवालेथे मैनेउनसेकहाकि २३तारीखतक आपभी नजाइये उसदिन खानाहोनेवालाहै फिरआप और

हमसाथचलेंगे-मिस्टरसूटरऔररिचीसाहब नेरावजीके बयान का मुझसेज़िक्रकियाथा मैनेकहाकि रावजीको मैंभी देखना चाहता हूं जब मैने उसको देखातोउसने मुझसे वही वर्णन कियाथाजो अबकमीशनके सन्मुखइजहार दियाजोकुछ उसके मनमें आया मुझसे कहाऔर किसी मनुष्यने रावजीसे एति-राज़नहीं किया दूसरे दिन वृहस्पतिवार थी जबमैं सीढ़ीसे उतरता था मैने सूटर साहब से कहाकि आपमेरेसाथ चलि-येमैं शीघ्रही महाराजा साहबसे कहूंगाकि विषदिये जानेमें आपका नामभी आयाहै तबमिस्टर सूटरसाहब ने कहा कि नरसूनेभी सबबातोंको क़बूल कियाहै जब महाराजा साहब मेरेनिकट आये सूटर साहबमेरेसाथ महाराजासाहबके पास गयेमैने महाराजासाहबसे सबबातें वर्णनकीं और कहा कि आपभीहरतरहसे तहक़ीक़ातमें सहायतादीजिये जिससेसब हालस्पष्ट मालूमहोजावे महाराजने सहायता देनेकाइक़रार किया जब महाराजा साहबचले गयेतो मैने नरसूको देखा वहखानेके कमरेमेंबैठाथामैं नियतसमयपर उसकमरेमें गया और जमादारसे मैनेकहा यदि तुमको यह खयालहो किसब हालवर्णन करनेसे तुम्हाराअपराध क्षमाहोजायगासोयहबात कदाचित् न होगीमैं अपनीयथाशक्ति तुमको दण्ड दिलाऊंगा फिरमैने कहाकितुमथोड़ीदेर अलगबैठकर अच्छीतरह सोचो और समझोफिरजो तुम्हारेमनमें आवे वर्णनकरना मैनेसूटर साहबसेभीकहाकि जमादारकोभी समझादोकि उसकाअप-राधक्षमानहोगा थोड़ीदेरतकजमादार चुपबैठारहा फिरएक हीबेर मेरेपैरोंपर पगड़ी डालदी और उसने और भीकुछ बातें खुशामदकी कहींवह मुझको स्मर्णनहीं उसनेकहा किसरकार चाहेमुझको मारें अथवा जीतारक्खें मैंजोकुछ सचहै सरकार केसम्मुखवर्णन करदूंगा सोउसने उससमय बयानकिया परन्तु उसकाबयान लिखानहीं गया जोकुछउसने कमीशनके सम्मुख

बयानकिया वहीमुझसे कहाया और जो इजहार श्रीमान्‌ग-वर्नरजनरलकी सेवामेंभेजेगये उसकामतलब उस इजहारके सदृशथाजो २९ दिसम्बरको मिस्टरसूटर साहबनेलियेथे मेरे कहनेसे पहिलेदिन मिस्टरसूटर साहबने उसके इजहारनहीं लिखेथे मैनेकहाथा कि अभी उसेध्यान करनेदो फिरमैनेउस विषयमेंकोई काररवाई नहींकी २९ दिसम्बरको संध्याकेसमय बाहरजाने केलियेकपड़े पहिनताथा और अपनेकमरेमें टहल रहाथा उससमय मैनेनरसूको देखाकि एकपुलिसके सिपाही केसाथ रेजीडेन्सीके बागकीओर जाताहै थोड़ीदेरके पीछेबड़ा शब्दसुनपड़ा लोगरखियां और सहायता चाहतेथे जिसतरह से होसका मैं शीघ्रही सीढ़ी से नीचे उतरा जब बरामदे में पहुंचातो क्यादेखा कि नरसूदोतीन सिपाहियों समेतभागा हुआआताहै मैने सिपाहियों से पूछाकि क्या हालहै उन्होंने उत्तरदिया कि यहमनुष्य कुवेंमें गिरपड़ा था॥

प्र०—यह कुंवाकुछ गहराहै और आपनेवह कुंवादेखाहै?
उ०—हांमैं उस कुंवेको जानताहूं और कुंवोंसे वहगहिराहै यहकुंवा पक्काबना हुआहै दूसरेदिन रविवारको मैनेनरसूको देखाउसके किसीसंबन्धीने अरजीभेजीथी कवगवर्नर इण्डिया केपाससे मुझको गायकवारके पकड़ जाने की आज्ञा हुईतो गायकवारके महलमें जितनेकमरेथे सबपर मोहर लगवादी थीमैने कप्तान जेक्सन साहब और एकपुलिसके हवालदार कोइस कामपरनियत कियाथा मुझको उसहवालदारकानाम स्मर्णनहींहै गायकवारकी गिरिफ्तारी केउपरान्तजोखास २ गवाहोंकेइजहार लियेगयेउनइजहारों कीतसदीकमेरेसन्मुख हुई कायदायह थाकि जबकिसी मनुष्यके इजहार होतेजाते थेतो पुलिसके लोगइजहार कीसिदाकत के लिये गवाह को मेरेपासलातेथे जो गवाहपढ़ा लिखाहुवा तो अपने इजहार कोआपहीपढ़लेताथा।जो अनपढ़हुवा तो उस को पढ़कर उस इजहार सुना दियेजाते थे वह सुनकर दस्तखत करदेता था।

और मैं उसपरतसदीक लिखदेताथा दामोदरपन्थ कोपकड़े जानेकेपहिलेसे मैंजानताहूं एकबेरपहिलेउसको देखाथाओर शायददोतीनबातेंभी मैंनेउससेकहीथीं उससमयजबकि मैंउस-सेवार्त्ता करताथा गायकवार भीआयेथे मैंउनसे वार्त्ता करने लगा जबगायकवार मुझसे बिदाहोनेलगे तोकहा कि दामो-दरपन्थ मेरेप्राईवेटसिक्रटरी हैं मैंने गायकवारसे यशवन्तराव और सालिमके भेजदेने की दरखास्त कीथी यहदोनों मनुष्य रेजीडन्सीके अहातेमें कैदहैं दूसरेबेर मैंनेउनको बुलायाथाजब पहिलीबेर उनको बुलायातो मैंकुछकाम करताथावह गन्ती से शहर को वापिस आया जबवह भूल मुझ को मालूम हुई तोमैंनेउनको शीघ्रहीफिर बुलाया श्रीमान्महाराजासाहबके वकीलउनकेपास आतेजातेथे कुछमनाहीन थीमैं यशवन्तरावको अपनीजातसेनहींजानताहूं यहकहता हैकि मैं गायकवारका सरीफहूं इस मनुष्यपर कईअपराध लगे हैं गवर्न्नमेण्टहिन्दकी आज्ञानुकूल उसकी तहकीकात मुल्तवीरक्खीहै जब कमीशन का निर्णय मालूम होजावेगा तबदेखाजावेगा ॥

सरजानबेननटायनसाहब के प्रश्न ॥

प्र०—सरल्यूइस पीलो साहबजब गायकवार आजाद थे तो आपनेउनकोबहुधादेखा होगा? उ०—निस्सन्देह मैंनेउनको देखा है श्रीमान्महाराजा मल्हरराव प्रतिदिन वादूसरेदिनमेरेपास आतेथे। प्र०—जबआप बड़ौदे में आयेतो श्रीयुत वादूसरायके लेखसेविदितहोताहैकिआपको श्रीमान्ल्हरराव केप्रबन्धमें स-हायता करनीअति कठिनमालूम हुई? उ०—मुझेहिदायतथी किजहांतक सम्भवहो श्रीमान्मल्हररावके प्रबन्ध में सहायता दूं और यहभी मुझकोआज्ञाथीकि करनैलफियर साहबने जो विष दियेजानेकीतहकीकातकीथी उसकोमैंपूर्णकरूं प्र०—सर ल्यूइसपीलीसाहब जबआपसे और श्रीमल्हरराव से वार्त्ता हुई तो आप को मालूम होता था कि वह आपका मत मानते थे

और अपने आधीनी देशका उत्तम प्रबन्धकरना चाहते थे ?
उ०-महाराज गायकवार तनमन से चाहते थे कि देशका अच्छाप्रबन्धहो और जोकुछमैं हिदायत करूं उसको वहकरें सरजन्ट बेलनटायन साहबने कहा मेरेसाथी ऐडवकेट जनरलने आपसे यशवन्तराव और सालिमके विषयमें कुछ पूछा था इस लियेमैं आपकेकुछ कागजपेश करताहूं और निश्चय है कियह कागज ठीक और दुरुस्त होंगे यदिमें गलतीपर हूं तो उससे मुझको इत्तिला दीजिये सो सरजण्ट बेलन टायन साहब यह कागज पढ़ने लगे॥

चिट्ठी दादाभाई नूरूजी के नामपर॥

माईडियर सर-यदिआप सालिम और यशवन्तरावकोमेरे निकट भिजवा दीजिये तो मैं आप का गुण मानूंगा-मिस्टर सूटरसाहब इस मुकद्दमेमें जिसकी किइन दिनों तहकीकात होरही है उनकी गवाहीलेना चाहते हैं॥

दस्तखत ल्यू इसपीलो साहब मुकाम रेजीडन्सी
लिखाहुआ २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई० का॥

सरजण्ट साहबने कहाकि सरल्यू इसपीली साहब क्याआपने नीचे लिखीहुई चिट्ठी उसी दिन पाई॥

चिट्ठीबनाममर ल्यू इसपीलोसाहब महल
बड़ौदा २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई०॥

माईडियरसर-आपकी आज्ञानुकूल जोइस समय मेरेपास पहुंची मैंनेसालिम और यशवन्तराव को गवाही देने केलिये भेजदिया॥

आधीन दादाभीनूरूजी॥

और एक और चिट्ठी भी आपकेपास दादाभाई नूरूजी की आई है वह यह है॥

सरल्यूइस पीलीसाहबके नामपर॥

माईडियरसर-मैंने सालिम और यशवन्तराव को आपके पास भेजदिया निश्चयहै कि वह पहुंचे होंगेमैंमुन्तजिरहूं कि

आपकेपास से और कोई चिट्ठी आवे जिसकी मैंतामील करूं॥

दस्तखत-दादाभाई नूरूजी।

सरल्यू इस पीलीसाहब ने उत्तर दिया कि दादाभाईने यह चिट्ठी शायद इसलिये लिखी कि सालिम और यशवन्त राव नगरको लौटकरगयेथे॥

सरजाटबेलनटायन साहबने फिर एक चिट्ठी पढ़ी वह यहहै॥

दादाभाई नूरूजीके नामपर॥

माईडियरसर—मेहरबानी करके महाराजासाहबसे कहिये किसालिम और यशवन्तरावके घरकी तलाशीकी जायक्योंकि मालूमहुवा कियहलोग पूर्वकेरेजीडण्ट के विष देनेमें संयुक्त हैं औरजोकि पुलिसकेकमिश्नर तहकीकात करतेहैं इसीसेतलाशी की आवश्यकता है पुलिसकेकमिश्नर यहभी चाहतेहैं किआप अपनी कचहरीकेकिसी अफ्सरके द्वारा उनके घरकीतलाशी करावें इसचिट्ठी कोपुलिसकेकमिश्नरकेदो मनुष्यआपके निकट लेजावेंगे इनलोगों के सामने घरकी तलाशीहोनी चाहिये॥

दस्तखत ल्यू इसपीलीसाहब
लिखाहुवा २३ दिसम्बर सन् १८७४ई० ॥

फिरसरल्यू इस पीली साहबनेऔर दूसरी चिट्ठीभेजी और महाराजा साहबनेफौरन् उसकी तामीलकी॥

दादाभाई नूरूजीके नामपर॥

माईडियरसरसाहब कमिश्नर पुलिसनेमुझकोइत्तिलादीकि यशवन्तराव और सालिमजो गायकवारके नौकरहैं जिनको कि आपनेभिजवा दियाथा वह विलाहाजिरी और इजहार साहबकमिश्नर पुलिसकेपाससे लौटकर शहरकोगये कमिश्नर साहबकहते हैंकिइन लोगों परविषदेने का अपराध साबित है इसलिये पुलिसके कमिश्नरसाहब चाहतेहैं किउनलोगोंको हिरासतमें रहनेकेवास्ते भेजदीजिये मेरीसलाह श्रीमहारा-जा गायकवारको यहहैकि इसमुकद्दमेकी तहक़ीक़ात मेंहर

प्रकारसे सहायता करें जिससे मुकद्दमा साफ होजावे यदि श्रीमहाराजा गायकवार इनलोगोंकोगार्डमें भेजेंगे तोउचित होगा॥

दस्तखत ल्युइस पीली॥

इसके उपरान्त दादाभाई नूरूजीने नीचेलिखी हुईचिट्ठी सरल्यूइसपीली साहबके नामभेजी॥

करनैल सरल्युइस पीली साहबके नामपर

बड़ौदा लिखाहुवा २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई०॥

जिससमय आपकीचिट्ठीपहुंचीतो तुरन्त महाराजा साहब नेयशवन्तरावको बुलवाया और उससेपूछाकि तुमऔरसालिम दूजहार हुयेबिना रेजीडन्सीसे लौटआये यशवन्तरावनेकहा किहमनेएक चिट्ठीपट्टेवालेको दीपट्टेवालेने लौटकरकहाकि साहबनेकहाकि सलामबोलोयह सुनकरसालिमने उत्तरदिया किसाहबनेहमको किसीअवश्यकताकेलिये बुलायाहै साहबसे पूछोकि किसवास्ते हमको बुलाया है उससमय नाना जोपट्टे वालेनेआकर कहाथाकि तुमलोग लौट जाओ पसइसप्रश्नो- त्तरसे मालूमहोताहै किकुछगलतीहुई मैने उनलोगोंसेनहीं कहाकितुम पुलिसकेकमिश्नर साहबके पासजाना मैने केवल आपकेपासभेजाथा जबमैंनेमहाराजको आपकीचिट्ठीकामत- लबसमझायातो उन्होनेकहाकिअफसोसहै जोऐसीगलतीहुई सो महाराजासाहबने आज्ञादी कि तुरन्त वहलोगआपकेपास हाजिरहों औरअबमैं एककारकुनके साथभेजताहूं यहकार- कुन उनको आपके सुपुर्द करेगा श्रीमान्महाराजा साहब सदैव आपकीसहायता करनेकेलिये तय्यारहैं और चाहते हैं कि यह मुकद्दमा अच्छीतरह साफहोजाय॥

दस्तखत—दादाभाई नूरूजी

दादाभाई नूरूजीके नामपर

रेज़ीडन्सी लिखाहुवा २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई०॥

माईडियरसर—मैं अतिगुणमानताहूं किआपनेइतनीजल्दी

सालिम और यशवन्तरावको गवाहीदेनेके लिये भेजदिया मैने पुलिसके कमिश्नरसे आपहीकहदियाहै कि यहलोगहिरासत में रक्खेजांय परन्तु इनलोगों को किसीतरहकीतकलीफन हो और कलउनकीगवाही अवश्यलीजाय जो पहरेवालेने उनलोगों सेसलामबोलने और चलेजानेको कहदियाथातोमेरी इत्तिला बिनाकहाथा मेरीओरसे श्रीमान् गायकवारका शुकरिया अदाकीजिये कि वहमेरा भरोसाकरतेहैं और इसप्रकारसेवह मेरी सहायता करेंगे यदि सम्भवहो तो कलसुबहके आठबजे आपमुझसे मुलाकात कीजिये ॥

दस्तखत ल्युइसपीली ॥

यहचिट्ठियां सुनकर सरल्यूइसपीलीसाहबने उत्तरदियाकि भूलका होना तो साफ प्रकट है उचितथा कि सालिम और यशवन्तराव पुलिसके कमिश्नर साहबके पासजाते—श्रीमान्महाराजा गायकवारने मेरीचिट्ठियोंके जल्दी२ उत्तरदिये प्र० क्याइसबातका निश्चयकरूं किजब गायकवारपर विषदियेजाने का सन्देहहुआ तो वहआपही आये और उन्होंनेअपने तईं सुपुर्द करदिया ? उ०—वास्तवमें उन्होंनेवैसा नहींकिया। प्र० अबआप अपनीतौरसे वर्णनकीजिये कि क्याहुवाथा ? उ०—पहिलीबेर २३ दिसम्बर को मैनेसुना कि गायकवार भी विष दियेजानेके मुकद्दमेमें संयुक्तहैं जबवह २४ दिसम्बरको मेरी मुलाकातके लियेआये तो पुलिसके कमिश्नरसाहबके उपस्थित होनेके वक्त मैने जो सबहाल बीताथा उनसे कहदिया था और दरखास्तकी कि जहांतक होसके आपइस मुकद्दमेकी तहक़ीक़ात में सहायताकरें उन्होंने कहामैं प्रत्येक समय पर सहायताकरनेकेलियेतय्यारहूं। प्र०—जबसे आपनेयहबातउनसे कही और जबतकवह गिरिफ़ार नहींहुये उनको किसीतरह की रोकटोक थी ? उ०—कौन। प्र०—गायवार ? उ०—नहीं। प्र०—आपनेउनकोक्योंकरगिरिफ्तारकिया ? उ०—जबश्रीमान् वैसरायने मुझको हिदायतकी तबमैनेउन्हें गिरिफ्तार किया

प्र०—क्या आपही वहरेजीडन्सीमें आयेथे ? उ०—हां वह आप ही रेजीडन्सीमें आयेथे और मैंने सबहाल उनसे कहदियाथा प्र०—उससमय उन्होंने अपना निर्दोष होनाबयानकियाथा और आपसे कहाथाकि मैंतय्यारहूं मुझको इससमय क़ैदकरली-जिये मैंनेसुनाहै कि किसी काइदेका वर्त्ताव ज़वा था ? उ० हां मैं रेजीडन्सी की हद्दतक गया जब उनकी अमलदारी में पहुंचाता श्रीमान्‌वैसरायका इश्तिहार पढ़कर सुनाया और उनको गिरिफ्तारकिया यहसब बातें प्रतिष्ठापूर्व्वक ज़ईं। प्र० और बातोंमें गायकवारने यहभी कहाथा कि मेरेबैरीबज़त रहैं ? उ०—हांकहाथा और यहभी कहाथाजो पृथिवीमेरे पाओंके नीचेहै वहभी मेरीदुश्मनहै। प्र०—उसवक्तसे गायक-वार हिरासतमेंहैं ? उ०— हां हिरासतमेंहैं परन्तु प्रतिष्ठासहित प्र०—उनका असबाब सरकारनेसबज़ब्त करलिया ? उ०—जो असबाब महलमें था वह आरियतन्‌ क़ुर्क़ ज़वा है। प्र०—सम्पूर्ण असबाब क़ुर्क़ ज़वा है ? उ०—हां और मैंनेसम्पूर्ण असबाब पर इसवास्ते मोहरलगादी कि नष्टनहो और रक्षापूर्व्वकरहैजिस मनुष्यकी ओर सरकार हिदायत करेगी उसको वह सबअस-बाब वापिसदूंगा॥

ऐडवकेटजनरलने कहा अबशहादत खतमहोगई जो कमी-शनके सम्मुख होनेवालीथी बेलनटायन साहबने कहा यदिस रल्यूइसर्पाली साहबकीगवाही कुछपहिलेसे पूर्णहोजाती तो मैं ऐडरेस शुरूकरता परन्तु अब ज्यादादेर होगई इसलिये कलके दिन निवेदन करूंगा॥

साहबप्रेजीडण्टने कहा अच्छा कलपेशकीजियेगा सरजन्ट बेलनटायनसाहबनेकहा यदि आपआज्ञादेंगे तोमैं एकलिखा ज़वाबयान गायकवारका ऐडरेसके आरम्भ होनेकेपहिले पेश करूंगा—सोअदालत बरखास्तज़ई॥

———

सोलहवें दिनका इजलास ॥

ग्यारह बजे कमीशनके मेम्बरएकत्रहुये सम्पूर्ण मेम्बर श्री-युतमल्हरराव और सरल्युइसपीलीसाहब सहित उपस्थित थे ॥

सरजन्डबेलनटायन साहबने कहा माईलार्ड यदि आपकी आज्ञाहो तो मैं सूटरसाहब से कईप्रश्न और पूछूंसो सूटर साहबगवाहीकेलिये बुलायेगये प्र०—आपने क्योंकररावजीको पट्टा लेनेकेलिये भेजाथा? उ०-मैंने रावजी को नहीं भेजा प्र०—परन्तु तुमकोमालूमहै कि तुम्हारेआनेके पहिलेपट्टाआ-गयाथा? उ०—हांआगया था॥

साहबग्रेजोडगडने सरजन्डबेलनटायन साहबसे कहाकि मैं आपकेप्रश्नका मतलबनहीं समझा? उ०—मेरे प्रश्नका मतलब यहहै कि सूटर साहबने किसीको पट्टालेने के लियेभेजा था सूटरसाहब ने उत्तरदिया कि मैंने एक मनुष्य को भेजा था प्र०—तुमने आपही अपने हाथसे उस पट्टे को देखा? उ०— हां मैंनेआपही अपने हाथ से देखा॥

सरजन्डबेलन टायन साहबने कहाकि श्री मान् महाराजा मल्हरराव चाहतेहैं किएकलिखाहुआ बयान हमारा कमीशनके सम्मुखपढ़ा जावेमुझे निश्चयहै कि आपसब साहब मरहटीभाषा जानतेहोंगेयदिमेरा विचार ठीकहै तो मुतरज्जिम मरहटी भाषा में उस बयान को पढ़े सररिचर्ड मीडसाहब ने कहाकिश्रीमान् महाराजा जयपुरमरहटी भाषाको नहींसम-झते हैं उल्थाकरने की आवश्यकता होगी॥

सरजन्डबेलन टायन साहबने कहाइससूरत में हिंदुस्तानी भाषामें उल्था होजावेगा॥

साहबग्रेजोडगड ने पूछा कि यह बयान किस भाषा में है सरजन्डबेलन टायन साहबने कहा कि मरहटी भाषा में है॥

साहबग्रेजोडगड के कहापरंतु आप कहते हैं कि आपके पास इसलिखेहुये बयानका अंगरेजी में उलथा भीहै सरजन्ड

बेलनटायन साहबने कहा-हां अंगरेजीमेंभी उल्था है उचित है कि यह बयान अंगरेजी में पढ़ा जाय और उसका उल्था हिंदुस्तानीभाषामेंहोता जाय साहबप्रेजीडगडने कहाउत्तम है कि प्रथम अंगरेजी भाषामें पढ़ाजाय और श्रीमान्‌महाराजा जयपुरकहते हैं कि अंगरेजीभाषामें पढ़ाजाना काफीहैफिर उसकाहिन्दुस्तानीभाषामें उल्थाहोताजावेगामिस्टर ब्राम्सन साहबने कहाअगरहुजूरइजाजत देंतोइसलिखे हुयेबयानको मैंपढूंसोइजाजतहोनेके उपरान्त पूर्व्वोक्तसाहबने पढ़ना शुरू किया मेरेप्रतिष्ठितमित्रश्रीमान्‌ गवर्न्नरजनरलने अपनाइरादा जाहिरकियाहैकिमुझको हरतरहसेमौकामिलेकिमैं उसबहु-तबड़े कलंककोखगडन करूं जो मुझपर लगायागयाहै अर्थात्‌ करनैल फियरसाहब जो मेरेयहां रेजीडेगड थे उनके विषदेने का उद्योगकिया गया अबमैं बपास खातिर वैसराय के उस इच्छासे कि मैं अपनेतईं सम्पूर्ण सृष्टि के रूबरू इस अपराध से साफ करूं नीचेलिखा हुआबयान करताहूं॥

मुझकोकभीकरनैल फियरसाहबसे वैरनथा नअबहैऔरयह बातभीसही है किमैं और मेरेवजीरभलेप्रकारजानते थे कि करनैल फियर साहब ने ओहदे रेजीडंसी पर ऐसी कारर-वाईशुरूकीथीकि रियासतका उत्तमप्रबन्ध होना असम्भवित था मैं श्रीमान्‌वैसराय के खरीते २५ जुलाई सन्‌ १८७४ ई० के लिखे के अनुकूलसबअपना कार्य्य करताथा और यहखरी-ता सन्‌ १८७३ई०की कमीशनकी रिपोर्ट के अनुकूल मेरे पास आयाथा मैंने दादाभाई नूरूजीऔर बाला मुगेशवाकल और हुरजजी और अरदासियरदोबा और काजीशमशुद्दीनआदि अपनेवजीरों की सलाहसे २—नवम्बर सन्‌ १८७४ ई०को कर-नैलफियर साहब के द्वारा श्रीमान्‌गवर्न्नर जनरल को खरीता भेजाहरचन्दकरनैल फियरसाहब नेउज्रकियेपरन्तु मैंअच्छी तरहजानता थाकि जब हुजूरगवर्न्नरजनरलके सन्मुखठीक ठीक

हालपेशकिया जायगा तो मेरी दरखास्त पर बखूबी लिहाज होगासोयही विचारमेरा श्रौरमेरे सम्पूर्णवजीरों का था इस विचारको जियादह तरमजबूती इसकारण होगईथी कि एक बेरगवर्नमेण्टबम्बईने करनैल साहब परबहुतबड़ी चश्मनुमाई कीथीहमाराखयाल गलतनथा क्योंकि२५नवम्बर सन्१८७४ई० को उनकीबदली काहुक्मआगया॥

इसहालतमें मुझकोनतो कोईतरफदारीथा श्रौरनकोई पोलो टीकलवजह थी जिसके सबब से इसअपराधका उद्योगकरता जिसकादोष मुझपर लगायागया है मैं सौगन्द खाकर बर्णन करता हूं किनमैंने अपनेआप श्रौर नकिसी श्रौर कारिन्दे के द्वाराकरनैल फियरसाहब के देनेके लिये विष मंगाया ताकि उनकीजान लीजायश्रौर न मैंनेअपनेआप श्रौरनकिसीकारि-न्दे से यहकहा कि ऐसाइरादा कियाजाय श्रौर मैं कहता हूं कि अमीनाश्रौर नरसू श्रौररावजी श्रौर दामोदर त्रिम्बक की गवाहीइस मुकद्दमे में गलत है॥

श्रौरमैं यहभीवर्णन करताहूं किमैंनेस्वत: किसी रेजीडन्सी के नौकर कोनहींबहकाया कि वहजासूसकी तौरपर मुझको खबरें दें श्रौरनमैंने किसीमनुष्य को इस कार्य्य के लिये रुपया दियायह बात में नहींकह सक्ताकि रेजीडन्सीके नौकरों को कभी इनश्राम नहीं दियागया क्योंकि जबकभी कोई विवाह कार्य्यअथवाखुशी वा तेहवार हुवा तो उससमय पारितोषक दियागया अगरकभी किसी खफीफ अमरकी इत्तिलाहुईतो उसकाजिम्मेदार नहींहूं यहबात लोगोंकी बनाईहुईहै मैंने स्वत:किसी नैाकरसे ऐसीखबरोंके लानेको नहींकहा नमैंनेऐसा उपायकियाकि रजीडन्सीसे खफीफ खबरेंमंगाईजावें॥
मैं अपनेतईं अभयहोकर कमीशनके रूबरू पेशकरताहूं आशा है कि जोमेरे प्रतिष्ठित मित्र श्रीमान् वैसरायने मेम्बर नियत कियेहैं वहहरसूरतसे मेरे मुकद्दमेका न्यायकरेंगे श्रौर जो कुछमुझसे प्रश्नकिया जावेगा मैं उसके उत्तरदेने में मैाजूद

हूं—और मैं फिर सौगन्दखाकर इन्काकर करताहूंकि मेरेशत्रु जोबहुतबड़ा अपराधमुझपरलगानाचाहतेहैं वह सबग़लत है॥

सरजण्टबेलनटायनसाहबकी स्पीच॥

खण्डन

सरजण्टबेलनटायन साहब कमीशन के मेम्बरों के रूबरू इस्पीचकहने के लिये श्रीमान् महाराजा मल्हररावकी ओर से इसभांति वर्णन करने लगे—कि श्रीयुतलार्ड और महाराजगान् और कमीशनकेमेम्बरोंपर प्रकटहो कि मैंनिश्चयमान कर खयालकरताहूं कि श्रीमान्महाराजा गायकवारपरबड़ी अनीतिसे बिना किसी मूलके मुकद्दमा खड़ा किया गया है अब श्रीमान् मल्हररावको ऐसी अवसर मिलीहैकि वहऐसी अदालतसे अपने इन्साफकेदादखाहहों—अबयह बात ज़ाहर हुई कि किस क़दर बेबुनियाद यह तोहमत है—और यह बातप्रकटहुईकि किस छोटेमूलपर उनसे उनकी आज़ादगी छीनलीगई और वह अपनी प्रजाकीदृष्टिमें न्यूनहोगये और उसमनुष्यके सदृशजोसंगीन जुर्ममें क़ैदहोताहै उन्होंने तकलीफें उठाईं औरअबयहभी मालूमहुआकि किस२गवाहीसेयह अपराधउनपरक़ायमहै और वहशहादत किसतरहहासिल कीगई—मालूमहुआ कि वहलोगजोइसमुकद्दमेकेपैरोकारहैं ऐसेदिलसेमुद्दईबनगये जिसकावर्णननहींहोसक्ता और मैंकहताहूंकि पुलिसनेनिर्भयहोकर बहुतसीकारवाइयां कीं॥

अबहमको मालूमहुआकि इसमुकद्दमेका क्यामूलहै और किसतरहकी शहादत है और कैसे २ गवाह इसमुकद्दमे में गवाहीदेनेको आयेहैं—मैं निर्भयहोकर और स्पष्टरीतिसे वर्णन करताहूंकि कोई दूरअन्देश आदमी मेरे वर्णनाकोखण्डन न करेगा किमुखतलिफ बयान कदाचित् विश्वासके योग्यनहींहैं और वह बातें जो असम्भवित हैं और वह सुआमिले जो खयालसे बाहरहैं सबकामजमूआकियागया और एक ऐसा जुर्मक़ायम कियागया जो ज़माने हालमें सुना नहीं गया न

ऐसाकोई मुकद्दमा किसीअदालतमेंपेशहुआ और यहबात मैं बेतामुलज़ाहिर करताहूं कि जोगवाह जुर्मकेसुबूतकेलिये पेशकियेगये उनकोकुछभी अपनेबचन और प्रतिष्ठाका विचार नहीं श्रीमान्महाराजा गायकवार की ओरसे जोमैं इसीच कहरहा हूं वह सबलोगों के दिलोंपर नक्शकरनाचाहताहूं किसही मुआमला क्या है मुझको एक २ गवाह की गवाही दूसरेके बयानसे मुख़ालिफ़मालूम होतीहै और हरएक आदमीकी गवाही बेईमानी के साथ पाईजाती है और हरएक आदमीकी गवाहीसे झूठज़ाहिर होताहै जिनलोगोंने गवाहों के बयानको सुनाहै वहकहसक्ते हैं कि गवाहोंने बिल्कुलझूठी सौगन्दखाई कोईप्रतिष्ठित गवाहोंकी गवाहीपर निश्चय नहीं करसक्ता—माईलर्ड मैं वर्णनकरचुका हूं कि कुलशहादतजो कमीशन में लीगई ऐसी मुख़ालिफ़ है कि कभी सुनीनहीं गई हालके ज़मानेमें ऐसाकोई मुकद्दमा मेरीनज़रसे नहींगुज़रा मुझको यहांकी अदालतोंसे वाक़फ़ियत नहीं है शायद यहां की अदालतोंमें ऐसीबदज़ातीके मुकद्दमेदायरहोतेहों परन्तु और मुल्कोंकी अदालतमें ऐसेमुकद्दमेका दायरहोनेका हाल नहीं सुनागया मैं इसबातसे अफ़सोसकरताहूं कि उसबेचारे राजाकी आबरूगोनिहायत बदनामीकेसाथलीनलीगई और इसकेविशेष उनकीबहुतबड़ी रुसवाईहुई औ इसअप्रतिष्ठाका उनकोबहुतबड़ा ख़यालहै—जबमैंशहादतपरनज़रडालताहूंतो झूठ और बनावटका ढेरमालूम होताहैजबमेरे रूबरूगवाहों केइज़हारहुयेथे तोमुझको अति आश्चर्य होता थाकि यहलोग किस २ तरहझूठ घड़तेहैं और चाहतेहैं कि एकझूठसे दूसरे झूठकी सिदाक़तहो और ऐसेझूठके बोलनेवाले समझतेथे कि सुननेवाले बेवकूफहैं जो कुछ हम कहेंगे वह निश्चय करलेंगे क्योंकि वहजानतेथे कि यहझूठ उसके विषयमें बोलतेहैं जिससेसरकार नाराज़है कायदायहहै कि जबकोई शख़्समशकूक होजाताहै और उसकीनिस्बत यह विचारा जाताहै कि वह

अपनी जगह पर फिर क़ायम नहीं होगा तो यह नापाक कुत्ते भौंकते और घुर्रातेहैं और जहां तक होसक्ताहै बुराई करतेहैं—एकजमानेमें यूरूपकी यहरीतिथी कि कभीकिसी मुक़द्दमेकी तहक़ीक़ात नहीं करतेथे और उसीजमानेमें एक प्रतिष्ठित मनुष्यको दोदुष्टमनुष्योंकी गवाहीपर फांसीदेदीगई एकका नामओटस और दूसरेकाडंगस फोल्डथा यद्यपियहां केलोग पुनर्जन्ममरणपर निश्चयकरते हैं इसलिये मेरेविचार सेरावजी और नरसूआदिकने जो गवाहीदीहै उनकेशरीरमें उन्हींगवाहैं। तात्पर्य डंगस फोल्ड और ओटसके जीवप्रवेश करगयेहैं इनलोगोंने बिल्कुल झूठी गवाही इस बेदारमग़ज़ कमीशनके रूबरूदी॥

माईलार्ड-आपको निश्चय करना चाहिये कि मैंइसमुक़द्दमेको बहुतबड़ा मुक़द्दमा समझताहूं और उसकेखण्डनका अपनेतईं ऐसाजिम्मेदार समझताहूं कि मेरी तक़रीरमें फ़र्क आगयाशायद मेरे समान और लोगोंको यह खयाल न हो जितनी तक़रीर इस मुक़द्दमेमें होना चाहिये मेरी जिह्वामें उसके करने की शक्ति नहीहै॥

मैंनिहायत अफ़सोसके साथइस बेचारे रईसकी हमदर्दी करताहूं और अधिकतर इसबातके खयालकरनेसे कि उसकी रिहाईमेरी तक़रीरपर मौक़ूफहै मुझकोनिश्चयहै कि इसमुक़द्दमेका निर्णय मेरी इच्छाके अनुकूलहोगा क्योंकि ऐसेही फैसलेमेंइन्साफ और सच्चाईरहैमैंने जोयहकाम अपनेतअल्लुक किया है वह निहायत बड़ाहै और जिस समय से अदालतमें एडरेस कह रहाहूं मेरा दिली और खास मन्शा यहहै कि सच्चाईज़ाहिरहो जब मुझको मददकी जरूरतहुई तो मेहरबानीसे मुझको मदद दीगई और इस कमीशनमें हरतरहका मौका दियागया पसउन मौक़ोंके मिलनेसे बखूबी अदालतमें एडरेसपेशकरूंगा औरजोबातमेरे मनमेंहै हरमनुष्यके मनपर नक्शकरदूंगा और हरएक तक़रीर को दलीलके साथबयान

कहूंगा यहांतक कि हरशख्सकी रायमेरी रायसे इत्तिफा करे और जैसामैं चाहताहूं वैसाही फैसलाहो—माईलार्ड आपने बहुत कमसुनाहोगा कि किसी वकीलने ऐसेइतमीनानके साथ बयानकियाहो अदालतइसबातका खयालन करेंकियहतकरीर मेरी अदालतकी अप्रतिष्ठा मेंहै यदि अदालतका फैसलामेरी रायकेप्रतिकूलहुआ तोमैं समझूंगाकि पहिलेसे मुझको कच्चा खयालथा परन्तु मुझको दृढ़निश्चयहै कि आपसब साहबमेरी बातोंको बखूबी समाधानकरेंगे॥

माईलार्ड—जिस इश्तिहारको श्रीमान् वाईसरायने जारी कियाहै उसमेंइस तहक्कीक़ातकी एकहद्द करदीहै उसमेंबात खासलिखीहै कि कोईतहक्कीक़ात जबरदस्ती कीनहो केवलदो बातोंकी तहक्कीक़ातकी जावे कि गायकवारने रेज़ीडन्सी के नौकरोंसे साजिशकी या नहीं—दूसरेयहकी कि जो अपराध गायकवारके मढ़ेहै वह ठीकहै या गलत पस इनदो बातोंके विशेष किसीदूसरे अमर्की तहक्कीक़ात नहोगी मैनेइन दोनों बातोंपर कमीशनके मेम्बरोंको इसवास्ते ध्यान कराया कि मैं जानताहूं कि गायकवार झूठ और दुष्टताके बादलमें छिपा हुआहै मैंयहांइसे इसलिये नहीं आयाहूं कि गायकवारकी पिछलीकारवाइयों परउज्र करूं न इसलिये आयाहूं कि जो हरकतें व्यतीतसमयमें गायकवारनेकीं उनकोखण्डन करूं उन बातोंको यहांके निवासी अच्छी तरह जानतेहोंगे परन्तु इस बातका मैंविश्वास करताहूं कि कई बातें गायकवारकी आय मेंऐसी हुईंजिससे उनको और लोगोंपर भरोसा करनापड़ा और आपहीकारवाई करनेका उनकाकम मौकामिला और न उनबातोंका वहप्रबन्ध करसके जिनका उनको चाहियेथा मैंकहता हूं कि यहबात केवल हिन्दुस्तानमेंही नहींहै किन्तु सम्पूर्णदेशोंमेंहै कि बहुधा रईसोंके पास खुशामदी और दुष्ट नौकरहोतेहैं और वहनौकर रईसको लूटना और धोकादेना चाहते हैं और जबउनको सावकाश मिलताहै अपने इरादेसे

नहींहटते और रईस ऐसेहीलोगोंपर अधिक निश्चय करतेहैं
पसविनासोच समझके ऐसाविचारना चाहियेकिआगेकेरईस
नौकरोंने कोईहरकतकीतो मानोआपहीरईसने उसकोकिया
मैंइसविषयमें कुछऔर बातेंज करूंगा क्योंकि मुझको और
विषयोंमें तकरीर करना बाकीहै परन्तुजो वार्त्ता कि मैंकर
चुकाउससे इसबातके जाहिर करनेकी इच्छाथीकि गायक-
वारके नौकर किसतरहकेहैं उनलोगोंको निजके व्यवहार में
बड़ा अधिकार थाअबमें इस बात की प्रार्थना करता हूंकि
नीतिसे जोयूरपके साहबोंकी मशहूरहैं मेरीतकरीरको सुनें
मैं पोलीटीकल मुआमिलों परवार्त्ता नहींकरना चाहता क्यों
कियोमान् वैसरायने जोकुछ कारवाई कीहै उसमें पोली-
टीकल मुआमलोंका कुछ जिक्रनहीं औरपूर्व्वोक्तसाहब सबपर
जाहिर करनाचाहते हैंकिहिन्दुस्तानकीअमलदारीका प्रबन्ध
प्रतिष्ठा पूर्व्वक होसकाहै यद्यपिसरकार ब्रिटिशको और किसी
रईससेवैरहोऔर ऐसेअमरकाफैसलाइसप्रकारसेहोकिसम्पूर्ण
प्रतिष्ठितमनुष्यउससेप्रसन्नहोंवैसरायनेइसइजलासमेंऐसेमनु-
ष्योंकोनियतकियाहैकिजोबड़ेनीतिमानहैं अर्थात्हिन्दुस्ता-
नीरईसोंको जो अपनेभाइयोंकी प्रकृतिकोभलीभांति जानतेहैं
झूठीगवाही देनेकेविषयमें मेम्बरोंका खयालरुजूकरूंगाऔर
उनलोगों के रूबरू साबित करूंगा कि जितनी गवाहियां
गुजरीहै वहगलतहैं औरनिश्चय माननेके योग्य नहींहिन्दुस्ता-
नी रईसोंके रूबरू यहबात पेशकरूंगा किउनको आजऐसे
अधिकार दियेहैं और उनपर सच्चाई औरइन्साफकेकरनेका
भरोसाकिया गयाहैजोकुछ वहइन्साफ करेंगे उससे सम्पूर्ण
हिन्दुस्तानमेंधूमहोजावेगीऔरअपनेस्वदेशियोंसेयहकहताहूं
किमुझको आपलोगोंसे हरप्रकार कीसहायता और न्यायकी
आशाहै यदिप्रेसीडेण्ट साहब इंगलिस्तान के निवासी हैं इस
तरहसे मुझे बहुतहीखुशीहैऔरजब इंगलिस्तानके रहनेवाले

हैं तो हरतरह से उनको आजादगी हासिल है मुझको आशा है कि श्रीमान् प्रेसीडण्ट सच्चाई से कदाचित् मुंह न मोड़ेंगे और सिवाय नीति के और कुछ अपने अफसर की तरफ से उनको ख्याल न होगा। मैं इस बात पर प्रसन्न हूं कि यरूप के प्रधान अतिनीतिमान होते हैं और न्याय के मार्ग के विशेष दूसरी ओर नहीं झुकते हैं ऐसे मेम्बरों के साक्षी होने से मैं अपने को बड़ा भाग्यवान समझता हूं यद्यपि मेरी जिह्वा में इतनी सामर्थ्य नहीं है कि कमीशन के साहिबों के सन्मुख तकरीर करूं परन्तु उनके न्याय से मुझे भले प्रकार निश्चय है कि मेरे मन का मनोर्थ सिद्ध होजावेगा॥

माई लार्ड-हुजूर को स्मर्ण होगा कि पहिले इस बात की गवाही गुजरी थी कि गवाह सिखाये गये परन्तु इस समय इस विषय में वर्णन न करूंगा क्योंकि जो अपराध गायकवार को लगया गया उसमें तकरीर करने की इच्छा नहीं है॥

गायकवार पर जो विष देने का अपराध लगया गया निस्संदेह उसकी गुफ्तगू करनी जरूर है-मैंने पुलिस की ओर ध्यान किया था मैं देखता हूं कि पुलिसवालों के लिये कोई क़ानून नहीं है और जो इजहार पुलिस में होते हैं उसके लिये भी कोई क़ायदा नहीं है—आम क़ायदा यह है कि जो इजहार पुलिस के रूबरू हों जब तक उनकी सिदाक़त दूसरा मनुष्य न करे वह गवाही में नहीं समझे जाते इसलिये अगर कोई मनुष्य पुलिस के सन्मुख किसी बात का इकरार करे तो वह विश्वास के योग्य नहीं है जब तक कि दूसरा मनुष्य उसकी तसदीक़ न करे इस बात का कानून के बनाने वालों को बड़ा भय है कि गवाहों को पुलिसवालों से बहुत बड़ी इबरत हो जाती है—हिन्दुस्तान के पुलिसवालों को हर प्रकार का अधिकार दियागया है जो वह चाहते हैं करते हैं सो एक क़ानून इस बात का जारी होना चाहिये जिसमें पुलिस के अधिकारों की हद करदी जावे मैं नहीं देखता कि कोई जज अथवा मजिस्ट्रेट पुलिस के अखतियारों को रोकसके छोटे से छोटा पुलिस का सिपाही जो चाहता है सो करता है इस मुकद्दमे में

नहीं कहसक्ता हूं कि कितने लोग हिरासत में रहे जिसकी निस्वत पुलिसवाले कहते हैं कि मुकद्दमें की तहकीकात के लिये वह लोग हिरासत में रक्खे गये सो जबउनको ऐसे बे प्रमाण अधिकार प्राप्त हैं तो खाहमखाह लोगों के दिलोंमें किसकदर इबरत होगी जाहर है कि कोई मनुष्य अपने घर और शरीरको अपना नहीं कहसक्ता जब पुलिसवालाचाहे गिरिफ्तार करले और जबतक चाहे उसको हिरासत में रक्खे प्रकटमें उसका कोई उपायनहीं है कोई मजिस्ट्रेट इसमेंदखलनहीं करसक्ता है मजिस्ट्रेटकोयह अधिकार नहीं दियागया कि ऐसीबातों में मुदाखलत करे उसमनुष्यको कुछहरजादेजो हिरासतमें रहा हो॥

मेरे विचार से शायद यहीहिन्दुस्तान का क़ानून है इसमें संदेह नहीं कि बड़ौदे में ऐसीही कारखाई होती है हमने बहुधादेखा है कि पुलिसको जिनलोगों कीशहादत दिलानी मंजूरथीउनकेसाथ ऐसाहीकिया विशेषकरइस मुकद्दमेमेंउनकी कारखाई प्रकटहैमुझकोपुलिसकी कारखाईपर बहुतसी बातें करनीपड़ेगी परन्तुएकबातकमीशन के मेम्बरोंके जेहननशीनकरना चाहताहूं वहयह है जिससे बहुत बड़े अन्याय का संदेहहै किएकअफसरपुलिसमुकद्दमे के क़ायमकरनेका अधिकारीहै औरअपराधीको दण्डहोनेके वास्तेवह हरप्रकार के उपायकरता है और भी ऐसे अफसर पुलिस को इजहार लेनेके अधिकार हैं औरवह इजहारगवाही के लायकसमझे जाते हैं मनुष्यकी यहभी प्रकृतिहै कि जिसकिसी बातमें कोशिश करताहै अथवाकिसी वस्तुके पीछे दौड़कर उसको पकड़ता है यदि वहवस्तुउसके हाथ नहींआतीहै तो धोखेसे पकड़नाचाहता है पुलिसके कानस्टेबल यहीआदमीहैं जबउनमें इन्सानियत है वहभी ऐसीही कोशिशें करते होंगे यह बात दुरुस्तनहीं है कि एककागज जूडिशियलके महकमे का ऐसे लोगोंकोसौंपाजावै जिसकेमिजाजमें वहबातेंहैं जिसकाऊपर मैं वर्णन करचुका हूं जिस मनुष्यके मिजाजमें तरफदारोहो

उसको ऐसेमुआमिलेनसोंपे जावें बहुतसे इज़हार जो मैंने देखे उनसे यहबातप्रकट है कि ज़बरदस्ती से इज़हार लिखेगये और जोमुख्यबयानथा वहइज़हारोंमें नहींहै हरचन्द सैकड़ों झूठबोलेगये परन्तु झूठका झूठहीरहा इनबातोंकी सिद्धान्त में अच्छीतरह कर सक्ताहूं और मेरे वर्णनसे आपलोगों को अच्छीतरह विदितहोजावेगा कि मेराबयान ठीक है हरएक इज़हारमें पुलिसकीकाररवाई मालूम होतीहै—माईलार्ड अब एकदूसरामुआमिला पेशकरताहूं साहबप्रेज़ीडण्टका ध्यान उनबातोंपरदिलाताहूं वहबातेंकानूनऔर नीतिके सम्बन्धित हैं बहुधालोगपरस्पर अपनेघरोंमेंवार्त्ता कियाकरतेहैं किकुछ संदेहनहीं कि अमुकमनुष्य वास्तवमें अपराधीहै पसऐसेही विचार अंगरेजसाहिबोंके तबीयतोंमेंहैं जोआजकल बड़ौदे में स्थितहैं अबउनसे यहबातपूछने के योग्यहैकि वह किसवजह से जानतेहैं किवहवास्तवमें अपराधी हैजब उनसे पूछाजायगा तो उनको मालूमहोजायगाकि हमारा विचार गलतथा॥

मैंने बहुधा देखाहै कि लोगइसप्रकारके विचारवर्णनकरते हैं यद्यपि उनको असल हालसे कुछ वाकफियत नहीं बहुधा मैंनेयहभी देखाहै कि कल्पित बातोंको सहीबातें समझते हैं और उनकल्पितबातोंको तहकीकनहींकरते अदालतकेसन्मुख कईबेर ऐसीबातें पेशहुईहैं जो निपट कल्पित हैं और उनके लियेपूछा नहींजाता कि उनकामूल क्या है इसबातके कहने से मेरामतलब उसबयानसेहै जोलोग कहतेहैं कि हमअमुकअमुकजुर्ममें अमुक मनुष्यके साथ संयुक्तथे मैंजानताहूंकि जब लोग इसतरहकाबयानकरें तो अच्छीतरहतहक़ीक़ातकीजाय और खासइस मुकद्दमेंलोगोंकी कल्पितगवाही मंजूरनहो अब तककिबखूबीसमझ नलीजाय मैं जानताहूंकिसम्पूर्ण अंगरेजी अदालतोंमें किन्तु उनअदालतोंमेंभी जहांअंगरेजी सरकार के कानून के अनुसार काररवाई होतीहै कायदा है कि जो मनुष्यअपने तईं अपराधोंका शरीक जाहिरकरताहै उसको

शहादतकी समाप्त नहीं होती जबतक कि उसके बयान की अच्छीतरह तसदीक न होजावे यहबात अति आवश्यक और गौरकरने के लायकहै ॥

इसविषयमें फिरभी गुफ्तगू करूंगा कोई क़ानून ऐसा नहीं है यदि कोई मनुष्य अपनेतईं अपराधीका शरीक ठहरावे और वर्णनकरे तो उसके बयानपर जिसकेलिये अपराधी होनेका संदेहहै वहदण्डसे छूटनहीं सक्ता। किन्तु उसकोभी दण्ड होगा

साहब चीफजस्टिस इसबातपर अच्छीतरह ध्यानकरेंगेक्यों कि यह बहुत बड़ी बातहै आशाहै कि मेरी इसरायसे सम्पूर्ण क़ानून जाननेवालोंकोरायमुत्तफिक होगी उचितनहीं है किजो मनुष्य दूसरेको निस्बत गवाही देता हो उसकी गवाही अ-पराधीके सम्मुखलीजाय जैसेकिएक प्रतिष्ठित गवाहकामिलना जिसनेदेखाहो कि रावजीने करनैलफियर साहबके गिलासमें विषडाला बहुतकठिन है यदिऐसा कोईगवाह मिलतातोउस से रावजीकी नि बत जुर्मसाबितहोता न गायकवारके निस्बत मेरेविचारसे दामोदरपन्थका इजहार कुछ सहीनहीं है और शायदसहीहो।कि उसनेनूरूद्दीनसे संखियामंगवाई औरनूरुद्दीन सेउसकोसिदाकतकीजातीअथवा उनलोगोंसेतसदीककीजाती जिससेकि हीरेमोल लियेगयेतो इनबातोंसे दामोदरपन्थके निस्बतजुर्मसाबित होतान गायकवारपरआप शहादतमेंप्रथम सेअन्ततक देखेंगे नकोई गायकवारकी लिखीहुई चिट्ठीहै न किसीतरहसे साबितहोताहैकिगायकवार विषदेने में संयुक्त थेऔरकिसी प्रतिष्ठित गवाहने साफ२ नहींकहा कि इसविष दिये जानेमें गायकवार कोकुछसम्बन्धथा इसविषय में मुझको बहुतबड़ी तकरीर करनी पड़ेगी मैं कमीशन के रूबरू साबित करदूंगा कि गवाहोंकी गवाही निश्चय मानने केयोग्य नहीं है मैं कमीशन के रूबरू ऐसी तकरीरन पेशकरूंगा जिसको कमीशनकेमेम्बरसुनेंगा उसकोतकरीरमन्तक़ी तात्पर्य्य बाचा-लता कहें मैंवही तकरीर पेश करूंगा जो क़ानूनी हो और

सुननेके योग्य है लोगोंकोमैंनेबहुधाकहतेहुये सुनाहै किबैरिष्टर और कानून केजानने वाले केवल जबानीतकरीर करतेहैंऔर प्रायः लोग कहतेहैं कि ऐसी गुफ़्गू करनी चाहिये जो सबके समझमें आवेनऐसीबातकरनी चाहिये जिसको कोईनसमझसके मेराखास यहअभिप्रायहै किमेरी बातको हरकोई समझे किन्तु इस मुकद्दमेके लियेतो मुख्ययही आशाहै कि बिल्कुल क़ानूनी कारखाईनहोऔर इसतरहसे कारखाई कीजायकि जिस प्रयोजनसे कमीशन एकत्रहुई वह मतलब प्राप्त होइसविषय में गुफ़्गूको जियादह नहीं बढाना चाहता जिस हालतमेंकि आजकलगायकवारहैं उसकोमैंपहिले बयानकर चुकाहूं जिनलोगों कीतरहसेउनकी यहदशाहै वहइसहालत केजिम्मेदारसमझे जावेंगेनिश्चयहै किऐसेलोगों कीकारखाई सेकमीशनमें कुछफर्क न होगा परन्तु उनकोकारखाईपर मैं केवलइतनी गुफ़्तगू करूंगाजिससे तजवीज कमीशनको सहायतामिले—कमीशनके मेम्बरोंका इसबात परध्यान दिलाताहूं किजबसे सरकारने गायकवारकोमीयदादकुर्क्की करलीहै और जिसकेलिये सरल्यू इसपोलीसाहबरेजीडण्टने कहाथाकिथोड़ी देरकेपीछेछोड़दी जावेगी परन्तुअबतक छोड़ीनहींगई और गायकवार बहुत तंगदस्तहैं औरयहांतक किवह मुकद्दमेका खर्चभी जैसा कि चाहिये नहींकर सके इससमय वह बड़े कष्टमेंहैं इतनाही इशारह कमीशन के गौरकरनेके लियेकाफीहोगा परन्तुमैं निहायत नम्रतापूर्व्वक कमीशनके रूबरूयह कहताहूं कि कमीशन इसबातकाबखूबीलिहाजकरै क्योंकि गायकवार झूठीसौगन्दखाने वालोंके मण्डलमेंहैं और कमीशनके मेम्बरोंकोविचारना चाहिये किजबसे करनैल फीयर साहबको कमीशन बैठीथीउससमय मेरेमवक्किलने कैसीकारखाईकी उसकमीशनमें जोकुछ कारखाई हुईथी मेरेऔर कमीशनके विचारमें उसकापूछना उचितनहींहै क्योंकिवह तहक़ीक़ात ऐसे मनुष्यकी है (अर्थात् करनैलफीयर साहब)

जो बड़े लायक अफ़सर हैं और उनका फैसला अतिप्रशस्त है पूर्व्वो-
क्त साहबने श्रीमान् वैसरायको जो कुछ सहायतादी वह बहुत
उमदा तौरसे दी होगी परन्तु उस कमीशनके बरखास्त होनेके
पीछे जो गायकवारने कारखाई की उसपर विचार करना चा-
हिये जबसे कमीशन खतम हुई उस समयसे देखा चाहिये कि गा-
यकवार का चाल चलन कैसा रहा उन्होंने अपनी प्रजाके लाभ
के लिये क्या क्या प्रबन्ध किया॥

जब पहिले कमीशन बैठी थी शायद वह भी गायकवारके नौ-
करोंकी वजहसे कारखाई की थी कोई मुख्य सम्बन्ध गायकवार
का उससे न था उस कमीशन में जो कुछ फैसला हुआ अच्छा हुवा
परन्तु मैं आपलोगोंसे पूछता हूं कि जिस मनुष्यने ऐसा बड़ा जुर्म्म
किया हो जिसको तोहमत गायकवार पर है वह ऐसी कारखई
करेगा जैसे हालमें गायकवारने की है नहीं कदाचित् नहीं क-
रेगा गायकवारने सम्पूर्ण कारखाई उसके प्रतिकूल की यदि
कोई मनुष्य किसीके प्राणका वैरी होता है तो अपनी शत्रुताको
प्रगट नहीं करता है क्योंकि जो जाहिर करेगा तो सब लोगोंको
मालूम हो जावेगा यदि गायकवार करनैल फियर साहबके विष
देनेका उद्योग करते तो वह उनसे अतिप्रीति करते और जिन
कागजोंसे शंका पाई जाती है तो शीघ्र ही उनको फाड़ डालते
और कोई बात ऐसी बाकी न रखते जिससे किसी बात का पता-
लगता परन्तु गायकवारने सब बातें स्पष्टरीतिसे कीं उनके पास
एक खरीता श्रीमान् वैसरायका करनैल मीड़साहबकी रिपो-
र्टके पीछे पहुंचा करनैल मीडसाहबने अपनी रिपोर्टमें सम्पूर्ण
तहकीकातके करनेके उपरान्त लिखा था कि गायकवारको कुछ
मुहलतक और सावकाश दियाजावे और उनसे शर्त्त ली जावे
कि उत्तम प्रकारसे प्रबन्ध करें पस श्रीमान् वैसरायने सन् १८७५
के अन्ततक सावकाश दिया कि गायकवार उत्तम प्रबन्ध करें॥

गायकवार को उस खरीतेके आनेसे भरोसा होगया था कि
हुजूर ममदूह भलेप्रकार इन्साफ करेंगे और उत्तमप्रबंध का

मैाकादेंगे फिर गायकवार कैा क्याप्रयोजन था किअपनेउत्तम प्रबन्धकी लियाकत केसाबितकरनेके पहिलेऐसी हरकतकरते सरल्यूइसपीली साहबने अपने इजहारमें वर्णन किया है कि गायकवार हरएकमेरीतकरीरको सुनतेथे और उसपरबर्त्ताव करतेथे औरश्रीमान् वैसरायने जोर हिदायतें कीउनपरअमलकरना चाहतेथे॥

जबसेसरल्यूइसपीलीसाहबयहां नियतहुये वह किसीतरह सेगायकवारसे अप्रसन्ननहुये इसलियेबिचारा जाताहै यदिकरनैल फियरसाहब सख़्तीकरनेके बिनाउत्तम प्रबन्ध करानाचाहतेतैाभी मुमकिन था करनैल फियर साहबसे बढ़कर कोई बदतरशख्स रेजीडन्सीकी पदवीके लियेदूसरा नहोगाउन्होने निहायत खराबकाररवाई की और सोचेसमझे बिनाहरकाम कोकरबैठतेथे गायकवारको उनकीहरकतों की शिकायतकरनेका बहुतबड़ा मौक़ाथा मुझको उसमेंसेथोड़ासाजो मालूम हुआहै वहयहहै किफियरसाहब प्रतिक्षण औरप्रतिपलभावपूनाकरसे वार्त्ता किया करतेथे और उससे बहुतबड़ी मित्रता कावर्त्ताव रखतेथे औरयह मनुष्यगायकवार के प्राणकाबैरी थाइससूरतमें गायकवारको किसतरह निश्चय होताकि मेरे मुआमिलेमें इन्साफहोगा औरमैंभी यहबातजानताहूंकिइस अवस्थामें गायकवार कोनिश्चयहोनेकी वजहनथी यद्यपिकरनैलफियरसाहब कहते हैं कि भावपूनाकर अतिप्रतिष्ठित और सच्चाआदमीहै परन्तुमेरी रायउनकेवर्णनसे अतिकूलहै मैंउस कोएक जासूस समझताहूं किवहसदैव गायकवार केबरखिलाफ बातोंका ढूंढाकरताथा चाहोयहबात ठीकहो किकरनैलफियर साहबउसकोखबरोंके सुननेके वास्तेकुछ रुपयानहीं देतेथे परन्तु करनैल फियर साहब का उसको मुंहलगाना उसकी जेबरुपयोंसे भरनेके वास्तेकाफीथा क्योंकि लोगजानते हैंकि यहमनुष्य साहबके कानमेंबातें करताहै और साहबउसकीबातोंको सुनतेहैंयह बहुतबड़ा शख्सहै गायकवारजानते

होंगेकि ऐसेशख़्सके हाथमेंकरनैल फ़ियरसाहबकी नकेल है जिसओरको चाहताहै फेरदेताहै औरजो बातें करनैलफ़ियर साहबमेरे विपरीत करतेहैं इसी मनुष्यके कहनेसे करतेहोंगे गायकवारनेजो२-नवम्बरको खरीता लिखा उसके लेखसे कोई आश्चर्यकीबात नहीं है कमीशनके मेम्बरोंको सबतारीखेंमालूम हैं।गोपरन्तुमैंकेवलजिकरकी तौरपरउनकावर्णनकरताहूं क्योंकि२-नवम्बर यादरखनेके योग्यहैयह खरीताभले प्रकारशोच विचारकर लिखागया क्योंकिउसकी इबारतनिहायतउमदाहै औरउसमेंऐसाभामलापेशकिया गयाहैकिश्रीमान्‌वैसरायको मंजूरीके सिवायऔरकोई चारहनथा उसमेंदोतीनमुकद्दमोंके दृष्टान्त भीदियेगयेहैं और कई मुकद्दमों काजिक्र है जिसमें अनीतिहुई सोगवाहोंकी गवाहीसे मालूम होताहै किउधर यहखरीतातय्यारहोताथा औरदूसरीओरसंखिया और हीरा पीसाजाताथा।औरएकबोतल औरएकशीशीमें दवातय्यारहोती थी जिसका जिक्रसिवाय अलिफ़लैलाके और कहीं सुनानहीं गया।ऐसीबात का जिक्र उन्नीसवीं सदीमें सुना जानाबड़े आ-श्चर्यकी बातहैकिगायकवार पातोहमतहै किवहबदमआशोंसे मिलतेथे औरउनको करनैल फ़ियर साहबके विषदेनेके लिये बहकातेथे औरबयानहै कियहतरगीब उस समय गायकवार नेदीथी जबकि खरीताभेजचुकेथे औरजवाबकेमुन्तज़िरथे उ-सकाजिक्र मैंफिरकरूंगा औरउससमय विस्तार पूर्वक दृत्तान्त वर्णनकरूंगा मुझको अभीबहुत बड़ीबातोंका जिक्र करनाहैमैं आशारखताहूंकि जोमुख्यअपराधीहै उसकापतालगजाय अब जो गायकवार केजिम्मे अपराध लगागया हैवह किसी तरह साबित नहींहोता किउन्होंनेकिया होजब श्रीमान् वैसरायके निकटखरीता पहुंचातोशोघ्रही गायकवार बड़ौदेको श्रीमान् वैसराय नेउत्तरदिया यदिगायकवाररेज़ीडएट साहबकोविष देतेतोउनकोकुछहाल पूछनेकीक्या ज़रूरतथी औरजोवास्तव मेंगायकवारने विषदिया तोइस तहक़ीक़ातकीक्या ज़रूरतथी

क्योंकि उन्होंने श्रीमान् महाराणी विक्टोरिया के क़ायम मु-क़ाम से ऐसी हरकत की और सरकार को इतने बन्दोबस्त की आवश्यकता नथी परन्तु मेरे विचार में बिल्कुल गलत है कि विष दिया गया क्योंकि जब प्रकट में गायकवार और रेजी-डण्ट साहब से इतना रंज था कि उन्होंने रेजीडण्ट साहब की बदली के लिये खरीता भेजा था तो फिर विषदेने की क्या हाजत थी—यह बातभी असम्भवित मालूम होती है कि जब गायकवार खरीताभेजचुकेथे तो जवाबके इन्तिज़ार के बिना विषदेने और इन्साफ होनेकी कोशिशकरते क्योंकि वहजानते थे कि जोमैं विषदूंगा तो जो दरखास्तखरीते में मैंने की है वहमंज़ूरनहोगी और वह यहबातभी जानतेथे कि अगर इस रजीडण्ट को मैंने मारडाला तो दूसरा रजीडण्ट नियतहो जावेगा और जो उनकी बदलीके लिये खरीता भेजागयातो विषदेनेकी क्याज़रूरतहै और गायकवारयहभी खूब जानतेथे कि अगर मैं विषदेने में संयुक्तहूंगा तो तहक़ीक़ात होने के समयकैसी मुश्किलेंहोंगी और तहक़ीक़ातहोकरजोसाबित हो जावेगा तो उसका परिणाम क्या होगा॥

अबगायकवारकी काररवाई पर ध्यानदेनाचाहिये कि जब सरल्युइसपीलीसाहबने उनसे कहा कि तुमपर किसीतरह की निगरानीनहींहै जोचाहोसो करो और तुम्हारे इन्तिज़ाम में कोई बाधा न करेगा तहक़ीक़ात होतीहै जो मुख्य अपराधी मालूमहोगातो वहपकड़ाजावेगा उससमय दामोदरपन्थउन का सक्रेटरीभी हिरासतमें नथा चाहो दामोदरपन्थकैसाही आदमीहो परन्तु चालाकी और समझमेंउसकेसंदेहनहीं वह अवश्य गायकवार सेकहताकि रावजी और नरसूपकड़ेगयेहैं और तहक़ीक़ातहोरहीहै उससमय गायकवारकेपास रुपया था और हरप्रकारसे उनको अधिकारथा उसज़मानेमें उन्होंने ऐसी काररवाई नहीं की जैसाकि कोई अपराधी करता है किन्तु ऐसीकाररवाई करतेरहे जैसाकोई निर्दोषमनुष्यकरता

है और यहबात प्रकटनहीं कीगई कि नरसू और रावजी से उसजमानेमें महाराजासाहबने कुछ बातेंकीं और न किसी ने यह वर्णन किया कि महाराजा साहबने अपने विश्वसित मनुष्योंकेद्वाराउनको अलगकरदेनाचाहा नयह जाहरकिया कि महाराजासाहबने रिश्वतदेनेका उद्योग कियाहो अगर यह जुर्मउनकी निस्बतसहीहै तो वहइसतरह बैठरहे जैसे कोईमनुष्य जानबूझकर सुरंग परबैठाहै और अपनेउड़जाने का कुछभयनहींकरता वहसदैवसरल्यूइसपीलीसाहबसे मिल-तेरहे और अपनी रियासतके उत्तम प्रबन्धकेकरनेकी कोशिश करतेरहे और सम्पूर्णकार्य्य पोलीसाहबकेसम्मत और श्रीमान् वैसरायकी हिदायतके अनुकूल करतेथे रोजमर्रा के काममें उनके कुछफर्क नहींआया जब वहसरल्यूइसपीली साहब की मुलाक़ातको जातेतोहमेशा वहांरावजी और नरसूको देखा करतेथेयहतो अप्रगटकारकुन गायकवारके प्रसिद्धहैंपरन्तुगा-यकवारनेउनसे कोईबात नहींकी और इसीतरहपर हरएक काररवाई करतेरहे जिसतरह कोईनिर्दोष मनुष्य निर्भयता से करताहै यहबात सरल्यूइसपीलीसाहबकी गवाहीसे स्पष्टहै क्योंकि उन्होंने गायकवारकोलिखाकि सालिम और यशवन्त रावको भेजदो और उन्होने शीघ्रही दोनों को भेजदिया उस खतकितावत पर कमीशन के मेम्बर गौरकरें—सरल्यूइसपीली साहबने जाहर करदियाथा कि उनदोनों मनुष्यों को किस वास्तेबुलाते हैं सो यहबात देखना चाहियेकि गायकवार ने उनदोनोंमनुष्योंको बेतामुलभेजदिया यदिवास्तवमें विषदिया था तो उनदोनो शख्सोंके भेजनेमें कुछखयाल नहुवा किन्तु गायकवारने उनसेकहदियाथा कि जो कुछतुमसे पूछाजावे और उसको तुमजानतेहो तो बयानकरदो यहबात भीप्रकट है कि सालिम और यशवन्तरावको किसीमनुष्यने तरगीबभी नदीथी और इसबातपर खयाल करना चाहियेकि सरकारी क़ानूनजैसाहै और पुलिसके अधिष्ठाताकिस सख़्तीसे तहक़ी-

ज्ञातकरते हैं—इरचन्द लोगोंने बयानकिया कि गायकवारको इच्छाकरनैलफियरसाहबके मारडालनेकी थी परन्तु आश्चर्य है कि उन्होंने इसमुकद्दमेको तहक़ीक़ात में किसीतरह का दखलनकिया न लोगों को रिशवतदी और न किसीको कुछ सिखलायाकि अमुकबात इस प्रकारसे कहनाकिन्तु सालिम और यशवन्तरावको भेजदिया और आपभीलिखभेजाकि जो बात मेरे योग्य हो उसके अंजाम को मैं मौजूद हूं आदिसे अन्ततक गायकवारकी ओरसेकोई कारवाई ऐसीनहीं हुई जिससेमालूम होकिउनके जिम्मे कुछकसूरहै और किसीबात को गुप्तकरना चाहते हैं॥

माईलार्डअबइसबातपर आपको ध्यानहोना चाहियेआशा हैकि आप गायकवारपर रहमकरेंगे—जिस जमानेमेंकि मुक-द्दमेकी तहक़ीक़ात होतीथी सालिम और यशवन्तराव गायक वारके नौकर और उनके अधिकारमेंथे यदिउनदोनों मनुष्यों को गायकवार कभी अलग करदेते कुछकठिनबात नथी इस के विशेष गवाहों के बयान से प्रतीत हुआ कि कुछ २ रुपया आया आदिक को खबरोंके मिलनेके वास्ते अगस्त और सितम्बर में दियागया जब गायकवार खबरों के मिलने के वास्ते रुपया खर्चकरतेथे तो क्या उनलोगोंको रुपया नहीं देसक्ते थे जि को करनैलफियरसाहबको मारडालनेके लियेतय्यार कियाया उनलोगों को रुपयेकादिया जाना किसीके बयानसे जाहिर नहींहुआ और गवाहीमें एकअद्भुतबातयहहैकि नरसू और रावजीने कभी गायकवार से रुपया नहीं मांगा शायद इस-लिये नमांगा कि अगरहम रुपयालेकर खर्चकरेंगे तो हमको हिसाबदेनापड़ेगा और सबसेबढ़कर यहबात है कि इसरईस ने अपनेतई केवल पांचछः आदमियोंके सुपुर्दकरदिया और हरमनुष्यसे कहतायाकि ऐसाउपाय करो कि करनैलफियर साहबको विषदियाजाय इससूरतसेमानो गायकवारने अपने जिम्मे मुकद्दमा लेलियाथा उनको क्या जरूरत थी कि प्रति

मनुष्य से आनेमन का हाल कहते इस इच्छा के पूर्ण होने के लिये एक शख्सका फीथा पांच छः मनुष्योंके एकचकरनेसे क्या प्रयोजनथा यहबातबिल्कुल बुद्धिके विरुद्ध मालूमहोती है कि गायकवार ने ऐसा कियाहो नरसू की गवाही से प्रकट है कि रावजी के साथ मध्यस्थरहा रावजी ने जितनाझूठ बोला उसने उसकी सिदाक़त की जब उसको गायकवार के पास लायेथे तो गायकवार को उससे कुछलाभ नहीं हुवा जितनी काररवाईकी तो रावजीके बयानके अनुसार आपही रावजीने की मालूमहोताहैकि नरसू खाहमखाह जुर्ममें संयुक्त होताहै और नरसूबड़ा भाग्यहीन मालूमहोताहै वहकहताहै कि मैं अपनीअभाग्यतासे ऐसी २ बातोंमेंफंस जाताहूं हरकदमपर उसको फन्देनजरआते हैं वह अपने अपराधको बड़ीलज्जासे प्रकटकरताहै यहमनुष्य अपनेतई बड़ाधर्म्मिष्ठ प्रकटकरताहै यहसुकद्दमा इतनालंबाहै कि मुझकोभयहै किकोईबात छूट न जावे परन्तु मैं इसबातका भलीभांति विचार रक्खूंगा आशा है कि अगरमुझसे कोई भूलहो तो आपसब साहब उसकोबता- दें-इसमुकद्दमेके शुरूहोनेके समयजो ऐडवकेटजनरलने इसी- चकहीथी अबउसपर सबसाहबोंका ध्यानकराताहूं—पूर्वोक्त साहबकी इसोचनिस्संदेह अतिउत्तम और उनकी पदवीकी लियाकतके अनुकूल थी उन्होंने किसी बातपर बहुतपक्ष नहीं किया किन्तुबड़ीनम्रता और दृढ़ताके साथकहीथी॥

मुझको गायकवारकी ओरसेउस स्पीचमें कोई शिकायत नहींहैकिन्तुजहांतक सम्भवथा उनसाहबने मुझेसहायतादी॥

अबमैं मतलबकी तरफध्यानदेताहूं जिससमयऐडवकेटजनरल साहबनेस्पीचकहीथी और दरखास्तकीथी किमीशनके मेम्बर गायकवारपर जुर्मकायम करकेदण्ड विचारें॥

उन्होंनेअपने विचारसे गायकवारपर दोअपराध ठहराये थे परन्तुउन्होंने अपनी सम्पूर्ण इस्पीच की कोईवजह कारनैल .फियरसाहबको विषदेनेकी नहींबयानकी शायदजानबूझकर

इसबातको उन्होंने नहीं बयानकिया-सोअबमैं वर्णनकरता हूं कि गायकवारको करनैलफियरसाहब केविषदेनेकी कोईवजह नथीशायद ऐडवकेटजनरलमेरेदोस्तने उसकीवजह बखूबीमालूमकीहोगीपरन्तु अबकुछमालूमनहुवाइसलिये उन्होंनेअपनी इस्पीचमें जिक्रकिया कि गायकवारने रोवोडल्पो केनौकरोंको बहकाया उन्होंनेयह नहींकहाकिनरसू और रावजीसेपरस्पर क्यावास्ताथाऐडवकेटजनरलनेअपनीइस्पीचमेंएकमनुष्यजिसका नामपेडरूहै जिक्रकियाकि आयाआदि नौकरोंकीएकसलाह थी और पेडरूकी, और सलाहथी पेडरूकरनैलफियर साहबका खानसामांहै और २५ वर्षसे उनकेपास नौकरथा पेडरूके इज़हारपर जोग़ौर कियाजाय तोउसके बयानसे गायकवार जुर्मसेबरीहोतेहैं जोउनपर लगायागयाहै इसलिये यहबात ध्यान करनेके योग्य है कि ऐडवकेट जनरलने अपनीइस्पीचमें पेडरू कीनिस्बत किसतरह जिक्रकियाहै उन्होंनेजान बूझकर पेडरू का इसतरह जिक्र किया कि यह मनुष्य बड़ा प्रतिष्ठित और विश्वसित है मैं भी कहता हूं कि इन सम्पूर्ण झूठे गवाहों में जिन्होंने अदालतके सम्मुख गवाहीदी है पेडरू की गवाही पर किसी प्रकारका एतिराज नहीं होसक्ता जोपेडरूकी गवाही सहीसमझी जावेतो यह मुक़द्दमा खतमहोगया और जो कुछ गवाहोंने झूठीगवाहीका महलखड़ा कियाहै वहबिल्कुलगिर जावेगा रावजीजो झूठेगवाहोंका सरदारहै उसकी गवाही काएक २ अक्षरखण्डन कियागया रावजी और पेडरू केवर्णन मेंकितना अन्तरहै—पेडरू २५ वर्षसेकरनैल फियर साहबका विश्वसित नौकर था उसका प्रतिष्ठित होना साहब ऐडवकेट जनरलभी मानतेहैं उसने कमीशनके सम्मुखवर्णन किया कि रावजीने मेरेविषयमें जोवर्णन कियावह गलतहै और सरासर उसकीबनावटहै॥

माईलार्ड—मैं नहीं कहसक्ता कि रावजीकी गवाही किस प्रकारसे घड़ीगई पेडरूकी गवाहीने रावजीकी गवाहीकोडहा

दिया और ऐडवकेट जनरल की क़ाबलियत भी उसको खड़ा नहींरखसक्ती अवयह बातमालूम होना बाक़ीहै कि आपकी रायभी इस विषयमें मेरी रायके अनुकूल है वा नहीं—साहब ऐडवकेट जनरलसरकारकी ओरसे इसविषयमें बखूबी सोच करेंगे और पेडरूकी गवाहीका भलेप्रकार वर्णन करेंगे॥

मेरे विचारसे चाहेऐडवकेट जनरल हज़ार तकरीर करेंगे परन्तु मेम्बरोंके जेहनपर बैठनाबहुतही कठिनहोगा किआया मुमकिनहै कि पेडरूकी गवाहीपर निश्चयकियाजाय याराव-जीकी गवाही ठीक समझीजाय और तुर्फ़ामाजरा यहहै कि पेडरूकी गवाही प्रथम बम्बई के एक जस्टिस आफदीपीस और डिपुटी कमिश्नर पुलिस मिस्टर एडगन्टन साहब ने लीथी इसलिये पेडरू और रावजी की गवाही में देखना चाहिये कि कितना अन्तरहै ऐसा नहीं होसक्ता कि दोनों मनुष्यों की गवाहीपर विश्वास कियाजाय ज़रूरहै कि एक मनुष्यकी गवाही झूठहो और दूसरे की ठीकहो पेडरूकी गवाही में मुझको कोई बातकहनी बाक़ीनहींहै परन्तु रावजीकी गवाही परमुझको एतिराज़है रावजीके निस्बत ऐडवकेट जनरलसाहब नेउसका प्रतिष्ठित होनानहींकहा ऐंडवकेट जनरलने मुकद्-मेके प्रारम्भ होनेके समयअपनी स्पीचमेंवर्णनकियाकिकरनैल फ़ियर साहबको शुरूमेंविषदिये जानेका उद्योगकबहुवाराव-जीनेअपनी गवाहीमें प्रथमअपने इरादोंकाबखूबी इज़हारदि-याकिमुझको तारीखें स्मर्णनहीं हैं परन्तु कमीशन के सम्मुख फिरबयान करूंगा परन्तु अजब बातहै कि साहबऐडवकेटज-नरलनेउसका ज़िक्रनहींकिया शायदअकस्मात् उनसेयहबात छूटगई अथवा उन्होंनेयहसमझाहोगाकिरावजीकाबयानऐसा बेमूलहै किकमीशनके सम्मुखउसका वर्णननकरसके यदिऐडव-केटजनरलसाहबकायहीविचारथातोबहुतठीकहैऐडवकेटसा-हबसितम्बरके उद्योगका कुछवर्णननहींकरतेहैं उन्होनेकेवल ६ और ७ नवम्बरके उद्योगकाज़िक्रकिया औरकमीशनकेमेम्बरोंको

आई होगा कि रावजीने अपने इजहार में ६ और ७ नवम्बर का जिक्र नहीं किया किन्तु उसने कहा है कि मैंने ६ और ७ नवम्बर को विषन हीं डाला परन्तु फिर भी कर्नैल फियरसाहबकी ऐसी ही दशा होगई जैसा कि विषके खानेसे होती है अगर ६-७ नवम्बर को विष दिया गया तो चकोतरे की शर्बतमें दिया गया रावजी का बयान है कि जो पुड़ियां मुझको मिली थीं उनको मैंने ९ नवम्बर को शर्बत में डाल दिया कुछ संदेह नहीं कि बहुधा झूठ के बोलने वाले अपनी बात को भूल जाते हैं और झूठ बोलने वाले मनुष्य बड़े भुलक्कड़ होते हैं जब ऐडवकेट जनरल ने प्रथम में इसी च कही थी उस में वर्णन किया था कि रावजीने ६ और ७ नम्बर को विष डाला परन्तु मैं नहीं कह सक्ता कि रावजीने मिस्टर सूटर साहब के रूबरू यह जिक्र किया था वा नहीं परन्तु उसने किसी न किसी अफसर के रूबरू अवश्य कहा होगा परन्तु जब अदालत में उसके इजहार लिखे गये तो उसने ६ और ७ नवम्बर का कुछ वर्णन नहीं किया किन्तु उसने गलतीसे कहा कि ९ नवम्बर को सब पुड़ियां शर्बत में डालदीं फिर ऐडवकेट जनरलने हेमचन्द और फतहचन्द का जिक्र किया इस गवाह का दामोदरपंथ की गवाही के वक्त वर्णन करूंगा ॥

ऐडवकेट जनरल कहते हैं कि संखिया और हीराकूट करसा" लिमको रावजीके देनेके लिये दोदफे दिया गया परन्तु रावजी केवल एक पुड़िया के देनेका जिक्र करता है पहिले उसको सितम्बरके महीनेमें एक पुड़िया दीगई और दूसरी बेर उसको दो पुड़ियां दीगईं रावजीने उनके तीन भाग किये उन दोनों पुड़ियों मेंसे एक सफेद और दूसरीमें गुलाबी कोई वस्तु थी गुलाबी वस्तु के निस्बत रावजीने इसलिये कहा था कि उसने सुना होगा कि गुलाबी रंगके हीरे होते हैं परन्तु जब संखिया और हीरे एक जगह कूटेगये तो फिर गुलाबी किसतरह आगया और जो पुड़िया उसकी पेटीमें मिलीतो अपनी बातके सही होनेके लिये उसने बयान किया कि संखिया और हीरे मिलाये नहीं गये राव जी की प्रकृति अजब तरहकी है इसने कर्नैल फियरसाहब को मार

नाभीवाहाथाऔर उसकोदयाभी आतीथी पेटीकाजिक्रभी मैं फिर करूंगा उससे स्पष्टप्रगटहोताहै कियह मुकद्दमाबनाया गयाहै ऐडवकेट जनरलसाहब पुलिसकी तहक़ीक़ातके विषय में कहतेहैं किगवाहोंमें परस्परकुछ वार्त्ता नहीं होतीथी इस वजह से वह कहते हैं कि गवाहों की गवाही बनावट की नहीं परन्तु मेरे विचार से यह सब बातें निरर्थ हैं निस्संदेह इतना ऐब गवाहोंमेंहै किबहबेमूल है वास्तव में गवाहों की वार्त्ता नहीं हुई परन्तु इन गवाहों को एक प्रतिष्ठित मनुष्य अर्थात् अकबरअलीने बुलायाथा और बखूबीउनको सिखार कारहर एक बात को पूछा उनगवाहोंने २४ घण्टे के उपरान्त सबहाल बयानकरदिया यहकारवाई अकबर अलीकी मेरी समझ में नहीं आती कि किसतरह सब लोगोंने बेचैन होकर अपने मनका भेद उनसे वर्णन करदिया मेरे विचारसे यहसब गवाहियां बनाईहुई हैं और बनावट को मैं साबितकरदूंगा और सबगवाह इसीवास्ते एकजगह किये गयेथे कि उनकीगवाहियांघड़ीजावें गजानन्दकी निस्बतभी इससेअधिक और कुछ नहींकहसक्ता मुझको हरएक बातपर गजानन्दयाद आता है औरयदिकोई मनुष्य कहे किगवाहों की गवाही कैसी हैतो उसकेउत्तरमें मैंकेवलयही कह सक्ताहूं (गजानन्द) यहगवाह आपही नहीं जानतेथे कि हम क्या वर्णन करतेहैं जैसीकिउन-कीगवाही बनाई गई उसीतरह उनको यादभी दुरुस्त होती तोमैंकिसतरह गवाहीमें तकरीरकरता परन्तु मैं ऊपर कहचुकाहूं किझूठेंका सर्वबहुत खराबहोताहै यहगवाह मुख्तलिफ बयान करते थे अकबरअली अब्दुलअली गजानन्द ने अपनेमुल्कके हितकेलिये जो कारवाई कीहै विश्वासहै कि उसपरकमीशनकेमेम्बर कदाचित् निश्चयनकरेंगे इसकेउपरान्त ऐडवकेट जनरलनेइसतौर से जिक्रकियाथा किदामोदरपंथ रावजीनरसू बड़ेदुष्टहैं और इसवजहसे अपने इजहारमेंइक़रारकियाहै किखतामुआफहो और जो २ उन्होंनेदुष्टताकी

है उसको क्षमा किया जाय परन्तु नरसू में अपराधी और निर्दोषी होना दोनों बातें पाई जाती हैं यह अपने अपराध से ऐसा लज्जित हुआ कि कुवें में डूबना चाहा था और उसने वही मसलपूरी की कि कुवें में सच्चाई मिलती है परन्तु सच्चाई के बदले उसको कांस्टेबल मिला क्योंकि उस के कूदने के उपरान्त कांस्टेबल भी कुवें में कूदा था—फिर ऐडवकेट जनरल गायकवार का जिक्र करते हैं जब कि वह ९ नवम्बर को करनैल फियर साहब के पास आये थे उन्होंने वर्णन किया कि करनैल फियर साहब का जीमतलाताथा और जो विषखाने वाले की दशा होती है वही उनकी हालतथी लेकिन डाक्टर सीवर्ड साहब से करनैल फियर साहबने चाहो न हीं सुना कि तलछट के इमतिहान का क्या परिणाम हुआ परन्तु जब करनैल फियर साहब की मुलाक़ात गायकवार से हुई तो करनैल फियर साहब को सुनकर आश्चर्य हुआ कि जो दशा उनकी थी वैसी ही बहुत से लोगों की शहर में दशा है किन्तु गायकवार ने भी कहा कि मेरी तबीयत का भी यही हाल है हालांकि करनैल फियर साहब ने विषका उनसे कुछ भी जिक्र नहीं किया उस समय तक करनैल फियर साहब को मल्हरराव से कुछ संदेह न था मालूम न हुवा होगा कि मुजको विष दिया जावेगा यदि दामोदर पन्थ का बयान ठीक है कि उस समय मल्हरराव खूब जानते होंगे कि करनैल फियर साहब की क्या दशा है क्योंकि दामोदरपन्थ कहता है कि मल्हरराव ने मार्ग में मुजसे यह बात्ती की थी जब गायकवार ने करनैल फियर साहब से बयान किया था कि नगर में इस प्रकार का रोग है तो उनको मालूम न होगा कि डाक्टरी से मालूम होजाता है कि जो मनुष्य विषखाता है उसकी क्या दशा होजाती है करनैल फियर साहब ने जो डाक्टर सीवर्ड साहब को चिट्ठी लिखी थी उसमें उन्होंने लिखा था कि पेट में पीड़ा और सिर घूमता है और मुख में तांबे का स्वाद है इस विषय में ऐडवकेट जनरल वर्णन करते हैं कि गायकवार करनैल फियर साहब को निश्चय कराना चाहते हैं कि यह बीमारी किसी मनवसेभी जब में

करनैलफियर साहबकी गवाहीपर ध्यान करताहूं तोमैं कह सक्ताहूं कि गायकवार उसदिन जोकरनैलफियर साहबकी मुलाकातके लियेगयेथे वहदिन उनकी मुलाक़ात काथा कोई नईबात गायकवारने नहींकीथी औरन गायकवारकी बातों सेकुछफिक्र मालूमहोतीथी उसदिन मामूली बातें हुई यहां तकअपनेमित्र ऐडवकेटजनरल की इस्पीचपर गुफ़्गूकी वहबि-ल्कुलक़ाबलियतसे भरीहुईथी अबवहकहतेहैंकि यहमुक़द्दमा नरसूऔर रावजीऔरदो मनुष्योंकी गवाहीपरहै वहइसबात कोमानतेहैं किरावजीऔरनरसूने जुर्ममेंमदद्की वहकहतेहैं कि इस मुक़द्दमेका निर्णय रोयदादपर होगा पूर्व्वोक्त साहब तीनप्रकारसे गवाहीकी सिदाक़त करते हैं प्रथमयह कि वह अलग २ रक्खे गये इस विषयमेंमैं पहिले गुफ़्तगू करचुकाहूं जिस मनुष्यने नरसू की गवाही सुनीहोगी क्या वहकह सकै-गा कि उसकी गवाही ठीक है उसकी गवाही से यह बात प्रगटहै कि एक समयमें वहबहुत बदज़ातथा परन्तु अबअपने कियेपर पछताताहै दामोदरपंथरावजी और नरसूकी गवाही केलिये बहुतकुछ सिदाक़त दाकारहै मेरेमित्र(एडवकेटजनर-लसाहब) ने उसकीसिदाक़त नहींकी यदिपेडरू की गवाही ठीकहैतो रावजीको दरोगहलफ़ी अर्थात्झूठी सौगन्दखानेके अपराधमें दण्डहोना चाहियेकेवल तीनमनुष्यों कीगवाहीपर इसमुक़द्दमेका दारमदारहै और उन्हीतीन मनुष्योंकीगवाही से गायकवारकीप्रतिष्ठा और मालऔर असबाब हरलियागया क्या उनलोगोंकीऐसीगवाहीहै कि जिसकी समाअतहो और गायकवारकोउसकीगद्दी औरउसकी जायदादछीनकर मुफ़-लिसकरदियाजायआपलोग जो कमीशनकेमेम्बरहैंकेवलजूरीके तौरपरहैं क्या आपसाहिबों को यहउचितहै कि सोचेसमझे बिना छोटे२ गवाहोंकी गवाहीपर गायकवार को फांसीदेदें ऐडवकेटजनरल चाहतेहैं कि गायकवारको दण्ड दियाजावे

इनलोगों की गवाही बिल्कुल बेमूलहै सबसे पहिले कारनैल फियरसाहबकी गवाहीका जिक्रकरूंगा—माईलार्ड षटुकेपलटनेसेमेरी आवाजका बूमेंनहीं है कारनैलफियरसाहब इसअजब फिसाने में नामवर शख्सहैं मैंने उनके विषयमें एक शब्द भी सिवाइसके जो मुझेकहना आवश्यक है न कहा तो क्या और ऐसीबातनकहूंगा जिससे कारनैलफियरसाहब खेदको प्राप्त हों कारनैलफियरसाहब निस्संदेह प्रतिष्ठित और सत्यवादी और वीरहैंपरन्तु जिसउद्देोपर वहनियतथेवहइसके योग्यनथे इस ओहदेका काममहासूक्ष्मथा गायकवारराज नतथेकि उनपर किसीसमयमें ऐसी चश्मनुमाईहुईथी कि उनकीप्रतिष्ठा और कारवाई में फर्क आगया था और मालूमहुआथा कि वह प्रबन्ध नहीं करसक्ते हैं मुझको आशा है कि यहबातें कारनैल फियरसाहबके विषय में जियादहसख्त नहींहैं-फिर गवर्न्नर बम्बईनेउसको उसतेरीकिया जोकागज कारनैलफियरसाहब के पासगया और जिसको मैंने अदालत में पेशकिया उसने कारनैलफियर साहबके बदनामकरनेकी मेरी इच्छा नहींहै केवल इसीलिये पेश किया था ताकि साबितहो कि कारनैल फियरसाहबउसपदवीके योग्यनथे जिसपरकिवहनियतथे और गायकवार इनबातोंकोखूबजानते औरसमझतेथे किअबउनको शिकायतहोगी शीघ्र रेजिडन्सीसे जावेंगे कारनैलफियरसाहबने ऐसेलोगोंसेमुलाकातरक्खो जिनसेकि गायकवारमहाअप्रसन्न थे औरवहलोगगायकवारकेशत्रुकेतौरोथे जैसेकिउनमेंसे एक भाऊपूनाकरथाउनलोगोंकाबयानहै किहमकोकारनैलफियर साहब कुछ रुपया नहींदियाकरते कारनैलफियरसाहबकीसरपरस्तीउनकेकमाखानेकेलिये काफीथीमालूमहोताहैकिकारनैल फियरसाहबउनसेऐसामेलजोलरखतेकि जोकुछ वहलोग कहतेथेवहीकारनैलफियरसाहब करतेथे फिर कारनैलफियर साहबक्योंकरकहतेहैं किभाऊपूनाकर प्रतिष्ठितमनुष्य हैमैं कदाचित्नहींकहसक्ताकिउनकोक्योंकरमालूमहुवा किभाऊपू-

ना कर सत्यवादी है क्योंकि वह गायकवार के बिल्कुल प्रतिकूल था फिर करनैल साहब को यह खयाल हुवा कि जिन लोगों पर गायकवार जुल्म करते हैं उनकी नालिश सुननी चाहिये इससे मालूम हुवा कि सैकड़ों मनुष्य गायकवार की शिकायत किया करते थे जब रेज़ीडेन्ट [illegible] हवा खाने जाते उस समय से लोग शिकायत शुरू करते थे निदान जो मनुष्य गायकवार की शिकायत करता था उस को बखूबी करनैल फियर साहब सुनते थे कोई २ शिकायतें बिल्कुल झूठ होती थीं परन्तु साहब उनकी भी समाअत करते थे जब लोगों को यह मालूम हुआ कि साहब हरएक शिकायत को सुनते हैं और गायकवार से अप्रसन्न हैं तो लोगों ने जा बेजा अरज़ियां देनी शुरू करदीं मैं ऊपर कह चुका हूं कि जब गायकवार ने देखा कि करनैल फियर साहब किस २ प्रकार के लोगों से मिलते हैं और प्रतिसमय और हर तरह न भाव पूना कर सेवा नहीं करते हैं और जिस से यह बात साबित होती थी करनैल फियर साहब बिल्कुल भाव-पूना कर के बश में हैं समझा कि उत्तम प्रबन्ध का होना असम्भवित है जो ऐसा न होता तो कोई कठिनता आगे न आती जिस २ उत्तम प्रबन्ध के लिये श्रीमान् वैसरायने दो वर्ष की उनको मोहलत दी थी अगर करनैल फियर साहब ऐसा न करते तो कोई दिक्कत नथी परन्तु इस हालत में अच्छे इन्तिज़ाम का होना असम्भवित था करनैल फियर साहब को यह संदेह था कि मुझ को बिष दिया जावेगा परन्तु मालूम नहीं कि किस मनुष्य ने उनको यह पट्टी पढ़ाई थी और किस तरह उनको यह खयाल हुआ कि करनैल फियर साहब को इस प्रकार के खयाल थे और गायकवार के मिज़ाज में दूसरी तरह की बातें थीं प्रकट है कि भाव पूना कर बाज़ारी गप करनैल फियर साहब को आकर सुनाया करता और करनैल फियर साहब हर बात का निश्चय कर लेते थे सितम्बर वा अक्तूबर में फियर साहब के माथे पर फोड़ा निकला था इस मुकद्दमे में फोड़े के विषय में भी बहुत बड़ा ज़िक्र है और बहुत कुछ कारर्वाई फोड़े के निस्बत बयान

हुई इसफोड़े कोदवा डाक्टरसाहबकियाकरतेथे कारनैलसाहब उसजमानेकी शिकायतकरतेहैं किबहुधा मेराजीमतलाता था और फोड़ेमेंअति पीड़ाहोतीथी और उसपीड़ाका यहकारण मालूम हुवा कि डाक्टर सोवर्डसाहब फोड़े पर क्लौडियम नाम औषधी लगाया करतेथे और क्लौडियमका यहगुण है किलगातेही बहुतपीड़ाहोतीहै ऐडवकेट जनरलबयान करते हैंकि रावजीने चकोतरेके शरबतमें कुछपुड़ियां डालदीं और बिलाकिसी शिकायत के कारनैल फियरसाहब उसको पीगये हालांकि अगरकोई चकोतरेका खराबशर्बत पियेगातो बेशक शिकायत करेगापरन्तु कारनैलफियरसाहबने उसकोचुपचाप पीलिया और किसीप्रकारकी शिकायतनकी मालूम होताहै किकारनैलफियरसाहब केमिजाजमें अतिसंतोषथा तीनदिन तकउन्होंने शर्बतनहीं पियायहभी नईबातमालूम होतीहैकि जबकिसीमनुष्यको किसीखास वस्तुका अभ्यास होताहैतोउसके इस्तैमालके बिनाउसको चैननहीं पड़ताअ प साहिबोंकामत मेरेवर्णनके अनुकूलहोगा किकारनैलफियरसाहबने शरबत न पीनेकी कोईमाकूल वजहबयान नकी जोकारण उन्होंनेवर्णन कियावहमेरे विचारसे काफीनहीं है अगररावजी का बयान देखाजावेतो मालूमहोगा किउसने केवलहीरेकी कनीडाली थीसो उसकेनिसबत डाक्टरोंने वर्णनकिया किउससेकुछदु:ख नहीं पहुंचतापस ऐसेही खयालों से उनका शिर घूमनेलगा और जीमतलानेलगा और जोदशा सितम्बर और अक्टूबर में हुईथी वैसीही दशाहोगई रावजी का बयानहै कि ६, और ७, नवम्बरको मैंने संखिया नहीं डाली फिरकिसतरह कारनैलफियरसाहबकी तबीयत बिगड़गई फिरभी कारनैलसाहबचुप होरहे और किसीसे उन्होंने शिकायत नहीं की ९—नवम्बर को उन्होने शिकायतकी और संखियेके दिये जानेका संदेह हुवा परन्तुदोतीनबातें मेरे विचारमेंनहीं आतींउनमेंसे एक यह हैकिकोई माकूलवजह कारनैलफियर साहब को विषदिये

जानेकी नथी इसबात का खयाल और लोगोंके दिलोंमें भी आया होगा ऐसेखयालोंके विषयमें मैं बहुतसी बातेंकहूंगा मुझको इसबात का भी आश्चर्य्यहै कि जिनलोगों को संखिया मिलसक्तीथी वह करनैलफियरसाहबके कमरे में भी जासक्तेथे और करनैलफियरसाहबकी सबआदतों कोभी जानतेथे फिर क्यों अच्छीतरहसे विषदिये जानेका बन्दोबस्त नहींहुवा सब से अधिकअचम्भेकी यहबातहै कि मुद्दततक उद्योगहोतारहा और भलेप्रकार विष न दियागया जब शर्बतमें विष मिलाया गया तो करनैलफियरसाहब यहकहतेहैं कि तलछटका रंग स्याही माइलभूराथा और गवाहोंका यहबयानहै कि स्याही माइल नथा किन्तु हलकाभूराथा जबतलछट का इमतिहान कियागया तो जो सूरत करनैलफियरसाहब बयान करते हैं उसके प्रतिकूलथी करनैलफियर साहब ने गिलास कोमेजपर रखदिया थोड़ीदेरके उपरान्त उनकोसंदेहहुवा और तलछट को देखा आपको स्मर्णहोगा कि डाक्टरसीवर्डसाहबने उसके निस्बतक्याकहा मैंनेउनसे इतनेप्रश्नकिये कि वहअप्रसन्नहोगये और कहा कितुमयहांक्या प्रलयतक रहोगे मैं भी जानताहूं किजोप्रश्नउनसे मैंनेकिये उनसेउनको आश्चर्य्यहुवा होगा क्योंकि तलछट डाक्टरसाहबनेदेखा उसकारंग हलका भूराथा और जिस तिलछट के निस्बत करनैल फियरसाहब वर्णन करते हैं उनकी रंगत स्याहीमायल भूरीथी यहबात ठीक है कि रंगत केविषयमें बहुतसेलोगोंके बयानमें अन्तर होजाता है परन्तु इतना अन्तरनहीं होता जोकि डाक्टर सीवर्डसाहब औरकरनैलफियर-साहबके बयानमें है जिसप्रकारडाक्टर सीवर्डसाहबने संखिये की आजमाइशकी वह तरीकाभी अच्छा नथा। किन्तु जिसप्रकार डाक्टर ग्रेसाहबने इमतिहान कियावहभी अच्छा नथा यूरूपमें जब इसतरहका इमतिहान होताहै तोडाक्टरलोग संखियेको दूसरीवस्तुओंसे पृथक् करकेउसको मूलरूपमें लाकर दिखा देते हैं और ऐसा नहीं करते कि धातका सा छल्ला

बनगयाऔरउसको कहदिया कियहसंखियाहै पिसेहुये हीरे कीनिस्वत जोलोगबयानकरतेहैं वहबिल्कुल कल्पितहै जोलोग कहतेहैं कितलछटमें पिसाहुवा हीराथा यहभी झूठहै हांकोई वस्तु उसमेंचमकती हुईथीऔर उससे शीशाभी छिलसकाथा परन्तुउसे हीरेकाचूर्ण कहनाबिल्कुल गलतहै औरइसबातका साबितकरना भीअसम्भवितहै उसकीनिस्बत खयालहै कि वह हीरेकाचूर्णथाअगरयहउम्मैदकीजायकि डाक्टरोंकीरूसेहीरे काहोना साबितहोजावेगा तोयहउम्मैदभीबेजाहै डाक्टरलोग इसकोकभी साबितनहीं करते निश्चयहैकि इसविषयमेंजोतह- कीकात हुईहैकमीशनके मेम्बरउसपर किसीप्रकारका खयाल नकरेंगे यहबात निस्संदेह कुछसाबितहुईकि जोपुड़िया इस- तिहानके वास्तेभेजी गईथीउसमेंसंखियाथा परन्तुयहबातदर- याफ्त करनेके योग्यहैकि यहपुड़िया वहीतलछटथी जोकर- नैलफियर साहबकेगिलासमें सेनिकलीऔर इसविषयमेंकरनैल फियरसाहबने इजहारदियाहै किजबमें मैंने तलछटको देखा उसके पीछेकोई मनुष्य गिलासके पासनहींगया परन्तुकरनैल फियरसाहबके इसइजहारको मैंतसलीमनहीं करसका क्योंकि जोकोई मनुष्य गिलासके पासजाना चाहतातो बहुतकुछमौ- क़ामिल सक्ता था मेरेइस सम्पूर्णवार्त्तासे यहप्रयोजनहै कि इसमुकद्दमेमें कैसीअद्भुत गवाही गुजरीहै औरइसगवाहीको बजहसे क्या२ विचारमनमें गुजरते हैं॥

दोपहरके उपरान्त दोबजेथे सरजन्टबेलनटायनसाहब ने कहाकि आजशनिश्चरवारहै अदालतको बरखास्त करना चा- हियेऔरकहा कियदि ग्रेणीडएटसाहबको इच्छाहोतोमैंकुछ औरवर्णन करूंग्रेणीडएड साहबने कहाजोआपथकगयेहैंऔर दमलेनाचाहतेहैं तोबेहतरहैमेरीतरफसेजबरदस्तीनहींहै सर- जन्टबेलन टायनसाहबने कहा खैर यहबात मेरेजिम्मेहै और अबमैं दमलेनाचाहता हूंग्रेणीडएट साहबने कहा कि पूर्वोक्त सबबसे अदालतबरखास्तकीजाय परन्तुजबथोड़ासमयभी व्यर्थ

जाताहैतोमुजको अफ़सोसहोताहैसरजनवेलनटायन साहबने प्रेजीडण्टकाशुकरियाअदाकिया और कहाकिइसमुकद्दमे में बहुतसी बातोंका खण्डनकरचुकाहूं और सोमवार कोकोशिश करूंगा किमेरीतरफसे खण्डनका कुछ संक्षेप होसक्ता हैया नहींइसके उपरान्त अदालत बरखास्त हुई॥

———

सत्रहवेंदिनका इजलास॥

आजग्यारह बजेकमीशन केमेम्बर एकत्रहुये परन्तुश्रीमान् महाराजा सेंधिया चित्तकी उद्विग्नतासेगैरहाजिरथे सरल्यू-इसपीलीसाहब कमीशनमें उपस्थितथे औरश्रीयुत महाराजा मल्हरराव भीसम्पूर्ण दिनबैठेरहे प्रेजीडण्ट साहबनेकहाकि अफ़सोसहैकिश्रीमहाराजासेंधिया चित्तकी उद्विग्नतासेआन न आसके॥

सरजनवेलनटायनसाहब स्पीचकहने के वास्तेउठे उन्होंने वर्णनकिया किमैंने शनिश्चरवार कोइस्पीचमें वर्णनकिया था किमैने दोएकजगह भूलकीहै आजमैंउसगल्ती कोदुरुस्त क-रूंगा औरवहगल्तियां तारीखोंकीथीं जिससमय मैनेपहिले विषदेनेकीतारीखबयानकीथी तोअगस्त वासितम्बरकामहीना कहाथा परन्तुएक गवाहने किजिसकी गवाही कुछ निश्चय माननेके योग्यहै वहकहताहै कि९ नवम्बरके पन्द्रह वा बीस दिनपहिले विषदेनेका उद्योग कियागयाथा औरदूसरी बात यहहैकि अन्तकीबेर जोगायकवारकीओरसे रुपयेके देनेका बयानहुआहै वहजूलाईके महीनेमेंहै गतशनिवारकी इस्पीच मेंजूलाई केपीछे कीतारीखमैने बयान कीथी परन्तुकागज़ोंके देखनेऔर अपने दोस्तोंके बयानसेयहगल्तियां मालूम हुईं इनबातोंका मैंपीछेवर्णन करूंगा।क्योंकि मैनेउन तारीखों को दुरुस्त करलिया—माईलार्ड—एकऔर बातयहहैजिसका ज़िक्र मैनेगौरकरनेकेबिना कियाथा यदिमुजको उसकेतूलके बयान

करनेकी इच्छानथीवहबात गिलासकीतलछटकेविषयमेंहैउस केलिये कारनैलफियरसाहब आपहीवर्णनकरतेहैं किमैंनेथोड़ा शरबतपीकर रखदियाथागवाहोंकी गवाहियांदेखतेहीमालूम होताहै किपांच वा छः बेरविषदेने काउद्योगहुवा और एक दफेकारनैल फियरसाहबको कोईनकोई बात वाधक हुई और थोड़ीसीशरबतपीकरछोड़दिया कारनैलफियरसाहबकाबयानहै किजबकभीशर्बतमें विषडालागयाहमेशाउसकास्वादबदलगया इसीहेतुसे उन्होंने शर्बतनहीं पियाऔरउनका बयान हैकिसं- खियाऔरहीरेकाचूर्ण शर्बतमेंपड़ाथा औरइनदोनों बस्तुओंमें किसीभांतिका स्वादनहींहै सो कुछसंदेहनहीं है कि अगर यहचीजेंशरबतमें डालीगईहोती तो अवश्यकारनैलफियरसाहब पीजाते और स्वादमें कुछफर्कनहोताऔर घण्टे आधघण्टे के उपरान्त उसकी कैफियत मालूम होती क्योंकि डाक्टरों की भी रायहैकी घण्टे आध घण्टे के उपरान्त विष अपना गुण करजाताहै इसविषयमें शनिवारको इत्तिफाकसे जिक्र नहीं कियाकमीशनके मेम्बरोंको स्मर्णरहे कि जब दामोदरपन्थ के इजहार आदिपर बहसकर चुकूंगा तो इसविषयमें भी तक़- रीरकरूंगा अबदामोदरपन्थके इजहारसे खण्डनकरना शुरू करताहूं साफजाहिरहै कि दामोदरपंथ से हरएक बातका मूलहै और विषआयातो इसीके द्वारा आया यहबात कहीं जाहिरनहींहुईकि किसीऔर मनुष्यने विषमंगानेमें कोशिश कीहो और दूसरेकिसी मनुष्यनेविषदियाकेवल इतनाहीपता मिलताहै कि दामोदरपंथने विषमंगाया इसके विशेष और किसीमनुष्यपर संदेहनहीं इसलिये उचितहै कि इसी मनुष्य के खण्डनसे प्रारम्भकियाजावे ॥

माईलार्ड—दामोदरपंथ—नरसू और रावजीकी गवाहीके गुफ्तगूकरनेके पहिले मेरेविचारसे इसबातकाकहना उचित है कियहबातपूछी जायकि पहिलेइनलोगोंकी गवाहीक्यकरी लीगई क्योंकि क़ायदा यहहै कि जिसतरह पहिले गवाहसे

बर्त्तावहोताहै वैसीही गवाही होती है उनकी गवाही ऐसे लोगोंके द्वारालीगई जोआपहीमुकद्दमेको तूलदेनाचाहतेहैं॥

मैं ऐसीबात नहींकहना चाहताकि किसीमनुष्यको मुझसे जररपहुंचे परन्तु लाचारहोकर कईलोगोंका नाम इसमुक-द्दमेमेंजरूरीसमझताहूं मिस्टरसूटरसाहब बड़ेलायकअफसरहैं और बम्बईमें बड़ेदरजेके ओहदेदार हैं उनको बखूबी मालूम होगाकि पुलिसके और अफसरोंमेंसे गजानन्दवतिल-अकबर अली अब्दुलअलीको अपने साथकिसवास्तेलानामुनासिबहुवा और यहबातभी उनको बखूबीमालूम होगी कि बम्बईके बहुत बड़ेअफसरने इनलोगोंकी कारखाईपर बहुत बड़ीचश्मनुमाई की थी चाहो वह चश्मनुमाई ठीक थीयागलत परन्तु सूटर साहबको इसविषयमें शंकाकरनी चाहियेथीकि इसमुकद्दमे में भी वैसीही कारखाई यह लोग नकरें क्या बम्बईमें और कोई अफसरपुलिस नथा जोउन्होंने दूसरीजगहसेएकपुलिस के अफसरको बुलायाउनकेबुलानेका प्रकटमेंकोई हेतुमालूम नहींहोता सूटरसाहबको इनलोगोंको इतना अधिकारदेना उचितनथा जिसतरहकि इनगवाहोंनेगवाहीदीहैमैं खासकर मेम्बरान् कमीशन का ध्यान इस बातपर दिलाता हूं क्योंकि इसबातपर तमामलोगोंका ध्यानलगेगा इनपुलिसके अफसरों को अखतियार था कि जिस मनुष्यको जबतक चाहें हिरासत मेंरक्खें औरमिस्टर सूटरसाहबने जोचाहा उनगवाहोंकेइज-हारलिये॥

जिसप्रकार गवाहोंकेइजहारलियेगये हरएकका अलग२ जिक्रकरूंगा और यहभी प्रकट करूंगा किगवाहों पर जुल्म हुआहै और गवाहोंने यह गवाही दीहै॥

यठीकहैकि गवाहलोगशिकंजेमें नहींखेचेगयेकिन्तुउनको भयदिलाया गयाहै और कईगवाह चेहरेसे भयमान मालूम होतेथे वहलोग जानतेथेकि हमारेधन और प्राणकीकुशल नहींहै और जबतकहमहिरासतमें हैं कोईसूरतहमारे बचाव

की नहीं है जब तक कि हमपुलिस की खाहिश बयान नकरेंगे हिन्दुस्तानकेशहरोंमें ऐसीबातकदाचित् जायज नरक्खीजाती परन्तु इस शहर में जो हिन्दुस्तान से अलग और क़ानून को नहीं जानता है रक्खीगई यहां के लोग बिल्कुल नहीं जानते कि अपनेछूटनेका कौनसा उपायकरें वह अपने तईं शक्तिही अशक्तसमझते हैं और जानतेहैंकि पुलिसको सब प्रकार की सामर्थ्य है और हमपर प्रबल है॥

पुलिसने अपनी कामियाबीके लियेकोई बातन भुलाई मैंने खूब गौरकरके इस तकरीरको पेश कियाहै मुजको आशाहै किजो कुछमैंने वर्णन कियाहै उसकीबखूबी सिदाकत होगी अब दामोदरपंथ के इजहारों को खण्डन करता हूं मालूम होताहैकि हरएकबातकामूल इसीमनुष्यसेहै यहशख्सबयान करता है किमुजको गायकवार ने इसमुकद्दमे में मुख्यऐजन्टबनायाथा सोउचितहै किबडीसावधानीके साथइसशख्सकी गवाही मंजूरकी जाय और पूछा जाय कि आया एक शख्स कीगवाही निश्चयमाननेके योग्यहै वानहीं जिसतरह किमैंगुफ्तगू करताहूं उसीतरह औरलोगभी मुजसेबातें करेंमैंनहीं चाहताकि इससुमद्दमेमेंकोई कठोरवचन मेरीजिह्वा सेनिकले केवलउन्हीशब्दोंको बरताहूं किजो मुनासिबाना और लिखनेके योग्यहैं जोबातें मेरेमनमें हैंवहीकमीशन केमेम्बरोंकेभीजहन नशीनहो जावेंतो दृढनिश्चयहैकिगायकवार चैनमेंरहेगाऔर यहसम्भवन होगाकि किसी देशके नीतिज्ञ गायकवारकेप्रतिकूलमुकद्दमे कानिर्णय करेंगेगायकवार तोक्याकिसीछोटेआदमीका फैसलाभीऐसी हालतमें प्रतिकूल नहींहोसक्ताजिस तरहकि गवाहीगुजरीहै जोवहतसलीमकीजावे तोअफसोस कामुक़ामहै किवह अपना सिंहासन और राज मुकट अपने हाथसे खोवे मालूम होताहै किजिस दिनगायकवार नजरबन्दकियेगये उसीदिन दामोदरपंथ भी कैद कियागया परन्तु मजिस्ट्रेटकेसम्मुख उसकोनहीं लायेऔरनउन लोगोंसे उसका

मुकाबला कियागया जो उसपरअपराध धरतेथे उसबातकी बखूबीतहकीकात नहींहुई प्रथमहीसे वहसिपाहियों केपहिरेमें क़ैदकियागया सचहदिन तक वहक़ैद किया गयासचह दिनतक वहक़ैदरहा यदिकोईमनुष्य एतिराजकरेकि सिपाहियोंकापहिरा होनाकोई खौफकामुकाम नहींहै परन्तु यह बात बिचारनीचाहिये किउसके मनमेंक्या २ सोचहोते होंगे और रोज़बरोज़ उसकी तबीयतकैसी दूसरी तरह परहोती गईहोगी॥

मैं इसतरह का क़ैदकरना भी एक प्रकार की सख़्ती समझता हूं इस शख़्सने बयान किया कि मैंने यहबयान इसलिये किया कि क़ैदसे छुट्टीपाऊं और जोकुछ उसने बयानकिया उसकी निस्बत सहीहोने का शुबह नहीं है यह बात उसने सच और ठीक वर्णन की है—उसने यह भी बयान किया कि फिरमैं पुलिसकीगार्डके सुपुर्दहुवा उस समय उसको रावजी और नरसूकी गवाहीसे इत्तिला हुई—वहखुदइक़रार करता है जोवह इन्कार भी करता तो यह इन्कार उसका निश्चय माननेके योग्यनथा औरउसको मालूमहुवाथा किगायकवार परकौनसा अपराधहै अर्थात्उसको मालूमहुवाथा कि विष दिये जानेका अपराधहै जिसमें संखिया और हीरेके चूर्णका जिक्रहै सिवाइसके एकशीशीकाभी जिक्रहै यहीशख़्सकहता है किमैंने शीशी दीथी और कहताहै किशीशीके देनेके उपरान्तमालूम हुवा कि शीशीमें क्याहै यह इजहार उसने भले प्रकार जिह्वाग्रकर रक्खेथे इन बातोंपर कमीशनको मेम्बरोंको खूबग़ौर करनाचाहिये इसगवाहकी हालतयहहै किजोकोई मनुष्यकिसीसे कहेकि अगरतुम गायकवारको क़ैदकरादोतो तुमबरी होजाओ और अगर गायकवार बरी होजावेंगे तो तुमक़ैद होजाओगे—पुलिसने शायदयहभी सिखादिया होगा कि क़ैदहोना और छूटजाना तुम्हारेही आधीनहै यदिगाय-

कथारक्रैद होगयेतो तुम छूट जाओगे और थोड़ी जागीरभी तुमको मिलेगी ईश्वर जाने ऐसी झूठी सौगन्दसे आगेको क्या परिणामहो जोऐसे झूठोंको दण्ड नहीं दियाजाताहै तो मेरे विचारसे किसी अपराधीको दण्ड नहीं होतामैं नहींजानता किदण्डक्या वस्तुहै जोदरोगहल्फी और मारडालने के उद्योग मेंदियाजाताहै मैंनेकभी किसीमुक़द्दमेमें नहींदेखा कि ऐसी साफ २ शहादत किसीमनुष्यने दीहो और इसशख्सको अपने झूठबोलनेका कुछभी बिचार नहुवा इससंसारमें अतिविचित्र बातेंहैं उनमेंसे एकइस मनुष्य कीभी गवाहीहै सब गवाहोंमें यहबड़ा चतुरहैपरन्तु जबवहगवाही देताथा और गायकवार कासाम्हना करायाथातो उसके मुखसे लज्जा और खेदके चिह्न प्रतीतहोतेथे और साफ मालूम होताथा कि यहशख्स दरोग हल्फीकररहाहै और उसकीझूठी सौगन्दखानाभी मैंसाबित करदूंगाइसमनुष्यनेकेवल अपनीहीगवाही नहींबनाईहै किन्तु औरोंकी गवाहीभीघड़ीहै विशेषकर हेमचन्दकी—इसमुक़द्दमे मेंप्रगटकरदूंगा कि पुलिसने बड़ीनिर्भयताकेसाथइस मुक़द्दमे मेंदखलकियाहैमुझकोहेमचन्दकीगवाहीमेंखासगुफ़्तगूकरनाहै और विशेषउससमैकेपरजबकिउसकेइजहारमेंप्रश्नकियेगयेतो उसकेबयानमेंकितनाअन्तरहोगयामैं जाहिरकरदूंगाकि इस शख्सके इजहारमें पुलिसने जियादहकारिस्तानीकीहै जोकि दामोदरपन्थ श्रीमान्मल्हररावकाप्राईवेट सीक्रेटरीथा इस लिये वहहरप्रकारसे विश्वसितहोगा जोकुछ हाल वहबया- न करताहै वहबिल्कुल गलतहै वहकहताहै कि हिसाबगलत हैं और उसकोबड़ा भयथाकि करनैलफियरसाहब हिसाबकी किताबें मंगवाकर नदेखें इसलिये जगह२पर खाईडलवादी अगर गायकवारपर अपराधठहरायाजाता तोउसमनुष्यको अवश्यदण्डहोगा और उसनेहिसाबोंको मशकूक किये और इसबातको उसकेकोई अदालततसलीमनकरती किगायकवार के फायदेकेलिये मैंने ऐसा कियाहै क्योंकि यहबात बुद्धि में

नहींआतीकि पहिलेहिसाब लिखाजाय और फिरवहमश्कूक किया जावे यदि उसपर लेलेनेका अपराध कायम कियाजाता तो उसको कोई उज्र नहीं होसक्ता था उसके पास सिवाय जुबानी उज्रकेकिमैंने गायकवारकी आज्ञासेकिताबोंको मश्कूक किया और कोई सुबूत नहीं है इसलिये उसका बयान निश्चय माननेके योग्य नहीं है—यदि कोई गायकवारके हाथका लिखा हुवा परचा वह पेशकरता तो निस्सन्देह उसके बयानका विश्वास होता कदाचित् निश्चय नहीं कि गायकवारके लिखेहुये परचेकेबिना वहकिताबोंको गलत करसक्ता इससे मालूम होता है कि दामोदरपन्थ ने खासअपने लाभ के लिये किताबों को गलतकिया गायकवार की कोईआज्ञा नथी यहशख्स कहताहैकि मैंआठबजे भोर से रातके दसबजे तक गायकवारके महलों में रहताथा और केवल भोजन के लिये अपने घर को आताथा यदि गायकवार इसमनुष्य को अपनाशरीक करना चाहते तो हरवक्त उससे सलाह करते परन्तु मालूम होता है कि इससे कभी किसी बात का मशवरह नहीं कियागया जोयह बातठीकहैकि गायकवार अपने नौकरोंसे सलाह कियाकरते थे और जो अपराध किउनपर लगाहै अगर असलकरना चाहतेतो इससुआमिलेको अपने नौकरोंके सुपुर्द करदेते और आप किसीसे वार्त्ता न करते यह जरूरनथाकिवह प्रतिमनुष्यसेअपने कार्य्यमें गुफ्तगूकरते ताकि उनमेंसे कोईनौकर उनसे फिर जातातो इनके बरखिलाफगवाही देता मेरेविचारसे गायकवारने कदाचित् ऐसा नहींकिया और दामोदरपंथकि उनका प्राईवेटसीक्रेटरी और उसके वर्णन करनेके अनुसार गायकवार का वह मशवरह कारथाउचितथा कि यहकाम इसीमनुष्यके सुपुर्दकरें॥

इस मुक़द्दमे में अजीबबात यह है कि गायकवार चाहते थे जितने जियादह आदमियोंसे इसबुरे मामले में वार्त्ताकरें उतनाही बेहतरहै किन्तु जाहिरकियागयाहैकि गायकवार

ने कैसे २ लोगोंसे मुलाक़ातकी उनकमीशनके मेम्बरोंकोमैं
ख़याल रुजूकरताहूं कि जो हिन्दुस्तानीहैं और ऐसे मुआम
लोंकोख़ूबसमझतेहैं कि उनकीराय दरबारैमुलाक़ात गायक-
वारके और लोगोंकेसाथ क्याहै पूर्व्वोक्त मेम्बरोंसे इसबातकी
प्रार्थनाकरताहूं कि हिंदुस्तानकी व्यवस्थाजानकारीके कारण
एकमुन्सिफ़ानहरायदें यदिइन्साफके साथरायदेंगे तो गायक-
वारको बहुतबड़ी सहायतामिलेगी अगरकमीशनके मेम्बरकि-
ताबके ११२ पृष्ठको देखेंगेतोअजीबकैफियतमालूमहोगीअर्थात्
में गायकवारकी आज्ञाफौजदारकेनाम संखियेके वास्तेलिखी
है दामोदरपंथका वर्णनहै कि गायकवारने आज्ञादीथी कि
खारिशकेलिये संखियामंगाईजावे सोउसनेफौजदारको चिट्ठी
लिखीपरन्तु संखिया नमिली यदि कमीशनके मेम्बर थोड़ासा
ग़ौरकरेंगे तो यहबात सबझूठमालूम होगी अगर वहचाहते
तोशीघ्रही संखियामिलसक्तीथी जबफौजदारकी गवाहीअदालत
में लीगई तो उसनेवर्णन कियाकि दामोदरपंथकी चिट्ठीतब
तरहसे ठीकहै मालूम नहींकि क्यों संखिया नहींमिली सो
दामोदरपंथका यह बयानसाफ गलतठहरताहै और दूसरी
बेर जबचिट्ठीभेजीगई तो दामोदरपंथका बयानहैकि गायक-
वारने दस्तख़तकिये परन्तु कदाचित् विचारमें नहीं आताकि
उन्होंनेदस्तख़त कियेहों जब लोगोंने पूछा कि संखिया किस
लिये मंगाई जातीहै तो दामोदरपंथका बयानहै कि मैंने
कहदियाकिरजीडण्ट साहबको विषदेनेकेलिये मंगाई जाती
है—मैं दामोदरपंथके इज़हारकोविचारताहूं कि पुलिस का
सिखायाहुआहै उनलोगोंने उससेकहदिया होगाकि अगर
तुम गायकवारपर अपराध साबितकर दोगे तो तुम्हारे लिये
अच्छाहोगा इसलिये अपनेफायदेकेलिये उसनेयहसब गवाही
दी है अगर वास्तवमें मंगाईगई तो उसने अपने किसीख़ास
कामके लिये मंगाई होगी दामोदरपंथकी हालत इसवक़्त
देखना चाहिये क्योंकि कारनैलफियरसाहब सदा तहक़ीक़ात

करतेथे कि गायकवारके महलोंमें क्या कारखाई होतीहै वह जानताथा कि अगरकरनैल फियरसाहब मेरीकिताबें मंगाकरदेखेंगे तो मुझपर बड़ी खराबी पड़ेगी यहशख्स कुछबदनामभीथा गायकवार उसकोरेजोडन्सीमेंभी नहीं लेजाते थे उसको सदाफिकर रहाकरती थी पन आगेको इस बातपर ध्यानकरनामुनासिब होगा कि आया दामोदरपंथका बयान बनायाहुवा है वा उसनेही करनैलफियर साहब को मारडालनाचाहा था कईबातें खूबखुलनहींआई उनकी निस्बतकमीशनका खयाल दर्जकरूंगा कई मुआमिले इस प्रकारके हैं कि उन पर बहुतसा गौर कमीशन को करना होगा और अगर बखूबी गौर किया जायगा तो कमीशन को भी संदेह होगा और जो मुख्यहालहै वह प्रकट होजावेगा यदि दामोदरपंथ ने संखिया मंगाई थी तो अपने किसी काम केलिये मंगाई होगी और अगर फौजदार से संखिया नहीं मंगाई तो किसीवजहसे उसने आज्ञालिखालीहोगी जो गायकवार आपही संखिया मंगाना चाहते तो अवश्यही अपने आज्ञा पत्रपर दस्तखतकरते और आश्चर्यहै कि गायकवारको कहीं संखियानहींमिलतीथी जबदामोदरपंथने गायकवारसे कहा कि संखियानहीं मिलतीहैतो गायकवारजरूरहीताकीदकरके मंगाते जो गायकवार आप संखियामंगाते तो लिखीहुई आज्ञाकोकभीदफ्तरमें नरहनेदेते क्योंकिउनकोखयालहोता कि जबकभी इसमुकद्दमेकी तहकीकातहोगी तो यहकागज गवाहीकी तौरपरहोजावेगा उनकोइसबातके कहनेकी क्या जरूरतथी कि जोसंखिया नहींमिलतीहै तो नूरुद्दीन बौहरे के पाससे मंगलो—नूरुद्दीनके बयानसेपुलिसकीएकऔर कारखाई प्रकटहोतीहै क्योंकि नूरुद्दीनने किसीसमयमें गायकवारपर नालिशकीथी अर्थात् गायकवारनेकिसीहेतुके बिना उसकोबेंतोंसे पिटवादिया और पांचहजाररुपये जुर्माने की लिया इससे प्रकट है कियहशख्स गायकवारके प्राणकावैरी

होगा दामोदरपंथने अपने बचनकोसत्यताके लियेइस मनुष्य को खूब चुनकर पेशकियाथा क्योंकि उसकोनिश्चय होगाकि खुशीसे बयानकरे किमैंने संखिया दीहैपरन्तु विदितहोता है नूरूद्दीन बौहरामुश्किफमिजाज आदमीहै उसनेऐसाबयाननहीं कियाकि इसलियेकई महीनेसेयहशख्सक़ैदहै अकबरअलीका बयानहै किकिसीबातके जाहिरनकरनेसेयहशख्सक़ैदहै पुलिस केलोगोंसेजहांतक होसकाइसशख्सपर सख़्तीकीचाहै नूरूद्दीन गायकवारकाशत्रुक्योंनहोपरन्तुइसमुकद्दमेमेंउसनेसच२बयान करदिया और उसनेहर प्रकारकी सख़्तीउठाई परन्तुएक नि-र्दोष आदमीको मरवाना नहीं चाहा यह अद्भुत यहहै किसूटर सा-हबके सन्मुख प्रथममेंकोई इजहारनहीं लिखागया जबपुलिस नेगवाहोंकोखूबसिखादिया तबसूटरसाहबके सामनेगवाहीली गईकोई गवाही ऐसीनहीं गुजरीकि दामोदरपंथ ने संखिया मंगाई हो दामोदरपंथ का बयान है किमैंने संखियेको मंग-वाया वहनूरूद्दीनसे संखिया कामंगवाना कहताहै परन्तुमेरे बिचारसे उसका यहबयान बिल्कुल झूठहै यदिवास्तवमें उसने संखिया मंगाईथी तोकिसीऔर शख़्ससे मंगाई होगी न नू-रूद्दीनसे परन्तुदामोदरपंथउसीके पाससेसंखिये कामंगवाना जाहिरनहीं करतायही संखिया जिसके लिये इतनी गुफ्तगू हुईबयान हैकि करनैल फियर साहबकी शरबतमें डाली गई औरकई बौहरोंसे संखिये केमोल लेनेकाबयानहै औरउनकी किताबें पुलिसके पासवर्त्तमानहैं जिस प्रकार कोकाररवाई करनीचाहियेथीवहकरसक्ते थे इसकेउपरान्त हकीम कीदवा काइजहारहै दामोदरपंथका बयानहै किजिससमयमें रेजी-डण्टसाहबके मस्तकमें फोड़ाथा तो बड़े हकीमके छोटे भाई एकशीशीमेंदवा बनाकर लायेथे परन्तुबहुत मनुष्योंके होनेसे उन्होनेयह शीशीनदी थाकुछ इनआमकी इच्छा करते होंगे दामोदरपंथ कहताहै किइसकेपहिलेमहाराजासाहबनेमुझसे कहाथाकि कुछमक्खियांऐसी इकट्ठीकरके जिनसे फफोलेपड़

जाते हैं वह हकीम के पास फौजदार के द्वारा भेजदोमैंने नरायणराव कमकरसे कहा कि अमुक प्रकार की मक्खियां इकट्ठी करके हकीम साहबके पास लेजाओ ॥

दूसरे दिन महाराजा साहबने मेरे साम्हने हरखियासे कहा कि हकीमसाहबको दवा बनाने के लिये कालेसापोंकी जरूरत है सो हरखिया सपेरोंको बुलालाया और कुछ सांप और मक्खियां हकीमसाहबके पास पसन्द करने के लिये भेजीगईं जब हकीमसाहबने सर्प और मक्खियों को पसन्द करके रखलिया तब महाराजा साहबने कहा कि हकीमसाहब को काले घोड़े के मूत की आवश्यकता है सो बापाजी को जो मुख्य घोड़ों के कामदार हैं आज्ञादो कि काले घोड़े का पेशाब हकीम साहबके पास भिजवादो यह बयान सुनकर बड़ा आश्चर्य होता है इस देशके मनुष्यों को मैं नहीं जानता हूं यह बयान कहानी की तौरपर मालूम होता है मैं इसविषयमें कोई राय न दूंगा जोलोग यहांके रहनेवाले हैं उनकी राय इस विषय में बहुत अच्छी होगी मालूम होता है कि ऐडवकेट जनरल जो मेरे योग्य मित्र हैं उनको इस प्रकारके इजहारसे कुछ लज्जा प्राप्त हुई होगी क्योंकि उन्होंने यह सब बातें दामोदरपन्थसे सुनीं और उन्होंने किसी और प्रकारसे सिद्धाकत नहीं कराई मैं जानताथा कि वह सपेरोंको बुलाकर पूछेंगे कि किसप्रकारसे सांपोंका विष निकालाजाता है और फफोलेवाली मक्खियोंका क्योंकर बर्त्ताव कियाजाता है और उनलोगोंकोभी बुलावेंगे जो इन वस्तुओंके संग्रह करने और पहुंचानेके लिये नियत हुयेथे परन्तु साहबने इन बुद्धिमानोंको अदालतमें नहीं बुलाया गवाहीकी रूसे मालूम हुवा कि किसी सफेद वस्तु ने इनसब वस्तुओं का अरक निकाल कर मिलाया गया और दामोदरपन्थके वर्णनके अनुकूल उसका इस प्रकारसे बर्त्ताव कियागया ॥

श्रीमान् महाराजा साहबने नानाकांबलकरसे कहा कि थोड़ी दवाई शीशीकी लाओ सो दोतीन दिनके उपरान्त गजाबाभी-

शोको लेकर जिसको हकीमसाहबने भेजाथा गायकवारको भेजाहुआ आया मैंनेउसमेंसे थोड़ीदवानिकालकर आरदूसरी एक शीशीमें करके सालिमको दी और कहदिया किकरनैल फियरसाहबके देनेकेवास्ते यहजहरहै इसमुक़द्दमे मेंयहहाल अजीबहै अबमैंकुछगुफ्तगू प्रथमसे इसमुआमिलेमें करताहूं॥

दामोदरपंथने वर्णनकिया हैकिजो शीशीमेरे पासआईथी वहएक उंगलीके बराबरलंबीथी औरदूसरीशीशीमें जोउन्होंने दवादीवहआधी उंगलीके बराबरथी औरवहछोटी शीशीअतर कीथी हालांकिअतरकी शीशीऐसीहोतीहै किअतरकम आता है और देखनेमेंबड़ी होतीहै विचारना चाहिये किजबदामोदरपंथने उसमेंदवाडाली होगीतो बहुत थोड़ीदवाआई होगी औरवह शीशीसालिमको रावजीके पासपहुंचानेको देदी और जोकैफियत इसीशीशीकी दवाकीहुई वहसबकोमालूम है॥

बयानहैकिहीरेका चूर्णविषके तौरपरबर्त्तायागयामैंनेबड़ी२ पुस्तकों मेंदेखापरन्तु मुझकोकहींसे सूचित नहुवा कि हीरा भीएकविषहै शायदयहांके लोगोंके इसको विषके होनेपरनिश्चयहोगाऔरबयानहै किहीरे इसीवास्तेलियेगये थे किकरनैल फियरसाहबकीशरबतमेंकूट२करडालेजावें परन्तु जौहरीकहते हैंकिहमने जन्मभरमेंकुटाहुवा हीराकभीनहींदेखा औरइसी प्रकारदोतीनगवाह औरभी वर्णनकरतेहैं जाहिरहैकिऐसी बहुमूल्यवस्तु ऐसेकामके वास्तेक्योंकूटीजाती सिवाय डाक्टरसेवरिशसाहब कोकिताबके औरकहींहीरेकाविषहोना नहींलिखाउनका यहबयानहै कि हिन्दुस्तानवाले कहतेहैं कि हीरा खानेसेआदमीमरजाताहै मेरेविचारसे हिन्दुस्तानियोंको फफोलेवालीमक्खियोंऔरसांपोंकेअरककायहीखयालहै मालूमहुवा कि दामोदरपंथनेकभी किसीकोहीरेका चूर्णनहीं दिया उसके निस्बतदामोदरपंथका यहबयानहै कियहहीरे नानाजीवतिलके द्वारामंगायेगये मैंनेपुड़ियाकोनहीं खोला और खोलनेबिनावह कहताहै किमुझसे नानाजीवतिल नेकहाथा किइसमेंतोनमासे

दिखाहुवा हीराहै और नैा[illegible]ोहीरे हैं फिरयह बयानहैकि मैंने यहहीरे यशवन्तराव को देदिये और उससेकह दिया कि करनैलफियरसाहबकी शर्बत में डाल देना परन्तुउसका यहभी बयानहैकि मैंनेउससमय कहदियाथाकि यहबातकुछ अच्छीनहींहै वाहक्या दर्दमन्दीहै कि विषदेना और यहभी कहना कि यहबात अच्छीनहींहै परन्तु इसजगहपर यशवन्त राव और दामोदरपंथकी गवाही प्रतिकूल हैं जिससेमालूम होताहै कि यशवन्तरावने कोईपुड़िया नहींपाई यशवन्तराव वर्णन करताहै कि मुझकोएक पाकिटमिली थी और कहाथा कि इसके तीनभाग किये जांय—अब मैं इसविषयमें तक़रीर करताहूं कि गायकवारपर जो संखियेके देनेकादोष लगा है वहबिल्कुलगलतहै मैंकमीशनके साहिबोंसे पूछताहूं किअगर गायकवारको हीरोंकेकटवानेकी इच्छाहोतीतो इतने मनुष्यों से वार्त्ता करनेकी क्याज़रूरतथी और गायकवारकोउसमनुष्य से कहने की क्या हाजतथी जिसने हीरे मोललिये कि तुम अपनी किताबको मशकूककर दो और ऐसे शककेडालने की कोईज़रूरत न थी क्योंकि उससमय गायकवारकेपास छोटे २ हीरेमौजूदथेजोतलवारकीमूठऔरम्यानपरजड़ेजातेथेउनको कटवालेते—जन्मभर वह हीरे मोल लियाकिये और हज़ारों रुपयेका हीराउनके पासमौजूदहोगा इतनातूलदेनेसे उनको क्याप्रयोजन था और संखियेके मंगानेमें जो इतना तूलहुवा यहभीबनायाहुवाहै सैकड़ों झूठमिलाकर एकझूठबातकोसा-बितकरना चाहाहरचन्द यह सबकाररवाई हुईपरन्तु कोई गवाहउसकी सिदाकतनहीं करता दामोदरपंथ बड़ाचतुरहै उसनेखूबसोचकर बयानकिया कि ऐसीगुफ्तगू दूसरे मनुष्यके आगेक्योंकरते इससबकाररवाई का बयानकेवलदामोदरपंथ केइक़रारसेहै जोहरियोंकी निस्बत बयानहुवाहैकि उनसेहीरे ले लियेगये और उनको बिदाकरदिया यहबात ज़ाहिरनहीं की कि जौहरियों से और गायकवार से कुछ वार्त्ता हुई हो

न नौकरियोंके इजहारसे मालूमहुवा किगायकवारसे और उनसे कुछबातेंहुईं वो किसीभांतिसे साबित नहीं होताकिगा-यकवारइसलेने देनेमें संयुक्तथे॥

माईलार्ड—दामोदरपंथके इजहारके विषयमें मैंने अपना बयानखत्म किया अब दामोदरपंथ के उस वर्णन के विषयमें गुफतगू करताहूं जोवह कहताहै कि कारनैलफियर साहबके विष दिये जानेके विषयमें मुझसे और गायकवार से वार्त्ता हुई उसका यह बयान बिल्कुल गलत है और किसीतरह से उसकी तसदीक नहीं होती और जब दामोदर पंथ के इस बयानकी तसदीक नहींहुई तो गायकवार साफइन्कार कर सक्तेहैंकि कभीऐसीबातें मुझमेनहींहुईं मेम्बरान् कमीशनका खयालइसबातपर रुजूकरताहूं कि दामोदरपंथ की गवाही प्रथमसे अन्त पर्य्यन्त कैसीहैकि उसको गायकवारकी कुछ भी परवानहींहै परन्तु वहहरप्रकारसे अपनी बरीयतकरताहै और गायकवारपर अपराध साबितकरताहै परन्तु मेरे विचार से उसके इजहार उसी केबयानसे गलत ठहरते हैं हरएक काग़जगायकवारकाजब्त करलियागयादामोदरपंथके इज-हारसे हीसाबितहोताहैकि कोईकाग़ज़फाड़ा नहींगयाऔर कोईकाग़ज इसप्रकारका नहींमिला जिससेखुद गायकवार मालूमहों परन्तु ऐसेकाग़ज़निस्संदेहमिलेहैं जिससेदामोदर पंथ आपही मालूमहोसक्ता है क्योंकि वह काग़ज उसी के लिखेहुयेहैं और गायकवार केहाथके नहींहैं जो गायकवार इनबातोंमें संयुक्तहोते तो अवश्यही उनकेहाथका कोईका-गज निकलताकिन्तु प्रकटहै किगायकवार इनबातोंकोजानते भीनथे और दामोदरपंथ कीवाकिफकारी बखूबीसाबित हुई किप्रथमसेअन्ततक साफसाबितहैकियहमुकद्दमा गायकवार परखड़ा कियागयाहै आप साहबों को उचितहै कि इसबात परखूबगौरकरें—जबइस मुकद्दमेके इजहारलिये जाते थे मेरे

बिचार झूठहोना उसी समयसे साबितथा जहां २ किस्याही-डली गई है वहां २ दामोदरपंथका जिक्रथा ॥

दामोदरपंथ ने वर्णन किया है कि यह स्याही मैंने अपने हाथसे नहीं डाली किन्तु जो लोगकारकुनहैं उनसे कहदिया था जिसकारकुनका दामोदरपंथ नामलेतेहैं वहइन्कारकरता है इस कारकुनका नामबलवन्तराव है उसने सूटरसाहबके सम्मुखइस बातका इकरार किया था (मिस्टरब्रैन्सन साहबने बलवन्तरावके इजहार सरजन्डबेलनटायनसाहबको दिखाये) सरजन्डबेलनटायन साहबने कहा कि मुझसे भूलहुई उसने सूटरसाहब के रूबरूभी इकरार नहीं कियाथा किन्तु उसने बिल्कुलइन्कार कियाकिमैंनेकभी हिसाबपरस्याही नहींडाली औरनमैंजानताहूंकि किसमनुष्यनेकिताबोंकोमशकूककिया ॥

माईलार्ड—मुझको यहभी निश्चयनहींहै कि दामोदरपंथ ने स्याहीडालीहो हरसूरतसे दामोदरपंथ ने किसीसे स्याही डालनेको कहाहोगा और इस प्रयोजनसे कहाहोगाकि जब स्याही डाली जावेगी तो हरशख्स का ध्यान इन्हीं धब्बोंपर जावेगा जो वास्तव में किसी रक़मके बदलनेकी इच्छा होती तो मैंने सुना है हिन्दुस्तानी लोगबड़े दस्तकार होतेहैं इस तरहरक़मको बदलाते हैं कि बनावटका संदेहभी नहींहोता सो स्याहीके डालनेकी क्याजरूरतथी परन्तु इसबातपर मैंफिर तक़रीर करताहूंकि अगर दामोदरपंथको इसबातकोछिपाने की इच्छाथीतो किताबें क्योंनजलादीं और जोउसको रक़मों के बदलने का सावकाश नथा तो जलानेके लिये तो वक़्था वहसबबनावट है एक निर्बुद्धिमनुष्य भी मालूमकरसक्ता हैकि अदालत के धोकादेनेके लियेयहसबबातेंबनाईगईहैंदामोदर-पंथकोखयालहोगाकि इसमुकद्दमे कीतहक़ीक़ात ऐसीअदा-लत केरूबरू नहोगीजैसीकी अबहुई यहशख्सबहुतही सुधाहै और अपनेइजहारोंको अपनेहीबयानसे खण्डनकरताहैकिसी भांतिसे उसके इजहार निश्चय माननेके योग्य नहीं हैं ॥

माईलार्ड-दामोदरपंथ पकड़े जानेके पहिले खूब जानता था कि रावजी और नरसुने क्या इजहार दिये हैं और इसबात कोमानताहैकि मैंनेसुनाहैकि करनैलफियर साहबको जोविष दियागया उसमेंहीरे और संखियेका चूर्णथा सोअपनाइजहारखूबघड़सक्ताथा जिसमें हीरे और संखियेका मुख्यकरके वर्णनहोताऔर दामोदरपंथने शीशीकाभी जिक्र सुनाहोगा उसकेलिये भी एकबातबनाली मैंनेदामोदरपंथके इजहारकी सम्पूर्णकैफियत कमीशनके सम्मुख बयानकी मुझकोदृढ़ आशा हैकि कमीशनके मेम्बर नीतिपूर्वक मुकद्दमेका निर्णय करेंगे जितनामुझको स्मर्णथा मैंनेठीक२वर्णनकिया औरनिश्चय हैकि साहबऐडवकेट जनरल जोबड़ेयोग्यऔरबड़े बुद्धिमानहैं अपनी सोचमें न्यायकोन छोड़ेंगे क्योंकि वह इस प्रयोजन से यहां नहींआयेहैं किएकनिर्दोष मनुष्यकोसिंहासनसे उतारेंउनसे जियादहऔरकिसीमनुष्यसे मुझेआशानहीं हैकि वहअपनी सोचमें इन्साफ जाहिरकरै औरनिश्चयहैकिवहअपनीइससोच में किसीकापक्ष न करेंगे न केवल हिन्दुस्तानी किन्तु यूरूपके वासिभी उनकीइससोचकेमुन्तजिररहेंगे॥

माईलार्डअबफतहचन्द हेमचन्दकेइजहारोंकेविषयमेंवार्त्ता करताहूं कमीशन कोस्मर्णहोगा किजबयह मनुष्यअदालतमें आयाथा उसकेमुखसेकुछ भयप्रतीत होतायामैंनेअपनीसम्पूर्णआयु मेंऐसाडरपोक गवाह नहींदेखाथा इससेप्रथमउसने पुलिसके सम्मुखअपने इजहारदियेथे अब उसने बयान किया कि सूटरसाहबके रूबरू जोमैंने इजहारदिये वहगलतयेऔर यहभी कहाकि मैंनेभय खाकर ऐसे इजहार दियेथेयहमनुष्य बहुतदिनों तकपुलिसकी हिरासतमें रहाजब उस पर बहुत सख़्तीकीगई औरवह काबूमेंआगया तबउसकेइजहारलियेगये उसनेवर्णन कियाकि मैंनेएक वरक़फाड़डालाथा औरपुलिस केकहनेसे नईरक्क़में उसपर लिखदीथीं उसनेयह भीकहाकि जबसूटर साहब केपासअपनेइजहार कोतसदीक करनेके वास्ते

आताथातोपुलिसकेलोगोंने मुझसेकहदियाथाजो तुमदस्तखत नकरोगेतोजम्मवन्धि में रहोगेसोऐसीधमकियोंसे उसने सूटर साहब केरूबरू गलत बयानकिया॥

सरकार कीओर से यहगवाह इस प्रयोजन सेपेश किया गया ताकि साबित करेकि नानाजीवतिलने हीरे मोललिये औरउनका मोल ३०००) रु० दिये यहरुपया बचनकीमदसे दियागया इसरुपये केलिये दामोदरपंथ नेलिखा था कि यह रुपयाब्रह्मभोजकेलियेदिलायाथा एकब्राह्मणइसीलियेबुलाया गयाथा किदामोदरपंथने यहरकमगलत लिखीहै यह रुपया ब्रह्मभोजके लिये नहीं दियागया किन्तुइन रुपयेके हीरेमोल लियेगये औरएडवकेट जनरल साहबने इसविषय की सत्यता प्रतीत करनेके लिये किहीरे मोललिये गयेशिवचन्द औरखु-शहालचन्दको बुलायाथा हेमचन्द फतहचन्द नेजो सूटरसा-साहबके रूबरू वर्णन कियाथा उसको कमीशन केमेम्बर सुनें मैंपढ़ता हूं दसहरेके दोतीनदिनके अनन्तर नानाजीवतिलने जिनको जवाहरखाने काचार्जहैमुझको औरऔर जौहरियोंके हीरेकी कनी लानेकेलिये आज्ञादी सोहम उसी दिन हीरे कीकनीलेगये औरनानाजीवतिल नेउनको देखकरअपनेपास रख लियादूसरे दिन क़ीमतके जियादहहोनेसे वह सब कनी लौटादीगई दो दिनके उपरान्त नानाजीवतिलने आज्ञा दी कि वहीकनी जोलौटाईगई फिरलेआओ इसलिये उसको मैं फिरलेगया फिरउसको तौलकर और मोलठहरा कररखली गई उसके दोदिनपीछे नानाजीवतिलनेयह आज्ञादीकिथोड़ी कनी हीरेकी और चाहिये सोमैं उनकेपास लेगया नानाजी जावाहरखानेमें नमिले परविनायकरावको जोनानाजीके साले हैं वहकनी देदी उन्होनेतौलकर उसकामोलठहराया और मुझको अपने साथ दामोदरपंथके पासलेगये दामोदरपंथने कहाकि क़ीमत जियादाहै अगरजरूरतहोगीतो रखलीजा-यगी इसमरतबे हीरोंकीदोपुड़ियांथी दोतीनदिनके उपरान्त

एकपुड़ियावापिसमिली और रखलीगई-उससमय उसनेकहा था कि एकपुड़िया रखलीगई और एक वापिस मिलीपरन्तु अब कहताहै कि दोनोंपुड़ियां वापिसमिलीं मालूमनहींकि पहिलाबयानठीकहै वा दूसराबयान इसकेसिवाय एकगवाहने वर्णनकियाहै कि करनैलफियरसाहबके विषदेनेसे दोतीनदिन पीछेनानाजीवतिलने मुझसेपूछाकि तुमने इनहीरोंकाबेचना किताबमें लिखाहै मैनेकहाहां उन्होंनेकहा कि जोकिताबमें लिखलियाहै तो उनवरक़ों को निकालडालो क्योंकिउन्होंने कहा था कि करनैल फियर साहब के विषदिये जाने में इन हीरोंका बर्तावहुआ यहबात सुनकर मुझेबड़ा भयहुआ इस लिये मैने वह वरक़जिनमें हीरोंका बेचना लिखाथा निकाल डाला और उनकी जगहपर नवीनवरक़ लगादिये इनहीरों का मोलजो मिलनेवालाथा उसकी यहसंख्याहै ६२७०)रु० है उनमेसे ३०००) नानावतिलने मुझकोदिये जो१० और२४ रोजनामचेके सफेमेंजमाहैं उसमेंलिखाहै किशिवचन्द खुशहाल चन्दसेरुपयेपाये परन्तुमैं कमीशनकेसम्मुख यहबात जाहरकर नाचाहताहूं कि यह गवाहबयान करताहै कि कुछ लेनदेन नहींहुआ दोपुड़ियां हीरोंकीगई थी दोनोंलौटादी गईपरन्तु मिस्टरसूटरसाहबके रूबरू इसमनुष्यने कहाहै कि जिनवरक़ों में लेने देनेका जिक्रथा वहफड़डालेगये और उनकी जगह नयेवरक़ लगादियेगये परन्तु उनके सम्पूर्ण इजहारोंसे मालूमहोता है कि पुलिसने उनपर सख्तीकरके खूबसिखाया है पुलिसने इस गवाहके साथ ऐसी काररवाई की है किहमने कभीनहीं देखी परन्तु हेमचन्द फतहचन्दने अदालत मेंइज- हारदियाकि १० और २४ सफेकाजिक्र जोमेरे इजहारमें है जिसको सूटरसाहबके रूबरूमैनेबयान कियाथाकिवह पुराने सफेहैं नवीन नहींहैं पुलिसनेमेरे इजहार आपहीलिखलिये थेमैं कमीशनके मेम्बरोंका इसबातपर ध्यान दिलाताहूं और प्रार्थना करताहूं किमुजको इसगवाहके इजहारमें हर तरह

की सहायता देंक्योंकि मैंहिन्दुस्तान के मुआमिलों को नहीं जानताहूं इसमनुष्य के इजहारमें जोनाहिरीबातें हैं उनको पेशकरूंगा परन्तु इसबातका तहक़ीक़ात करना कि उसका कितनाबयानठीकहै कमीशनके मेम्बरोंकेतअल्लुकहै मालूमहोताहैकि हेमचन्दनेपूना के जौहरीसे कुछजेवर मोललियाथा उसका मोल लियाजाना नानाजीवतिल कोमालूम हुवा सो उन्होंनेअपने सालेकेलिये वहआभूषणमोललिया उसकामोल दसहजार रुपये थे उसीआभूषण कामोल उसको हुण्डियां दी गईं ऐडवकेट साहबने उसकाबहुत कुछ वर्णन कियाहै परन्तु मुख्यहाल उनपरभी जाहिर नहीं हुवानानाजी वतिल और सुनारकीजुबानी विदितहोताहैकियह पुलिसकी बनावटहैमेरे बिचारसे जोइजहार मिस्टरसूटर साहबके रूबरू हुये बिल्कुल बनाये हुये हैं परन्तु अब हेमचन्दने अदालत मेंठीक२ बयान किया कि सटरसाहबने जबरदस्ती मुजसेदस्तखत करालियेथे अदालतमें जोबयान गवाहनेकिया वहसब ठीकहै जबपुलिस वाले किसीमनुष्य कोपकड़कर कैद करतेहैं औरहरप्रकारसे उसपर सख़्तीकरके कहतेहैं किजिस प्रकार से हमकहैं उसी प्रकार गवाही दोगे तो छुड़ाये जाओगे नहीं तो रिहाई न होगी इसलिये वहमनुष्य लाचार होजाताहै सोइसी वजह से जो गवाही पुलिस में लीगई वह गजानन्द वतिल के भय औरबहकानेसे हुई—माईलार्ड मेरीजुबानमेंपुलिसके शिकायत करनेकी सामर्थ्य नहींहै ऐसी कारवाइयां बहुत खराब हैं उचितहै किखूबउसका तदारुककियाजावेपहिले मैंनेऐसी बातोंकावर्णन करनाउचितनसमझा परन्तु अब इसमुकद्दमे काहाल मैं खूब जानता हूंमेरे विचारसे आदिसे अन्तपर्यन्त यहमुकद्दमा लचरहै और जोझूठीसौगन्द इस मुकद्दमेमें हुई हो उसपर खयाल होना चाहिये प्रथम से अन्ततक जो हेमचन्दकी किताबमें लिखाहैवह महाजनीतौरसे बिल्कुलठीकहै और आश्चर्य है कि पुलिस वालोंको इस बातकाभय न हुवा

कि जोहम वरक़ निकाल डालेंगे तो मालूम हो जावेगा कमीशन मेम्बरोंको मालूमहुवा होगाकि इसगवाह पर कितनीसख्तीकी गईहै क्योंकि जबवह अदालतमें आयाथा तो अति भयमानथाकिताबमेंलिखाहैकि ७-या ८-नवम्बरको मोललिये गये तो क्योंकरउस तारीखको हीरेमोललियेजाते और करनैल फियर साहब को विषदिया जाता और अधिक अद्भुत हैकि दामोदरपंथ और नानाजीवतिल केकागजमेंउसकाजिक्र नहो और केवलजौहरी की किताबके लिखेपर निश्चय किया जाय और उसकेलिये पुलिसका बयान हैकि पुराने वरक़निकाल दिये गये और नवीन लगादिये हेमचन्द कहता हैं कि पुलिसवालोंने जबरदस्ती करके मुझसे लिखवा लियाहेमचन्द अतिप्रतिष्ठित जौहरी है और गजानन्दजो अफ्सर पुलिस है उसकीकाररवाई सबजानतेहैं इससेअधिकमैं और क्या कह सक्ताहूं उचित है कि इस किताब पर भलेप्रकारध्यानकिया जावेकोई मंहाजनयह बातनकहेगा कि इसबात की तहरीर जोपुलिसमेंहुईहै ठीक है प्रथम से अन्ततक उस इजहार का खण्डन होताहै जोसूटरसाहबके रूबरूउसने वर्णन कियाथा हेमचन्दने अदालतमें साफनिर्भय होकरठीक२कहा इसलिये अदालतके रूबरू जोउसकेइजहार हुयेवहठीकहैं और सूटर साहब के रूबरू जो उसने बयान किया वह अशुद्ध हैं अबमैं नानाजीवतिल के इजहार पर कमीशन के मेम्बरों का ध्यान दिलाताहूं यहमनुष्यहीरोंकेमोललेने के विषयमें जो हेमचन्द से दामोदरपंथने लिये उसका मध्यस्थहै यह मनुष्य तसदीक करताहै कि एक पुड़िया लौटा दी गई और एक रखली गई परन्तु इसमनुष्यकेइजहारोंमें ऐसे प्रश्ननहीं किये गये जिससे प्रगटहोताकिउसने अपनेसालेके लियेमोललिये थे—ऐडवकेटजनरलसाहब ने कईप्रश्न उससेकिये थे परन्तुवहअसत्यवर्णन परदृढ़रहा-किएकपुड़िया लौटादीगई औरएकरक्खीगई ना-

नाजीवतिल कामुहर्रर कहता है कि नानाजीतिवलने मुझसे कहा कि मुझको याद्दाश्त देदो क्योंकि हीरे लौटा दिये गये इसगवाहने सूटरसाहबके रूबरू साफ २ बयान किया कि मैंने याद्दाश्त इसप्रयोजनसे वापिसदीथी कि फाड़डाली जावे यह बात सुनकरऐडवकेट जनरलसाहबको आश्चर्य हुआ जिनवरकों केलिये गलत होनेका बयानहै औरवरकोंपर छिलनेकानिशान नहींहै हेमचन्दकहता है किपुलिसवालोंके कहनेसे मैंनेवरक निकालडाले थे गजानन्दवतिल कुछ हिंदुस्तानीभाषाजानता है क्योंकिउसने कुछइजहार हिंदुस्तानीभाषामें दिये और कुछ गुजरातीमेंयहबयान उसकाहैकिमैं हिंदुस्तानीभाषा कोनहीं जानताबिल्कुल गलतहै मेरेबिचार से इसगवाह की गवाही कुछ भीबिश्वास केयोग्य नहींहै करनैलफियरसाहब केइजहार मेंदोतीनजगह नुक्सहैबड़े आश्चर्यकी बातहैकिऐसा ओहदेदारअसत्यकहे औरफिर उसकोदुरुस्त करेमेरेइसकहनेसे यह प्रयोजननहींहै किकरनैलफियरसाहब कीप्रतिष्ठा में धब्बालगे परंतु शायद्वह घबरा गयेहोंगे सो इसी प्रकारमैं विचारता हूं कि और गवाहों के इजहार में भी ऐसाही समझा जावे शायद उन्होंने वह इजहारदियाजो उनको बयान करने की इच्छानथी नानाजीवतिल कहता है कि मैं नहीं जानता कि हीरेकाचूर्ण किसकोकहतेहैं न मैं नेसुना और नमैंनेदामोदर पंथको दिया उसकायहबयानहै किदोपुड़ियां हीरे केचूर्णकी मैने दामोदरपंथको दीं यहगलत है उसनेकेवल हीरों कीदो पुड़ियांदीथींइन पुड़ियों में कुछहीरे और कुछ हीरे की कनी थी और वहकहता है किमहाराजा साहबके पास हीरे और उसकी बहुत कनीथी इससे प्रतीति होताहै कि यदि महाराजा साहब के पास बहुतसेहीरे थे तो उनको मोललेने की क्या जरूरतथी न संखिया मोललेने की तसदीक हुई और न हीरेके चूर्ण का किसी ने बयान किया जब यह दोनों बातें

साबित नहींहुई फिर और क्याबात बाकीरहगई नूरुद्दीन को विषके बेचनेसे इन्कारहै और हेमचन्द्रको चोरोंकी कमीसेपस झूठका खेमा जो खड़ाकिया गयाथा वह गिरपड़ा अब केवल दामोदरपंथकीगवाहीशेषरहीसोउसकीगवाहीकोदूसराकोई गवाह तसदीक नहीं करता आश्चर्य्य नहीं कि प्रथमसे अन्त तकउसका बयानगलतहो अथवा उसनेआपही विषदेनाचाहाहो मेरे विचारसे यह मनुष्य कदाचित् बरीनहीं होसक्ता वह भयमान असत्यवादी और दुष्ट प्रतीत होताथाजितनीकि वहदुष्टताकरे कुछ आश्चर्य्य नहींहै यहयखुसं चालाकआदमी है उसने आपही करनैलफियरसाहबको विषदेनाचाहाहोगा इसमनुष्यका आवागमन करनैलफियर साहबके पासनथावह अपनेस्वामीका रुपया बहुत लूटताथा और किताबोंमें जाल बनाताथा इसलिये उसको बड़ाभयहुवा कि जोकरनैलफियर साहब मेरीकिताबों को देखेंगे तो बड़ाकुल साबितहोगापस उसने करनैलफियर साहबको विष देनाचाहा और सालिम और यशवन्तरावको मुकर्रर किया कि उनकेहाथसे विषदि-लवाये मैंनीतिकी रीतिसे चाहताहूं कि इसदुष्टको दण्डदिया जावे जिसने एकरईसको खराबी में डालाहै यहबेचारा रईस आप मेम्बरोंपर भरोसा रखताहै कि गवाहीपर खूबगौरकरके उसको निर्दोष समझें—इस के उपरान्त कमीशन के मेम्बरोंने कमीशनको बरखास्त किया और टिफनखानेकेवास्ते गये॥

जबटिफन खाकर वापिस आयेतो सरजन्ट बेलनटायन सा-हबनेफिर स्पीचप्रारम्भकी—दामोदरपंथके इज़हारोंके विषयमें मैंकहचुका हूं किइसी मनुष्यकेबयान पर मुकद्दमेका मूल है परन्तु अद्भुत यह बातहै कि उसकेइजहार अन्तमेंलिये गये अबरावजी और नरसू की गवाहीका वर्णन करता हूं परन्तु रावजीके इजहारमें अभीकुछ वार्त्तानहीं करताहूं पूर्व्वमें मैंने कहाहै किदामोदरपंथने रावजीकेपासशीशी भिजवादीथीवह

अतरकी शीशीथी और कोईपतलीवस्तु उसमेंभरी हुईथीयह जाहिरनहींहुवा किजबशीशीरावजीके पासपहुंचीतो रावजी नेउसशीशी कोबदलकर दूसरीशीशीमें दवाडालदी परन्तु जो शीशीदामोदरपंथ केपासगईथी वहकेवलआधी उंगली केबरा-बरथी और रावजी के पास पहुंच कर वह बहुतबढ़ गई मेरे विचारसे शायदयह बातठीकहो क्योंकि बहुत दिक्कतके पीछे यहबातमुझको दरियाफ्तहुई दूसरीकिसी शीशीका जिक्रसि-वायइस छोटीशीशीके नहुवा कमीशन के मेम्बरों को भी स्मर्ण होगाकिमैनेअभीइसबातका कुछजिक्र नहीं कियाकिकरनैल-फियरसाहबकेनौकरोंनेवास्तवमें करनैलफियरसाहबको विष-देनाचाहाथा यानहीं दामोदरपंथ के इजहारों के विषयमें मैं खूबतकरीर करचुकाहूं और अब अदालतपर मुनहसिरकर-ताहूं कि जोकुछ कमीशनके मेम्बरों की रायहो-परन्तु रावजी कीशीशीकी गुफ्तगू करनी उचितसमझताहूं-बयानहैकिरा-वजीको ९ नवम्बरसे पन्द्रहदिन पहिलेयह शीशीमिलीथी परंतु जबउसकेपास पहुंचीतोवहबहुतबढ़ गईरावजीका बयानहैकि वहशीशी इसप्रयोजनसे दीगईथी कि करनैलफियर साहब के स्नानकेजलमेंडालदीजावे परन्तु वहकहताहै किमुझकोयह मा-लूमनथा किउसमेंविषहै याकोई और वस्तु है दामोदरपंथ के इजहारसे मालूमहुवा किउसमेंकौनवस्तुथी रावजीकेइजहार सेपायाजाताहै किउसनेअपने नेफेमेंशीशी कोरक्खाजिस्सेउसके पेटपरफोड़ाहोगयाउसीसमयउसकोमालूम हुआ किजोफियर साहबकेस्नानकेजलमेंयह दवाडाली जावेगीतोउनकोबड़ाकष्ट होगायद्यपि यहशीशी करनैलफियर साहबके कष्टपहुंचाने के लियेथीपरन्तु रावजी भयमानहुआ और उसने दवाको फेंककर शीशीकोरखछोड़ा ताकिउसमेंसंखिया घोलकरगिलासमेंडाले सोबयानहै किरावजीने दामोदरपंथकी प्रेरणाके अनुकूलइसी शीशीमेंसंखिया घोलकरडाला परन्तु मेरे विचारमें यहबातन

हीं आतीकि जबवहशीशीअतरकीथीतो क्योंकरउसमेंसंखिया कोडालकर घोलाहोगा सिवा इस शीशीके और किसी शीशी कावयाननहींहै शायदयह बातरावजी भूलगयाकिजोमैंऐसा कहूंगातो लोगएतिराजकरेंगे मैनेइस शहादतपर खबध्यान कियामुझकोकिसी जगहपर दूसरीशीशीका जिक्र नहीं पाया जाताऔर असम्भवित मालूमहोताहै किऐसीछोटी अतरकी शीशीमें संखियाशर्बतमें मिलानेके लियेघोला गयाहो ऐसे २ गवाहोंकेबयानपर एकमुकद्दमा गायकवारपर जुर्म साबित करनेके लियेखड़ा कियागया है इसमेंमेरे कहनेपर कुछमौ-कूफनहीं मुकद्दमेमें बनावटकाहोना बिल्कुलसाबित होताहै यद्यपियह मुकद्दमागढ़ागया परन्तु यह खयालनहुआ किवह लोगजिनकी गवाहीलीजायगी किसप्रकारकेहैं सोझूठेगवाहों काक्रमटूटगया इनझूठे गवाहोंकी गवाहीएक दूसरेकेप्रति-कूलहै मैंअपने दोस्तऐडवकेट जनरलसे पूछताहूं किक्यावहदो शीशीथींजो दोथीं तोअतरकी शीशीक्याहुई॥

रावजीने वर्णनकियाहैकिदामोदरपंथके पाससे उसकोशी-शीपहुंचीथी अबमैं कमीशन के मेम्बरों को इसबात पर ध्यान करताहूं किउनके विचारमेंरावजी की गवाही कैसीहै जब यहशीशीअरकसमेत रावजीको करनैलफियर साहब के मार-डालनेके लियेदीगई तोनिश्चय होसक्ताहै किजब उसीशीशीसे उसको कष्टपहुंचा तो उसनेशीशी कीदवाको फेंकदिया जो यहबात रावजी को निश्चय मानो जावे तो यह संदेह उप-जताहै कि उसकोइच्छा करनैल फियर साहबके मारडालने कोनथीमेरे विचारसे यहसम्भव है कि दामोदरपंथ ने करनैल फियर साहब के मारने का इरादा किया हो और करनैल फियरसाहबके नौकरोंने न कियाहो मैं इस बातकी तसदीक नहीं कर सक्ता क्योंकि मुझको इस बातसे कुछ प्रयोजन नहीं है रावजी ऐसा दुष्ट नहीं है जैसा कि वह अपनेतईं जाहिर

करना चाहता है यह होदशा नरसू की है क्योंकि प्रकट है कि जब शीशी के कारण रावजी को कष्ट हुवा तो उसने शीशी की दवा को फेंक दिया उचित था कि सरकार की ओर से इन सब बातों की तसदीक़ की जाती यह भी ज़ाहिर किया गया है कि रावजी को उन दिनों में शीशी दी गई थी जब कर्नेल फियर साहब के फोड़ा था—अर्थात् संखिये के देने से महीना डेढ़ महीना पहिले दी गई थी—रावजी ने वर्णन किया है कि जब शीशी मिली नरसू उपस्थित था और नरसू ने अपने इज़हार में बयान किया है कि नवम्बर के आदि में शीशी आई थी अर्थात् उन दिनों में जबकि अक्तूबर महाराजा साहब से वार्त्ता हुई थी परन्तु यह बात गौर करने के योग्य है कि रावजी ने मिस्टर सूटर साहब के रूबरू अपने बयान में शीशी का कुछ भी वर्णन न किया दामोदरपंथ ने इब्तिदा में शीशी का जिक्र किया था मेरे विचार से जो कुछ उसने वर्णन किया वह ठीक है और जो सही है तो कमीशन के मेम्बर उसपर खूब गौर करेंगे रावजी ने अपने इज़हार में बयान किया है कि मुझ को हिदायत होगई थी कि संखिया शीशी में डालकर जल मिलाया जाय और उसे अच्छी तरह हिलाकर शर्बत में डाला जाय परन्तु वह इस बात का जिक्र नहीं करता कि यह शीशी दामोदर पंथ के पास से मुझको पहुंची थी और दामोदरपंथ अपने इज़हार में कहता है कि यह शीशी मैंने महाराजा साहब के पास से पाई और मैंने अन्त की शीशी में उस दवा को करके रावजी के पास भेज दिया और अद्भुत यह है कि रावजी ने प्रथम उस शीशी का जिक्र अपने इज़हार में नहीं किया था दामोदरपंथ शीशी की सूरत कुछ और बतलाता है और रावजी और कुछ कहता है इस शीशी के बारे में बराबर अन्तर है दामोदरपंथ जो बयान करता है कि इस शीशी में अमुक २ वस्तु का अरक था इसका भी मुझको निश्चय नहीं है और यह भी विश्वास नहीं आता कि थोड़ीसी संखिया जो पानी में घुली हुई हो और वह शरीर में छू जाय तो

किसतरह फोड़ा होसक्ता है इस विषयमें मेरे मित्र ऐडवकेट जनरलने डाक्टरग्रेसाहब की गवाहीली और रावजीका फोड़ा उनकोदिखाया मुझेहंसीआती है कि ऐडवकेट जनरलकिसत-रहचाहतेहैं कि यहबात साबितहोजावे डाक्टर ग्रेसाहब ने फोड़ेकेचिन्ह कोदेखकर वर्णनकिया कि हांतीन निशानपेटपर हैंपरन्तु जो गवाहीशीशी और उसकीदवाके निकलनेके बारे मेंहुईजिससे कि पेटपर फोड़ाहोगया इनसबमें अन्तरहैडाक्टर ग्रेसाहबका नामसर्वदा इसबातमें विख्यात होगाकि उन्होंने हिंदूकेफोड़ेके निशानकोजोउसकी पेटपरथादेखामैंपहिलेकह चुकाहूं किकेवलएक गवाहऐसाहै जिसकी गवाही निश्चय माननेके योग्यहै जहांतक इसशीशी और मक्खियों का जिक्र हैव्यर्थहै अगरयह मुकद्दमाआम तौरकाहोतातोलोग इसको ठट्ठे और हंसीमेंउड़ा डालते और इतना तूल न करते परन्तु जबकि ऐसी गवाही परएक रईसको सिंहासनसे उतारेजाने कासंदेहहैतो इसबातपर खूबगौर करना चाहिये ऐसे लोगों की गवाही की तहकीकात ऐसे अफसरोंके रूबरूहोनीचा-हियेथी जोनीतिमानथे नउनकेरूबरू जोचाहतेथे किजिसत-रहहोसके एकरईस को दुःखपहुंचे मैंशीशी के जिक्रको तमाम करकेपूर्ण करताहूं जो बिल्कुल लचर है ऐसाकभी किसीत-वारीखमें लिखानहीं देखा गयाअब मैं रावजी की एक और काररवाईका जिक्रकरताहूं अर्थात् विषकीपुड़ियों काहाल कहताहूं यदिमैंकिसी जगहपर चूकजाऊं तो मेरेदोस्तऐडव-केटजनरल और कमीशनके मेम्बरमुझको बतादें॥

बयानहै कियहविष की पुड़ियां रावजीके पास आईंहालां कि उसकी कुछअसलियत नहीं है खयालहै किदामोदरपंत ने यह पुड़ियां सालिम और यशवन्तराव को दीथीं और फिर बयानहुवाहै किछःसातआदमियोंके साम्हनेदीगईं उनलोगों कीगवाहीभी लीगईपरन्तु वहबयान बिल्कुलझूठथाहै इसमुक-

इसमें अच्छीबातें करनेकेलिये उचितहैकि रावजी का इज-हारपढाजावे वहयहहै किप्रथमउसने सूटरसाहबके सन्मुख वर्णनकिया किसालिम और यशवन्तराव ने मुझसे कहा कि कि जो तुम महाराजा साहब के पास चलोगे और जो कुछ वह कहेंगे उसकोतुम करोगेतो तुमकोइतना रुपयादिया जा-वेगा कि तुमकोनौकरीकी आवश्यकता नरहेगी और जन्मभर अपनेपरिवार समेतघर बैठखाओगे किन्तुतुम चाहोगेतोतुम्हें नौकरीभी मिलेगी और वहकार्य अच्छीतरह अंजाम दोगेतो एकलक्ष रुपयातुम्हें मिलेगा—कर्नैलफियर साहबको मारडा-लनामानो उसकार्यका सिद्धकरनाथा जबहम इसबातकेकरने पर राजीहुयेतो महाराजासाहबनेहमसेकहाकितुमकोसालिम और यशवन्तके द्वारापुड़ियां मिलेंगीदो तीनदिनके उपरान्त जमादारनेदो पुड़ियां मुझकोदीं और कहाकि तीन दिनतक बराबरइन पुड़ियोंको बर्त्तीया जाय और इस बातको सालिम और यशवन्तरावने महाराजासाहबके रूबरूभी हमकोसमझा दियाथा कि क्योंकर पुड़ियोंका बर्त्ताव होगा दोतीनदिनतक मैंने पुड़ियोंकी दवाको नहीबर्त्तीया क्योंकि मुझको मौका न मिलाहम लोगोंने जबमहाराजासे वार्त्ताकीथी तोउसमें यह बात ठहरीथी कि करनैल फियर साहबको शर्बतमें विषदिया जायक्योंकि करनैलफियर साहबजब हवा खाकर आतेहैं तो शर्बत पीतेहैं—(कमीशनके मेम्बरोंको इसबातपर ध्यान धरना चाहिये) इसलिये दोतीनबेर पुड़ियोंको जबमौकापायाशर्बतमें डालदिया यहशख्स और जगहपर अपनेइजहारमें कहताहै कि सालिम और यशवन्तरावके कहने से इन पुड़ियोंकी कई छोटी २ पुड़ियांबनाई और अपनीपेटीकी जेबमें रखलीं यह पूर्व्वोक्त इजहारउसने मिस्टरसूटर साहबके रूबरूदिये और अदालतके साम्हनेबयान कियाकि जोदो पुड़ियां मुझकोमिली थींउनका मुख्तलिफ रंगथा मैं समझा कि जो पुड़ियां श्वेत रंगकीहैंवहअधिक कष्टदायकहैं उससफेद पुड़ियामेंसेथोड़ी २

दवालेकर उसश्वेत पुड़ियामेंमिलादी और शेष उसश्वेतपुड़िया कोअपने पासरहने दियावही दवामेरी पेटीकी जेबमें है॥

अब विचारनाचाहियेकि इनदोनों वाक्योंमें कौनसा वाक्य ठीकहै क्योंकि इनदोनों वाक्योंमें बड़ाअन्तर है किसीतरहसे उसकेदोनों बयानसचनहीं हैं वहकहताहैकि मुझकोशंकाहुई कि सफेददवा भूरीदवासे अधिककष्टदायक है यहबात पूछने के योग्यहै कि उसकोकिसकारण यहसंदेहहुवा क्योंकिवह कहताहैकि जबमुझको यह पुडियांमिली थीं तबमुझको कुछ मालूम नथा कि उनमें क्यावस्तुहै दामोदरपन्थके इजहारसे मालूमहुवाकि यहदोपुड़ियां अन्य २ रंगकेदवाकी नथींकिन्तु पुड़ियोंको दवाभिला कर उसको दीगईथी रावजीको केवल इतनाकामबाकी था किउसको तीन जगहकरके तीनदिनतक शर्बतमेंमिलायाकरैमालूमनहींकि यहदोपुड़ियांक्योंपेटीमेंरह गईं और यहदवा एकप्रकारकी नहोगी कईप्रकारकीहोगी रावजीने वर्णनकियाहैकिमैंने सफेद दवाकोअलगरक्खा और उसश्वेतपुड़ियामें से थोड़ी २ दवामिलादीथी परन्तु मैं कहताहूंकि जब यहदवायें मिलीहुईं थीं तोउनकोफिर मिलानेकी क्याजरूरतथी और फिरएकसफेदपुड़िया क्योंकरबचरही क्या मुखतलिफ बयान उसका मानने के योग्यहै इसकेसिवा जिसतरह उससे कहागयाथा उसनेक्योंनहीं सबपुड़ियोंको शरबतमेंडालदीं और एकसफेद पुड़ियाके रखछोड़नेकी क्या जरूरतथी जिसतरह कि बयानहुवा है कि हीरेकाचूर्ण और जहर दोनोंमारडालने वालेहैं तो फिरक्यों एक पुड़ियामें से थोड़ीसी वस्तुडाली और थोड़ीरहनेदीजबकरनैलफियरसाहब के विषदेने केलिये रावजीको नियतकिया गया और उसको पुड़ियांदीगईं तो यहउचितथा कि जो दवाजियादह मारने वालीथी उसको जियादहडालता और जोकमथी उसकोकम डालता यदिमिस्टरसूटरसाहब और इसमनुष्यका बयानठीक है तो पेटीमें दोपुड़ियां निकलतीं और इनपुड़ियों में केवल

संखिया न होती किन्तु हीरे काचूर्णभी होता ऐसे इसप्रकार पर ध्यान करने से बिल्कुल अन्तरपाया जाताहै कोई मनुष्य नहीं कहसक्ता कि कौन बयानठीक और कौन गलतहै आप साहिबोंको स्मर्ण होगा जोबयानहुवाहैकि जबगजानन्दनेदामोदरपन्थकेदफ्तरमें कुछकागज मशकूक देखेतो ग्रीमही सूटर साहबकोबुलाया और जबअकबरअलीनेरावजीकीपेटीसेपुड़िया निकालीतबभी सूटरसाहब बुलायेगये अजीबबातयहहै किजब कोईबात पूछीजातीथी तोमिस्टर सूटर साहब बुलाये जातेथे उनकेसाम्हने कभीकोई नईबातनहींपूछी गईरावजी इसपुड़ियाको रखकर बिल्कुलभूलगयाथा परन्तु अकबरअली तोबड़ा चतुरहै उसनेपूछा कि जिस तरह ग्रीशीसे दवा निकाल कर पेटपर निशानपड़ गयाउसी प्रकारपुड़ियाका निशानपेटीमें नपड़गयाहोइसीहेतु उसनेरावजीसे पूछाकि तुमपुड़ियाकहां रक्खाकरतेथे रावजी बेचारह भूलगया और उसेस्मर्णनरहा उसनेकहा कि मैंपेटीमें रक्खा करताथा सोपेटी मंगाई गई जिसतरह रावजी पेटीमें पुड़िया रखकर भूलगया इसीतरह जोहरएककातिल हिन्दुस्तानके शस्त्रको रखकर भूलजायाकरेतो क्या अच्छीबातहै परन्तु इसबयानसे पहिलेकुछ और वर्णनहो चुकाहै कि जबकरनैल फियरसाहबने यहबातपूछी किहमको विषदियागया तो सालिम उसी समयघोड़ेपर सवार होकर भागाहुवा आया और रावजीसे कहा कि जो कोई पुड़िया शेषहोतो फेंकदेना॥

कल्पनाकीजिये यदिरावजी पेटीमें पुड़ियाको रखकरभूल गया था तो सालिमके कहनेसे अवश्य याद आजाता परन्तु रावजीका ऐसा क्याहाल होगयाथा कि उससमयभी उसको स्मर्ण न आयाअकबरअलीनें मिस्टरसूटर साहबसे कहा किजो पेटीकी तलाशी लीजायतो जरूरकोई पुड़िया निकलेगीमिस्टरसूटरसाहबको अकबरअलीका इतनानिश्चयथा किउन्होंने आज्ञादी कितुमजाकर पेटीलेआओ आपनहीं गये हालांकि

उनकोआपही जाना उचितथा वास्तवमें अकबरअलीने सूटर साहबको बहुतअच्छीरायदी उचितहैकियहपेटी अजायबखाने मेंरक्खीजावे और अकबरअली चिड़ियाखाने में बन्दकियेजांय ताकिइसपेटी और अकबरअलीका सहस्रोंमनुष्यदेखें जबअकबरअलीने पेटीकोटटोलातो तुरन्तही मालूमहुवा कि जेबमें एकपुड़ियाहैइसलिये मिस्टरसूटरसाहबबुलायेगये मुझकोबड़ा आश्चर्य्यहोताहैकि मिस्टरसूटरसाहबने किसीप्रकारका विचार नकिया और इसमुआमिलेको ऐसेमनुष्यको सौंपाजिसको वहजानते थे कि बड़ा चालाक है और जहांतक होसकेगा लोगोंकेफंसानेमेंकोशिशकरेगा अकबरअलीनेवर्णनकियाहैकि ईश्वरकी कुदरतसे यहपुड़ियापेटीमें मिलगई परन्तुयह ईश्वर की कुदरत अकबरअलीके हाथोंसे प्रकटहुई जिसतरह मैंने जाहिरकिया है कि दामोदरपन्थका इज़हार संखिया और हीरेकेचूर्णके विषयमें गलतहै उसीतरह रावजीका इज़हार भी पुड़ियाकेनिकलनेमें झूठहै मैंपहिलेकह चुकाहूंकि शीशी का जिक्रजबतककि दामोदरपन्थने रावजीने नहींसुनाजाहिर नहीं किया॥

पुड़ियोंके इस्तैमाल करनेके बारेमें एकपुड़िया का बर्त्ताव एकप्रकारसेवर्णनकरताहै और और पुड़ियोंका बर्त्तावदूसरी रीतिसेकहताहै और अन्तकोबेर एकपुड़िया केवलसंखियेकी पेटीसेनिकलना मशहूरहै यह इसभांति के बयानहैं कि जिस मनुष्य को थोड़ीभी बुद्धिहै उसको कदाचित् निश्चय नहोगा सिवाइसके जबउसबयानमें अकबरअलीसा मनुष्यसंयुक्तहोता सिवाझूठ और गलतकाररवाईके और कोईबात नहींसमझी जाती मैंकमीशन और संसारभरके साम्हने अकबरअली पर यहअपराध कायमकरताहूंकि उसने यहपुड़ियापेटीमेंरक्खी और पुड़ियारखनेकेउपरान्त मिस्टरसूटरसाहबकोजोप्रतिष्ठित अफ्सरहैं बुलायाताकिवहपुड़ियाके निकलनेकोपेटीसेसिदाकतकरें रावजीकी गवाहीप्रथमसेअन्ततकबिल्कुलबनावटहै॥

कुछ संदेह नहींकि पेडरू एक प्रतिष्ठित गवाह है उसकी प्रतिष्ठामें कोई धब्बा नहींलगा परन्तु यह मनुष्य जातिका पुर्त्त-गीज है और किसीहिन्दूने उससे साजिशनकी होगी और इस पुर्त्तगीज़ी गवाहने पुलिसकी कारखाईके पहिले गवाहीदी यदि पुलिसको अवसर मिलतोतो इसमनुष्य सेभी अपनी इच्छाके अनुकूल गवाही दिलाते मिस्टर ऐंडगन्टन साहबने पेडरूकी गवाहीली थी यह साहब अतिप्रतिष्ठित और विख्यात नीतिमान हैं पेडरू का बयान है कि मैंने केवल एकबेर रुपया पाया और सौगन्द खाकर कहता है कि रावजीके इजहार गलत हैं अब कमी-शन को अखतियार है कि पेडरू को माखूज करे वा छोड़दे परन्तु किसीप्रकार से निश्चय नहींकि २५ वर्षका नौकर किसी हेतुके बिना अपने स्वामी के मारने का उद्योग करे इसके विशेष और भी बहुतसी गलतियां रावजीके इजहार में साबित करसक्ता हूं रावजीने वर्णनकिया है कि गायकवारने पेडरूसे वही बातेंकीं जोमुझसे कीथीं उसने अपने इजहारमें बयानकिया कि गोवा नगरसे आकर दो तीनदिनपीछे पेडरू गायकवारके निकटगया था इसलिये विदितहोता है कि ६-वा-७ नवम्बर कोगयाहोगा अर्थात् जबकि रावजी और नरसू का बयान है कि हमगये थे इसकेउपरान्त कमीशनके मेम्बरोंने अदालतकोबरखास्तकिया॥

अठारवें दिनका इजलास॥

दूसरे दिन फिर कमीशनके मेम्बर अदालतमें एकत्रहुये और सरजन्टबेलन टायनसाहब ने फिर इस्पीच प्रारम्भकी उन्होंने वर्णनकिया कि कमीशनके मेम्बरोंका खयाल इसबातपर रुजू करताहूं कि रावजी और नरसूकीगवाहीकरनेल फियर साहब के सामने किसप्रकारसे लीगई मैंनहीं चाहता कि कमीशन केमेम्बरों कावक्त वृथाखोऊं केवलइतनी वार्त्ताकरनी चाहता हूं जोउचितहै और जिससे अपराध काखण्डनहो और इसके विशेष जिसकामकेलिये मैं यहां आयाहूं और मुझको मेहनता-

ना मिलाहै उसको मनसेदेना चाहताहूं रजीडन्सीमें बहुतसे ऐसेनौकर हैं जिनकी प्रतिष्ठित पदवीहैं प्रथम में रेजीडन्सीके नौकरोंने एकनिर्दोष मनुष्य कानाम लिया किसी तरहसेउस-कीनिर्दोषता पर भय और लज्जान हुई ऐसे लोगोंका हाल लिहाजकरनेकेयोग्यहै किपहिलेआपही मारडालनेपरतय्यार होंऔर फिरएक निर्दोष मनुष्यपर अपराध लगावें और अब महाराजासाहबपर अपराध धरतेहैं इससम्पूर्ण गवाहीमेंऐसी दुर्गन्धआतीहै किमुझकोमहाग्लानि होतीहै और सबबनावट मालूमहोतीहै इनसबगवाहोंने सम्मत करकेकिस प्रकारसेफौज पर बहुतान बांधाथा अबमुझको रावजीकी बाकी गवाही पर बार्त्ताकरनीहै धीधीऔर पेटोकेविषयमें मैंवर्णन करचुका अब छोटी२ बातोंके केलियें कुछबार्त्ता करनी बाकी है ॥

अबमैंपुलिसकी काररवाई परवार्त्ताकरूंगा मालूमहोताहै कि पुलिसनेरावजीकेनिरखतभी और गवाहोंकेसदृशकाररवाई की यहमनुष्य २२-तारीखकोपकड़ागया और उसीदिन की संध्याकोउसने कुबूलकियाकि मैंने कारनैलफियरसाहबको विष दियामालूमहोताहै कि उससेमुआफी कावाइदाकिया गया अर्थात्यहकि जो वहजुर्मसे इकबालकरेगा तो उसकाअप-राधक्षमाहोजावेगा परन्तु उसनेयह सबबातें अकबरअली की कुछगुफ्तगूके पीछे कबूलकीं और कबूलकरनेके उपरान्त उस को सरल्युइसपोलोसाहब और सूटर साहबके निकट लेगये रावजीने उससमय कबूलकियाजब अकबरअली और पुलिसके लोगोंने उसको भय दिलाया था क्योंकि अकबरअली अब्दुल अली और गजानन्दने सम्पूर्ण काररवाई तहक़ीक़ातके करते कीथी इनलोगोंके विषयमेंमुझकोलाचारीसे बयानकरनापड़-ताहै मिस्टरसूटरसाहब को मैं बरीकरता हूं परन्तु यहसाहब गजानन्दकि प्रकृतिको जानतेथे और जानतेथे कि गजानन्द एकबेर बदनामहोचुकाहै और भलीभांतिजानतेथे कि जोइस मुकद्दमेकी तहक़ीक़ात ऐसेलोगों को सौंपीजावेगी तो वह

बहुतसहृतीकारेंगेक्योंकिउनकोकिसीकोपरवानहींहै वहजानते थे कि गजानन्दकैसा आदमीहै और उसपर क्या २ अपराध लगाहैयहउचितथा कि पहिले सूटरसाहबगवाहोंकीगवाही लेते फिरउसको पुलिसकेसुपुर्दकरतेक्योंकिजबपुलिसनेपहिले से उनको भय दिलायातो जोचाहा उनसे इकराराकरालिया शोशो और पेटीका किस्सा तो मैं कहाचुका हूं जो कमीशन केमेम्बर ऐसीमेरीबड़ी तकरीरसेक़ायलनहींहैंतो मालूमनहीं कि और किसबात्तों से क़ायल होंगे रावजी २२ नवम्बर को पकड़ागया और २३,२४,२५,नवम्बरको तीनबेर उसके इज़-हारलियेगये इसकेउपरान्त सरल्युइसपीलीसाहबके सम्मुख इसवाइदेसेलेगयेकि तुम्हाराअपराधक्षमाहोजावेगा—ढिठाई क्षमाहे—यहअजीबबात है कि दामोदरपंथ इसमुकद्दमे का मूल और रावजी उनका कारकुन ठहरा दिया गया है उन लोगोंका अपराधतो क्षमाहो परन्तु नरसूजिसकाथोड़ा सा अपराध है उसका उपराध क्षमान हुवा मेरे विचार से नरसूका अपराधक्षमाहोना चाहियेथा नइनदोनोंका क्योंकि नरसूकुवेंमेंभी गिरपड़ा औरकहताहैकिमैं दुर्भाग्यतासेखूनियों कासाथी हुवाहूं मेरेविचारमे नरसूने मारनेकाउद्योग नहीं कियाऔर उसकेहकमें इन्साफनहीं हुवामुझको आशाहै कि यहमनुष्य उसदगडले वरीकिया जावेगा जिस सजाका उसके निरबत मुआफनहोनेकी वजहमे गुमानहै॥

अगस्तसन् १८७३ ई० मेंपहिले रावजीकी महाराजा सा-हबसे मुलाकात हुईथी बयानहै कियह मुलाक़ात सालिमके कहनेसेहुईथी उसदफे कुछविषका वर्णनहुवाकेवलइतनाही बयानहै कि सालिम चाहताथा कि रेजीडन्सीके कुछ नौकर वशमेंहोजावें और वहांकी खबरें दियाकरेंमालूमहोताहै कि जबपूर्व्वमें कमीशन बैठीथी तो रावजीने सालिमसे कुछ खबरों की इत्तिलाकीथी फिरसालिमने अपनाविवाह किया औररुपयों कोमांगासोकुछ रुपयाउसको दियागया परन्तु यहप्रगटनहीं

हुआ कि सिवाय खबरोंके ओर किसी बातकोभी उससे दरखास्तकी गई रुपयेकी सिदाक़तके वास्तेसुनार पेशहुवा थोड़ा २ रुपया आया आदि कोभी दियागया अजीबबातहै कि जबनरसू और रावजीको रुपया लेनेका मौका मिलाथा उन्होंने रुपया नही लिया जब कार्य्यकरचुके अर्थात् विषदेदिया तोफिरक्यों उन्होंने रुपयेकी दरखास्त नहींकी यह गिरिफ़्त बहुतबड़ीहै यहभी इन लोगोंकी दुष्टता और झूठका कारणहै—पीशो और संखिया और हीरेके चूर्णके विषयमें वर्णनकियाहै कि दियागया परन्तु अजीबबातहै कि इन लोगोंने उसमेंसे कुछबाक़ी नरक्खा इस मुक़द्दमेमें जितना कि महाराजा साहबका सम्बन्धहै बिल्कुल ग़लतमालूम होताहै बयानहै कि यशवन्तरावने पांचसौरुपये रावजीकोदियेथे औरवह रुपयाजुग्गा लायाथा उसकीगवही ऐडवकेटजनरलसाहबने पेशकी परन्तु जुग्गाकीगवाहीमें अन्तर है इसलिये वह विश्वासके योग्यनहीहै एक और मनुष्य कारभाई नामक के विषय में नरसू ने वर्णन कियाहै कि वह भी उनकेसाथ एकवेर गायकवारके महलको गयाथा जूदनवीस के लेखसे मालूम होताहै कि कारभाईमई—जून वा जूलाईमें उनकेसाथ गयाथा परन्तु अक्टूबर नवम्बरमें जानासाबितनहीं होता यहगवाह इसलिये पेशकियागयाकि विषदियेजानेकी गवाहीकी सिदाक़तहो दौशखस नरसू और रावजी की तस्दीक़ गवाहीके लियेपेशकीगई परन्तु उनदोनोंके बयानमेंभी अन्तरहै कोईगवाही साफ़ २ पेशनहींहुई जिससे रावजी और नरसूके बयानकी सिदाक़तहो केवलइतनाही साबित होताहै कि वह गायकवारके महलोंमेंगये और पांचसौ रुपयारावजीको मिलाथा फिरकुछ साबित नहींहोता कि रावजी को एक कौड़ीभी दीगई इससे मालूम होताहै कि पांचसौ रुपये खबरोंकी इत्तिलाके लिये दियेगये थे उनलोगोंने विषदेनेके लिये कुछरुपया नहींपाया इनदोनों गवाहोंने वर्णनकियाहै कि जब हमविष देचुके तो हमको महाराजा साहबसे रुपये

मांगनेका सुहनपड़ा और नरसू कहताहै कि आठसौ रुपये मैंनेपाये परन्तु यहरुपया महाराजासाहबने अपने विवाहकी खुशीमें दियाथा इसलिये इसरुपयेका जिक्रकरना व्यर्थहै क्यों कि इसरुपयेको विषदेनेसे कुछतअल्लुक नथा निश्चयहै किइन बातोंका खयाल कमीशनके मेम्बरोंको पहिलेसेहुवाहोगा इस से अब वार्त्ताकरनी कुछआवश्यक नहींयहरीतिहै कि जबकोई मनुष्य किसी कामको करताहै तो उसकी उजरत की उम्मैद रखताहै परन्तु इनलोगोंने विषदिया और मेहनतानेसे निरा- सहुये ऐसीगवाही कोईनहीं गुजरी जिससे साबितहोकि उ- जरतपानेकी आशाहै उन्होंने वर्णनकियाहै कि जबहमविषदे चुके और रेजीडन्टसाहबके विष दियेजानेकी इल्लतमें हमसा- खूजहोगये तो हमको कुछभीनहींमिलादोनों मुल्लमवर्णनक- रतेहैं कि हमसे वाइदा हुवाथा कि जो जहरखुरानीमें हम कामयाबहोंगेतो प्रत्येकमनुष्यकोलाख२ रुपयाइनआम मिलेगा परन्तु इसदेशकेनिवासी ऐसी प्रतिज्ञाको कि जबतक उनको नक्रदरुपया नमिले नहींमानतेहैं यहबड़े निर्बुद्धि मनुष्यथेजो ऐसी प्रतिज्ञाको मानलिया नरसूके बयानसे स्पष्टहै किउसने इसमुआमिलेमें बहुतकम कारर्वाईकी और अन्तकोलज्जित होनाप्रगट कियारावजी जोदामोदरपंथ काहालबयानकरता है केवलइतनाही कहता है किमैं दामोदरपंथको जानता था परन्तुमेरी जानमेंउससे मुलाकात नथीकैसी अद्भुत बात है किएक मनुष्य खूनकरने में संयुक्त हो और आप मुलाकातन रखताहो दामोदरपंथ अपने इजहार में बयान करता है कि रावजीमेरे घरपर आया और कुछकिताबें रेजीडन्सी से चुरा करलायाथा जबतकमैंने उनकीनकलनलेली वह मेरेमकानपर ठहरारहा ऐसे इखतिलाफसेयहबात जाहिरहै कितीनआद- मियोंनेइन लोगोंको सिखायाएक कोगजानन्दनेदूसरेको अक- बरअलीने तीसरेको अब्दुलअलीने उन्होंने मुकद्दमे को अवश्य खड़ाकर दियापरन्तु यहनसमझे कि जबखूबतहक़ीक़ातहोगी

तो निस्संदेह अन्तर पड़ जावेगा इनलोगों को इसबात से बड़ा पश्चात्ताप होगा कि हमने पहिलेक्यों न समझ लिया इस इखतिलाफसे साफसाबित है कि मुकद्दमा झूठा है ऐडवकेट जनरल साहबकहेंगे कि गवाहों कीप्रतिकूल गवाही से यह बातसाफ जाहिरहै कि उनका बयानठीकहै परन्तु नहीं यदिसही होता तोकुछअन्तर नहोता न इतनाइखतिलाफ जोउनके बयानसेसाबितहुवा उनकेबयान कोमैंक्योंकर निश्चय मानूं कि प्रथमसेअन्ततकबिल्कुलविपरीतहै मैं कमीशनकेसाम्हनेइतनीवार्त्ता करचुका हूं, अब कमीशन का समयवृथा नष्टनहीं करना चाहता करनैलफियर साहबने अपनी गवाहीमें वर्णनकिया है कि उनका शिरघूमाकरताथा और जेहनकुन्द होगयाथा कोईबात उनकी समझमेंनहीं आतीथी और इसबातका उनकोबड़ा आश्चर्य था परन्तुमुजको यह अचम्भा है कि इनजहर की पुड़ियोंकाबयानउस वक्तहै जबकिवह अच्छे होगयेथे करनैलफियर साहबकीशायद यह रायहोकिवह इसी विषसे बीमार पड़गये परंतु मेरीराय नहीं है गवाहीसे साबितहुआ कि ६-नवम्बरसे पन्द्रह दिनपहिले उनकोयहदशाहुईथी दिस्मबरमें उनके एकफोड़ाभी निकलाथा करनैलफियर साहब इसबातका निश्चय कराना चाहतेहैं कि लोगमुजको थोड़ा २ विषदेतेथे किमुजको धीरेधीरे मारेंशीशीकाबयानमैंकर चुकाहूं रावजीकहता है कि मैंनेउस शीशी कीदवाका बर्ताव नहीं किया और उसकोफेंकदिया इसलिये करनैलफियर साहब कोजो कष्टहुवा वह न शीशीकी दवासे और न विषसे हुआ अब मैंसम्पूर्ण महाराजगानको इसबातका ध्यान दिलाताहूं कि ५ नवम्बरको किजबनरसू गायकवार के महलमें गयाथा तो महाराजा साहबने उसकोबुरी २गालियां दीथीमैं चाहताहूं कि उनगालियोंका उलथा दोनों महाराजा साहबोंके रूबरू किया जाय ताकि उनको मालूम होकिऐसी गालियां महाराजासाहबकी जिह्वासे निकलीहोंगी यानहीं ॥

दोनों महाराजा साहबजानते होंगेकि ऐसी गालियां हिंदुस्तान के रईसमुख पर लातेहैंवा नहीं मैंनेसुना है कि यह गालियां बहुतहीफोहशथीं मैंने उनकेगन्दे होनेसेउनका अंगरेजी में उल्थानहीं कराया क्योंकि ऐडवकेटजनरलसाहबने कहा कि इन गालियोंकाउल्था होनाअव्यर्थ है इसलिये मैंचाहताहूं कि वह गालियांदोनों महाराजा साहिबोंके रूबरूबयानकी जावें-ऐडवकेटजनरल साहबने कहा कि वह गालियां हिंदुस्तानी भाषा में लिखीहुईहैं-मरजएट बेलनटायन साहबनेकहा कियदि हिंदुस्तानीभाषा में लिखीहैंतो काफीहैं उम्मैद है कि जोदरखास्त मैंने महाराजोंसे कीहैवह स्वीकार हो॥

अबएक और बातपर कमीशनके मेम्बरोंका ध्यान दिलाता हूं रावजी कहता है कि नरसूजीने जोमुझको पुड़िया दीथी उसमेंकोई स्याहीमाइल वस्तुथी और बयानहै किकालीवस्तु करनैलफियर साहबके गिलास मेंडाली गई इसबातपर ध्यान करनाचाहिये किदामोदरपंथने यशवन्तराव और सालिमके द्वारापुड़ियां भेजीथीं नरसूकी निस्बतबयानहै कि इसमनुष्य कोसदैवपुड़ियां दीगईं और उसनेरावजीको दीं इसलिये स्पष्ट प्रकटहैकि दामोदरपंथने करनैलसाहबको मारडालनाचाहा था और फिर सालिम और यशवन्तको गवाही में संयुक्तकिया चाताकिजो कुछउसने तगल्लुब किया है उससे बचारहे और महाराजासाहब अपराधीबनें यहलोग इसमुआमिलेमेंमहाराजासाहबका जिक्रनहींकरते हैं यदि दामोदर पंथ परजुर्म रक्खाजावे तोइसमनुष्यपरक्रम पूर्बक ऐसीगवाहीहैकिउसपर हरप्रकारसे अपराध साबित होसक्ता है हरमनुष्यकी गवाही सेसाबितहै किदामोदरपंथने विषदियाइसबयानसे मेरा यह प्रयोजन नहींहै कि विषका दियाजाना मानताहूं परन्तु जो विचारमेरे मनमें उपजतेहैं उनकोकमीशनके रूबरू पेश करताहूं जोउस समयमेंदामोदरपंथ की हालतहोगी उसकोजानताहूं क्योंकिरेज़ीडन्सी मेंदामोदरपंथ केजानेकी मनाहीथी

और उसको धमकी दीगई थी कि तुम्हारे हिसाबकिताबके कागज
देखेजावेंगे इससे साबितहोताहै किइसीमनुष्यनेरेजीडण्टसाहब
कोमारडालनाचाहाथा और मेरे विचारसे यहबात असम्भवित
नहीं है महाराजासाहब को रेजीडण्ट साहबके मारडालनेसे
कोई लाभ नथा मैं सम्पूर्ण वजहबयान करचुकाहूं कि साहब
रेजीडण्ट केमारडालनेमें दामोदरपंथका फायदा नथा नम-
हाराजा साहबका परन्तु जब रेजीडन्सी के नौकरोंका बिचार
आताहै तोमेरी समझमें नहींआताकि उनको अपनेहाकिम
केमारडालने से क्याफायदाथा क्योंकिउनको अपने हाकिमसे
कभीकोई शिकायत नहींहुई यदि रेजीडण्ट साहब मरजाते
तोवहसब आफतमेंपड़तेनरसू मौकूफ होजाता औरजोकरनैल
फियरसाहबमौकूफहोजातेतौभीउनको क्यालाभथा इनलोगों
सेबढ़कर और चलाक आदमियों काभीजिक्र हुवाहै जैसेकि
भावपूनाकर जो करनैलफियर साहबकेकानमेंप्रतिसमयफूंका
करताथा औरप्रति व्यवहारमें जानकारी जाहर करता था
उसने करनैल फियरसाहबसे खरीतेका हालबयानकिया उ-
सको करनैल फियरसाहबके मौकूफ होनेकासंदेह होगारे-
जीडन्सीके नौकर चाहतेहोंगेकि करनैलफियर साहब रेजी-
डन्सीको पदवीपर कायम रहें और उनकी जान लेनानचा-
हते होंगे भावपूनाकरको खूबमालूम हुवाहोगाकिजो करनैल
फियर साहबको बिषदेनेसेमूचितकियाजावेगा तोवहनबदलेंगे
क्योंकि जबएक बेरतहकीकात प्रारम्भ होजायगीतो सरकार
कोफियरसाहब से गायकवार काबैर प्रतीतहोजावेगारावजी
नेअपनी गवाहीमेंवर्णनकिया है किजोवस्तुजियादह मोहलक
थी उसको मैनेफेंकदिया अर्थात्‌ शीशीकीदवा औरसंखियाभीथो
ड़ीडालदी और बयानकरताहैकिजोपुड़ियां मुझकोमिलीथींवह
स्याहीमाइलथीं और करनैलफियरसाहबभी कहतेहैंकितलछट
स्याहीमाइलथा परन्तु डाक्टरसीवर्डसाहबकहतेहैं कि उसकी
रंगतहलकीभूरीथी एकबात और हैकि अगरसंखियाका बर्ताव

हुआतो संखिया का श्वेतरंग होता है कारनैलफियर साहब संखियाका होना इसहेतुसेभी बयानकरते हैं कि उनकेमुंहमें तांबेकाभी स्वाद आगयाथापरन्तु डाक्टरने जोतलछटकोदेखा तो कोईवस्तु उसमेंऐसी नहींमिलीकि जिसकातांबेकासास्वाद हो—ऐडवकेटजनरलसाहब इसविषयमें कहेंगेकि डाक्टरसीवर्ड साहब और डाक्टरग्रेसाहबने किसभांति संखिया तलछटमें पाई परन्तु इस विषयमें मैं अधिकवार्त्ता नहीं करसक्ता जब कोशिशकीगई तो कुछसंखिया मिलीजो इतनी कोशिशनकी जातीतो कदाचित् संखिया न मिलती कारनैलफियर साहबने गुप्तयह खबरपाई थी कि मुझको लोग संखिया देने वाले हैं किन्तु यहांतक उनकोज्ञातहोगयाथाकि संखिया और तूतिया और हीरेका चूर्ण उसमें मिलाहुवाहै यहखबर भावपूनाकर ने बलवन्तरावसे सुनकर उनसे कहीथी परन्तु अजीब बात है कि ऐडवकेटजनरल साहबने इसबात की शिकायत करने के वास्ते बलवन्तराव को नहीं बुलाया संखिया और हीरे का तांबेकेसदृश स्वादनहीं है—यदि ऐडवकेटजनरलसाहब इसबात को साबितकरें कि तलछटमें तूतियाथातोहीरे औरसंखिये काही होना जोमशहूरहै गलतठहरेगा नरसूबयान करता है कि इसपुड़ियाकी रंगतस्याहीमाइलथी और ऐसाहीकारनैल फियरसाहबभी वर्णनकरतेहैं-परन्तुडाक्टरग्रेसाहब औरडाक्टर सीवर्डसाहब कहतेहैंकि भूरारंगथा इसइखतिलाफ के बारेमें कोईक्याकहसके क्यासबलोगअंधेहोगयेथे जोहलकेभूरेरंग को स्याहीमाइलबयान किया और क्यारजोडन्सी के नौकरचाहते थेकि अपनेहाकिमसे दिल्लगीकरें यहबहुतबड़ाशुआमिलाहैकि पुड़ियाके रंगमेंइतना इखतिलाफहै मेरेविचारसे शायदलोगों नेबाजार में मशहूरकरदिया कि फियर साहबको विषदिया गयापरन्तु वास्तवमें विष नहीं दियागया—नरसू २३—नवम्बर कोपकड़ागया २४—दिसम्बरकोरावजीसे उसकासामनाकराया गया—गजानन्द अकबरअली अब्दुलअली उससमय उपस्थितथे

परन्तु सूटरसाहब उससमय नयेगजानन्द इसबारेमें कहता है किमैंनरसूको मैदानमें लियेहुयेबैठाथा औरवहां अकबरअली और अब्दुलअलीभी उपस्थितथे रावजीबुलाया गया और उससे कहा कि मैंनेसबबातोंका इकरार करलिया ॥

गजानन्दआदिने बहुतबड़ीकोशिशकी परन्तु उनसबकीकार-रवाई प्रकटहोगई उन्होंनेएकबेर चाहाथाकि सरकारनरसू काभी अपराधक्षमा करदेपरन्तु मिस्टरसूटरसाहब औरसरल्यू-इसपीलीसाहबने कहाकि तुम्हारा अपराध कदाचित् क्षमाने होगापरन्तु उसका जुर्मसबसे कमथा उसनेकुछ जबानीबयान कियाथा मिस्टरसूटर साहबकहतेहैं कि उससमय मैंनेबहुतसे कामहोनेसे उसकाबयान नहींलिखा यद्यपियह सबसेज्यादां आवश्यक कार्य्यथा कि सब कामोंको छोड़करयह कामकरना चाहियेथा क्या इसकामको वह अपनाकाम नहीं समझतेथे चाहेयह बयानठीक था यागलत परन्तु वह बयान एकखूनी काथा हरप्रकारसे उचितथा कि तुरन्तही लिखलिया जाता जब सूटरसाहबको मुख्य इसी मुकद्दमेसे तअल्लुकथा और जो कामउसवक्त करतेथे इसीमुकद्दमेसे सम्बन्धित होगा इससेबढ़ कर और कौनसा कार्य्यहोगा किएक मनुष्यजो फिलहाल इ-करारकरताथा इस इजहारके न लेनेका मिस्टरसूटर साहब कोई माकूल उत्तरनहीं देसक्ते ॥

सरल्यूइस पीलीसाहबका बयानउनके बयानकेप्रतिकूलहैवह कहतेहैं किमैंने इसवजहसे नरसूकीगवाही फौरन् नहींलिख-वाईकि मैंचाहताथा किवहखूब ग़ौरकरे किमैं क्या लिखाना चाहताहूं वहबयान नहीं करते किसूटरसाहबको सावकाश केकमहोनेसे उसकेइजहार नहीं लियेगये ॥

इसके उपरान्त पुलिस वालोंके पहरे में क़ैद कियागया ॥ इस अन्तरमें पुलिस को काररवाई करने का और अवसर मिलाहोगा पुलिसनेजोबागमें काररवाईकीवहप्रकट होचुकी है और जबनरसू कुंवेमें गिराथा उसकाखूब हालमालूम हो-

चुकाहै परन्तु जबनरसू पुलिसके गार्डमेंथा तोवह क्योंकरकुवें मेंगिरा क्या वह कुवेंके बराबरही खड़ा हुवा था जो गिरपड़ा हालांकिमशहूरयहहै किपुलिसके आदमी उसके साथथे और उनमेंसे भागकर वह कुवेंमें गिरा यह अद्भुत बात मालूम होतीहै मिस्टरस्लटर साहबवर्णन करतेहैं कियहमनुष्य पलटन केगार्डमें थापुलिसके लोगइसके पासजासक्ते थेक्या यहअसम्भवितहै किपुलिसवालोंने उसकोन सिखायाहो मैंनहीं चाहता किउसके इजहारकमीशनके मेम्बरोंको फिरयाददिलाऊं क्यों किउसने प्रतिप्रश्नके उत्तरमें भीयहीबयान कियाकि मेरेभाग्य में यही लिखा था नरसू के बारे में मुझे और कुछ कहना बाक़ी नहीं है ॥

इससम्पूर्ण मुकद्दमेकी तहक़ीक़ातमें कोई और हेतुजाहिर नहींकियागया किविषदिये जानेका क्याकारण था नौकरअपने स्वामीसे अतिप्रसन्नथे क्याउनको प्रतिज्ञाही परविश्वय आगया थाकि हमकोरुपया मिलेगा और उनकेहाकिमने जोमेहरबानीकी थी उसकोविस्मर्ण करगये और शर्बतमें विषडालदिया यदिउनकाहाकिममरजातातोकातिलबनते औरकिसीसूरतसे नबचसक्ते दामोरपंथ के विषयमें खूब बयान करचुका हूं इन लोगोंकी यहसबगवाही बेमूल औरगलतहै और किसीप्रकार से निश्चयमानने केयोग्यनहीं है महाराजा.साहबके लियेबहुत लोगइसबात पर तय्यारहुयेकि उनकेहकमें झूठबोल२ करउन कोफांसे इनलोगों को मुआफीकावाइदादिया गयापुलिसवालोंको अपनीतरक्की कीआशा होगी हरप्रकार से लोगचाहते हैंकि इस बेचारे रईसको दण्डदिलावें मुझको उचित मालूम हुवाकि करनैलफियर साहबके इजहारबयान करनेके पहिले इनसब गवाहोंके विषयमें जिक्रकियाजाय ॥

अबकमीशनके मेम्बरोंको उनजवाबों परध्यानदिलाताहूं जो करनैलफियर साहबने मुझकोदिये यहबातप्रकटहै किजबतक

बहुतसे प्रश्न नकिये जावें और जोर नडाला जावेठीक२ हाल मालूमनहीं होसक्ता करनैलसाहबने वर्णनकियाहै किसालिम और यशवन्तराव दोनों रेजीडन्सीमें आयाकरतेथे और कहते हैंकि मुझकोसंदेह हुवाथा किमरहममें कोईवस्तु डालदीगई थीजिसके सबबसेमेरा फोड़ाबढ़गया और बरवक्त गौर करनेके करनैलसाहबको सन्देहहुवा किउसमें संखियाडालीगई परन्तु मरहममें संखियेका डालाजाना मैंनेबिल्कुलगलत और खंडन करदियाहै फिरवह उनदिनोंका जिक्र करते हैं जिनदिनों में शर्बतमें विषदियागया थावहअपनी तबीयतका हालसितम्बर और अकटूबरका बयानकरतेहैं और कहते हैं कि ६– या ७ नवम्बरको विषदिये जानेकाउद्योग हुवा परन्तु गवाही सेसाबितनहीं होताकि इनतारीखोंमें उद्योगहुवाहो·जाहिरहै कि आदमीका खयाल कितना दौड़ताहै जोकुछ उनकी तबीयत कोहालत इनतारीखोंमें हुईथी वहबिल्कुलखयालथा-शरबतके पीनेके उपरान्त वह अजीब तरहशरबतकेफेंकने काबयानकरतेहैं उचित यहथा किजोमनुष्य शरबत बनाता था उसको बुलाकर कहते कितूने यह शरबत कैसा बनायाहै यदि सब शरबतको करनैलसाहब रहनेदेते और डाक्टरसाहबको दिखाकर इमतहानकराते तो उचितथा मालूमहोताहै किडाक्टर सीवर्ड साहबनेभी बहुतढीलकी क्योंकि उन्होंनेतलछटकोछान लियाऔर पानीको फेंकदिया करनैलसाहब यहभी कहते हैं कि जहांमैंने शरबतफेंकाथा वहांएक खिड़कीथी और खिड़की के आगे बरामदा था वहांबरामदे में मालूमहुवा कि संखिये और हीरेकाचूर्ण शरबत में मिला हुवाथा सबसे बढ़कर यह बातहै किजबदो तीनदिनपीछे बरामदेकी धरती खुरची गई तो उसमट्टीमें हीरे और संखियेका चूर्णमिला आश्चर्य है कि कमीशनके मेम्बरउसखुरचीहुई मट्टीपरअपनाखयालजियादा हजूनकरेंमे परन्तु हांजो तलछट गिलास में रहगया था वह

गौरकरनेके योग्य है कारनैल साहबकहते हैं किजबमैंने शरबत
फेंकदियाते कुछतलछट स्याहोमाइल गिलासमें रहगयाऔर
फिरअपनी तबीयतका हालवर्णन करते हैं किवहीदशाहोगई
जोपहिले हुईथी यह साराकिस्सा अति अद्भुतहै शरबत का
फेंक देना और किसी मनुष्य को नबुलाना और मुखमें तांबे
का सास्वाद होना और तलछट का स्याही माइल होना
यहबातें अजीबग़रीब मालूम होतीहैं निश्चयहै कि यहइजहार
सुनकरकमीशनके मेम्बरोंको बड़ाआश्चर्यहोगा मैंपहिलेवर्णन
करचुकाहूं कि कारनैलफियरसाहबने अपनी एकचिट्ठीमेंलिखा
कि मैंने ठीक खबरपाईहै कि मुझको विष दिया जायगा ऐसी
खबरोंके पानेसे मनुष्यका हृदयबहुत फिरसक्ताहै उसीदिन उ-
न्होंने जल्दीकरके गवर्न्मेण्टमें लिखभेजा कि मुझको विषदिया
गया फिर कारनैलसाहब वर्णनकरतेहैं कि महाराजासाहबसे
औरमुझसेक्या२बातें हुईं महाराजासाहबने उनसेकहाकिमि-
ठाईखानेसे मेरीभी ऐसेहीदशाहोगईहै किन्तुउन्होंने यहभी
कहाकि नगरमें यहरोग बहुतफैला है महाराजासाहबने यह
वार्त्ताशुरू नहींकीथी किन्तु कारनैलसाहबनेही इसबातको छे-
ड़ाथाजो वार्त्ता महाराजासाहबने की उससेयह विदितनथा
कि महाराजासाहब कारनैलसाहबको टालदेंताकिउनकोजा-
हिरहोकिमुझकोविष दियागया यदिविषकादियाजानाठीक
है तो कोईवजह जाहिरनहीं कीगई कि महाराजासाहबको
मालूमहो कि कारनैलफियरसाहबको ९ नवम्बरको विषदिया
गया डाक्टरसीवर्डसाहब और कारनैलफियरसाहबकी जो ग-
वाही लीगई उससे यहबातजाहिरहै कि मानोलोगोंने दिन
और समय विष देनेका नियत करलिया था परन्तु वास्तवमें
कोईसमय नियतनहींहुआ था किन्तु यह कहागया था कि
जब अवसरमिले विषडाल देना डाक्टर सीवर्डसाहबने अपने
बचपनके विचारों को इस वास्ते बर्त्ताया कि जो कुछ उनके
खयालमें आरोंकेभी हृदयपर नक़्श होजावें जब महाराजा

साहब कर्नैलफियर साहबके साम्हने आये तो उनके मुखसे कोईबात ऐसीनहीं पाईजातीथी जिससे यहबात मालूम हो कि वहइसउद्योगमें संयुक्तहैं और नमहाराजासाहबकीकोई ऐसी हरकत साबितहुई जिससे मालूमहो कि उन्होंने कभी ऐसाउद्योगभीकियाहो उन्होंने कर्नैलफियरसाहबसे उसदिन इसतरहभेट कीथी कि जैसीसर्वदा कियाकरतेथे और ऐसी मुलाक़ातनहीं की जिससेमालूम हो कि वह मारडालने में संयुक्तहैं हिन्दुस्तानीरईसोंकी प्रकृतिकोमैंभलेप्रकारनहीं जा-नतापरन्तु इतनाहीजानताहूंकि जैसीतबीयतहमलोगोंकी है वैसीहीउनकी भी होतीहोगी जब खयालकरतेहोंगे तो भय और चिन्ताअवश्यहोतीहोगी और यहभयउनकेमुखसेविदित होजाताहोगाहा खेदहैकि लोगोंने श्रीमान्‌महाराजा गाय-कवारको अपराधीबनाकर बुरी २ बातेंको—अंगरेजी आदि भाषाकेसामाचारपत्रोंमें ऐसीगलतबातेंलिखींकि हरएकमनुष्य कारुधिर जोशमेंआगयामैं उसदेशकानिवासीहूंजहां बिल्कुल आज़ादीहै यदिवहांकिसी अखबारमें ऐसालिखाजाताते। उस एडीटरको दण्डपर दण्डहोता और यहविचारनकिया जाता कि बड़े अखबारका एडीटर था क्योंकि उसने अपने लेख से सरकारकाध्यान न्यायसे फेरदिया मैं फिरकहताहूंकि गाय-कवारकी ओरसे कोईकारवाई ऐसी नहींहुई जिससेमालूम होकिगायकवार ने विषदियाहैवा किसीप्रकारसेवहअपराधी है—कर्नैलफियरसाहबकेकानलोगोंने बहुतदिनोंसेभड़कायेथे विशेषकरभावपूनाकरनेटिफनसे पहिले कर्नैलफियरसाहब इन्कार करतेथे कि भावपूनाकरने मुझको जहरकी इत्तिला नहीं की परन्तु टिफनखाने के उपरान्तइकरारकियाकि इसी मनुष्यने मुझको इत्तिलादी थी जब भावपूनाकर बुलायागया तो उसनेकहाकि मैंने अमुकमनुष्यसे सुनकरइत्तिलादीपरन्तु वहनहीं बुलायागया जिससेउसने सुनाथा—गायकवारपरजो दूसराअपराधहै किरजीडन्सीके नौकरोंसे खबरोंके पानेकेलिये

मेलजोल कियागया इसमें यहबात पूछनीहै किइसतरहमेल
जोलकाकरना किसीमनुष्यकीहानिकेलियेहुवाथा या नहींपर-
न्तु करनैलफियरसाहबनेभीखबरोंके मालूमकरनेकेवास्ते लोगों
से मेलरक्खाथाइसबातसे किसीमनुष्यको इन्कारनहीं होसक्ता
किभावपूनाकर करनैलफियर साहब का मुखबिर नथा चाहे
इसशख्स को रुपयानहीं दियागयापरन्तु करनैलसाहबउसकी
हरएकबातको सुनतेथे गायकवार को इतना नागवारहोता
होगाकि जोमनुष्य मेरावैरी है उसीसे रजीडण्टसाहब मैत्री
रखतेहैं यहबातसाफजाहिरहै कि जब खरीतातय्यार होताथा
तो करनैलफियरसाहबको इत्तिलाहोगईथी इसीप्रकारउनको
गायकवार की हरएक कारग्वाईसे खबरहोजाती थी चाहे
उन्होंनेभावपूनाकर को कुछनहींदिया परन्तु भावपूनाकर ने
गायकवारके नौकरोंको रुपया देकरहालात दरयाफ्त किये
होंगे महाराजासाहबको रजीडन्सीके खबरोंसेकुछअधिकलाभ
नथा जैसे कि आयाने एक चिट्ठी लिखी जिसमें रजीडन्सी में
खानाहोनेकाजिक्रथाभलाउससे महाराजासाहबको क्यालाभ
था परन्तुकरनैलफियर साहबको बड़ाहालमालूम होतेथेहर
प्रकार महाराजासाहब मजलूमहैं और करनैलफियर साहब
की जियादती मालूमहोतीहै और आयाका जो बयानहै उस
पर कदाचित्निश्चय नहीं है महाराजासाहब उससे इन्कार
करते हैं मैं आपसे पूछता हूं कि महाराजासाहब आया से
क्या बातें करते थे आयाको सरकारी पोलीटीकल मुआमिले
मालूम होसक्तेथे जोवह इत्तिला देती महाराजा साहब खूब
जानतेहोंगे कि आया को इस मुआमिलेमें कुछ सम्बन्धनहीं
है ऐडवकेट जनरल साहब ने जाहिर किया है कि आया से
भीविषदेनेका कुछजिक्रहुवा था फिररावजी और नरसू विष
देनेमेंसंयुक्त कियेगये परन्तुगवाहीसे यहबात प्रगट नहीं कि
रावजी और नरसू और आयासेकुछ वार्त्ताहुईहो औरव्याही
वालोंकी गवाहीसे मुझकोइन्कारनहींहै जिन्होंनेबयान किया

है कि हमगायकवारके महलमेंलेगयेमेरे कहनेसेयह मतलबहै और ऐडवकेट जनरलसाहबभी यहीसमझे हैंकि आश्चर्य नहीं कोइनलोगोंकी गवाही ठीक हो और आयाको सवार करके लेगयेहों। और आयागायकवारके नौकरोंको मुलाकातकेवास्ते गईहो और उसने तरह २ के जटल काफियेउड़ायेहों परन्तु आया का यह बयान कि मैं महाराजासाहब के पासगई थी बिल्कुलगलतहै आयानेजोपुलिसके मेंइजहारों अपनेजाने की तारीख वर्णनकीहै उसतारीखमें इखतिलाफहै क्योंकिआदलत मेंउसने कुछऔरबयान कियाहै मालूमहोताहैकि जबपुलिस नेउसपरसख्ती कीतोआयाने उनकीइच्छाके अनुकूल वर्णनकर दियायह अजीबबात हैकि आयाउसजमानेमें नहींगई जबकि नरसूऔर रावजीने अन्तकीबेरविषका बयानकिया है किनरसू और रावजीने ५-और ६-नवम्बरको विषदिया उन्हीं तारी- खोंकोआयासे भीजिक्रकियागया था और उससेजो विषकेदिये जानेकाजिक्र कियाथा उसकोनरसू औररावजीके विषदेनेसे कुछतअल्लुकनथा आयासेकहागया था कितुम अपनी तौरसे अलगजाकर दो कहीबयानहैकि आयानेबिल्कुलइन्कारकिया इसइन्कार परकमीशन कोलिहाजरहे ग्रेबहाजद कहता है दिवालीसे तीनचार दिन पहिले अर्थात् ५-६-७ नवम्बर को आयासेबातें हुईथीऔर आयाभी कहतीहैकि इनहींदिनोंमें मुझसे औरमहाराजा साहबसे वार्त्ताहुईथी और विषदेनेका जिक्रआयाथा वहइसतरह अपनेबयानको लिखातीहै किमानो करनैलफियर साहबकी वजीरआजिमथी औरबड़ीरौबऔरबड़े मरतबेकी औरतहै कमीशन आपही विचारसक्तीहैकि उसका इजहार कुछठीक औरकुछ अशुद्धहै नौकरों काबुलानादोनों ओरसे हुआ करनैलफियरसाहब के नौकरों ने गायकवार के सेवकोंसे मेलकिया और गायकवारने करनैलफियरसाहब के नौकरों को बुलाया मालूमहोता है किकोई समय बड़ौदे में ऐसा बीताहै कि दोनोंओरसे खबरदेने वाले नौकर रक्खे गये

सन् १८३० ई० से सरकारने तो खबर देने वालोंको नौकर रखना तो मौकूफकर दिया परन्तु शायद करनैल फियरसाहबके विचार से यहबात अबभी उचितहै॥ आयाके इजहार खतमकरनेके पहिले बयानकरना चाहताहूं कि किस २ प्रकारसे बजारी अफवाह उड़ सक्ता है इस अफवाह को सुनकर गायकवार और करनैल फियर साहब दोनों को चिन्ताहुई होगी सही है कि गायकवार जहां दीदा आदमी है परन्तु ऐसीखबरोंके सुननेसे चिन्तितहोगये होंगे और करनैलफियर साहब का मुझको बड़ा आश्चर्य्य है कि यद्यपि वह ऐसीरियासत में ऐसे प्रतिष्ठित पद पर थे जो बजाय एक सलतनत के समझी जासक्ती है परन्तु उन्होने रूबलोगों कोबातोंकोसुना औरझूठेमनुष्योंसे मुंहलगाया उनकाएकखबरदेने वालामुख्य ऐसा मनुष्यथा जो गायकवार के प्राणका बैरीथा आयानेजो प्रथमबेर सूटरसाहबके रूबरू इजहारदिये उसमेंबीमारीका उसनेकुछजिक्र नहींकिया परन्तु उसकेपीछे वहरोगीहोगई औरअस्पताल कोभेजीगईआयाने वर्णन कियाहै किमैनेकिस प्रकाररमजान केमहीनेमें महाराजा साहबने बातेंकीं आया कायह बयानकितना लचर है १८-दिसम्बर कोजो आयाके इजहार लियेगये उसमें आयानेनहीं वर्णनकिया कि महाराजासाहबने मुझसे कुछविष देनेका जिक्रकियाथा और मुलाकातेंजो आयाकी महाराजा साहबसे हुईं उन में केवल जादूका जिक्रहैजबआया अस्पतालमेंथीबीमारहोनेपरभीबड़े तूलसेइजहार दियेडाक्टर सीवर्ड साहब नेभीकुछ आयाका जिक्र कियाहै मालूमहोताहै किउनको आयाका बहुत बड़ा खयालथा इसबात कोवहमानतेहैं परन्तु मेरीबुद्धिकाम नहीं करतीकि उनको आयाका इतनाक्योंखयाल थाशायदआयामें कोईऐसीबातथी जिससे साहबकामनआकर्षितथा औरकिसी बातपर उनका मन मोहितहुआहोगा परन्तु जबवहकमीशन केसम्मुखआई तोउसकी मायामई दृष्टिने किसी परकुछफलन

कियामुझको उसकेदेखनेकाखूबमौका मिलापरन्तु मुझपरभी असरन हुवाडाक्टरसाहब जानतेथेकिवहगायकवारकेमहलों में आया करतीथी परन्तु उन्होंने इसबातका कुछ विचार न किया उसका इलाजएकडाक्टर साहबकरतेथेपरन्तु फिरभी उनडाक्टरकोइत्तिला केबिना उसके पासडाक्टरसीवर्डसाहब गये जबइसका कारणपूछागयातो उन्होंनेवर्णन कियाकि वह डाक्टर साहबमेरे मित्रथे मुझेपूछनेकी कुछ आवश्यकतानथी बहरहाल वहआयाकेदेखनेको गयेजब उसको देखातोमालूम कियाकि उसको कोईशारीरकरोगनहींहै केवल उसके हृदय पर सदमाहै इसविषयमें डाक्टरसीवर्डसाहबखूबबयान करतेहैं उन्होंनेआयाको समझाया कि तुम अपने मनका हाल मुझसे कहोतुम्हारे दिलको तुम्हारेपेटको आरामहोजावेगाकिसी समयमेंउसे पलस्टरलगाया था और जब उसनेअपने मनका हालबयान करदिया उसको लिये ऐसा मुफीद हुवा जैसेकि कैकीदवा दीगईफिर उसकोआराम होगया डाक्टरसूटरसा-हब(इसजगहपर मिस्टरसूटरसाहबको डाक्टरसूटर साहबक-हनाचाहिये) बुलायेगये और उन्होंने उसका इजहारलेकर उसकाइलाज किया डाक्टर सीवर्ड साहब शारीरक रोगका इलाजकरतेथे और डाक्टर सूटरसाहब रूहानी इलाजकरते थेमैं विचारताहूं किडाक्टर सीवर्डसाहब मिस्टरसूटरसाहब से किसतरह कहतेहोंगे किमेरेहाथसे जबतकवह आरोग्य नहोगी इलाजकिये जाऊंगातुम उसका रूहानी इलाजकरो क्योंकिउसका मनबेकरार है-निदानउसके इजहार लियेगये उसकामतलब यहथाकि जबमैं तीसरीदफे महाराजा साहब केमन्दिरोंमें गईतो महाराजासाहबने मुझसेपूछाथा किसा-हबको कोई ऐसी दवादी जासक्ती है जिससेमेरी उनसे प्रीति होजावेउसकाबयान हैकिगायकवार मुझकोटटोलतेथे मैंइस बातका उनको क्या उत्तरदेती हूं अबमैं लार्डचीफ जष्टिससे पूछताहूं किआपने कभीऐसा फिकराकिसीके इजहार मेंसु-

नाहै टटोलनेका शब्द किसी आयाकेमुखसे आपनेसुनाहैपरन्तु आयानेलज्जासे इन्कारकिया सोविचारनाचाहिये किआयाने अपनाइन्कारकिस राहतसेड. क्रसीवर्ड साहबके रूबरूबयान कियामेंअबभी कमीशनमेम्बरोंका खयालरुजूकरताहूंकिआपने कभी ऐसाझूठसुनाहै किआयानेकहा होकिलाखों रुपयेकर-नैलफियरसाहबपर न्योछावरहैं आयाअपने तईंबड़ी पण्डिता समझतीहै यहबेहूदा हब्सी बाजारकी गप सुन २ कर बातें बनाया करती थी क्या महाराजा साहब को इतनी भी बुद्धि नहींहै जो ऐसीस्त्री से वह बार्त्ताकरते उसके इजहार मेंजो थोड़ेसे प्रश्न किये गये उनसे मालूम हुवा कि उसका बयान बिल्कुलगलत है जोकुछबातें हुईंथीं तो शायद इतनीही हुई होंगीकि करनैलफियरसाहब परकुछजादू कियाजायकि वह मेरेवशहोजावें—प्रथममिष्टरसूटरसाहबके सम्मुखयह प्रश्नकिया गयाकि तू विषके देने का हालभी जानतीहै—तो विचारना चाहियेकि पहिलेही ऐसीस्त्रीसे इसभांति का प्रश्नकरना क्या जरूरथा उसनेखाहमखाह उत्तरदियाकि मुझसेजिक्र आया था साफजाहिर है कि मिष्टरसूटरसाहबने उसको सिखाया और अकबरअलीने उसकोधमकाया कि विषका जिक्रकरना उसकेइजहार आदिसे अन्ततक बिल्कुल वाहियातहै मैं उसके इजहारपरखूबगौरकरके यहबयानकरताहूंकि उसकेइजहार में कोईबात गौरकरनेके योग्यनहींहै—ऐडवकेटजनरलसाहबने पूछाथा कि गायकवार की रसाईसालिम और यशवन्तराव तकहोसक्तीहै इसकहनेसे उनका यहमतलबथाकि महाराजा साहब चाहते हैं कि सालिम और यशवन्तराव को अपना गवाहठहरावें परन्तु मुख्यवृत्तान्त यहहै कि महाराजासाहब ऐसीकाररवाईकीकुछपरवानहींकरतेऔरउनकेसलाहकारभी यशवन्तरावऔरसालिमथे उनकोगवाहीदेनेकीसलाहनहींदेते बड़ासन्देहहैकियहलोगदामोदरपन्तकेसाम्हनेहोंक्योंकिवहभी दामोदरकीतरहसवालकरतेरहेऔरअपनेखामकोलूटतेरहे॥

शायद यहलोगभी दामोदरपन्थ के सदृश बयान करतेहें मेरेदोस्त ऐडवकेटजनरलसाहबने शोचेबिचारेबिना उनगवाहें को बुलायाजिनकी प्रतिष्ठापर बदनामीका धब्बाथा इसलिये सालिमके बुलानेमें क्या उज्रथा और क्यों यशवन्तरावकीगवाहीनली यह शख्स रावजीसे बढ़कर दुष्टनहींहै यदिऐडवकेटजनरल साहबजानते कि यहलोग किसीबातकी सिदाकत करेंगेतो अवश्यही उनकोबुलाते अगर महाराजा साहबइन गवाहोंको बुलातेतो मैंकदाचित् बुलाने नदेता औरजोप्रतिष्ठितगवाहोंकी अवश्यकता होती तो और बहुत गवाह बहम पहुंच सक्तेथे मुझको गायकवार की ओरसे मुकद्दमे के खड़ा करनेकी जरूरत नहींहै किसी प्रतिष्ठित गवाहने गायकवार कोमाखूजनहीं किया मैं उनलोगोंकी गवाहीकभी नलेताजो थोड़ेदिनोंतक पुलिसमेंरहे—माईलार्ड—मैने इस मुआमिलेमें ठीककारवाईकीहैयागलत मैनेबिल्कुलइन्कारकिया कियह लोगगायकवारकी ओरसे कदाचित् गवाहन ठहरायेजावेंगे गायकवारपर जोअपराध ठहरायेगयेथे उनसबका मैनेखण्डनकरदिया अबकोई जुर्म गायकवारपर बाक़ीनहीं रहा कोई गवाहीऐसी नहींगुजरी जिसकानिश्चय कियाजाता मैंख्यालकरता हूं कि आप साहिबों ने मेरी तक़रीर को गैार से सुना जो कुछकि बातसुझमें होसकी मैनेकी मैंखूब जानताथा किइस मुकद्दमे मेंभी खण्डन करने की जिम्मेदारी है किसी मुकद्दमे मेंऐसा सबकाध्यान नलगा जैसाकि इसमुकद्दमेको सबसाहब गैारसे देखतेहैं और इसमुकद्दमेकी कारवाईपर अंगुश्तनुमाईकरतेहैं मेरेविचारसे ऐसोपदवीका मनुष्यजैसाकिगायकवारहैपहिलेहीबेर जुर्ममें गिरिफ़ार हुवाहै और उसकोऐसी कारवाईहुईहै? हिंदुस्तानकी इतिहासकी पुस्तक देखनेसेबिदितहोताहै किकैसे २ गवर्नरजनरल साहिबोंने अपने तौरसे रईसोंको दण्डदिया औरअनीतिकी परन्तु अब श्रीमान्‌वैसरायने उचितसमझा किजो एक रईसपर कलंकलगा है उसकी

खूबतहकीकातहो और वास्तवमें ऐसे २ जोउनपर कलंकलगे उसकी तहकीकात होनी अवश्यथी इसीलिये अंगरेजी और हिंदुस्तानीरईसों कोयहमुकद्दमा सौंपागया॥

माईलार्ड—यहबात देखकर मुझको अति प्रसन्नताऔर धैर्य्य प्राप्तहुवा यहमुकद्दमा बहुत बड़ाहै मेरे विचारसे हरएक कौंसलीइस मुकद्दमेको बड़ा मुकद्दमा कहेगा मैंफिर कमीशन केमेम्बरोंका अतिगुण मानताहूं और कहताहूं कि आपयहन विचारेंकि मुझसे बढ़कर और कोई सोच नहीं कहसक्ता है आपकृपा पूर्व्वक इलजामोंपर खूब गौरकरें उनसेसाफ जाहिर होजावेगाकि गायकवारनिपट निर्दोषहैं यहमनुष्य इनदिनों गद्दीसे अलग कियागया और उसकी दुर्दशाको उसकीप्रजाने देखाकिसी मनुष्यकी इतनीसामर्थ्य नहीं किउसकेपासजाकर उसकी सहायताकरे और धैर्य्यदे वा उनकेलिये कोई फायदे कीबात कहे॥

उन्होंनेसौगन्द खाकर वेशक्त्रीजाहिरकर दीमैंनेजोउसका कौंसलीहूं इसमुकद्दमे की सम्पूर्ण गवाहीको खण्डन किया अबइस बातकीइच्छा रखताहूं कि अंगरेजीनीतिके अनुकूल उनकान्याय चुकादियाजावे छोटेसेछोटेकाटनेवाले को भीऐसे गवाहोंसे सजानहीं होसक्तीजैसे कि इसमुकद्दमेमें गुजरेफिर क्योंकरएक रईसगद्दीसे उतारा जासक्ताहै॥ऐडवकेटजनरलसाहबनेकहा उत्तम है कि कमीशनके मेम्बर टिफनखाने के लिये उठें फिरमैं अपनाएडरेस शुरू करूंगायदि कमीशनीकीआज्ञा होतो अभी प्रारम्भ करूं फिर कमीशनके मेम्बरोंने टिफनखाने केलिये अदालतको बरखास्त किया॥

ऐडवकेट जनरल साहब का उत्तर॥

कमीशनके एकत्रहोतेही मेंडन ऐडवकेटजनरल साहब उठे और उन्होंने कहा—माईलार्ड चीफजस्टिस और कमिश्नर और दूसरे साहब अबमुझको उचितहै किमैं आप सबसाहिबों का

खयाल उनबातोंपर दिलाऊं जिनको सरजराट बेलनटायनसाहब नेअपनीविस्तृतस्पीचमें गायकवारकी ओरसेबयानकियाहैजो गवाहियां पेशहुईं उनकोदुरुस्त न समझतातो मुझको इससमय उत्तरदेने में बड़ाकष्टहोता मुझको यह बात देखकर अत्यन्त धीर्य्यहुवा किमेरे एकयोग्यमित्रने गवर्नमेण्टकी इसकारर्वाई अर्थात् कमीशन के नियत करनेको बहुत पसन्द कियाहैऔर उसीप्रकारसे उनके मवक्कलको भी पसन्दहै मेरेमित्रजानते हैं कि इसमुक़द्दमे की तहक़ीक़ात केवास्ते इसकमीशन सेबढ़कर दूसरीकोईरीतिनथी और जोइसकमीशनका फैसलागायकवारकेप्रतिकूलहुवा तौभीगायकवारवा औरकिसीमनुष्यको शिकायतकामौक़ान होगा सरजन्टबेलनसाहबने कहा हैकि इससे बढ़करऔर कोईकमीशन मैंनेनहीं देखीसरजराट बेलन टायनसाहबने अपनीयह लियाक़त जिसकेलिये वहमशहूरहैं सबइसमुक़द्दमेमें खर्चकीजो कमीशनका फैसलागायकवार के प्रतिकूलहोगातो कोईमनुष्यनहीं कहसक्ता कि सरजराटबेलन- टायनसाहबने मुकद्दमेको भलीभांतिखण्डन नहींकियाअथवा थोड़ेबोलनेसेइसमुकद्दमेकाफैसला उनकीइच्छाकेविपरीतहुवा मेरेदोस्तनेकई जगहपर गायकवारकी हमदर्दी जाहिरकी है परन्तु तारीफयहहैकिबावजूदहमदर्दी करनेके उनकीवार्त्तामें किसीप्रकारका अन्तरनहींपड़ा सरजराटबेलन टायनसाहब न केवलइंगलिस्तानमेंविख्यातहैंकिन्तु यूरुपभर उनकी उत्तमवा- चालताकोजानताहै जोकुछकिउन्होंनेहमदर्दी जाहिरकीनि- श्चय है किसबलोगोंके हृदयपर उसकाअसरपहुंचाहोगा इस लिये जो फैसलाइसकमीशन काहोगा वहनकेवल संसारभर किन्तु श्रीमहाराजासाहब भी प्रसन्नतासे अंगीकारकरेंगेसर- जन्टबेलनटायन साहबनेजोकुछ इसरईसके लियेवर्णन किया मुझकोभी सुनकर आश्चर्य्य हुवा क्योंकि सरल्यूइसपीलीसाहब ने वर्णन किया है कि महाराजासाहब प्रतिष्ठा पूर्व्वक पहिरे

मेंहै और यहबातदुरुस्तहै फिर उनपरक्याजुल्महुवा और उनकीजायदाद थोड़े दिनोंके वास्ते कुर्क हुईहै इससेउत्तमऔर कोईकारवाई नहींहोसक्तीथी मेरेदोस्त जानतेहोंगे किश्रीमान् गायकवारका राज्यसे मुअत्तिलकरना और उनकीजायदादका कुर्क होना उचित था गवर्न्नमेण्ट इण्डियाने यहसब बातें अपना कामसमझकर कीहैं और उनबातोंकेकरनेसे किसीप्रकारकी जियादती समझीनहीं गईहै यदि ऐसा नकिया जाताती गवर्न्नमेण्टइण्डियाके लिये यह समझाजाता किउसने अपना पूराकाम नहींकिया गायकवारकी ओरसे जोलेख पेशहुवाहै उसकामजमून निहायत उमदाहै परन्तु उससंपूर्ण लेखका यहमतलब है कि मैंने अपराध नहींकिया और इस बयानकी तसदीक सौगन्दकी रूसे भी हुई इसलिये कमीशन के मेम्बरइस लेखको जैसाचाहें समझलें—केवलइतनाहीखयाल होसक्ताहै कि गायकवारने शायदऐसा कहाहो मैं अपने मित्रको इसकारवाईपर कुछअंगुश्तनुमाई नहींकरना चाहता वास्तवमें मेरेमित्रनेइजहार के खूबरग औरपोस्तअलग किये उनकी तकरीरसे यहसाबितहुवाकि गायकवारने कर्नैलफियर साहब को विषदेना नहीं चाहा किन्तु पुलिस ने यहचाहा कि गायकवारपर अपराधलगे मुझकोपहिले से यह खयाल था कि सरजान्हबेलनटायन साहब इसमूलपर मुकद्दमे को खण्डनकरेंगे परयह निश्चय न था कि इसतरह साफ २ पुलिसको कलंक लगावेंगे वहकहतेहैं कि जितनीगवाहियांपेश हुईं वहसब पुलिसकी बनाई हुईहैं—अर्थात् गजानन्द वतिल अकबरअली—और अब्दुअलीकी बनाईहुईथी॥

मुझको आश्चर्य है कि मेरेदोस्तकोमिस्टरस्कूटरसाहब के इस इलजाममेंसंयुक्तकरनेसेकुछसोच नहुआकमीनकेमेम्बरोंकोयाद होगाकिसरल्यूइसपीलीसाहबनेवर्णन कियाथा कियहांआतेही और हिदायतोंमेंसेमुझकोएकहिदायतयह भीमिलीथीकि

इसमुकद्दमेकी तहकीकातभी कराई जावे इस लिये उन्होंने गवर्न्मेण्ट को लिखकर मिस्टरसूटर साहबको बुलायातथाच मिस्टर सूटर साहब ६—दिसम्बर को कुछ पुलिस के अफ्सरों संहितजिनका मैं ऊपरनाम लेचुका हूं यहांआये और कई लोग पीछेआये इसलिये उचितहै किउन लोगोंका कुछजिक्र किया जाय ॥

अकबरअली ४४ वर्ष से नौकर है उसने सरकारी नौकरी सन् १८३१ ई० मेंकी और उमदा२ कारगुज़ारियोंके करनेसे उसकोसरकारसे खानबहादुरका खिताबमिला और इस ४४ वर्षकी अवधि में उससे कोई ऐसी बात नहीं हुई किसरजाण्ट बेलनटायनसाहब उसकोकलंकलगावें जबअकबरअलीअदा- लतके रूबरू आयातो हरप्रकार से पाक और साफथा अब्दु- लअली जोअकबरअलीकापुत्रहै २० वर्षसे सरकारका नौकर है उसनेभीऐसे२ कामकिये किउसको सरकारसेखानबहादुरी का खिताबदियागया इसबीसवर्षकी अवसरमें उससेभी कोई ऐसाअपराध नहींहुवा कि सरजाण्टबेलनटायन साहब कुछ वार्त्ता करसकें गजानन्दवितल भी बहुत वर्षों से सरकारी नौकर है उसने भी अपनी क्रिया कौशिल्यसे रावबहादुर का खिताब पाया है ॥

सरजाण्टबेलनटायनसाहबको लोगोंने बहकायाकि गजान- न्दवितलसे कोटाकी रियासत कीगद्दी नशीनीके विषय मेंप्रश्न करने चाहियें यह मुकद्दमा मिस्टर कागलनसाहबके सम्मुख पेशहुवाथा और गजानन्दवितल उसमें गवाहकी तौरपरथे ॥

मिस्टरजस्टिस बेस्टसाहबने जोअपने विचारांश का फिकरा लिखाहै उससेकुछ पुलिसको सम्बन्धनहीं है सोइनतीन सर- कारीनौकरोंकी निसबतजोबड़ेयोग्य और अपनेसम्बन्धीक्रिया में कुशलहैं लोगोंने उनकोसिखायाहै कि यहलोग गायकवार के शत्रुहैं और गायकवारपर मुकद्दमासाबित करनाचाहते हैं

जोतोहमत किपुलिसके अफसरों को लगाई है निश्चय है कि कि कमीशनके मेम्बर उसका कुछ विचार नकरेंगे कोईबजह उनपर कलंकलगाने की नहीं है उन्होंने कोई काम ऐसानहीं किया है जिससे उनकोलज्जा प्राप्तहो॥

मेरेदोस्त सरजन्टबेलनटायन साहबने बहुधायह भीकहा है कि लोगपुलिसके अफसरोंकोकलंकलगाते हैं परन्तु उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया यदि सरजन्ट बेलनटायन साहब इस देशको जानते तो थोड़ीसी बातें जोउन्होंने मुंहसे निकालींकदाचित् मुखपर न लाते विशेष कर ऐसी बातें जोपुलिस के लिये इलजाम की तौरपर कहीं हैं बहुतसे लोगों की राय पुलिसके लिये अच्छीनहीं है विशेष कर वहलोग अधिक तर नापसन्दकरते हैं जिनका चालचलन खराबहै वहलोग कभी पुलिसकोअच्छानहीं कहेंगे क्योंकि पुलिसकेलोग ऐसे२ लोगों की सर्वदादेखाभालीकरतेहैं मेरे मित्रकोलोगोंने सिखाया है कि मिस्टरसूटरसाहब जानबूझकर उस कमरेसे चलेगयेजब कि रावजी की पेटी देखी जातीथी और उनकेचलेजानेसेयह प्रयोजनथाकि अगरपेटीको तलाशी अकबरअलीको सौंपूंगा तो उसमेंसे कोई नकोई वस्तु अवश्यनिकलेगी—सरजन्टबेलनटायनसाहब अतिप्रतिष्ठितमनुष्यको यह कलंक लगाते हैं मेरे विचारसे सरजन्टबेलनटायनसाहबके सलाहकार खराबथेयहां के लोग मिस्टरसूटरसाहबको खूबजानतेहैं क्योंकि बहुकालसे वह यहांहैं और उनकोक्रियाकुशलतासे कम्पीनियन आफदी स्टारआफइण्डियातमगा मिलाहै चाहेयह तमगा छोटेदरजे का है परन्तु ऐसेहीतमगे कमीशनकेमेम्बर पहिनेहुयेहैंचाहो वहतमगे कुछ बड़े दरजे के पहिने हुये हैं इस बात को भी जानेदो यदिवह इंगलिश जन्टलमैन* हैं सरजन्ट बेलनटायन

---

* अर्थात् रईस॥

साहबको चाहियेथाकिउनकोऐसी तोहमतसेबरीरखतेपरन्तु उनको इसबातका भी कुछ विचार न हुवा॥

मिस्टरसूटरसाहब को अपनी प्रतिष्ठा का बड़ा खयाल है जिस तरह मुझको और मेरे मित्रको अपनी २ प्रतिष्ठाका है कोईमनुष्य नहीं चाहताकि वह बदनाम हों॥

सरजान्बेलनटायनसाहबने जोइसप्रकार कीवार्त्तामेंप्रकीहै उससेमुकद्दमेके खण्डनमें कुछमदद नहींहुई मिस्टरसूटरसाहबकेलिये कदाचित् ऐसानहीं समझा जासक्ता किवह अपने आधीनी मनुष्योंके हाथमेंएक खिलौनाथे औरन यह खयाल होसक्ताहै किवहअपने हृदयमें गायकवार कीखराबीऔरअप्रतिष्ठाको चाहतेहैं यदिमिस्टर सूटर साहब की कार रवाई बुराईके योग्य होतीतो जबउनकेइजहारमें प्रश्नकिये गयेथेतो क्योंउनको इलजाम नहीं दियागया तब सरजान् बेलनटायन साहबकुछन बोले मैनेबड़े अफ्सोसके साथ उनबातोंको सुना जोमेरे दोस्तने अपनीसोचमेंमिस्टरसूटर साहबके लियेवर्णन कींउनपुलिस केअफ्सरोंकी काररवाई जिनको गवर्न्मेण्टने इसमुकद्दमेमें नियतकिया था किसी प्रकारसे एतिराज और गुफ्तगूके लायकनहींहै गवर्न्मेण्ट उनकीक्रिया कुशलताको खूबजानतीहै औरमुजको निश्चयहै जबखूबगौर किया जावेगा तो उनपर किसी प्रकार का अपराधन लगेगा मुझको अपने मित्रसे यहबातभी पूछनीउचितहै किपुलिस को गायकवार परमुकद्दमा खड़ाकरनेसे क्यालाभथा क्यामेरे दोस्तयहांइस बातके कहनेको आयेहैं किगवर्न्मेण्टकीहिकमत अमलीयह थीकि अवश्यहो मल्हारराव कोगद्दीसे उतारदे हालांकिऐसा विचारनथा औरनहोगा पुलिसके लोगकेवल इसलिये आये थेकिवास्तवमें विषदियागयाथानहीं यदिबम्बईके पुलिसवालों को मल्हारराव केगद्दीसे उतारनेकी इच्छाथी तोवहदाओदर प्रंपके द्वाराकुशलता पूर्व्वक गद्दीसेउतार दिये जातेहालांकि पुलिसको गायकवार के खराब होनेसे कोई फायदा नहीं है

और कोई वजह गायकवार पर तोहमत रखने की न थी ॥

गवाहोंकी गवाहीसे साफप्रकट है कि जितनी तहकीकात हुई वहसबठीकहै इसलिये मैं चाहताहूं कि मेम्बरान् कमीशन अपनेमनसे वहबातेंदूरकरदेंजो पुलिसकेलिये वर्णनकीगई इसमुकद्दमेको पुलिसने नहींबानायाहै यदिपुलिसने गवाहों कोसिखाया होतातो गवाह एकही बात कहते थोड़ासा जो अन्तर है वह कदाचित नहोता इससे प्रकट है कि पुलिसने सिवायअपनेकामके औरकोईकारवाई नहींकी पहिलेथोड़ा पतालगाथा फिरबहुतसे हालमालुम हुयेपहिले गाड़ीवालों सेकुछपतालगाथा वहपरस्पर बातें करतेथे कि हम आयाको गायकवारकेपासलेगये फिरदामोदरपन्थने इकरार कियाजित नाहाल मालुमहोता गयापुलिससेभी तहकीकात बढ़तीगई ॥

मेरेदोस्तने अपनीस्पीचमें शिकंजा आदिका वर्णनकियाहै कि पुलिसने गवाहोंको क्याकष्टदिया परन्तु यहबात अद्भुतहै किपुलिसने इतनीसख़्तीकी और इससख़्तीके लियेरजोडन्सोका एककमराजोखानेके कमरेकेबराबरहै मुकर्ररथाबहुधासरल्यूइसपीली साहब वहां आयाजाया करतेहोंगे क्या सरल्यूइसपीलीसाहबकोभी मेरेदोस्त इससख़्तीके करनेमें शरीककरतेहैं यह कमरा अलगनथा उसमेंसे सब लोगों का आवागमनथा पुलिसको कबऐसी अवसरमिली जोगवाहोंपर सख़्तीकोमुझको निश्चयहै कि इसविषयमें जोमेरेमित्रने बार्त्तापेश कीहैउसको कमीशनके मेम्बरनमानेंगे जोनमानेंगेतोजो अपराधगायकवार परधरागयाहै तोवह ठीकहै ॥

दूसरी बात यह है कि सरल्यूइसपीली साहब बड़ेदिन की छुट्टियोंमें बम्बईको जाने वालेथे परन्तु जब उन्होंने सुना कि रावजीने किसीबातको कुबूलकियाहैतो उन्होंने अपना जाना मुलतवीकिया यदिवह चले जातेतो कुछ तहकीकात नहोती इसबातसे प्रकटहैकि पुलिसकी इच्छामुकद्दमेके खड़ेकरनेकी नथी-माईलार्ड-दूसरीबात जिसकोमेरे मित्रवर्णन करतेहैंयह

है कि बहुत से गवाह जो पेश हुये हैं वह गायकवार के संयुक्त थे इसलिये उनकी गवाही निश्चय मानने के योग्य नहीं है हर मनुष्य जो अदालत की कारवाई को कुछ भी जानता है वह जानता होगा कि ऐसी गवाही में बहुत से सन्देह हैं परन्तु इनलोगों की गवाही इसप्रकार से लीगई कि किसीप्रकार का संदेह नहीं होसक्ता और हिंदुस्तान में कोई ऐसा कानून नहीं है कि मनुष्य की गवाही जो अपराध में संयुक्त हो ठीक समझी जावे—इङ्गलिस्तान में यहरीति है कि जबकोई मनुष्य जो अपराध करने में संयुक्त हो गवाही देता है तो जजसाहब जूरी को हिदायत करते हैं कि जबतक ऐसे मनुष्य के बयान की सिदाकत न होजावे तो जूरी उसका निश्चय न करें परन्तु श्रीमान् लार्डचीफजस्टिस इसबात को भी जानते होंगे कि यदि जजजूरी के लोगों को ऐसी हिदायत नकरें तो कुछ हानि नहीं है॥

हिंदुस्तान में अगर अपराधी के सम्बन्धी के बयानपर मुख्य अपराधी को दण्ड दियाजावे तो वह अनरीति दण्ड नहीं है—मैंने इसको इसलिये कहा कि मेरे मित्र सरजन्टबेलनटायनसाहब ने जो स्पीच दी उससे सबलोगों को मालूम होगया था कि जर्म्म के शरीक की गवाही तसलीम के लायक नहीं है इसके विशेष इसमुकद्दमे की गवाही बहुतकुछ होचुकी है॥

मेरे मित्र ने गायकवार की कारवाई के लिये बहुतकुछ कहा है तो अर्थात् जब उनको मालूम हुवा था कि करनैलफियरसाहब को विष दियागया है तो उन्होंने रावजी का बयान नहीं सुना था जब उनसे कहागया कि आपका नाम विषदेने में शामिल है तो मेरे मित्र कहते हैं कि महाराजासाहब की बातें निर्दोष मनुष्य के सदृश थीं और उन्होंने रेजीडण्टसाहब के बुलाने के अनुसार उसीसमय सालिम और यशवन्तराव को भेजदिया परन्तु मैं कहता हूं कि उनके भेजने से वह क्योंकर इन्कार करसक्ते थे दादाभाईनूरूजी को जो उनके दीवान थे सालिम और यशवन्तराव

केवास्ते लिखागयाथा—कुछ संदेहनहींहै किउन्होंने महाराजा साहबको सलाह दीथी किआपदोनों मनुष्योंको भेजदीजिये इसकेसिवाय महाराजासाहब आपही जानतेथे कि इनलोगों का भेजना उचितहै और सिवाय इसके और कोईबातअच्छी नहींहै महाराजासाहबकी इसकाररवाईसे उनकीनिर्दोषता प्रतीत नहींहोती इसमेंभी संदेह नहींहै कि महाराजासाहब लड़ाईका निशान खड़ाकरसक्तेथे या भागसक्तेथेपरन्तु इनदोनों सूरतोंमें जुर्मका इकरार सुतसव्विरथा इसलियेएशियाकेनि- वासियोंकी प्रकृतिके अनुकूल उन्होंने काररवाई की और ए- शियाहीके निवासीनहीं किन्तुहरमनुष्य जोऐसीदशामेंहोता वहइसी तरहकरता जैसाकि महाराजा साहबनेकियासिवाय इसकेऔरकोई उनको उपायनथा किचुपचापहोकर मुकद्दमे कापरिणाम देखेंयदि दामोदरपंथके इजहार देखे जावें तो उनकोखूब मालूमहोगा किगायकवारने क्या२ बातें कीं और वहक्यों चुपहोरहे गायकवार पहिलेसे केवलयही बात नहीं जानतेथे कि ९-नवम्बर को विषदेने का उद्योगहोगा किन्तु उनको यहभीमालूम हुवाकि उद्योगहुवा और निष्फल हुवा गायकवार इसमुआमलेकी काररवाई कोगौरसेदेखतेथे और औरक्षणप्रति क्षणकीवह खबरमंगाते थे दामोदरपंथने वर्णन कियाहै किकभीतो गायकवार प्रसन्नहोतेथे औरकदापिभय मान होते और महाराजाने रावजीकी बुद्धिकी बड़ी प्रशंसा कीऔर खुश हो२ कर कहतेथेकिमैं भले प्रकार जानताहूं कि तुमपर अपराध नलगेगा जब सालिम और यशवन्तराव रेजीडन्सीसे उनकेपास लौटआयेतो गायकवारको कैसीप्रस- न्नताहुई परन्तु जबवह फिरबुलायेगये तो गायकवारको भय होगया औरउनके भेजनेके समयउनको खूबसमझादिया कि तुम्हारेसाथ जोचाहेंकरें परन्तु तुमको ईबातन कहना दरह- कीकत इनलोगोंपरगायकवार काएतिबारगलतनथा क्योंकि उन्होंनेअबतक कोईबातमुंहसे नहींनिकाली उन्होंने गायक-

वारकी ओरसे कुछगवाहीभी नहींदी गवाहीके अयतकोई बातनहींपाई गईजिससे गायकवार कासरीहोनासाबित हो ओरन उनकोकिसी अपनीकाररवाईसे पाया जाताहै किमहाराजा साहबपरजो अपराधलगाहै वहगलत है उनपरजो चार दोषलगायेगयेवहयहहैं पहिलेमल्हररावने कारिन्दोंके द्वारा वा अपनेआपरेजीडन्सीके नौकरोंसे जो करनैलफियरसाहबके पासथे गुप्त वार्त्ताकी किवहकिसी बुरे कामकोकरें॥

दूसरे—क्या मल्हररावने रेजीडन्सीके नौकरोंको कुछरिशवत दी या दिलाई॥

तीसरे—यहरिशवत इसप्रयोजन सेदीया दिलाईकि करनैल फियरसाहबकेनौकर मुखबिरोंकी तौरपर कामदें किकरनैल फियरसाहबको दुःख पहुंचेश विषदेकर उनको मारडालें॥

चौथे—क्यावास्तवमें करनैलफियर साहबको विषदिये जाने काउद्योगकियागयाथा औरक्यायहबातमल्हररावनेसिखाईथी

माईलार्ड—तीसरे और चौथे अपराध में विषका वर्णनहै पहिलेऔर दूसरेजुर्ममेंरेजीडन्सीके नौकरोंको रिशवतदेनेका बयानहै जिससेकि उनको रेजीडन्सीकी खबरेंमिला करें मेरे दोस्तने अपनीस्पीचमें एकछोटे अपराधके लिये जिक्रकियाहै परन्तु जोबड़ा अपराधहै उसका कुछ जिक्रनहीं किया और जो गायकवारने लेख पेश कियाहै उसमें कुछ बातोंका इक्रारारभीहै और वहबयानयहहै—मैं सौगन्दखाकर वर्णनकरता हूंकिमैंने अपनेआप वाकिसीनौकरकेद्वारा करनैलफियरसाहब के प्राणलेने के वास्ते अथवा उनकेप्राणलेने के उद्योगसे विष नहींमंगाया औरनमैंनेअपनेआप वाकिसी विश्वसित मनुष्यके द्वाराऐसेइरादेकी तरगीबदी और मैंबयानकरताहूंकि अमीना आया और रावजी और नरसू और दामोदरपन्थकीगवाही बिल्कुल गलत है॥

और मैं यहभी कहताहूं कि मैंने अपनेआप किसी रेजीडन्सीकेनौकरसे यहबातनहींचाहीकि मुखबिरकी तौरपरकाम

करे और रेजीडन्सीमेंजितनी कारखाई होतीहैं उसकोमुझ-
को इत्तिलाहे न मैंनेइनलोगोंको इसकामके वास्ते रिशवतदी
नदिलाई ॥

मैं उन इनआमों का जिक्र नहीं करता जो समय २ पर
रेजीडन्सीके नौकरोंको दियेगयेपरन्तुजबकभी कोईबिवाहअ-
थवात्यौहारहुवा तो पारितोषकदियागया रेजीडन्सीकेनौकर
मेरे महलमें और मेरेमहलसे रेजीडन्सीको आतेजाते होंगे
परन्तु मैंनेइससुआमिलेमें वार्त्तानहींकी और न मैं जानता हूं
किरेजीडन्सीकेनौकरोंको कितना २ रुपयादियागया मैंनेकभी
इसबातकी आज्ञानहींदी कि ऐसाउपाय किया जाय जिससे
कि रेजीडन्सीकी खबरें मेरेपास आयाकरें ॥

माईलार्ड—आपको पूर्व्वोक्तवर्णन से मालूमहुवा होगाकि
वह यहनहीं लिखतेकि नमैंने अपनेहाथसे रिशवतदी अथवा
अपनेविश्वसित मनुष्योंसे रेजीडन्सीकेनौकरोंको दिलवाईवह
बड़े २ जुर्म्मोंकेलिये लिखतेहैं और इसबातसे इन्कार करतेहैं
कि मैंनेखत: ऐसा नहीं किया परन्तु इनआमकादेनामानते
हैं उनकायह इकरार बहुतबड़ाहै उनकेसम्पूर्ण बयान का यह
सारांशहैकिमैंनेखत:किसीनौकरसेकोईबुरीबातनहींकहीऔर
नमैंने अपनेहाथसे किसीकोरुपयादियांपरन्तु एकपेचदारतौर
से वह रुपयेकादिया जानाकहतेहैंकि.अपनेनौकरों से रुपया
दिलाया मुझकोउचित नहीं है कि इसबातकाविस्तारकरूंकि
उनखबरों मेंजो गायकवारके पासआई और उनमेंजो करनैल
साहबकेपास पहुंचींक्या अन्तरहै चाहेदोनों प्रकारकीखबरों
मेंबड़ा अन्तरहै सरकारकी ओरसे जोरेजीडण्ट नियतथेउनके
पासजोलोग आतेथेवह आपही उनको हरएक खबरदेते थे
परन्तुएकहिंदुस्तानी रईसकाखबरोंके मिलनेके वास्तेरेजीडन्सी
केनौकरोंको रिशवतदेना और बातहै और गायकवारने यह
कारखाई बुरीबातोंके वास्तेकीथी रिशवतदेने कामहागमा
साहब आपभी इकरारकरतेहैं और गवाहोंकी गवाहीसे भी

उसकोसत्यता सूचितहोती है मुझकोनिश्चयहै कि कमीशन के मेम्बरोंको इसबात का आश्चर्य्यनहोगा किरेज़ीडन्सीके नौकर महाराजासाहब केपासगये और नइसबातमेंआश्चर्य्य है किजो अमीनाआयाने वर्णनकियाहरएक गवाहकाबयान ठीकहैकि नजरबागकी तरफसे रेज़ीडन्सीके नौकरगये और जिसकमरे मेंशीशे रक्खे हैं वहां महाराजासाहबसे मुलाकातहुई गवाहोंने यहनहीं वर्णनकियाहै किहमने गायकवारका सम्पूर्ण भवनदेखाहै और उसकोसैरकीहै एकबेर प्रश्नकिया गयाथा कितुमने कमरों कोभी देखाहै गवाहोंने इन्कार किया जिस कमरेका यहजिक्र करतेहैं उसीकमरेका जिक्रदामोदरपंथ भीकरताहै उससेबेहतर और कौनशख्स जाननेवाला होगा और इसबातकी सिदाकत इसतरहसे होतीहै कि उनदिनों महाराजासाहब उसीकमरेमें रहाकरतेथे आज मेरे मित्रने अपनी तकरीरमें यशवन्त और सालिमकी कुछ बुराई की है यहदोनों मनुष्य गायकवारके नौकरहैं जब गायकवार रेज़ीडन्सीको जातेथे यहभी उनकेसाथहोतेथे इसलिये कुछआश्चर्य्यनहीं कि वह गायकवारके विश्वसित हैं और वह रेज़ीडन्सीकेनौकरोंसे मिलगयेथे मेरेदोस्त इसबातको मानतेहैंकि गाड़ीवालोंने जो इज़हार दियेहैं उनमें कुछ एतिराज़ करें परन्तु आपसाहिबोंको स्मर्णहोगा कि पहिलेइस मुकद्दमेका पता एक गाड़ीवाले की जबानी लगाथा इसके लिये सरजज बेलनटायन साहब कहते हैं कि आया महल के नौकरों से मुलाकात करनेके लियेगई होगीजोऐसा होताउसकोरात्रिके समयवहां जानेकी क्या जरूरतथी रावजीको सदैवभयथा और अपनेसाथकिसी नकिसीमनुष्यकोलेजातीथी कभीजुम्माकोभी लेगया औरकभी कारभाईको मेरेमित्र कहते हैं कियहबात असम्भवितहै किऐसाबड़ाराईसएक आयासेवास्तेकरे परन्तुजो हिन्दुस्तानी दरबारके नौकरहोतेहैं उनसेरेज़ीडन्सी केनौकरों सेबड़ा असरहै एकदरबार कामुख्यनौकर अर्थात्दामोदरपंथ

महलमें नहींरहताथा इसलियेमल्हरराव कोसुनाथिमालूम हुवाकिरेजीडन्सीके नौकरोंसेसाजिश करैंताकिवहां कीखबरें मालूमहुवाकरें इसलियेरांचिकेसमय उचितसमझागयाक्योंकि किसीकोकुछखयाल नहुवाहोगा और जानते होंगेकि रेजी-डन्सीके नौकरअपनेकिसी कामको जातेहैंकिसीमनुष्यकोमहा-राजासाहब के पासरांचिकेसमय जानेसे कुछ गुमान नथा॥

मेरेमित्र अपनीतकरीरमें यहबात पेशनहीं करतेकि ऐसे मौकेपर महाराजा साहबके बजाय और किसी मनुष्यने ऐसी बातेंकीहोंगी और ऐसीगुफ्तगूवहक्योंकरपेशकरतेक्योंकिम-हाराजासाहबकापहिचाननाकुछ ऐसाकठिननथाजिसमनुष्य नेएकबेरभी महाराजासाहबको देखाहै उसकोयादहोगाइस-लियेजो कमीशनके विचारसे सबगवाहोंकी गवाहीगलतहैतो आयाकी गवाहीभी गलतहै नहींतो उसकीगवाहीकी तस-दीक होगई है और तीनबेर आयाका गायकवार के निकट जानासहीहै परन्तुहां उनलोगोंने जोमहाराजासाहबसेबातों के होनेके इजहारदियेथे उनकीसिदाकत एकदूसरेकेबयान से होसक्तीहै जोखत आयाने लिखवायेथे उनसेउसके इजहार की बखूबीसिदाकत होसक्तीहै आयाने यहपत्र अपने पतिको महाबलेश्वर नगरमें भेजेथे जबकि वह बाहरथी और जबकी आया केघरकी तलाशी हुई तबयह पत्र मिले उनपर हरएक डाकखानेकी मोहरहै क्याइन मोहरोंपर भी मेरेमित्र गजा-नन्दका नामदेखतेहैं जबकि उन्होंने और जगहपर गजानन्द की काररवाईदेखी इनखतोंसे साबितहैकि महाराजासाहब से आयासेखतकिताबत होतीथी इससे साबितहुवाकि महा-राजासाहब और रेजीडन्सीकेनौकरोंमें खतकिताबत औरगुप्त वार्त्ताकिसी बुरेकामकेलिये होतीथी॥

इसबातका कदाचित् खयाल नहीं होसक्ता कि एकरईस खानसामां आदिको इतनीरिशवतदेकि जोबातेंमेजपरहों उन की खबरें वहपहुंचायाकरे इसकाररवाईसे कोई उत्तम प्रयो-

जनहोविशेषकरके उससमयकी कारखाई जबकि मीडसाहब की कमीशन बड़ौदेमेंबैठथी—पसऐसी खबरोंकेमिलनेका प्रबन्ध कमीशनके दिनोंमेंरहा क्योंकि महाराजासाहब जानतेथेकि जैसी २ खबरें मुझको मिलें उसी प्रकारका मैं इन्तिजामकरूं यशवन्तरावनेभी और चिट्ठियोंमेंसे एकचिट्ठीकोतसलीमकिया किन्तुवहराजीथा कि जो गवाहीलीजावेतो वहअपने स्वामी के प्रतिकूलगवाही दे यशवन्तरावने वहदुकानखराबकीबताई जिसको महाराजागायकवारने जारीकिया था जबसरीफ से पूछागयातो उसनेभी बयानकिया कि एकबेर जबकि दामोदरपंथ नथे तो महाराजा साहबने मुझसे एकचिट्ठीको पढ़वाया जोरेजीडन्सीसे आईथी पढ़नेके उपरान्त जब दामोदर पंथआगये थेतोमैंने वहचिट्ठीउनकोदेदी वहकहताहैकि इस प्रकार की खत किताबत रेजीडन्सीमे हररोजहोतीथी ॥

दामोदरपंथभी इसबातको तसदीककरता हैकि यहकारखाईरेजीडन्सीकी केवलरोजमर्रोकेबातोंकीनथी क्योंकिउस कीबड़ी २कारखाइयां हुईं क्योंकि दामोदरपन्थने वर्णनकिया हैकि रावजी यमुनाबाईकी अर्जीचुरालायाथा और दामोदर पन्थने उसकीनकल लिखलीथी यहकागज बहुत बड़ाथा और रावजीनेफिरउसको करनैलफियर साहबकोमेजपर लेजाकर रखदिया था—महाराजा साहबने पंखेवाले और हवालदार और आया और नौकरोंको इस प्रयोजनसे बुलवायाथा कि करनैल फियरसाहबऐसेछोटे २ नौकरोंके बुलानेमेंकुछशंका नकरेंगे उनकोइसबातका निस्संदेहखयालथाकि जहांतक हो सकेफियरसाहब और बोवीसाहबकी मेमकेरूबरू महाराजा साहबकी प्रशंसा कीजावे ॥

उन्होंने पेडरू खानसामां को भी बुलायाथा क्योंकि यह मनुष्यबहुत पुरानानौकरथा औरसाहबकी प्रकृतिखूब जानता थाऔरचूंकिवह खानसामांथा मेजपर जितनी किबातें होती होंगीउनको सुनाकरता होगा ॥

माईलार्ड—क्या आप समझते होंगे कि जो रुपया उन लोगों को दिया गया था वह रिशवत में न था मेरे अतिप्रवीण मित्र कहते हैं कि पांच सौ रुपये एक छोटी सी रकम थी हां कई लोग उसको थोड़ा रुपया समझते हैं परन्तु जिस मनुष्य का दस रुपये मासिक है उसके विचार में वह थोड़ा रुपया नहीं है इस बात पर उज्र नहीं किया गया कि यह रुपया रावजी को नहीं मिला॥

दलपतराय मुहर्रिर इस रुपये का दिया जाना साबित करता है यशवन्तराव को अपने पास से रुपये देने की क्या जरूरत थी सरजन्टबेलनटायन साहब ने कहा है कि यशवन्तराव एक छोटा आदमी था और आश्चर्य नहीं कि दामोदरपन्थ का नौकर हो—परन्तु मैं कहता हूं कि उसको क्या प्रयोजन था कि वह रावजी को खबरों के मंगाने के लिये रुपया देता और इतना बहुत रुपया अर्थात् पांच सौ का दिया जाना बहुत बड़ी बात है॥

सरजन्टबेलनटायन साहब कहते हैं कि यह पांच सौ रुपये तब दिये गये जब विषका कुछ जिक्र न था—कमीशन के मेम्बरों को स्मर्ण होगा कि यशवन्तराव गायकवार का विश्वसित नौकर था और इस मनुष्य ने रेजीडन्सी के नौकरों को महाराजासाहब के रूबरू पेश किया था इसलिये प्रकट है कि जो रुपया इन लोगों को दिया गया महाराजासाहबने दिया और दामोदरपन्थने नहीं दिया यह पांच सौ रुपये रावजी को खबरों के पहुंचाने के लिये दिये गये थे जब वह नौसारी से लौटकर आया तो आठ सौ रुपये उसने पाये थे जो परस्पर नरसू ने और उसने बांट लिये इस सूरत में टोम होने के बीच में बड़ी २ टोरक्षमें उन्होंने पाई॥

यह रुपया महाराजासाहब के विचार में अधिक न था परन्तु जिन लोगों का मासिक दस बारह अथवा चौदह रुपये हो तो उनके लिये बहुत है और चार २ पांच २ सौ यकमुश्त पाना निहायत गनीमत समझते होंगे पेडरू कहता है कि जब मैं गोवा को जाता था तो पचास रुपये मुझको मिले थे परन्तु यह जाहर नहीं किया गया कि यह रुपये उसको किस लिये मिले होंगे

फिरशेखकरीमजो आयाके साथथावहभीमेजकेकामपरनौकर थाजबवह आयाकेसाथ गयातो सौरुपये उसकोभी मिलेथे॥

दामोदरपन्थके हिसाबदेखनेही आपको मालूम होगा कि निजकेकोषसेइतनारुपयादियागया किसिवायरिशवतकेपारि-तोषकका सन्देह मात्र नहीं होसक्ता १९जनवरीसन् १८७४ई० को छःसौ रुपये यशवन्तरावको दियेगये और उन्हीं दिनोंमें यशवन्तरावने पांचसौ रुपये अपने नौकर दलपतको दियेथे और दलपतने वहीरुपये रावजीको दियेछःसौ रुपयोंमेंसेसौ रुपये यशवन्तनेदस्तूरके मुआफिक इन मुआमिलोंके रखलिये आपको उस कागजके देखनेसे जिसपर (ए) अक्षरका नम्बर है मालूमहोगा कि हजाररुपया कोषसेदिलायागया यहरुपया तब दिलाया गयाथा जबकि महाराजासाहब नौसारीसे लौट कर आयेथे दूसराकागजदोसौरुपयेके दिलानेकेलियेहै जिस पर[एन]अक्षरनम्बर अ काचिन्हलगाहैउसकी तारीख१५ मई सन् १८७४ई० है यह रुपयावहहै जोकरीम और आया को दिलायागया सिवाय इसकेउनदिनोंकुछरुपयानिजके कोष से सालिमऔर यशवन्तराव को दियागया जबकि रेजीडन्सी के नौकर रुपये का पानाबयानकरते हैं इसबातका कुछ खयाल नहींहोसक्ता कि यहरुपया दामोदरपन्थने अपनेकिसी कामके लिये सालिमऔर यशवन्तरावको दियाहो वा यहकिसालिम और यशवन्तराव दामोदरपन्थ के विश्वसित थे यद्यपि यह रुपया दामोदरपन्थ के कोषसे दिया गया परन्तु महाराजा साहब की आज्ञा से दियागया॥

यहप्रकटहै कि रावजीको अवश्यही रुपया मिला औरवजू-हातसे पुलिसकेखयाल रुजूहोनेकी एकवजहयहभीथी उसने बहुतकुछ अक्टूबर और फरवरी और मार्चमें जेवर बनवाया इसमें सन्देह नहींकि यहरुपया गायकवारकेखजानेसेउनकी आज्ञाके अनुकूल रेजीडन्सीके नौकरोंको इसप्रयोजनसे दि-यागयाथा कि वहलोग खबरें पहुंचायाकरें औानगायकवार

के उज्र पर कुछ खयाल किया जाता है जब वह कहते हैं कि रेसी-
डन्सी के नौकरों से मेरी कुछ बातचीत नथी परन्तु इस बात से इन्का-
र नहीं करते कि किसी न किसी प्रकार से उनको खत किताबत थी
उनको इनआम देने से भी इन्कार नहीं है इससे पारितोषक के देने
का जुर्म आपही अपनी जुबानी इक़रार करते हैं—माईलार्ड
मेरे मित्र ने वर्णन किया है कि गायकवार के सम्मती बड़े खराब थे
इस बात को मैं भी मानता हूं वास्तव में महाराजा साहब के सम्मती
बड़े दुष्ट थे मैं दामोदरपन्थ की ओर से कोई उज्र पेश नहीं करता॥

सरजन्टबेलन टायन साहब ने जो कुछ कहा उसको सुनकर
न मुझको दामोदरपन्थ की ओर से क्रोध आया और न कुछ अफ-
सोस हुआ दामोदरपन्थ ने जो इज़हार दिये उससे मालूम हुआ
कि वह खराब आदमी है और उसने बुरे २ काम किये परन्तु
गायकवार को क्या कहा जावे कि उन्होंने ऐसे मनुष्य को अपना
प्राईवेट सीक्रेटरी नियत किया और विष दिये जाने की तहकीकात
के प्रारम्भ होने के प्रथम उन्होंने सरल्यूइस पोली साहब के रूबरू
पेश करके कहाया कि यह मनुष्य मेरा प्राईवेट सिक्रेटरी और
बहुत बिश्वासित है क्या यह कहकर भी गायकवार इन्कार कर
सक्ते हैं कि यह मनुष्य हमारा प्राईवेट सिक्रेटरी नथा और जो
काम इसने किये उसमें हमारी आज्ञा नथी—सालिम और यश-
वन्तराव के लिये सरजन्टबेलन टायन साहब कहते हैं कि यह दोनों
मनुष्य बड़े दुष्ट थे उन्होंने दामोदरपन्थ की आज्ञा मानी परन्तु
ऐसा खयाल कब हो सक्ता है कि प्राईवेट सिक्रेटरी की आज्ञा मान-
ते और महाराजा साहब की आज्ञा उल्लंघन करते इसमें कुछ
सन्देह नहीं है कि यह सब कारवाई हुई है जो एक गवाह ने
ऐसा वर्णन किया कि सब काम मैंने अपने स्वामी की आज्ञा से किये
तो कदाचित् उसकी गवाही झूठ नहीं हो सक्ती मेरे मित्र ने
कहा है कि दामोदरपन्थ यशवन्तराव और सालिम ने विष देने
का उद्योग किया होगा और महाराजा साहब पर अपराध
लगाया परन्तु यह बात नहीं है महाराजा साहब को इन लोगों

से बढ़कर और आदमी इस कार्य्य के लिये न मिलते अर्थात् एक प्राईवेटसोक्रेटर और दो विश्वसित नौकर॥

सरजन्टबेलनटायनसाहबने इसविषयमेंसंदेहकेतौरपरकहा कियायद ९-नवम्बरकोकरनैल फियरसाहबको विषदियागया औरतलछटकी रंगतकेलियेबहुतकुछवार्त्ता कीहैपरन्तु डाक्टर सीवर्डसाहबके इजहारसे विषहोनेकी सत्यता सूचित होगई यद्यपि सरजन्टबेलनटायनसाहबने इसप्रश्नकेलिये बहुत कुछ बयानकिया परन्तुउनकी सबबातेंट्या हैं यदिकमीशनके मेम्बर उसगवाही परगौरकरेंगे जिसमेंतलछट काजिक्रहै तोमालूम होगाकि जबगिलासमें तलछट देखागयातो वहस्याहीमाइल था औरउसमेंकुछ शर्बतभीथा चूंकि चकोतरे काशर्बतथाइस मेंउसकीरंगतगुलाबीथी औरजबकरनैलफियरसाहबने उसको देखातो कुछविषपी चुकेथे औरउनका शिर घूमरहाथा और नेत्रोंमेंअश्रु भरआयेथेसो करनैलफियरसाहबकी ऐसीहालतथी किवहभलेप्रकाररंगको पहिचानसक्ते डाक्टरसीवर्डनेनिस्संदेह तिलछटकोभलेप्रकार अवलोकनकिया औरएकबात औरहैकि जिस गिलासमें यहशर्बतथाउसकाभी रंगस्याहीमाइलथायदि श्वेतरंग कीवस्तुभी उसमेंडालीजाती तोकालीहोदीखती और मिस्टरअनवरारटीसाहबने वर्णनकिया है किकईलोगोंकोरंगत कीतमीजनहींहोतीहै सोकिकरनैल फियरसाहबनेयहगिलास तिरछाकरके तिलछटको देखाथानिश्चयहै किगिलासकीछाया इसतिलछट परभी पड़ीहोगी करनैलफियरसाहब का बयानहै जबकिवहविषपियेहुयेथे जोकुछहोपरन्तु डाक्टरसीवर्डसाहब हरप्रकारसेसावधानथे उन्होंनेतलछटखूबगौरसे देखाडाक्टरसा-हबकरनैलसाहबके बुलानेसेआयेथे जबउनसेतलछटकीपरीक्षा केलियेकहा गयातोउन्होंने जिसतरह उचितसमझा उसकी परीक्षाकी पहिलेजब उन्होंनेउसको प्रकाशमें देखातो उसकी

गतभूरी प्रतीतहुई मेरेमित्र सरजन्टबेलनटाइन साहबराव

जोका बयानकहते हैंकि जबपुड़िया मुझकोमिली थीतो उस कीरंगतस्याही माइलथी परन्तुयह बात सबको मालूम हैकि हिन्दुस्तानी आदमीरंगको खूबबयान नहींकरसक्ते जबउससे प्रश्न कियागया किजो टोपियां अदालतमें रक्खी हैं उनमेंसे किसरंगकेअनुसारपुड़िया कारंगथातोउसनेउसटोपीकीतरफ सैनकीजिसकी रंगतभूरीथी जिसतरह किडाक्टरसीवर्डसाहब नेतलछटका इमतिहानकिया कुछसंदेह नहींकि इससे उत्तम आजमाइश होसक्तीथी और डाक्टरोंके मानिन्द आजमाइश की इसपरीक्षाके आनन्तरमालूम हुवाकिउसमें संखिया और हीरेकाचूर्ण हैडाक्टरसीवर्डसाहबने नलकीमेंडालकर संखिया निश्चयकी और खुर्दबीनसे पिसेहुयेहीरेकाहोनामालूम किया इससेबढ़कर संखिये की अजमाइश नहोसक्ती थी सहीहै कि डाक्टरसीवर्ड साहबने संखियेके छल्लेको जलाकर फिर उसको मूल रूपमें नहींलायापरन्तु इसछल्लेसे संखियेकाहोनासाबित होताहै यदिसंखियान होतीतो छल्लानपड़ता डाक्टरग्रे साहब नेकेवलएकही रीतिसेसंखियेकी परीक्षानली किन्तु कईप्रकार सेउसकोआजमाया और संखियेकोअलगकर दिया इससेबढ़ कर और आजमाइश नहोसक्तीथी इनसबबातोंसे कमीशनके मेम्बरोंको खूब मालूम होगा कि ९—नवम्बरको शर्बतमें विष मिलायागया और जबडाक्टरसीवर्ड साहबने जलके संयोग के पहिलेतलछटकोहिलायाथातोउसमेंसेगुबारसा मालूम हुवा॥

सरजान्हबेलनटायनसाहब इस बात को साबित करना चाहते हैं कि तलछटमें संखिया नथी किन्तु डाक्टर साहब ने जो जल डाला था उसमें संखिया थी परन्तु उनकी यह दलील इस बातसे रद्द हुई कि गोबिन्द ने अपने इजहार में वर्णन कियाहै कि मैंने पानीके कूजेको उसी दिनभरकर रक्खा था और मुखधोने की जो सुराहियां थीं उनमेंभी नवीन जल भरदियाथा फिर क्योंकर संखिया अथवा संखियेके सदृश कोई

वस्तु उसमें आसक्ती है हीरेके चूर्ण के लिये मेरे जितने वर्णन किया है किवह हीरे का चूर्ण नथा यद्यपिउसकीवैसी हीपरीक्षा नहींली जिसतरह कि संखियेकी हुईथी परन्तु यहबात प्रगट है कि उसके जर्रे निहायत चमकते हुये और ऐसे कठोर थे कि जब दो शीशोंके बीचमें रखकर रगड़ गयेतो शीशा छिलगया उसके लिये सरजएटबेलनटायनसाहब ने वर्णन किया है कि हीरेके सिवाय और भी बहुतसी कठोर वस्तु संगखारा आदि होती हैं जिस से शीशा छिलजाता है परन्तु सरजएटबेलन टायनसाहब ने इस विषयमें जियादा तकरीर नहींकी इससे मालूमहोता है किवह कायल होगये परन्तु यहबात तो एक निर्बुद्धि मनुष्य भी कहसक्ता है कि संगखारा में इतनी चमक नहीं होसक्ती जैसी कि हीरेमें होतीहै सरजण्ट बेलनटायन साहबने डाक्टरग्रे साहब के इजहारमें कुछजियादह प्रश्न नहीं किये क्योंकि वहजानतेथेकिजो अधिकप्रश्नकरूंगातो डाक्टर ग्रेसाहब मुजको क़ायल करदेंगे तो उसकी एक बातयहहै कि डाक्टर ग्रे साहबको हीरेका हाल कुछमालूम नथा किन्तु उन्होंने आपही कहाथा कि यह चमकतेहुये जर्रे हीरेके हैं जो गवाही इनदोनों डाक्टरोंकी लीगई वहअलग२ लीगई और दोनोंने अपनी२ रीतिसे तलछट की परीक्षाली और दोनों की रायइसबात पर इकट्ठीहुई किसंखिया और हीरा मिलाहुवा था दोनोंडाक्टरोंने साफ२ बयानकिया किबहुतकुछआजमाइश कीगई औसिवायसंखिये और हीरेकेतीसरीकोइवस्तु मालूम न हुईजबकि ड क्टरग्रेसाहबनेकहाकिजो शर्बतगिलासका फेंक-दियाहै वहांकी मट्टीखुरचकरभेजदो तो वह मट्टी डाक्टरसी-वर्डसाहबके रूबरूखुरचीगई और डाक्टरग्रेसाहबके पासभेजी गई डाक्टरग्रेसाहबने जब उसकोभी आजमायातो उसमेंवही चीजेंमिलीथीं जोपहिली तलछटमेंमिलीथीसोइसमेंकुछसंदेह नहींहैकिकरनैलफियरसाहबको ९नवम्बरको विषदियागया॥

अब साढ़ेचार बज गये यदि प्रेजीडण्ट साहब के विचार

से उचित होतो कमीशन बरखास्त की जावे–तथाच अदालत बरखास्त हुई ॥

उन्नीसवें दिनका इजलास ॥

जब कमीशनके मेम्बर एकत्रहुये तो ऐडवकेट जनरल साहब फिरसोचकहने लगे–उन्होंने वर्णनकियाकि मैंने कलकेदिन इसबातको साबित कियाथाकि महाराजासाहबने रेजीडन्सीके नौकरोंकेसाथ खबरोंकेमंगानेकेलिये मेलकियाथा और सालिम और यशवन्तरावकेद्वारा रिशवतदेकरइसबुरे कामपरतय्यार कियाथा जिसका जिक्रतीसरे और चौथे जुर्ममेंहै मैंनेइसबात को भी साबितकिया है कि९–नवम्बर को करनैलफियरसाहब के विषदेनेका उद्योगकिया गयाथा और जो वस्तुकि शर्बतमें डालीगई वह हीरा और संखियाथा एक और बातपर कि अगरचे वहबड़ीबात नहींहै कमीशनकेमेम्बरोंको ध्यानकराता हूं वहयहहै कि करनैलफियरसाहबने खबर पाईथीकि उनको तूतिया और हीरे का चूर्ण दियाजावेगा और भावपूनाकरने बलवन्त राव से इसबात को सुना था परन्तु जब डाक्टरों ने आजमाइश की तो हीरा और संखियामिला तूतिया नथा सरजन्वेलनटायन साहबने इसविषयमें बहुतकुछ गुफ्तगूकी है और कहतेहैं किअगर तूतियाहोता तोउसी समयमुखमें तांबेका स्वादआजाता परन्तु विचारना चाहिये कि करनैल फियरसाहबको तांबेकास्वाद फौरन् नहींआगयाथा और डा क्टरोंने साबितकियाहै कि जिसमनुष्यको संखिया दीजातीहै कुछदेरके पीछे उसके मुखमें तांबेका स्वाद आजाताहै बेशक तांबेके जौहरका उसमें संयोग होना साबित नहींडाक्टर ग्रे साहबभी अपनी गवाही में कहतेहैं कि जो तांबे का जौहर होतातो तुरन्तही उसका मुखमें स्वाद आजाता इसविषयमें करनैलफियर साहबने ४८ और ४९ पृष्ठपरसाफ२ बयानकिया है करनैलफियर साहबआपभी कहतेहैं किमेरेमुखमें शीघ्रही तांबेका स्वादन आयाथा और किसीगवाही सेभी साबितनहीं

होता कि तांबेका औहर शर्बत में डालागया होजो तलछट डाक्टरग्रेसाहब को भेजागया और फिर खुरचकर भट्टीमेंदीगई उसमें डाक्टर साहबने ढाई चावल संखिया निकाली थी कारनैलफियर साहबकी गवाहीसे खूबसाबित होगयाकिउस समयसे जबसे कि उन्होंने शर्बत पियाथा और उससमयतक किउन्होंने डाक्टरसीवर्ड साहबको तलछटदी किसीमनुष्यको गिलासके पासजाने और हाथलगानेका मौक़ा नमिलाथाफिर क्योंकरउसमें कोई वस्तु पड़सक्तीथी इससे प्रगटहै कि कारनैल साहबके पलटनेके पहिले(हवाखोरीसे)गिलासमें संखियाडाली गईदूसरी एकबात जिसपर कि कमीशनके मेम्बरोंका खयाल रुजूकरना चाहताहूं यहहै किजो मानाजावे कि ९ नवम्बरको कारनैलफियर साहबके गिलासमें बिषडालागया तो यहबात बुद्धिमें नहींआती किछोटा आदमीउनके गिलासमें हीराऔर संखियाडाले जिस मनुष्यने हीरेका चूर्ण डालावह बड़ारुपये बालाहोगा किन्तुयहबातभी साबितहुई किवह शख्सजानता था कि जितनीजरूरतहो रुपयाखर्च कियाजावे परन्तु मेरीजो इच्छाहै वहकिसी भांति पूर्णहो सरजन्हमेलनटायनसाहब ने इस बातमें तक़रीरकी है कि भावपूनाकर वा दामोदरपन्थने हीरा और संखिया कारनैलफियर साहबके गिलास में डाला परन्तु किसीभांतिसे नहीं होसक्ता कि ऐसी बहुमूल्यवस्तु यह लोगडालतेपरन्तु हां होसक्ताहै कि गायकवारने हीरेका चूर्ण डालाहो उनको निश्चयथा किजो कारनैलफियर साहबकोहीरा दियाजावेगा तो शीघ्रही मरजावेंगे क्योंकि वह जानतेथे कि हीरा निहायत मोहलकशैहै गायकवारकोहीराऔर संखिया दोनोंमिलसक्तेहैं संखियाहर मनुष्यको मिलसक्तीहै परन्तु हीरा बड़ीक़ीमती चीजहै इतनारुपया और कौनशख्स खर्चकरसक्ता था अबमालूम हुवाकि एक मनुष्यने किसी हेतुके बिनाआठ पौंड संखिया मोल लिया परन्तु बड़ौदे में संखियेके मिलनेमें

दिक्कत होतीहै और सरजन्नवेलनटावनसाहब ने कहा है कि फौजदारीके महकमेके सिवायऔर कहीं संखियानहीं मिल-तीहै और दामोदरपन्थने एककुक्का पेशकियाहै जोउसीकेहाथ का लिखाहै और वह कहताहै किमैंने महाराजा साहब की आज्ञासे इसकागजको लिखाथा इस कागजमें ४ अक्टूबरसन् १८७४ ई० लिखीहै उसपर गणपतिराव और यशवन्तरावके दस्तखतहैं उसमेंयहभी लिखा हुवाहै कि फौजदारीसे आज्ञा केबिना संखिया नहीं मिलसक्ती है दामोदरपन्थने इसबातको सबित कियाहै कि अरदासियरवदिया फौजदारने कहा कि मैं महाराजासाहबसे पूछकरसंखिया दूंगा मिस्टर हरसुखजो अति प्रतिष्ठित मनुष्य हैं वह गत सप्ताह में बड़ौदेको आयेथे वहमुकद्दमेके खण्डन करने के लिये नहीं बुलाये गयेथे परन्तु फिरभी वह कह सक्ते हैं कि दामोदर चिम्बकको फौजदारसे संखियानहीं मिलीथी और जोउसने अदालतमें पेशकिया है वहठीकहै—संखियेके मंगानेके लियेघोड़ेकी खारिशकाबहाना किया गयाथा परन्तु हकीकतमें साबित होगया कि करनैल साहबके देनेके लियेसंखिया मंगाईगईथी महाराजासाहब ने उसकागजपर इसलिये दस्तखतनहीं कियेकि अगरमैंदस्तखत करूंगातो तहकीकात होनेपर मुझपर मुकद्दमाखड़ा होजावे-गा इसलिये उन्होंने दामोदरपन्थ से कहा कि जहांसे होसके संखियाको आओमेरे मित्रकहतेहैं किहीरेगायकवारके पास नथेजोबाहरसे मंगवायेगये उनदिनोंमें एकतलवारके मियान कब्जेपर हीरेजड़े जातेथे परन्तु कमीशनके अधिष्ठाताओं को खूबमालूम करनाचाहिये किकितने हीरे इस तलवारके कब्जे और मियानमें खर्चहुये होंगे क्योंकिजो कारीगर इसकब्जेको बनातेहैं वहहीरोंके खर्चोंका हिसाबरखते होंगेऔरउनको भयहोगा कि अगर कोई हीरागुम होगया तो हम लोगपूछे जावेंगे औरजो कनीहीरेकी फतहचन्दसे मोल लीगई बकहुक

वास्ते मोल लीगई कि तलवारके कब्जेपर लगाई जावेगी वह एक धोखाथा हालांकि वह पीसकर करनैलफियर साहब के शर्बतमें डालीगई मेरे दोस्तने फतहचन्द की गलतियां करनैल फियर साहब की गलतियों के सदृश बयान की है और कहते हैं कि जिसतरह करनैल साहब इजहार के वक्त घबरा गये थे उसीभांतिसे हेमचन्द फतहचन्द घबरागया होगा क्याखूब कहांकरनैल फियरसाहब की पदवी और कहां हेमचंद फतहचंदकी हैसियत—मेरेमित्र कहते हैं कि दसहरेके दिनोंमेंआज्ञाहुईथी किहेमचंद फतहचंदछोटे २ हीरेलाकर पेशकरेतथा वह और जौहरीहीरे लाये अब फतहचंद कहता है कि वह हीरेमुझको लौटादिये गये परन्तु दामोदरपंथ कहताहै कि हीरेरखलिये गयेथे हेमचंद और दामोदर पंथ दोनोंने कहा हैकिजब हीरेनिकालेथे हमकोमालूम नथाकि क्योंमंगाये थे दामोदरपंथ और नानावलिल जोजवाहर खानेके दारोगाहैं और आत्माराम और रघुनाथजो जवाहरखानेके मुख्यमुहर्रर हैं वहसाबित करतेहैं कि हीरेमोल लियेगये दामोदर पंथने इसविषयमें ऐसावर्णनकिया हैकि हरगिज ऐसा नहींहोसक्ता इसलिये साबितहुवा कि २० अक्टूबर सन् १८७४ ई० वोहीरे कीकनी खरीदीगई॥

सरजान्बेलनटायनसाहब ने उसका इस प्रकार से खण्डन कियाकि हेमचंदकहताहै कि मुझको हीरे कीकनी वापिस मिली और फिरनदीगई इससे साबित हुवा किहीरे कीकनी और संखियाजो करनैलफियर साहब की शरबतमें मिलाया गया महाराजासाहब के यहां उनही दिनोंमें खरीदा गयाथा जबकि रावजी और नरसू कहते हैं किहमको पुड़ियामिलीथीं, कोईतकरीर ऐसीपेशनहीं होसक्ती जिससेउन लोगोंकाबयान गलत होसके—सरजान्बेलनटायनसाहब नूरुद्दीन बोहरेका बहुतकुछ जिक्र करतेहैं और कहतेहैं किअगर नूरुद्दीनबोह-

ऐसे दामोदरपंथने संखिया मोललीथीतब बहुधाल्स दामोदर पंथ के इजहार की सिदाकत के लिये क्यों नहीं बुलाया गया परन्तु मैं कहता हूं कि यदि मेरे मित्र चाहते तो नूरुद्दीन बौहरे को दामोदरपंथ की गवाही के खण्डन करने के लिये बुला सक्ते थे मैंने नूरुद्दीन की गवाही का लेना कुछ अवश्य न समझा अगर सरजन्टबेलनटायनसाहब चाहें तो उसकी गवाही अबमैं लेसक्ताहूं वह कहते हैं कि नूरुद्दीन गायकवार का शत्रु था परन्तु मालूम नहीं होता कि नूरुद्दीन का बैर गायकवारसे क्योंकर साबित होसक्ताहै सुनाहै कि नूरुद्दीन बौहरा जब कि पहिले कमीशनजमा हुईथी नालिशीथा परन्तु यहसाबित नहींहुवा कि उसकी नालिशकी समाअत हुईथी वा नहीं खैरइससे कुछप्रयोजन नहीं कि नूरुद्दीन गायकवारका शत्रु था वा नहीं परन्तु सरजन्टबेलनटायनसाहब ने उसकी गवाही क्योंनहींली और दामोदरपंथके इजहारको क्योंखण्डननहींकिया क्योंकिगायकवारके जितनेवकीलहैंजिस मनुष्यके पासचाहें जासक्ते हैं इसीतरह नूरुद्दीन के निकट भी जासक्ते थे और उससेहाल पूछसक्ते थे परन्तु जब दामोदरपंथ केइजहार खण्डननहींहुये तो उसके इजहार कायमरहे नूरुद्दीनका बुलानावन बुलाना सरजन्टबेलनटायनसाहबके तअल्लुकथाजोउसका बुलानामेरे ज़िम्मे होतातो मैंबुलाता कमीशन केमेम्बरोंनेइसविषयमें दोनोंओरकी तकरीरकोसुना जोकुछउनकी रायहोगी वहजियादह मुनासिब होगी माईलार्ड अब कमीशनके मेम्बरोंका खयाल इसीतरफ रुजूकरताहूं वहयह है कि ९ नवम्बरको करनैलफियरसाहबकाविष दियाजानामैंने साबितकरलियाऔर यहभीजाहिरहैकि जिनतारीखोंमेंहीरे औरसंखियेकेखरीदकाजिक्रहैलोगोंनेबयानकियाकिउन्हींदिनोंमें महाराजासाहब केनौकरोंके पासउन्होंकी आज्ञानुसार यहसब वस्तुउपस्थित थींइसलिये साबित हुवा कि आपहीमे-

हाराजासाहबने इनवस्तुओंको मंगायाथा जोवहनमंगातेतो क्योंकरनौकरों केपासइन चीजोंकाहोना साबित होता वह बातभी गवाही सेसाबित हुई किग्राहा साहिबने रावजीको यहपुड़ियादीथीं और रावजी ने ९ नवम्बरको करनैल फियर साहबके शरबतमें उनकोडाला—सबगवाहीमें रावजीकानाम लियागया दूसरेकिसी शरबतका जिक्रनहीं हुवा चारप्रकार केगवाह इसमुकद्दमेके कायमकरनेके वास्ते ठहराये गयेहैंजो करनैलफियर साहबको विषदेसक्ते हैं पहिले रेजीडन्सीके नौकर उनकेलिये मेरेमित्रने वर्णनकियाहै किवह अपने हाकिम सेराजीथे वहक्यों उनकोविष देतेपरन्तु उनकीतकरीर सेयह बातभी प्रकटहोती है किवह इसविषदेने के कुछबानी मुबानीनथे—और किसीऔरसे उन्होंने विषनहींदिया जोदिया लोभ सेदिया॥

दूसरे—भावपूनाकर—मैंनहीं कहसक्ता किजहर खुरानीकी तोहमत उसपरक्योंकर होसक्तीहै मैनेकितनाही गवाहीपर गौरकिया परन्तु उसके लियेकोई इशारह भी नहींपाया गया और मुझको इसकीभी कोईवजह मालूमनहीं हुईकिमेरेमित्र भावपूनाकर को गायकवार कावैरी ठहराते हैं और कहते हैं कि करनैल फियर साहब सदा उसकी बातें सुना करते थे और वह उनका जासूस था भावपूनाकर और करनैलफियरसाहब दोनों की गवाहीलीगई थी कोईबात ऐसी मालूम नहींहुई जिससे भावपूनाकर पर अपराध लगायाजावे किन्तु साबित हुवा कि यह शख्स प्रतिष्ठित और विश्वसित है और मुद्दतसे बड़ौदेमेंरहताहै उसनेअनेक प्रकारकी नौकरीभीकी और उसकेकाममेंभी कोईकसूर नहीं हुवा—इनदिनों वह सूरतदेशमें मिष्टरहोपसाहबका एजन्टहै और जुल्फिकारअली असमर्थ बालकके रियासतके प्रबन्धके लियेजो रियासतबड़ौदे मेंहै नौकरहै यदियह मनुष्यविश्वसित नहोता तोमिष्टरहोप

साहबउसको क्यों नौकररखते–भावपूनाकर एकचिट्ठीसिफा-
रशकी करनैलफियर साहबके नामलायाथा मिष्टरहोपसाहब
ऐसेहाकिम नहींहैं किजो यहमनुष्य योग्यन होता तोउसकी
सिफारिश करते वह कदाचित् ऐसे मनुष्यको नौकर नरखते
भावपूनाकर का केवल मिष्टरहोपसाहब कोही निश्चय नहींहै
किन्तु बहुतसे साहूकार और सरदारोंका वहनौकर रहावह
शख्समुद्दतका नौकरहै और मीरजाफरअलीके पुत्रकीरियासत
काइन्तिजाम करताहै उसनेजो कुछ काररवाई की वह सब
को मालूमहै किसीमनुष्यको उसकेकामपर एतिराज नहींहै
किन्तु हर मनुष्य उसकी प्रशंसा करताहै जब करनैल मीड
साहब की कमीशन इकट्ठी हुई तो इस मनुष्य ने अपने मव-
क्किलों की तरफसे चारदावे गायकवार पर पेश किये थे और
यह बात कि करनैलफियर साहब उसकी हरएक बात को
सुनतेहैं जबउससे यहप्रश्नकियागया कि करनैलफियरसाहब
केपासतुमजातेथेतो उसनेकहा हां मैंबहुधाजाताथा औरजब
सरजन्बेलनटायनसाहबने करनैलफियरसाहबसेयहीपूछातो
उन्होंनेभी उत्तरदियाकि हांमैंइस मनुष्यको प्रति दिन देखा
करताथा और वह अपनेकार्य्यकेलिये आयाकरता था दोनों
मनुष्योंने साफ २ उत्तर दिया सरजन्बेलनटाइनसाहबने जो
कहाहै कि इस मनुष्यने खरीतेके तैय्यार होनेकी इत्तिला दी
यहबातभी कुछआश्चर्य्यकीनहींहै क्योंकि वहहरएक सरदार
आदिकेपास जायाकरताथा और सरदारलोग दरबारमेंजाते
थे इसशख्सने सरदारोंसे सुनकर करनैलफियर साहबसेजिक्र
कियाहोगा उसने यहनहींकहा कि खरीतेका मजमून क्याहै
क्योंकिउसका मजमून नजानताथा इस इत्तिलाके देनेमें कौ-
नसीबुरीबातहुई क्योंकि खरीता रेजीडण्टसाहबके द्वारा भेजा
जाताथाऔर यहरीतिहैकिसबखतकिताबत सरकारीरीतिसे
गवर्नर बम्बई वा गवर्नरजनरलसे होतीहैतो रेजीडण्ट साहब

केद्वारा होती है और सदैवउसके साथ अंगरेजोंमें तर्जुमा होता है सिवायइसके और कोई बात भावपूनाकरकी नहीं है नहीं मालूमकि मेरे दोस्त भावपूनाकर पर क्यों अपराध लगाते हैं यहबात उनको कहनेकेयोग्यनथी कि भावपूनाकरकरनैलफियरसाहबका जासूस है और जोकुछ वह कहता था करनैल साहब करतेथे यहहुक्मउनका निहायत सख्त है क्या उन्होंने करनैलफियरसाहब को कटपुतली ठहराया था, किजिसतरह भावपूनाकर चाहताउनको नचाताइस विषयमें कमीशनको खूबध्यान देना चाहिये और भावपूनाकर के लिये जो खयाल होंउनको कमीशनके मेम्बरदूर करदेंक्योंकि भावपूनाकर की मनसेयही इच्छाहोगी कि करनैल फियरसाहब बड़ौदे में रहें और सहीसलामत रहेंनयह किउनको विषदेकर मारडालें और कबरमेंगाड़े इससेवह मेरेमित्रका कच्चाखयाल रहहुआ जोउन्होंने वर्णन किया किवह चाहताथा किसंखिया दिया जावे और जबउसे पीनेनपायें किमैंउनको खबरकरदूं जोऐसाहोतातोदोहरीखूराक संखियेकीजोदीगई नदीजाती और भावपूनाकर विषकेपीने परदौड़ाआता और गिलासकोकरनैलसाहबके हाथसेछीनकर नपीनेदेता नयह किकरनैलफियरसाहब शरबतको कुछपीकर कुछफेंकचुके और तलछटडाक्टरसाहब कोदेचुके और हाजिरीके खानेकावक्त बीतगया तब भावपूनाकर नेभीसंखियेका कुछजिक्रन किया किन्तु करनैलफियर साहबनेही उसमकहा था।इसलिये यहबात बिल्कुलगलतहैजो खयालकिया जावेकि भावपूनाकरको इसमुआमलेसे कुछ सम्बन्धथा ॥

सरजन्टबेलन टायन साहब नेकहीबेर अपनी सोचमें यहजिक्र कियाकि दामोदरपंथ चाहताथा किकरनैल फियर साहबको विषदें ताकिजोहिसाब निजके गायकवारके हैंउनको वह न देख सकें क्योंकि तोहमत लगाई गईथी कि दामोदर पंथने

बहुतकुछ लेलिया था और यह खबरभी उड़ीथी कि कारनैल फियरसाहब हिसाबकी किताबें मंगवानेवाले हैं इसलियेमेरे मित्रकहतेहैं कि यहवजह बहुतबड़ीथी कि दामोदरपन्थ कारनैलफियरसाहब को विषदेना चाहता परन्तु जितने इजहार लियेगये उनमें इसबातका कहींजिक्र नहीं है—कमीशनकेमेम्बरोंको खूबमालूम होगा कि गायकवारके निजके हिसाबोंका मंगवाना असम्भवितथा कारनैलफियरसाहबको गायकवार के निजकेमुआमलोंमें दखलदेनेका अखतियारनथा रेजीडण्टसाहबको सरकारनेजितनेअधिकार दियेहैं उनमें इसबातकाजिक्र नहींहैकि और कामोंमेंसे रेजीडण्टसाहबका यहभी एककामहै कि महाराजासाहबके निजकेहिसाबोंको देखाकरें दामोदरपन्थके हिसाब किताबको गायकवारके निजके हिसाबसे तअल्लुक था इसलिये दामोदरपन्थको कुछभयनथा कि कारनैल फियरसाहब उसकीकिताबोंको मंगाकर जांचकरेंगे जो कारनैलसाहब किसीहिसाबकी जांचकरते तो उसहिसाबकी जांच करते जो सरकार अंगरेजी और महाराजासाहबसे तअल्लुक होता और नकि उनकिताबोंको जिनमें निजकाहिसाबनहीं यहबातभी जाहिर नहींकीगई कि कारनैलफियरसाहब कोअधिकारथा कि जो किताबें रियासतकीहैं उनकीभी जांचकरें इसलिये यहविचार गलत है कि दामोदरपन्थने किताबों की जांचके भयसे कारनैलफियरसाहब को विषदिया और यहबात भी बिल्कुलगलत हैकि दामोदरपन्थने कुछतगल्लुब नहींकिया वा धोखादेकर द्रव्यखर्चकिया उसकीऐसी बातोंका कुछसुबूत नहींहै आश्चर्य्यनहीं जो उसनेऐसा कियाहो क्योंकि जबकोई मनुष्य अपनेतई खूनीका शरीककरताहै तोजोकुछ उससेधोखा वा छलहो कुछआश्चर्य्यनहीं परन्तु कोईदगा अथवा इस प्रकारका उद्योग साबितनहींहै और हिसाबकी इसमेंनहीं पायाजाताकि उसनेकोई तगल्लुब कियाहो॥

मेरेमित्रने इसबातपर बहसकीकि जोऊपर सुनानेपरजा

रीहुये उनपर गायकवार के दस्तखत नहींहैं परन्तु ऐसेदस्त-
तोंकी कुछ आवश्यकता नथी क्योंकि महाराजासाहबऐसे
हुक्मोंपर दस्तखत नहीं करतेथे दामोदरपन्थ को हिसाबकी
तहकीकातका कुछभयनथाक्योंकि पांचजगहपर हिसाबरहा
करतेथे जिनरक़मोंकेलिये लेलेनेका सन्देहहै उनकेलियेवह
कागज़ वउचर पेशकरताहै कमीशनके मेम्बरख्याल करेंगेकि
खज़ानेपर हुक्म सादिरहोनेकी क्या रीतिथी पहिलेयाद्दाश्त
लिखी जातीथी कि किसचीज़के वास्ते रुपयेकीज़रूरतहैफिर
दामोदरपन्थ के दस्तखत होतेथे दामोदरपन्थ लिख देताथा
कि महाराजासाहबकी इजाज़त होगईहै ॥

तीसरे यहकि उसयाद्दाश्तपर उसमनुष्यकी रसीदहोती
थी जिसको रुपयादिया जाता था इसलिये दामोदरपन्थहर
प्रकारसे बरीथा जबकभी उससेपूछागया कि अमुक याद्दा-
श्तकी रक़म कहांलिखीहै तो उसनेशीघ्रही बतादिया किअ-
मुक पृष्टपर लिखीहै इसकेविशेष रोजनामचा—सप्ताहिक—मा
सिक—वार्षिक पत्रहाकरताथा जिसरक़मके देखनेकी ज़रूर
तहोती तो इनकाग़ज़ों से उनका पतालग जाता हिन्दुस्तानी
हिसाबकी रीतिऐसीहै कि जो एकरक़मको भी लेलियाजाय
और कोईमनुष्य उसको गुप्तकरनाचाहे तो सम्पूर्णकिताबोंमें
उसरक़मको दुरुस्तकरना पड़ेगा और महकमेके सम्पूर्णलोगों
को रिशवत देनीपड़ेगी ॥

जो यह बात भी मानी जावे कि महाराजा गायकवारके
नौकर ऐसेईमान्दार नथे जैसाकि खज़ाने वालों को होना
चाहिये इससे किसीबातका छिपाना और नियाद्ह कठिन
था—दामोदरपन्थके लिये गफ़लतका अपराध धरना मेरेदो-
स्तकी केवल कल्पनाहै और उसका कोई मूल नहीं है मेरे
विचारसे जो दामोदरपन्थने इज़हारदियेहैं उनकी सिदाक़त
खूबहोगई कारनैलफियरसाहबको ऐसीकिताबोंके मंगवानेकी
क्याज़रूरथी मेरेदोस्तकी सारीतकरीरइसबारेमेंबातिलहोगई

हाके।द्दरपन्च कईबेर महाराजासाहबके साथ रेजीडण्ट साहबके पासगया परन्तु आपउनके। नजानताथा रेजीडन्सी के मार्गमें जो धर्म्मशालाहै बहुधा वहांउतर पड़ताथा महाराजासाहबने इसशख्सके। रेजीडण्टसाहबके रूबरूपेशकिया परन्तुउसने साहबसेभी कुछबातें नकीं इसलिये इसके। कारनैलफियरसाहबके मारडालनेका कोईप्रयोजन नथा औरजो कुछ तअल्लुकथा तो गायकवारकी वजहसे था॥

माईलार्ड अब चैाथे मनुष्यका वर्णनकरताहूं जिसने विष दियाहो—महाराजासाहब से मेरेमित्रने बयान कियाहै कि जबमैने मुक़द्दमेके प्रारम्भमें सोचकीथी तो मैने उसमें नहीं कहा कि कारनैलफियरसाहबके विषदिये जानेका क्याहेतुथा उनका यहबयान ठीकहै शायद मुजसे उससमय भूलसेरह गया मैनेइसबातका उसवक्त खयाल नहींकिया मुझके। सरकारने इसप्रयोजनमे यहांनहींभेजाथाकि मुद्दइयोंकी तरह सवालकरूं किन्तुकेवल तहकीकातकेलिये भेजाथाकिजितनी गवाही बहमपहुंचे उसके। कमीशनके रूबरूपेशकरूं कमीशनके साहिबोंके विचार में जो उचितहोगा रिपोर्टकरें और इसबातके। निश्चयकरें जोमहाराजासाहबपर अपराधलगाहै वहसहीहैयानहींमेरे विचारमेंमहाराजासाहबकोविषदेनेका बड़ाप्रयोजनथाऔर वहमनसेकारनैलफियरसाहबकोविषदेना चाहतेथे सिवाय इनगवाहियोंके जोकमीशनके रूबरू गुजरीं सरजान्सेलनटायन साहबने ऐसे २ लेखदेखे जिनसे साफजाहिरहैकिगायकवार चाहतेथे कि जिसतरह होसके कारनैल फियरसाहबके। दूरकरदें इस विषयमें कमीशनकाध्यानदूसरी दिसम्बरके खरीतेपर दिलाताहूं इसखरीतेमें श्रीमान्गायकवारने लिखाहै कि कारनैलफियर साहब मेरे खराब करनेपर तय्यारहैं और हरप्रकारसे दिक्ककरतेहैं और जोउनका मन चाहता है वही करते हैं अगर सरकार मेराफैसला इन्हीपर रक्खेगी तो कुछ इन्साफ नहोगा इससे साफ जाहिरहै कि

यद्यपि गायकवारने नहीं लिखा कि मुझको करनैलफियरसा-हबसे निजका बैर है परन्तु गायकवार करनैलफियरसाहबके रे-जीडन्सीके पदपर रहनेसे बहुतकुछ उज्र करतेथे और बिचा-रतेहैं कि जो करनैलसाहब इसपदपररहे तो मेरेलिये अन्याय होगा ऐसे मुकद्दमेमें यहबातमालूमकरनी अतिकठिनहै कि निजके बैर से इस बात की दरखास्त हुई या पोलीटिकल ख-यालातसे गायकवार अपने खरीते में लिखते हैं कि मुझको करनैलफियर साहबसे निजकाबैर नहीं है मैंने अपने वजीरोंसे इसबातकाखूबमशवरह कियाकि जबतक करनैलफियरसाहब यहांरहेंगे तबतक उत्तमप्रबन्ध काहोना असम्भवित है ॥

मैं कितनाही उत्तम प्रबन्ध करनाचाहता हूं परन्तु वह बाधकहोते हैं मैं चाहताहूं किजो हिदायतें ५ वीं जूलाई सन् १८७४ ई० के खरीतेमें कमीशन को सन् १८७३ ई० के रिपोर्टके अनुसारमुझको हुई हैं उन्हीं के अनुकूलकिया करूं पर लाचारहूं जब करनैलफियरसाहब गवाहकीतौरपर कमी-शनके रूबरू बुलायेगये तो उनसेकोई ऐसाप्रश्न नहीं किया गया कि आपने क्यों अच्छा इन्तिज़ाम नहोने दिया और बाधक हुये मिस्टर दादाभाई नूरुजीमिस्टर वालालंगशन वाकलऔरहुरमुजजीअरदासियर वदियाइनतीनोंमनुष्योंका खरीतेमें जिक्रथा परन्तु जब वह कमीशनके रूबरू आये तो उनमेंसे किसीमनुष्यने भी बयान नकियाकि अमुक कार्य्यके करनैलफियरसाहबबाधकहुयेथे इसलिये गायकवारनेजोलिखा है कि बाधाकरतेहैं बिल्कुल गलतहै यहखयालशायद गाय-कवारकाहै परन्तु उनकेकिसी वजीरका नहीं है गायकवार लिखते हैं जोकि मैं और मेरे वजीरजानतेथे कि किसीसमय में करनैलफियर साहब पर गवर्न्नरबम्बईने चश्मनुमाई कीथी (शायदयहबयान गायकवारकाबेसिर और पैरकेहैंजो ब्युशन पर होजो गवर्न्नर बम्बईने किसीसमयमेंलिखाया और जोकि सेउन्होंने उसकोहासिलकिया क्योंकि गायकवार बहनहीं

कहतेकिमुभ्कोकहांसेमिला) करनैलफियरसाहब इसरेजो-
ल्यूशनकेलिये कहतेहैंकि मेरेद्वारा यहरेजोल्यूशननहींआया
सिवा इसके गायकवार के सिंध की कारवाईसे क्यावास्ता
था फिर उनकेक्योंकर मालूमहुवा कि बलिहाज़उस पहिले
की चप्पनुमाईके करनैलफियरसाहब बदलजावेंगे इसरेजोल्यू-
शनके दादाभाईनूरूजीने सरल्यूइसपीली साहबके दिखायी
था यहरेजोल्यूशन गायकवार के दिखानेकेवास्ते दियाहोगा
इससेएक और जुर्मभी गायकवार पर ठहरता है कि गाय-
कवारकेवल रेज़ीडन्सीके नौकरोंसे बुरीखबरोंके नहीं पूछते
किन्तु एक और सरकारी अफ़सरोंके पाससेभी खबरें मंगवाते
थे अमीनाआया नरसु रावजीके इज़हारकी तसदीकहोगई
क्यों कि गायकवार हरएक छोटी बडीबातके पूछनाचाहते
थे यहबात दरयाफ़्तनहींहुईकि गायकवारके पासकिसतारी-
खको यह रेजोल्यूशन पहुंचा परन्तु गायकवारको इसबातका
विचारहोना चाहियेथाकिचाहेकरनैलफियरसाहब परसिंध
में चप्पनुमाईहुई थी परन्तु सरकार के पूर्व्ववत् निश्चय था
क्योंकि सरकारने उनको बडौदेकारेजीडण्टनियत किया और
यह पदवीसिंधसे बडेदरजे और अधिकमासिककी थी॥

और सबनौकरों के अपनीनौकरीके दिनोंमेंकभी न कभी
चप्पनुमाईहोजातीहैपरन्तु करनैलफियरसाहबकी चप्पनुमाई
के लिये इतनी खसूसियतहै कि यह रेजोल्यूशन चप्पनुमाई
काउससमय जारीहुवाथा जबकि करनैलफियरसाहब लण्डन
मेंथे तबकरनैलफियरसाहबके उसके खण्डनकरनेका मैक़ान
मिला परन्तु जबवह हिन्दुस्तानके आये और ऐसे रेजोल्यू-
शनका प्रचार उनकोसूचितहुवा ते तुरन्तही उन्होंने सर-
कारसे नकललेकर उसके रद्दकिया और सरकारनेउसके
मानलिया अगर करनैलसाहब उससमय हिन्दुस्तानमेंहाते
ते कदाचित् यहरेजोल्यूशनजारी नहोता गवर्न्मेण्टने बव-
जहहिकमतअमली के सिन्धमें उनकोनियत नहींकिया और

पालनपुरमें उनकोभेजदियाजोउनको विषयमें मासिक मिलताथा वही पालनपुरमें भी पाते थे यदि गायकवार में कुछ भी बुद्धि होती तो जबकरनैलसाहब बड़ौदेमें रेजीडण्टनियत हुयेथे तोमालूमकरलेते किसरकारकी कुछ अप्रसन्नता हैया नहींतोकरनैलसाहबबड़ौदेमें रेजीडण्टनियतनहोते और जो कारवाईकरनैलफियरसाहबने नौसरीमेंकीथीउससेभीगायकवारको मालूमकरना चाहियेथाकि गवर्न्नमेण्ट को उनका बड़ानिश्चयहै जबनौसारीमें गायकवारका विवाहहुआ था तो गवर्न्नमेण्टकी आज्ञानुसार करनैलसाहब उसविवाह में संयुक्त न हुये महाराजासाहबने ९—मई को एक खरीता लिखकर गवर्न्नमेण्ट में भेजा जिसमें करनैलफियरसाहब की बहुत कुछशिकायतथी इसमेंलिखा थाकि करनैलफियरसाहब मेरे विवाहमें संयुक्त नहुये इससे मेरी अतिअप्रतिष्ठाहुई परन्तुमैं कहताहूंकि इसशिकायतका क्या परिणाम हुवा ॥

गवर्न्नमेण्टने उसका उत्तरलिखाकि करनैलफियरसाहबने गवर्न्नमेण्टकी आज्ञा से यह कारवाईकी और सरकार को उनकी कारवाई पर बड़ाभरोसा है इसउत्तरसे गायकवार को अगर कुछ नहीं तो इतना मालूमकरना चाहियेथाकि गवर्न्नमेण्टकरनैलफियरसाहबकी कारवाईसे प्रसन्नहै उस में यहभी लिखाथाकि जोकारवाई करनैलफियरसाहबकरेंगे उसको सरकार सर्व्वदा पसन्दकरेगी और सरकार की इत्तिला और आज्ञाके बिना कोई कारवाई नहीं करते ॥

मैंसम्पूर्ण मेम्बरोंका खयालएक तारीखपर रुजूकरता हूं अर्थात् महाराजासाहब का विवाह मई महीने में हुवा था और १६—अक्टूबरको पुत्र उत्पन्न हुवा जोकि करनैलफियरसाहबने उस बालक की माता को रानी न माना था उसके लड़के को क्योंकर युवराज और गायकवार का लड़का तसलीमकरते सोइसीतारीखकेपीछेगायकवारइसबात कीशिकायत करनेलगेकि साहबमुझपरबड़ीअनीतिकरतेहैं इससेप्रकटहैकि

उससमय में गायकवार के दिलका क्या हाल था वह बहुधा कहा करतेथे कि इन्हीकी काररवांई से सरकाने लक्ष्मीबाई को मेरीरानी नहीं माना इससे सरकार मेरेपुत्रको युवराज न मानेगी सोइनही हेतुओं से गायकवार को करनैलफियर साहब के बदली कराने की इच्छाहोगी ॥

१९—अक्टूबर को जब उनके पुत्रपैदा हुवा उनके मनमें करनैलफियरसाहबकी ओरसे फर्क आगया ॥

माईलार्ड— आपविचार करेंकि पूर्वोक्तहेतुओंसे गायकवारकी काररवाईसाफजाहिरहै और यहभी प्रकट है किजो गायकवारको अच्छाइन्तिजाम करनाहोतातो अपनेप्राईवेट सिक्रेटरी से मशवरह न करते किन्तु दादा भाई नूरूजीसे सलाहलेते ॥

निजके मुआमिलोंसे पूर्वोक्तसिक्रेटरी से मशवरह करने का मुजायका नथा इसबातमें आश्चर्य नहीं है कि एकतरफ दादाभाई नूरूजीसे उमदामजमून के खरीतेलिखातेथे और दूसरीतरफदामोदरपन्थसे दूसरामशवरह करते गायकवारने सबलोगों में यहबात प्रसिद्ध कररक्खीथी कि करनैलसाहब मुजपर बड़ाअन्यायकरतेहैं और दूसरीनवम्बरको जोखरीता गायकवारने गवर्नमेराट में भेजाथा गायकवार को खूबउम्मैदनथी कि हमारी दरखास्त मंजूरहोगी गायकवार ने और शिकायतोंमेंसेयहशिकायतभी कीथी किकरनैलफियरसाहब से सम्पूर्णसरदार और प्रजा अप्रसन्नहै तथाच करनैलसाहब से इसविषयमें पूछागया उन्होंने उत्तरलिखाकि यहगायकवारका लेखबिल्कुल गलतहै दादाभाईनूरूजी मौजूदहैं उनसे खरीतेके मजमूनकी तसदीक करानाजरूरथा परन्तु सरजन्सेलनटायनसाहब ने उनको बुलाकर खरीते की तसदीक नहींकी और न करनैलफियरसाहबसे इसविषयमेंप्रश्नकिये ॥

माईलार्ड—करनैलफियरसाहब और गायकवारमें जोकुछ बातेंहुई उनसेसाफ जाहिरहै किगायकवारकोकरनैलफिय-

रसाहबकी बदली होनेका निश्चय नथा किन्तु खरीते भेजनेसे तीनदिनके उपरान्त गायकवारने करनैलफियरसाहबसे कह दियाथाकि यह खरीता मैंने नहीं लिखा है उस तहरीरसे मैं अलगहूं और इसकहनेसे उनका यहप्रयोजनथा कि खरीते में जो दरखास्तकी थी वह मंजूर नहोगी रंजबढ़ाना फजूल है यद्यपि गवर्नमेण्टने गायकवारकी प्रार्थना स्वीकारकी तथापि यह नलिखाकि करनैलफियरसाहबको क्योंबदलदिया गायक-वारका यह खयालकरना बेजा है कि सरकारनेमेरीदरखास्त पर करनैलसाहबको बुलालिया मालुमहोताहै कि उनदिनों में गायकवारकी टोकाररवाई मंजूरथीं॥

अर्थात् दादा भाई नूरूजीके द्वारा खरीता भिजवाना और दामोदर पन्थ से काररवाई करनी यह बात गवाही से साबित नहीं हुई किगायकवारको अपनेखरीतेपर भरोसाथा कमीशनके मेम्बरोंको पूर्वोक्तवार्त्तासेमालूमहोगा किगायक-वारको निहायत ख्वाहिशथी किकरनैलफियर साहब बड़ौदेसे बदलजांय इससेबढ़कर उनकीइच्छा क्योंकर जाहिरहोगीकि गायकवारको यहभीमालूमथा किकरनैलफियरसाहबएक रि-पोर्ट भेजनेवालेहैं—खरीतेका एकमन्शा यहभीथा कि करनैल फियरसाहब यहांसे बदलजावेंगे तो दूसरा रेजीडण्टउसको लिखेगा॥

निश्चयहै कि कमीशनके मेम्बरोंको इसमेरी तकरीरसेमा-लूमहुवाहोगा कि गायकवारको करनैलफियरसाहबकीतब्दी-लीकेलिये कौन२ वजहथीं और गायकवारने जितनीकारर-वाई करनैलसाहबके बदलनेकेलिये की उसका यहवक्त बड़ा कारणथा अर्थात् खरीतेके भेजनेका मुख्ययहप्रयोजनथा कि जिसतरहहोसकेकरनैलफियरसाहब रिपोर्टनभेजेंजो२मुकद्द-मेकी तरदीदपेशहुई उससे यहबातभी प्रकटहैकिगायकवार चाहतेथे कि करनैलसाहब बदलजावें अबमैं ९-नवम्बरकाजिक्र करताहूं कि उसदिन गायकवारकी क्यादशाथी गायकवारकी

यह रीति थी कि सोम और [illegible]तिवार को फियरसाहब के पासजाया करतेथे गवाहों से यह ब त साबित नहीं है कि जब वह रेसीडन्सी को गये तो उनको मालूमथा कि करनैलफियर साहबको विष दियागया—परन्तु यहबात खूब प्रकट है कि जब गायकवार रेसीडन्सी से लौटआतेथे तबउनको विषदेनेकाहाल मालूम होगयाथा क्योंकि जब करनैलसाहब डाक्टरसाहबको चिट्ठीभेजचुके तब सालिम घोड़ेको उठायेहुये यशवन्तराव के घरको जाताथा डाक्टरसीवर्डसाहबने उसको मार्गमेंदेखा जब करनैलफियरसाहबने गिलासमें तलछट देखाथा तो रावजी को चिट्ठी दीथी कि तुमडाक्टरसाहबके पासलेजाओ परन्तु उसने यह चिट्ठी महमूदको दी और आपनगया क्योंकिउसको मालूमहोगयाथा कि करनैलसाहब भीतर क्याकररहेहैंऔर उनकी क्यादशा होगईहै महमूद सालिम को मार्गमेंमिला उसने सालिमको एकरुपया बिसकुटलानेकेलिये दियाथासाबितहुवा कि सालिम घोड़ेको दौड़ाकर नगरको गयाहै करनैलफियरसाहब सातबजे हवाखोरीसे लौटआतेथे औरसात और साढ़ेसातबजेके बीचमें उन्होंने शर्बतपिया और कुछफेंक दिया उससमय सालिम नगरकीओर गयाथा इसबातकानिश्चयहोना कठिनहै कि वहक्यों नगरकोगया परन्तुइतनाकहसक्तेहैं कि वहरेसीडन्सीकोआया औरवहांसे महाराजासाहब को इत्तिलाकेलिये वहलौटगया कि रेसीडन्सीमें क्याहोरहा है और डाक्टरसीवर्डसाहब बुलायेगयेहैं यदि वह रेसीडन्सी को नआता तो यहहाल उसकोमालूम नहोता मुझको निश्चयहै कि महाराजासाहबको रेसीडन्सीमें आनेके पहिलेखबरहोगईथी कि करनैलफियरसाहबको विषदियागया और यही हेतुथा कि गायकवार चुपहोरहे ॥

सरजानमेलविलसाहबनेवर्णन कियाहैकि जबमहाराजासाहबकरनैलसाहबके पासगये तो उनको किसीबातसे कुछ तरद्दुदनहीं पायाजाताथा क्योंकि वह पहिलेसे खबरको मालूम

कर चुकेथे तो उनको ढूंढ़ने के लिये बहुत अच्छा मौका मिला था करनैल साहब ने अपने इजहार में यही है बयान किया है कि ९ नवम्बर को महाराजासाहबसे पहिले मैंने उन की कुशलप्रश्नकी तभीसे बीमारीका जिक्र आया और करनैल साहब के चित्त की उद्दिग्नता का देर तक जिक्र रहा इसमें सन्देह नहीं है कि जब गायकवार रेजीडन्सीसे लैाटकर आतेथे तो उनको मालूम होगया था कि करनैल फियर साहब को विष दिया गया क्योंकि मार्गान्तर में महाराजा साहब ने दामोदरपन्थसे कहाथा तथाच उसकेइजहारमें यहभीलिखा है कि जबमैं और महाराजासाहब रेजीडन्सीसेलैाट आये थे तो महाराजासाहबनेकहाथा किरेजीडन्सीमें बड़ाशोरऔर गुल होरहा है जब मैंने उसका कारणपूछा तो महाराजा साहब ने उत्तरदिया किनरसूहमेशाबाहरबैठारहाकरताथा और जबकोईमनुष्य आताथा तो सीटी बजादिया करता था परन्तु आजकेदिन वहबाहर नथा इसलिये शोर औरगुलहोरहा है॥

रावजीप्रति दिनआया करताथा परन्तु आज नहीं आया उसनेजल्दी करकेडालदिया मैंनेपूछाकि उसनेक्या डाला यह सुनकर महाराजा साहबने मेरीबात कोटाल दिया और कुछ और बातेंकरनेलगे फिरमहाराजासाहबनेकहा किसालिमरावजीकेघरको गयाहै ताकिपुड़ियों कोलेकर बुढ़िया की रोटी मेंडालदे मालूम नहीं कि सालिमने पुड़ियोंको फेंकदिया था नहींयह मुआमला बहुतखराबहै देखियेक्या होता है अगर दामोदरपंथसही२कहता है तो महाराजासाहबको रेजीडन्सी केपहिलेमालूम हुवाहोगाकि विषदेनेका उद्योग किया गया है और यहभीमालूम हुवाकि गायकवारने उसीदिनतीसरे पहरकोनानाकुंवलकर आदिसे कहाथा मैंनेजो दामोदर पंथ केइजहारका फिकरापढ़ा वहउसका बनाया हुवा नहीं मालूमहोताहै और नवहऐसा मालूमहोताहै जैसाकि मेरे मित्र कहतेहैं कि पुलिसका सिखाया हुवा है जितनी गवाहियां

गुजरीइससे प्रकटहै कि दामोदरपंथने यह बात ठीक २ वर्णन कीहै क्योंकि उसनेअपने स्वामीकेलाभके लियेजरूर करके ऐसी बातोंपरगौर कियाहोगा इसलिये उसका यहबयान गलतनहीं होसक्ता सिवाइसके दामोदरपंथ के इजहारसे यहभी मालूम हुवाकि ९ नवम्बरको जबकरनैल साहबको विषदिया गयातो शीघ्रही गायकवार को इसबात की इत्तिला होगई थी शहर और कम्पूमें हरमनुष्यको खबरहोगईथी किकरनैलफियरसाहबकोविष दियागया परन्तु मालूमनथा किकिसने विषदिया जोगायकवारने विषनदियाहोता और उनकामन साफहोता तोफौरन्‌गाड़ी परसवार हो करकरनैल साहब के पास जाते और इसबातकी मुबारक बादी देतेकि वह जहर से बचगये परइस मौकेपरजो महाराजा साहबने कारवाईकी वहबेकुसूरआदमीके मानिन्द नहीं है अर्थात् बृहस्पतिवार तक वह ठहरेरहे और उसदिनजब मुलाकात कोगये तो और बातोंमें साधारणतौरपर विषकाभी जिक्रकिया उसकेदोदिन उपरान्त उन्होंनेसरकारी तौरसेखरीता भेजा कि मुझको आपके विष देनेकाहाल अब मालूम हुवा जो मेरेलायक कोईबात होतो उसकामके करनेकेलिये मैं उद्यतहूं इस खरीतेमें यहनहींलिखाकि मैंने कबसुना ॥

दामोदरपंथ सचकहताहै कि महाराजा साहब ने ९ नवम्बर को यहखबर पाईथी और यह बात गलतहै कि सालिम और यशवन्तरावने बाजारीखबर सुनकर गायकवारके रूबरू बयान कियाथा दामोदर पंथ ने अति विस्तार से वर्णन किया हैकि गायकवार क्योंकर रेजीडन्सीसे घड़ी २ की खबरमंगायाकरतेथे और रावजीके छूटआने पर कितने प्रसन्न हुये और जबवह दुबारह गिरफ्तारहुवातो कितनी उनको चिन्ताहुई जबसाहब बड़ौदे में आयेतो गायकवार को रावजीके लियेजितनी चिन्ताहुईथी उतनीहीसालिम और यशवन्तराव

केलिये किकरदीगई महाराजासाहब ने सालिम और यशव-न्तरावको कईबेर बुलाकर समझाया था कि तुमकोई बात न जाहर न करना इस अवसरमें महाराजा साहब को इसबात केदरयाफ़्त करनेका खूबमौका मिलाथा कि मुख्य विष देने वालाकौन है ॥

२२ दिसम्बर को महाराजासाहब से इत्तिलाकीगई किमा-पक्कानाम विषदिये जानेमें शामिलहै उससमयसे जबतक कि वहगद्दीपर रहेउन्होंने बहुधा दामोदरपंथ को आज्ञादी कि उनरक्मों को मिटादो जिनसे विषदेने का पतालगता होतो उसी समय हिसाबके कागजोंमें जहां २ सालिमका नामथा स्याहीडाली गईऔर वरक़फाड़े गये ॥

जबदामोदरपन्थसे पूछागया कितुमने सबवरक़ क्योंनिकाल डालेतो दामोदरपन्थने उत्तरदिया कि पांचजगह परहिसाब रहताथा क्योंकर सब जगह से कागज निकाले जाते जो याददाश्त दफ़्तरसे निकालदीजाती तोक्या फायदाथा पांच जगहका लिखाहुवा हिसाबक्योंकर निकलसक्ताथा बड़ीबेढंगी बात थी कि उन्होंने स्याही डालकर उनरक्मों को मिटाया जिससे पता लगसक्ता था कदाचित् इस बातका निश्चय नहीं होसक्ता कियह कामपुलिसवालों ने कियाहो क्योंकि पुलिस कोमालूम नथा किहिसाबोंके कागजोंमें किसजगह परविष देनेका लिखाहै इसलिये खूब साबित हुवाकि गायकवारकी आज्ञासे इन रकमों पर स्याही डालीगई—और गायकवार आपभी इसजुर्मके करनेमें संयुक्तथे ॥

इसगुफतगूके उपरान्त मुजकोगवाहीका जिक्रकरना जरूर है क्योंकि सरजान्बेलनटायन साहबने गवाहीमें बहुत कुछ तकरीरकीहै परन्तु मेरी इच्छा है किएक२ मनुष्यकी गवाही सचाईकोपहुंचाऊं और सरजान्बेलनटायन साहबकी तक़-रीरको खण्डनकरूं ॥

मार्टिनार्ड—आपकीराय मेरीरायके अनुकूलहोगी कि यह हिन्दुस्तानियोंकी यहरीतिहै कि वहकिसी तारीखुवादिनपर लिहाज नहीं रखते जो कुछ उनके मुंहमें आताहै कहदेतेहैं हिन्दुस्तानकी अदालतोंमें ठीकबातके मालूमकरनेकेलियेबड़ी दिक्कतहोतीहै विशेषकर उससमय जियादह मुशकिलहोती है कि कौन गवाह ठीक कहता है और कौन अशुद्ध वर्णन करताहै ॥

मेरेविचारसे सिवाय दामोदरपन्थके और कोई गवाहसिखायाहुवा नहींहै आया और दोनों पक्षवाले कम दरजे के आदमीहैं इसअवस्थामें आश्चर्य्यनहीं किजाहो वहलोग सही कहतेहैंपरन्तु कुछएक दूसरेकी गवाही में अन्तर है जिसतरह कियूरोपियन गवाही देतेहैं और उनके खयालात सही होतेहैंहिन्दुस्तानियोंके नहींहोसक्तेक्योंकि पहिलेसियूरोपियन कोताकीदके साथशिक्षा होतीहै हिन्दुस्तानी लोगवैसी शिक्षा नहीं पाते—जैसे किसरजन्हबेलंमटायनसाहबने तारीखुका नखकाराकिया कि तीन गवाह एक तारीखु कहतेहैं और दो गवाह दूसरी तारीखु बतातेहैं आप साहबोंको यह बातभी मालूमकरनी चाहिये कि जबएक बातहोजातीहै तो उसके पीछेदिन वा तारीखुका याद रहना कठिन है बहुधा हिन्दुस्तानीलोग जबपरस्पर वार्त्ताकरतेहैंतो इसतरह कियाकरते हैं कि अमुक तेहवार से दस पन्द्रह दिन के पीछे अथवादस पन्द्रह दिन पहिले फलानी बात हुई थी—सोयह लोग बहुधा तेवहारोंपर हरकिसी बातकी गिनती रखते हैं पश्चात्ताप है कि इनलोगोंका ऐसा स्वर्ग खराबहै कि वह बातको बख़ूबी स्मर्णनहीं रखतेजिन जजसाहिबों को ऐसी गवाहियोंसे काम पड़ताहै तो वहऐसी गवाहियोंको फजूलनहीं समझतेकिन्तु समाअतके लायक समझते हैं ९—नवम्बर के पहिले जबआया माबकबारके पासगई थी तो उसकाबयानहै कि एकमहीना

बावीसदिनपहिलेमैंने सुनाथाकिकरनैलफियर साहबको विष दियेजानेका इरादाहै—अब्दुल्ला उसका पतिअपने इज़हार में लिखाताहै कि १५ वा १८ रमज़ान कोथी॥

मेलदाऊद कहताहै कि देवालीके चारदिन पहिलेआया गईथी ऐसेन्यूनअन्तरसे उनका बयान गलतनहीं होसक्ता इस बातका कदाचित् निश्चयनहींहै कियहगवाह पुलिसकेसिखाये हुयेहैं जोउनको पुलिसने सिखायाथा तो सब गवाह एकमत होकर एक तारीख़ बयानकरते हालांकि तीनतारीखेंगवहों ने बयानकीं और वहीसही मालूम होतीहैं सो ऐसानहीं हो सक्ताकि इसमें किसीप्रकारकी गलतीका संदेह होसके—यदि गवाहपुलिसके सिखायेहुये होतेऔर तीनतारीखें भीउन्होंने सिखादीथीं तो पुलिस के लोग बड़े चतुरथे और उनकी बुद्धि सम्पूर्ण मनुष्योंकी बुद्धिसे अति तीव्रथी वहज़रूर पूरीतालीम करते॥

एकदूसरी बातयहहै कि जो गवाह रेज़ीडन्सी के नौकरहैं उनकेलिये मेरेमित्रने वर्णनकियाहै किपहिलेसे उनकाइरादा करनैलफियरसाहबके विष देने का ख़ुदथा तथाच जबसे मैंने उनकी गवाही सुनीमेराभी वहीख़यालहै यहबात स्पष्टहै कि कोईमनुष्य अपनेस्वामीको प्रसन्नहोनेपर मारडालनेका उद्योग नकरेगा इनलोगोंका ख़ौफ़ज़ाहिरहै कि जब रावजीको विष सौंपागया तोउसने महाराजासाहबसे पूछाथा किविषशीघ्र-ही तासीरकरेगा परन्तु उससे कहागया कि नहींतीन चार महीनेके पीछेअसर करेगा सिवा इसकेजब रावजीको पुड़ियां दीगईथीं तोउससे कहागयाथा कितुम पुड़ियोंको मिलालेना वह समझाकि पुड़ियामें जो श्वेतवस्तुहै वह संखिया है इस-लिये उसनेउस पुड़ियोंमेंसे केवल एकचोटकी बेकदरहीरेके चूर्णमें डालदी क्योंकि उसको यहभयहुवाहोगा कि अगरक-रनैलफियरसाहब मरजावेंगे तोबड़ा गोरगुलमचेगा औरमैं

खरावीमें पड़जावेंगा जो थोड़ी संखिया होजवेगी तो बीमार होकर इन्तिकालनकोचलेजावेंगे—इसउपायसे महाराजासा-हबकीइच्छापूर्णहोजावेगी और मुझ को मेरापारितोषक भी मिलजावेगाअहगुफ़्गू सिरफविषकेलियेही नहींहैकिन्तुशीशी केलियेभी कहताहूं कि वहशीशीजिसकेलिये मेरेमिषकह-तेहैं कि उसमेंहकीमजीकी दवाथी अर्थात् जबरावजीने दे-खाकि शीशीकी दोतीनबूंदोंनेमेरे उदरपर फफोलेडालदिये और उससेबड़ी जलनहोरहीहै तो अपनेबचावके लिये शीशी कीदवाको फेंकदिया ॥

कमीशनके मेम्बरों को इसबात परभी ग़ौरकरना चाहिये कि जबपहिले महाराजासाहबने उनलोगोंसे विषदेनेकेलिये कहाथा तबलोग राज़ीनहींहुयेथे परन्तु जब महाराजासाहब ने उनको खूबकाबूकरलिया तब विषका जिक्रकिया कईदिन तक यहलोग महाराजासाहबको खबरें देतेरहे और महा-राजा साहब उनको इसके बदले रिशवतें दिया किये जब खूब रिशवतहोगई तब महाराजासाहबने उनसे विषदेनेका जिक्र किया यह किसीभांतिसे इन्कार न करसके क्योंकिरावजीऔर नरसू उनके बशमें थे जो यह लोग महाराजा साहबका क-हना नमानते तो यह सम्भवितथाकि महाराजासाहब राव-जी और नरसूको उसके खबरके परचे के समेत जो वह लोग रेसीडन्सी से भेजा करते थे करनैल फियर साहब के पास भेज देते और कहते कि आपके नौकर इनआम की आशा से मेरेपास यहखबरें भेजतेहैं या जब कि रावजी कचहरी से कागजचुराकर लायाथा तबरावजी को उस कागजके समेत भेज देते और कहते कि देखिये यह मनुष्य कागज चुराकर लायाहै औरहमसे रुपयेलेने की इच्छारखता है इससूरत में उनलोगों को सिवायइसके कि मारडालने का इक़रार करें औरकुछ उपाय नथा आयाऔर लोगों को मालूमनथा कि रावजी औरनरसू गायकवार की ओरसे कारर्वाई कररहे

है इसीतरह से एक ओरमहाराजा साहब दादाभाईनवरोजी जीसे काररवाई करतेथे औरदूसरी ओर दामोदर पन्थसे ॥

उन्होंनेरावजी औरनरसूजीको एकहरजे में करार दिया था और आयाआदिको दूसरे दरजे में—और अजीब बात यह है कि गायकवार ने दामोदरपन्थको इस काररवाई में सरगरोह ठहराया था परन्तुरावजी आदिको दमोदर पन्थ से अलगरक्खा हर मनुष्य को एक दूसरे से न मिलने दिया बावजूदकरके गायकवार की होशियारी में कुछ संदेह नहीं उन्होंने खूबसोंच समझकर यह कामकिया था ॥

करनैल साहब वर्णन करते हैं कि ६ और ७ नवम्बर को मेरी८ नवम्बरकीसी दशाहोगई थी रावजीने शायदइनदिन शर्बत में विष नडालाहो औरकिसी मनुष्यने डालदियाहो ॥

सरजान बेलनटायन साहब ने इसबारे में जिक्र किया है कि करनैलफियरसाहब को विषकाहाल सुनते २ इतनावहम होगयाथा कि जबवहकुछभी अलील होतेथे तोउनको विष के देनेकासंदेह होताथा ॥

मिस्टर सूटर साहब ने जब रावजी को बुलाया तो उसने वर्णनकिया कि मैंने ९—नवम्बर के पहिले दो पुड़ियां डाली थीं क्याआश्चर्य्यहै कि वह—६ और ७—नवम्बरको डालीहों ॥

करनैलफियरसाहबको कुछ मालूम नथा कि मेरे शर्बतमें संखिया डालीजातीहै रेजीडन्सीके सम्पूर्ण सरकारीनौकरोंके साथउनकेनिजकेनौकरभी रिशवतदेकरसंयुक्तकरलियेगयेथे ॥

लार्डलार्ड—सरजानबेलनटायन साहबने सब गवाहोंकीग-वाहियोंको बिल्कुल गलतकरदिया और अदालतसेप्रार्थना कीहै कि किसीगवाहकी गवाही तसलीम नकीजावे ॥

पहिले मेरेविचारसे यहउचितहै कि अमीनाआयाकी ग-वाहीपर गौर कियाजावे ॥

पहिले अमीनाआयाकीगवाही मिस्टरसूटरसाहबने कीथी किसी पुलिसके और मनुष्यने उससे कुछबातभी नहींकी जब

मिस्टरसूटरसाहबने पहिले उसकेइज़हारलियेतो आया भी मारथी उससमयजोउसने वर्णन किया उसकोभी आर्यकरेगा जैसामिस्टर सूटरसाहबको याद है जबमिस्टर सूटर साहबने सुनाकि कईगाड़ीवालेआयाको सवार करकेरमजानकेमहीने मेंगायकवार केपासलेगये तोउसीसमय वहआयाकेपास गये परन्तु उसको बहुतबीमार पाया जब उससेकुछहाल पूछातो निश्चयहुआ किआया महाराजासाहब केपासगईथी औरकुछ रुपयाभी उसने पायाथा केवल इतनाही हाल पूछकर मिस्टर सूटरसाहब चुपहोरहे क्योंकि सूटर साहब उसके बीमारहो जानेसेउससे जियादह हालनपूछसके उसकेदो दिनकेउपरान्त आया और जियादह बीमारहोगई और उसको अस्पताल में लेगयेतथाच मिस्टरसूटरसाहब भीउसकेपास हस्पतालमें गये और उसकेइज़हार लिखलिये जिसपर (डी) अक्षर नम्बर२का निशानहै अगरयह खयालकिया जायकिपुलिसने वहइज़हार आयाकेजो उसने १८ दिसम्बरको दियेथे बनायेहैंतो बिल्कुल गलतहै क्योंकि जबउसको बड़े जोरका बुखारथा तो क्योंकर पुलिसकेलोग उसको सिखाते इसके सिवाय पुलिस वालों को इसमुकद्दमेका हालमालूमनथा तोवह क्यासिखाते॥

पहिले पुलिसको शेखदाऊद गाड़ीवाले से पतालगाथा कि वहआयाको गायकवारके पासलेगयाथा फिर आयाके इज़-हारलिये गयेफिर और लोगोंसे पूछागया जबमालूमहुआकि इनलोगोंके इजहारोंमें कुछफरकनहीं हैइससे तहकीकातका सिलसिला आगेकोचला पुलिस का सिपाही जिसके पहिरे में आयाथीएक छोटासासिपाही था उसको आयाकेसिखाने की बातमीलगीथी डाक्टरसीवर्ड साहबजो आयाकेदेखनेकोगयेथेइस विषयमें मेरेमित्रने बहुतकुछ कहाहै यहसुनकर मुझकोबड़ा आश्चर्य हुआ परन्तु यह बातकुछ अजीबन थी डाक्टर सीवर्ड साहब को योंही साधारण रीत से आया के देखने को गये

क्योंकि आयाडाक्टरसाहबकेमिन कीनौकर थी उनके जाने और आयाकेदेखनेमें मेरेविचारसे कोईबेमौका बातनहीं जब उन्होंनेआयाको देखातो डाक्टरी की रीतिके अनुकूल मालूम कियाकि दैहिकरोगतो अधिकनहींहै उसकेमनमें कोई बात हैउसको वहप्रकट करनाचाहती है औरइसीहेतु से उसेबड़े वेगसेज्वर आगयाहै—डाक्टरसीवर्ड साहब औरमिस्टर सूटर साहबमें कोईगुप्तभेद की बातनथी जब डाक्टरसीवर्ड साहब कोमालूम हुवा किआया कुछ कहना चाहती है तो उन्होंने तुरन्तहीमिस्टर सूटरसाहबको बुलायाजब मिस्टरसूटर साहब अस्पतालमेंगये तोकलमकागज़ अपनेसाथ नहीं लेगयेथे जो कुछआयाने उनसेकहा उसकोमिस्टर सूटरसाहबनेसुन लिया और दूसरेदिन उन्होंनेउस बयानको लिखलिया अब सरजन्ट बेलनटायनसाहबकहते हैं किवहइजहार जो आयाने मिस्टर सूटरसाहबके रूबरूदियेथे उनइजहारों से मिलाये जावें जो उसनेकमीशन के रूबरूदियेथे शायदसरजन्ट बेलनटायन साहबके रूबरू उसमें कुछअन्तर होगा परन्तु मेरे विचारसे कुछ अन्तर नहींहै॥

जोइजहार कि मिस्टर सूटर साहब ने लिखेहैं उनके लिये सूटरसाहब कहतेहैं कि मैंने आयाका बयानसुन लिया और अंगरेजी में लिखलिया लफ्ज़ीतर्जुमा नहीं किया॥

सरजन्टबेलनटायन साहबकहते हैं कि आयाने कोई ऐसा लफ्ज़नहींकहाहोगाजिसकामतलबटटोलने का होपरन्तु मालूमनहीं किसरजन्ट बेलनटायनसाहबऐसी उलझी हुईतकरीरक्यों करतेहैं आयाकेइस कहनेसे यह प्रयोजन था किमहाराजासाहब चाहतेथेकि मेरे मनका हाल मालूम होजावे तबवह विषदेनेका जिक्रकरें और जबकमीशनके रूबरूआयाके इज़हारलिखे गये तोउस समयभी उसनेयही मतलब अपना बयानकियाहिंदुस्तानीलोगजादू औरमंत्रपरबड़ाविश्वासरखते

हैंजोकिकिसीहिंदुस्तानीसेपूछाजावे किमंत्रऔरजादूक्याचस्तु हैतोबहुत कुछहाल बहसमझावेगा और उसपर अपनानिश्चयप्रकटकरेगा इसीप्रकार महाराजासाहबने आया से पूछा थाकिजो करनैलफियर साहबपर कोईमंत्र अथवाजादू किया जावेतो असरकरेगा यानहींइससे उनकायह प्रयोजन थाकि जोकोई वस्तुहमतुमको देंतोतुम साहबके खानेमेंडालदो। गेमरजन्ट बेलनटायन साहब इसबातकाभी जिक्रकरतेहैं किपुलिसवालोंने आयापर सख्तीकीथी यहबातबिल्कुल गलतहै आया ने इस सख्तीका कहीं जिक्रनहीं किया पुलिसवालों ने केवल इतनाही आयासे कहाथा कि तुमनेधूमकर रक्खी है इसबात को आया समझी थी कि कुछ पुलिस वाले मुझको धमकाते हैंजब उससे कमीशनके रूबरू धमकी का हाल पूछा गयातो आयानेकहा कि मुझकोकिसी मनुष्यने नहीं धमकायाआया से यहभीपूछागयाकि तुमको किसीमनुष्यने पहिले धमकाया था तो आयाने कहामुझको किसीने नहीं धमकाया ॥

मेरेविचारसे आयाकी संपूर्णगवाही निश्चयमानने केयोग्य है औरकोई सन्देहउसमें नहींहै ॥

पुलिसने उसकोकदाचित् नहीं धमकाया किन्तु साधारणतौरसेउससे सबबातें पूछीं।

दूसरागवाह रेजीडन्सीका एक चपरासी है यह चपरासी बहुतबड़ा गवाहहै अर्थात्रावजी जिसनेबहुतबड़ी गवाहीदी हरचन्दयह मनुष्यरेजीडन्सी का एकचपरासी था परन्तुउसने बाजारमेंबहुत रुपयाखर्च किया जबपुलिसने तहकीकातकी औरमालूमहुवाकिइसमनुष्यने बहुतसारुपयाउठायाहैतो २२ दिसम्बरकोयहमनुष्य पकड़ागया जो कुछउसने इज़हारदिया वहसफे ८०-तहरीर जूदनवीस में मौजूद है उसमें रावजी ने खूबसाफ तौरसे वर्णन किया है कि फ्टरसाहब के सम्मुखक्योंकर उसने इजहार दिये और मिस्टर फ्टर साहब

ने भी अपने बयान में उसके इजहार की सिदाकत की ॥

माईलार्ड—आपकोयाद होगाकि सरल्युइसपीली साहब रावजीके इजहारोंके लियेक्या कहतेहैं उसकेइजहारकेपहिले असलीहाल दरयाफ्त होनेकीकुछआशा नथीकि किसमनुष्य ने विषदियाहैइसलिये मिस्टरसूटर साहबऔर सरल्युइसपीली साहब—२३—दिसम्बर को बड़े दिनकी छुट्टियों में बम्बई जाने वालेथेजबरावजीके इजहारसे मालूम हुआतो सरल्युइसपीली साहबनेकहा कि इसमनुष्य केबयान को मैंकलसुनूंगा आया वहगलतहैया सहीतयाच दूसरेदिनउन्होंने,रावजीकोबुलाया औरआप उसकीबातों को सुना सरल्युइसपीली साहबकहतेहैं कि रावजीने उससमय उसीतरह बयानकिया जैसाकिकमीशन के मेम्बरों के रूबरू इजहार दिया जबरावजी से उसका बयानसुनागया तो सूटरसाहब ने उसको गिरिफ्तार किया औरमालूमहुवा कि इस मनुष्यने बाजार में बहुतसा रुपया खर्चकियाहैइसीमनुष्यके बयानपरनरसूपकड़ा गयाजहांऔर रेजीडन्सी के नौकरकैद थे उसीजगह रावजी और नरसू भी कैदकियेगये नरसूएक पुलिसके अफसरकेसाथ रावजीके पास भेजागया औरदोनों का साम्हनाकराया गया रावजीनेकहा किमैंनेगले २ पानीमें कबूलकरलिया तूभी इक़रारकर इससे पहिले रावजी और नरसूकी कुछ वार्त्ता नहीं हुई ॥

रावजीके इजहार भी लिखे नहीं गये थे और कोई मनुष्य ऐसानथा जो नरसूको इत्तिला देताकिरावजीने क्या इजहार दिये मिस्टरसूटर साहबऔर सरल्युइसपीली साहबने उसका बयानजुबानी सुनलियाथा फिरक्योंकर पुलिसके लोगनरसूको सिखातेताकिएक दूसरेकाइजहार मुताबिक होजावें नरसू चालाकआदमी नहींहै कल्पना करोकि पुलिसने नरसूकोभी सिखायापरन्तु उसकाऐसा स्मर्ण नहींहै जोउसको कुछ याद रहाहो अगरपुलिसवालेइतनीबातें किसीलिखेपढ़ेकोसिखाते

उसकोमीयाद रखना कठिन था इसलियेमेरे विचारसे उसके इजहारबिल्कुल ठीकहैं श्रोरकिसी प्रकार की बनावट उसमें नहीं पाई जाती॥

सरजन्हबेलनटायनसाहब ने रावजी के इजहार पर बहुत कुछगुफ्तगू की है जिसमें उसनेपेडरू का जिक्रकिया हैपरन्तु रावजीने अपना इजहारसाफ़ तौर से लिखाया है॥

सरजन्हबेलनटायन साहब पेडरू के विषय में कहते हैं कि सच्चागवाह एकयही है दूसरा कोई गवाह सच्चा नहींहै॥ रावजी पेडरूपर तोहमतरखताहैकिवहमेरे साथगायकवार केमहलकोगयाथापरन्तु पेडरूजानेसे इन्कारकरताहै परन्तुमुझ कोइसका कारणमालूम नहींकि सरजन्ह बेलनटायन साहब क्योंकरकहतेहैं किपेडरूकीगवाहीनिश्चय माननेके योग्यहैमैंने सबगवाहोंको पेशकियापरन्तु किसी गवाही की खसूसियत नहींकी कि अमुकगवाह निश्चयमाननेके योग्यहै श्रोर अमुक गवाह बेएतिबारहैं श्रोरइनहीं लोगोंके इजहारपरगवर्नमेण्ट इण्डियाने इस मुकद्दमेकी तहकीकातकी आज्ञादीथी मैं इस बातको तसदीक नहींकरसक्ता किअमुक गवाह प्रतिष्ठित है श्रोरअमुक गवाहप्रतिष्ठितनहींहै बहरहाल पेडरू २५ वर्षका पुराना नौकरहै श्रोरकमीशनको अख्तियारहै कि उसगवाह कोप्रतिष्ठित गवाहसमझे यह मनुष्य कहताहै किरावजीने जोकुछ मेरीनिस्बत बयानकिया वहबिल्कुल गलतहैयहशख्स कहताहै किमैं कभी महाराजा साहबकेपास नहीं गया वह खूबजानताहै किजोमैं इकरारकरूंगातो मुझकोकष्ट भुगतनापड़ेगाअगरइस शख्सकेइजहार मिस्टरऐडगन्हनसाहबकेरूबरूलिये गयेतो जरूरनहींहै किउसका बयानसचहो होइन साहबकी जितनी प्रशंसाकीगई वास्तवमें वह इसी प्रशंसाके योग्यहैं अगरपेडरू मिस्टरसूटर साहबके रूबरू इजहारदेता तोनिश्चयहै किठीकठीक बयानकरता मिस्टरसूटर साहबकी

आशासे यहमनुष्य मिस्टरऐडगेन्स्टन साहबकेपासगया उसको
खानसाहब लेगयेथेजबउसको मालूमहुवाकि जोमैं इकरार
करताहूं तोमेरेलिये हानिहोगी तब उसनेइनकारकियाथाकि
मेरीनौकरीऔरप्रतिष्ठा बनीरहे परन्तु विषदियेजानेके पहिले
बहुतसे लोगवर्णन करतेहैं किपेडहू महाराजा साहब कानौ-
करहै औरमहाराजा साहबउसका बड़ासन्मानकरतेथेकिन्तु
उसनेवर्णनकियाथा किमैंने महाराजासाहबसेकुछपारितोष-
कपाया यदि इस मनुष्यने कोई काम नहीं किया और किसी
कामकी महाराजा साहबको उससेआशा नथीतो उसको क्यों
पारितोषक दियामहाराजा साहब को निस्संदेह इससे कुछ
आशाहोगी औरउन्होने किसीकामके लियेकहा होगा कमी
शनकेमेम्बरों कोपेडहू केइजहारसे साबितहुवा होगाकि यह
बहुतसे हालोंको जानताथा परन्तु किसी बातका उसनेइक-
रारनहींकिया रावजीने जोइजहार दिये वहबिल्कुल ठीकहैं
पेडहू कहताहै किमुजसे सालिमने कईबेर महाराजा साहब
केपास चलनेको कहा परन्तु मैनेइकरार नहींकिया ॥

प्रेजीडण्ट साहबने प्रश्नकियाकि जोइजहार आया केमिस्टर
स्टरसाहबके रूबरूलियेगये उसमेंकुछ जिक्र पेडहू काथाऐ
डवकेट जनरल साहबने कहा किजब आया के इजहार मेंप्रश्न
कियेगयेतो उसनेपेडहूका कुछजिक्र किया था और७वें पृष्ठमें
बयान लिखाहुवाहै ॥

मिस्टरब्रैन्सन साहब सेपहिले आयानेकहाथा किपेडहू और
रावजीने मुजसेकुछ कहाथाजब उससेफिर पूछा गयातो कहा
किमुजसे करीम औरदूसरे एक मनुष्यने कहाथा परन्तु इज-
हारके होनेकेसमय करीमसेकुछ प्रश्नहीं कियेगये ॥

साहब ऐडवकेट जनरलने कहा यहगलतीमुतरज्जिम कीथी
औरमालूम नहींकिमेरे मित्रनेक्योंइसबातको विचारा परन्तु
गवाहोंसे साफसाबितहै किपेडहू विषदिये जाने में संयुक्त था
जहांतक होसकेपेडहू कीनिस्बत अधिककहनामुजकोमंजूर

नहीं है परन्तु इतनाही किजो आवश्यक और उचित है ॥

अगरपेडरूविष देनेमें संयुक्त न थातो उसको पारितोषक क्यों दियागया और यहबातभी दरयाफ्त तलबहै कि रावजी का क्या प्रयोजनथा कि पेडरू को अपराध लगाता रावजीने पेडरूका जिक्र नरसूआदिके सहशकिया ॥

अबदो बजगयेहैं जोमंजूर होतो थोड़ीदेरके लियेअदालत बरखास्तहो तथाचअदालत टिफनखानेके वास्तेबरखास्त हुई ॥

टिफन खाने के उपरान्तजबअदालत एकत्र हुईतोसाहब ऐडवकेट जनरलफिर तकरीर करने लगे प्रेसीडण्ट साहब ने पूछा किजाहिर कियागया है किनरसूकी गवाही २३ दिसम्बर को लीगई परन्तुमिस्टर सरल्यूइस पीली साहबके बयान से मालूम होता हैकि २४ दिसम्बरको उसके इजहार लिये गये—साहब ऐडवकेट जनरलनेकहानरसू के इजहार मिस्टर सूटर साहब केरूबरू२३ दिसम्बर को हुये थे ॥

प्रेसीडण्टसाहबने कहा मिस्टरसूटर साहबनेवर्णनकियाहै किजबनरसूके इजहारलिये गएतो सरल्यूइसपीलीसाहबउपस्थितथे साहबऐडवकेट जनरलनेकहा—२४दिसम्बरको वृहस्पतिवारथा और महाराजासाहबकी मुलाकातकादिनथाइसलिये मिस्टरसूटर साहब गल्तीपर हैं और सरल्यूइसपीली साहब ठीक कहतेहैं कल्पना कीजिये कि २४दिसम्बर को नरसूके इजहार लियेगये तौभी अदालतको किसी प्रकार का एतिराज नहींहै ॥

सरजार्ज बेलनटायन साहबबहुत कुछ शीशीका जिक्रकरते हैं परन्तु मेरेविचारसे मेरेदोस्त बड़ीगल्तीपर हैं दामोदरपन्तकी गवाहीसे प्रगटहै कि जबउसके पासगजावा शीशीलाया तो वह शीशी कुछ बड़ीथी इसलिये दमोदरपन्त ने इसशीशी की दवादूसरी छोटीशीशीमें करदी इसशीशी में गुलाब का अतररहताथा वहशीशीखासगुलाबकेअतरकीनथीअर्थात्जैसा मेरेमित्रकाखयालहै कि दोतीनकतरे अतरके उसमेंहोंगेऔरको

टरकी और ईरानमेंजियादहबिकतीहै अगरऐसीछोटीशीशी होतीतो वहइसकाममेंनलाईजातीदामोदरपन्थअपनेइज़हा-रमेंवर्णनकरताहैकि वहशीशीएक उंगलीकेबराबरथीइसलिये मेरेदोस्तकाखयालबिल्कुल गलतहै यहशीशीबहुतछोटीन थी औसतदरजेकीथीउसमेंअधिकवस्तुआसक्तीथीयदियहशीशीइ-तनीबड़ीथीऔरउसकेमुखपर रुईऔरमोमलगाहुवाथाइसवा-स्तेजबरावजीने उसकोनेफेमें रक्खाहोतो शायदथोड़ीबूंदेंबा-हरनिकलींहों और रावजीके पेटपरवह दवालगगईहो डा-क्टरग्रेसाहबने रावजीकापेटदेखा और कहाकियह निशान पेटपरविषसेमालुमहोताहै और कहाकिजिसतरहकी शीशी से इसनिशानका होनाबयानहुवाहै उसशीशी से यहनिशान पड़गया हो ॥

इसनिशानके लियेबहुतकुछ बयानहुवा है सुतरज्जिमने ग-लतीसे तर्जुमाकिया कि पेटपरफफोला था परन्तु जोतर्जु-माशुद्धहोता तो फफोला न लिखाजाता किन्तु फोड़ासमझा जाता क्योंकि जबपेट अथवा शरीरकाकोई भागजलजाता है तोफफोलापड़ता है फोड़ानहींहोता इससेखूबतसदीक हुवा किजहरकीवजहसे रावजीकेउदरपर फोडाहुवाथा सिवायइ-सके जबडाक्टरग्रेसाहब ने रावजीकेपेटको देखकरअपनी राय बयानकीतो तबतक दामोदरपन्थके इजहार नहीं हुयेथेफिर क्योंकर रावजीजानता कि दामोदरपन्थ क्या कहेगा ॥

हकीमने जो दवाईबताई थी और दवा और जहरोंमें से एकसंखियाभी थी रावजीको मंजूरन था कि करनैलफियर-साहबको कोईऐसी वस्तुदीजावे जोतुरन्तही अपनाकाम कर जावेइसीसे उसशीशीकी दवाफेंकदी अगरउसको अपनीप्र-तिष्ठाका विचार न होतातो नहानेकेसमय दवाकोडाल देता परन्तु उसनेदवाको फेंक दिया और नरसूसे कहा होगाकि मैंनेदवा टपमेंडालदी ताकि वहमहाराजा साहबसे शिका-यत न करे ॥

कुछसंदेहनहीं किजब करनैलफियरसाहबके माथेपर फोड़ा थातो महाराजा साहबके राजीकरनेके वास्ते निस्संदेह फोड़े कीदवा में संखिया डाला होगा क्योंकि करनैलफियर साहब फोड़ेपरमल्हमलगातेथे तोउसमें संखियेकाडालदेनाकुछकठिननथा फिरउन्होने महाराजासाहबसे बयान किया होगाकि हमनेइसप्रकारकी कारवाईकी और उससमय दामोदरपंथ नेसुनाहोगानहींतो दामोदरपंथकोकरनैलफियरसाहबके फोड़े काहाल क्यामालूम होता क्योंकि ऐसा नहीं होसक्ता था कि दामोदरपंथ एकगलत बयानकरता जिसकीतारीखवगैरहसब दुरुस्त होतीं कि करनैलसाहबने क्योंकर फाहा लगाया और किसतरह उनकोउसमें जलनमालूमहुई-कितनाही मेरेमित्र नेरावजीके इजहारको बहुतकुछखंडन करनाचाहापरन्तु जितनाकिउन्होंने रद्दकरनाचाहाउतनीही उसकेबयानको मजबूतीऔर सिदाकतहुई और रावजीके इजहार और उसकी बातरद्दनहीं होतीजब शीशीदीगई थीतो रावजीने अपनेइजहारमेंशीशीके दियेजानेकी तारीखबयानकी यहतारीखकरनैलफियरसाहबके फोड़ेकेदिनोंसे मुताबिक़है यदियह बिचार कियाजावे कि यहसब बातेंपुलिस की गढ़ी है तोडाक्टरसीवर्डसाहब और पुलिससे साजिशहोगी और उन्होंनेकहदिया होगाकि मैंनेफोड़े का किसभांति से इलाज किया और इस बात काभीनिश्चयनहीं आताकिपुलिसने क्योंकर दामोदरपंथ कोसिखायाहोगा और क्योंकर दामोदरपंथने मिस्टररिचीसाहब और कमीशनके सम्मुखएक साबयानकिया॥

सरजानटवेलनटायनसाहब ने पेटीकेलिये भीबहुत कुछजिक्र कियाहै मेरेमित्र यहबातं प्रगटकरना चाहतेहैं किमिस्टरबूटर साहबकोभी इसमुआमलेमं साजिशथी और वहचाहतेथेकि जुर्म साबित होजायपरन्तु मैंनहींकहसक्ता कि मिस्टरबूटर साहबने इसतरहकामेल क्योंकियाहोगा मेरेबिचारसे यहबात

असम्भवितहै अकबरअलीएक तजुरबेकार अफसरहै अबउसने सुनाकिरावजी पुड़ियोंको अपनीपेटीमेंरक्खा करताथातोतीव्र बुद्धिसेउसने उसपेटीको देखना चाहाथा कि मालूम करे कि आयापुड़िया काविष बाहरनिकालकर पेटीमें रखगयाहै या नहींक्योंकि उसकोमंजूरथा किवहखूबी इसबातको साबितकरे किउसने विषदिया वानहीं रावजी के इकरार परही मंजूरी थाकि उसपर एकबहुत बड़ाअपराध कायमकिया जावे और अकबरअलीके लिये कदाचित् खयालनहीं होसक्ता कि उसने कुछ चालाकी कीहै क्योंकि उसको उससमय मालूमथा कि मिस्टरफ्लूटरसाहब आवेंगे और फिरलौट करचले जावेंगेक- मीशनके मेम्बरोंकोसंर्ण होगाकियह सबबातें क्योंकर हुईंयह बात विचारमें नहीं आती किवहशख्स पेटीके लेनेको गयाथा उसनेविषकी पुड़ियापेटीमेंरखदीहो जबपेटीमंगवाईथी मिस्ट- रफ्लूटरसाहब उस कमरेमें थे जहांकि तहकीकात होती थी और उन्होंनेविचारा होगाकिपेटीमें क्या निकलेगा इसलिये मुंहधोने और वस्त्रबदलने केलियेदूसरे कमरेमें चलेगये क्यों किहाजिरीका समयआगया था और मुखकेधोने और कपड़ा केबदलनेमें पन्द्रहअथवा सोलह मिनट व्यतीत हुयेहोंगे इसी समयान्तरमें पेटीआई और उसकोदेखा गया अकबर अलीने उसपेटीको सबजगहदेखाजब उनकोकहीं जेबआदिनमालूम हुईतो रावजीसे पूछाकिगुप्त जेबइसमें कहां है और पुड़ियों को कहां रखता था जब रावजीने जेबको बताया तो उन्होंने उंगलियांडाल करउसको फाड़ातो उसमेंसे एकपुड़िया निक- लीतुरन्तही मिस्टरफ्लूटर साहबको उन्होंनेबुलाया औरमिस्टर फ्लूटरसाहबने उसपुड़ियाको जेबसेनिकाल करदेखातो उसमें उसीभांतिका विषथा जैसाकि करनैलफियर साहबकेगिलास मेंडालागयाथा जो पुलिसने कुछकारखाई कीतो वहक्योंकर मालूम कर सक्तेकि अमुक प्रकार की संखिया करनैलफियर

साबित होगई है कदाचित् विश्वासनहीं आताकि पुलिसके लोगइतने चालाकहैं इसलिये मुझकोनिश्चयहै कि कमीशनके मेम्बर सरजन्न्वेलनटायनसाहबकी इसतक़रीरपर कुछलिहाज नकरेंगे यहपेटी रावजीसे ६-नवम्बरको लीगई और भाऊरको दीगई तबसे भाऊरके पास यह पेटीरही खानबहादुर अकबर अलीने सीधी २ कारवाईके सिवाय और कोईचालाकी नहीं की जबपुड़िया पेटीमें मिलीतो खानबहादुर अब्दुलअली और गजानन्द बतिल उपस्थितथे सरजन्न्वेलनटायन साहब ने उन दोनोंमनुष्योंसे प्रश्नकिये मेरेविचारसे जोविषकी पुड़ियाराव-जीकी पेटीमें मिलीउसमें कोई चालाकी नहींहुई उसपुड़िया में वहीविषथा जोउसने करनैलफ़ियरसाहबको दियाथा ॥

सरजन्न्वेलनटायनसाहबको चाहियेथा कि रावजीके इक-रारपरखूबग़ौर करकेएतिराज करतेजो इसमुकद्दमेमें पुलिस की कारवाई होती तो इसपुड़िया में संखिया और हीरेका चूर्णभी अवश्य होता न केवल संखिया इससंखियेका मिलना रावजीके बयानकेमुआफ़िकहै क्योंकि उसनेबयान कियाहैकि थोड़ी २ संखियाहीरेके चूर्णमें मिलाई थी और बाकीको रख छोड़ाथा तथाचपुलिसको वहीपुड़िया मिली फिर क्योंकर यह बातहोसक्तीहै कि पुलिसने चालाकी करकेपुड़ियाको रखदिया यहभीकच्चा विचारहै ॥

कमीशनके मेम्बरोंको स्मर्ण होगा कि रावजीने बर्णनकियाहै कि मैंअपनेहाकिमको एकदहबेरमारडालना नहींचाहताथा रावजीने थोड़ी २ संखियापुड़ियोंमें डालीथीजब करनैलफ़ियर साहबने ६-और १० नवम्बरको इजहारलिये तोउसने फ़ैजूपर तोहमत रक्खीथी कि उसने विषदियाहै यहतोहमत उनकी झूंठीथी परन्तु जबखयाल कियाजाताहै कि पहिलेफ़ैजू कईबेर माखूज होचुकाहै और यहशख़्स बदमुआश मशहूरथा इसी सबबसे नौकरोंको उसकेविष देनेका निश्चयथा कमीशनकेमेम्बरों

को मालूम होगा कि फैजू महाराजासाहब के दरबारका नौकर था और उसकाएक पुत्रभी महाराजा साहबके पासनौकरथा यहलड़का बिल्कुलकमउमरथा तनख्वाहमिलनेके लिये उसका नामनौकरोंमेंथा इसीवजहसे रेजीडन्सीके नौकरोंका गुमान फैजूके लिये गलत न था ईश्वर नचाहे रावजीके ओरसे मैंकुछ उज्रनहींकरताहूं किन्तु केवलइतनाही जाहिर करताहूं कि सरजन्हवे तनटायनसाहबने कहाहै कि उसकाइजहार निश्चय माननेके योग्यनहींहै और मैं कहता हूं कि उसका इजहार निश्चयमाननेके लायकहै जो कमीशनके मेम्बर सब इजहारको गलतकरदें तो उसका इजहारभी गलतहै नहींतो मेरेविचार से उसकेइजहारमें कोईझूठ और गलतीनहींहै॥

ऐडवकेटजनरलसाहबनेकहाकि चारबजगयेहैं और जबतक किऐड्रेसकोसंक्षेप नकरूंगापूर्णनहोगा प्रेसीडण्टसाहबनेकहा कि आप उसेमुलतवी न कीजिये आज अदालत बरखास्त की जावे—सरजन्हवेलनटायनसाहबनेकहा मैंठीक२ कहताहूं किमेरेदोस्तने एकक्षणभीअपनेवक्तमें वृथा नखोयासो अदालत बरखास्त हुई॥

— —

बीसवें दिनका वृत्तान्त॥

जबकमीशन एकत्रहुई तो प्रेसीडण्टसाहबने कहा कि श्रीमान् महाराजासेंधिया और सरदिनकरराव अलील हैं इसलिये वह अदालतमें नहीं आसक्ते जोकुछ आपकी स्पीचहोगी वहउनके पासभेजी जावेगी॥

ऐडवकेट जनरल साहबने अपना अफसोस जाहिरकिया कि दोकमीशनके मेम्बर आज अदालतमें न आसके परन्तु आशाहै कि मेरी स्पीचपर वहखूब गौर करेंगे॥

मेरीसमझमेंनहीं आयाकिनरसूकेइजहार क्यों निश्चयमाननेकेयोग्य नहीं मेरेमित्र सरजन्हवे तनटायनसाहबनेकहाहैकि नरसू एकफजूलगवाहथा उसकी गवाहीकी कुछ अवश्यकता

नथी वहगवाह इसलिये पेशकिया गया था कि रावजी की गवाहीकी तसदीककरे—मेरा यहख़याल सरजन्हबेलनटायन साहबकेअनुकूलनहींहैमेरेविचारसे नरसूकी गवाहीनिहायत ज़रूरीथी क्योंकि उसकीगवाही विषदियेजाने के विषयमें ली गई इसकेविशेषवह शहरमेंरहता था और उसीके द्वाराखबरें आयाजाया करतीथीं अर्थात् जोखबरें रावजी महाराजासाहबको भेजाकरताथा इसलिये कमीशनके मेम्बर इसबात पर ख़यालकरेंगे कि इसमनुष्य की गवाही बहुत ज़रूरीथीसिवा इसके नरसू रावजी हवलदारका अफ़सरथा जोवह इसमुआमलेमें संयुक्त नकिया जातातो और चपरासियोंकोभयरहता महाराजासाहबने नरसू को गालियांदीथीं और कहाथा कि तूने विषदेनेमें बड़ी देरीकी महाराजासाहबने नरसूसे कहा था कि रेज़ीडण्टसाहबकी डेवढ़ीपर तुमसदा बैठेरहाकरोजब रावजी किसीकाग़ज़केलेनेकोभीतरजाय अथवाविषकेडालती समय कोईगैरशख़्सआजाय तोसीटीबजादेना परन्तु सोमवार को नरसू अपनेइसपहिरेपर नथा महाराजासाहब को संदेह हुआकि किसीमनुष्यने रावजीकोविषकीपुड़ियाशर्बतमेंडालते हुये देखलिया और असलबातयह है कि उसदिन ५ बजेतक नरसूरेज़ीडन्सीमें नहींआयाथा और उसदिन रावजीने भोर को शर्बतमेंविषडालदिया था इसीलियें महाराजा साहबको चिन्ताहुई और मागोन्तरमें उन्होंने दामोदरपंथसे कहदिया था इनसबबातों से पायाजाताहै कि यह मुक़द्दमा पुलिसका बनायाहुवा नहींहै जोकुछ तहकीक़ात से ज़ाहिरहुवा वही असलियत मुक़द्दमेकी है अब कमीशन के मेम्बरों को मालूम होगयाहोगा कि नरसू किसलिये नियतकियागयाथा यद्यपि वह पुरानानौकरहै परन्तु उसमेंकुछभी बुद्धिनहींहैमालूम होताहै कि इसमनुष्यने पुरानेनौकर होनेसे जमादारी की पदवीप्राप्तकी नकिसी कारगुज़ारीसे॥

सरजन्हबेलनटायन साहब उसके कुवेंमें गिरनेपर बड़ाहास्य करतेहैं कुवेंकेगिरनेमें जोगवाही पेशहुई उसमें बड़ाअन्तरहै नरसू वर्णन करताहै कि जिसदिनमेरे हुलकार लिये गये मैं कुवेंकी ओरजाताथा मेरेमनमें यहआया कि इतनीबड़ी अवधि के उपरान्त मेरे भाग्यमें यहबदनामी लिखीथी जबमैंने वहां अपने साथियों को देखा तो नेत्र मेरे साम्हने न होसके तो मुझे यही उचित मालूम हुवा कि ऐसे जीने से डूबमरना उत्तमहै सरजन्हबेलनटायनसाहबने अपनी सोचमें इस बात कोभी साबित करनाचाहाहै कि नरसूका यहभी एक फरेब है यदि वास्तवमें वह कुवेंमें गिरा तो अकस्मात् गिरा जान बूझकरनहीं गिराथा सरजन्हबेलनटायनसाहबको मंजूरथा कि सरल्यूइसपीलीसाहब वहबयान नकरें जो उन्हों ने बयान किया कि मैंनेनरसूको आतेहुयेदेखा और वहबिल्कुलजलमें भीगाहुवाथा जोमनुष्य उसकुवेंको देखेगा वहीयहबातकहे-गा कि इसकुवेंमें अकस्मात्मेंगिरना असम्भावितहै नकोईमनुष्य यहकहेगा कि पुलिसकी बनाई यहबातहै यहबातबिल्कुल गलतहै नरसूको वास्तवमें बड़ीलज्जाहोगी और उसकोमंजूर नहोगा कि अपनामुख किसीको दिखाऊं इसलज्जासेभी उसके इजहारोंकी तसदीकहोगी क्योंकि अगरवहठीक२ बयान करता तो उसके किसबातकी लज्जाहोती हरमनुष्यकोमालूम होगा कि सरदिनकररावने उससे कैसे२ प्रश्नकिये जिनलोगों ने उससमय सुना उनकोभी निश्चयहोगयाथा कि यह मनुष्य जोवर्णनकरेगा गलतनहोगा उसनेहरदफे यहीकहा कि ईश्वर को वर्त्तमान समझकर ठीक२ कहताहूं और इसीलिये उस-से कहा गया कि जो तू ठीक कहेगा तो तेरा अपराध क्षमा कियाजावेगा उसने इसका भी यही उत्तरदिया कि सरकार मेरी मातापिताहै जो चाहेकरे मैंअबभी सच कहताहूं दा-मोदरपन्तकी गवाहीपरमेरेमित्रनेबहुतकुछ एतिराजकियेहैं यहमनुष्य गायकवारका अतिविश्वासित नौकरथा गायकवार

और दामोदरपन्थमें कोई रंज भी नथा जब इसमनुष्यको गायक-
वारसे कोई बैर नथा तो क्याकारणहै कि वह गायकवार पर
ऐसा अपराध लगाना चाहे—अखीर मरतबा गायकवार दा-
मोदरपन्थको पोलोसाहब के पासलेगये और उसको पेशकर
केकहा कि यह मनुष्य मेरा प्राईवेटसिक्रेटरी है इससे साफ
जाहिरहै कि गायकवार और दामोदरपन्थमें कोई रंज नथा
जिस दिन गायकवार पकड़े गये उस दिन दामोदरपन्थ भी
पकड़ागया उसको अपनेस्वामीपर झूठेतोहमतके बनाने का
अवसरनमिला यहबात असम्भवित है कि पुलिसके नौकर इ-
तने आदमियोंको सिखाते और सबसे एकहीप्रकार की गवा
ही दिलाते-माईलार्ड-मुकद्दमेके हाल और गवाहोंकीगवा-
हीके देखनेसे मेरे विचारमें सिवायइसके कि गायकवार पर
जुर्मसाबितहै कमीशनसे और कुछफैसला नहोगा औरजि-
तने गवाह गुजरे सबने ठीक बयानकिया सररुचर्डमीड़ टायन
साहबने जो२ एतिराजकिये वहबिल्कुल फजूलथे उनकीतक-
रीर हरगिज समाअतके लायकनहीं है हेमचन्द फतहचन्दने
अदालतके रूबरू बारम्बार झूठा सौगन्दखाई पहिलेकुछब-
याननकिया और फिरकुछकहा सिवाय हेमचन्द फतहचन्दके
और सब गवाहोंने एकसी गवाहीदी अबकमीशनके मेम्बरों
को इखतियारहै जैसाचाहैं वैसालिखें-सररुचर्डमीड़टायनसा-
हबनेरावजीराव और यशवन्तरावकेलियेभी कुछअच्छाबयाननहीं
किया यहदोगवाह गायकवारकेविश्वसितथे जबवेजापहोंफिर
गयेऔरउनकीगवाहीसररुचर्डमीड़टायनसाहबनेनहींलीऔर
बाकीक्यारहगया इससेजियादह मुझकोहिदायत नहीहै इस
लियेमैंऔर कुछनहीं कहसक्ता सबमाहिबोंसेमेरीअखीरअ-
रजयहहै कियहरईस जोमाखूज हुवाहै हमदर्दीके लायक
नहींहै छोटी२ बातोंकाजिक्र करना मैने उचितन समझा जो
बातेंमुख्यथीं उन्हींकाकहा आशाहैकि कमीशनके मेम्बर खूब
इन्साफ करेंगे मैं कमीशनके मेम्बरोंका शुक्रिया अदाकरता

हूं कि उन्होंनेमेरे एडरेसको मनसेसुना अबमेरी प्रार्थनाहैकि आपखूब इन्साफ करें १२बजे ४५ मिनटपर एडवकेट जनरल साहबकोस्पीच सम्पूर्णहुई इसकेउपरान्त कोई जबसब लोग चुपरहे फिर कमीशनबरखास्त हुई॥

रेजोल्यूशन मईसन् १८७२ ई० ॥

टाइमस आफइण्डियाके ऐडीटरसाहब के नामपर-क्योंकि मैंकमीशनके इजलासमें गवाहीकेलिये नहीं बुलाया गयामैं रेजोल्यूशन मईसन्१८७२ई०केविषयमें लिखताहूंकियहठीक हैकिमैंनरेजोल्यूशन मईसन्१८७२ई०कापाया उसका हाल इसतरह परहैकिमिस्टर हरीचन्द्रचिन्तामणि जोश्रीमान्गायकवारके इंगलिस्तानमें एजन्ट हैं उन्होंने उसकी एकनकल इंगलिस्तानसे लेकरमेरे पासभेजीथी और वह हमारे पास जूनमहीनेमेंआई औरहरीचन्द्रचिन्तामणिने २४ जूनकोलार्ड सेलसबरी साहबके सम्मुखपेशकिया इसकाजिक्र मैंने एकबेर सरल्यूइस पोलीसाहबसे भीकिया औरउन्होंने मुझसेवह मंगवाईकरनैल फियरसाहब जोकहतेहैं किहमने इस विषयमें शिकायत नहींकी वहबिल्कुल गलतहै हमनेकईबेरकरनैल फियरसाहबसे कहाकिआप राज्यके प्रबन्धमेंहमको सहायता दीजिये परन्तु उन्होंने उसका कुछ बिचारनकियासोदूसरीनवम्बरको खरीतालिखागयासरल्यूइस पोलीसाहबनेएकसप्ताह केबहुतनवीन प्रबन्धकिये औरहमको बनिस्बत करनैल फियर साहबके तीनमहीनेके सरल्यूपोली साहब से एक सप्ताह में बहुत सहायता मिली करनैल फियर साहब कहते हैं कि २ नवम्बरके खरीतेमें बिल्कुल हालत गलातलिखे थे हांला कि जो कुछ उसमें हाल लिखे थे वह सब ठीक हैं॥

दस्तखत-दादा भाई नौरूजी

दामोदरपन्थके उन इजहारोंका उल्था जोउसने पुलिसकेरूबरूदिये ॥

दामोदर त्रिम्बक ब्राह्मणजोपहिले महाराजा गायकवार कोसेक्रेटरीया इसतरहइजहार देताहैकि यशवन्तरावयेवली सालिम और रावजी कर्नेलफियरसाहबके बिष देनेमें शरीक हैं आश्विनमहीना जोदसहरेके निकट है महाराजाने मुझसे कहाकिथोड़ी संखियाफौजदारीसे मंगाओ और कहाकियह संखियाघोड़ेको खुजलीके वास्तेमंगाईजातीहै परन्तु फौजदार से संखिया नमिली महाराजासाहबनेकहाकि कम्पसेमंगालो मैने कहाकि इसके मंगानेमें पासकी आवश्यक होगीमहा-राजासाहबने कहाकिकुछ परवाहनहींहै मैनेदोतोले संखि-यानूरुद्दीन बोहराकेद्वारापाई महाराजासाहबने मुझसेकहा थाकि तुमनूरुद्दीनसे इकरार करदेनाकि महाराजा उसको सिलाखानेको दारोगागी देंगे पहिले उसनेनहीं बताया कि उसनेसंखिया कहांसेपाई मैने महाराजाको संखिया दिखाई और पूछाकिमैंउसकोकिसेदूं महाराजानेकहाकितुम सालिम कोदेदोवह उसकोऔषधीबनावेगा मैने सालिमकोदेदीइसके उपरान्त महाराजाने कहाकि एकतोला भरहीरा मंगाओ और कहाकिइस दवाकेलिये उसको भस्म कीजावेगीमैनेना-नाजीवतिलको आज्ञादी किएकतोलाभरहीरा लाकरमहा-राजाकोदिखाइये उसनेतोला भरहीरा महाराजको लाकर दिखाया औरमहाराजाने कहाकियह हीरायशवन्तको देदो मुझको अबमालूम हुआकि महाराजाने यहहीरा इसप्रयोजन केलियेमंगाया था पहिलेतो महाराजने मुझसेकहा था कि यहहीरा स्वामीअक्कलकोट के ताजकेलिये दरकार है और दूबारह मुझसेकहा कितोला भरहीरेका चूरहहमकोलादो मैने नानाजीवतिल सेकहाकितोला भरहीरेका चूर्ण लादो मुझको खुबस्मर्ण नहींहैपरन्तु इतनायादहैकि नानाजीवतिल वाविनायकराव ने दूसरेदिनसंध्या कोहीरेका चूर्णला दिया महाराजासे मैनेपूछा कियहचूर्ण क्याकियाजावे उन्होंने आ-

श्रादीकि यशवन्तको देदोजब हीरेकाचूर्ण मैंयशवन्त कोदेने लगामैने उससेपूछाकियह चूरहक्याहोगा उसनेकहाकियह चूरहकरनैल फियरसाहबके शर्बतमें मिलायाजावेगा ताकि वहमरजावें यहबात करनैल फियरसाहबके विषदिये जानेके पांचछ: दिनपहिले ज़ईथीजिसदिन विषदियागया मैं महाराजाके साथरेजीडण्ट साहबके यहांगयाथा और मैंसेवकधर्मशालामें ठहरारहा और महाराजासाहब रेजीडण्ट की भेंटको गयेजब वहांसे लौट आयेतो मुझसे कहा किविषका देनाआज मालूमहोगया सालिम औरयशवन्त रावकाआना जानारावजीके पासजाहिर होगयाऔरजबयह बात मालूम ज़ई तो सालिमरावजीके घरगयाऔरसम्पूर्ण पुड़ियांजोरावजीके घरपरथी फेंकदीं मैनेमहाराजासे पूछाकिक्योंकरयह बात प्रगटहोगई उन्होंने उत्तर दियाकि नरसूजमादार आजकेदिनपहिरेपरनथा जबकोई आताथाते नरसूसोटीबजादेता था औरवह कियहांपर नथाइसलिये यहभेद मालूमहोगया औरदिनोंसे महाराजासाहब आजजल्दी आयेथेमैं फिर घर चलागया औरमध्याह्नकेसमय मैनेमहाराजाको लक्ष्मीबाईके महलमें देखाकि महाराजा और नानासाहब इसी विषका जिक्रकररहेहैं औरदोपहरकेउपरान्तमैं औरमहाराजाओर नानासाहब सवारहोकर कहींगये तोमहाराजा मार्गमेंकहनेलगे कि खबरदार जोजिक्र हमकररहेथे किसोसेन कहनाऔर इसकीतलाश रखनादूसरे दिनमहाराजानेसालिम और यशवन्तराव से बज़तकुछ समझा कर कहाकि तुम कभी इसकाइकरार न करना इसकेउपरान्त वहफिर सवारहोकर गयेऔर हमसेऔर नानासाहबसे मार्गमेंकहने लगेकि रावजीतो छूटगया अबकुछ भयनहीं है जब करनैलफियरसाहब कोजगहपर करनैलपांबीसाहबआयेतोमहाराजा कहनेलगे किआज रावजीने मुझको दूरसे सलाम किया था और वह चाहताथा किजोकुछउससेमतिभ्रा कोगईथी वहमारितोमक

उसको दियाजावे परन्तु महाराजा कहने लगे कि मैंने उससे कहा कि जबयह कुलसुआमला दूर होजावेगा तब तुमको पारितोषक मिलेगा फिर जब सूटर साहब यहां आये और रावजी पकड़ा नहीं गया तो महाराजा ने सुना कि सूटर साहब बम्बई को लौटगये इसबातको सुनकर महाराजा साहब अति प्रसन्नहुये और कहने लगे कि अब कुछ भय नहीं है हमसब बरी होजावेंगे परन्तु रावजी जब पकड़ागया तो महाराजाने मुझसे कहाकि रावजी का अपराध क्षमा होगया और उसने सबबातें अपने इजहार में कहदी हैं तुम कदाचित् किसी बात का इकरार न करना और नानाहरवा और सालिम और यशवन्तराव से भी मैंने समझा दिया है जबकि रेजीडन्सी से सालिम और यशवन्तराव के गिरफ्तारी का हुक्म आया तो मुझको बड़ा भय हुवा और मैंने नानासाहब से कहा कि हम और तुमभी इसीतरह से पकड़े जावेंगे संध्या के समय मुझको महाराजा साहब ने कहा कि उनदोनों मनुष्यों को रेजीडन्सी में मैंने भेज दिया है और उनसे कहा कि तुम कभी इकरार न करना और फिर मुझसे कहने लगे कि जो तुम इकरार कर दोगे तो गोविन्दराव काली के सदृश तुम्हारे टुकड़े २ होजावेंगे और यहीबात नानाहरवा से भी उन्होंने कहीथी मैंने सुनाथा कि नानाजीवतिल ने हीराहेम चन्द से मोल लियाथा जब मैंने उस हिसाब को महाराजा साहब के दस्तखत के वास्ते पेश किया तो उन्होंने कहा कि स्वामीनारायण नाम के जो ब्राह्मण खिलाये गये हैं और जो सात हजार रुपये का हीरा मोल लिया गया है तो उसमें से आधो रक़म को अर्थात् तीन हजार पांचसौ रुपये तो ब्राह्मणों के नाम बढ़ादो और तीन हजार पांचसौ रुपये हीरों की खरीद के नाम रहनेदो और यह लिखदो कि हीरे दवा के लिये लियेगये हैं परन्तु जबकि विष देना साबित होगया तो मैंने महाराजा से कहा कि हीरा दवा में नहीं पड़ता है अब हम क्या करें उन्होंने कहा कि उस कागज को फाड़ डालो मैंने नानाजीवतिल से कहा और इन्होंने उत्तर दिया कि हमने

उनवरकों कोनिकाल डाला है मैंने इसबात को महाराजासे इत्तिलाकर दीहै यहहिसाब किसीभी खातेमेंनहीं रहताथा किन्तु कागजके बन्दों पर रहता था जबकि मैंने फौजदार से संखिया मंगायाथा तोहुमुजी वद्या वहांका कारकुन था उसने कहा कि महाराज के पूछनेके बिनामैं तुमको नदूंगा परन्तु फिर उससे मैंने नमंगाई वह कागज कि जिस पर मेरे दस्तखतथे वहफौजदारके दफ्तरमें रहा और जबहमनेमांगा तोवहांसेवापिसनआया करनैलफियरसाहबसेऔर महाराजा से बहुत दिनोंसेबैरहोगयाथा और लक्ष्मीबाईकामहाराजासे विवाहहोने सेतो और भीअधिकबैर होगया था जब किमैं नौसारीमें थातो मैंने देखाकिरावजी सरकारी कागज महाराजाकेपास लेगयावह कागज यमुनाबाईकेथे जिनमें महाराजाकीशिकायत उसने फियरसाहबको लिखीथी मुजसेमहाराजानेकहा किइनकी नकलकर लोसोरातोंरात मैंने उनसब कागजोंकी नकलकरली वहजोनकल मैंनेकरलीथी अबउसको मैंने फाड़डाला यहविचार करकिऐसा नहो कोई देखले फिर करनैल साहब बड़ौदे मेंआये और करनैलफियर साहब को उन दिनोंज्वर भीआता था और शिरमें फोड़ाभीनिकला था मैंनेएकदिन महाराजाको सालिमसे बातेंकरते हुयेसुना सालिमसहाराजासे कहरहाथा कि साहबकेफोड़ केप्लास्टरमें वहदवा मिलाईगई और साहबके फोड़ेमेंबड़ीजलनहै महाराजानेकहा किमैं रावजीसे सुनचुकाहूं और रावजीने शर्बत में वहदवा मिलाई थी थोड़े दिनके उपरान्त बड़े हकीमके छोटेभाई एकबोतलमें विषकीदवा बनाकर लाये परन्तु वहां बहुतसे मनुष्यथे इसलिये उन्होंने वहदवा सबकेरूबरू नहीं दीएक दिन संध्याको महाराजानेमुजको आज्ञा दी कि बड़े हकीमकेछोटे भाईने बरें मंगाई हैं तुम फौजदारीको हुक्मदो कि जो लोग बरें पकड़ते हैं वह बरें पकड़ कर हकीम साहबके पासलेजावें और मैंने नरायणरावबाबासकरको जो

कि फौजदारीमें नौकर है आज्ञादेदो है दूसरेदिन महाराजाने हरिबासे कहाकि बड़े हकीम साहबके छोटे भाई दवाकेलिये सर्पमांगते हैं दोतीनदिनके उपरान्त सर्पोंवाला आया और हरिबासांपोंको लेकर हकीम साहबको देआया नारायणराव वहां लाया और वहभी हकीम साहबके पास भेजदीं फिर हकीमं साहबनेकहाकि मुझकोघोड़े कापेशावलादो और मैने घापा जीको आज्ञादी और उसनेहकीम साहबके पासपहुंचा दिया उसी समय फौजदारी के दफ्तर से संखिया भी मिला परन्तु मुझेस्मर्णनहीं कि कितना था जबयह वस्तुहकीम साहबकेपास पहुंचगई तो वहएक शीशी तैय्यार करकेलाये और महाराजा नेवहशीशी सालिमको देदी वहशीशी अतरकीथी मुझेमालुम हुवा किवह कर्नैफियर साहबके फोड़ेमें लगानेके लिये दी थीतीनबेर कर्नैलफियर साहबके मारनेके लियेउद्योगकिया गया पहिले हकीम साहब की दवासे दूसरे पलाहर में विष मिलानेसे और तीसरे शर्बतमें विषमिलाने से मैंनेदोबेर नूरू-हीनबोहरासेसंखियापाईथी जबमुझेमालुमहुवाकि मुकद्दमेकी तहकीकात होरहीहै तोमैने नूरूहीनसे पूछा कि वह संखिया तो तुमने मेरेनाम नहीं लिखीहै उसने कहा मैने तो नहीं लिखीहै परन्तुकम्पूमें जिसमनुष्यके पाससे तुमलाये थे उसने तुम्हारे नामलिखीहै जो दो सौरुपये तुम हमको दो तोहम उसकागजसे तुम्हारा नामनिकालडालेंमैनेकहाकिअच्छातुम अपनेपाससे दोसौरुपये देके हमारा नाम निकलवादो मैंदो सौरुपये तुमको अपनेहिसाबसे मुजरादूंगा क्योंकिमैं कम्पूवाले को नहीं जानताहूं परन्तु मुझेनिश्चय नहींहै कि उसनेरुपया देके मेरानाम निकलवाया हो॥

दामोदर पंथ अपने इज़हार देरहा है

लिखा हुवा २० मई सन् १८७५ ई० का।

वह बयान करताहै कि यशवन्तराव और सालिम रुपयेले जाया करतेथे और रेजीडन्सी के नौकरोंको दियाकरते थे

और उनरकमों को और हिसाबमें लिखादिया करतेथे जब यहदोनों मनुष्य गिरिफ्तारहुयेतो महाराजने कहाकि जो रकमेंमशकूक हैं उनकोबदलदो अथवा निकालडालो याछील डालो परन्तु हिसाब तोकई जगहपर लिखाजाता था इस लिये उनरकमोंपर मैने स्याहीडालदी यशवन्तराव और सालिम रंजोलम्मी के नौकरोंको डेढ़वर्षसे रिश्वतदेते थे चार महीनेहुये कि एकलाख बीसहजाररुपये प्रेमचन्दरायचन्दको दियागयाथा यहरुपया लक्ष्मीबाईके लड़काहोने परदियागया था और रुपया गवसाहबके रिश्वतदेनेको दियागयाथा कि गवर्नमेण्ट लक्ष्मीबाईके पुत्रको मल्हररावका वारिसतसलीम करे परन्तु यहरुपया नहीं दियागया और प्रेमचन्द रायचन्द ने यह रुपया अपने पासरखछोड़ा और यह रुपया खानगी हिसाबमें लिखागया इसीअवसर में एकबाबू कलकत्तेसे बुलायागयाथा और उसकोएकबेर बीसहजार रुपये और दूसरी बेर पचीसहजार रुपयेके नोटदियेगये कि वहभी इसीलड़के के वारिसहोने में कोशिशकरे और यह रुपया लक्ष्मीबाई के हिसाब में लिखा गया बाबू और मोतीलाल से बड़ोदेर तक अंगरेजीमें बातेंहुवाकीं और पचीसहजार रुपये उसी रुपये में से मकनपुर में दियागया जो जो संगीनजुर्म महाराजाने किये उनमें किसीकी सलाहशामिल नहीं थी भाऊ में खिया गोविन्दराव विनायक और और मनुष्य जो मारडालेगये उस में मैं शरीकनथा वह फौजदारीके द्वाराहुये थे मैं जबसे कि महाराजाका विवाह लक्ष्मीबाईके साथहुवाथातबसे इसजगह पर नियतहुवा हूं पहिले मैंखानगी हिसाबकिताबमहाराजा के रखताथा वहकागज मेरेहाथका लिखा हुवा फौजदारीके महकमेकेलियेहै और महाराजाकी आज्ञाभी इसीमेंहै॥

२०—फरवरी सन् १८७५ ई०।

वह बयान करताहै कि महाराजाके क़ैदहोनेके एकसप्ताह के पहिले महाराजाके साथ सरत्थूहसपोलीसाहब की मुला-

कातके आयाथा महाराज की प्रकृतिथी कि प्रतिदिन तीन दफा हवा खानेको जातेथे और मैंसदा उनकेसाथ जाताथा और जब कभीमहाराजा रेजीडन्सीको जातेथे तोमैंसेवकधर्म शालाके वहांठहर जाताथा और जबमहाराज वहांसे लौट कर आतेथे तोफिर सवारकरके मुजको मेरेघर पहुंचादिया करतेथे जो महाराजकी गाड़ीहांकता था उसका नामरत्न-सिंहहै मुझेमहाराजके पास फियरसाहब की आयाके आने का हालभी मालूम न था परन्तु जबकि वह कैदहोगई तोम-हाराजने मुजसे कहा॥

५—फरवरी सन् १८०५ ई० ॥

मैने उन्नीसवीं जनवरी के इजहार में वर्णनकिया है कि दोबेर हीरेकी कनीमोललीगई परंतु मुजको उसके मोललेने की ठीकतारीख मालूमनहीं इतनातोस्मर्णहै कि एक२सप्ताह के पश्चात् मोललीगई सालिम और यशवन्तरावने जोरुपया रेजीडन्सीके नौकरोंको दियाहै वहरुपया मेरेयहां मेवा और आतिशबाजीके नामसेलिखाहै और मेवा और आतिशबाजी नहीं आई और न सालिम और यशवन्तराव का काम लाने का था यह काम महाराजाने सालिम रावजी और यशवन्त राव के हाथ में दिया था कि किसी भांति से फियर साहब मारडालें जावें जो खबरें रेजीडन्सी से महाराजा साहब के पास आतीथीं वह सालिमलाता था और मैं उन खबरों को पढ़ के सुनाता फिर वह फाड़ कर फेंक दी जाती थीं वह दोरकमें बीसहजार और पचीसहजार रुपयेकी जोकलकत्ते के बाबू को दीगईं थी वह मुसम्मात भीकूकेनाम मेरे हिसाब लिखीहुईहैं और यहस्त्रीलक्ष्मीबाई के रिश्तेदारोंमें हैं और महाराज की यहभी मदखूला है बलवन्तरावहरकर जबकि महाराजके नायब दीवानथेतो महाराजऐसे मखबरेकीउनसे सलाहकिया करतेथे और उनहीके सम्मतसे गोविन्द नायक

और भावसेंधिया आदिमारडाले थे (ए)अक्षरसे लेकर(एफ) तक जो कागज सरकारमें हैं उनसबमें मेरा दस्तखतहै और महाराजकीआज्ञासेलिखेगयेहैं और (जो) अक्षरसे(क्यू)पर्य्यन्त भीमेरोही आज्ञासे लिखेगये हैं यह सबरुपया महाराज की आज्ञासेसालिम और यशवन्तराव कोरेजीडन्सीके नौकरोंकी रिशवतकेलिये दियागयाहै॥

पहिली याददाश्त सूरतका एकहजार रुपया और १८॥) फीसद बट्टासिक्के चेहरे शाहीसे अधिक करके दिया गयाहै तो कुल रुपया ११८८॥) हुवा और एकबेर दो हजार रुपये बाबाशाहीदियागया है तोसब रुपया ३१८८॥) हुयेयहरुपया माघशुदीपंचमीसम्बत्१९३० मुताबिक२५ नवम्बर सन्१८७३ई० कोदियागया और यह रुपयायशवन्तराव कोदियागया॥

दूसरा हिसाब श्रावणशुदी अष्टमी सम्बत् १९३० ई० कोयह रुपया अहमदबाद को भेजा गया था और यशवन्त रावको दिया गया था–तीसरी याददाश्त–दस रुपया दिया गया और १।।।=) बट्टे के दियेदियेगये तोसबरुपये ११।।।=) दिये गये और ७) बाबाशाही दिये गये तो सब रुपया १८॥=) दिये गये इसीभांतिसे सालिम और यशवन्तराव कोभी रुपये दिये जाते थे ६ दिसम्बर सन् १८७३ ई०. को यशवन्तराव को रुपयादिया गया२००) रुपया सूरतका दिया गया और प्रति सौ पर १९ रुपया बट्टादिये गये तो २३८) रुपये हुये–लिखा हुवा२–माघ शुदी सम्बत् १९३० ई—दिसम्बर सन्१८७३ई०के अनुकूल—हिसाबलिखा हुवा २२ माघ सम्बत् १९३० तथा १३ दिम्बरसन्१८७३ई०केअनुकूलजो अहमदाबादसेयशवन्तराव,के द्वारा असबाब मोललियागया और सरकारने उसकोरुपयेके देनेकेलिये आज्ञादीआजउसको १०७४) रुपया दियाजाता है और ३०१) दियाजाताहै उसकोरसीदसालिमसे लीगई॥

हिसाबलिखाहुवा३०वींजीअक्राद तथा३०पौष सम्बत्१९३०

१९ जनवरी सन् १८७४ ई० के अनुकूल यशवन्तराव के द्वारा खास असबाब बंबई से मोल लिया गया और सरकार की आज्ञासे ६००) रुपये दियागया रसीद २१ वीं जीहज्जअ.तथा ९ फरवरी सन्१८७४ई० के अनुकूल सालिमके हाथसे लीगई— माघकी २४ वीं सम्वत् १९३० मुवाफिक नवम्बर दिसम्बर सन् १८७३ ई० सालिमको अहमदाबादसे असबाब के लानेकेलिये सौरुपया दियागया है॥

हिसाबमाह जीअकद अर्थात् पौषसम्वत् १९३० तथा २४ दिसम्बर सन् १८७३ ई० के अनुकूल आतिशबाजी और बत्ती सालिमने बंबईमेंभेजी और सरकारने उसकी कीमत के देने के लिये आज्ञादीउसके अनुकूलसूरतके रुपयेदियेगये और जो कुछकि बट्टालगावहभीदियागया और कुलसूरतके ३००)रु० दिये गये और बट्टे के वास्ते फी सैकड़े १८।।।) के हिसाब से ५६।) दियागया सबरुपया ३५६।)दियागया जीहिज्ज महीने कीछठी अर्थात् महीनामाघ सम्वत् १९३० २५ जनवरी सन् १८७४ ई० के अनुकूल सालिमको बंबईसे असबाब लानेकेलिये महाराजकी आज्ञानुसार सूरतका ४००)रु० दियागया और बट्टा १८।।।) रु० फीसदीकेहिसाबसे सब ४७५) रु० दियागया २५ मुहर्रम अर्थात् फागुन सम्वत् १९३० तथा १५ मार्च सन् १८७४ई०के अनुकूलसालिमअहमदाबादसेअसबाबलाया और सरकारने उसकेखर्चके लिये आज्ञादी नक्नद रुपया १२४४) दियागया और ५०) उसकेखर्चके लियेदिया गया॥

२५ अप्रैलसन्१८७३ई०तथा वैशाखशुदी नवमी सम्वत्१९३० के अनुकूल १०००) रुपये खेहरेशाही दिया गया यह रुपया किसी असबाब के लिये जो सालिम बम्बई से लाया था दिया गया और उसकीरसीद उससेलीगई१५मई—सन् १८७४ ई० तथा ३० वैशाख सम्वत् १९३० सरकार की आज्ञा सेसालिम को १२७४) रु० बम्बईसे किसी असबाब के लानेकेलिये दिये

गया जिसमें से १०००) कलदार दिया गया और बाकी का रुपयाबाबाशाही दियागया २२—जेठसम्वत् १९३१ तथा ८ वीं जून सन् १८७४ ई० के अनुकूल सालिम बम्बई से मेवा लाय और नीचेविस्तृत रकमउसकोदीगई १००) नकददियागया और फिर २०१) दियागया और २५०)एकदिया गयायहसब रुपयाचेहरे शाहीदिया गया और२५०) सूरतका दियागया और उसका बट्टा प्रतिशत पर १९॥)रु० के हिसाब से ४८॥) दिये गयेतो सबरुपया २९८॥।) दियागया ॥

२४ रज्जब तथा श्रावण सम्वत्१९३१और८वीं सितम्बर सन् १८७४ ई० कोसालिमकेद्वाराअहमदाबादसेमेवामंगायागया और उसको चेहरे शाही रुपया दिया गया नकद १००) रु० और १९॥) रु० और दिये गये तो कुल रुपया ११९॥) रु० दिया गया ॥

हिसाबपिछली महीनेआश्विन्सम्वत् १९३१ तथा १३ अक्टूबर सन् १८७४ ई०के अनुकूल सालिमके द्वाराअहमदाबादसे मेवा मंगाया गया १२७५) नकद दियागया और रसीद लेलीगई दामोदरपन्थकहताहैकिवहदो याददाश्तजोअभीतुमने दिखाई हैं वहनानाजी वतिलने मुजकोलिखीथी और मुजसे दरख्वास्त कीथी कि हेमचन्द फतहचन्दसे जोदोबार हीरेकाचूर्ण लिखा गयाहै उसकेबारेमें क्याकियाजावे मैंने उनको उत्तर लिखाहै कि यहहिसाबखानगी खर्चमें डालदिया जायहेमचन्द फतह चन्दसे २९ जनवरीको ६५००) रु० काहीरा लियागयाहै औ बड़ौदेके रुपये ६६३२॥।=) ३ पाई दीगई ॥

इति

—०—०—

रेज़ोल्यूशन्॥

श्रीमान् महाराजा मल्हरराव गायकवार अपनी गद्दी से उतारे गये और थोड़े दिनों के लिये गवर्न्नमेण्ट ब्रिटिश ने बड़ौदे का प्रबन्ध करना अपने ऊपर लिया कि तहकीकात की जावे और उस दोष की माहियत मालूम कीजावे जो दोष कि विष दिये जाने के बहकाने के लिये मल्हरराव पर लगाया गया था कि पूर्व्व के रेजीडण्ट कारनेल फियर साहब सी-बी-कायममुकाम गवर्न्नमेण्ट ब्रिटिश इण्डिया रियासत बड़ौदा को विष दिलवाया गया इस बात को इच्छा थी कि महाराज को अपनी बरीयत का मौका मिले और वह अपने ऊपर लगे हुये अपराध को रद्द करें॥

सर आर कौच साहब चीफजस्टिस बंगाल और श्रीमान् महाराजा ग्वालियार और श्रीयुत महाराजा जैपुर वीरेश और करनैल सर आर मीड़ साहब चीफकमिश्नर मैसूर और करग और राजा सरदिनकरराव और मिस्टर पी० एस० मेलवल साहब बंगाल के सिविल सरवन्ट पूर्व्वोक्त जुर्म्म की तहकीकात के लिये कमीशन के मेम्बर नियत हुये थे जिस्से कि तहकीकात करके श्रीमान् वैसराय और गवर्न्नर जनरल बहादुर कौंसल को रिपोर्ट करैं कि उनके विचार में मुकद्दमे की रोयदाद क्योंकर पाई गई और मुख्य हालत उसकी क्या है॥

गवर्न्नमेण्ट इण्डिया चीफजस्टिस और कमीशन का अतिगुण मानती है कि उन्होंने ऐसे बड़े काम और संगीन मुकद्दमे की कारवाई अपने जिम्मे ली॥

कमीशन के मेम्बरों के प्रतिकूल राय की रिपोर्ट गवर्न्नमेण्ट इण्डिया के फैसले के समेत जो बड़े गौर और कौंसलियों की तकरीर करने के उपरान्त तै हुई है सम्पूर्ण मनुष्यों की इत्तिला के लिये प्रसिद्ध कीजाती है॥

हुक्म हुवा कि नीचे लिखा हुवा रेजोल्यूशन पूर्व्वोक्त कागजों के सहित हिन्दुस्तान के सेक्रेटरी अमिहस्त के अवलोकन के लिये

भेजा जावे और गजट आफइण्डियामें मुद्रितहो—हस्बुलहुक्म श्रीमान् वैसराय और गवर्नर जनरल॥

दस्तखत-सी-यू-एचीसन
साहब सेक्रेटरीगवर्न्नमेण्टइण्डिया॥

रेज़ोल्यूशन।

नीचेलिखे हुयेकागज पढ़े॥

पहिले—इश्तिहार लिखाहुवा १३वीं जनवरी सन्१८७० ई० का जिसमें महाराजा मल्हरराव गायकवार मुअत्तिलहुये कि इस जुर्मकी तहकीकात जो पूर्व्वोक्त महाराजा ने बहकाकर रेजीडण्ट साहब को विषदिया कीजावे॥

दूसरे—इश्तिहार लिखाहुवा १५ फरवरी सन् १८७५ ई० का जिसकेअनुकूल कमीशन तहकीकातके लिये नियत हुई थी॥

तीसरे—मुकद्दमेके कागज उन कागजोंके सहित जो उर्दू से छपाहुये हैं॥

चौथे—नोट छपी हुई याददाश्त कौंसिल की तकरीरों के बाबत॥

पांचवें—रिपोर्ट सररिचर्डकौच साहब॥

सर आरमीडसाहब—औरपी—एस० मैलवल साहब दस्तखती ३१ मार्च सन् १८७५ ई०

छठे—भिन्न राय श्री महाराजा सेंधिया लिखा हुई २७ मार्च सन् १८७५ ई०॥

सातवें—पृथकराय श्रीमान्महाराजा जयपुर लिखीहुई २७ मार्च सन १८७५ ई०॥

आठवें—राय जुदागाना राजा सरदिनकरराव लिखीहुई२५ मार्च सन् १८७५ ई०॥

दफा०१—ऊपरलिखे हुयेकागज पढ़ेगये—यहसब रेजोल्यूशनमें क्रमपूर्व्व कहैं जिनसेमालूम होगाकिमहाराजा मल्हरराव

कीहरकतोंकी क्योंकर तहकीकात और काररवाई कीगई॥

और यहां पर सम्पूर्ण कागजों को नकल करना सिवाय तूलके और कुछफायदा नहीं इसलिये नकलनकीके वलउन्हीं कागजों जरूरी।का बयान करना जरूरहै जिससे कि फैसलेकी सूरत पैदाहो॥

रईसों और कमीशनके मेम्बरोंनेअति परिश्रम और तहकी-कातकी और कमीशन को बरखास्त किया और अपनी २ रायलिखी अबगवर्नमेंराटइंगिलियाको पहिलेगवाहोंकी गवाही और कौंसल और अन्यकमीशनके मेम्बरोंकी तकरीरपर खूब गौर करके इस काररवाई कानतीजा लिखाना शेषरहगया॥

दफ़ा २—सररिचर्डमीडसाहब और सररिचर्डमीडसाहब और मिस्टर पी०एस०मैलवल साहब आदि तीनों कमीशन के मेम्बरों की राय इसबात परमुत्तफिक है किजो अपराधगा-यकवारपर लगायेगयेथे वहसबसाबित होगये यह सबसाहब अपनीरायमें साफलिखतेहैं किखूबगौर करकेमालूम हुवा कि मल्हरराव ने अवश्य विषदेनेका उद्योग किया था और जिन लोगोंनेयहकाम किया उन्होंनेमल्हरराव के बहकानेसे किया॥

दफ़ा ३—महाराजा सेंधियाकेलिखसे रियासत और मल्ह-रराव के नौकरोंमें गुफ्तगू का होना और विषदेनेका सबूत जिसको श्रीमहाराजा तसलीमकरते हैं पायाजाता है परन्तु महाराजासाहब इसबातकोस्पष्टनहीं लिखतेकि करनैलफियर साहबको अवश्यविष दियागया और महाराजाके रातदिनको गुफ्तगू नौकरों और महाराजासाहबके बाबमेंयह फिकरा लिखा हैकिकुछ बरीबातनहींहै किऐसा आवागमन और पारितो-षककी प्रार्थना विवाह वा त्यौहार पर बहुधा हुवा करते है और इसबातकी सिफारिशकी इच्छा रखते हैं किरेजीडण्टसा-हबहमसे प्रसन्नरहें और हिंदुस्तान के रईस बहुधा रेजीडण्ट की काररवाइयोंको खुफियापूछते हैं और उनकी रियासतसे मुताल्लुक है उनपर अधिकतर शफकतरखते हैं॥

और वहसमझते हैं कि गायकवारका तअल्लुक विष दिये जानेमें साबित नहीं है वह इस विषयमें यूं लिखते हैं कि विष दियेजानेके उद्योगमें सबमुकद्दमा जो मेरे रूबरू कायम हुआ मेरी समझ और विचारमें विष दिये जानेका जुर्म महाराजा के जिम्मे साबितनहीं है॥

दफ़ा ४—श्रीयुत महाराजा जयपुरसमझते हैं कि रेजीडन्सीके नौकरोंको कुछरुपया मिला और करनैल फियरसाहबको विष भी दियागया और महाराजा और नौकरोंकी बातोंके विषय में वहयोंलिखते हैं कि अमीना आया और अन्य नौकरों के बयानसे साबितहुवा कि रुपया मल्हररावकी आज्ञासे भिन्न२ समय और और नौकरों को दियागया परन्तु इससेयह नहीं पाया गया कियिाभतकेनौकरोंसे किसीअनुचित कामकेलिये साजिश कीजावे और यूं ही गायकवार ने पारितोषक दिये थेजैसेकि बहुधा विवाह और त्योहारों आदिमें देतेहैं और महाराजासाहब ने कईगवाहियों के जुर्मके विषय में बहुत कुछ मज़मूनलिखाहै उनकाबयान आगेकियाजावेगा॥

अन्तमें उन्होंने यह लिखाहै कि पूर्वोक्त प्रमाणोंपर गौर करनेसे मेरेमनको किसीप्रकारसे निश्चयनहीं कि गायकवार इसजुर्ममें ज़राभी मालूमहों हरचन्दकि करनैलफियरसाहब के शर्बतके गिलासमें विष मिला और सुब्हतलिफतीन शरीक जुर्म अर्थात् रावजी दामोदरपन्थ और नरसूने गवाहीदी॥

दफा ५—राजा सरदिनकररावकी राय श्रीमान्महाराजा सेंधियाके सहशहै इसलिये उसका विस्तारपूर्वक यहां लिखना कुछअवश्य नहीहै॥

दफा ६—कमीशन के मेम्बरोंमेंसे कोईभी यहनहीं कहता कि रावजीके सिवायकिसी अन्यमनुष्यने नरसूकी सहायता से विष दियाहो॥

दफा ७—जो इसमुक़द्दमेका फैसला मेम्बरोंकी रायपरही कियाजाता तोउसका यहपरिणामहोता कि गायकवार को

अपनाबदीयतका मैाका हाथआता परन्तु इसबिषयमें उनका परिश्रम उनकेप्रतिकूल हुआ कमीशन के छः मेम्बरोंमें से तीन मेम्बरों की यहराय है कि गायकवारपर जुर्म्म साबित है इसलिये ऐसे तीन मनुष्य जिनको इसदेशकी प्रकृति और कारखाई से एकपरा तजुर्बा होचुका है और जिन्होंने तहकीकात करने और गवाहोंके हासिल करने के उपरान्त इस मुकद्दमे में अपनी रायदी कि जिस को तहकीकातके लिये हमसकर्रर हुयेथे उसशख़्सपर जुर्म्म साबित होगया और तीनोंरायें मुत्तफ़िक़ हैं और जब वहराय कि अफ़सरबालानेखगड़ननहींकी पसमैं भाकहसक्ताहूं कि थोड़ीसेथोड़ी इसशख़्सपर बहुतबड़ी तोहमतरहेगी जिसकी निस्बत वहजुर्म्मका सुबूत लिखतेहैं॥

दफा ८—परन्तु गवर्न्नमेग्ट इगिडया उचित नहीं समझती है कि इसको कमीशनके मेम्बरोंकी रिपोर्टपरख़तमकरदे इसकमीशन का इजलास जोहोशलनथा यह कमीशन केवल तहक़ीक़ातजुर्म्म औरगवाहोंआदिके इज़हारलेकर गवर्न्नमेग्टको इत्तिलाकरे जो सम्पूर्ण कमीशन के मेम्बरोंकीभी एकरायहोती तौभी गवर्न्नमेग्ट इगिडया अपनेइतमीनानके लिये ख़ुब प्रथमसे अन्तपर्य्यन्त मुलाहिजाकरती और भले प्रकार अवलोकन करके अपनीराय लिखती॥

यदि कमीशनकीराय मुख़्तलिफ़ है इसलिये गवर्न्नमेग्टइगिडयाके विचारमें उचितमालूमहोताहै कि केवल अपनीराय नलिखे किन्तु मुख्य २ अपने सब विचार लिखे जिनसे कियह नतीजा हासिल हुवा॥

दफा ९—राय तीन मेम्बरों को जिन्होंने अलग २ रिपोर्ट लिखीहै उनसे कुछगवाहोंकी गवाहीमें और मुख्य २ बातोंमें जो गवाहोंके कमज़ोरीके सबबयों इख़तिलाफ़ पाया जासक्ता था गवर्न्नमेग्ट इगिडया इनदोनों बातोंमें पहिलीबातपर अपनाख़याल करूंकरेगीयह इच्छा नहीं है किसब गवाहियों का जिकहो हां निसंदेह ज़रूरीबातोंपर बहसकीजावेगी॥

दफा १०—पहिले इसबातपर लिहाज करनाचाहिये कि रियासतके नौकर और गायकवार में वार्त्ताके होनेका सुबूत हुवाहै यहगुप्तगू रात्रिकोनिर्ज्जनस्थानमें हुवाकरतीथी और इसीगुप्तबातकेलिये बहुतसे रुपयेके देनेकावाइदा कियागया था आजादगवाहें।की गवाहीसे यहबात तहक़ीक़ हुईहै गवाही उनकीसीधी सादीगुजरी और यह गवाही ऐसीहै कि जिसे मुख्यबातें मालूमहुई और इनवारातमें जबसवालात हुये ते। इनकीगवाहीमें जरासा फ़र्क नहीं हुवा और उसी प्रकारसे वहउत्तर देतेरहे जबकभी मैाकाहुवा उनकीगवाहीकी परीक्षा लीगई॥

अर्थात् पूछा कि तुमकोकौन २ लोग किस २ मकान पर लेगये और तुमकोयादहै कि जबरुपया तुमकोदिया गया तो वहांकैान २ मनुष्यथा इनप्रश्नोंका उन्होंने उत्तर बखूबी दिया कोईगवाही मुखतलिफ इसबारेमें नहींगुजरी॥

सचतो यहहै कि गायकवार भी इस सबबात से इन्कार नहीं करते-उन्होंने अपने लेखमें जोबड़ी एहतियात से लिखा है उसमें लिखते हैं कि इससे उनका इन्कारनहीं है अर्थात् अपनेआप वार्त्ता करनेसे याकरुपयेकेनदिलानेसे परन्तु वहकहते हैं कियहकाररवाई मैनेइसप्रयोजन सेनहींकी किमुजकोरजो-उन्होंकी रोजानाखबर मिलतीरहे॥

दफ़ा११——प्रकटमें गवर्न्मेण्ट के विचारमें कोई गवाही वगैरह ऐसीनहींहै जिससेरावजीका बयान खण्डन होसके कि उसीने अपनेहाथसे कारनैल फियर साहबका विष दियाहै या गवाहीनरसूकीरहकीजावे कि उन्होंनेरावजी का मददकीथी॥

दफ़ा १२——गवर्न्मेण्ट इण्डियाको मालूमहोताहै किइस सूरतमेंदो बहुत बड़े अमूजो हरगिज किसी सूरतसे रद्दनहीं होसक्ते सुबूतहोगयेपहिलेयहकिगायकवार अपनेआपगुप्तरात्रि केसमय रेजीडन्सी के पांचनौकरोंसे वार्त्ता करतेथे॥

औरउन्होंने रावजीनरसूऔरअमीना कोजोतीनों रियासत

के नौकर थे रुपया दिया दूसरे यह एक बहुत बड़ा इरादा किया गया था कि करनैल फ़ेयर साहब को पूरी खुराक पुड़ियाके ज़हर की दीगई और रावजी और नरसू के द्वारा विष दिलाया गया गवर्न्मेण्ट इण्डिया समझती है कि कोई मेम्बर उन कमीशन के मेम्बरोंमेंसे जिन्होंने अपनी राय अलग २ लिखी है बिल्कुल इन दोनों बातों से इन्कार नहीं करते हैं और जिन बातों को उन्होंने नहीं माना है उनसे भी साफ़ हाल पाया नहीं जाता ॥

दफ़ा १३—जब यह अमर फ़ैसल होचुके और सुबूत उनका सब होचुका तो गौर कामिल करनेपर सुफ़ाह्हमा दूर पहुंचता है पहिले २ तो यह मुश्किल थी और इसका निश्चय न था कि ऐसे मनुष्य गायकवार से रियासत के नौकरोंसे खुफ़िया गुफ़्तगू करें परन्तु जब यह साबित होगया तो यह बात दरयाफ़्त तलब रही कि क्या यह बातचीत अपराधोंसे अलग या उसीके लिये थी ॥

इसका कोई हेतु वर्णन नहीं किया गया कि रावजी और नरसू ने ऐसा किया केवल इतना ही बयान हुआ है कि पारितोषक की प्राप्ति के लिये ऐसा श्रम किया गया सो इन्हीं दोनों बातों से इसका मूल और अन्त ख़याल करलेना चाहिये और यह दोनों बातें मिली हुई हैं और एक दूसरे से पैदा होती हैं ॥

दफ़ा १४—यह बात ठीक है कि उन तीनों मेम्बरोंने जिनकी राय अलग २ लिखी है गायकवार और रेज़ीडन्सी के नौकरों की बातें हुईं उसको बेमूल समझते हैं उनकी राय दफ़ा ३—और ४ में है चाहे हिन्दुस्तानी रियासतोंमें कोई रीति हो परन्तु गवर्न्मेण्ट इण्डिया समझती है कि इन मेम्बरोंने उन बातोंपर जो मग़ाहोमें हैं और गायकवार को नुक़सान पहुंचाने वाली हैं बख़ूबी गौर करने के बिना लिखी है ॥

दफ़ा १५—किसी गवाही से इसका सुबूत नहीं है कि गायकवारने रेज़ीडन्सी के नौकरोंको आमतौरपर विवाहपर पारितोषक दिया हो जो सब लोगोंको इनआम देते और थोड़ा २ देते तो बुरी बात नहीं थी गवाहों से साफ़ ज़ाहिर है कि ख़ास २

लोगोंको जिनसे वार्त्ताहुवा करतीथी गायकवार ने इनआम दिया और नौकरोंके दरजोंके खयालकरनेपरयहइनआमजियादह मालूमहोताहै जैसे कि रावजीको इतना इनआमदियागया जो उसकीवार्षिक तनखाहसे चारगुण अधिकथाइस से जाहिरहै कि गायकवारका दिलीमन्शायहथा कि केवल रियासतके नौकरोंका दिलहीहाथमेंनलें किन्तु उनकोरिशवतदें और बड़ेकार्य्यपर उनकोउद्यत करें॥

दफ़ा १६—इसकेविशेष यहबातभी प्रकटहै कि गायकवार आपभी अपनेतईं उसबातसे अलगकरें जिसकाजिक्र श्रीमान् महाराजासेंधिया करतेहैं अर्थात् खबरोंकेमिलनेकेलिये रुपयादेना—गायकवारने अपनेबयान तहरीरोमें लिखाहै कि मैं बयानकरताहूं कि मैंनेअपनेआप किसीरेजीडन्सीके नौकरसे नहीं कहाथा कि वहमुझको खबरें पहुंचायाकरे और रेजीडन्सी की जासूसीकरे और नमैंनेकभी इसकामकेलिये रुपया दिया औरन दिलवाया मैं उनइनआमोंके विषयमेंजोकभी २ बिवाहवा त्यौहारआदिमेंदियागयाहैकुछ बहसनहीं करसक्ता छोटे२मुक़द्दमोंकीखबरेंरेजीडण्टकीमेरेयहांआतीहोंगी और इसीप्रकारसे यहांसेभी रेजीडन्सीकेबहुतसी जातीहोंगीपरन्तु मैंनेकभी रेजीडन्सीके नैाकरोंसे ऐसीखबरोंके पूछनेकेलियेबार्त्ता नहींकी और नमैं आपजानता हूं कि उन खबरोंके लिये कुछ इनआमदियागयाहो और नमैंने आज्ञादी कि गुप्तसमाचार रेजीडन्सीकी काररवाईके मुझको मिलें॥

दफ़ा १७ और जियादहगवाहोंसे यहभी मालूमहुवा कि जोकुछ रुपया रेजीडन्सीकेनैाकरोंको दियागया वह छिपाकर दियागयाथाकि किसीको इसबातकी खबरनहो गायकवारके बहीखातोंमेंकहीं इसरुपयेके दियेजानेका जिक्र नहींहै परन्तु बहुतसीरक़मों २०नवम्बर सन् १८७३ ई० से १३ अक्तूबर सन् १८७४ ई० पर्य्यन्तकी लिखीहुई हैं जिसेप्रकटहै कि भिन्न २

समय में सालिम और यशवन्तराव को भी बहुत कुछ रुपया दिया गया ॥

और लिखाहै कि पूर्वोक्त दोनों मनुष्यों के द्वारा वस्तुओं के मोल लेने के अर्थ रुपया दिया गया परन्तु यह रक़म कित। बमें अशुद्ध कर के लिखी है क्योंकि दरयाफ़्त करने से मालूम हुवा कि कभी कोई वस्तु इनके द्वारा मोल नहीं लीगई सालिम और यशवन्तराव गायकवार के दो विश्वसित नौकर हैं और इन्हीं दोनों के द्वारा रेजीडन्सी के नौकरों को रुपया दिया गया ॥

गायकवार का प्राईवेट सिक्रेटरी दामोदरपन्थ वर्णन करता है कि रेजीडन्सी के नौकरों को इसी प्रकार से रुपया दिया जाता था यह बात भी ठीक है कि जो इसगवाह अर्थात् दामोदरपंथ का गुमान बद होतो कुछ आश्चर्य नहीं परन्तु इसबारे में वैसाही बयान करता है जैसा कि इन कागजों के देखने से पाया जाता है सिवाय इस के इस बयान को कोई रद्द नहीं करता जो उस का बयान गलत या झूठ होता तो सुगमता से तरदीद हो सक्ती थी ॥

दफा १८ अब यह बात दरयाफ़्त तलब है कि और गवाहों से भी कुछ सम्बन्ध पाया जाता है या नहीं और जो पाया जाता है तो उन दो बड़े वजूहात से जिनका पहिले ज़िक्र हो चुका क्या सम्बन्ध है अर्थात् क्या गायकवार रेजीडन्सी के नौकरों से गुप्त वार्त्ता करता था और रुपया उसने इस प्रयोजन से दिया है और दूसरे यह कि रावजी और नरसू के द्वारा करनैल फ़ियर साहब को विष दिया गया ॥

निस्संदेह रावजी और नरसू ने गवाही दी उन के बयान से विष का दिया जाना साबित होगया और गायकवार की रेजीडन्सी को इस प्रयोजन से रिश्वत देनी कि वह करनैल फ़ियर साहब के मन को महाराजसाहब के तरफ़ से नरम रक्खें अन्त को इत्तिला पाते २ करनैल फ़ियर साहब के प्राण पर नौबत पहुंची जो यह बात ऐसी नहीं है तो रावजी और नरसू ने बड़ा छल किया और झूठ के पुतले को गढ़कर बखूबी आरास्ता किया ॥

दफ़ा १९—इनगवाहों के बयानों को कोईवजह निश्चय न किये जानेकीनहींहै लोगकहतेहैंकि जिसने यहअपराधकिया वह शरीकजुर्म्महै और इनलोगोंकी गवाहीसे भी प्रकटहैकि यहबड़ेदुष्टहैं कि जिन्होंने अपने दयावानस्वामीके प्राणलेनेकी फ़िकर की और अपनेसाथियोंको इलज़ामदेनेसे नचूके॥

यह बातठीकहैकि ऐसेबयानसे इनकीगवाहीपर बहुतबड़ा संदेहआगया और जिनलोगोंको उनकी गवाहीपर गौरकरना मुनासिब आया वहग़ौरकरेंगे परन्तु ज़िहाहरहैकि बेरोकगवाही बुरे २ कामोंमें जुर्म्मके शरीक मनुष्यों से मिला करतीहै॥

जो इसगवाहीसे इसबातपर इन्कारकिया जावेकि वहकिस मनुष्यनेदी अर्थात् शरीकजुर्म्मने जोएतिबारके लायकनहीं तो ऐसा इन्कार बुद्धिके प्रतिकूलहै और सबकी रीतिके विपरीत और बहुधाठीकमालूम नहींहोता ऐसीगवाहीकेलिये उचित् है कि इसकी परीक्षा लीजावे कि सच झूठ दोनों अलग २ मालूम हो जावें॥

दफ़ा २०——इससम्पूर्ण मुक़द्दमेमें इसबातपरखयालकरना चाहियेकि कईबातें जोसाबित होगईहैं उनका समझना उचितहैअबहम को यहदिखता है कि खुफिया काररवाई एक ओरहोरही है और ज़ाहिरा एकतरफतो खयालहोसक्ता है कि वहीशख्सखुफिया और अलानिया काररवाई कररहा है इसकोकिसी प्रकारस्पष्टता पूर्व्वकदिल नशीनकरलेना चाहिये इसलियेगवर्न्नमेण्ट इण्डिया नीचेलिखेहुये अम्रकराारदेती है॥

(क)——गवाहोंके बयान तसलीम करनेऔर निश्चयमानने के योग्य हैं॥

(ख)——जोहालातउन्होंने बयानकियेवह उनकेअनुकूलहैं॥

(ग)——क्या यह हाल एक दूसरे केबयान मेंखासअम्र में मुताबिक हैं॥

(घ)——जबयह लोगज़ाहिरी हालबयान करतेहैं क्याउन

के बयानमें मुताबिक़त होसक्ती है और जोकुछ उन्होंने वर्णन किया वह एक कलमा एक दूसरे के मुताबिक है जो खाजा-दाना गवाही लोगों नेदी क्या इनलोगोंकी गवाही सेउनकी गवाही मुताबिक है ॥

(ङ)—क्या इनगवाहोंको इसहालके बयान करनेमें कुछ लाभ है जो उन्होंने बयान किया ॥

(च)—क्यायहबात किसीसूरत से जाहिर होसक्ती है कि आपुसमें एकदूसरेसे साजिश हुईहै ॥

(छ)—क्या यहबात प्रगटकीगईहै औरइसबातका सम्भव है किइनको किसीहाकिमने सिखाया है ॥

(ज)—जबइन लोगों से इज़हारमें प्रश्नकिये जातेथे तोउन की ऐसी दशाथी कि जैसे सच्चा मनुष्य बोलता है या उसके प्रतिकूल थी ॥

(झ)—क्या इनकी गवाहीकाखण्डन गायकवारकी ओर से साफ़ २ और बेगानातौरसे हुवा यानहीं ॥

(२१)—(क)—कोईबात असम्भवित नहींहै किइनगवाहों के बयाननिश्चय न कियेजावें और जब पूर्वोक्तदो अमसाबितहो गयेतोकुछ जियादागवाही की आवश्यकता नहीं है थोड़ी२ गवाहीपरहसर होसक्ताहै शायदलोग जानेंगे कि जबगायक-वारनेरावजी को अपने अनुकूल करलियाथा तो उनकोनरसू केसंयुक्तकरने की क्याजरूरतथी पस इससूरत में इन्होंने एक शरीकजुर्मको और बढ़ाया यह होसक्ता था कि गायकवार सिवायइसके औरउपाय करते इसबातको मालुमकरनाअति कठिनहै कि गायकवार नेऐसी कारखाई क्योंकी इसका यह उत्तर होसक्ताहै किरावजी सरकारी कम्पू मेंरहता था और नरसूनगरमें रहताथा नरसूगायकवार के यहांसेखबरें बखूबी लासक्ता था और उनकोरच्छा पूर्व्वक रावजी के पासपहुंचा सक्ताथा इसकेसिवाय नरस रावजीका अफ़सरथा और प्रति समयकारीबसाहबकी अरदलीमें आमदेमें रहताथाइसलिये

साफजाहिरहै कि जो नरसूजमादार न मिलालिया जातातो रावजीको पकड़े जानेका बड़ा भय होता॥

(२२)-(ख)-गवर्नमेण्ट इण्डियाके विचारमें इन बयानोंके अवलोकनसे किसीभांतिका अन्तरनहीं पायाजाता है॥

गवाहोंकेबयानको आदिसे अन्ततकबीच में बहुतफासिला होगयाथा और उनकेबयानमें कहीफरकनहींहुवा औरएक अति प्रवीण बैरिष्टरने इन हालात परऐसे२ कठिन प्रश्नकियेथे हरचन्दकिइनसेखूब २ प्रश्नहुयेपरन्तु पहिलेकेबयानमें कुछभी अन्तरनपड़ा तारीखोंमें निसंदेह कुछ इखतलाफहैक्योंकियह बातसाफप्रगट है और बुद्धिमानलोग खूबसमझसक्तेहैं किअन-पढ़मूर्खमनुष्योंको खाससमय और तारीखकायादरहनाकठिन हैरावजीके बयानसेपाया जाताहैकि वहअपनेअनुचितकर्म से अतिलज्जित होकरपश्चात्ताप करताथा सोयहबातकुछआश्चर्य की नहींहै किसंगीनमुक़द्दमेमें पहिले ऐसेखयाल हुआकरते हैं कई बयान रावजीके मुबहिमहै जैसे कि ग्रीणीकाहाल जो उसनेबयानकियापरन्तुऐसेबयानसेउसकेपहिलेके बयानमेंकुछ अन्तरनपड़ा अर्थात् उसबयानमेंकिजैसेगायकवारसे गुप्तगू होना और रुपयेकापाना और अमखासमैाजूदाकाजिक्र और गायकवारका बहकानाकरनैलफियरसाहबके विषदेनेकेलिये और उसके पास विष की पुड़ियाका पहुंचाना ९ नवम्बरका जो तलछट करनैल फियरसाहब के गिलास में निकला यह सब पहिली तकरीरके अनुकूल रहा और पुनर्वर्णनमें कहीं भी कुछ अन्तरन पड़ा और कमीशनके तीनों मेम्बरोंने अपनी रिपोर्ट मेंभी कहीं इसका जिक्रनहीं किया कि किसी गवाह केबयानमें अन्तर रहा॥

दफ़ा २२—(ग)इनदोनों गवाहोंकीगवाही खास२ अमरों मेंपरस्पर अनुकूलहै और छोटी २ बातोंमेंअन्तर है यहकदा-चित्साबित नहींहोताकि परस्परवह दोनोंमिल गयेहैंजोइन के बयानमें अन्तरहोतातो हांनिसंदेह यहकहाजाताकियह

दोनों मिलगये होंगे केवल तारीखोंमें इखतिलाफ है और इसमें इखातिलाफ है कि गायकवारके पास कईदफे गये थे और उस जगहपरभी अन्तरपायागया जिसकामको दूसरेमनुष्यने किया है गवर्नमेण्टइण्डियाकी राय कमीशनके मेम्बरों के अनुकूल है जिसको उन्होंने ३४ और ४२ दफ़ोंमें बयान किया अर्थात्‌वह लिखते हैं किजोरावजी और नरसू के बयानमें अन्तरहै उससे यहप्रकट नहींहोता कि इनका बयान गलत है किन्तु सहीस-मझाजाताहै और यहभी मालूम होताहै किगवाह आपसमें नहींमिले और न पुंलिसनेउनको सिखाया है ॥

दफ़ा २४(घ)—गवर्नमेण्टइण्डिया इनलोगोंकेबयानमेंबहुतसी मुताबिकत पातीहै और अन्नआख़िरीहै और शहादतेंगुजरी हैं वहसब एकसीहैं जो उनलोगोंका बयान ठीक नहोतातो कभीमुताबिकत न होती ॥

जिसकमरे और जिसमहलमें वहगये थे और गायकवार से वार्त्ताहुईथी गवाहउसको शुद्धतापूर्व्वक बयानकरतेहैं और यहजिक्रकिपांचसौ रुपयेरावजी को दियेगयेथे यहभीठीक है इसकीतसदीकहुआ और करभाईसे जो रावजीआदिके साथ गयेथे होती है और जो चिट्ठी पेश हुई उससे भी सिदाकत हुईकि रावजी और नरसूने खबरें महाराजा कोपहुंचाईसि-वाय‌इसके और दिलपतके गवाहीएकदूसरेकी अनुकूलहैऔर यहलोग उस रुपये के वलस्थलकी सूरत भी बयान करते हैं इसभीरावजीके लियेरुपयेका पानासाबितहोताहै यह खर्च हैजबतककि बहुतसी आमदनी हाथ नआवे तबतक क्योंकर सैकड़ोंरुपये खर्चकरसक्ताहै और इन्हींखर्चोंके कारण लोगों कोसंदेहहुवाथा और इसीसेवह पकड़ाभी गया ॥

दफ़ा २५—एक गवाही आख़िरी और बहुत बड़ी जिसका विस्तारपूर्व्वक बयानहोना उचित मालूम होताहै ९ नवम्बर कोजबकर्नैल साहबकेनौकरोंसे तहकीकातकी गईथीतोर,

वजीकीचपड़ास लेलीगईथी और एककमरेमें लटकादीथी १५ दिसंबरको वहीचपड़ास एकऔर मनुष्यसुसम्मा भोदरकोदी गईउससमय किसीकोयह खयालनथाकि रावजीकोई किस्मा बयानकरेंगेया कुछभीनकहेंगे रावजी २२ दिसंबर को पकड़ा गया और २४ और २५ को उसके इजहार लियेगये अकबर-अलीअफसर सुरागी पुलिस बंबईका वहां उपस्थित था उसने अपनेमनमें समझाकिरावजी जिनपुड़ियोंका इनकारकरताहै शायदउनका कुछनिशानमिले इसलिये उसने रावजीसे पूछा किपुड़ियाकहां रखतेथे रावजीने कहा किमैं अपनी पेटीमेंर-खताथा इसकहनेसे भोदर बुलायगया जोचपड़ास और पेटी पहिनेहुयेथा यहचपड़ास १५ दिसंबरसे उसके पासथी पूर्वोक्त भोदरसे अकबरअलीने चपड़ासली और रावजीसेपूछा कितुम पुड़िया कहां रखतेथे रावजीने ठिकाना बताया अकबरअली कोढूंढनेसे एक पुड़िया कागज की डोरेसे बन्धी हुई मिली उसनेतुरन्तही मिस्टरसूटर साहबपुलिसकेकमिश्नर को जोदूरसे कमरेमें थे बुलाया॥

सूटरसाहबने कागजकी पुड़िया निकाली और खोलकर-देखाउसमें किसीवस्तु का सफेद चूर्णथा इमतिहान करने से मालूमहुवा कियहसंखिया थी॥

डाक्टरग्रेसाहबलिखतेहैंकिइसकेकईप्रकारहैंपरन्तु यहसंखि-याउसीप्रकारकीहैजैसीकरनैलफियरसाहबकोशर्बतमेंदीगई॥

दफा २६—रावजीनेउससमय तक उसका कोई जिक्रनहीं कियाथा कि उनपुड़ियोंमेंसे कोईपुड़िया बाक़ीहै उसनेबयान कियाथा कि मुझकोदोदफे पुडियांमिलीथीं॥

पहिलीबार तो दो पुड़ियां मिलीं और दूसरी मर्त्तबा एक पुड़ियामिली—दूसरी मरतबा बाक़ीएक पुड़िया ९—नवम्बरको साहबके शर्बतमें डालदी और वहदोनों पुड़ियांपहिलेकी दो तीनदफ़ा करकेशर्बतमें मिलाकर ९ नवम्बरके पहिले देचुका

था जबपेटी उसनेअपनी देखीतो यादआया कि मैंने सबपुड़ियां नहींडालीथी कुछबच रहाथा—इसने इसबातको विस्तारपूर्व्वक कमीशनके रूबरू वर्णन किया ॥

दफ़ा २७—गायकवारके कौंसलीने इसबातका सुबूतचाहा कि इसमेंपुलिसकी कुछबनावटहै परन्तु गायकवारके फायदे की कोईगवाही इसबारेमें नहींहुई पुलिसको क्या प्रयोजन था बावजूद बयानरावजीके जोकहताहै कि मैंने पुड़ियांखर्च करडालीं और पुड़िया पेटीमें रखली और यहभी जरूरथा कि केवलसंखिया होतीया हीरेका चूर्णभी और क्योंकरयह वहीसंखिया पैदाकरते जोकरनैल फियर साहबको दीगईथी और वहपेटीतक क्योंकर पहुंचीजो १५ दिसम्बरसे भोदरके पासथी पहिलेइन सबबातोंका सुबूतकरना उचितहै फिरपुलिसकी साजिश समझते ॥

दफ़ा २८—(ङ)—ऐसे बयानोंसे जोगवाहोंने वर्णन कियेहैं क्यालाभहै यहकिसीने बयाननहींकिया कि इनगवाहोंसे और गायकवारसे कुछबैरथा या उसकी खराबीमें इनकालाभथा सहीहै कि रावजीसे प्रतिज्ञा कीगई थी कि जोसच २ इस मुकद्दमेका हालकहेगा तोउसका अपराधक्षमाहोजावेगा यहदुरुस्तहै कि ठीक कहनेसे झूठ कहनेमें रावजीका बहुत फायदाथा जोजराभी उसकेबयानमें गलतीहोती तोजिनमनुष्योंका इसने नामलियाथा तो लोग अपनी बरीयतके लिये उसकेवचनको खण्डनकरते ॥

नरसूने अपनेप्राणसे हाथ धोकर इजहार दिये थे—उससे कहदिया गयाथा कि तुम्हारा अपराधक्षमा नहोगा सो यह बातमालूम होसक्ती है किजो उन्होंने गलत बयान किया तो अपनेहो लिये बुरा किया क्योंकि उनमेंसे एक मनुष्य कोभी क्षमाकी आशान थी ॥

दफ़ा २९—लोग यह कह सक्ते हैं कि करनैल फियरसाहबसे जो गायकवार को बैर या रेजीडन्सी के नौकरों को

मालूम होगा और रावजी और नरसूयह समझते होंगे कि जोहमगायकवार को माखूज करेंगे तो कारनैलफियर साहब हमसे प्रसन्न होंगे ॥

परन्तु इसबातपर लिहाजकरना चाहिये कि गायकवार केमाखूज होनेसे पहिले कारनैलफियरसाहब बड़ौदेकी रेजी-डण्टीसे बदलचुके थे जबसाहब मौसूफ बड़ौदेकी रेजीडण्टीसे बदलचुकेथे तोऐसे इजहारोंके देनेसेइनलोगोंको निरबतखुश-नूदी महाराजा को क्या फायदा था—इनसब हेतुओं से साफ जाहिरहै कि इनलोगोंने जोइकबाल कियाइसमें कुछसाजिश एक दूसरे की न थी ॥

जब इन लोगों को मालूम हुवा कि पुलिस ने सही तह-कीकात करना शुरू की तो उन्होंने यह उचित समझा कि अपनेतई पुलिसके सुपुर्दकरदें और जो कुछ जानते हैं उस को सच २ कहदें ॥

दफ़ा ३०—(च)—यहबयानकि आपुसमें साजिशहुईहै शहा-दतआम और खाससेखण्डन कियागयाहै जोयहउनकेइजहार जिनकेविषयमें रावजी और नरसूसे मशवरह होगयाखयालो थे तो कभीनिश्चय नहीं कि जबगायकवार के एक अतिचतुर और योग्यबैरिस्टरने इजहारमें प्रश्नकियेतो उसकेबयानमेंकुछ फतूरनहीं आया और कुछभी अन्तर न हुवा ॥

यहप्रश्न इसइजहारमें बतौर सुनासिब हुयेजो बालभरभी इसमें गलती होतीतो फरेबका परदा जरूर खुलजाता और कोईबनावटकाम नआती और किसीमुआमिलेमें सुताबिकत नहोती हांकेवल इतनाही अन्तरहै जैसे कि एकहालकोदस मनुष्यवर्णन करें ॥

गवर्नमेण्टइण्डियाने इसको पहिलेही खयाल करलियाहै कि इसमेंइतनाही अन्तरहैजैसेकि सहीमुआमिलोंमेंभिन्न २ गवाहोंके बयानसेहुआ करतेहैं रावजी और नरसू २२ दि-सम्बरसे अलग२ करदियेगयेथे और एककेबयान की कुछभी

दूसरे को खबर नथी और जब नरसू रावजी के रूबरू २२ दिसम्बर को आयातो रावजीने नरसू के साम्हनेकहा कि हमनेगले गलेपानी में सब क़बूलदिया ॥

दफ़ा–(३१)–(छ)–शायदकिसी को यह संदेह हुआ कि यहबयान रावजी और नरसूका किसी पुलिस के अफ़सर के सिखाने से हुआ है तथाच ऐसीदलीलें गायकवार के वकील कीओरसे पेशहुई हैं गायकवार के कौंसलीपुलिस की कारवाई में धब्बालगातेहैं [सुटरसाहब से लेकर छोटेपुलिस के नौकरतक] किन्तु वह कहते हैं कि पुलिसने सख़्तीकी और यहभीकहते हैं कि पुलिसकी सबगवाहीबनाईहुई है इसका कारणयहथा कि हेमचन्द गवाहजोहीरे के मोललियेजाने के सबब बुलायागया था उसनेबयान कियाकि मुझसे जबरदस्ती गवाहीलीगई यहगवाह वहथाजो हवालात में नहींगयाथा उसने जोकमीशन के रूबरूगवाही दीउससे अपनेपहिले की गवाहीरद्दकी और बयानकिया कि मुझसे सख़्तीकरकेगजानन्दवतिल ने गवाही दिलवाई इसगवाह के विषयमें कमीशनके तीनमेम्बरोंने एकहीराय लिखीहै अर्थात् वहलिखतेहैं कि इसमनुष्यकी गवाही में कुछभी अन्तर नहीं पाया जाता इसलियेऐसे मनुष्यकोगवाही लिह जकरने के काबिलनहींहै कमीशन के मेम्बरों के रूबरू इस मनुष्य ने अपने दस्तखत से इन्कारकिया और उसकोपहिचान नसका किन्तुयहझूठबोला कि हिन्दुस्तानी मैं जानता नहींहूं तीनों कमीशन के मेम्बर इसपर सख़्तीके होनेका इन्कारनहीं करते इस विषय में मैं कमीशनके मेम्बरोंकीराय गवर्न्मेण्ट भी तसलीम करतीहै ॥

यहांइस बातका विस्तारकरना उचितहै कि पहिले इजहारगजानन्दवतिलने नहींलिये थेकिन्तु मिस्टरसुटरसाहबने लियेथेऔर दोदिनके पीछेहेमचन्दने सरल्यइसपीली साहबके रूबरूअपनेदस्तखतकियेथेतब उसने उनदोनोंसाहिबोंके रूबरू पुलिसकी सख़्तीका बयाननकिया नहींतो उसीसमय सरल्य

इसपोली साहब उसके तरफदार होजाते और गजानन्द के पंजेसे उसको छुड़ादेते इसबातपर लिहाजकरनेसे और दूसरे बयानी दूखतिलाफी इसकीसे जिसमें कि यह बिल्कुल अपनी बरीयत चाहता है गवर्न्मेण्ट इण्डिया के विचारसे इस के इजहार समाअतके काबिल नहीं हैं॥

दफ़ा ४२—जबहेमचन्द्कीगवाही नमानीगई तो कोईऐसी गवाही बाकी नहींरही कि जिसे पुलिसकी सिखावट और बनावट पाई जातीहो उनको क्याप्रयोजनथा कि इसमुक़द्दमें को ऐसागढ़ते और रावजी और नरसूको सिखाते और गवाहोंको आरास्ताकरते समझमें नहींआताकि क्यों यह उनपर दोषलगायागया उनको क्याइसबातकाखयालनहोगा किजो ऐसीबनावट करेंगेतो सरकारब्रिटिश क्याहमसेप्रसन्नहोगी॥

मिस्टरसूटरसाहब-अकबरअली-अब्दुलअली-और गजानन्द वतिल बम्बईके बड़ेनामवर और प्रतिष्ठितहैं मिस्टरबेलनटायनसाहबको लोगोंने बहुतकुछ सिखायाथा किगजानन्दके मुकद्दमेमें खूबतहक़ीकातकरें परन्तुवहइस इरादेसे कामयाबनहुये यहपुलिसके सम्पूर्ण नौकर सरल्यूइसपोलीसाहबकी आज्ञासे कारवाई करतेथे जो कुछभी इनकीबुरी कारवाई साहब को मालूमहोती तो आपही इनलोगोंको अच्छीतरह खबरगीरीकरते जबसे नरसूगिरिफ्तारहुआथातबसेवहफौजकेगार्ड में कैदरहा नकि पुलिसकी गार्डमें किसी गवाहीसे यहबात प्रकटनहींहै कि पुलिसकेलोग उसकेपासजासक्तेथे औरउस को सिखासक्ते थे इसलिये गवर्न्मेण्ट इण्डियाके विचार में यहआताहै कि रावजी औरनरसूने जोबयानातकिये उसको पुलिसने नहीं बनायाथा गवर्न्मेण्टइण्डियाकी रायऐडवकेटजनरलकी रायकेअनुकूलहै॥

और मिस्टरबेलनटायनसाहबने पुलिसकेविषयमेंगुफ्तगूकी वह बिल्कुल फजूलथी और एकक़ौलदलील यहहैकि जिसमुकद्दमेको वहखण्डन कररहेथे वहआपहीबहुत कमजोरथा॥

दफ़ा ३३—(ज)इनमनुष्योंके इजहारोंकेदेनेके वक्तऐसेमोद-धाथी जिसेंकि उनपर झूठबोलनेका सन्देहमात्रनथा किन्तु गायकवारकेवकीलनेभी कोईऐसाबयाननहीं कियाजोगवाहों की परेशानी से पायाजाता किन्तु इनतीनों कमिश्नरोंने भी जिन्होंनेएकही रिपोर्टपरदस्तखतकिये वहलिखतेहैंकिनरसूने ठीक २ बयानकियाहै और अपनेदुष्कर्मसेअति लज्जितथासर दिनकरराव जो उसकेसजाति हैं उन्होंने नरसूसेखूब प्रश्नकिये उससेभी मालूमहुवा कि वहसच्चही बोलताहै हजारतरहसे सर दिनकर रावनेउसको सक्षपकड़ा परन्तुकहीं फरकनदेखा और उसको अपने पहिले बयानपर साबितपाया गवर्न्मेण्ट वही प्रश्नोत्तर नीचेलिखतीहै ॥

प्रश्नदिनकररावका—तुम २४ वर्षसे नोकरहोक्यातुम महा-राजासाहबके पास कमीशनके एकत्रहोनेकेपहिले अक्सरजा-याकरतेथे ? उ०—जबसे कि पहिली कमीशन एकत्रहुई तबसे मैंजाताथा और उससेपहिलेकभीनहींगया खाण्डेरावकेपास मैंकभीनहींजाताथा केवल साहबकेसाथ कचहरीमें जाताथा प्र०—जब महाराजने तुमकोविष देनेकेलिये बहकायातो तुम जानतेहोगे कि यहबहुत बुरीबातहै तुमने अपनेस्त्रीपुत्र और कुटुम्बके निर्वाहका कोईबन्दोबस्त किया ? उ०—मैनेकुछनहीं किया इसपर ऐडवकेट जनरलने कहाकि तर्जुमा दुरुस्तनहीं होता उन्होंने कहा कि गवाहने यहभीतो कहाथा किसिर-फजुबानी मेराइतमीनानकियाथा । प्र०—किसीको विषदेना बुरीबातहै क्याकोई मनुष्यदसबारह आदमियोंके रूबरू ऐसा कामकरताहै ? उ०—दस बारह आदमी नथे दो हमलोगथे और दो महाराजाके नौकरथे । प्र०—जो संखिया तुमको दी गई वहमिकदारमें कमथी या जियादहथी और क्यातीनबेर विषदियागया ? उ०—मैंने अपनी आयुभरमें किसी को विष नहीं दिया था एक पुड़िया मुझको दीगई थी और यह कहाथा कि रावजीको देदेना मुझसे यह नहीं कहाथा कि

कितनी दीवानी रावजीसे यहबात कहीगई थी। प्र०—वहकौन नौकरथे जिन्होंने कहाथाकि फैजूपर तोहमत रखनीचाहिये उ०—किसीनेनहींकहाथा लोगोंने फैजूका नामलिया मैंनेभी उसीकानाम लिखवादिया। प्र०—किन २ मनुष्योंनेफैजूकानाम लियाथा ? उ०—अब्दुल्ला—पेडरू और हम्माल— इसी प्रकार पांचछः मनुष्योंने नाम लियेथे। प्र०—जबमहाराजा से पहिले तुम्हारीमुलाकात हुई थीतो महाराजासाहब जानतेथेकितुम बदजातहोपरन्तु ऐसेनाजुक मुआमिलेमेंफिर तुम्हाराक्योंकर निश्चयकिया ? उ०—रावजी सालिम और यशवन्तरावनेमेरी ओरसे महाराजका इतमीनान करदियाथा। प्र०—क्या तुम हिन्दूहो ? उ०—हां। प्र०—तुम्हारी क्याजातिहै ? उ०—तिलंगनकामाती। प्र०—तुमपुलिससे डरतेहो ? उ०—क्योंमेरेडरनेका क्याकारणहै जब मैंसच वर्णनकरताहूं। प्र०—तुमजानतेहो कि मैंअपराधीहूं ? उ०—हांमेरी बदकिसमती है मैंभी शरीकजुर्महूं। प्र०—जो तुम्हारासरकारअपराधक्षमाकरदेगी तोतुमईश्वरको सर्वत्र वर्त्तमान जानकर सचकहोगे ? उ०-मैं कुछ मुआफीके सबबसेसचनहीं कहताहूंचाहेसरकार मुआफ करेयानकरे मैंसचही कहूंगा और अबभी सचकहरहाहूं॥

प्रेसीडण्ट साहबबोले किसरदिनकरराव काप्रश्नथाकिजो सरकारतुमको मुआफ करदेगीतो तुमइससेबढ़कर सत्यबोलोगे इसपरउलथाकरनेवालेने तर्जुमाकरकेगवाहको सुनायाइसपर गवाहनेकहा किजोमैने कहासब सचहैऔर इससेबढ़कर क्या सचकहूंगा सरकार चाहेमुझकोमारडाले याछोड़दे॥

सरदिनकरराव प्रश्न——तुमने एक मनुष्य के पास २४ वर्ष नौकरीकी अबतुमने उसकेसाथ बुराईकीतुमअपना बयानइस तरहकरोकि मानोईश्वर केसामने कहरहेहो जोकुछतुमको कहना होसाफ औरसचकहो कुछभय मतिकरो ? उ०—जो कुछमुझको कहनाथा निर्भयहोकर सच २ कहा॥

प्रेसीडण्ट साहबबोले किक्यातुम ईश्वरके सामनेसचकहते

हो मुतरज्जिमने उसयाकरके गवाहकोसुनाया गवाहनेकहा
किईश्वरके सम्मुखमैं कहताहूंकि मैनेजोकुछवर्णनकियाऔर
जहांतककि मैंजानताथा वहसचथा औरइसबयानमें कुछभी
मैनेझूठ नहींकहा ॥

इसबयान परगवाही खतमहुई औरगवाह बैठाया गया ॥

दफ़ा २४—भ—अबयहबात पूछनेके लायकहै कि इनलोगों
कोगवाही गायकवारकी ओरसेक्योंकर खण्डनहुई उत्तरइस
कायहहै किगायकवारके वकीलकोयह उचितमालूमहुवाकि
गवाहोंके बयानमें कहींजो अन्तरहै यातारीखेंभी खिलाफ हैं
उनपर व्यंगकिया जाय और गवर्न्मेण्टके नौकरोंपर तोहमत-
रक्खीनकिउन आदमियोंको लातेकि गायकवारका जुर्म्मग-
लतथातो उसकोखण्डनकरते और सफाईके गवाहगुजरानते
किमहराज कीबरीयत होतीअच्छीतरहसेतो खण्डननकर-
सके पससिरफ नुकताचीनी पर कमर बांध ली ॥

रावजी नरसू औरअमीना आयाआदिके बयानके अनुसार
महाराजा का गुप्त वार्त्ताका करनासुबूत हुवा और उससम-
मय दोमनुष्य अर्थात् सालिम औरयशवन्तराव की मौजूदगी
मालूमहुई औरसबमुआमिले इन्हीके द्वाराहुवा करतेथे यह
लोग गायकवारके बड़ेविश्वसितथे इनको गायकवारने रुपया
भीबहुत सादियाकि खुफिया काररवाई करेंजब यहलोगगि-
रिफ्तार कियेगयेतो फौजीगार्ड कीहिरासत मेंथेपुलिसमेन
थेऐडवकेट जनरल नेवर्णनकिया औरकिसीने उनकेबयान को
रद्दनहीं कियाकि इनलोगोंसे औरपुलिससे वार्त्ता होतीथी
परन्तु गायकवारके वकीलजब चाहतेथे उनके पास जाते थे
औरवह उनसे खुफियाबातें करतेथे परन्तु उन्होंने कुछनहीं
कहाऔर गायकवार कीतरफ होकर कोई गवाही नहींदी
जिससे गायकवारकी बरीयतहोती हो ॥

गवर्न्मेण्ट केवकीलों कोइनलोगोंसे अधिक गवाही लेने
कीजरूरत नमालूमहुई गायकवारकी औरथातयो वहआप-

होसचभाठ जानतेहोंगे औरसालिम औरयशवन्त रावकेओर सेभी उनकोनिश्चय होगाकि वहसब मुक़द्दमेको जानते हैं ॥

मल्हरराव् काबयानहै किहमने करनैलफियर साहबको- ह़रदेनेकेलिये कोई गुप्तकाररवाई नहींकी औरसालिम और यशवन्तराव इसबातको खूबजानतेहैं जोऐसा यातोयहलोग क्यों नबुलायेगये और क्यों रूबरूइजहारनहुये जबसच२बयान करदेते तोगायकवार कीबरीयत होती गायकवार के वकील इनकेन बुलानेकायह हेतुकहतेहैं किगायकवार और उनके वकीलइस मुक़द्दमेको दमोदरपंथ काशरीक नहींकहसक्तेहैंइस सूरतमें इनका हिरासत मेंरहना अच्छाहै निकलना अच्छा नहींहैजो इसबयानसे यहप्रयोजन हैकि पुलिसने काररवाई कीतोयहभी कहसक्तेहैं किगार्डकी फौज और पुलिस कीभी साजिशहै परन्तुगवर्नमेण्ट इण्डिया यह कहतीहै किगायक- वारकेन बुलानेकी वजहसे सालिम और यशवन्तरावकोकिवह साफ़२ बयानकरेंगेइससे औरभी तसदीक इसअमरकीहोती हैकिरावजी औरनरसू काबयान ठीकथा और गायकवार के जिम्मे अपराध लगा ॥

दफ़ा ३५—अबयह देखना बाकीहै कि रावजीकी गवाही औरनरसू को गवाहान ग़ैरकीगवाहीसे क्यामदद मिलतीहै इसबातका ज़ाहिरहै किगायकवार औरनरसू आदिकी मु- लाक़ात काहोना औररुपये कादियाजाना साबितहैसोइससे बढ़कर क्यागवाही होसक्तीहै इससेरावजी औरनरसू की ग- वाहीको बहुत बढ़कर मदद मिली ॥

दफ़ा ३६—कुछ इनलोगोंकी गवाहीको आयाकी गवाही से मददमिलीहै जोएक नासमझ और डरपोकगवाह है परन्तु इसके बयान और सचाई में कुछभी फरक नहीं आसक्ता जब अन्तमेंउसकी और गायकवारकी बातचीतयद व्यतीत अक- टूबरमें हुईथी तो ज़िक्रहुवाथा कि वहशरीकहो और करनै- लफियरसाहब केमनकेरूज़ू करनेमें कोशिशकरे ॥

मालूम होता है कि उस समय विष का ज़िक्र नहीं किया गया परन्तु यह भी मानना नहीं है कि अमीना आया को कर समझो कि विष का ज़िक्र है क्योंकि जब मल्हरराव ने कहा कि कर्नैल फियर साहब को जो जादू की पुड़िया और कुछ और दिलवजू करने के लिये दें तो तू उनको दे देगी तब अमीना आया बिल्कुल डर गई और उसने गायकवार से निषेध किया कि कर्नैल फियर साहब के लिये कभी ऐसा उद्योग न करना नहीं तो बहुत खराबी में पड़ोगे यह कह वह चली गई और फिर कभी नहीं आई ॥

दफ़ा ३७—अमीना आया के इज़हार की सिदाकत उसके पति शेख अब्दुल्ला ने की उसका बयान है कि अमीना आया ने मुझसे दूसरे दिन कहा कि गायकवार कहते थे कि कौनसी वस्तु दी जावे कि साहब का और मेरा एक मन होजावे और जो फ़रक आगया है वह दूर होजावे इस पर मैंने कहा कि साहब को कोई वस्तु खाने को न देना ॥

दफ़ा ३८—गायकवार के सिक्रेटरी दामोदरपंथ की गवाही भूलनी न चाहिये इस गवाह के बयान की हालत अच्छी नहीं है क्योंकि वह इस अपराध में संयुक्त होने का इकबाल करता है जो इज़हार उसने दिये मुआफी के बाद दे सिदिये और यह इज़हार उसने कैद से तंग आकर इस तौर पर दिये थे ॥

कमीशन के तीनों मेम्बरों ने जिनकी कि रिपोर्ट मुताफिक है उन्होंने बड़ी एहतियात से दामोदरपंथ की गवाही को लिखा है परन्तु वह यह समझते हैं कि मुख्य का मर्म तो मुताबिक़त है और कुछ अन्तर नहीं गन्न में इर्द्धि याख्व ग़ौर करके लिखते हैं कि दामोदरपंथ की गवाही की और गवाहों की गवाही से सिदाकत होगई ॥

दफ़ा ३९—पहिले कागज़ पर जिस पर कि (चोड़) अक्षर का चिह्न है वह निःसन्देह असली है उससे प्रकट है कि ४ अक्टूबर सन् १८७४ ई० को दामोदरपंथ को किसी मुख्य कार्य्य के लिये संखिये की ज़रूरत थी और उसके लिये दामोदरपंथ का यह बयान है कि गायकवार को विष चाहिये था परन्तु संखिया गा"

यकवारकी लिखीहुई आज्ञाके बिना नमिलतीपरन्तु इस बयानसे दामोदरपंथ की सिदाक़त नहीं होती जब तक कि कोई गवाह और नपहुंचे॥

दफा ४०—दूसरे गायकवारके जवाहरखाने के रक्षकनाना वतिलजो करनैलफियरसाहबके विषदेनेमें माखूज नहीं हैं उसकेबयानसे मालूमहुवा कि २० अकटूबरके कई दिन पहिले हीरेकी खाहिशथी यहकिसी छोटेसे कामके लिये आवश्यक नथाकिन्तु एकदवाके लियेचाहियेथा किपोसाजाता उनका बयानहै किमैंनेकभी ऐसीभस्म नहींदेखी थी यहभी साबित हैकि बहीखाते गायकवारके यहांथेवह भी मशकूक करदिये गयेहैं जिससे कि कोईकारखाई छिपकरहो परन्तु कागजचिह्नित(टी)अक्षरसेमालूम हुवाकि हिसाब मशकूक कियेगयेथे यहदरबारकखरीदअलासके हैं सिवायइसके रामेश्वरमूराजी ब्राह्मण और नानाजीवतल और उनके मातहत आत्माराम कीगवाही से भी साबितहुवाहै कि हीरेमोल लियेगये परन्तु फिरभीहीरेके खरीदनेपर और गवाहियों काहोना उचितहै॥

दफा ४१—दामोदरपंथकी गवाही पहिलेहीरे और संखियेके मोल लिये जाने के विषय में ली गई है इसलिये सूरत इस्लाकमेटी केमेम्बरोंमुत्तफिक रायपरहैंउनकीराय है किशायदसंखियामोल लीगईहो परन्तु हीरेका खरीदकिया जाना साबित होगया इसलिये गवर्नमेण्ट इण्डिया दामोदर पंथ की रायपर कुछध्यान नहीं करती क्यों कि गायकवार को संखिया याहीरेका मिलना कुछ कठिन नथा॥

दामोदरपंथ ने आपही सरकार के रूबरू हीरे और संखिये का खरीद कियाजाना बयान किया गवर्नमेण्ट ने इस प्रयोजन से तहक़ीक़ात की थी जो अपराध गायकवाड़ के जिम्मे लगाये गयेथे जो वह साबित होगयेतोनिस्संदेहगायकवाड़के लिये बदनामी और बैर खराबी का सबब है॥

दफ़ा ४२—गवर्नमेण्ट इण्डिया अनुचित समझती है कि उनतीनों कमीशनके मेम्बरोंको मुफस्सिलवजह जिन्होंने अलग२ रिपोर्टलिखी है कि गायकवारपर अपराध साबित नहीं है उनकीतकरीर की विवेचना कीजावे॥

दफ़ा ४३—श्रीमान् महाराजा सेंधिया कहते हैं कि उन गवाहोंमें से जिनकासम्बन्ध इसमुकद्दमे में नहीं है केवलतीन गवाह रावजीनरसू और दमोदरपन्थ ऊपर कहे हुये जुर्मोंको गवाही देते हैं और उनके बयान में कुछ और अन्तर है शायद महाराजा साहब अमीनाकी गवाहीको भूलगये जैसे किपहिले बयान कियागया है शहादत अमीनाकी जरूरी है और उसकी गवाही से बड़ाजुर्म साबितहोता है गवर्नमेण्ट इण्डियाको रावजीनरसू और दमोदरपन्थकी गवाहीमें कुछ भी अन्तर मालूम नहीं होता न जानिये महाराजा साहब किसबयान से अन्तर जानतेहैं खासअमरमें इनकाबयान एक सा है यहबात केवलतीनयाचार गवाहएकखास जुर्मपर गवाहीदेतेहैं और गवाहीके मवाक़ोंमें साबित कदमरहते हैं तो यह प्रयोजन नहीं है कि चूंकि गवाहकमहैं इसलिये उनकी गवाहीनिश्चय माननेके योग्य नहीं है॥

दफ़ा ४४—फिर महाराजा कहते हैं कि गवाही पेडरू और अब्दुल्लाकी अपराधी के मतलबका मुफीद है गवर्नमेण्ट इण्डिया के विचारसे अब्दुल्लाकी गवाही गायकवारके मुफीद नहीं है और पेडरू गवाह को रावजीने मुजरिम कियाथा पर उसने इसकाररवाई से बिल्कुल इन्कारकिया यहकेवल रावजीकी एकबातको खण्डन करताहै अर्थात् अपनी शिरकत उसकेसाथ कुछबयाननहीं करताकि जिससे गायकवार मालूम हो और न उसकीगवाही ऐसीहै कि जोगायकवारकीतरीयत का सबबहो और इसगवाही को रावजी तसदीक करता है कि गायकवारके नौकरोंकोहम्मोंके नौकरोंकेयहां आते जाते थे वह इसबातको मानताहै कि गायकवारने मुझेरुपये दिये

थे और यहरुपये कुछ त्योहार या बिवाहमें नहींदिये केवल इसीलियेदिये कि हमेशा गायकवारके यहां आवेंजावें परन्तु इसने सालिमके कहनेको न माना॥

दफ़ा ४५—फिर महाराणा कहते हैं कि सालिम और यशवन्तराव और कंवल कर गजावा और नूरुद्दीन बौहरा और हकीम जो अदालत में पेशनहीं कियेगये यह गायकवार के मुफीदमतलब है परन्तु हालइसका यहहै किनूरुद्दीन बौहरा एकअत्तार है दमोदरपन्थ कहताहै कि संखिया जो कारनैल फियरसाहब को दीगई वह इसीकी दूकान से मंगाईगई थी और नूरुद्दीनकी बेकसूरीका कोई लेखनहीहै जोवह बुलाया भी जाता तो यातो वहकहता कि मंगाईगई है या इनकाःरकरता कि नहींमंगाईगई परन्तु जैसेपहिले बयानहोचुकाहै कि ऐसे इज़हारात दमोदरपन्थ पर गवर्न्मेण्टको कुछ लिहाज नहींहै और यहदमोरपन्थके बयानमें कि उसनेनूरुद्दीन की दूकानसे संखियामोललो कहीं निशानभी नहींहै क्योंकि सिदाकतनहीं की इसलिये नूरुद्दीन नहीं बुलायागया उसके नबुलाये जानेसे केवल इतनीबात हुई कि नूरुद्दीनकी दूकान से संखियेका मोललिया जाना सबित नहुआ किन्तु नूरुद्दीन बौहरेकी अदालतमें हाज़िरहोने से कुछ मुकद्दमे का असर न पहुंचा॥

दफ़ा ४६—और गवाहोंके निस्बत दूसरी बातहै इस से पहिले लिखागयाहै किसालिम और यशवन्तराव गायकवार की ओरसे अदालत में नहीं आये जाहिरी सबयह है कि गायकवारने इनको इसलिये पेशनहीं किया कि वहसबहाल जानतेहैं ऐसानहो कि ठीक२ मुक़द्दमेको बयान करदें और इसीखयालसे कंवलकर गजाब और हकीम भी नहीं बुलाये गयेवह सब लोगविषकीतय्यारी में प्रवृत्तथे जोहाल दामोदर पंथको मालूमथा तो निश्चयकरके वैसाही हाल वह लोग भी जानतेहोंगे॥

जो दामोदरपंथने झूठबयानकियाथा तो ऐसा होसक्ताथा कि गायकवार इन लोगोंको बुलवाते और साफ २ इनसे गवाही दिलवाकर दामोदरपंथकी गवाहीको खण्डनकरते गायकवार को खूबमालूम होगा कि यह गवाह उसके कलामको खण्डन करसक्ते हैं या नहीं ॥

दफ़ा ४७—महाराजा सेंधियाको यहबात दिक्कततलब मालूमहुई कि थोड़ा २ विषक्यों दियागया जिसमेंइतना जमाना बीता इसके लियेभी वैसाही बयान होसक्ताहै जैसा कि और बातोंकेलिये बयानहुवा यहतो मालूमहुवा कि थोड़ा २ विष दिया गया और नवम्बर की ९ तारीखको अधिक दिया गया और सिवायइसके कि रावजीको भयथा कि जोएकही बेरविष दियाजावेगा तोतुरन्तही उसकाअसर होजावेगा और परदा खुलजावेगा और थोड़ा २ देनेसे बहुत दिनोंमें असरहोगा ॥

विषदिये जानेका मूल तहकीकनहींहुवा क़रीनेसे समझा जाताहै कि छः सात सप्ताह पहिले से विष देना प्रारम्भहुवा जबठीक अवसर मिलीतब विषदिया रावजीके बयानसे मालूम हुवा कि दीमरतबा उसकोमौका नहीं मिला और इसकाम केलिये उसकोबहुत होशियार रहनापड़ा ॥

दफ़ा ४८—फिर महाराजा लिखतेहैं कि इसकासुबूत कुछ नहींहै कि तांबा, संखिया, और हीरा मोल लियागयाथा न कोईकागज दस्तखती महाराजा साहबका इसविषय मेंहै ॥

दफ़ा ४९—और ४५—मेंबयानहोचुकाहै कि ऐसीखरीदारी कासुबूत कानाफ़जूलहै और कागजका जवाबयहहै कि यह बात असम्भवितहैकि ऐसाकागज महाराजाने लिखाहो ॥

गवर्न्मेण्ट इण्डियाको किसीप्रकारसे ऐसेलेखके कागजका निश्चयनहींहै ॥

दफ़ा ४९—श्रीमान् महाराजाजयपुर और सरदिनकरावके गवाहीके लियेउक्त महाराजासेंधियाके समाननहैं और जोउनके कुछजियादह उज्रहैं वहयहहैं ॥

दफ़ा ५०—श्रीमान् महाराजाजयपुरविचारते हैं कि रावजी ने बयानकिया कि मुझको और नरसूको गायकवारने एक २ लाखरुपयेके देनेकावायदाकिया और नरसूवर्णनकरता है कि बड़ेभारी इनआमका वादा था रुपये की संख्या बयान नहीं करता गवर्न्नमेएट इण्डिया इसइखतिलाफके लियेनिश्चयकरती है कि रावजी और नरसूके बयानमें कुछसाजिश नथी ॥

मुख्ययह बातहै कि पारितोषक कीतो प्रतिज्ञाकी गईथी और यहदोनोंकी गवाहीसे साबितहै शायदइनआम इनदोनों के मुखतलिफ सुनादिये गयेहोंया उनदोनोंकी समझमेंअन्तर हो क्योंकि सालिम और यशवन्तराव भी इसबातमें संयुक्तथे ऐसानहीं होसक्ता कि रावजी और नरसू की साजिश होगई होतीतो नरसूभी एकलाख रुपयेके इनआमका इकरारकरता न कि केवलपारितोषकका इकरार॥

दफ़ा ५१—श्रीयुत महाराजाजयपुरठीकतौरसेजाहिरकरते हैं कि यादद़ाश्तें दामोदरपन्थके दफ़तर से आईं उसमें कुछ रुपये का जिक्र नहींहै जोहीरे या सखियेके मोललेनेके लिये

दियागयाहो ॥

इस रक़ममें ब्रह्मभोज और दूसरे पुण्यके खर्च लिखेहैं और काफ़ीगवाही इसबातकीहै कि रुपयाऐसेही कामोंमेंखर्चहुवा परन्तु गवर्न्नमेएट इण्डिया यह नहीं कहसक्ती कि महाराजा की राय ऐसी क्यों है क्योंकि किताब से वरक निकाले गये और फाड़ेगयेइससे मालूम होताहै किकिसीवस्तुका छिपाना मंजूर था जैसा कि (टी) अक्षर के कागज से साबित होता है किताबकेवरकोंके बदलेजानेमें कुछसंदेहनहीं पायाजाता और नकोई गवाहीउसकी तरदीदमें है जिसवाक्यमें लिखालिखा हैकि दिसम्बर सन् १८७४ ई० में तीनहजार छः सौ तीसरुपये तेरह आनेछः पाई दिया गया मुसम्मी मजकूर बुलाया गया और पूछने पर उसनेकहा किमुझको कभी ऐसा रुपया नहीं

मिलायह यक्कुएक कागजजिसपरकि [बाई] अक्षरका चिह्न है पेशकरता है और उसको इसे रुपयेपानेका इकबालकरता है कियह रुपयापूर्व्वोक्त कागजके लिखेहुये के अनुकूल नाना-जीवतिल गायकवार के जवाहर खानेके दारोगाको दियागया और पुण्यके सीगेमें लिखागया किभेद नखुले श्री मान्महा-राजा जयपुरके विचारसे किताबका लेखठीक है और दामो-दरपंथ का बयान गलत परन्तु दरबारै तसदीक बयानदामो-दरपंथके दफ़ा ३८ में लिखा गया है ॥

दफ़ा ५२—श्रीयुतमहाराजा जयपुर कहतेहैं कियहबात प्रसिद्ध थी कि करनैलफियर साहबको विषदिया गयाउस में तांबाभी था परन्तु जबउसके जुजअलग किये गयेतोतांबेका कहीं निशाननथा गवाहीमें तांबेका जिक्रन था भावपूनाकर बाजारी खबरें सुनकर करनैल फियरसाहब से कहताथा कि ऐसा २ विषआपको दियागया ॥

दफ़ा ५३—गवर्नमेण्टइण्डिया नहींसमझती कि श्री मान् महाराजा जयपुरने क्याविचार के यह लिखा कि कोई सूरत सालिस और यशवन्तसे पूछनेकीनथी उन्होंने पुलिसके सम्मुख बयान किया या नहीं जो गायकवारके वकील वा कमीशनके मेम्बरभी कुछ हाल पूछना चाहते तो पुलिस के अफ्सर और दूसरे मनुष्यभी उनकी बातों का उत्तर देते ॥

दफ़ा ५४—सरदिनकरराव तारीखों की तफावत परएत-राज करते हैं और रावजी और दामोदरपंथ के इजहारों का मुक़ाबिला करते हैं और कहते हैं कि इन्होंने खिलाफ वर्णन कियां परन्तु गवर्नमेण्ट इण्डियाके विचार से किसीमें अन्तर नहीं पाया गया ॥

दफ़ा ५५—परिणाम यह हैकि हरचन्दश्रीमान् महाराजा सेंधिया और सरदिनकरराव और इनदोनोंसे श्रीयुतमहारा-जा जयपुर कीराय कामिल है परन्तु गवर्नमेण्टइण्डिया की

रायतीनों यूरोपियन मेम्बरों के अनुकूल है यह रिपोर्ट अति उत्तम और नीति पूर्व्वक लिखीगई है और निश्चय मानने के योग्य है इसमें लिखा है कि यह गवाही ऐसीनहीं है कि जिसका निश्चयन हो और कुछ इसका खण्डननहीं हुवा और गायकवारके कौंसली नेभी किसी गायकवार के एजण्ट को नहीं बुलाया कि वह गायकवारकी निर्दोषता साबितकरें और आखरवक्त तक कहा कि हमारा कामनहीं है कि हम मुकद्दमे को तूल दें परन्तु गवर्न्मेण्ट इण्डिया को इसबारेमें और खयाल है उसके निश्चय करनेकीखास वजहयहथी कि गायकवारको अपनी बरीयत के हासिलकरनेका मौकादियाजावे गवर्न्मेण्टइण्डिया के विचारमें उचितथा कि कौंसली गायकवारके मुकद्दमेको कायमकरते और जोगायकवारके प्रतिकूलथी उसको रद्दकरते परन्तु क़रीनेसे मालूमहोताहै कि उनकी सामर्थ्यसे होनाइसकाबाहर थानहींतो जरूर वह पैरवीकरते गायकवारके कौंसिलने यह वर्णन किया परन्तु तकरीर नहीं की कि शायद दामोदरपंथ और भावपूनाकर इसजहरखूरानी केबानीमुबानीं हो इसबात कोबड़ी सावधानी से एकसम्मत कमीशन के तीनोंमेम्बरोंने कईबातोंसे खण्डन किया है॥

दफ़ा ५६—इसलिये गवर्न्मेण्ट इण्डिया बड़े अफ़सोस और लाचार होकर अपनीमज़बूतराय बयानकरती है कि वह जुर्म जो तहक़ीक़ातके पहिले गायकवारपर लगायेगयेथे तहक़ीक़ातसे साबितहुये और वास्तवमें मल्हररावने रावजी और नरसूको विष देनेकेलिये बहकाय—गवर्नरजनरलहिन्द बइजलास कौंसिल॥

दस्तखत—सी—यू—ऐचीसनसाहब
सीक्रेटरी गवर्न्मेण्टहिन्द—मुक़ामशमला
फारनडिपार्टमेण्ट—पोलीटीकल

अंगरेज़ीमेम्बरोंकी रिपोर्ट ॥

१—सबसेपहिले उन तारीखों का बयान करना पसन्दीदा मालूम होता है जिन से इस मुकद्दमे के कई सम्बन्धी हाल मालुम हुये तथाच वहतारीखें नीचे लिखी हैं ॥

करनैलफियरसाहबने १८—मार्च सन् १८७३ ई०में बड़ौदेकी रेजीडन्सीका कामशुरूकियाथा जो बद्इन्तिजामीकी शिकायतें करनैलफियरसाहब रेजीडन्टमहाराजागायकवार की गवर्न्मेन्टमें कीथीं उनको तहकीकातके वास्ते नवम्बर के प्रारम्भ से २४ दिसम्बर सन् १८७३ ई० तक कमीशन ने इजलास किया ॥

महाराजागायकवार लक्ष्मीबाईसे अपना विवाह करनेके वास्ते करनैलफियरसाहबके समेत २—एप्रिल सन् १८७४ को नौसारी को गये और १६—मईको लौटआये ७—मईको विवाह हुवाथा १६—अक्टूबर सन् १८७४ ई० को लक्ष्मीबाईसे एकपुत्र उत्पन्नहुआ ॥

जोखरीता महाराजागायकवारने श्रीमान्वाइसरायबहादुरके नाम करनैलफियरसाहब की तब्दीलीके लिये भेजाथा दूसरी नवम्बर सन् १८७४ ई०का लिखाहुवा था ॥

जो खरीताश्रीयुत वैसरायबहादुरने महाराजागायकवार के नाम जिसमें इत्तिला तब्दीली करनैलफियर साहब और तकर्ररीकरनैलसरल्यूइसपीली साहब के सी—एस—आई—के भेजाथावह २५नवम्बर सन्१८७४ कालिखा हुवाथा ॥

दफ़ा २——जोगवाही मिसलके साथहै उससेहमारेविचारसे यहबात साबित है कि९—नवम्बर सन् १८७४ ई०को करनैलफियर साहबको विषदेनेका उद्योगइस भांति किया गयाथा कि सफेद संखिया और हीरे का चूर्ण उस शर्बत के गिलास में जिसको करनैल फियर साहब हमेशा प्रभात को हवाखाने के उपरान्त पियाकरते थे मिलादिया गया करनैल फियर साहब उसदिन सुबह को सातबजे पांच मिनट-

पर लौटआये और रावजी चपड़ासियों का हवालदार उनसे मिला और उसने साहब को सलाम किया फिर करनैलफि॰ यरसाहब उसकमरे मेंगये जिसमें उनका दफ्तर रहता था और जहांवह कपड़े आदि पहिना करते थे यह एक छोटा सामकानहै और रेजीडन्सीके खासमकानों के निकटहै जबक- रनैल साहब उसकमरेके भीतरगये तो उन्होंने अपने नियम के अनुसार शर्बतका गिलासहाथ धोनेको तिपाई पर रक्खा हुआपाया और दोयातीनघूंट पीकरउन्होंने गिलासकोफिर रखदिया फिरवह लिखनेकेलिये बैठ गये और बोसमिनट या आधघण्टेमें एकहीबेर जीमतलाने लगाकरनैल साहब ने इस विचारसे कियह शर्बतमेरे नामुआफिकहै औरइसअन्देशे से भीकि ऐसानहोजोऔरजियादा पीनेकोउनकाजीचाहे शर्बत दफ्तरके कमरेसे बाहर बरामदेसे फेंक दिया बहुतसा शर्बत बरामदेमें रहाऔर थोड़ासा बहकर बरामदेके बाहर पहुंच गयाजब करनैलफियर साहबने फिरउसगिलासको हाथधोने कीतिपाई पररक्खा देखातोउनका खयालउस तलछटकेरंग कीतरफ गयाजो गिलासमें बाकीरह गयाथा और जिसमें से थोड़ीसी गिलास केऊपर अबतक बहरहीथी करनैल साहब बयानकरतेहैं कियहतलछट स्याहरंग कीसी थी औरजबउ- न्होंनेगिलास कोउठाकर देखातो उनकेदिलमें यह विचार उपजा किमुझको विषदिया गया उस समय अनुमान साढ़े सातबजगयेथे करनैल साहबनेशीघ्रही डाक्टर सीवर्ड साहब केनाम जोरेजीडन्सीके सरजनथे एकरुक्का इस विषयकालि- खाकिजल्दी मेरेपास आइये तथाच डाक्टरसाहब आध घण्टे वापौन घण्टेमेंया अनुमान आठबजे केकरनैल फियरसाहबके मकान परपहुंचे करनैल फियरसाहबने वह गिलास जिसमें कुछशर्बत बाकीथा डाक्टरसाहब कोदेदियायहशर्बत करनैल फियरसाहबके बयानकेअनुसार चायपीनेकेडेढ़यादोचमचों के बराबरथा।औरडाक्टरसीवर्डसाहबकेवर्णनकेअनुकूलमेवाआदि

खानेके सम्बंधसे कुछ कमथा जब डाक्टर सीवर्ड साहब ने गि-
लासको हिलाया और रोशिनीमें उसकोदेखा तो उनको त-
लछटमें कुछ झिल्लीसी मालूमहुई और जब कि उन्होंने उसमें
थोड़ासा जलमिलाया तो उनको तलछटके चमकतेहुये अणु-
ओंपर रंगत की झलक दीखी करनैलसाहब ने अपनी त-
बीयतकीकैफियत डाक्टरसीवर्डसाहबकेरूबरूबयानकीऔर
डाक्टरसीवर्डसाहब गिलासकोबाक़ीशर्बतकेसमेतअपनेघरको
इसबातकी तहक़ीक़ातके करनेकेलिये लेगयेकिउसशर्बतमेंकौन
वस्तुमिलीहुईथीकरनैलफियरसाहबनेवर्णनकियाहैकिजबमैंने
शर्बत चक्खाथातबसेउससमय तककि वहडाक्टरसीवर्डसा-
हबको दिया कोई मनुष्यभी उसकेपास तकनगया जोकैफिय-
त करनैलफियरसाहबको अपनीतबीयतकी मालूमहुईथी उस
को एक चिट्ठीमें लिखकरउसीदिन ग्यारहबजे डाक्टरसीवर्ड
साहबकेपास भेजदिया जो नीचेसंक्षेपसे लिखाजाताहै॥

यद्यपिमैंनेउसशर्बतकेजो गिलासमेंथाकेवलदो या तीनघूंट
पियेथेतौभी अनुमान आधघण्टेके जैसाकिमैंने आपसे बयान
कियाथा मुझको खिलाफ मामूलमेदेमें कुछशिकायत मालूम
हुई और उसकेसाथ सिरघूमनेलगा और दृष्टिमेंचक्करमालूम
हुवा जिसकेसबबसे ख़यालों मेंफ़ तूरपैदाहुवा और मुंहमेंभी
एक नागवारधातका स्वादमालूमहोनेलगा और मुंहमेंथूक
आनेलगी पहिलेकईदिनसे मेरी ऐसीदशा नहींहुईथी और
मैंनेउसको कुछबुखारसे (जोअब बिल्कुल जातारहाथा) और
कुछ इसविचारसे मन्सूबकिया कि जिनफलोंका हररोज मेरे
लिये शर्बत बनायाजाताथा वहतांबेनथे॥

करनैलफियरसाहबने वर्णनकियाहै कि उसधातकातांबेका
सास्वादथा और वहबयान करतेहैं कि यहस्वाद शर्बतके पीने
से जोप्यालेकेऊपर बिल्कुलसाफथा और जिसकाजायका कुछ
खराबनथा अनुमानपौनघण्टे के उपरान्त मुझकोमालूमहुवा॥

दफ़ा ३—डाक्टरसीवर्डसाहबनेउनउपायोंको बयानकियाहै जो प्यालेकी तलछटके जुलतहकीक्र करने के लिये किये गये अर्थात् जब डाक्टरसीवर्डसाहबने अनुमान एकतिहाई हिस्से तलछटलेकर जोतीलमें एकदोग्रेनकेबराबरथा और जिसको रंगतरजरदीमिलीहुई भूरीथी उसमेंथोड़ासा कोयलामिलाया और उसको एक नलीके अन्दररखकर असरटलेमट पर गर्म किया जिसकायह नतीजाहुवाकि नलीपर एकधातकासाघेरा बनगया और जब डाक्टरसाहबने उसनलीको फिरगर्म किया तो उन्होंने उसीहल्केके ऊपर और नीचे कुछ सफेदसी वस्तु देखीजिसमें खुर्दबीनसेदेखकर अष्टकोणबिल्लौरकेसेरे जोमालूम हुये यहगवाहबयानकरताहै किधातकेहल्के और हश्तपहलु बिल्लौरके जर्रोंसे सरासर संखियेकाहोना पायाजाताहै और वह यहबयान करता है कि किसीविषसे यहसबरूपपैदानहीं होसक्ते तलछटमें छल्लेका उठनाभी उसीजहरकी निशानीहै॥

बाक़ी तलछटको जिसकाडाक्टरसीवर्डसाहबनेइम्तिहान नहीं कियाथा डाक्टरसाहबने१०नवम्बरकोडाक्टरग्रेसाहबको मीकलऐनैलायजर गवर्नमेण्ट बम्बईकेपास भेजदिया और सो-खनेवाले कागजमें छानकर और उसकोगरमीदेकर चूरेको रद्दिश करदिया॥

दफा ४—कोयलेके द्वारा इम्तिहान् करनेके थोड़े दिनके उपरान्त जैसाकि पहिले जिक्र हुवा डाक्टरसीवर्डसाहबने उस वस्तुके जरियेसे जो नलीमें रहगई थी एकबेर और इम्तिहान किया अर्थात् उन्होंने उसकोनलीमेंसे निकालकर कुछ पानी परडालदिया जबकि भारीजर्रे नीचे बैठगये तो साहबनेबहुत जल्दउनजर्रोंको बाहरफेंकदिया जो ऊपरतैरतेथे डाक्टरसाहब ने कईदफे यहीक्रियाकी और फिर तलछटको एकजकरके शीशे के कई टुकड़ोंपररक्खा जिसको उन्होंने कमीशन के रूबरू भी पेशकिया इनशीशोंको उन्होंनेएक दूरबीनकेनीचेरक्खातो मा लूमहुवाकितलछट खासकरचमकदार बिल्लोरी रवोंसे संयुक्त

थी जबउन्होंने एक साफ शीशे का टुकड़ा उनटुकड़ों मेंसे जिन पर तलछट रक्खीहुईथी एक शीशेपररक्खातोमालूमहुवा कि वह खुरचीहुईथीतथाच उन्होंनेयही तजुर्बाकमीशनके रूबरू किया जबसाफ शीशेकाटुकड़ा उसशीशेसे रगड़ागया जिस पर तलछटथी तो तुरन्त वहकाटगया डाक्टरसीवर्डसाहब बयानकरते हैं कि मैंने तांबे के वास्ते इम्तिहान नहीं किया था किन्तु केवल संखियाके प्रतीतकरनेके प्रयोजनसे कियाथाऔर तलछट का जहरीलाहिस्सा संखियाथा कुछहीरे का चूर्णनथा जो तलछटप्यालेके अन्दरसे निकलाथा उसको डाक्टरसाहबने तौला नहीं था॥

दफा ५—जो चूरहडाक्टरसीवर्डसाहबने १० नवम्बरको डाक्टरग्रे साहबकेपास भेजाथाउसकीपरीक्षाके परिणामके बयान करनेसे पहिले उनदोनोंपुड़ियोंकाभी जिक्रकरना जरूरहै जो डाक्टरसाहबकेपास भेजी गईथीं उनमेंसे पहिलीपुड़ियामें उस बरामदेकेफर्शका खुचाहुवा चूनाहैजिसमें करनैलसाहबनेशर्बतको फेंकाथा करनैलफियरसाहब की गवाही और उनकी डाक्टरग्रे साहब केनामकी लिखीहुई चिट्ठी सेप्रकट होताहै कि डाक्टर ग्रे साहब की रायके अनुसार जिसका इजहारउन्होंने डाक्टरसीवर्ड साहबसे औरडाक्टरसीवर्डसाहबने करनैल साहबसे कियाथा करनैल फियर साहबने १५ नम्बरके प्रभात को अपनी मौजूदगीमें एकचपड़ासीसे जितनीतलछट उस बरामदेके फर्शपर जिसकी जहां गिलास का शर्बतगिरा था उस सबको खुरचवाया और उसकीएक पुड़िया बांधकर करनैल फियरसाहब ने बड़ी एहतियात के साथ १६ नवम्बरको डाक्टर ग्रे साहबके पासभेजदी दूसरीपुड़िया २५ दिसंबरकोमिस्टरसूटरसाहब पुलिसके कमिश्नरकी मौजूदगीमें रावजीकी पेटी में मिली जिसको मिस्टर सूटरसाहब अपनेसाथ बम्बई को लेगये और ३० दिसम्बरको डाक्टरग्रे साहब को देदिया॥

दफा ६—डाक्टरग्रे साहब कैमीकल अग्जैमिनर गवर्नमेण्टबम्बईकी गवाहीका संक्षेप नीचेलिखाताहै डाक्टरसाहब के पास तीनों पुड़ियां जिनका ऊपर वर्णन हुवा ऐसी सूरत और ऐसीरीतिसे पहुंचींजिससे यहखयालनहीं होताकिमार्गमेंउनमें कुछछल कियागया ॥

पहिलीपुड़िया जोडाक्टर सीवर्डसाहबने उनकेपासभेजी थी उसमेंडेढ़ग्रीनचूरहभूरे रंगकासाथाजिसमेंकुछ २ चमकतेहुये ज़र्रेथेडाक्टर साहबने उसमेंसे थोड़ेसे चूरेको गरमी के द्वारा साफकिया और जबखुर्दबीनसे उसकोदेखातो अष्टकोण बिल्लौरके सेज़र्रे मालूमहुये डाक्टरसाहबने उनज़र्रों को जलमें जोशकिया और उसमेंसे थोड़ासाजल लेकरचांदीका तेजाब ऐमोनाइडैत उसमेंमिलाया तोउसके सबबसे एक पीलेरंग कीवस्तुएकत्र होगई ॥

थोड़ेसेजलमें साहबनेतांबेका तेजाब ऐमोनियो सलफटमिलायातो वहजलकर एकज़र्दीमाइल सब्ज़वस्तु जमगईबाकी केजोशकिये हुयेजलमें ग्रे साहबने तेज़ाब मारीअटेक ऐसड़ मिलाकर फिरउसको जोश दिया और गन्धक की हाईड़रोजिनग्लसको उसमेंछोड़ा तोवह जमकर चमकती हुई ज़र्द-रंगकी वस्तुहोगई—फिरडाक्टर साहबने उनतीनोंजमी हुईवस्तुओंमें नौसादर मिलादियां और वहसबगल गईं परन्तु तीसरीजमीहुई वस्तु के एक हिस्से को रहने दिया—उसको डाक्टर साहबने बहुततेजमारी एटक एसडकेसाथ मिलाया और वह नहींगली ॥

इसपरिक्षासे डाक्टरसाहबको इस बात का निश्चय होगया किसफैद ज़र्रे जो इसक्रियासे दृष्टिपड़ेथे वह सफैद संखिया के ज़र्रे थे ॥

जोचूर्णडाक्टर सीवर्डसाहबने डाक्टरग्रे साहबके पास भेजा थाउसकी और प्रकारभी साहबने परीक्षाकी अर्थात् उन्होंने

थोड़ासा चूर्णजल और मारीएटकाएसड के साथ जो मिश्रित किया और धोयाकरते टोटुकड़े साफ तांबेके उसमें डाल दिये कई पलके पश्चात् तांबेके पत्तरपर भूरेरंगके धात केसे जरे दृकहुं होगये डाक्टरसाहबने इन तांबेकेपत्तरोंमें से एकटुकड़ेकोसुखाकर एकनलीमें उसको गर्मकिया जिसकेतरफों परअष्टकोणजरें बिल्लौरके दृकहु होगये इनजरोंकीभी वहीक्रियाकीजो पहिलेवर्णन हुवा और वहभी वैसेही होगये॥

दफा ७—जोचूर्ण डाक्टरसीवर्डसाहबने डाक्टरग्रे साहबके पास भेजाथा उसके एकभागमें साहबने कोयला मिलाकर भी धातकेजरों कोअलगकिया और जिसनलीमें उन्होंने यह इम्तिहान किया उसको उसघेरेके समेतजो उसपर बनगया था और जिसकोवह संखिये केहोनेकी अलामत बयानकरते हैं कमीशनके सम्मुखपेशकिया डाक्टरसाहबने इसहलक़को गरमी नहींदी जिसे वह सफेदसंखिया होजाता॥

दफा ८—जो चमकते हुये जरें इस चूर्ण में थे जो डाक्टर सीवर्ड साहब के पास से आया था उनको डाक्टरग्रे साहब बयान करते हैं कि ऊपर कहे हुये तजुर्वों का उन पर कुछ असर नहीं हुवा और उन्होंने एक खुर्दबीन से उनको देखा और पहिली दफायह बयान किया कि शायद वह शीशे का चूर्ण है जबकि १२ नवम्बर को उन्होंनेसोखनेवाले कागज के टुकड़े पर उनको देखा तो खाली आंखसे देख कर उन्होंने यहखयाल किया कि इतनी चमकके सबबसेवहहीरे केजरेथे डाक्टर साहबने सम्पूर्ण तेजाबों और खारोंमें उनकेगलानेके लियेकोशिश की परवेहनहीं गलेऔर फिरयहसमझेकि वह हीरेका चूर्णथा यहतहक़ीक़ातउन्होंनेअपनी तरफसे कीक्योंकि १३ नवम्बरको उनकेपास इस मजमून की कोई इत्तिला नहींआई थी कि उसचूरे में शायदहीरेकाचूर्ण भी होगा॥

दफ़ा—९—दूसरीपुड़िया जोकरनैल फियर साहबने (आई) नम्बरके कागज के साथ भेजी थी वह १७—नवम्बर को डा-

क्टर ग्रेसाहबके पास पहुंची उसमेंसातग्रेन सहोथी परन्तुजब उन्होंरीतों से उसकोपरीक्षा को जो पहिलीपुड़िया के निसबत अमल किया था तो उसमें संखिया और रेत और हीरे का चूर्णसाबित हुआ जो पुड़िआडाक्टर सीवर्ड साहबने भेजी उसमेंडाक्टर ग्रेसाहब को एकग्रेन और जो करनैल साहब ने भेजीथी उसमेंसवाग्रेन कुलसवादो ग्रेन संखिया निकाला डाक्टर ग्रे साहब बयान करतेहैं कि जो संखिये का असरहो जावेतो ढाईग्रेन में एक तन्दुरुस्त मनुष्य मरसक्ताहै और बहुत सूरतों में उसकाआधे घण्टेसे लेकर एक घण्टे तक असर होता है बड़ी मोतबिर सनद पर यह बात मालूम होती है कि मनुष्यको देहपर हीरेके चूरेका कोईमोहलकअसर नहीं होता है डाक्टर ग्रे साहबका विचार हैकितलछट में जोएक भिल्लीसीपैदाहुई जिसकाजिक्र डाक्टरसीवर्डसाहबने किया है वहअवश्य करकेगिलासमें संखियेकेहोनेका नतीजाहै॥

दफ़ा १०—तीसरीपुड़ियाजोमिस्टरसूटरसाहबने३०—दिसम्बर सन् १८७४ई० को भेजी थी उसमें डाक्टर ग्रेसाहबको उसीप्रकार और स्वरूप कीसात ग्रेन संखिया मिली थी जो बाकी दोपुड़ियों में पाईगई थी यहबात साहबमौसूफनेदूरबीन के द्वाराअवलोकन करकेमालूम की थी॥

दफ़ा ११—जोमनुष्य संखियेकेविषसेबीमार होतेहैंउनके मुख में धातकीवस्तुओं का स्वाद होना एक ऐसीबात है जिसका तर्जुबाखास डाक्टरसाहब को एकदफा होचुका है और जिस का हमेशा उन मुक़द्दमों में हवाला दिया जाता है जो कैमीकलबहैसियत ऐनेलाय के उनके पास भेजेजाते हैं और डाक्टरसाहब ने उसकोइसवास्ते खायाहैमालूमकर कि उस में कुछ स्वादहै या नहीं परन्तु उसको बेमजापाया डाक्टरग्रे साहब ने चूर्णमें तांबेके निश्चय करने केवास्ते कोशिशकी थी परन्तुउसका कुछचिह्न मालूमनहुआ॥

दफ़ा १२—डाक्टरग्रे साहब कहते हैं किसंखियेके खाने की

नियानियां सिरघूमने और जी मतलाने और बमन और दस्त और मेदे में जलन होती है और वह यह भी कहते हैं कि जो बराबर थोड़ा२ संखिया खाया जावे तो नेत्रों से पानी जारी होजाता है और जो संखिया जखम से लगाया जावे तो उस रोगी को मारने का हेतु होजाता है वह यह भी बिचारते हैं कि करनैल साहबने थोड़ा२ संखिया पिया होगा परन्तु यह भी जी मतलाने के लिये काफी था और जो मतलाने से मुखमें पानी और थूक अधिक आने लगती है॥

दफा १३—मुकद्दमे के इस हिस्से में यह सम्बन्धी बात भी जिक्र करने के योग्य है कि करनैल फियर साहबने अपनी गवाही में कहा है कि वह सितम्बर सन् १८७४ ई० से भी अलील थे अर्थात् उनको जुकाम था और उनके माथे पर एक फोड़ा था जिसका इलाज डाक्टर सीवर्ड साहब करते थे डाक्टर साहब उस फोड़े पर प्लास्टर लगाते थे और बाकी प्लास्टर एक मेज पर उनके दफ्तर के कमरे में रक्खा रहता था सो आपही करनैल फियर साहब ने जाब क्लौडियन इस रीति से फोड़े में लगाया कि जिस फाहे से उन्होंने उसको लगाया था उसके छुटाने में बड़ी मुश्किल हुई एक दिन प्रभात को आठ या ९ बजे के बीच में यह बात हुई उस समय करनैल साहब अपने दफ्तर में हाथ धोने की तिपाई के निकट खड़े थे और वहां से उन चपड़ासियों पर नजर पड़ी जो उस कमरे के बरामदे में खड़े हुये थे प्लास्टर लगाने से पहिले और उसके पीछे भी करनैल साहब को कुछ ज्वर था और उनका शिर भारी था और उनके नेत्रों से बहुत सा पानी जारी था इससे उनको संदेह हुवा कि अक्टूबर के प्रारम्भ से उनका शरबत उचित प्रकार से तय्यार नहीं किया जाता॥

९—नवम्बर को उन्होंने एक या दो घूंट शरबत के पिये और उनको अपनी तबीअत नामुआफिक मालूम हुई और उनका सिर भारी होगया और ऊंघें मालूम होने लगीं अन्त को उन की तबीअत की वही कैफियत होगई जो अक्टूबर के प्रारम्भ में

हुईथी ७ नवम्बरकोभी उन्होंनेथोड़ासा शरबतपिया श्रौरवह यहबातजानतेथे किउसदिनभी उनकी तबीयत की वहीदशा थीजैसी कि पहिलेदिनथी ८ नवम्बरको उन्होंने शरबत नहीं पिया क्योंकि अगलेदिन उनको अपनी तबीयत बहुत नासाज मालूम हुईथी ॥

जोअलामतें करनैलसाहबको सितम्बर श्रौर नवम्बरकेबीच मेंमालूमहुई थीउनकाजिक्र कईगवाहोंकी गवाहीकेलिहाज सेजोउस तहकीकातमें अखीरपर पेशकीगई थी कुछजरूरी मालूमहोगा ॥

दफ़ा १४—यहबात जाहिरहैकिजिसहालतमें सवादोग्रेन संखियाप्यालेकीतलछट श्रौर बरामदेकी खुरचनमें निकला थातोगिलासमें उतनेअनुमान सेजोमारडालनेकेलिये काफी हैबहुतजियादा संखिया डाला गयाहोगा क्योंकि यह नहीं होसक्ताकि जितना संखिया शरबत में मिलाहुवा था वहसब बरामदेमें मिलगयाहो श्रौर जोमिकदार संखिये की डाक्टर सीवर्डसाहबके तजुर्बेमें सफेदजर्रोंकी सूरतमें जाहर हुईथी वहनामालूम है ॥

दफ़ा १५—जबकियह बातसाबितहोगईकि वास्तवमेंकरनैल फियरसाहबके गिलसमें विषमिलाया गयातोअब यहबातगौर करनेके लायक है किजिस मनुष्यने विषदिया अब्दुल्लाखां जो पन्द्रह या सोलह वर्षसे करनैलफियरसाहब के पासनौकरथा शरबतके तय्यारकरनेका कामउसकेतअल्लुक था परन्तु उसकी गैरहाजिरीमें खानसामा उसको तय्यारकिया करताथातथाच ९नवम्बर सन् १८७४ ई० को अब्दुल्लानेयह शरबतखालिसअरक सेतय्यारकरके गिलास को दफ्तरके कमरेकेभीतर हाथधोने कीतिपाईपर रखदिया उस समय अनुमान साढ़े छः बजेप्रभातकेगोविन्दबाबू यलपा दफ्तरकेकमरे को साफकर रहेथे अब्दुल्लाउस दिनकेलिये अपने स्वामीके कपड़ोंको लेकरकमरे से चलागया गोविन्दबाबू रेजीडन्टीका नौकरबयान करता है

कि मैंने श्रीर यशपाने ९ नवम्बर सन् १८७४ ई० के भोरको जब कि करनैल फियरसाहब हवाखानेके लिये बाहर गयेथे दफ्तरके कमरेको साफकियाथा श्रीर मैंनेहीताजा जलउस बोतलके भीतरभरा जो हाथधोनेकी तिपाईपर रक्खीहुई थी श्रीर निश्चयहै वही बोतलथी जिसमेंसे डाक्टरसीवर्ड साहबने थोड़ासाजल उसगिलासमें डालाथा जिसमें तलछटथी श्रीर मैंनेयह जलउसमट्टीके बरतनमेंसे लियाथाजो मकानके बरामदेमें रक्खारहताथा श्रीर जिसमेंसे रेजीडन्सीके यूरोपियन बाशिन्दोंको जलदियाजाताथा श्रीर मैंकरनैलफियरसाहब के लौटनेके पहिले अनुमान सातबजेके कमरेसे चला आयावह बयानकरता है किमैंने अब्दुल्ला को कमरेके भीतर आतेहुये श्रीर अपने स्वामीके कपड़ोंको दुरुस्तकरतेहुये श्रीर बाहरजाते हुयेदेखा परन्तु मैंने उसको शरबतलाते हुये नहीं देखा लल्लुमण दरयावसिंह चपड़ासी कमरेसेबाहरथा गोविन्द बाबूने कहाहै कि अब्दुल्लाकेचले जानेके उपरान्त रावजीहवालदार करनैलफियरसाहब केदफ्तरके कामरेमेंआया श्रीर पांच या छःमिनटतक उसके भीतर ठहरारहा श्रीर इससमयान्तरमें उसनेकागजोंकीरद्दीकोकी उसटोकड़ीकोजोलिखनेकीमेजके निकटरक्खीहुईथी खालीकरके एकदूसरी टोकड़ी के अन्दर दियेजो उसकमरेके भीतररक्खीहुईथी जिसमेंहो-कागजभर करदफ्तरके कमरेमें जातेथे इस जगहपर इस बातका जिक्र करनाचाहिये श्रीर कमीशनके बाजेमेम्बरोंकोभीउससेजाती वाकफियतहै किदफ्तरका कमरालम्बाई चौड़ाई मेंछोटा है रलपामेंगोविन्दबाबू केइसबयानकी तसदीककी है किवहभी उसदिन भोरको दफ्तरके कमरेके सफाईमें प्रवृत्तथा परन्तु इससे अधिक उसनेश्रीर कुछहाल बयान नहींकिया लल्लुमण दरयाव सिंह वर्णन करता है कि मैंने ९—नवम्बर के प्रभात को करनैल फियर साहबके लिखने की मेज दुरुस्त की श्रीर उससे छुट्टि होकर मैंउसी स्थान पर बैठगया जो चपड़ा-

ासियोंके लिये नियतहै और मैंने और कोई बात नहीं देखी॥

दफ़ा १६—पसइस बातकेसंदेह करनेकाकोई हेतु मालूम नहीं होताकिइनमेंसे किसीमनुष्यने शर्बतमेंविषमिलायाहो और रावजी आपहीमुक़िरहै कि मैंनेविषमिलाया इसलिये हमारीरायमें इसविषयमें उसकीगवाहीको ठीकसमझना-चाहिये॥

दफ़ा१७—अबरावजी और २ गवाहों की गवाहीपर बत-फसीलगौरकरनाजरूरहैकियह बातनिश्चय होकि रावजीको करनैलफियरसाहबको विषदेनेकी तरग़ीबदीगई और जोयह बातठीकहै तोकिसमनुष्यने उसकोबहकाया॥

दफ़ा १८—रावजीकी गवाहीनीचे लिखीहै॥

एकयाभवावर्षका समयबीताकि करनैलफियर साहबनेसु-जको चपड़ासियोंका हवालदारनियतकियाथा औरमैंबड़ौदे कीछावनीके बाजारमें रहाकरता था सन् १८७३ ई० की कमीशनके इजलासके शुरूहोनेकेदो महीनेपहिले सालिमने बार २ मुझसेकहाथा किमैंमहाराजा गायकवारके मिलने केलियेचलो अन्तकोमैं राजीहोगया उससमय(अर्थात् कमी-शनकेइजलाससे दोमहीने पहिले)सालिम और यशवन्तराव केसाथजो मुजकोशहरमें अपनेमकानपर मिलाया महारा-जगायकवारके महलकोगया औरसालिमऔर यशवन्तरावकी मौजूदगीमें महाराजासाहबसे मुलाकातकी महाराजागाय-कवारने मुझसेकहाकि तुमहमको रेज़ीडन्सीकी खबरेंभेजाक-रो और जोतुमखबरेंभेजोगेतोहमतुमको मारितोपकरदेंगेऔर यहपूछाकि नरसू जोरेज़ीडन्सीके चपड़ासियोंका जमादार है तुम्हारीदोस्ती है यानहींतथाच रावजीने खबरोंका भेजना मंजूर करलिया और यह कहा कि नरसू मेरामित्र है और महाराजा साहब के कहने से उनसे यह इकरार करलिया किमैं नरसू को आपकी मुलाकात के लिये लाऊंगा दूसरे-दिनरावजीने नरसू से उस मुलाकात और बुलाने का ज़िक्र

किया परन्तु नरसूनेअवकाशके नहोनेका बहाना करदिया॥

दफ़ा १९—इस गवाहकी गवाही का जियादहतर ज़िक्र करनेसेपहिले इसबातका ज़िक्रकरना उचितहोगा किसालिमएकअरबीहै और बड़ौदे नगरमेंरहताहै और वहगायकवार केपाससवारोंमें नौकरथा और सदैव उनकीसेवामें हाज़िर रहताथा महाराजाका जासूस यशवन्तराव खासकासिद है और नगरमेंरहता है और जिस कमरेमें इस मुलाकात का होना बयानकियागयाहै यहवहीकमराहै जिसकेभीतरमहाराजा गायकवार और रज़ीडन्सीके नौकरोंमें सब मुलाकातें हुईथींउसमकानको कमीशनकेकई मेम्बरोंनेअवलोकनकिया है वहएक छोटासा कमरा तीसरी मंज़िलपर है और उसके भीतर एककोनेकेतरफसे एकसूक्ष्मसीढ़ीकेद्वारा जातेहैंयहसीढ़ी एकछोटेकमरेकेभीतरतकहै औरउसमेंकोईदरवाज़ानहींलगा हुवाहैदरहकीकत यहमकान राजासाहबकेसलाममेंऔरमुजरा करनेकाकमरा है और उसमेंकेवलएकदरवाज़ाहैजिसमेंहोकर गायकवारकेमुख्यकमरेका मार्गहैउसमुख्यकमरेमें महाराजा गायकवारकाएकपलङ्गऔरस्नानकरनेकीएकचौकीऔरनहाने धोनेका सामान था मुजराईके कमरेमेंकई शीशे दीवारों पर लगेहुयेहैं और उसमें एकनीचीऔर चौड़ीलकड़ीकीबेंचपड़ी हुईहै कहतेहैंकि महाराजा गायकवार रेज़ीडण्टीके नौकरों से मुलाकातकरते वक़्तहरएक मौक़ेपर आ बैठतेथे अब हम फिरराव्जीके बयानका ज़िक्र करते हैं॥

दफ़ा २०—रावजीने सन् १८७२ई०के कमीशनके इजलाससे पहिलेतीनयाचारदफ़े और कमीशनके इजलासकेसमयमें तीन मरतबे गायकवारसे मुलाकातकीइनमेंसे हरएकमौक़ेपरवह फिरंयशवन्तरावकेमकानकोऔरवहांसेयशवन्तरावऔरसालिम केसाथमहाराजागायकवारके महलकोजाताथाइनमुलाकातों मेंरावजी महाराजागायकवारसे उनमनुष्योंका जोरेज़ीडण्टी कोआयेथेऔरजोहाल वहांहोतेथेऔर जोश्किायतेंगायकवार

के प्रबन्ध की रेज़ीडण्टी और कमीशनके सम्मुख की आती उनका ज़िक्र कियाकरता॥

दफ़ा २१—उनमेंसे एकमुलाकातमें जोशुक्रवारको कमीशनके इजलासके समयमेंहुईथी रावजीने गायकवार से कहा कि मेराविवाह होनेवालाहै और गायकवारने यशवन्तरावको यहहिदायतदीकि वह उनकोइसबातकी याददिलावे—तथाच दूसरेदिन भोरको जबकि गायकवार रेज़ीडण्टीको गये यशवन्तनेरावजीसे कहाकि मैं तुम्हारेलिये पांचसौरुपयेलाताहूं तुममेरेमकानपर संध्याकोआकर उसरुपयेको लेजानासोरावजी संध्या को यशवन्तराव मकानपर रेज़ीडण्टीके पंखाकुली जग्गाकेसाथगया और वहांदलपतयशवन्तरावकेसुहर्रिरनेजग्गा के साम्हने पांचसौ रुपये उसको दिये उस समय यशवन्तराव बालाखानेपरथारावजीनेउसमेंसेचारसौरुपयेका अपनेविवाह के लियेजेवरमोललिया और बाकी सौरुपये जग्गाकेपासजमा करदिये कोई ऐसी गवाही मिसल में शामिल नहीं है जिससे सिवाउसमुलाकातके जिसमें पांचसौरुपयेके मिलने का ज़िक्र कियागयाहै ऊपरलिखीहुईमुलाकातोंमें किसीऔर मुलाकातोंकीनिसबतरावजीकेबयानकी तसदीक़होतीहो परन्तुआगे को यहबात साबितहोगईकि इनपहिलीमुलाकातोंमेंएकस्त्री अमीनानामी आयाजोपहिले करनैलफियरसाहबकीमेमसाहिबाकेपास और फिरमिस्टरबोवीसाहब एसिस्टण्ट रेज़ीडण्ट बड़ौदेकीमेमसाहिबाके पास जो करनैलसाहबकी लड़कीथी आयाकी तौरपर नौकररही थी श्रीमान्गायकवार के पास आया जायाकरतीथी परन्तु पांचसौरुपये दियेजानेकी तसदीक़केलिये शहादतमौजूदहै और अब रावजी के बयान को छोड़ना और इसमुआमलेमेंध्यान देना उचितहै॥

दफ़ा २२—भगवानका पुत्रजग्गा वर्णनकरताहै कि चौदह या पन्द्रहमहीनेबीतेअर्थात् अनुमानदिसम्बर सन्१८७३ई०के कि मैं रावजीकेसाथ एकदिनसंध्याको यशवन्तराव के मकान

में गया था (यहबात स्मर्ण होगी कि नवम्बर और दिसम्बर सन् १८७३ ई० में कमीशन का इजलास होरहाथा) और यश-वन्तरावकेकारकुनया सुकर्रने पांचसौ रुपये रावजी कोदिये थे जिसमेंसेचारसौ रुपये रावजीने लिये और मुझको सौरुपये अमानतकेतौरपर सुपुर्दकर दिये॥

दलपतसुकर्रवर्णन करताहैकि बारह या चौद हमही ने हुयेकि मैंने पांचसौ रुपये बड़ौदे के सेक्रेटर यशवन्तराव को आज्ञासे आठबजे रात्रिको रावजी और जुगाकोदियेथे उस-समय यशवन्तराव बाला खाने परथा और इसी वजह से वह वहां नथा॥

रावजीनेदजेबाके द्वारअपनेबिवाहके लिये आभूषणतय्यार करायाथा वहवर्णनकरताहै कि उसदेवालीजो २० अक्टूबर सन् १८७३ ई० को हुईथी मैंनेशिवलाल वठिलसुनार को रावजी केलिये चान्दी और सोनेके कईप्रकारके जेवरोंकेतय्यार करने के वास्ते मुकर्रकियाथा यहजेवरदोयातीन मौकोंपरतय्यार होकरउसकेहवालेकियेगये औरदजेबानेउनकेद्वाराआभूषणों कीफेहरिस्त सुनारसेकीमत समेतप्राप्तकी जबअबकीकमीशन तहक्कीक़ातहोरहीथी दजेबाने इसफेहरिस्तकोपुलिसकेहवाले करदिया औरउससेविदित होताहैकि शिवलाल ने रावजीके लियेनवम्बर सन् १८७३ई० औरमार्च सन् १८७४ई० केमध्यमें पांचसौअट्ठावनरुपये छःआनेकाआभूषणबनवाया॥

शिवलाल वठिलआभूषणों कीतय्यारी केसमयऔर उनकी तफसील केनिस्वतदजेबाके बयान की तसदीक करताहै और बयानकोरूसेउनकी कीमतचारसौ पिचहत्तररुपयेया पांचसौ रुपयेबयान करता है दजेबा और रावजीने समयर परआभू षणोंकीपूरीकीमत शिवलाल कोदेदी॥

दूसरेसुनारदलाब नामेने यहइजहार दियाहैकिमैंनेरावजी केलिये जूनऔरअगस्त सन् १८७४ ई०के मध्यमें कई प्रकारके

कीमतीआभूषण उन्नासी रुपये आठ आनेके तय्यार कियेथे॥

मिस्टरलवलबेठिलऔरदलालने उसआभूषणको पहिचानलिया जोउन्होंनेतय्यार कियाथा और रावजी उसकोतसलीम करता है कियह मेराहै॥

इसजगह परयहबातकहनेके योग्यहैकि रावजीकामासिक केवलदस रुपयेथा॥

दफ़ा २३–अबफिर रावजी कीगवाही कावर्णनकियाजाता है जिसमें उनमुलाकातों कावर्णनहै जो१८७३ई०कीकमीशनके बड़ौदेसे चलेजानेके उपरान्त औरश्रीमान् महाराजा गायकवारके नौसारीके जानेके समय हुईथीं॥

रावजीवर्णन करताहै किबड़ौदेसे कमीशनके चले जानेसे आठयानौदश दिनकेउपरान्त ३जनवरीसन् १८७४ई०केनिकट मैंनेनरसू जमादार सहितगायकवारसे उनके महल में मुलाकात कीथीसालिमनेपहिलेसे रावजीको यहइत्तिलादीथी कि मैंने नरसू को आनेपर राजी करलिया है उस दिन रविवार थी और जिस प्रकारसे प्रबन्ध किया गया था उसके अनुसार नरसू(जिसकाघर बड़ौदेनगर मेंथा)यशवन्तरावके घरकोगया रावजीयातोजुग्गाके साथऔर याकरभाईकेसाथगया नरसूके बयानसेमालूम होताहैकि यहमुलाकात १९और २४जनवरी सन्१८७४ई० केदरमियानमेंहुईथी॥

जोरेजीडन्सीमें पंखाकुलीकाकाम करतेथेमकानसे चलकर यशवन्तरावके मकानकोगया औरवहां उसनेनरसू और सालिमको बैठेपाया औरयह सबमनुष्य उसके और उसके साथी जुग्गापाकरभाईकेसाथ महाराजाकेमहलपरगयेयहांपहुंचकर सालिममहाराजगायकवारको बालाखानेपरइत्तिलाकरनेगया औरथोड़ीदेर केउपरान्तउसनेयशवन्तऔरनरसूकोमहाराजा गायकवारके सम्मुखबुलाया इसमुलाकातमें रावजीनरसूऔर यशवन्तराव औरसालिमथे रावजीनेइसवार्त्ता कोवर्णनकिया

हैजोइसमयमें गायकवार औरनरसूमेंहुईथीअर्थात् गायकवारनेनरसूसे कहाकितुम शहरमेंरहतेहो इसलियेतुमकोहररोजरेजीडन्सीकी खबरेंलानीचाहियें औरजोतुम बड़ौदेकेएक पुरानेरहनेवालेहो औरसरदारोंको जानतेहो इसलियेतुमउन सरदारों कानाम हमकोबतादिया करोजो रेजीडन्सीमें आतेजातेहैंनरसू जमादारइसबात परराजी होगया और यहकहा कि हम और रावजी दोनों सालिम के द्वारा खबरें भेजा करेंगे इसपर महाराजा गायकवारने यह इच्छा जाहिर की किजो कोई बातअति आवश्यक इत्तिलाकरने केलायक होतो उसको लिखकर भेजना चाहिये जब जमादार शहर को अपने घरआवेगा वहउस चिट्ठीको अपने साथलेता आवेगा और सालिमको देदेगा नरसूने गायकवारसे कहा कि मेरे भाई को पिन्शन बन्द होगई है आप उसका कुछ बन्दोबस्त फरमाइये गायकवारने नरसूसे कहा कि तुम इस विषय की एकअर्जी रेजीडण्टसाहब को दो और हम प्रतिज्ञा करते हैं कि जो रेजीडण्टसाहब उसकाहमसे जिक्रकरेंगे तो हमकुछ उसकाबन्दोवस्त करेंगे उससमयनरसू के दोभाई गायकवार महाराजाके पासएकरिसाले के खांडर और जमादारथे॥

२४—जुम्मा और करभाई दोनोंयहवर्णनकरते हैंकि हम गायकवारके महलको रावजी और नरसू और यशवन्तराव और सालिमके साथ गये थे और जबयह मनुष्य महाराजा गायकवार से मुलाकात करने के लिये ऊपरगये तो हमको नीचेछोड़गये उसमनुष्य कीपहिचान का कोई वसीला नहीं है जो इसमौके परइन मनुष्यों के साथगया था परन्तुइसमें कोई बातनहीं होसक्ती कि वहयातो जुम्मा था या करभाई था नरसूनेकेवल यहवर्णन कियाहै कि एक मनुष्य रावजीके साथथा परन्तुउसने उसकानाम नहीं बतलाया॥

दफ़ा २५—फिररावजीने यहवर्णनकियाहैकिमैं और नरसू फिरचारपांच दफामहाराजा गायकवार की भेंटके लियेउन

के नौसारी जानेके प्रथम (२अप्रैल सन् १८७४) को गयाथा और उनमौकों पर हमको महाराज गायकवार को रेसी-डण्टी की कारखाई की खबरदी इस जगह यह बात वर्णन करनीचाहिये कि नरसूने इससमय इसप्रकारकी एकमुला-कात का अर्थात् अपनी दूसरी मुलाकात का जिक्र किया

दफ़ा २६—रावजी वर्णन करतेहैं किमैं और नरसू करनैल साहबके साथनौसारीको गयेथे और वहांहमने और शख्सों मेंसे सालिमऔर दामोदरपन्थको भीदेखारावजी नेसालिम के द्वारानौसारी में गायकवार से एकबेर मुलाकात कीऔर गायकवार ने भावपूनाकर और और मनुष्योंकाहाल उससे पूछा जोरेजीडण्टीको जातेथे॥

दफ़ा—२७—अबहम रावजी के बयानका उनमुलाकातोंके सबबयान करतेहैं जो उसकीऔर गायकवारकी नौसारे से लौट आने के उपरान्त (१८ मई सन् १८७४ ई० के निकट लौटआयेथे) हुईथीं और हमकोमालूम होताहै किरावजी के वर्णनके अनुसारउनमुलाकातों में जो अबतकहुई महा-राजगायकवार ने केवलरेजीडण्टी की खबरेंपूछीं और नौ-सारीसेलौट आनेके अनन्तर पहिली दफ़ा महाराजानेसाहब विषकाजिक्र किया॥

दफ़ा२८—रावजी वर्णनकरताहै किमैं नौसारीसे लौटकर कभीतापेडरू उसीजाके और कभीनरसू के साथ महाराजा गायकवार से मुलाक़ात करने गयाथा पेडरू करनैल फियर साहबका खानसामांथा और इसकामपर पन्द्रहवर्ष से और कुलछब्बीस वर्षसे उनकेपास नौकरथा पेडरूएक महीने की छुट्टीलेकर गोवाकोगया था और उसकेसाथ जो तीन मुला-कातेंमहाराजा साहबसे हुई उनका होना रावजीने पेडरू के गोवाकोजाने से और एक काहोना उसके लौट आने के पीछेठहराया है रावजी वर्णन करताहै कि पेडरू ने मुझसे महाराजाके महलको चलनेकी दरखास्तकी थी और पेडरू

से मालिमने कहाथा रावजीनेपहिली मुलाकातका और जो वार्त्ताउस समयमहाराजा गायकवारके साथ हुईथी उसका जिक्रकियाहै और यह कहाहै कि उससमय महाराजनेउस वार्त्ताकोपूछा था जो रेजीडण्टोंके खानेकी मेजपर होती है और यहइच्छाकी थी कि पेडरूसालिम के द्वाराउनकेपास खबरेंभेजदिया करें बाकी दो मुलाकातोंका कुछब्यौरावर्णन नहींकियागया है रावजी बयान करताहै कि महाराजागायकवारके साथ पेडरू की पिछली मुलाकात गोवासे लौट आनेसेदोतीनदिनपीछे हुईथीअब जोगवाही पेडरूनेकमीशन के सम्मुखदीहै उसमें उसने गोवासे अपने लौटने की तारीख बयाननहीं कीहै परन्तु जोइजहार उसने मिस्टर ऐडजण्टन साहबबम्बई के डिपुटीकमिश्नर पुलिसके रूबरू–५–जनवरी सन्–१८७५–ई० कोदियाथा उसमेंउसने वर्णनकिया हैकि मैं–३नवम्बर–सन्–१८७३को छुट्टीपरसे बड़ौदेको लौटआया रावजी ने उस गुफ़्तगू को बयान किया है जो पेडरू और महाराजा गायकवार में हुई थीं महाराजा गायकवार ने पेडरूसे इसबातके पूछनेके उपरान्त कि वहगोवासे कबलौट आया यह कहा कि जो हम तुमको कोई वस्तु दें तो क्या तुम उसको करदोगे पेडरूने उत्तर दिया जोहो सकेगा तो मैं करदूंगा फिर गायकवारने यशवन्तरावसे वार्त्ताकी और यशवन्तराव ने एककागज की पुड़िया महाराजा साहब को देदी जिसको महाराजा साहबने पेडरूको देदिया पेडरू ने पूछा कियह क्या है गायकवार ने कहा कियह विषहै और इस को करनैल फियर साहब के खाने में मिलाना चाहिये पेडरूने यह बहाना किया कि जो करनैलफियर साहब इकबारगीमरजावेंगे तोमैं पकड़ाजाऊंगा और तबाहहोजाऊंगा तब महाराजागायकवार ने पेडरूको भरोसादिया कि इकबारगी कोई बात न होगी किन्तु करनैल फियरसाहब दोया तीन महीनेमें मरेंगे रावजी यह निश्चय प्रगट करताहै कि

पेडरूने उसपुड़ियाको अपने पासरहने दिया परन्तु वह यह बातनहीं जानता कि उसने इसबातपर अमल किया यानहीं पेडरूनेरावजी से कहाकिगोवाको मेरेआनेसे पहिले सालिम ने मुझकोरुपया दिया—पेडरूनेअपने इजहारमें इस बात को मानाहैकिमैं और वहनौसारी कोगया और सालिम ने उससे ताकीदकरकेमहलको चलनेकेलिये कहापरन्तुवह वहांकेजाने या महाराजागायकवारके साथवार्त्ताकरनेसे इनकार करता है वहइसबात को तसलीम करताहै कि गोवाके जानेसे थोड़े दिन पहिले मैंने सालिम से राह के लिये खर्च मांगा था और सालिम ने साठरुपये बड़ौदे के सिक्के के मुझ को दिये थे और यह कहा था कि महाराजा गायकवारने उस रुपयेको उसके राह खर्चके लिये भेजा है वह इस बातकोभी मानता है कि मैंने रावजी को साठरुपये मिलने की इत्तिलादी थी हालां कि मैं उससे कुछ स्नेह नहीं रखता था किन्तु केवल उसकी और मेरीबोलचालथी यहबातअभीतकबेतहकीकहै पेडरूमहलको गयावानहीं या जो मुलाकातेंमहाराजा गायकवारकी उसके साथहुई रावजीभीउसकेसाथ गयायानहीं इसविषयमेंरावजी के बयानकी तसदीककिसी प्रकारसे नहींहोती॥

दफ़ा—२९—रावजीवर्णन करताहैकि उसकीपहिली मुलाकातमहाराजा गायकवार के साथनरसू के नौसारीके लौटने परदोया तीनदिन के उपरान्त हुई थी उस दिन निश्चयकरके २०-वा२१-मई सन्-१८७४ई० होगो कदभाई पंखाकुली उसके साथ गयाथा नौसारी से लौट आने के पन्द्रहदिन के उपरान्त रावजीकोनरसू से तीनसौरुपये उसइनआम के हिस्से कीतौर पर मिलेजो महाराजा गायकवारने उनको दिया था॥

दफ़ा—३०—रावजी कहता है कि जबकरनैल फियर साहब के माथेपर फोड़ाथा—सितम्बर या अक्टूबर सन्-१८७४ ई० उससमय में नरसूके साथ गायकवार की मुलाकात के लिये

गयाथा गायकवारने मुझको एकशीशी दी जिसमें जलकेसदृश एकसफ़ेद अरकथा और यहकहा, कि तुम इसको कारनैलफिअरसाहब के स्नानकरने वा हाथ मुंह धोने के जलमें मिला दो इसशीशी का मुखरूई और मोमसेबन्दथा रावजीने इसशीशी को अपने पाजामेके बीचमेंरखलिया और कमर बन्दसे उसको खूबजोरसे पेटसे बांधलिया रास्तेमें चलनेके झुकने से इसमेंसे कुछअरक रावजीके पेटपर गिरपड़ा तो उससे पेट पर शोथ होगया जिसमें बड़ीसोजिस होतीथी रावजी इस शीशी को अपनेसाथ रेज़ीडन्सीमेंलेगया और नरसूके प्रश्नकरनेपर यह उत्तरदियाकि मैंने इसशीशीके अरकको कारनैलफियरसाहब के पानीमें मिलादिया परन्तु रावजीकहताहै कि मैंनेयहएकसवारके भरोसेकेलिये कहदियाथा जो हरदिन इसबातके मालूमकरनेकेवास्ते कि मैंनेवह कामकिया या नहीं मेरेपास आयाकरताथा हालांकि मैंने उसअरकको यह विचारकर फेंकदियाथा कि उससे मेरेहाकिमको कष्टपहुंचेगा रावजी ने नरसूको वहसूजनदिखाई जो उसकेउदरपर होगईथीयह शीशी एकसंदूककेनीचे रक्खीहुईथी जो रेज़ीडन्सीके बरामदे में उस बेंचकेपास रक्खारहताथा जहां अरदलीका चपरासी बैठताथा यह बोतल रावजीकी तर्जनीउंगलीके बराबर लम्बी और पतलीथी डाक्टरग्रे ने जिनसे कि रावजीके पेटके सूजन की गवाही लीगई यह कहाहै कि जो तीन निशान नाफसे ऊपर उसजगहपर दीखतेहैं जहांकमरबन्द बांधाजाताहै वह यातो तेज़ाबकाहूक या गरमलोहेके लगनेसेपैदाहोतेहैं और संखियाकाहूकहै और संखियेसे दुखपहुंचसक्ताहै और इसी प्रकारकेचिह्न होजातेहैं जैसे कि रावजीकोपेटपरहैं इसशर्त्त पर वहचमड़ेसे एकघण्टेतक मिलारहे चाहोचमड़ेपर पहिलेसे कुछज़खमहो डाक्टरग्रेकी यहरायहै कि जो यहसमझाजावे कि शीशीमें संखियाथा तो जो निशानरावजीकेपेट पर होगयेहैं वहउसीतरह पैदाहोगयेहोंगे जैसा कि रावजी

ने कहाहै हमयोगीकेलिये अपनीरायतबदेंगे जब कि हमदा-मोदरपन्थकी गवाहीपर ध्यानदेंगे ॥

रावजीकहताहै किजिससमयमेंनरसूने मुझकोतीनसौरुपये दियेथे उससे चारपांच महीनेके उपरान्त मैंएकबेर संध्याको महाराजागायकवार की मुलाकातके वास्तेगया इसहिसाब से मालूम होता है कि यह मुलाकात अक्टूबर या नवम्बर सन्१८७४ई० में हुईहोगी रावजी यहखयाल करताहै कियह मुलाक़ात९-नवम्बरसे पन्द्रहयाबीसदिनपहिलेहुई होगीराव-जीनेयहभीकहाहै कि जिसकमरेमें यहमुलाकात हुईथी वह महाराजासाहबकागुसलखानाथा और उससमयसन्ध्याकेसात बजे होंगेया कुछदेर होगईहोगी और उससमय सालिम और यशवन्तराव और नरसू उपस्थितथे जो कुछ वार्त्ता हुईथी उस को रावजीने नीचेलिखेके अनुसार वर्णन कियाहै ॥

महाराजासाहबने हमसे कहा कि साहब हमपर बड़ाअ-न्यायकरतेहैं मैंतुमसेकुछबात कहनाचाहताहूं क्यातुमउसको सुनोगे फिर महाराजासाहब ने हमसे कहा कि साहब क्या भोजनकिया करतेहैं तबमैंने कहा वह कोई बस्तु मेरेसाहबने नहीं खातेहैं महाराजा साहब ने फिर हमसे कहा कि जो मैं तुमकोकोई बस्तु दूं तो क्यातुम उसको खानेमें डाल दोगे हमने कहाकि उसकाक्या असरहोगा यहबात नरसूने कहीथीइसके अनन्तर महाराजासाहब ने हमसेकहा कि मैं सालिमके हाथ एकपुड़िया भेजूंगा इसपर मैंने महाराजासाहब से कहा कि उसकाक्या असरहोगा और जब कि मैंनेयहपूछा कि यहक्या बस्तुहैतो महाराजाने कहा कि यहविषहै तबमैंने महाराजा सेकहा कि जोमैं इसको मिलादूं और साहबको एकही बेरकुछ होजावे तोक्याहोगा महाराजानेकहा इसकाअसर जल्दी न होगा किन्तु दो या तीन महीनेमें उसका असर होगा फिर महाराजाने हमसेकहा कि मैंतुममेंसे हरएकको लाख२ रुपये

दूंगा जो तुम इसकामको करदोगे और मैंतुमको नौकरीदूंगा और तुम्हारे सन्तान और कुटुम्बको पालूंगा तुम किसी तरह से मत डरो मैंने खुद महाराजा साहबसे पूछा कि मैं क्योंकर इसविषको मिलादूं महाराजाने उत्तरदियाकि तुमएकछोटी शीशीलेकर उसमेंथोड़ासाजल और चूराडालो और उसको खूबहिलाकर मिला दो फिर मैंने महाराजासाहब से पूछा जोमैं चूरेकोइसरीतिसे मिलादूं तो उसका क्या असरहोगा महाराजाने कहाकि जोतुम हिलानेकेबिना तुमउसकोशर्बत में मिलादोगेतो ऊपरआजावेगा इसलियेमिलाने से पहिले हिलानाचाहिये फिरसालिमसवार और यशवन्तराव दोनों ने कहाकिजो तुमइसकामको करदोगेतो तुम्हारेलियेअच्छा होगा तुम कुछ भयमतकरो महाराजाने कहा कि इसकी तीनपुड़ियांबनाओ और इसको तीनदिनमेंबर्तोओउससमय मुझकोकोई चूर्ण नहींदिखायागया परन्तु महाराजाने कहा कि मैं सालिम और यशवन्तराव के हाथ जमादार के घरपर भेजदूंगा मैंनेकहा बहुत अच्छा॥

दफ़ा ३२—इस मुलाकातके दूसरेदिन नरसू एक पुडिया लायाजिसमें दो प्रकारका चूरहथा एक सफेद और दूसरा गुलाबीरंगका और उसको रावजीको देदियादोनों पुड़ियों कोमिकदार जैसा कि गवाहने अदालतके रूबरूजाहिरकिया चाह पीनेके दो चमचोंके बराबरथी चाहेसफेद चूरह दूसरे चूरेसे कुछजियादाथा फिररावजीने इनदोचूरोंमेंसे तीनचूरे बनाये अर्थात् गुलाबीरंगके चूरेके तीनहिस्सेकिये और उसमें थोड़ा२ सफेदचूरामिलायाजिसको वहसफेद संखियासमझता था इससूरतमेंथोड़ासासफेदचूराबचरहा औररावजीनेउसको कागजमें बांधकर अपनेपरतलेके भीतरएक पोशीदाजेबमेंरख लिया और तीनपुड़ियोंको दूसरीजेबमें रावजी वर्णनकरताहै कि मैंने इन तीन मिले हुये चूरोंको एक २ करकेतीन दिन बराबरकरनैलफायरसाहबकी शरबतमेंदफतरके कमरेमेंजाकर

इसतरह मिलादिया कि पहिले एक शीशी में पानीभर कर चूरेको खूब हिलालेताथा॥

दफ़ा ३२—इसजगहपर संखियेके चूर्णकेनिकालनेकेमुआमले पर ध्यानदेनाचाहिये जिसकेलिये सदरमेंयहजिक्रकियागया है कि यहवहतीसरी पुड़ियाथी जिसका इमतिहान डाक्टर ग्रेसाहबने किया कारनैलफियर साहबने यहकहाहै कि मैंने रावजीको ६—नवम्बर की संध्याको केवल संदेहसे क़ैदकिया था और रावजी यहकहताहै कि मैं ११—नवम्बर को छुड़ा दिया गया परन्तु मुझको कामकरने की आज्ञा नहुई और इसीसे मैंअपनेघर चलागया रावजीने यहभी कहाहैकि मैं ६—नवम्बरकीभोरको अपनी गिरिफ़्तारीसे पहिले मुअत्तल करदियागयाथा और मैंनेअपने परतले को दफ्तरमें रखदिया जिसमें कारनैलफियरसाहब काम कियाकरते थे मिस्टरबोवी साहब जोउनदिनोंमें असिस्टण्ट रेजीडण्टथे कहतेहैंकि जब सेरावजीसेपरतलालेलियागया तो उसनेउसको एकखूंटीपर उस कमरे के भीतर टांग दिया तो कारनैलफियर साहब के दफ़्तरके पासहै और निसंदेहयही बयानठीकहै॥

पुलिसने २२—दिसम्बर सन् १८७४ ई० कोरावजीको गिरफ़्तार किया क्योंकि जो खबरें उसकी फजूलखरची की बनिस्बत उसकी आमदनीकेपुलिसकेपास आतीथीं इससेपुलिसके मनमें उसका बड़ासंदेह होगया था—२४—२५—२६ दिसम्बर सन् १८७४ ई० को मिस्टर सूटरसाहबने रावजीके बयान को लिखलिया और २५—दिसम्बर को अकबरअली हेड अफ़सर पुलिसबम्बई ने रावजीसे पूछाकिजो चूरातुमसमहलों से लाते थे उसकोतुम कहांरखतेथे रावजीने उत्तरदिया कि मैं उन कोअपने परतले में रखताथा जो अबभोदर के पासहैजो मेरी जगहपर नियतहुआ है सो भोदर शीघ्रही बुलाया गया और वहरेजीडन्सीके उसकमरेमें आया जहांपुलिसकेलोग मिस्टर सूटरसाहबके मातहत जो वहींरहतेथे तहक़ीक़ात कररहे थे

और उसने परतलेको उतारकर अकबरअलीको देदिया उस समय मिस्टर सूटर साहब कपड़े पहिन रहे थे अकबरअली ने फौरन् उसपरतलेको टटोला और जबकि उसको उंगलीएक कागजके टुकड़ेसेलगी जोपाकिटमें रक्खाहुवाथातो उन्हों-ने तुरन्तही मिस्टरसूटरसाहबको बुलाया जो दूसरे कमरेमें थे और उनकेसाम्हने संखियेकीपुड़िया और एकटुकड़ाडोरेका मिला रावजी अकबरअली और दामोदर और मिस्टर सूटरसाहबके बयानसे साफ जाहिरहै कि रावजीको उसपुड़ियाका बिल्कुल खयालनरहा औरजबतक उसपरतलेमेंनहीं मिली तबतक उसका खयाल नहीं आया सो इसबातके संदेह करनेका कोईकारण नहीहै कि इसपुड़ियाके निकालनेकी निस्बत जिससे रावजीके दरहकीकत उसबयानकी तसदीक होती है जोउसने बड़ौदेपुड़ियों के लिये किया है पुलिसकी ओरसे कोईबनावट औरफरेबहुवाहो रावजी वर्णन करताहै कि मैंइससफेद चूर्णका संखियाजानताया और मैंने गुलाबी चूर्णमेंसे थोड़ा २ हरएक पुड़ियामें इसविचारसे मिलादिया कि कहीविषका असर जल्दीनहोजावे॥

दफ़ा ३३——अबहम महाराजा गायकवारकेसाथरावजी कीअन्तकी मुलाकात काजिक्र करतेहैं रावजीकहता है कि यह मुलाकात नरसू केसाथ सालिम के पैगाम पर६ नवम्बर सन् १८७४ ई० शुक्रवारको हुईथीपहिले वह यशवन्तरावके मकानको और वहांयशवन्तराव सालिम औरनरसूकेसाथ म-हाराजाके महलकोगया औरयहसब लोगमहाराजा गायक-वारकी मुलाकातपर उपास्थितथे जिसकमरेमेंमुलाकात का होनाबयान कियागयाहै वह गुसलखानाहै गायकवारनेइस हेतुसेरावजीको बुराभला कहाकि इसनेकुछनहीकियाजिस पररावजीने उत्तरदियाकिमैंअपना कामकरचुकापरन्तुउसके परिणामके जाहिरनहोनेका कारणमेरी समझमेंनहीं आया गायकवारने कहाकिमैं तुमको कोईऔर वस्तु मिलानेकेलिये

देना चाहता हूं जबकि रावजी बिदा होनेको था तो साजिमने कोई वस्तु उसके हाथमें रखदी जिसको उसने नहीं देखा दूसरे दिन अर्थात् ७ नवम्बर सन् १८७४ ई० शनिवारको नरसूने रावजीको एकस्याही माइल भूरेरंग का चूर्ण एक कागजके टुकडे में बन्धा हुवा दिया ८ नवम्बर सोमवारको रावजी रेज़ीडन्सीको नहीं गया परन्तु वह भोरके साढ़े नौबजे ९ तारीखको गया और सब चूर्ण करनैल फियर साहब के गिलासमें मिला दिया उसने पहिले उस चूर्णको थोड़े से जलके साथ मिलाकर खूब हिलाया था रावजी कहता है कि इस पिछले चूरे के मिलने से दो दिन पहिले पेडरूने महाराजा गायकवारके पास से एक चूरा पाया था (उस पिछली मुलाकात में जो रावजीके साथ महाराजा साहबके पास हुई थी) सो यह चूरा जो रावजीका बयान ठीक है तो पेडरूको ५ नवम्बरको मिला होगा रावजी बयान करता है कि मैने सब चूरा एकही बेर देदिया क्योंकि उसकी मिकदार थोडी थी मैने यह नहीं खयाल किया कि इसका असर जल्दी होगा सिवा इसके मुझको जल्दी करनेकी ताकीद कीगई थी॥

दफ़ा ३४—अब हम रावजीकी गवाही का वर्णन करते हैं रावजीकमीशनके सम्मुख इस वाइदे पर कि जो वह ठीक २ कहदे तो उसका अपराध क्षमा होजावेगा एकनाकिस गवाहकेतौर पर हाजिर हुवा है और इसके विपरीत सरल्यूइस पीली साहबने नरसूसे साफ २ कहदिया था कि तुम्हारा अपराध क्षमा न होगा और जो बयान या इकरार इसने पुलिस और सरल्यूइस पीली साहब के रूबरू २४—दिसम्बर सन् १८७४ ई० को किया था वह इस प्रयोजनसे पूर्वोक्त मासकी २९—तारीखतक लिखा नहीं गया (जैसा कि सरल्यूइस पीली साहबने वर्णन किया है) कि उसको इस मुआमलेपर गौरकरने की मोहलत मिले और वह किसी कारणसे एक ऐसे बयान करने की तरफ माइल न हो जो तहकीकात करनेके बक्त साबित न होसके पस इसवजहसे उन बातों की तरफ ध्यान देना अवश्य है जिनसे रावजीकी गवाहीकी सम्भिदा-

कतकी तसदीक होती होतथा हमको मालूम होता है जिन सूरतोंमें नरसू अदालतके रूबरू हाजिर हुआ है उनके लिहाजसे वहएक सच्चा गवाहै और उसके तौरके देखनेसे हमारे हृदयमें सच्चाईका असरहुवा नरसू और रावजीकी गवाहीमें निस्संदेह कहीं २ इखतिलाफातहैं परन्तु यहइखतिलाफ इस प्रकारके है कि जब कोई मनुष्य ऐसे हालों को बयान करताहै जिनकोहुये बहुतदिनहुये होतो उनके जहूरमें आनेका एहतिमाल होताहै इसबातके साबित करनेके लिये कि जिनगवाहों कीगवाही के निसबतकोई संदेहनहीं होसक्ताहै उनकेबयानमेंभी इखतिलाफकाहोना सम्भवितहै उनवजूहातोंका जिक्र करना काफी होगाजो मिस्टर सूटरसाहब और सरल्यूइसपीलीसाहब नेइसबातकीबयानकीहै किनरसकाबयानउसीदिनक्योंनहीं लिखा गयाजबकिउसने पहिलीदफे कियाथा मिस्टरसूटरसाहब यह बातकहतेहैं किमुजकोउसदिन उसकेलिखनेका अवकाशनथा और सरल्यूइसपीलीसाहब यहकहते हैं मैंनेइससबबसे उसको नहींलिखाकि मुजकोयह आज्ञाथी किनरसूको इस मुआमले परगौरका अवकाशदियाजावे॥

दफ़ा ३५—नरसू कहताहै कि मैं रेजीडन्सीके चपड़ासियोंका जमादार चौदहरुपये मासिकपरहूं और इसओहदेका अनुमानसत्तरवर्षसे कामकरताहूं और मेरीरेजीडन्सीकीनौकरी की सम्पूर्ण अवधि ३० याचौतीसवर्ष है मेराघरबड़ौदे नगरके भीतरहै और मैं रेजीडन्सीको साढ़ेसातबजे या आठबजे प्रभात केसदाजायाकरताथा और साढ़ेछ:बजे या सातबजे या आठबजे रात्रिकोलौट आताथाउसने रावजीके इसबयानकी तसदीककीहै कि सन् १८७३ ई० केकमीशनके इकट्ठेहोनेके पहिले आउसकेकरीब महाराजागायकवारकेपास जानेकीइससेप्रार्थनाकीगईथी उसनेमहाराजा गायकवारके साथपहिली मुलाकातोंके बाबतकुछ रीमातोंमें तसदीकीहै जिसकेलियेरावजीनेयह

बयानकियाहै किवहमुलाकात नरसूकेसाथ कमीशनकेउठजा-नेकेउपरान्तहुईथी इसपहिलीमुलाकात और नौसारीके जाने केबीचमें नरसूनेरावजी के साथ महाराजागायकवार केसाथ संध्याको केवलएकही मुलाकात काइकरारकिया है हालांकि रावजीने चारपांचमुलाकातों काज़िक्रकियाथा नरसूकहताहै किमैंनौसारीमें महाराजासाहबके पासमिवाय हमराहीरेजी-डण्टसाहबके कभीनहींगया और रावजीने यहबातनहींकही किनरसूमहाराजा गायकवारके पासनौसारीमें मेरेसाथ गयो किन्तुनरसूने एकऐसीबात कहीहै जिसका ज़िक्र रावजीनेनहीं किया और यहएकइसबातका उत्तमप्रमाणहै किजोगवाही रावजी और नरसूनेदीहै उसमें उन्होंनेकिसीप्रकारकी चश्म-पोशीनहीं की नरसू कहता है किरावजीने नौसारी में दोसौ पचासरुपयेमुझको पारितोषक दिलवाये और जबनरसूनेयह कहाकिमैं यहांइसरुपयेको लेकरक्याकरूंगा इसलियेरावजी नेइसरुपयेकोसालिम कोदेदिया जोउससमय बड़ौदेको जाता था और जब नरसू फिर लौटकर आया तो उसने यह बात तहकीक़किवहरुपया मेरेहीवास्ते मेरेभाईको दियागया था नहींयद्यपि इसकिस्सेकी सिदाकतका कोईसुबूत नहींहै और रावजी नेभीइसका कुछज़िक्र नहींकिया तथापि हमको उस पर निश्चय नकरनेका कोईकारण मालूम नहींहोताहै और इसेनिःसंदेह यह नतीजा निकाला जाताहै कि यह रुपया गायकवारके पाससे आया॥

दफ़ा३६——नरसूनेकहाहै किमेरी पहिलीमुलाकातनौ-सारीसे लौटनेके उपरान्तहुई उसकाखुलासा बयानरावजी केबयानके अनुकूलहै परन्तु नरसूने इसमुलाकात की तारीख जनयाजलाई सन्१८७४ई० मेंऔररावजीनेमई सन्१८७४ई० में बयान० की है हिन्दुस्तानी गवाहों का बयान जमाने के लियेसदा अशुद्धहोताहै सोइसप्रकारके इखतिलाफसे उनकी गवाहीपरनिश्चय नहींठहर सक्तीनरसू वर्णनकरताहैकि राव

जीने गायकवारसे कुछबार्त्ता करनेके उपरान्त यहरायदीकि लच्छीबाईसे जो महाराजाका विवाहहुवाहै उसकाकुछपारितोषक देनाचाहिये औरइसी हेतुसेमहाराजा गायकवारने पारितोषक केदेनेकाइकरार करलियातथाच उसके दस अथवा पन्द्रहदिन के उपरान्त सालिम आठसौ रुपये नरसूके पासलाया जिनमेंसे चारसौरुपयेउसनेरावजीको देदिये(जिनमेंसे सौरुपये जुग्गाकोदिये) चारसौ रुपयेअपनेवास्तेलिये नरसूनेअपने भागमेंसे सौरुपयेसामिल कोदियेऔर तीन सौ रुपयेअपनेवास्ते रहनेदिये परन्तु जुग्गाने इससौरुपयेके पाते काकुछजिक्र नहीकियाहैजिसकाहवाला नरसूनेदियाहैऔर इससे शायदयह नतीजा निकला जासक्ताहैकि यहरुपयाउसकोनहीं मिलाहालांकि यहबात मानताहै किमैंरावजीनरसूयसवन्तरावऔरसालिमकेसाथएक दफामहाराजाके महलकोगयाथा यहबात मालूमहोगी कि रावजीनेनरसूसे तीनसौ रुपयेके मिलनेका इक़रार कियाहै॥

दफ़ा ३७—रावजी कहताहै किनरसू तबमेरे साथथा जब कि मैं महाराजा गायकवार से उन दिनोंमें मुलाकातकरनेके लियेगया और महाराजाने मुझको शीशी दीथी परन्तु नरसू वर्णनकरताहै कि मैंने शीशीको नहींदेखा यह शीशी उसनेरेजीडण्टीमें देखीजहां रावजीने उससेयह बयानकिया कि मैंने विषकोजो उसकेभीतरथा जलमेंमिलाकर पिलाया और वहयह बातजानताहै कि यहशीशी इस सन्दूक़के नीचे रक्खीहुईथी जोरेजीडण्टीमें चपड़ासियोंके बैठनेकी बेंचोंके निकटरक्खा हुवाथा॥

दफ़ा ३८—तबतक नरसूके रूबरूजहरका कुछजिक्र नहीं किया गया अब नरसू उन पिछली दो मुलाक़ातोंका हाल कहताहै जोरावजीकी पिछलीदो मुलाकातोंसे मुताबिकहैं अर्थात्एक मुलाकात नवीनवम्बरसे बीसया पच्चीसदिनपहिले हुईथी जोक़रीब २ उससमयकेहै जोरावजीने वर्णन कियाहै

मुलाकातकी जगह गायकवारके प्राईवेट मकानका मुजराई कमरा है नकि गुसलखाना जैसा कि रावजीने वर्णन किया है इसबातके निश्चयकरनेका कोई कारण मालूम नहीं होता कि इन मुलाकातोंमेंसे कोई मुलाकात भीतरके कमरेवा गुसल खानेमें हुई हो हम निश्चय करतेहैं कि यह सब मुलाकातें मुजराई कमरेमें हुईं नरसू वर्णन करता है कि कारभाई मेरे साथथा परन्तु रावजीने कारभाईका कुछ जिक्र नहीं किया कारभाईकी गवाहीसे यहबात साबित नहीं होती कि वह इस बेरनरसूया और मनुष्योंके साथ गयाथा यानहीं कोईमनुष्य यहदावा नहींकरता कि मैं महाराजा गायकवारके सम्मुख गयाथा जोमनुष्य इन मुलाकातमें वर्त्तमानथे जिनका नाम नरसूने बयानकियाहै उनके नाम उननामोंके अनुकूलहै जो रावजीनेबयानकियेहैं और नरसूकी गवाहीके नीचेलिखेहुये खुलासेमें उसगुफ्तगूका जिक्रहै जो इसमौके परहुई और जो मुख्य२ बातोंमेंरावजीके बयानकेअनुकूलहै महाराजाने राव-जीसे कुछ बार्त्ताकी मैंउपस्थितथा और मैंनेवह वार्त्तासुनी और उसमेंसंयुक्तथा महाराजाने कहासाहब आपबहुतअप्रसन्न होजाताहै इसबातका कुछबन्दोबस्त करनाचाहियेयशवन्त रावनेकहा कि महाराजा साहबकी यहइच्छाहै कि तुमको कोईवस्तु देंगेतुम उसकोमिलादो महाराजाने कहा कि हां कोईऐसा उपायकरना चाहियेजिससे वहवस्तुसाहबके उदरमें पहुंचजावे मैंने कहा कि भोजनमें मुझको कुछ तअल्लुकनहीं हैमैं यहबात नहीं करसकूंगा फिर रावजी ने कहा जो तुम चाहोतोमैं उसेशर्बतमें मिलादूंगा जिसकोसाहब बयानकरते हैं महाराजानेकहाबहुतअच्छातुमइसकेकरनेमेंकोशिशकरो महाराजाने कहा कि मैं तुमको एकपुड़िया भेजूंगा उसको रावजीको देदेनाचाहिये यशवन्तराव और सालिमने कहा कि जो कुछ महाराजा साहब कहतेहैं जब वह वस्तु हमको दीजावेगी तोहमउसको लेआवेंगे महाराजानेकहा कि जो

यहकाम होजावेगा तो तुम्हारे लिये अच्छाहोगा रावजीने फिरवही बातकही इनशब्दोंसे कि तुम्हारेलिये अच्छाहोगा यहप्रयोजनथा कि तुमखानेपीनेसे खुशरहोगे और नौकरीके मोहताज न होगे महाराजाने यहकहा और सालिम और यशवन्तरावने फिरवही बातकही यहमुलाकात दसमिनटया पावघण्टेरहीहोगी मुझकोयह स्मर्ण नहींहै कि यहमुलाकात पन्द्रहदिनया बीसदिनथा पच्चीसया एक महीने इससेपहिले हुईहोगी करनैलफियर साहबको अपने प्यालेमें विष मालूम हुवा उस मुलाकातमें मुझको कोई पुड़िया नहीं दीगई जबयह मुलाकातखतम होगईतो सालिमने दूसरेदिन एकपुड़ियामेरे घरपर मुझकोदी यहपुड़िया मेरीतर्जनी उंगलीके बराबरथी और अहमदाबादके कागजकी बनीहुईथी॥

दफ़ा ३९—नरसूने रावजीकेसाथ महाराजा गायकवारसे पिछलीमुलाकातकी तारीखदूसरी यातीसरी नवम्बरबयानकी है परन्तु रावजी कहताहै कि वहछठी नवम्बरकीथी नरसू अपनेनियमसे आठबजे रात्रिके यशवन्तरावके मकानपरगया और वहांसे रावजी और नरसू और करभाई और जुम्मायह सब०कच होकरमहाराजाके महलको गयेतथाच यशवन्तराव और सालिमने उनको महाराजा गायकवारके सम्मुख पेश कियाजो मामूलमें मुजराई कमरेमें उपस्थितथे महाराजाने कहा कि तुमकच्चेहो तुमनेअबतक कुछकाम नहींकिया मैंने कहा कि इस बातको रावजी जानताहै फिररावजीने कहा कि मैंने उसवस्तुको मिलादिया और जो आपकी दवाअच्छी नहोतो मेरा इसमें क्या इखतियार है महाराजाने रावजीसे कहाबहुतअच्छामैं एकदूसरी पुड़ियाभेजूंगा परन्तुतुमउसको ठीक २ अंजामदो और अच्छेप्रकार डालदो रावजीने कहा बहुतअच्छा यशवन्तराव और महाराजा साहबदोनोंने कहा कि कलसालिम यहपुड़िया तुम्हारे पास आवेगा तुमउसको रावजीको देदोफिरनरसूने बयानकियाहैकि सालिमनेमुझको

दूसरे दिन एकपुड़िया पहिली पुड़ियाके सदृश अपने मकानके पासदी और मैंने रेजीडण्टीमें पहुंचकर उसको रावजीको देदियारावजी बयानकरता है अबमैं महलसे बिदा होनेकोथा तबसालिमने जमादारके हाथमें कुछ वस्तुदी थी जिसको मैंने नहींदेखाथा इस जगहपर ऐसा इख्तिलाफ पायाजाताहै जो साफ २ दूर नहीं हुवा॥

दफ़ा४०—नवींनवम्बरको नरसूआठबजेप्रभातकेरेजीडण्टी को गया और डाक्टरसीवर्ड साहबके चले जाने के उपरान्त रावजीने उससेकहा कि मैंने शर्बतके प्यालेमें विषमिलादिया है और डाक्टरसाहबने (अर्थात् सीवर्डसाहब) उसको लेलिया नरसूरेजीडण्टीमें तबतक कामकरता रहाजबतक कि पुलिस ने २३ दिसम्बर सन् १८७४ ई० को उसे गिरिफ्तार किया

दफा—४१—अबउनचिट्ठियों की निस्बतजो रावजीने महाराजासाहबके महलको भेजीं रावजी और नरसूकी गवाही काजिक्रकरना उचितहै नरसूवर्णनकरताहैकि सन्१८७४ई० की वर्षाऋतु में अर्थात् जूनसे ले सितम्बर पर्यन्त मेरेसाथ रावजीकेपाससे बीसयापच्चीस चिट्ठियांजिन में रेजीडण्टी के आनेजानेवालोंकेनाम और और खबरेंलिखीथींसालिमकेपास पहुंचाने के लिये आईं और मैंने उनको उसके पास पहुंचा दिया यहचिट्ठियां सोमवार और बृहस्पतिवारको नहीलिखी गईंथीरावजी कहताहै कि मैंने इसप्रकार की कईचिट्ठियां भेजीथींउनमेंसेकईतोअपने हाथसेलिखीथीं औरएकदोजुम्मा सेलिखवाईथी जुम्माने इसबयानकी तसदीककीहै और एक चिट्ठीकोपहिचानकर यहकहाहैकि रावजी और नरसूकेकहनेसे मैंने उसकोलिखाथा कागजनम्बरी (न) वहचिट्ठीहै जिसमें उनमुलाकातोंकीइत्तिलाहै जोकईमनुष्योंने रेजीडण्टसाहब सेकीं थीं जो परस्परवार्ताहुई उसकाबयानहै यह चिट्ठीसालिमके घरमेंपाईथी जैसाजुम्मनलाल और/इमामअली और मुन्नेभाईके इजहारोंमेंसाबित हुआ॥

दफ़ा ४२—जोगवाही पेशकीगई है उससेयहीनिश्चयहोता हैकि रावजी और नरसूको अपनी गिरिफ्तारी के उपरांत वार्त्ताकरने की कोई अवसरनमिली सो उनकीगवाहीकोई जातीवाकफियतका नतीजाहै जबनरसू सरल्यूइसपोलीसाहब के रूबरूहाज़िर हुआ और २४ दिसम्बरको गवाही दी तब रावजीका बयानलिखा नहींगया था यहबातनहीं होसक्तीहै कि जो नरसूकहना चाहताथा उसकीनिस्बत पुलिसने उस को सिखाया या पढ़ायाहोयह दोनोंगवाह प्रश्नोत्तरकेसमय अपनेवाक्योंपर स्थिररहे और हम निश्चय करते हैं कि जिन मुआमिलोंमें वहसंयुक्त हैं उनकीनिस्बत उनकी गवाहीसच्च है जब सरदिनकररावनेनरसूको उसकीगवाही के पूर्णहोने पर सौगन्द दिलाई किवह निर्भय होकर ईश्वरकोवर्त्तमान जानकर सत्य वृत्तान्त वर्णन करदे तो उसने कहा कि मैंने बिल्कुलसच्चबात बयानकरदी और मुआफीकेवादेसे,मैंसिवाय इसके और कोई बात नहीं कहसक्ता हमको यहभी मालूम होताहैकि जबमिस्टरसूटरसाहबने २६दिसम्बरसन् १८७४ई० को नरसू का बयान और इकरारलिख लिया तो नरसूइस लज्जासेकि उसनेऐसे मनुष्यके प्रतिकूलगवाहीदी जिसकोवह और रावजी दोनों एकसाफीकाना बयानकरतेहैं रेजीडण्टी के अहातेके कुंवेंमेंगिरपड़ा नरसूने अदालतके सम्मुख इसबात के बयानकरनेमें ताम्मुलकियाकि उसनेवास्तवमें अपनेतईं कुंवें में गिरादिया और यह कहाकि अपनेहमजोलीनौकरों की दशा देखनेसे मेरादिमागपरेशानहोगयाथा और मैंअकस्मात् कुंवेंमेंगिरपड़ापरन्तुकुंवेंकेअवलोकनसे यहबातमुश्किलहमारे समझमें आतीहै किवहइत्तिफाकिया कुंवेमेंगिराहो इसबातके ख्याल करने की माकूल वजह यहहै कि वह जान बूझकर कुंवेंमें गिर पड़ा॥

दफ़ा ४३—अब दामोदरपन्थकी गवाहीपर देखनाचाहिये वहहरदिन महाराजागायकवारके महलकोप्रभातकेसातबजे

जाताथा और इसबजेसेचिपर्थ्यन्तरहताथा और उसको दो सौरुपये मासिकमिलताथा. वह महाराजागायकवारकाप्राईवेटसिक्रेटरथा वहवर्णन करताहै कि महाराजासाहबके सब निजकाहिसाबकिताब मेरेआधीनरहाकरताथा ॥ भाद्रकृष्णपक्ष(सितम्बरऔरअक्टूबरसन् १८७४ ई०)में महाराजागायकवारने मुझकोदोतोले संखियाखुजलीके इलाजकेलियेहिदायत की उसकेलियेफौजदारीके सरिश्ते कोलिखनेकोआज्ञादी इस विषयमेंएकहुक्मजारीकियाथा किसंखिया केवलफौजदारी के सरिश्ते से और हमेशामहाराजागायकवारकीआज्ञासेमिलसक्ताहै तथाचदामोदरपन्थने सरिश्ते फौजदारीके अफसरको एकचिट्ठीभेजो जोअदालतमेंपेशकीगईयहचिट्ठीचौथीअक्टूबर सन् १८७४ई० की लिखीहुई है और उसमें यह हिदायतहै कि घोडेको दवाके लियेदो तोलेसंखिया मंगानेके लियेपास भेजाजावे तो शहरके गणपतिराव बलवन्त फौजदारके पुत्रने अपनेपिताकी ओरसेइसपर दत्तेरिया रामचन्द्रके नामपांचवीं अक्टूबरको नीचेलिखी हुईएक आज्ञा लिखी (श्रीमत्सरकार महाराजाने दोतोले संखियामोल लेकर देनेकी आज्ञादी है सोइसमनुष्यको संखियादेदो और कीमतलेलो) दामोदरपन्थ कहताहै कि मैंने घोड़ेकाजिक्रइससबबसे कियाथा कि मुझको गायकवारने यहहिदायतकीथी हुरमुजजी विद्याहजूर फौजदार था और उसने दामोदरपन्थसे कहा कि मैंश्रीमहाराजाकी आज्ञालेकर संखियादूंगा दामोदरपन्थने महाराजासेयहबात कही और महाराजाने उससे कहाकि जिसतरह होसके नूरुद्दीन बोहरेसे जो बड़ादेकी छावनी में रहताथा और जिसके आधीन महाराजागायकवारका शफाखानाथा संखियालाओ तथाचदामोदरपन्थने यातो उसीदिन यादूसरे दिन (५—वा ६—अक्टूबर सन् १८७४ ई०) को नूरुद्दीनबोहरे से एक पुड़िया मंगाई जिसमेंदो तोले संखिया बयान किया गयाहै और महाराजा गायकवारकी आज्ञासे थोड़े दिनोंके

उपरान्त उसको सालिम को देदिया महाराजा गायकवारने कहा कि सालिमखुशलीके वास्ते उसको औषधी तय्यारकर लावे फौजदारीके सरिश्तेसे कोई संखिया नहीं आया और दत्तेरिया रामचन्द्र जो महाराजा गायकवारके सरिश्तेफौजदारीमें नौकरथा यहकहताहै कि क़ागजनम्बरी (ज़्वाद) मेरे पासआया और वह तबतक दफ़्तर फौजदारमें रहाजब कि पूर्व्वोक्तसरिश्तेके हाकिमअफ़सरने अपनी गवाही देनेसेतीनसप्ताहप्रथम उसकोमंगालिया और उस हुक्मपर संखियानहीं दियागया क्योंकि पिछले अठारह महीनेसे यहहुक्म जारीथा कि महाराजा साहबकी आज्ञाकेसिवाय संखिया और और जहरनहीं दियाजावेऔर इसकागजमेंमहाराजागायकवारकाहुक्मनथा हालांकि उसकीपीठपर यहलिखाहै किमहाराजा गायकवारने आज्ञादी॥

दफ़ा—४४ फिर दामोदरपन्थने यहबयान कियाहै कि संखियालानेके आठदिनके उपरान्त महाराजा गायकवारने मुझको एकतोले हीरेके मंगाने और यशवन्तरावको उसके देने को आज्ञादी तथाच मैंने नानाजी वतिलके पाससे जो जवाहरखाने का मुहर्रिरथा एक पुड़ियामंगाई जिसमें हीरे बयानकिये गयेहैं और महाराजा साहबकी आज्ञाके अनुसार उसपुड़िया यशवन्तराव को देदी॥

दफ़ा ४५—वह यहभी कहताहै कि इससे आठयाचार दिनके उपरान्तगजाबा जोनानाकंवलकर गायकवारके साले और मौरूसीवजीरका नौकरथा मेरेपास एकछोटोसीशीशी लायाहै जिसमें कुछदवाथी गायकवारने पहिलेसे दामोदर पन्थको यह आज्ञादी थी कि वहबड़ी२ च्यूंटिया और सर्प और कालेघोड़ेका मूत्र हकीम के पासभेजदे तथाचबोतल के भीतरइनहीं वस्तुओंकी मिलीहुई दवा हकीमकी बनीहुई थी और जो किमहाराजा गायकवारने दामोदरपन्थसे कहाथा कि वह उसको एक और बोतलमें खालीकरदे इसहेतु

से दामोदरपन्थने अपनी छोटी शीशीमें खालीकरलिया जो आधीउंगली के बराबर थी और जिसमें अतररक्खा करताथा इसबातमें संदेह है कि आया गवाहने अतर गुलाब का या केवल अतरका शब्द कहा मिसलमें गुलाबका अतर लिखा हुवाहै यह बातकुछ लिहाजके लायक नहींहै और हमपर यहबात जाहिरहै कियह छोटीशीशी उनमामूली गुलाबकी शीशियों में से नहीं है जो यूरोपमें मशहूर हैं और जिनमें थोडीसी बूंदे आती हैं दामोदरपन्थ ने उस दवाको छोटी शीशी में डालकर उसका मुखरूई और मोमसे बन्दकरदिया और महाराजागायकवारके जुबानीआज्ञा के अनुकूल दूसरे दिनउसे सालिमकोदेदिया औरसालिमको कहाकिवहशीशी रावजीको देदे दामोदरपंथको वह समय ठीक२ स्मर्ण नहींहै जबकि उसनेवहशीशी देदीपरन्तु उसको निश्चय हैकि अगस्त सन्१८७४ई०केउपरान्तउसनेयहशीशीदीथीऔर वहयहकहता हैकि मैंनेदसहरेके निकट(२० अक्टूबर सन्१८७४ ई०)शीशी को दियाथा वहयहभी कहताहै कि मैंइसबातको जानताथा कि शीशीके द्वारा करनैल फियर साहबको विषदिया जावेगा जिस रीतिसेयहशीशी रावजीकेपास पहुंचीउसको हमठीक२ नहीं समझसके परन्तु हमनिश्चयकरते हैंकि महाराजा गायकवारके पाससेउसकेपास गुप्तवा प्रगटएक शीशीआई जिसमें वह कष्टदाई अरक था जिससे करनैल फियर साहब को कष्ट पहुंचाना समझा गया था॥

दफ़ा ४६—फिर दामोदर पंथ ने महाराजा गायकवार की आज्ञासे दोतोलेसंखिया नूरुद्दीन बोहरेसे औरमंगवायाऔर उसेभी सालिमकोदेदिया॥

दफ़ा ४७—दामोदरपंथने महाराजा गायकवारकी आज्ञासे एक तोलाहीरा नानाजीवतिलसे और मंगाया तथाच नाना जीवतिलने एकपुड़िया दामोदरपंथकोदी औरयहकहा किइ-

समेंतीनमासे हीरेका चूर्णऔर ६मासेहीरा है दामोदरपंथने महाराजा गायकवारकी आज्ञासेइस पुड़ियाकोयशवन्तराव कोदेदिया उसने दामोदर पंथके एकप्रश्नके उत्तरमें यहबयान कियाकि इसकाचूरह बनाकर करनैलफियर साहबको दिया जावेगा यह हीरोंकी पुड़िया९ नवम्बरसन्१८७४ ई०सेपांचया सातदिन पहिलेयशवन्तरावको दीगई थीगायकवारनेदामो-दरपंथसे कहाकियह हीरे अक्कलकोटके बड़ेपुजारीके ताजके लिये हैं॥

दफ़ा ४८—इसजगह परयह बातप्रगट हैकि किनूरुद्दीनबौ-हरेसेहीरेकेप्राप्तकरने कीनिस्बतदामोदरपंथ केबयानकी तस-दीकके वास्तेकोई गवाही नहींहै परन्तु यह बात महाराजा गायकवार संखिया प्राप्तकरनाचाहतेथे दामोदरपंथकी गवा-ही और कागज नम्बर (रद) सेसाबित है औरहमारेबिचारसे इसबातकी बड़ीशङ्काहै किदामोदरपंथनेउसीरीतिसे संखिया प्राप्तकी जैसेकि उसनेवर्णन कियाहै हमारेबिचारमें रावजी औरनरसूकी गवाहीसे यहबातभी साबित है कि जो करनैल फियरसाहब कोविषदियागया वहसालिमके पाससे आयाथा औरयहभी बड़ीशङ्काहै किजोसंखिया दामोदरपंथ नेसालिम कोदियाथा वहवही संखिया है जो करनैल फियर साहब को विषदेने केलिये बर्त्तागया जबकि दामोदरपंथ केबयानकी तसदीक़के लिये कोई गवाही नहीं है तोहमनहीं कहसक्ते हैं कि यहबात साबित है किजो संखिया रावजी ने मिलाया था वह वही संखिया है कि जिसके लियेदामोदरपंथ बयान क-रताहै किमैंनेउसको नूरुद्दीन बौहरेसे लियाथा और सालिम को देदिया था॥

दफ़ा ४९—हीरोंके खरीदनेकी गवाही नीचेभीलिखी है अ-र्थात् नानाजी वतिल महाराजा गायकवार के जवाहरखाने कादारोगा वर्णनकरता है किपिछले दसहरेसे(२० अक्टूबर

सन् १८७४ ई०) कईदिन पहिले मैंने दामोदरपंथ की आज्ञासे अड़सठ यासाढ़े अरसठ रत्तीचपटे गुलाबी रंगके हीरे फतह चन्दके पुत्रहेमचन्द सेमोललिये उसने इसखरीदकी याददाश्त तय्यारकरनेकेवास्ते एकमुहर्रिरकोहिदायतकी इससेसातयाआठ दिनकेउपरान्तउसनेदामोदरपंथकीआज्ञासेहेमचन्दनेअनुमान चौहत्तररत्ती हीरे उसी प्रकारके मोल लिये और उसीयाद-दाश्तमें उनकीखरीदभी लिखलीगई इनदोनो प्रकार केहीरों केखरीदनेके उपरान्त दामोदरपंथको देदियेगये और दामोद-रपंथने उसगवाहसे यहकहा कि इनहीरों का चूरह बनाकर दवाकेतौरपर इस्तैमाल किया जावेगा उनकी सबकीमत छः हजारतीन रुपयेथी नानाजी वतिलने हेमचन्द को तीनहजार रुपयेनीचे लिखेकेअनुसार दियेथे अर्थात् दोहजार रुपयेना-नचन्दसर्राफ और मेलामहल के द्वारादो रकमोंमें से जिनकी जमातीनहजार छः सौउन्नीस रुपयेतेरहआने तीनपाईहैदिये गये और यहरकमें रौशिनीकी बचत और उनअशरफियोंकी फरोख़्तसेजो नजराने की तौरपर दी जाती थी और महाराजा गायकवारके हिसाबमें जमाकीजातीथीं प्राप्तहुई थी औरएक हजार रुपये नानाजी वतिलने दियेथे वहकहता है कि जिस याददाश्तमें इनहीरोंकी खरीद लिखी गईथी उसको आत्मा-राममुहर्रिरने लिखाथा और करीब देवालीके (९—नवम्बर सन् १८७४ ई०)को दामोदरपंथ उसयाददाश्त कोलेगया इसीस-बबसेहीरे जवाहरखानेके किसीहिसाबमें नहींमालूमहोते हैं आत्माराम मुहर्रिर महाराजा गायकवार के जवाहरखाने का मुहर्रिरऔर नानाजीवतिलकामातहतहैकहताहै किपिछली देवाली से आठदिन पहिले हीरे हेमचन्दसे मोललियेगये थे और व्यंकटेशके पुत्रविनायक रावजीने उनकीएक याददाश्त तय्यारकीथी और जबतक करनैल फियर साहब को विषदेने कीखबर प्रसिद्धहुई तबतक वहयाददाश्त उसीके पासरहीथी

फिरनानाजी बतिलउसको मेरेपाससे लेगयाउस गवाहनेयह भीकहाहै किमहाराजा गायकवारके जवाहरखानेमें बहुतसे अलग और जड़ेहुयेहीरे मौजूदथे और जबयहहीरेमोललिये गयेथेतबएक तलवारकाकबजा और पेशकब्ज औरएकजाकट परछोटे २ हीरे जो महाराजा गायकवार के जवाहरखाने से लियेगये थे मोललिये जातेथे इसीभांति के हीरे हरसालजियादह मौजूदरहते थे उसनेप्रश्नोत्तर के समयमें यहभीबयान किया कि जबकि नानाजी याद्दाश्तको लेगया तो उसकेउपरान्त मैंने हेमचन्दसे यह पूछा कि उसके हीरे उसके पास लौट आगयेथा नहीं उसनेउत्तर दिया किलौटआये नानाजी बतिलने याद्दाश्तके लेजानेकेसमय यहकहाथा कि यहहीरे मोलनहीं लियेजावेंगे किन्तु मैंउनको लौटादेना चाहताहूं॥

दफ़ा ५०—दामोदरपंथने उनहीरोंकीकीमत देनेकेविषयमें जोनानाजीबतिलकेपास सेउसकेपासआयेनीचेलिखेकेअनुसार बयानकियाहै अर्थात् महाराजागायकवारने उनकीकीमतके देनेको दामोदरपंथको जुबानीआज्ञादी औरउसने नानाजीबतिलको यहहिदायतकी किजो रुपया महाराजागायकवारके निजके हिसाबके विषयमें उसकेपास आताहैं उंसमेंसे उसरुपयेको देदे कुल उसरुपयेकी संख्याजो निजके हिसाबमेंजमा कियागयाथा तीनहजार छःसौ उन्नीसरुपये तेराआनेतीनपाई बयानकीगईहै दामोदरपंथ वर्णनकरताहै कि उनहीरोंकेबाबत जौहरियोंको कीमतदेनेकीआज्ञा दिसम्बर सन् १८७४ई० की लिखीहुईहै जिसमेंयह लिखाहै कि तीनहजार छःसौतीस रुपये तेरहआने तीनपाई महाराजागायकवार ने सिवाय नारायणके मन्दिर के ब्रह्मभोजके लिये दिये हैं दामोदर पंथ कहता है कि यह बनावटी आज्ञा थी और जिस प्रयोजन के लिये यह रुपया दरकार था उसके छिपाने केलिये यहआज्ञा दीगईथीइसबातके बाबतकि वास्तवमेंऐसाहीहुआहोगा कुछ

संदेह नहीं होसक्ता क्योंकि रामेश्वर जिसका नाम पूर्वोक्त आज्ञा में रुपया पाने वास्ते और दावत के मोहतमिम के तौरपर बयान किया गया है वर्णन करता है कि मेरे पास यह रुपया नहीं आया और दामोदर पन्थ के इस बयान की तसदीककीहै कि पानेवाला सदाआज्ञा पत्रकेसाथ एकरसीद लगादिया करताथा तथाच उसने एकअसल हुक्मकाहवाला दियाहै नम्बरी (म) जिसपर उसकी रसीदमौजूदहै और हुक्मनम्बरी (घ)को आज्ञापर कोई रसीद नहीहै परन्तु इस मेंसंदेहहै किआया कागजनम्बरी(घ)का रुपयावास्तवमें उस रकमके बराबरहै जो कागजनम्बरी (घ)में की गईहै क्योंकि पहिले तो कागज नम्बर (द,च,ध) का मजमूआ तीनहजार छःसौ उन्नीस रुपये तेरह आने तीन पाई है और कागज नम्बर (घ) का मजमूआ तीनहजार छःसौ तीस रुपये तेरह आने तीन पाई है और दूसरे यह कि कागज (घ) ३१ दिसम्बर सन् १८७४ ई० का लिखाहुवा और कागज (द) पहिली जनवरी सन् १८७५ई०का लिखाहुवा है परन्तुयह बातसाफ जाहिरहै कि नानाजीवतिल का जैसाकि वहतसलीमकरता है वह रकमें वसूल हुई जो कागज (द) (घ) (ध)में लिखा है और यहभी प्रगट है कि कागज (घ) के द्वारा दामोदरपन्थ को एकरकम ऐसी मिलती जो खुफिया कामोंमें काम आमक्तीहै वास्तवमें दामोदरपन्थने स्पष्टवर्णन कियाहै कि खुफिया कार्य्योंकेलिये समय२पर बहुतसा रुपया अलग करदिया जाताथा कागज(क)से लेकर(द)पर्य्यन्त जो २४ नवम्बर सन् १८७४ई० से १३ अक्टूबरसन्१८७४ ई०तक लिखेहुयेहैं साबिक्की हुक्महैं जोसालिमे और यशवन्तरावके नाम उसअसबाबकी क्रीमतदेनेकेवास्ते जारीकिये गयेथेजिन का मोल लियाजाना महाराजा गायकवार के लिये बयान कियागयाहै और उनके साबिक्कोहोने कासबूत दामोदरपन्थ के वचनके अनुसार यहहै कि उन्हींवस्तुओं और सौदागरोंके

नामका कुछविस्तार नहींहै जिससे वह मोलखियागया नम्बर (क) सेलेकर (ह)तकचौर नम्बर(घ)में यह इखतिलाफ है कि पहिले कहेहुये रुक्कोंमेंसे हरएकश्राखामें पानेवालेकी रसीद है और (घ)में नहीं है इसमेंयह प्रकट हुवा कि कागज (घ) केवलबहिखाता मतलबकेहै साजिशीनहींहै किन्तुवहइस प्रयोजन से बनाया गया है कि जिसमनुष्य को रुपया दिया गया था उसकानाम जाहिरनहो और उससेदामोदर पन्थकेइस बयानकी तसदीकखयाल की जातीहै कि हीरेजवाहिरातके हिसाबमें जमानहीकिये गये क्योंकिमहाराजा गायकवारने यहकहाथा कि वहदवाके लियेहैं और इसमजमून कीकेवलएकयाददाश्त जवाहरखानेमें तय्यारकीगईथी जिसकेलिये महाराजा गायकवारने उससमय जबकि दामोदरपन्थनेनवीं नवम्बर को कारनैलफियर साहबको विषदेने के उद्योगके उपरांत उसकोबुलाया महाराजा गायकवारने यहहिदायतकी थी कि वहनष्टकर दीजावे इसलिये दामोदरपन्थने नानाजी वतिलसे अलगकरने को कहा और उसने उसको अलग कर दिया और यह रक़म स्वामीनारायण के नामलिख दीगई॥

दफ़ा—५१अब हीरों के विषय में हेमचन्द की गवाही पर नजरडालनी बाक़ीहै इसगवाह ने नाकिस तौर से गवाही दीहै और उसकीगवाही परश्रामतौर से एतिबार नहीं होसक्ता उसका यह मंशामालुम होताथाकि हीरोंकोखरीद के हरकिस्मके तअल्लुक़से इन्कार करेवहयह बातमानताहै कि वहहीरेकीदोपुड़ियां विनायकराव(महाराजा गायकवार के नौकरनानाजी वतिलकासाला)के पास—२१—अक्टूबरयापहिलीनवम्बर—सन्—१८७४—ई०को लेगया परन्तु वहकहता है कि वहपुड़ियां मुझकोलौटा दीगईं वह दामोदर पन्थयानानाजीवतिल या विनायकराव के हाथहीरोंके बेचनेसे इन्कार करताहै वहतसलीम करताहै कि १ दिसम्बर सन्१८७४ई०को मैंने नानाजीवतिलकेपास सेदोहजाररुपयेऔर दूसरीतीसरी

जनवरी सन् १८९५ ई० को फिर दो हजार रुपये और उसके पास से पाये परन्तु वह वर्णन करता है कि यह रुपया हुण्डवी के लेन देन की निसबत था हुण्डवियों का लेन देन शिवचन्द खुशहालचन्द के नाम से जो पूना के कोठीवाल हैं हिसाब किताब में लिखा-जाता है और नानाजी वितिल ने इस कोठी से सात हजार रुपये का असबाब मोल लिया था और हेमचन्द की दूकान से इतने रुपये की हुण्डियां लेकर भेजी थीं यह खूब साबित नहीं होता कि ३ दिसम्बर सन् १८९४ ई० को और २—३ जनवरी को जो दो २ हजार रुपये दिये गये वह हुण्डियों की लेन देन की बाबत थे किन्तु निश्चय करके यह मालूम होता है कि वह रुपया हकीकत में ही उसके वास्ते दिया गया था जैसा कि नानाजी-वितिल ने कहा है हेमचन्द इस बात को मानता है कि दो हजार रुपये जो २—३ जनवरी सन् १८९५ ई० को दिये गये थे वह देशाद मेला को कारकुन के पास से आये थे जैसा कि नानाजी वितिल ने कहा है और रुपये के अदा करने की तारीख नानाजी वितिल के इस बयान के अनुसार है यह रुपया उस रकम का एक टुकड़ा जो हुक्म नम्बर (घ) लिखा हुआ पहिली जनवरी सन् १८९५ ई० में दर्ज है और दो हजार रुपये १—दिसम्बर सन् १८९४ ई० को दिये गये उसके विषय में नानाजी वितिल वर्णन करता है कि मैने यह रुपया हेमचन्द को दिया था परंतु मैने एक हुण्डी और नकद रुपया एक हजार वापिस पाया और बाकी एक हजार रुपया उसके पास जमा किया गया और हेम-चन्द तसलीम करता है कि मैने व्यङ्कटेश के पुत्र विनायक राव और नानाजी वितिल के साले को एक हुण्डी सात सौ पचास रुपये की ८ दिसम्बर सन् १८९४ ई० को करदी थी और उस हुण्डी पर एक सौ पचपन रुपये दस आने बेशी के लिये थे और चौरानवे रुपये छः आने विनायक राव को दिये गये थे जिसका कुल एक हजार रुपया हुवा इससे यह बात साफ साफ प्रगट है कि इस मुआमिले को जिसमें नानाजी वितिल के साथ

एक हजार रुपये जमारहे हीरों की कीमतसे कुछ सम्बन्ध न
था या यहकि नानावतिल ने इससे पहिले कि कुछ रुपया
हीरों के मोल लेने के लिये उसको दिया गयाहो दर्जकर
लिया हेमचन्द की किताबों से दामोदर पन्थ के उसबयाकी
तसदीक में जो उसने हीरों के मोललिये जानेके विषय में
कियाहैबहुत कममदद मिलतीहै उनमेंसे केवल एक किताब
हमारे रूबरूपेश की गईहै उसकिताब में कुछबनावटकीगई
हमइसविचार का कोईहेतुनहीं पातेकिपुलिस को साजिश
करनेसे कुछ प्रयोजन था इस किताब में ७, और ८, नव-
म्बर सन् १८७४ ई०—में यहलिखा है कि नानाजीने दामो-
दरपन्थ केवास्ते छः हजारदो सौ सत्तररुपयेके हीरेमोललिये
और हेमचन्दइस बातकोमानता है कियहरकममेरेहीहाथ
की लिखीहुईहै परन्तुवह वर्णनकरता है कि गजानन्दपुलि-
सकेइन्स्पेक्टर ने जबरदस्तीने मैंनेयह रकमउसदिन संध्याको
जबकिमैंने मिस्टरसूटर साहबके रूबरू पहिले अपना बयान
किया(९—फरवरी सन्—१८७५ई०)लिखीथी पूर्वमें हमवर्णन
करचुकेहैं किहमको निश्चयनहीं है कि गजानन्दवतिलनेइस
भांतिकीजबरदस्ती कीहोक्योंकि यहरकमें उसबयान से कुछ
प्रतिकूलहै जो हेमचन्द ने मिस्टरसूटर साहबके सन्मुख किया
और यहबातभी विचारमें नहीं आतीकि गजानन्द जो अति
चतुर और बुद्धिमान है उसनेइस प्रकारकी खिलाफ बयानी
कीहो परन्तुहम इस मूलपर कियह किताब बदलाई गई है
कुछनिश्चयनहीं करनाचाहते हेमचन्द कीगवाही काकेवल
एकभाग जिसको इसमुकद्दमे से बड़ासम्बन्ध है वह यहहैजो
महाराजासाहबके महलको हीरोंकेलेजाने और तीनहजार
रुपयेके देनेसेसम्बन्धित है॥

दफ़ा ५२—हीरोंके मोललेनेकेविषयमें हमयहनतीजानि-
कालतेहैंकि हमारेविचारमें इसबातके निश्चयकरनेका उत्तम
हेतुहैकिदामोदरपंथनेअक्टूबर औरशुरूनवम्बरसन्१८७४ई०

में महाराजा गायकवार की आज्ञा से नानाजी वकील के पाससे हीरे मंगाये और उनको यशवन्तरावको देदिया और नानाजीनेउनहीरोंको हेमचन्दसे मोललिया और महाराजासाहबके महलके हिसाबकिताब और हेमचन्द के हिसाब किताबमें इसभांति कोसाजिसकी गईहैजिससेहीरोंकामोल लियाजाना छिपजावे बड़ौदानगर केनिवासी हिन्दुस्तानियों केवासियोंके सदृशहीरेकी मोहब्बततासोर परनिश्चय करते हैंवाहो प्रगटमें इसप्रकारके निश्चय मानने कोकोई माकूल वजहनहीं मालूमहोती परन्तुअवयह बातगौर करने को पैदा होतीहै किदामादरपंथने महाराजा गायकवारके जवाहरखानेसे हीरेक्यों नलियेजहां हमेशाहीरे मौजूद रहतेथेइस प्रश्नका केवलयही उत्तर होसक्ताहैकिनयेहीरोंके मोललिये जानेका छिपाना उससेकिवह एकऐसेजवाहरखाने सेलिये जावेंजिसका रक्षकइस मुआमले को अपने हिसाब किताब में जाहिर करना अपना फर्ज समझता जियादह तरसुगम खयाल कियागया॥

दफ़ा ५३—दामोदरपंथ उसदिन संध्याकोजबकिमहाराजागायकवार कैदकियेगये (१४जनवरी सन्१८७५ ई०)पकड़ागयाथाऔरदोदिन पर्य्यन्तमहाराजाकेमहलमेंसेनापती केदफ़्तरमें कैदरहा और फिर रजीडन्सीको भेजदिया गया जहांवह सोलहदिन तकअंगरेजी सिपाहियोंकेपहिरेमें और फिरपुलिसके पहिरेमें रहावह उससमय महलमें उपस्थित थाजबकि महाराजा गायकवारकी गिरिफ़्तारीके उपरान्त उसके कागजों केसिरपर मुहरकीजातीथीं वह वर्णनकरता हैकिजबकि मैं अंगरेजी सिपाहियोंके पहिरेसे तंग आगया औरयह विचारभी मेरेमनमें आयाकि मैंकिसीभांतिसे कैद सेछूट नहींसक्ता इसहेतुसे मिस्टररिचीसाहबऐसिस्टएटरेजी-डण्ट के सन्मुख२९और३० जनवरी कोइकरार करलियाऔर इसइकरारकी तसदीक सरल्यूइस पीलीसाहब केरूबरूकर-

बरीसन् १८७५ ई०को को गई इसइकरार कावही मजमून है जोउसने इसकमीशनके रूबरूबयान किया औरयह इकरार उसनेउस समय कियाथा जब कि सरल्यूइस पीली साहब ने उससे मुआफिकी प्रतिज्ञा करली ॥

दफा ५४—उस के इकरारके उपरान्त उसका वहसंदूक जिसमेंमहाराजा गायकवार के निजके कागजबन्दथे उसके साम्हने खोलागया और कईकागज उसकेभीतरसे पायेगये वहवर्णनकरता है कि यद्यपि अपनी गिरिफ्तारीसे पहिले मुझको सालिमकी जुबानी वह बातें मालूम होजातीथी जो रावजी और २ मनुष्योंके बयानको वह सुना करता था तथापितबतकजबकिमैंने अपना इकरार मिस्टर रिची साहबके रूबरूकिया हरगिज रावजी और नरसूके इकरारोंकाकोई ब्यौरे वारहाल मालूमनहीं हुवा हमयहबात नहीं कहसक्ते कि इस बयानको ठीक माननाचाहिये परन्तुउसके प्रतिकूल कोईगवाही पेशनहींकी गईहै प्रगट होकि दामोदरपंथकरनैल फियरसाहब के जमानेमें कभी रेजीडन्सी को नहींगया औरवह महाराजा गायकवारके साथ एकहीवेर सरल्यूइस पीली साहब केरेजीडएट नियत होने केउपरान्त गयाउसने रावजीको कभीमहलमें नहींदेखा परन्तु वह बयान करताहै कि सालिमने महाराजा गायकवारसे मेरे सामने उससमय जबकि करनैलफियर साहबको सितम्बरके महीनेमें फोड़ाथा महाराजा गायकवारसे यहबात कहीकिमैंनेरावजी कोउस प्लास्टर मेंजोफोड़े परलगाय जाताहैसंखिये केमिलाने परतय्यार कियाथा और इससे फोड़े में जलनपैदा हुई औरकरनैलफियरसाहबने इससबबसे प्लास्टरको अलगकरदियादामोदरपन्थने इसगुफ्तगूका जिक्रकियाहैजोउसकेवचनकेअनुसार महाराजा गायकवारके साथकई दफे ९—नवम्बरसे लेकर उसकीगिरिफ्तारीके जमानेतक हुईथी यदि यहबातें वास्तवमेंहुई और उनके विषयमें उसका बयान ठीकहै तोउ-

इससेमालूमहोताहै कि महाराजागायकवारको वह खबरमालूमथी जो ९—नवम्बरको करनैलफियरसाहब के विषदियेजाने का उद्योग प्रसिद्धहोगयाथा ९—नवम्बरको वार्त्तामेंएकऐसी बातहै जिसकीतसदीक खारिजीगवाहीसे होतीहै और उससे इनमुलाकातों के विषय में दामोदरपन्थके बयानकी मदद होती है जबकि महाराजा गायकवार ९—नवम्बर के प्रभातको रेजीडन्सीसे लौट आते थे तो उन्होंने दामोदरपन्थसे कहा कि सालिमआज प्रभातको रावजी के मकान पर इस प्रयोजन के लिये दौड़ा गया कि जो विष की पुड़िया बाकी रहीहों उनकोलेकर अग्निमेंजलादे अकेलेजुग्गाने जोबड़ौदे के सदरबाजारकी छावनीकी सफाईका मोहतमिमथा जहां रावजीरहाकरताथा सालिमको सदरबाजारकीओर नगरसे जाताहुवा९-नवम्बरकेसुबहकोऔर पांचमिनटकेउपरान्तनगर केतरफसे आतेहुये देखा और मुहम्मदअलीबख्स रेजीडण्टी के चपरासीनेसालिमसे रेजीडण्टीके मुक़ामपर इससेपहिले किकरनैलफियरसाहब हवाखानेसेलौटआवेंकुछवार्त्ताकीऔर जबवह सदरबाजार से डाक्टरसीवर्डसाहबके मकानसे बिदा होकर जहांवह करनैलफियरसाहब की चिट्ठीलेकरगयाथा रेजीडण्टीको लौटआताथा तो उसनेमार्गमें सालिमको शहरकीतरफ आतेहुयेदेखा' अब अकेलेजुग्गा और मुहम्मदअलीबखशकी इस गवाहीसे चाहे यहबात साफ २ साबित नहीं होती कि सालिम ९—तारीखके प्रभातको रावजीके मकानको गया परन्तु उससे मालूम होताहै कि वह अवश्य गयाहोगा और जो सालिममहाराजा गायकवार के पास इससेपहिले किमहराजासाहबउसदिन भोरकोनियमकेअनुसाररेजीडण्ट साहबके मिलनेको आवें वापिस पहुंचगयाहोगा इससबब से वहबात जो महाराजागायकवारने दामोदरपन्थसे बयानकी अर्थात् यह कि सालिम रावजीके मकानको इस प्रयोजन से गयाथा कि जोकुछ चूरह बचाहो उसकोजलादे अवश्यठीक

मालूम होता है और यह बात अतिकठिन समझमें आती है कि जो बयान महाराजा गायकवार ने दामोदरपन्थसे किया था उसको अपनेमनसे बनाया हो॥

दफ़ा ५५—दामोदरपन्थ यहभी वर्णन करता है कि महाराजा गायकवारने मेरे साम्हने बराबर यशवन्तराव और सालिमको यहताकीदकी कि वह विषदेनेके विषयका कुछजिक्रनकरें यहमनुष्य इसतहकीक़ातमें मुद्दई या मुद्दआअलेह की ओरसे गवाहोंकी तौरपर बुलाये नहीं गयेहैं दामोदरपन्थने उसरीतिकोवर्णनकियाहै जिसके अनुसार उसके खानगी सरिश्ते में हिसाबरहताथा इसजगहपर केवलइसबातका जिक्र करना काफ़ीहोगाकि सबसेपहिला कागज़ वहयाददाश्त है जिसमेंरुपयेकेदेनेकाबाबतआज्ञाहै औरजिसपरपानेवालेकीरसीद है इसयाददाश्तसे हरदिन एकरोज़नामचा और रोजनामचेसेमाहवारीहिसाब और माहवारी हिसाबसेवर्षकाहिसाब तय्यार किया जाता है याददाश्त और रोजनामचा सुगमता पूर्व्वकनष्ट होसक्ते हैं परन्तु जबकि एक दफ़ा मासिक हिसाब तय्यार होजावे और वार्षिक हिसाबमें संयुक्त करदियाजावे तो किसी खास रक़म के पता मिटाने में बहुतसी दिक्कत हो जाती है और यही कारण है जो दामोदरपंथने प्रश्नोत्तर के समय उनसम्पूर्ण कागज़ों के नष्ट करने के विषय में बयान की जो किसीतरह परउनमुआमिलों से सम्बन्धित हैं जोइस तहकीकात के सबबसे हुये हैं चार रोजनामचों में रक़मों के मिटानेका इरादाकिया गयाथा दामोदर पंथ कहता है कि मैंने बलवन्तराव क्लार्कसे कहाकि जिस जगह पर सालिम का नामलिखाहै वहांरोशनाईडालकरमिटादो बलवन्तराव रक़मों केमिटानेसे इनकार करताहै यहरक़में बड़ीबेतमीज़ी से मिटाईगईं चाहेउनका कुछचिह्न भी बाक़ीन रहा दामोदर पंथबयान करताहै कि मैंनेइन रक़मों को इन मुआमिलों में सालिमका नामछिपाने और महाराजागायकवार कोबचाने

के लिये भिटवाया था और यह काम मैंने गायकवार की आज्ञासे किया था वह अब तसलीम करता है कि यह बात अति अनुचित थी क्योंकि रोशनाई के दाग़ जल्दी दीखते हैं यह काग़ज़ दामोदर पंथ के उन कागजों के हिस्से थे जो महाराजा गायकवार की गिरिफ्तारी के दिन महल में मोहरबन्द किये गये थे और गजानन्द और मिस्टर सूटर साहब की गवाही से मालूम होता है कि जब यह काग़ज दामोदर पन्थ के साम्हने लेगये तो वह उसी दशा में थे जैसे कि वह हमारे रूबरू पेश किये गये अन्त में दामोदर पन्थ वर्णन करता है कि नूरुद्दीन को सखिये के लिये कुछ रुपया नहीं दिया गया क्योंकि उस संखिये के देने के बदले उससे यह प्रतिज्ञा की गई थी कि महाराजा गायकवार के शफ़ाखाने में उसको कुछ काम दिया जावेगा नूरुद्दीन गिरिफ्तार किया गया है परन्तु उसकी गवाही नहीं ली गई॥

दफ़ा ५६—इस मुक़द्दमे में बाक़ी गवाही अमीना आया और उन मनुष्यों की है जो उससे सम्बन्ध रखते हैं पहिले आया फियर साहब की मेम साहिबा के पास नौकर रही और मार्च सन् १८७४ ई० में उनके साथ बम्बई को गई इसके अनन्तर वहां एक महीने बम्बई में रही और बड़ौदा को लौट आने के उपरान्त मिस्टर बोवी साहब की मेमसाहिबा के पास जो उन दिनों में बड़ौदे में रहते थे नौकर होगई वह कहती है कि मैंने तीन दफ़ा महाराजा गायकवार से उनके महल में मुलाकात की और वहां संध्या का समय था जब कि पहिली मुलाकात उसने रौओजी के चोबदार फ़ैजू के साथ उस समय की थी जब कि सन् १८७३ ई० को कमीशन उठने को थी और वह बयान करती है कि मैं फ़ैजू के कहने सुनने से गई थी अमीना और फ़ैजू को सलाम करने गायकवार के सम्मुख पेश किया जो अकस्मात् उनको मार्ग में मिल गया था गायकवार ने अमीना से पूछा किया था तूने मिस्टर फियर साहब की मेमसाहिबा को जवाबी कमीशन के विषय में कोई ख़बर है और उसको यह हिदायत

क्योंकि जो कुछ मेमसाहिबा ने जिक्र किया [illegible] सालिम और यशवन्तराव के द्वारा उसको इत्तिला भेजदी यद्यपि फ़ैजू इस बात से इन्कार करता है कि उसने अमीना आया को महाराजा गायकवार के पास जाने के लिये तय्यार किया तथापि वह बयान करता है कि मैं महाराजा गायकवार के पास उसके साथ गया और कारभाई उस वक्त गाड़ीबान था मैं ने वह वार्त्ता सुनी जो आया और महाराजा गायकवार के बीच में हुई गायकवार ने आया से कहा कि वह मिस्टर फियर साहब की मेमसाहिबा से उनकी सिफारिश करें क्योंकि बहुत से मनुष्य रेज़ीडण्ट साहब से उनकी निस्बत अरज़ कर रहे थे आया ने उत्तर दिया कि मैं फियर साहब की मेमसाहिबा से कुछ अरज़ नहीं कर सक्ती कारभाई कहता है कि मैं अमीना आया और फ़ैजू को इस दफ़े गाड़ी में सवार करा के महाराजा साहब के महल को ले गया॥

दफ़ा ५७—आया वर्णन करती है कि मैंने जून सन् १८७३ ई० में दूसरी मुलाकात महाराजा गायकवार के नौसारी से लौट आने के उपरान्त सालिम और करीम के कहने से की थी उसके साथ करीम गया था सालिम मार्ग में उनके साथ होलिया और आया और करीम को गायकवार के पास ले गया. महाराजा गायकवार ने आया से पूंछा कि मिस्टर बोवी साहब की मेमसाहिबा ने हमारे विवाह के लिये जो नौसारी में हुआ कुछ तुमसे जिक्र किया है अमीना ने उत्तर दिया कि मैं ने कुछ नहीं सुना परन्तु अब मिस्टर फियर साहब की मेमसाहिबा इङ्गलिस्तान से लौट आवेंगी तो आपके लिये कुछ बेहतरी होगी क्योंकि यह मेमसाहिबा और कर्नैल फियर साहब आपसे अति प्रसन्न हैं फिर महाराजा गायकवार ने करीम से कहा कि तुम मेरी निस्बत मिस्टर बोवी साहब से कुछ खैर के वचन कहो जब अमीना और करीम विदा होने को हुये तो महाराजा गायकवार ने सालिम से कहा कि तुम उनको कुछ देदो तब सालिम ने करीम से कहा कि तुम कल यशवन्तराव के मकान को आना तथा च दूसरे दिन संध्या को करीम

अमीनाके पासआया और कहा कि मेरे पास दोसौ रुपयेहैं जिसमेंआधेरुपये उसनेदूसरे दिनसुबहको अमीना आयाको देदिये अमीनाने विचारकियाकि यहइनआमउसीविवाहका है जोनैासरीमेंहुवा जोबयानआयानेमहाराजाकी मुलाकात औरगुफ्तगूआममग्याकी निस्बतकियाहैउसकी तसदीककरीमनेकीहै परन्तु वहबयानकरताहैकि महाराजागायकवार ने अमीनासेपूछाकि हमसेरेजीडण्टसाहब विवाहके करनेसे (जिससेकि महाराजासाहबका प्रयोजनलक्ष्मीबाईकेविवाहसे था)अप्रसन्नतोनहीहैंवहवर्णनकरताहैकि मैंदूसरेदिन यशवन्तरावके मकानकोगयाऔर वहांसालिमनेमुझकोदोसौरुपये नैासारीकेविवाहके पारितोषकेदियेजिसमें आधेमेरेलिये और आधे अमीनाके लियेथे तथाचमैंने सौरुपये अमीनाकोदेदिये इसगवाहने आयाके इसबयानसेकि उसनेअमीनासेमहाराजा साहबके पासजानेकी दरखास्तकीथी इखतिलाफकियाहैऔर वहबयान करताहै कि वह मुझको लेगई इसदफेपर सन्दल नामेगाडीवानथा और उसनेइसबातकोसाबितकियाहैकिवह अमीनाऔर करीमको गाडीमें सवारकरकेमहलकोलेगया ॥

दफा५८—आयावर्णन करतीहैकि तीसरीमुलकात रमजान मेंहुई और उसकेपतिने मुलकातकी तारीखउसमहीनेकीपन्द्रहवींया अट्ठारहवीबतलाईहै सन् १८७४ ई० में रमजानबारहवीं अक्टूबर सन्१८७४ ई० को शुरूहुवाथा इससेअब्दुल्लाके बयानके अनुसार यहमुलाकात सत्ताईसवींया तीसवींअक्टूबर कोहुईहोगी अमीनाकहतीहै किसालिममेरेपास इसमजमूनका पैगामलाया कि महाराजागायकवार तुमसे मिलना चाहतेहैं तथाचमैं और मेराखिदमतगारलड़काछुट्टूएकगाड़ी में बैठकर जोमेरे पतिनेमंगादी थी महाराजासाहबके पास गई और मार्गमें मैंने सालिम को बुलाया और उसके साथ महाराजागायकवार के रूबरूगई और महाराजा साहब के साथमुझसे नीचेलिखीहुई वार्त्ताहुई ॥

पहिले महाराजासाहब ने मुझसेपूछा कि क्यामेमसाहबा ने बच्चे के लिये कुछ जिक्र कियाहै मेमसाहबासे मिष्टरबोवी साहिबकीमेमसाहिबासे प्रयोजनहै और लड़केसे मुराद उस लड़केसेथी जोमहाराजासाहबकेयहां उत्पन्न हुवाथा मैंने कहा मेमसाहबाने कुछनहीं कहा और मुझको कुछहालमालूमनहीं इसकेअनन्तर मैंने महाराजासाहब सेकहाकिजबमेमसाहिबा आपकेपास लौटआयेंगी तोआपकेलिये कोई बेहतरीकीबात होगी मेमसाहिबा और करनैलफियर साहब दोनोंखैरख्वाह हैं पस जोसाहब कहैं तुमको उसपर अमलकरना चाहिये और कुछ भयमानमतहो फिर सालिमने कहा कि कोई जादू भी काम देसक्ताहै यानहीं सो सालिमने सबसे पहिले जादू का जिक्रकिया अर्थात् सालिमने कहा किजो कोई जादू किया जावे तो क्यासाहबका मन फिरजावेगा परन्तु उसकाठीकर मतलब मेरीसमझमें नहींआया फिर मैंनेसालिमसे और महाराजासाहबसेभी कहाकि आपसाहबकेलिये कोई जादूनकीजियेक्योंकि साहबको उसका कुछ असरनहोगा और इसका मैंने यहसबबबयान किया किसाहब लोगकेवल ईश्वरको मानतेहैं फिर सालिमने मुझसेकहा कि कोई वस्तु साहबको खिलादी जावे तोतुम्हारे विचारसे उसका क्या असरहोगा उसकेसुनने से मुझको अत्यन्त भयहुवा क्योंकि इससेपहिले मैंनेदोमनुष्यों की जबानी कुछजिक्र सुनाया फिर मैंने कहा कि महाराजा साहब अबआपसे बिदाहोतीहूं मैंउससमय महाराजा साहब को यहां नहींदेखती जो वहपहिले मौजूदहोते तो वहमेरे बयानको तसदीक करतेफिर सालिमने मुझसेकहा किजोकुछ महाराजा साहबकहें तुम उसको कानलगाकर सुनो जोतुम उनकाकहना करोगी तो तुम्हारीशेष आयुकेलिये तुमको निवाहकाद्वारा खुलजावेगा फिरसालिमनेमुझसे कहाकितुम्हारे पतिकोभी नौकरी होजावेगीऔर तुमको आगेनौकरीकरनेकी कुछ आवश्यकतान रहेगी इसके उत्तरमें सालिमसेमैंने कहा

कि मैं आजतक उपवासनहीं करतीरही हूं मैने अपनाजन्म अंगरेजी नैाकरीमें बिताया है जब मैंमहाराजा साहबसे बिदा होनेकोथी तो मैने महाराजासाहब से कहा कि जो कोई मनुष्यऐसे रेजीडण्ट साहबपर जादू करने के लिये कहे तो उसपर आप मेहरबानी न कीजिये क्योंकि जो साहब को कोई दुःखपहुंचेगा तो आप तबाह होजावेंगे तब मुझकोयह खयाल आयाकि महाराजा साहब इसबातपर क्रोधितहोगये क्योंकि उन्होंने सालिमसे कहा कि तुम इसआयाको लेजाओ तथापमें और सालिम सीढ़ी परसे उत्तरकर वहां गये जहां गाड़ी ठहरी हुई थी"यह बात स्मर्ण होगी कि लक्ष्मी बाई के सोलवीं अकटूबर सन् १८७४ ई० को पुत्र उत्पन्न हुवा था जब सालिम दूसरीदफा रेजीडण्टीको आया उसने अमीनासे कहा किमैंनेपचासरुपये तुम्हारेबिस्तरेके नीचेरखदिये हैं तथा यह रुपये उसने वहांपाये छुट्टूने आयाके इसबयानकी कि वह इसदफे उसकेसाथ महलको गई मददकी है और इसी-तरह दाऊद गाड़ीबान ने भी उसकी तसदीक की है जो मुलाकात की तारीख पिछली दिवाली से दो या चारदिन पहिले बयान करताहै सन् १८७४ ई० की दिवाली ९–नवम्बर सन् १८७४ ई० को हुई थी ॥

दफ़ा ५९—अब्दुल्ला अमीनाकापति वर्णनकरताहै कि सालिम रेजीडण्टीके अहातेमें फैजूकेमकानपर पानीपीनेकोजा-या करताथा मुझसेमेरी स्त्रीने पहिली और दूसरी मुलाकात का जिक्रकिया और मैंइसबातको जानताथा कि उसको सौ रुपयेमिलेथे औरअब्दुल्लानेइसगुफ्तगूकामतलबबयानकिया है जो गायकवार और अमीनाकी तीसरी मुलाकातमें हुईथी और जिसकाजिक्र अमीनाने उससे कियाथा अब्दुल्ला यहबात जानताथा कि उसकीस्त्री को तीसरी मुलाकातके पीछे पचास रुपयेमिलेथे जिनदिनोंमें अमीना बम्बईमें औरवह बड़ौदेमेंथा

तो एकचिट्ठी अमीनाकेपाससे उसकेपास आईथी और इसमें महाराजागायकवारके नाम एकखतथा ॥

दफ़ा ६०—कईचिट्ठियां जो अमीना और अब्दुल्लाने आईं गईं जबकि वह सन् १८७४ ई० में अलग २ शहरोंमें रहतेथे अदालतके रूबरू पेशकीगईं इनसब चिट्ठियोंमें सालिम और यशवन्तराव था उन मुआमिलों का जिक्र है जो बड़ौदे की रियासतसे सम्बन्धितथीं चिट्ठी अक्षर [घ] लिखीहुई २९ मार्च सन् १८७४ ई०में जो अमीनाकी ओरसे अब्दुल्लाके नामलिखी गईहै आयासे पूछागयाहै कि उसकेपास वह कागजपत्र था वा नहीं जो उसकी पहिली चिट्ठीमें लिपटा था अमीना और अब्दुल्ला और अब्दुल रहमान उर्फ रहीम साहब जिन्हों ने यह चिट्ठियां अमीना के वास्ते लिखी थीं बयान करते हैं कि यहचिट्ठी महाराजा गायकवार के नाम थी अब्दुल्ला कहता है कि मैंने यह चिट्ठी अमीना को बम्बईमें महा बलेश्वर को जाते लौटादी और इस विषय में संदेह करने का कोई हेतु नहीं है कि अमीनाने इस प्रकारकी चिट्ठी लिखीथी जिसका मतलबअब्दुल रहमानने अपनीयादसे यहवर्णन कियाहै कि इसमेंमहाराजागायकवार से रुपये मांगे और यह लिखा था कि बम्बईके गवर्नर साहब के मकानपर एक दावत हुई और वहां अमीना ने कुछ हाल तहकीक किया और अन्तपर यह शब्दथे कि तुम भयमान मतिहो यह चिट्ठी पेश नहीं की गई परन्तु यहबात साफप्रगटहै कि यहचिट्ठी कदाचित् महाराजा साहब को नहीं दीगई प्रगट होकि करनैलफियरसाहबने वह बयानकियाहै कि जबकरनैल साहबमार्च सन् १८७४ ई० में बम्बई में थे तो वहसाहब गवर्नरबम्बई के साथ खानाखाने के लियेगये थे ॥

दफ़ा६१—हमनिश्चय करतेहैंकि अमीनातीनबेर महाराजा गायकवार की मुलाकात के लियेगई जैसा कि पहिले बयान

हुआ और इसप्रकार की वार्त्ता जैसोकि उसने बयान की है इसकी और महाराजा सहबकी हुई ॥

दफ़ा ६२—अबमुद्दईकी ओरसेबयान खतमहोचुका तो महाराजागायकवार के वकीलने उनकी ओर से एक लिखा हुवा जवाबदावा पेशकिया नतो महाराजा गायकवार की ओरसे गवाहबुलायेगये और न कमीशनके रूबरूउनसेकोई प्रश्नपूछा गया तथाच उनकेबयानका मुख्यआशय नीचेलिखा है ॥

मुझको करनैलफियरसाहबसे कभीखतःबैरनथा औरनअबहै यहबात निस्संदेह सचहैकि मुझको और मेरेवजीरों कोयह निश्चयथा किजोरीति करनैलफियरसाहबने इख्तियारकीथी उस से यहबात असम्भावित थी कि जो प्रबन्धमैंने उसहिदायत के अनुसारजो सन् १८७३ ई० की कमीशन की रिपोर्ट पर जो २५-जुलाई सन् १८७४ ई० के खरीतेके द्वारा मेरे पास भेजी गईथी तजवीजकिये थे और जिनकेपूरा करने में कोशिश कर रहाथा इनकी खातिरख्वाह तकमीलहो इस विचारसे और दादा भाई नौरोजी और बालामंगेश बैगल और हुरमुजजी और शेरोबिदया और काजीशहाबुद्दीन और अपनेवजीरोंसे बड़ीदेर तकसम्मत करके मैंने २—नवम्बर सन् १८७३ ई०को खरीताकरनैल फियरसाहब के द्वाराश्रीमान् वैसरायकेशरण में भिजवाया और उनकेंकहने सुननेपर मुझको निश्चय था कि जब असलहकीकत श्रीयतवैसराय को मालूम होगी तो मेरी अरजपर कृपादृष्टि होगीमेरेसम्पूर्ण वजीरों को भी यहनिश्चय था और जो सल्तनतश्रीह गवर्नमेण्ट बम्बई ने रेजीडण्ट साहब कोकीथी उसके जाननेसे हमारा यहनिश्चय दृढ़होगया तथाच २५ नवम्बर सन् १८७४ ई० को करनैल फियर साहब बड़ौदेसे बदलाये गये इस से प्रगट होता है कि हमारी यह राय कुछ गलत नथीपसनतो कोईनिज द्वेषकिन कोईद्वेषका सबब ऐसा था जो मुझको इस अपराध के करनेपरतय्यार करता जिसका

इलजाममेरे ऊपरलगाया गया है और मैं सौगन्द खाकर यह बात वर्णनकरता हूं कि मैंने कभी न तो स्वत: और न किसी अपनेएजण्ट केद्वारा इसप्रकार कीहिदायत की औरमैं बयान करताहूं किइसविषयमें अमीनाआयाऔररावजी और नरसू और दामोदरपंथकीसम्पूर्ण गवाही बिल्कुल गलत है मैनेरे-जीडन्सीके किसीनौकर कोरेजीडण्टके जासूसकाकामदेने या जो कुछ रेजीडण्टीमें होताथा उसकी मुझको इत्तिलादेने की कभी हिदायत नहीं की औरन मैने इनको किसी प्रयोजनके लियेरुपया दियाऔर नरुपया दिलवाया मैंइनदामोंका कुछ जिक्र नहीं करताजोकिसीउत्सवयातेवहारोंमें जैसाकिविवाह आदिमें शायद रेजीडण्टीके नौकरों को दिये गये हों चाहो छोटे२ मुआमिलोंकीजोरेजीडण्टी औरमेरेमहलमेंहोतेहैंदो-नोंतरफोंके मनुष्योंको मालूमहोतेहोंपरन्तु मैने स्वत:इसप्रयो-जन केलिये इननौकरों सेबार्त्ता नहींकी औरनमैं इसबातको जानताहूं कि इस प्रयोजन केलिये कुछ रुपया दिया गयाहै औरन मैनेइस प्रकारके प्रबन्धकी आज्ञादी जिससे रेजीडन्सी कीखबरें मुझको मिलें ॥

दफ़ा ६३—अबहम उससब गवाही काजो इस मुक़द्दमे के समझनेके लिये आवश्यकथी संक्षेपमें वर्णन करचुके गवाही केबाकी हिस्सोंका जिक्र उस रायमें जो हम आगे को बयान करेंगे कियाजावेगा ॥

दफ़ा ६४—हमअपना निश्चय इसबात परबयान करचुकेहैंकि करनैलफियरसाहबके शर्बतके प्यालेमें९ नवम्बर सन् १८७४ई० को विषमिलायागया औरहमको इसविषयमें कुछसंदेह नहीं हैकियह विष करनैल फियरसाहबके मारडालने कीइच्छा से मिलायागया हमारीरायमें इसबेकीनकेवास्ते किइससेपहिले सितम्बरमहीनेकेअखीरहिस्से और९ नवम्बरकेबीचमेंकरनैलफि-यरसाहबकोविषदेनेका उद्योगकियागया अतिउत्तम प्रमाण

हैतथाच कोई दफा रावजीने उससमय रेजीडण्ट साहबको विष देनेकाउद्योग किया जबकि उसनेतीनदफे मिलेहुये चूरोंको खिलाया औरजोउसको पूरीखुराक संखियाके देनेमेंभय नहोता तो अवश्यहै कि करनैल फियरसाहब सख्त बीमार होते वाहो उनके प्राण जाते न रहते॥

दफ़ा ६५—हमअपनाइसविषयमेंभीनिश्चयप्रगटकरचुकेहैं कि रावजीने नरसू से मिलकर९—नवम्बरको शर्बतके प्याले मेंविष मिलाया था वाहो नरसू विषके मिलाते वक्त उपस्थित नथा हमखयालकरतेहैंकि रावजी और नरसूकेइनउद्योगोंसे अपने स्वामीको दुखपहुंचानेको कोई अपना प्रयोजनथा किन्तु और मनुष्यों ने उनको बहकाया था और हम विश्वास मानतेहैं कि वहशख्स गायकवारथा जिसनेउनको सिखायाथा तथाच हमारे विचार में रावजी और नरसू और दामोदर पंथकी गवाहीसे इसकासुबूतहोताहै जोमिलेहुयेचूरे रावजीनेपहिले चूरेमिलायेथे उनकाएक हिस्सासंखियाथा और जोचूरा ९—नवम्बरको मिलायागया उसमेंसंखिया और हीरेका चूरहथा॥

दफ़ा ६६—जिस हेतुसे महाराजा गायकवार करनैलफियर साहबको विषदेनेपर तय्यारहुये वहयहथा कि वह रेजीडण्ट साहबसे महावैर रखतेथे और उनकीबदली चाहतेथे तथाच जो खरीता दादाभाई नौरोजी महाराजागायकवार के वज़ीर ने गायकवार की ओर से श्रीयुत वैस राय बहादुर के नाम १२—नवम्बर सन् १८७४ ई० को लिखा था उससे वह वैरखूब जाहिर होताहै जोगायकवारको करनैलफियर साहबसे था॥

अर्थात् महाराजा गायकवारने लिखा था कि मुझको यह खयाल आया कि जो रीति करनैलफियर साहब रेजीडण्ट ने हमेशासे मेरेलिये इख़्तियारकीहै उससेमें हुजूरको इत्तिलाइं या नहीं और हुजूर के हीरके लिये यह बात अरज करूं कि उस नाइत्तिफाक़ीकीसूरतमें जोहमारेमध्यमेंहै रेजीडण्टसाहब

के हाथसे आनेको बगैरकिसी साहबके अच्छे सलूककी क्यों कर आशा कर सक्ताहूं फिर गायकवारने अपने और अपने प्रबन्ध के विषयमें रेजीडण्ट साहबके दिलीबैरका जिक्र कियाहै और बहदोहष्टान्तइसबातके बयानकिये हैं कि पहिले करनैलफियर साहबके चालचलन के लिये एतिराज कियागया है और यह लिखाहै कि यहदोहष्टान्त जोमैने बयानकियेहैं उनसेउसपरेशानी औरदुखका हालखूब समझमें नहीं आसक्ताहै जोमुझको हालमें रेजीडण्टसाहब के हाथसेपहुंचताहै अंगरेजी गवर्न्मेण्टकेनायबकी यह रीति मेरे लिये बड़ीचिन्ता और दुखका हेतुहुवाहै विशेषकरइससबबसे कि ऐसेसमयपर बहुतसे लोग औसरपाकर अपनेलाभके प्रयोजनसेमेरी निस्बत गलत खबरें मशहूर करतेहैं और सदा मेरी प्रजाको मुझसे घृणा और आज्ञाके तोड़नेपर तय्यारकरतेहैं इसकायह परिणाम होगा कि इसवर्षकी आमदनी में बड़ी हानि होगी और मेरीप्रजा सदैवचिन्तित और दुखित रहेगी और इस बातका समझना कुछकठिननहींहै कि इनबातोंसे उसप्रबन्धमें बड़ा विघ्न होगा जोमैं करनाचाहताहूं हुजूर उसकामकेमूल और अन्दाजेको खूब जानतेहैं जोमुझको करना पड़ताहै सोमैं अपनी ओरसे और जिन मनुष्योंको मैने उस कार्य्यके लिये नियत कियाहै उनकी ओरसेयह विनयकरताहूं कि यदि करनैलफियर साहबयहां इसीतौरसे अंगरेजी गवर्न्मेण्टके नायब रहेंगे और मेरे और मेरेअहलकारोंसे इसीभांतिसे ईर्षा और बैरकरेंगे तोमुझकोअपनीकोशिशोंके कामयाबीकीकभी आशा न होगी॥

मैं नेकनिय्यती और दियानतदारी के सिवाय और कोई बात करनैलफियर साहबसे नहीं करताहूं परन्तु उनकी राय और तदबीर एकं निराले तौर कीहै और उनकीराय और विचार बाजे सुआमिलोंमें एतिदालकी हद्दसे बढ़गयेहैं और जोकुछउन्होंने अबतक कहाहै याकियाहै उसकीमददकरना वहअपने जिम्मेजरूरी समझतेहैं॥

दफ़ा ६७—इस चिट्ठीके उत्तरमें श्रीमान्वैसरायवीरेशने उन खबरोंकेनिस्बत जिनपर महाराजागायकवारनेबड़ौदेके रेज़ीडे-ण्टको बदलीचाहीथी बहस करना इष्टयाख्यालकिया परन्तु जो मुआमिले जहूर में आयेथे उनपर खूब लिहाज़ करके और सिवाइसके गवर्न्मेण्टहिन्दकेइसइरादेपर अमल करकेकिम-हाराजागायकवारको एकनवीन प्रबन्धकी कामयाबीके साथ करनेके लिये हर प्रकारसे मौका दिया जावेगा हुजूरममदू-हने महाराजा गायकवारको इसइरादे सेइत्तिलादी किहम सरल्यूइसपीली साहबके—सी—ऐस—आईको कर्नैलफियर साहबकी जगहपर बड़ौदे में एजण्ट नियतकरनाचाहतेहैं॥

दफ़ा६८—जोगवाही इसमुकद्दमेके मिसलमेंसंयुक्तहैं उसका ज़ियादह तरहवालादेना और इसबातका साबित करनानि-हायत फ़जूलहै कि महाराजा गायकवार कर्नैलफियरसाहब सेमहाशत्रुता रखतेथे यहसचहै कि जबकर्नैलफियरसाहबने महाराजागायकवारसे दूसरीनवम्बरके खरीतेका ज़िक्रकिया तोमहाराजा साहबने यहबयान किया कि मिस्टरदादाभाई नौरोजजीदीवानने उसखरीतेकोलिखाथा और यहीदीवानउस काजवाबदेहहैयहबातसाफ़ज़ाहिरहै कियहमहाराजगायकवार काबहानाथाऔरमहाराजासाहबको जो यहइजाज़त दीगई थी कि वह आपही अपनादीवानचुनलें उसकोयहमंशाथी (जैसाकि कर्नैलफियरसाहबने जुबानी महाराजागायकवार से वर्णनकियाथा)कि जोखतकिताबत वहगवर्न्मेण्टबम्बई या श्रीमान्वैसरायवीरेश के नामसे भेजेंउसके वहआपही जवा-बदेहहों सिवाइसके महाराजागायकवारने उसलिखेहुयेजवाब में जोउन्होंने हमारेसम्मुख पेशकियाहै यहतसलीम कियाहै कि उन्होंने वह खरीताभिजवायाथा महाराजागायकवारके विवाहमेंजो नौसारीमेंहुवाथा कर्नैलफियरसाहबका संयुक्त नहोनाचाहे वह गवर्न्मेण्टहिन्दकी आज्ञाके अनुसार था महाराजागायकवारको नागवारमालूम हुवाहोगा और जो

इसमुआमिलेमें महाराजासाहबने आयासे वार्त्ताकीथी उस का मतलब सिवाय इसके और कुछनहीं होसक्ता कि उनको विवाहकी बड़ीचिन्ताथी और इसमेंकुछ संदेहनहीं कि यह चिन्ता उनकोपुत्रके उत्पन्नहोनेके उपरान्त और भी अधिक होगई होगी ॥

दफ़ा ६९—इसबात को तमीजकरना कठिनहै कि महाराजा साहब कारनैलफियर साहब से देशके किसी कारण से अपनेमनमें बैर रखतेथे या निजडौलसे अपने मनमेंबैररखते थे इस तहक़ीक़ात में किसीतरहपर यहबात साबित नहीं हुईहै कि कारनैलफियरसाहब ने महाराजागायकवार के विषयमें कोई जातीबदसलूकी जाहिरकी थी. जोजहांतक हम को मालूम होसक्ता है कारनैलफियरसाहब और महाराजा गायकवारमें देशके प्रबन्धमें मतान्तरके होनेसे बैरपैदाहुआ था परन्तु इसविषय मेंभी कोईबात नहीं होसक्तीहै कि जो ग्लानि महाराजासाहब कारनैलफियरसाहबसेरखतेथे उसका देश और अपनेडौलके दोनोंहेतुओंसे बुनियादथी और हम उनकेइसबयानको ठीक नहीं मानसक्ते कि उनको कारनैलफियरसाहबसे कोईजातीबैर नथा ॥

दफ़ा७०—जिसरीतिसे महाराजागायकवारनेरावजी और नरसू और अमीना आयासेवार्त्ताभुगुकीथी उसकाअन्तको यहनतीजाहुवाकि रेजीडण्टसाहबको विषदेनेकेलियेसाजिश कीगई और यहबातउसगवाहीसे साबितहुईहै जिसकोहमने संक्षेपमें वर्णनकियाहै पहिले सन् १८७३ई० के अन्तमें और सन् १८७४ई०के प्रारम्भ में महाराजागायकवारका प्रयोजन प्रकटमें केवल इसबातकी इत्तिलाहासिलकरना था जोरेजी-डेंसीमें बड़ौदेकी रियासत के मुआमिले पेशहोवें महाराजा साहबहरएकबातकोबिल्कुलअपनेआधीनरखतेथेऔरसालिम और यशवन्तराव से एजण्टका कामलेतेथे और जो कुछहो-ताथा उसको अपने प्राईवेटसीक्रेटरी दामोदरपंत कोभी नहीं

बतलाते थे महाराजा साहबराव जी और नरसू से अलग अ-
मीनामिवर्तिं करतेथे जब कि महाराजा गायकवार इसबात से
बड़े तंग हुये कि रेजीडण्ट साहबने लक्ष्मीबाई के साथ उनके
विवाह के और उसके लड़केके पुत्रहोने का तसलीम करने से
इन्कारकरदिया तो उससमय उनको विषदेनेका खयालआया
और उन्होंने वैसाही किया महाराजाने रावजी और नरसूको
तरक्की और पारितोषकका लोभदिया तथाच उनको उसपा-
रितोषकका बड़ा भरोसा उनरकमों के सबब से होगया जो
उनको दीगई हालांकि जिस प्रयोजनकेलिये उनको रुपयादिया
गयाथा यह अबतक जैसाकि वर्णनकियागया केवलयहीथा किजो
कुछ रेजीडण्टीमें होताथा उसकीखबरदियाकरें सन् १८७३ ई०
के अन्तमें महाराजा गायकवारने रावजीको उसके विवाह के
समय पांचसौ रुपये दिये फिर मई या जून सन् १८७४ ई० में
तीनसौरुपये महाराजागायकवारके विवाहका पारितोषक
कुलआठसौ रुपये मिले नरसूको तीनसौरुपयेनौसारीकेविवाह
के इनआमके और दोसौपचास रुपयेबिनाबयान करनेकिसी
खासकामके उसकोमिले कुलसाढ़े पांचसौरुपये हुये जो श्री-
महाराणी विक्टोरिया और बड़ौदे के रुपये की कीमतमें अन्तर
है उसको मुजरा देकर भी निस्संदेह यहरक़में उस थोड़े
मासिकके लिहाजसे बड़ीथीं जोरावजी और नरसूको रेजी-
डण्टीमें मिलतीथीं और यहोदया उसडेढ़सौ रुपयेकीहै जो
आया को दोदफेमिले अर्थात् पहिले महाराजा गायकवार
के विवाहकेसमय और दूसरे उससमय जबकि उसको पचास
रुपये अपनी अन्त की मुलाकात के उपरान्त जो अक्टूबर
सन् १८७४ ई०में हुईथी मिलेथे औरउनको किसी खास हाल
सेकुछ तअल्लुक़ नथा हमको इसरायकेजाहिरकरनेमें कुछशंका
नहींहैकि यह इनआम इननौकरोंको इसबात परआमादाकरने
केलिये दियेगयेथे किजोकुछ महाराजा गायकवार के मुशा-

मिलेहैंजोउन्होंनेहोंउसकोसदाखबरदेतेरहें और यहमामूली पारितोषकनथे जो महाराजासाहब खुशीपररेजोउन्होंकेनौकरोंको दियाकरतेथे सो जोरुपया इसप्रकारसेदियाजावेतो वह हमारेविचारसेरिशवतहै परन्तुहमयहबातनहीं कहसक्ते कि महाराजागायकवार भी इसकोरिशवत समझतेथे यानहीं॥

दफ़ा ७१—परन्तुयह प्रश्नपूछा जासक्ता है कि महाराजा गायकवार का रावजी और नरसूसेयह आशाहोसक्तीथी कि वहएकऐसी रकमकेबदलेजिसको उसकामसेकुछ सम्बन्धनथा जिसकापूराहोना उनकेजिम्मे ठहराया।मारडालें इसकायह उत्तरहोसक्ताहै कि महाराजा गायकवारने उसरुपयेकेद्वारा जोउन्होंने नरसू और रावजीकोदिया और अपनेपास उनके बुलाने और वस्तुओंके देनेसेउनको अपनेवशकर लिया और इसकार्य्यके सिद्धहोनेपर बड़े पारितोषक के देनेकी प्रतिज्ञा कीथीरावजी वर्णनकरता है कि मुझसे एक लाखरुपया और नरसूसेभी इतनेहीरुपयोंकेदेनेका वाइदा कियागयाथा नरसू कहताहै कि महाराजाने हमारे सम्पूर्ण परिवार सहितनि- र्वाहके बन्दोबस्त करनेकाइरादा कियाथा सो उन गरीबआ- दमियोंके विचारमेंजो पहिलेही से महाराजा गायकवारके तअल्लुकमेंथे निस्संदेहयह प्रतिज्ञा एक काफीउपदेश इसबात केलिये मालूम हुवाकिवह इस रीतिसे करनैलफ़ियर साहब कोवधकरेंजिसका असरतुरन्तही महोजावे और वहपकड़े नजावेंकिन्तु धीरे २ उनकोमारडालें॥

दफ़ा ७२—जो रीति महाराजा गायकवार ने ९ नवम्बर सन् १८७४ ई० कोया उसके पीछे अखतियार कीथी उससे उनकीनिर्दोषता प्रतीतनहीं होतीदामोदरपंतकी गवाहीसे इस बात का निश्चय होता है कि महाराजा गायकवार को यहखबरबात मालूम थी किविष देनेका उद्योग उस समय कियागयाथा जबकि वह उसदिन दरबार भोरके करनैलफ़ि- यर साहब की मुलाकातके लियेगयेथे औरजो उसवक्त भी

उनको इसका हाल मालूम नथा तो उसदिन संध्या से पहिले उनको इत्तिला होगई होगी करनैल फियरसाहब और औरंगजेब गवाहोंने यह इज़हार दिया है कि बड़ौदे की छावनी में विष देनेकी खबर सर्व्वत्र प्रसिद्ध थी॥

यह रछावनी मेंएक मील की दूरी पर नहीं है सालिम उस दिन रेजीडन्सीमें आयाथा और रावजीने उससे कहाथा कि वह काम होगया यह बात समझमें नहीं आती कि सालिमने जो सदा महाराजा गायकवारके पास उपस्थित रहाकरताथा अपने स्वामी को इस बातकी खबर नदी हो परन्तु हम देखते हैं कि महाराजा गायकवार ९—नवम्बर सोमवारके उपरान्त पहिले ही दफे अगले बृहस्पतिवार को करनैल फियरसाहब के मुलाकात करनेके लिये गये और उससमय यह बयान किया कि मैंने आपको विष देनेके इरादे की खबर पिछले दिन अर्थात् ११ नवम्बर को सुनी थी और नीचे लिखीहुई चिट्ठी १४ नवम्बरको लिखी गई॥

जो मुलाकात परसों मेरी और आपकी हुई उसमें मुझको आपकी जुबानी इस बातका विस्तृत वृत्तान्त मालूम हुवा कि किसी बदमाशने आपको विष देनेका उद्योग कियाथा और मुझ को उसके सुननेसे अति दुःख हुवा परन्तु ईश्वर की परिपूर्ण कृपा थी कि उस दुष्ट का उद्योग निष्फल हुवा यदि इस अपराधीके जुर्म साबित करानेमें मेरी सहायता की आवश्यक होतो मैं निःसंदेह मदद दूंगा यह चिट्ठी मैंने आपकी इत्तिलाके लिये लिखी है॥ लिखा हुवा १४ नवम्बर सन् १८७४ ई०॥

दफ़ा ७३—अब यह प्रश्न अवश्य करके पैदा होता है कि जिस दशामें महाराजा गायकवार दूसरी नवम्बर सन् १८७४ ई० के एक खरीता भेजचुके तो फिर वह क्यों विषसे करनैल फियर साहब केमारडालनेका उपाय करते जो यह संकल्प किया जावे कि इस खरीतेसे रेजीडण्टियों के बदलानेका प्रयोजन था तो इस प्रश्नका केवल यही उत्तर होसक्ता है कि खरीता भेजनेको राय

मिस्टरदादाभाईनौरोजजीने दीहोगीजिन्होंने उसवरीते को मुश्तिब किया था और बिषदेनेके मन्सूबे को मजानते थे बह ख्यालकिया जासक्ता है किमहाराजागायकवारने इस राय कोखोशीसे पसन्द करलिया होगा॥

दफ़ा ७४—यदि महाराजागायकवार इस अपराध में संयुक्त होतेतोउनकोयह तरीकाइखतियार करना उचित थाकि वहतुरन्त हीकरनैल फियरसाहबकेपासजाकर अपनी चिन्ताप्रगट करते और वारम्वारमिजाजकी तन्दुरुस्तीपूछते तेऔर उनसेयह आशाथी किवहएक चिट्ठीइस मजमून की करनैलफियर साहबको भेजतेकि हमको इसहालसे बड़ा खेदहुवा औरइसबात कावड़ा पश्चात्ताप हुवाकिमुख्यहमारे होदेशमें एक बदमाशके सबबसे हमारीमेहमान्दारीमें फरक हुवा औरयहबात उचितथी किजोनफरतउनकोकरनैलफियरसाहब सेथी उसकेसबबसे उनकोइस बातकी दुगनी चिन्ता रहतीकि इसमुआमिलेमें गवर्न्मेण्टअंगरेजीके साथखोशीसे अपनीसफाई करलेंपरन्तुइसकेबदले महाराजानेआखेंछुपाई औरबड़ी देरकेपीछे एक बाजाबिता चिट्ठी सरबमुहरके साथ लिखभेजी महाराजासाहबके इसबर्ताव के सिवा इसके और कोईसबब बिचारमें नहींआसक्ता है किआपही उन्होंने बिष देनेके लिये लोगोंको बहकायाथा।हम लाचारीसे महाराजा साहबके इसबयान कोकि उनकोइसमुआमिले कोकुछ खबर नथी निश्चयमानने केयोग्य नहीं ख्यालकरतेहैं॥

दफ़ा७५—यहराय जोजाहिर कीगईहै किशायददामोदर पंथने करनैलफियर साहबके बिषदेने का उपाय किया इस प्रयोजनसेहो किखास उसकेखतमें छपजावें उसकेलियेहमारीयह रायहैकि किसीगवाहीसे यह बातसाबितनहीं होती किदामोदरपंथ नेऐसा कामकियाथा जिसको वहमहाराजा गायकवारसे गुप्त रखना चाहताथा अथवा यह कि करनैल फियरसाहब कोहिलाकातयाबडोदे से उनकीबदलीके चाहनेमें

उसका कुछ प्रयोजनथा यह बातभी साबित नहीं हुई कि दामोदरपन्थने अपनेस्वामीकेमालमें चुरालियाहै जोउसनेउस प्रश्नका उत्तर दियाहै किजोईपयाखुफिया कामोंकेलियेखासकरकेयाउसकेलिये वहमहाराजा गायकवारको क्योंकरठीकर उत्तरदे सक्ताहै वह हमारे विचारसे काफी मालुम होताहै अर्थात् यहकिरुपयेके पानेवालेकी रसीदहुक्म केसाथ लगी हुईथी हालांकि हुक्मइस रीतिसे लिखागयाथा जिसे मुख्य मुआमिले कामूललुप्त होजावे केवल कागज नम्बर (टी) के मुआमिलेमें उसरीतिपर वर्त्तावनहीं कियागया यदियहभी कल्पनाकीजावे कि दामोदरपन्थने तगल्लुबकियाहै तोभी यह खयालहटयाहै किवहइस बातको पूरा२नजानताथा किनिज मुआमिलों कोवह वहैसियत महाराजा गायकवारकासीक्रेटरीअंजाम देताथा उनकोनिस्बत तहकीकात करनाकरनैलफियर साहब केअख्तियारसे बाहरथा॥

दफ़ा ७६—यहरायभी जाहिरकीगईहै कि भाव पूना करनेजो महाराजा गायकवार कापेच खयाल किया जाता है करनैलफियरसाहबकोविषदिलवाने काइसप्रयोजनसेबन्दोबस्तकिया किमहाराजा गायकवार आपत्तिमें फंसजावें या करनैल फियरसाहबकी तब्दीली मुल्तवीरहे यहराय उस हालतमें लिहाजके लायकहोतीकि विषदेनेका उद्योगसिर्फ जाहिरीहोता परन्तुयहइरादावास्तवमें इसप्रयोजनसेकिया गयाथाकि वहहरतरहसे सिद्धहोजावे और उससेमारडालनेवाला नतीजा केवल इसी सबबसे पैदा नहुवा कि करनैल फियरसाहबने ९नवम्बरको सबतबत नहीं पिया॥

दफ़ा ७७—यह पसइसमुकद्दमेपर हरएक तरहदृष्टिकरने के उपरान्त कोईकाफी दलीलइसबातकी नहीं पाते किजो अपराध महाराजा गायकवारपर लगाये गयेहैं उनके लिये हमारी यह रायहै कि महाराजा गायकवार उन के मुस्तौजिब नहीं वाजिब ठहर सके॥

दफ़ा ७८—जोरायहमारीइसमुकद्दमेमेंहैउससेश्रीमान् महाराजा ग्वालियार और श्रीयुत महाराजा जयपुर और राजा सरदिनकरराव कीराय प्रतिकूलहैजोराय उनकोउन अलगरिपोर्टोंमेंलिखीहै जोहरएककमीशनकेमेम्बरने पेशकी है हमनेउसपरखूबगौरकिया हमनिश्चयकरतेहैं किगवाहोंकी प्रकृतिके एतबारपर हरएक किस्मकी बाजिबीरिश्रायतकरने केपीछे मुकद्दमेकेहालसेनीचे लिखेहुयेअमरसाबित होतेहैं॥

पहिले—यहकि उन मनुष्यों ने करनैलफ़ियर साहबके विषदेने का उद्योग किया जिनको मल्हरराव गायकवार ने बहकाया॥

दूसरे—यह कि मल्हरराव गायकवार नेअपने एजण्टों केद्वारा औरस्वतः भीकई नौकरोंसेगुप्तवार्त्ता कीजोकरनैल फ़ियरसाहब बड़ौदेके रजीडण्टकेपासनौकरथे यारेजीडन्सी सेसम्बन्ध रखतेथे॥

तीसरे—मल्हरराव गायकवारने उनमेंसे कई मनुष्यों कोरुपयादिलवाया है॥

चौथे—यहकि इसप्रकारकीवार्त्ताकरने औररुपयेके दि- लवानेसे उनका पहिलेप्रयोजन यहथाकिजोकुछ रेजीडन्सी मेंउनके लियेऔर उनकी रियासतके मुश्रामिलोंकेलिये होता होवह मालूम करेंऔर दूसरेयहकि करनैलफ़ियरसाहबको विष देकर दुःखदें॥

बम्बईलिखाहुवा ३१ मार्च सन् १८७५ ई०	दस्तखत—आर०कोच दस्तखत—आर०जी०मीड तथा—पी०एस०मेलवल

राय श्रीमान्महाराजा जयाजीरावसेंधिया आलीजाहबहादुर
जी० सी० ऐस० आई० महाराजा मल्हारराव
गायकवार बड़ौदाके मुकद्दमे में ॥

मेरेविचारसे बिषदिये जानेका इरादा साबित नहीं हुवा जहां तक मुकद्दमे की कैफियत से मेरे ध्यान और निश्चय तक तहकीकात में आया मुझको इस बातका निश्चय नहीं है किमल्हरराव परबिषदियेजानेका जुर्म्मनियतहो ।

मालूमहोताहैकिहीरे और संखिये और तांबेकेमोललेने कापूरासुबूतनहींहैऔरनकोई गायकवारकादस्तखतीकागज पेशहुवाकि जिसमेंइन वस्तुओंके मोललेनेके लियेरुपयेकेदेने काहुक्म पायाजाय केवलइस विषयमेंदामोदरपंथ का बयान हैकिकोई कागज दस्तखती गायकवारका नहीं है किजिस्से वहइस मुआमलेमें माखूजकिये जावें ॥

उनगवाहोंमेंसेजोइसमुकद्दमेकेतअल्लुकहैं उनमेकेवल तीन गवाहोंने इसबिषयमेंगवाहीदी अर्थात्रावजीऔरनरसु और दामोदरपन्थने परन्तु इनलोगोंकी गवाहीमेंभीबहुतबड़ाइख्-तिलाफहैवजह इसकी रोयदादमुकद्दमेमें दर्जहैइसलिये यह गवाही निश्चयमानने केयोग्यक्योंकर मानेजासक्ते हैं ॥

पेडरूखानसामां औरअब्दुल्ला कीगवाहीऔर अदालतमें सालिमऔर यशवन्तराव,औरकंवल्कर गजाबाऔर नूरुद्दीन बोहरा औरहकीमकाअदालतमें नबुलाया जानायहसबबातें अपराधीके मतलब को फाइदेमन्दहैं ॥

मैंकभी निश्चय नहीं करसक्ता कि बिषदिये जानेके लिये ऐसी२कारखाइयांबहुतदिनोंतकप्रकटरीतिसेहुई ऐसेकाम दोयाएकशख्सजो बहुत विश्वसितहोंउनसेहुवाकरते हैं नकि बहुत से मनुष्यों का समूह संयुक्त किया जावे जब थोड़ी सं-खियाके एकदफेकेदेनेसे मनुष्यमर सक्ते हैं तोइसका क्या हेतु हैकिबराबर संखियादी गईऔर पीगई इस लियेमैंकोई सबब एकयोग्य मनुष्य अर्थात् सरजएटबेलन टायनसाहब कीतक

रीरके खण्डनकरनेका नहीं देखता यह बात भी गौर करने के लायक है कि मल्हररावने जरा भी सालिस और यशवन्तरावको सरल्यू इस पोलीसाहेब केहवाले करदेनेमें तामुलनहीं कियाकिन्तु यहबयान कियाकिमें अपनी सामर्थ्य भरसब तरहकी सहायता दूंगा ॥

उसवार्त्ताके विषयमेंजो नौकरोंसे रातको यादिनको हुई थीगौर करनेकेलायक नहीहै ऐसा आवागमन और तेहारों पर पारितोषक का मांगना हुवा करताहै ॥

और यह काररवाई केवल रेजीडण्ट साहबके प्रसन्नकरनेकेलिये जो रईस किया करते हैं और रईसभी इसबातकी इच्छा करतेहैं कि रेजीडण्ट साहबकी काररवाईसे इत्तिला पायें ऐसीही इत्तिलाकी इच्छा रईस और रेजीडण्ट साहब में हुवा करती है मैं अन्त में लिखता हूं कि खासबातें जांच करने की यह हैं ॥

पहिलेविषदियेजाने काउद्योग—दूसरेनौकरोंकीसाजिशपसजो कुछमेरीराय पूर्व्वोक्त सुआमिलेमेंथीवहपेशकरताहूं ॥

दस्तखत—श्रीमान्महाराजा ग्वालियार

मुक़ाम बम्बई–२१ मार्चसन् १८७५ ई० ॥

राय श्रीमान् महाराजा जयपुर जय-सी-एस-आई ॥

मल्हरावगायकवारपरलगेहुये अपराधकी कमीशनके इजलासकेगवाहोंकी गवाहीपर कामिल गौरकरनेके उपरान्त नीचे लिखो हुई राय पेश करता हूं वहबयान जो अमीना आयाने और रियासतके दूसरे नौकरोंने किया उससे यह साबित हुवा कि आया और दूसरे रियासत के नौकरों को समय २ पर गायकवारकी आज्ञाके अनुसार रुपये दियेगये परन्तु यहइससे पाया नहीं जाताकि यह रुपय उनको एक अनुचित अपराधके साजिशकरनेके लियेदियेगये होंजोकुछ रुपयादिया गयावह गायकवारने पारितोषककीभांतिदिया

ऐसेइनआमविवाह यात्योहारोंमें दियेजातेहैं उससंगीनअ-
पराधके विषयमें जो गायकवार पर है रावजी हवालदार का
बयानहै किमैंनेकरनैल फियरसाहब केशर्वतकेगिलासमें गा-
यकवार के बहकाने से विषडाला मुजकोनरसूने इसविषकी
पुडियांदींथीनरसू कहताहैकि मुजकोसालिम नेजोगाकवार
कासवारहै यहपुड़ियां दीथी मैनेपुड़िया सालिमसे पाई और
रावजी हवालदार कोदेदी और दामोदरपंथ गायकवार का
प्राईवेट सीक्रेटरीबयान करताहैं किमहाराजानेआज्ञादीकि
कुछसंखिया और हीरामंगवादो और सरकारने हिदायतकी
थीकि हीरातोगायकवारकेजासूस यशवन्तकोदी औरसंखिया
सालिमको और सालिम और यशवन्तराव बमूजिबबयानदा-
मोदरपंथके यशवन्तराव और सालिम दामोदरपंथ और नरसू
के दरमियानीथे परन्तु कमीशनके रूबरू यहलोगहाजिर नहीं
कियेगये इसलिये मालूम नहोसका किउन्होंने बम्बईके पुलिस
केसम्मुख उसका इजहार कियाथा यानहीं इसबातके सुबूतके
लिये कि पुड़िया दामोदरपंथ केपास नरसू को पहुंची कोई
गवाही नहीं है केवल दामोदरपन्थ और नरसूका बयानहै
दामोदरपन्थका बयानहीरे और संखियाके बिषयमें जिसकी
कोईगवाही नहीं है सचाई को नहीं पहुंचा॥

वह कहता है कि नानाजीवतिल गायकवार के जवाहर
खानेके दारोगाके द्वारा फतहचन्द हेमचन्दकी दूकानसे यह
हीरे मोल लिये गयेथे हेमचन्दने कमीशन के रूबरू बयान
किया कि मैनेवास्तेमुलाहिजे केहीरेपेश कियेथे मुलाहिजा
करके मुजको लौटादिये कोई हीरा मोल नहीं लियागया
आत्माराम जवाहरखाने के एक कारिन्देने कमीशन के सन्मुख
इजहार दियाहै कि वास्तव में हेमचन्द की दूकानसे हीरे
आयेथे परन्तु नापसन्द होकर लौटादियेगये नूरुद्दीन बोह-
रा जिसके लियेयह वर्णन है कि इससेसंखिया मोललीगई
थी कमीशनके रूबरू यहभी हाजिर न था और अकबरअली

खानबहादुर बम्बईके पुलिसअफ़सरोंने सरजहडवेलनटायनसा-हबके प्रश्नोत्तरके समयजो इजहारात परकियेगयेथे इसबात काइकरार किया कि वौहराअबतककैदहै इस लियेसाफ़इससे प्रगटहै कि वौहरने विषके मोललेने केविषयमें सिदाकतनहीं की जोयाददाश्तें दामोदरपन्थ केदफ्तरकी पेशहुई उनसे तशरीह इसकी पाई नहीं गई कि कोई खासरक़म अखास यासंखिया याकिसी भांतिके विषके मोल लेनेके लिये रुपया दिया गया छोटन याददाश्तों में ब्राह्मभोजन यापुण्यके लिये मंजूरीकाहुक्महै और गवाही इसबातकी काफ़ीहै कि वास्तव मेंयह रुपया इन्हीं कामों में खर्च किया गया॥

दामोदरपंथएकशीशीकाजिक्र करतेहैंजिसमेंएकवस्तु पतली विषैलीथीऔरबड़े२ कालेचोवटों औरकालेसापों औरसुअ्की घोड़ोंके पेशाबसे उसकोहकीमने तय्यार कियाथा औरएकम-नुष्यगजाबा महाराजासाहबके माले कंवलकर नौकरकेहाथ दामोदरपंथके मकानपर भिजवाईथी परन्तु नतोहकीमकमी-शनकेरूबरू पेशहुवा और न गजाबा आयाजो इसबयान की सिदाकतकरता इसलिये यह मालूम नहुवाकि यह लोगक्या बयान करते ऊपरके कहेहुये हेतुओंसे प्रकट है कि जो कुछ दामोदरपंथ ने विषमोललिये जानेके विषयमेंबयान कियावह सिवाय उसके बयानके किसी और मनुष्य का बयान नहीं है इसलिये किसी भांतिसे साबित नहीं होसक्ता॥

बयानहुवा थाकितांबाभी करनैल फियरसाहब केशर्बत में मिलाया गयाथा क्योंकिवह भीएकविषहैपरन्तु इसतांबेका कुछपता नमिलाकि गिलासकेशर्बतमें थायानथा और जबडा-क्टर सीवर्डसाहब और डाक्टर ग्रेसाहब नेतलछटके जुज अलग किंयेतब भीउससे कुछ साफ़मालूमनहुवा॥

तीनगवाह—दामोदरपंथ-रावजी-नरसू-जिनकीगवाहीगा-यकवारके जुर्म संगीनके विषयमेंहै वहभीशरीक जुर्म हैंइन

कीगवाही कीसिद्दाकतकिसीप्रतिष्ठित मनुष्यने नहींकीऔर नउनकी गवाही गुमान फासिदऔर गलतीसे बरीहै सिवाय इसके इनमेंसेदो गवाहों ने अपराध क्षमाहोजाने की शर्तसे गवाही दी इसलिये इन हेतुओंसे कोई दरजा इस गवाही कानहीं ठहरासक्ता ॥

कोई लिखीहुई गवाही तसलीमकरनेके लायक दामोदर-पन्थकीतरफसे पेश नहींहुई हरचन्द कि वह गायकवारका प्राईवेटसीक्रेटरी था गायकवार और निजके सम्पूर्ण दफ्तर का अधिकारी था ॥

रावजी और नरसू जो अपराध करनेमें संयुक्तहैं उनका बयानहै किमहाराजा से और हमसे जबानी वार्त्ता हुवाकरतीथी और महाराजाने हमसे कहाथा कि तुम करनैलफियर साहबको विषदो मुख्य२ बातोंमें इनदोनों मनुष्यों के बयान परस्परप्रतिकूलहैं जैसे कि रावजीने वर्णन किया किगायकवारने प्रतिज्ञाकीथी कि एक २ लक्षरुपये तुमको देंगे नरसू इसविषय में अपनी अज्ञानता बयान करता है और कहता है कि मुझको कुछमालूम नहीं कि गायकवारने ऐसीप्रतिज्ञा कीथीयानहीं और एकबड़ाबयानरावजीकापेडरू रद्द करताहै रावजीनेवर्णनकिया कि महाराजने विषकी पुड़ियापेडरूआदि कोदीथी हालांकि पेडरू इंकार करताहै और कहताहैकि यह बयानरावजी का बिल्कुल झूठहै अभीतक यह मालूमनहीं हुवा कि वगैरह कौन लोगथे ऊपर लिखे हुये हेतुओं के सिवाय जो अमसरजण्टबेलनटायन साहबने गवाहोंके इजहारोंके जबाब पर दरयाफ्त कियेहैं और जो अपनी स्पीचमें गवाहीके विषयमें तकरीरकीथी वह सबमेरे विचारमें गौर करनेके लायकहै उचितहै कि उसपर ध्यानकियाजावेऊपर-लिखेहुये हेतुओंमें चानेको कभी निश्चयनहीं दिला सक्ता कि गायकवार किसीतरह इसजुर्ममें शामिलथे हरचन्द कि करनैलफियरसाहबकी शरबतमें विषमिला और तीनों शरीक

जुर्मकी गवाहीअर्थात् रावजी—नरसू—और दामोदरपंथ की गवाहीपरस्पर प्रतिकूल है ॥

दस्तखत रामसिंघ बम्बई २७ मार्च
सन् १८७५ ई० ॥

राय श्रीमान् राजासरदिनकरराव के० सी० एस०आई मल्हारराव गायकवार बड़ोदेके मुक़द्दमेमें—स्थानबम्बई लिखाहुवा २६ मार्च सन् १८७५ ई० ॥

विषदिये जानेके विषयके सब मुकद्दमें के देखने और सुनने सेमुझको मालूमहुवा किमहाराजा मल्हररावपरकिसीतरह का अपराध नहीं लगता और कोई सुबूत हीरे और संखिये और तांबेके मोललिये जानेकेविषय में नहीं है ॥

या इन जहरोंकी तय्यारीमें एक रुपयेके खर्चका भी सबूत नहींहै और कोई लेख महाराजा के हाथका याकोई कागज जिनमें इनजहरोंके विषयमें लिखाहो पेशनहीं हुवा हरचन्द उनकाप्राईवेटसीक्रेटरी उनकाघच होगया बहुतसे मनुष्योंमें सेजिनकोइस मुकद्दमेसेसंबन्धथाकेवलतीनगवाहोंअर्थात्राव-जीनरसूदामोदरपंथ नेविषके मोललेनेकेविषयमें गवाही दीहै इनसबकाबयानएकदूसरेके प्रतिकूलहै दामोदरपंथ का बयान हीरे के खरीदने में आत्माराम और हेमचन्द से खण्डन हुवा इसनेवर्णन कियाकिमैंनेपुड़ियाखोल कर हीरा और संखिया नहींदेखाथादामोदरकानाम न रावजीनेलियाथाननरसूने कुछ उसकाजिक्र-कियाउसका खुदबयानहै किमैंनेयह बयान इस प्रयोजनसे कियाकिमैं गोरोंके पहिरे मेंसोलह दिन तक कैद रहा और मुझकोबड़ा दुखथाइसलियेमैं चाहताथा किमैंऐसा बयानकरूं कि छूटजाऊं रावजी और करनैलफियरसाहब के बयानमें तारीखोंका इखतिलाफहै जबकिविष गिलासमेंडाला गयाथारावजीकहताहै किमैंने ग्रीग्रीमहाराजासेपाईथी और

दामोदरकहताहैकिमैंनेथोथी सालिमकोदीथी रावजी कहता है कियहपुड़ियाविषकीमैंने अपनीपेटीमेंरखलीथी और दामोदरपंथकेइजहारहैंकिइनपुड़ियोंकेदिलानेकेलिये सालिमरावजी के मकानपर दौड़ागयाथा और रावजीभी उसकेपीछे२गयाथा रावजी यहभी कहताहै कि महाराजा ने यह पुड़ियामुझको और पेडरू और २ लोगोंकोदीथीं पेडरूने इनपुड़ियोंके पानेसे इन्कार कियाहै यह नहीं मालूम हुवा कि वग़ैरहमें कौन २ मनुष्यथे और वहकितनेथे रावजीवर्णनकरताहै किमहाराजा नेहमदोनोंकोएक २ लाखरुपयेके देनेकी प्रतिज्ञाकीथी परन्तु नरसू कहताहै कि मैंनहीं जानता रावजीके बयानसे मालूम होताहै कि थोथीविषैलीवस्तुकी ९-नवम्बरकोएकमहीनेपहिले मिलीथी नरसूके बयानसे साबितहै कि कईदिन पहिलेमिल थी-नरसूवर्णन करताहै कि सबलोगोंने फैयू का नामलिखवा दियाथा इसलिये मैंनेभी उसीका नामलिखवादिया ॥

तीनगवाह अपने हाकिम केवशहोगये और दो गवाहों कोजुर्मके मुआफीकी प्रतिज्ञाहै इसलिये उनकी गवाही और इजहारात क्योंकर सच्चे समझे जासक्ते हैं ॥

पेडरूखानसामांऔरअब्दुल्लाशर्बतबनानेवालेकी गवाहीगायकवारकेसुफीदमतलबहै और सालिमयशवन्तरावऔरकंवल कारगजावा नूरद्दीनबोहरा और हकीमका पेशनकियाजाना गायकवार की बरीयत का हेतुहै-कदाचित् निश्चयनहीं कि विषदियेजानेकी काररवाई मुद्दततक हुआकरे ॥

एक या दो विश्वसित मनुष्यों के द्वारा यहकाम होसक्ताहै न कि बहुत मनुष्यों की शिरकतसे जबकि थोड़ासा विषएक मनुष्यके मारडालनेको काफीहै तो फिर क्योंबराबरविषदियां जावे और पियाजावे इसलिये इनका और कईबातोंका जिक्र जो सरजानबेलनटायन साहब ने किया है वह गौर करने के काबिलहैं ॥

उसबातोंके विषयमें जोनौकरोंसे रातवा दिनको हुईकुछ आश्चर्य की बात नहीं है ऐसे २ पारितोषक हर खुशी और विवाहादि उत्सवमें दियेजाते हैं और ऐसा होताहै कि रईस और रेजीडण्ट चाहतेहैं का एकदूसरेका गुप्तरीतिसे दिलका हालमालूम होतारहै॥

अबमैं इसबातपर अपनी राय पूर्णकरताहूं कि केवल विष दियेजाने और नौकरों से बार्त्ता करने पर बहसथी इसलिये मेरीरायमें जोकुछ आयासो लिखा॥

(दस्तखतसरदिनकराव)

जोमरासिला हिन्दकी सलतनतके वजीरने पहिलेके महाराजामल्हराव गायकवार की गद्दीसे उतारेजाने के विषयमें हिंदुस्तान के गवर्नर जनरल वीरेश के नाम भेजा है उसका उल्थाभी नीचेलिखा जाता है॥

श्रीमान्लार्डसेलसबरीसाहब बहादुर सलतनत हिन्दकेवजीर का पत्र
हजाकसलन्सीरावट आनरेबलसाहब गवर्न्नर जनरल बहादुरहिन्दुस्तान बइजलाइस कौंसिलकी प्रति

लण्डन दफ़्तर हिन्द।

३—जून सन् १८७५ ई०

दफ़ा १—आपकेपत्र और बहुगवाहों जोअबकी तहकीकात मेंसरिचर्ड कौचसाहब की कमीशनके हुजूर लीगई औरकमिश्नरोंकी रिपोर्ट और उसकेलिये गवर्न्नमेण्ट हिन्दकारेजोल्यूशन और बहइश्तिहार जिसमेंआपने गायकवारके गद्दीसे उतारेजानेका इश्तिहार दियाहै और आपकीलिखी हुईएक याद्दाश्त जिसमेंआपने बड़ौदेकी रियासतके हालकीतारीख काजिक्र किया है यह सब कागज मेरे पास पहुंचे और मैंने कौन्सिलके इजलासमें उनपर गौरकिया॥

दफ़ा २—मैंआपको इत्तिलादेताहूं कि श्रीमती महारानी केगवर्न्नमेण्ट ने इसरीति को पसन्द फरमायाहै कि जो आपने

पहिलेके मल्हारराव गायकवार की गद्दीसे उतारे जानेका हुक्म देनेमें अखतियार किया है॥

दफ़ा ३—जिसकमीशनने सररिचर्डमीड साहबके नीचे इजलासकियाथा उसने यह रिपोर्टकी थी कि इस रियासत की अप्रबन्धता जिससे गवर्न्मेण्टको चिन्ताथी उसदरजेतक पहुंच गईहै कि उसके दुरुस्ती को बहुत जरूरत है कमीशन ने यह राय भी जो लिखी थी कि इसरईस और उसके सम्मतियों से इसलाहऔर अच्छेबन्दोबस्तके किसी मवस्सरतदबीरकीआशा रखनी बेफ़ाइदा है और यहबातें केवल अंगरेजी गवर्न्मेण्टके दखलकरने और हिमायत सेजारी होसक्तीहैं इसलिये पूर्व्वोक्त कमीशननेएकऐसे मदारुलमहामकी तकर्रुरकी सिफ़ारिशकी जिसको जरूरी अधिकारसौंपे जावें और जोगवर्न्मेण्ट हिन्दी की रजामन्दीके सिवाय अलगन होसके॥

दफ़ा ४—आपकी यहराय हुई कि यह सिफारिश कमीशन कीस्वीकार नकीजावे क्योंकि आपकी रायमें एक खाधीनवजीरनियत करके एक अन्याईराजाको हकूमतसे माजूलकरने का उपायउसदशामेंकि राजाभी नाममात्रको गद्दीपर बैठार हैऔरसूरतोंमें ऐसे कामयाबनहुयेथे औरजिसपर फिरवर्त्तावकरनाउचित ठहरता इससे आपनेयह उपायबहुत अच्छासे चाकि खासमल्हारराव के जिम्मेअपने देशकेदुरुस्ती करनेकाफर्ज ठहरायाजावे॥

दफ़ा ५—२५—जूलाई सन१८७४ ई०के एकखरीतेमें आपनेगायकवारको उसजिम्मेदारी कोआगाहकरदिया थाजो उनकी अप्रबन्धताके सबबसे गवर्न्मेण्ट अंगरेजीपर लाजिम आतीथी आपपरगायकवारकी रियासतकोबग़ावत सेमहफ़ूजरखनाफ़र्जहैसो इस लिहाजसे उनकी प्रजाको अप्रबन्धतासेभी महफूजरखना आपका एकफर्ज़ अजीमथा जिनशब्दोंमें आपनेगायकवारको इत्तलाकिया उनसेयह असूलखूब जाहिर होते

हैं जिनके अनुसार उन तअल्लुकात का बर्ताव होना चाहिये जो आपको आधीनी रियासतों के साथ हैं आपने लिखा था कि आपने यह ठीक लिखा है कि गवर्नमेण्ट अँगरेज़ी हिन्दुस्तान में निःसंदेह सबसे बड़ी गवर्नमेण्ट है और हिंदुस्तानी रियासतों की बक़ा व बेहतरी उसकी मुरब्बियाना इनायत और हिमायत पर मौक़ूफ है तथापि बड़ौदे की रियासत उन दोनों बातों के लिहाज़ से कि वह जुगराफिये के रूसे ऐसी जगह पर है कि अंगरेज़ी राज उससे मिला हुआ है और वहां एक अँगरेज़ी फौज रियासत की रक्षा और उसके अधिपति के पक्ष और उसकी उचित आज्ञा के प्रचार के लिये रहती है खासकर यही कैफियत है॥

मेरे मित्र मैं इस बात पर राज़ी नहीं हो सक्ता कि जो मनुष्य कोई बेजा काम करता हो उसकी हिमायत लिये सेना तैनात करूं जिस सलतनत को अंगरेज़ी गवर्नमेण्ट सहायक हो उसकी तरफ से कोई बदअमली है तो वह ऐसी बदअमली है जिसकी जवाबदिही में कुछ गवर्नमेण्ट अंगरेज़ी भी संयुक्त होती है इससे इस बात की निगरानी करने का गवर्नमेण्ट अंगरेज़ी को हक़ही हासिल नहीं है किन्तु उसी का खास फ़र्ज़ है कि जिस रियासत की यह दशा हो उसके प्रबन्ध की दुरुस्ती की जावे और सख़्त खराबियों को रोका जाये॥

दफ़ा ६-फिर आपने महाराजा गायकवार को उस विषय से मुत्तिला किया कि इन अस्लों के लिहाज़ से आपको क्या अमल दरामद करना उचित है आपने यह इच्छा प्रकट की कि उनको अपनी रियासत की दुरुस्ती का अच्छा मौक़ा दिया जावेगा और जो वह उससे लाभ न उठावेंगे तो आपने उनको उसके ज़रूरी नतीजों से भी आगाह कर दिया अर्थात् आपने महाराजा साहब को यह लिखा था कि जो बड़ी२ खराबियां आपके प्रबन्ध में हुई हैं उनकी दुरुस्ती के लिये मैं आपको जिम्मेदार सम

अताअ्लुक आपको अधिकार है कि जिसमनुष्य को आप चाहें अपना कारकुन नियत करेंगे पर यह बातखूब प्रगटहो कि जो नसीहतमें अबआपको अरताअ्लुक और बड़ौदेकारेजीडण्ट जिसपर मुझको अटल विश्वासहै मेरे हिदायत से आपको सम्मतदेगा जो उसपर आपन चलेंगे और इसी हेतुसे बड़ौदे के प्रबन्धमें कुछ दुरुस्ती नहोगी तो सिवाय इसके और कोई बन्दोबस्त नहोगाकिआप अपनेअधिकारसे पृथक् कियेजावेंगे और कोई उपाय जोमेरे विचार से बड़ौदे के मनो मल्लषित प्रबन्धकेलिये आवश्यक होगा और जिसेबड़ौदे की रियासत में कुछ दस्तअन्दाजीनहो किया जावेगा ॥

सो आपने इसकेबिना कि इसबर्ष के अन्ततक महाराजा गायकवार को निज अधिकार पररहने देने का जिम्माकरें वह तारीख एक हद्दइस बातके मुकर्रर की कि उससे आगे आप महाराजासाहबके साथ रियायत न करेंगे ॥

दफ़ा ७—परन्तु यह इम्तिहान उतने समयतक होने न पाया केवल थोड़े महीने तक करनैलफ़ियर साहबके आधीन जारीरहा और अगरचे ओहदेदार के लेख और आपक हिदायतों पर न चलने से आपको उसका बदलदेना उचित हुवा तथापि उसके चालचलनसे कोई ऐसीबात नथी जो गायकवारको अपनीरियासतके प्रबन्धमेंदुरुस्ती करनेकी बाधक होतीइस शर्तपरकि वहमनसे इसबातको चाहतेपरन्तु महाराजासाहबके कामोंसे उस प्रकारकी ख़ाहिश जाहिर नहीं होतीथी उसवक्ततक जबकिकरनैलफियर साहबके विषदेनेमें महाराजा गायकवार कीजाहिरीकी शराकतने आपकोउनके माजूलकरने परलाचार करदिया रियासतकी दुरुस्तीमें कुछ भी तरक्क़ीनहींहुईथी किन्तु बरखिलाफ इसकेजैसाकि आपनेपत्र लिखेहुये २८ अप्रैल सन् १८७४ई० में बयानकियाहै इसीजमाने में महाराजा गायकवारने अपनेभाई खाण्डेरावकी बीबीसे

सख़ बदसलूकी कि उसके सबबसे उसके हिमाकतका अन्देशा था और एक ऐसा विवाह किया जिससे रियासत के सरदारों और उनमें और वैर अधिक होगया और पूर्ववत् उसी प्रकार की फजूल खर्ची करते रहे जिसके सबबसे उधरतो काश्तकार निरास होगये और इधर इसके इससबबसे कि हिंदुस्तानी सिपाहियों की जरूरी मासिक के देनेका कुछ बंदोबस्त नथा सल्तनतमें बड़ी अबतरी के होनेका संदेह था पस इन बातोंसे मल्हरराव की जाती नालायक़ीमें किसीप्रकारकी तब्दीली साबित नहीं होतीथी उनके अहद की तवारीख में जहर खुरानीके इलजाममें उनके गिरिफ्तार होने और उनके अहदके पूर्ण होनेसे पहिले उस वजीरका किसी सबबके बिना मुअत्तल होनाथा जिसने रियासतके प्रबन्धकी इसलाह करनी शुरूरीथी और जोसररिचर्डमीडसाहब की रिपोर्ट परनियत हुवाथा॥

दफ़ा ८—यदि यह बात फर्जकी जावे कि मल्हररावके जिम्मे विषदेनेका इलजाम ठहराता हो नहींतो अब इस बातका तहकीक करना कुछ अवश्य नहीं है कि उनकी नालायक़ीकी इनअलामतों के मूलपर अमल करना करीन मसलेहत था या वर्ष के पूर्ण होने तक फैसलेका मुलतवी करना उचित था केवल इस बातका वर्णन करना काफी है कि जो तरीका इख्तियार किया जाता वह केवल बड़ौदे के रहने वालों के भलाई के लिहाजसे होता जो बरअंगेखती और खतरह लोगों के दिलोंमें इकबारगी किसीतदबीर मुमलिकत बदल जानेसे पैदा होता है यद्यपि उससे दरगुजर करना उसके बनिसबत मुनासिब होता कि मैआदके पूर्ण होनेसे रियासतमें वह इसलाह कीजावे जो वक्तसे आपत्तिके मारे समूहों की दशा के लिहाजसे मुनासिब थी परन्तु रियासतके अधिपति के चालचलनमें कोई बात ऐसी नथी जो उसप्रकार की रियासतके मुतअल्लिक होती या आपके गवर्नमेण्टको उत्तम प्रबन्धकी मौजूद आशामें अधिकतर ठहरना लाजिम आता॥

दफ़ा ९—जोसंगीन अपराधमल्हरराव के जिम्मे विष दियेजा-नेका नियत किया गया और जिसकी मिस्टर सूटर साहब ने तहक़ीक़ात की थी उसके मुकाबिले में उसप्रकारका ताम्मुल निस्संदेह सहजनाचीज था श्रीमान् महाराणी विक्टोरियाकी गवर्नमेण्ट आप की इसराय से बिल्कुल अनुकूल है कि आप इस इलजाम से हरगिज चश्मपोशी नहीं कर सक्तेथे एकऐसे राजाके साथ जिसके जिम्मे ऐसा हैबतनाक इलजामहो और वह उन मनुष्यों ने लगाया हो जो अपनेतईं उसका कारिन्दा बयान करतेथे मित्रवत् सम्बन्ध और जाहिरा इखतलात जारी रखना बड़ी रुसवाई की बातहोती और सरकारके उनलायक़ लाजिमोंके हकमेंजोबहुधा कठिन और भयकी हालतमें अति उच्चादेशीयकार्य्यको अंजाम देतेहैं सम्पूर्ण संसार में उसबात का प्रकट करना कि आपके प्राणको बहुत सस्ता समझते हैं न्यायसे दूरहोता ॥

दफ़ा१०—आपइसबातका तसफिया करतेहैं कि किसरीति से इस अपराधकी तहक़ीक़ात करनीचाहियेकाईअमूरअहमके लिहाजसे अमल कियाथा अर्थात् आपने सबलोगोंपर यहबात जाहिर करना चाहतेथे कि जिसगवाहीपर आपने काररवाई की थी वहकाफी थी और इसीसबबसे आपने यह तजवीजकी कि वहकाररवाई भी आमतौरसेहो आपकी यहभी इच्छाथी जैसाकि आपने महाराजासेंधियाको लिखाथा कि इसकमी-शनकीतरतीब उसतौरपर होनीचाहिये जिसपरसंपूर्ण हिन्दु-स्तानके रहनेवालों को निश्चयहो पस इसविचारसे आपने यह इरादाकिया कि आधो कमीशनमें हिन्दुस्तानीहों और इनमें से एकमेम्बर मिस्ल मल्हरराव के कौम मरहठाकाराजा और एकअतिप्रतिष्ठित प्रबन्धकमरहठाकी जातिकाहो यहतदबीर आपने थी महाराणी विक्टोरिया की रिआयाहिन्द की उस दिलीफिकर के सबबसे की थी जो सदासे आपके प्रबन्ध से पाई

जातीहै और जिसकी निस्बत हुजूर मलूका की गवर्नमेंट ने हमेशा अपनी बड़ी रजामन्दी जाहिर की है॥

दफ़ा ११-पर इसबातमें कलाम होसक्ताहैकि इसप्रकारका कारखाई काननीबाहर एकतरफपर आपकी आशाके अनुकूल हुवायानहीं निस्संदेह उससेभी बड़ी २ कबाहतें पैदाहुई हैं जिससेकाफीदलील इसबातकी पैदाहोसक्तीहै जोईश्वर नचाहे आगेकोइसीप्रकारका मौका पैदाहोतोइसप्रकारके उपायका अमलमेंलाना अनुचितहोगा राजे और सरदार अपनेकानूनी तालीमके सबबसे एक नाजुक कानूनी तहक़ीक़ातके करने के योग्यनहीं होते और हिन्दुस्तानके उनसरदारोंको जो अंगरेजी कानूनी अदालतके दस्तूरों और एकअंगरेजी वकीलकी लियाकत से नावाकिफहोते हैं इसप्रकारके नयेकामोंकेकरने में खासकिस्मकी दिक्कतपेश आईहै इसकेसिवा इसमुकद्दमेके हालातके अवलोकनसे यहबात साबितहोतीहै कि एकमुल्क के अधिपतिके अपराधका उसीकेदेशकेभीतरअदालतकीरीति के अनुसार तहक़ीक़ात करना कममुनासिब होताहै क्योंकि कारखाई अदालतके मुश्तहरहोनेसे और जो पाबन्दी मुल्की मसलहत के लिहाज से उसकी निस्बत करारदेते इब्तिदामें लाजिम होतीहै उनसे उसकी बड़ीज़िल्लत होतीहै जो उस की रिआया और और राजाओंमें दृष्टिमें सिर्फजुर्मके साबित होनेके उपरान्त वायद न होसक्तीहै और इसीसबबसे वहलोग उसके दरदशरीक होजाते हैं और यहहमदर्दी आसानी के साथ जोउसके हकमें बमंजिले तरफदारीके होजातीहै इसके उपरान्त जोकायदे कारखाईके अंगरेजी कानूनकी रूसेजारी कियेगयेहैं उनका अमलदरामद उनमुक़द्दमोंमें मुनासिबनहीं होता जहां गवाहोंके साथ उनके पहिले इजहार और आम अदालतमें उनकेपेश होने के दरमियान सुगमता से साजिश होसक्ती है और जहांइस किस्मकेअमलके वास्तेवक़तसे जरि-

येंमौजूदहैं और उनकेअमलमें लानेके वास्ते भीवक्त सेंलोभ दिलानेवाली चीजेंहोतीहैं पसऐसी हालतोंमेंहमेंथा इसबात काअंदेशा होगाकिजो गवाहीमुकद्दमे कीतहकीकात केवक्त पेशहोगी वह बमुकाबिले उसगवाहीके काफी मालूम होगी जोतजवीज इस अमृकेकिफलां अम्रकी तहकीकात रीति के अनुसारकी जावेहासिल हुईथी ॥

दफ़ा १२-यहमुश्किल दिक्कतेंइस प्रकारकीथीं जिनके होने काअन्दाजा आपपहिलेसे नहींकरसक्ते थेपरन्तु तहकीकात केप्रारम्भहोने केउपरान्त वहदिक्कतें मालूमहुईं और २ अधिक होती गईं पसजो दिक्कतें हिंदुस्तानी कमिश्नरों को पेश आईं उनकीवजह इससेसाफ मालूम होती है और यहभी मालूम होताहै किउन्होंने अपनेजियादह तजुर्बेकार रफीकोंके साफ२ फैसलेसे इत्तिफाक करनेमें किसीसबबसे ताम्मुलकिया ॥

दफ़ा१३-जिनवजूहातपर हिन्दुस्तानी कमिश्नरों ने अपना फैसला कियाहै उनकी तशरीह कुछही क्योंनकीजावे परन्तु श्रीमती महाराणी विक्टोरियाकी गवर्न्मेण्ट की रायमें यह बातनहीं होसक्तीकि उसफैसलेकी ओरसे बेपरवाई की जावे तथाच जोहिदायतें मैंनेतारबर्क़ीके द्वारा आपकेनिकट भेजी थी उनमेंभी रायजाहिरकीगईथी यदि हिन्दुस्तानीकमिश्नरों के नियतकरनेसे हिन्दुस्तानियोंको इसबात का निश्चयकराना मुतसव्विर नहोताकि इस अदालतमें अवश्य करकेन्याय और इन्साफहोगा तो हिंदुस्तानियोंका नियतकरना बिल्कुल वृथा होता और यह भरोसाभी केवलधोकाही धोकाहोता अगर नतीजेके करारदेनेमें हिंदुस्तानी कमिश्नरोंकीरायपरकुछलिहाजकिया जातासिवा इसकेएक ऐसे मुकद्दमेमें जिसकादारोमदार बिल्कुलतीन गवाहोंके एतबारपरथा इसबातपरलिहाजकरना अतिआवश्यक थाकि इजहार केवल उन गवाहों केआढंगके पसजिनमनुष्योंने अपनी आंखसे इस मुकद्दमे के

हालातको देखाहोगा उनकीरायको तरमीमके वास्ते किसी ऐसेषाकिसके रूबरूपेश करनाजिसको उसीप्रकारका मौका हासिल नहो (चाहेवहहाकिम कैसाहोवड़ा क्योंनहो) मुना- ...ओता यहबात सचहैकि आपनेउनकुर्मोमें जिनकीहसे ...कमीशन मुकर्ररकीथी उसकी कारवाईको कुछकानूनी ...ख्यालात बयान नहीं कियाथा किन्तु सिर्फ तहकीकात ...याथा परन्तु श्रीमतीमहाराणी विक्टोरियाकीगवर्न- मएटको रायमें इससे कुछउनबातोंकी खूबीबायलनहीं होती जोमैंने पहिले बयान की है॥

दफा१४–यदि कमीशनकेविचारमें मल्हरराव उसबड़ेजुर्म के मुर्त्तकिब होते जो उनसे मन्सूबकिया गयाथातो जो दण्ड किसीगैर...व मनुष्यकेलिये मुनासिबख्याल कियाजाताउसको उससे कमदण्डदेने की कोईवजह नहोती किन्तु जोपदउनको प्राप्तथाउसकेसबबसे उनकागुनाह और संगीन होजातापरन्तु नतो उनके जिम्मे जुर्मसाबित हुवा और नवहबरी किये गये यद्यपि कमीशनकी रायउनके खिलाफ परमाइलथी तथापिवह राय कितई नथी क्योंकिकः मेम्बरोंमेंसेतीन मेम्बरोंकी रायतो प्रेसीडएटके समेत यहथीकि जुर्मसाबित है और एककीराय ...यनकीथी पसइनसूरतों में जोयहख्यालकिया जावे कि तीनकमिश्नर जिन्होने मल्हररावको मुजरिमनहींकरारदिया था उनको जातिके मनुष्यथे और वह कमीशन में इस लिये संयुक्त कियेथे किहिंदुस्तानके लोगोंको उसपर निश्चय होतो हुजूरमलका मअज्जमाकी गवर्नमेएटकी यहराय है किमल्ह- रराव को निस्बत इसतरह सलूक नहीं किया जासक्ता कि मानो मल्हररावजी का अपराध उनको जिम्मे साबित हो- गया तथाजो इश्तिहार आपने श्री महाराणी विक्टोरिया की हिदायत से जारी किया था उसमें वह मुजरिम नहीं फर्ज किये गये थे और वह उस दण्डसे बचा दियेगये थे जो

अवश्य करके उस जुर्म के साबित होने पर दिया जाता ॥

दफ़ा १५—परन्तु इससे ख़ाहनख़ाह यह लाज़िम नहीं आता कि वह फिर गद्दी पर बैठाये जावें तहक़ीक़ात के नतीजे की निस्बत सबसे बढ़कर यह बात कही जासक्ती है कि मल्हरराव के जुर्म की निस्बत जो कमीशन ने मुत्तफ़िक़ राय नहीं दी इस सबब से वह सज़ा से बच गये उन्होंने इस तरह पर कारवाई की थी कि तीन बड़े तजुर्बेकार अंगरेज़ों ने उनको ज़हर खूरानी का मुजरिम ठहराया और उनके दो हमजातियों ने अपनी राय ज़ाहिर करते वक्त उनको निर्दोष ठहराने से इजतिनाब किया चाहे इस फ़ैसले से कुछ ही नतीजा पैदा क्यों न हो परन्तु वह किसी तरह पर एक बड़े रुतबे के वास्ते उनकी काबलियत की हरगिज़ एक दलील नहीं समझा सक्ता अगर सिर्फ़ इसी नतीजे पर लिहाज़ किया जाता तौभी बड़ौदे के रहने वालों पर हुक्म रानी करने के वास्ते फिर उनको बहाल करने में बड़ी दिक्कतें आगे आती ॥

दफ़ा १६—पर सिवाय इसके और वजूहात भी जो फ़ी नफ़्स काफ़ी वाफ़ी थीं उनके दुबारह नवहाल करने के वास्ते मौजूद थीं अर्थात् जो ज़माना सर रिचर्ड मीड साहब की तहक़ीक़ात के उपरान्त गुज़रा था उसमें किसी प्रकार की तख़फ़ीफ़ उन बुराइयों में नहीं मालूम हुई जो रियासत बड़ौदा की बदप्रबन्ध के सबब थीं मल्हरराव के गिरिफ़्तार होने से पहिले उन वज़ीरों ने अपने ओहदों से इस्तैफ़ा दे दिया जिन्होंने इन्तिज़ाम की दुरुस्ती शुरू की थी और सर ल्यूइस पीली साहब ने आप से बड़े दिल से यह सिफ़ारिश की थी कि गायकवार की रियासत को आफ़तों से महफ़ूज़ रखने की गर्ज़ से उसके सरदार को गद्दी से उतारना चाहिये इससे कई सप्ताह के उपरान्त ऐसे अपराधों के होने का सबूत हासिल हुवा कि अगर वह इससे पहिले दरयाफ़्त होजाते तो इस ज़ालिम अहद का बहुत जल्द ख़ातिमा होजाता सर रिचर्ड कौच साहब की कमीशन की कारवाई के शुरू होने

उपरान्त सरल्यूइसमीली साहबके रू . . . नावसे धिशाका विष
कर माराजाना और उससेभी अधिक एक और हैबतनाक
कतलतत्थात् गोविन्दनायक का बड़ी अजावसे हिलाका होना
साबित होगयाथा यह दोनों जुर्म उन मनुष्यों ने कियेथे जो
मल्हररावके आधीन अधिकारीथे और पिछले जुर्मकी निस्बत
तो साफ़ यह पतालगगया किवह मल्हररावकी आज्ञासे हुवा
था अगर वह जुर्म उसवक्त साबित होजाते जबकि वह गद्दीपर
बैठे हुयेथे तो जिस हुकूमत से ऐसेबड़े कामकिये जावें उसके
खतम करनेमें गवर्न्मेण्ट अंगरेजी बहुत अरसे तक ठहर नहीं
सक्ती थी ॥

दफ़ा १७–पस इन वजूहात पर अगर मल्हरराव के जिम्मे
करनैल फ़ियरसाहब को जहरदेने का इलजामभी न होता
तौभी उनका गद्दीसे उतारना उचितथा गवर्न्मेण्ट अंगरेजीको
मल्हररावके सरदारों और रिआयाको अपने हकूकके हासिल
करनेके इख़तियारसे महरूम करदिया था यहबात वाजिब
न होती कि वह फिर उनको एक ऐसे राजा की हकूमत के
कुबूल करनेपर मजबूर करे जिसकी लाइलाज बुराइयां तजु-
र्बेसे बखूबी साबित होगईथीं पस आपको यह हिदायत की गई
कि आप अपने जाबितेके इश्तिहारमें मल्हररावके गद्दीसे उ-
तारे जानेकी भी आम वजूहात बयानकरें इस अंदेशेसे कि
शायद कोई यह खयालकरे कि एक रेज़ीडण्टको जहर देनेके
जुर्ममें सिर्फ गद्दीसे उतारे जानेकी सजादीगई और कमी-
शनके हिन्दुस्तानी मेम्बरों की भी रायके लिहाज से यह अम्र
मुनासिबनथा कि आप अपने वजूहातमें उन अमूरको दाखिल
करेंजो तहकीकातसे पैदाहोंउस किस्मकी कारवाई गोया
एक फ़जूलवजह एक जरूरीकी होती और उसके सबबसे इस
अखलमें खललवाके होता कि सरवन्दन जमीहै फीनफसा अख-
तियारात हकूमतसे महरूम करनेको काफ़ीवजह है जोफर्मा अ-

जीम श्रीमती महार[illegible] विक्टोरिया की गवर्न्मेंट परहिन्द
कोप्रजाको अन्यायसे अहफूज रखनेकाहै उसको हजूर मम
दूहानेएकबड़े मुकद्दमेमें निहायतदिलसे तसलीम कियाहै॥

दफ़ा १८–मैं अन्तपरश्री महाराणी विक्टोरियाकी औरसे
उनखिदमतोंकी निसबतबड़ी कदरशिनासी जाहिरकरताहूं
जोआपने इसदर्दनाक मुकद्दमेमें जहूरमें आईहैंमैं आपसेयह
भी दरख्वास्त करताहूं किआप सरल्यूइसपीलो साहबऔर
जिन मनुष्योंने उनके आधीन कामकियाथा उनसे कहदें कि
श्रीमतीमहाराणीकी गवर्न्मेंटको उनकठिन कामोंका बहु
ख्यालहैजोउन्होंने लियाकतके सायअंजामदिये–

दस्तखतसेल्सबरी॥

इति